रिसाले-ए-नूर संग्रहः
भाग 2

पत्र

इस्लामी धर्म पर पत्र विचार, विश्वास और जीवन

बदीउज़्ज़माँ सईद नुर्सी

हुसैन अकार्सू द्वारा अनुवादित

रिसाले-ए-नूर संग्रहः
भाग 2

पत्र

इस्लामी धर्म पर पत्र विचार, विश्वास और जीवन

बदीउज़्ज़माँ सईद नुर्सी

हुसैन अकार्सू द्वारा अनुवादित

The Light

न्यु जर्सी

08 07 06 05 1 2 3 4

द लाइट, इंक. द्वारा प्रकाशित.
26 वर्ल्ड्स फेयर डॉ. यूनिट सी
समरसेट, न्यू जर्सी, 08873, संयुक्त राज्य अमेरिका

www.thelightpublishing.com

लाइब्रेरी ऑफ कांग्रेस कैटलॉगिंग-इन-पब्लिकेशन डेटा

नूरसी, सईद, 1873-1960.

[रिसाले-ए नूर. अंग्रेजी. चयन]

पत्र : इस्लामी विचार, विश्वास और जीवन पर पत्र / बेदिउज्जमां सईद नूरसी ; हुसैन अकारसू द्वारा अनुवादित. पृ. सेमी. -- (रिसाले-ए-नूर संग्रह)

सूचकांक शामिल है.

आईएसबीएन 978-1-59784-076-7 (हार्डकवर)

1. नूरकुलुक-सिद्धांत। 2. इस्लाम-सार, प्रतिभा, प्रकृति। 3. इस्लाम-प्रशंसा। I. शीर्षक।

बीपी252.एन85213 2007

297.8'3--डीसी22

2006039571

Ç̧aðlayan A.Þ.

द्वारा मुद्रित, इज़मिर - तुर्की 2007

विषयसूची

छठा पत्र

सातवाँ पत्र

आठवाँ पत्र

नौवां पत्र

दसवाँ पत्र

ग्यारहवाँ पत्र

बारहवाँ पत्र

तेरहवें और सोलहवें पत्र

चौदहवाँ पत्र

पंद्रहवाँ पत्र

सत्रहवाँ पत्र

अठारहवाँ पत्र

उन्नीसवाँ पत्र

बीसवाँ पत्र

इक्कीसवाँ पत्र

बाईसवाँ पत्र

तेईसवाँ पत्र

चौबीसवाँ पत्र

पच्चीसवाँ पत्र

[लेखक ने इसे नहीं लिखा, यद्यपि उसका ऐसा करने का इरादा था]

छब्बीसवाँ पत्र

सत्ताईसवाँ पत्र

अट्ठाईसवाँ पत्र

उनतीसवाँ पत्र

प्रस्तावना

T यह पत्र उक्त के बीच हुए पत्राचार का प्रतिनिधित्व करता है
नूरसी (1876-1960) और उनके शिष्यों तथा सामान्य रूप से तुर्की मुसलमानों के लिए जो धार्मिक जीवन और गतिविधियों के मामले में कठिन समय से गुज़र रहे थे।

ओटोमन राज्य के खंडहरों पर तुर्की गणराज्य, साथ ही साथ
सदियों से चली आ रही इस्लामी परम्पराओं को यूरोपीय आयातों से प्रतिस्थापित करना
कानूनी, आधिकारिक, शिक्षा और व्यक्तिगत क्षेत्रों में, सईद नूरसी ने अपनी पूरी ताकत लगा दी
बौद्धिक और साहित्यिक प्रतिभाओं का उपयोग यह सुनिश्चित करने के लिए किया जाना चाहिए कि तुर्की के लोग और समाज इस्लाम के दायरे से पूरी तरह बाहर न निकल जाएं।

सामाजिक क्षेत्र में सक्रिय भागीदार सैद नूरसी ने धीरे-धीरे इससे दूरी बना ली।
इस आधार पर ऐसी सक्रियता कि राजनीति मुसलमानों को एक दूसरे के खिलाफ बांटती है
दूसरे के प्रति शत्रुतापूर्ण व्यवहार को बढ़ावा देता है और पहले से ही शत्रुतापूर्ण माहौल में उन्हें कमजोर बनाता है।
अपने लेखन में खुद को “नए सईद” के रूप में संदर्भित करके, उन्होंने
उन्होंने अपना शेष जीवन आधुनिक और वैज्ञानिक शब्दावली में इस्लाम की सच्चाई समझाने में बिताया, ताकि नए उभरते धर्म-विरोधी और धर्मनिरपेक्ष रुझानों का मुकाबला किया जा सके।

सैद नूरसी ने पत्र क्यों लिखे?

हमेशा की तरह, उनकी पहली और सबसे बड़ी चिंता ईश्वर के अस्तित्व को साबित करना है और
एकता, शारीरिक पुनरुत्थान, न्याय का दिन, और न्याय की वैधता
कुरान और मुहम्मद की पैगम्बरी। वह खुद को इस पर आधारित करके ऐसा करता है
जिसे पश्चिम "तर्कसंगत" विचार मानता है, अर्थात विज्ञान, अवलोकन,
और तर्क। हालाँकि, वह हृदय और आत्मा को संबोधित करने की उपेक्षा नहीं करता है।
सईद नूरसी ने पारंपरिक तरीकों की निरर्थकता को महसूस करने के बाद यह रास्ता चुना।

धार्मिक प्रमाणों के अनुसार नई पीढ़ी को शिक्षित किया जा रहा है
पश्चिमी प्रतिमान जो धर्म को तर्कहीन और वास्तविक ज्ञान, प्रगति और विकास के प्रतिकूल मानता है। इस प्रकार, कई धार्मिक नेताओं के विपरीत, वह
ऐसे लोगों के साथ वैज्ञानिक संदर्भ में बहस करना सीखा
अपना विश्वदृष्टिकोण बनाया।

उनकी अगली चिंता यह दर्शाना है कि धार्मिक और वैज्ञानिक ज्ञान एक दूसरे से जुड़े हुए हैं।
विरोधाभासी और परस्पर अनन्य नहीं। उनके सभी लेखन में हम देखते हैं
वही दृष्टिकोण: प्रकृति में घटनाओं का प्रत्यक्ष अवलोकन और क्या हो सकता है
इस तरह के अध्ययन से अनुमान लगाया गया है या कहा गया है, एक परिकल्पना से शुरू होकर
वैज्ञानिक तर्क और कारण का उपयोग करके इसका समर्थन करना, विरोधियों के तर्कों का मुकाबला करना,
तथा वास्तविक दुनिया में परिकल्पना का परीक्षण करना
यह देखने के लिए कि क्या यह सटीक है या इसमें सुधार की आवश्यकता है। क्या यह सही दृष्टिकोण नहीं है
सृजन के बहुमुखी पहलुओं को समझने के इच्छुक वैज्ञानिकों द्वारा किसका उपयोग किया जाता है?

मुख्य विचारों का सारांश

प्रथम पत्र में सैद नूरसी द्वारा अपने विद्यार्थियों द्वारा जीवन, मृत्यु, नरक और प्रेम के स्तरों पर पूछे गए विभिन्न प्रश्नों के उत्तर दिए गए हैं।
पहले प्रश्न का उत्तर देते हुए, उन्होंने अपनी अवधारणा को विस्तार से बताया।
मानव अस्तित्व के पाँच स्तर। बढ़ते क्रम में, ये हैं मानव जीवन के पाँच स्तर।
साधारण लोग (परीक्षण और परीक्षण के इस दायरे में रहते थे), ख़ाद्र और
एलिजा (ऐसे क्षेत्र में रहते थे जो समय जैसी मानवीय अवधारणाओं से असीम था
और इस भौतिक क्षेत्र के साथ संबंध में स्थान, और ऐसी मानवीय ज़रूरतें
खाने-पीने के रूप में), यीशु और हनोक (अपने लोगों के साथ एक दायरे में रहते थे)
कुछ हद तक ईथरियल शरीर इतने परिष्कृत हैं कि वे मानव जीवन से बंधे नहीं हैं
आवश्यकताएं पूरी करने और एक देवदूत जैसा जीवन जीने वाले), शहीदों (जो सोचते हैं कि वे सभी दर्द और परेशानी से मुक्त एक खुशहाल क्षेत्र में अपना सांसारिक जीवन जारी रखते हैं),
और मृतक का आध्यात्मिक जीवन।

सईद नूरसी ने आलंकारिक प्रेम और प्रतीकात्मक प्रेम के बीच के अंतर का भी विश्लेषण किया है।
सच्चा प्यार, जो उनके लेखन में एक प्रमुख विषय है। आलंकारिक प्रेम को विपरीत लिंग और इस की चीज़ों के लिए प्यार के रूप में परिभाषित करने के बाद
दुनिया में, वह बताते हैं कि इसे सच्चे प्यार (दुनिया के लिए प्यार) में कैसे बदला जा सकता है
सृष्टिकर्ता) को यह एहसास दिलाकर कि मानव हृदय ईश्वर के दर्पण के रूप में कार्य करने के लिए बनाया गया है और इसलिए वह किसी भी चीज़ या ईश्वर के प्रति प्रेम से संतुष्ट नहीं हो सकता।
उसके सिवा कोई और नहीं, वह तो शाश्वत है।

वह हमें बताते हैं कि अपने जीवन के दौरान प्रत्येक व्यक्ति एक निजी दुनिया का निर्माण करता है, जिसमें वह सब कुछ शामिल होता है जिसे वह प्यार करता है: परिवार और रिश्तेदार, संपत्ति, नौकरी, आदतें, इत्यादि।
लेकिन हमें ऐसी अस्थायी चीज़ों को अपना सच्चा प्यार क्यों देना चाहिए, क्योंकि भले ही वे हमें एक दिन “अलविदा कहे बिना” न छोड़ें, हम उन्हें मृत्यु या किसी अन्य माध्यम से छोड़ देंगे। चूंकि ऐसा प्यार केवल दर्द, पीड़ा और हानि लाता है, इसलिए जब हम जिससे प्यार करते हैं वह गायब हो जाता है तो हम ऐसी भावनाओं को कैसे महसूस नहीं कर सकते? क्या यह अधिक तर्कसंगत नहीं है कि हम अपना सच्चा प्यार उसी को दें जिसने वह बनाया है जिससे हम प्यार करते हैं और हमें उससे मिलने के लिए प्रेरित किया है? क्या हमें उस एक के प्रति अपना सच्चा प्यार व्यक्त नहीं करना चाहिए जो सर्व-प्रेमी है, जिसने प्रेम को ब्रह्मांड का आधार बनाया है और हमें ऐसा प्रेम प्रदान करता है जो शाश्वत है और हमारी समझ से परे है, यह जानने का प्रयास करके कि उसकी अच्छी खुशी क्या अर्जित करती है? सैद नूरसी बार-बार पूछते हैं कि हमें एक अस्थायी और क्षणिक प्रेम से संतुष्ट क्यों होना चाहिए जब हमारे पास एक ऐसा प्रेम हो सकता है जो शाश्वत और सर्वव्यापी हो?

जैसा कि वे द वर्ड्स में लिखते हैं : "ब्रह्मांड का सार प्रेम है। सभी प्राणी प्रेम के उद्देश्य से चलते हैं। आकर्षण, परमानंद और गुरुत्वाकर्षण के सभी नियम प्रेम से उत्पन्न होते हैं" (पृष्ठ 506)। हमारा प्रतीकात्मक प्रेम ईश्वरीय प्रेम की एक बहुत ही धुंधली छाया है, एक ऐसी छाया जो इतनी हल्की और टिमटिमाती है कि निराशा के क्रोध के एक क्षण में हमेशा के लिए बुझ सकती है।

तेरहवें और सोलहवें पत्रों में, सैद नूरसी ने खुलासा किया कि वह निर्वासन का जीवन क्यों अपनाता है जो उसे सामान्य मानवीय संपर्क से वंचित करता है। अपनी शिक्षाओं के जीवंत अवतार के रूप में, वह अपने दुर्भाग्य का श्रेय ईश्वर की इच्छा को देता है कि उसे सब कुछ केवल उसकी खुशी के लिए करना चाहिए। जैसा कि उसने अपने निर्वासन को एकांतवास और एकांतवास के समय के रूप में देखा होगा, ईश्वर ने उसके लिए पूरी तरह से उस पर निर्भर रहने और कुरान की सेवा में जीवन जीने की व्यवस्था की। उपदेश देने से मना किया गया और बहुत कम आगंतुकों तक सीमित, वह ईश्वरीय दया का धन्यवाद करता है कि उसने उसे कुरान की सेवा करने, अपने लेखन के माध्यम से इसकी शिक्षाओं को फैलाने और प्रार्थना के माध्यम से ईश्वर के करीब आने की अनुमति दी। अपने भाग्य को स्वीकार करते हुए, वह भौतिक सुख, सम्मान, प्रसिद्धि, धन, आदि के मोहक गीतों को शांत करता है जो उसके कई समकालीनों को आकर्षित करते हैं।

राजनीति छोड़ने के कारणों के बारे में सईद नूरसी बताते हैं:

> ऐसे तूफ़ानी हालात में आस्थावान राजनीति के ज़रिए अपने उद्देश्य की पूर्ति नहीं कर सकते।
> राजनीति के ज़रिए इस्लाम के लिए जो भी सेवा की जाती है, उसका फ़ायदा अंततः इस्लाम विरोधी व्यवस्था को ही होता है, क्योंकि विदेशी ताकतें राजनीतिक जीवन की बागडोर संभालती हैं।
> राजनीति में शामिल होने से मुसलमान विरोधी राजनीतिक गुटों में भी बंट जाते हैं, जिसका व्यक्तिगत दिलों और सामूहिक जीवन पर नकारात्मक प्रभाव पड़ता है - कुछ लोग-

लोग इतने जिद्दी हैं कि मुसलमान भी उन्हें भाई या बहन कह सकते हैं
बहनों को शैतान के रूप में, या शैतानी पार्टी के सदस्य को देवदूत के रूप में, यह निर्भर करता है
इस बात पर कि वे किसी खास राजनीतिक पार्टी का समर्थन करते हैं या नहीं।
एक विद्वान व्यक्ति ने एक अच्छे, गुणी व्यक्ति को बुरी तरह से फटकारते देखा, जिसने
उनके राजनीतिक विचारों से सहमत न होना और फिर उनके भ्रष्ट सदस्य की प्रशंसा करना
राजनीतिक गुट में शामिल होने के बाद, मैं राजनीति की बुराइयों से निराश हो गया और पूरी तरह से पीछे हट गया,
यह कहते हुए: "मैं शैतान और राजनीति से ईश्वर की शरण लेता हूँ।" (पृष्ठ 45)

सईद नूरसी अपने अलगाव के लिए सहमति देते हैं, लेकिन इसके खिलाफ रेलिंग करने के बजाय
अन्याय जो इसका कारण बनता है, वह भगवान के लिए अपने प्यार का उपयोग करके इसे में बदल देता है
कुरान की सेवा करने का माध्यम इतना प्रभावी ढंग से है कि उसके कुछ हिस्से
4,000 पृष्ठों वाले रिसाले-ए-नूर को हाथ से कॉपी करके, किसी भी जगह से तस्करी करके लाया गया था।
जेल या निर्वासन का स्थान जहाँ वह था, और उन्होंने अपना रास्ता पाया
आध्यात्मिक ज्ञान, मार्गदर्शन और ज्ञान के भूखे लोगों के हाथों में
समझ। आज तक, उनकी मृत्यु के 40 से अधिक वर्षों के बाद, वे
उन्हें अनेक लोग बड़े स्नेह और सम्मान के साथ याद करते हैं तथा उनकी रचनाएँ आज भी प्रसारित होती रहती हैं।

उन्नीसवाँ पत्र, पैगम्बर के चमत्कारों और उनके कार्यों की चर्चा
वे उनकी पैगम्बरियत और संदेश की सच्चाई पर जोर देते हैं, केंद्रबिंदु बनते हैं
इस खंड का। चमत्कारों से निपटना पश्चिम के लिए विशेष रूप से कठिन है, क्योंकि
ऐसा लगता है कि वे सामान्य के दायरे से बाहर घटित होते हैं, जिसे विज्ञान समझ सकता है
निश्चितता के साथ भविष्यवाणी करना और स्वीकार करना। सईद नूरसी इन घटनाओं के साथ-साथ
उन प्रत्यक्षदर्शियों के नाम जिन्होंने ये बातें बताईं ताकि उनकी पहचान की जा सके
भावी पीढ़ी तक पहुंचाया गया।

इस पत्र में एक और प्रमुख चिंता प्रासंगिकता को दर्शाना है - वास्तव में
आधुनिक जीवन में इस्लाम की केन्द्रीयता और यह किस प्रकार आधुनिक जीवन के मार्ग से कहीं अधिक श्रेष्ठ है।
भौतिकवाद का विरोध करते हुए उन्होंने लगातार अपने श्रोताओं को याद दिलाया कि इस्लाम भौतिकवाद नहीं है।
विज्ञान या अंधविश्वास पर निर्भर होने के बावजूद, वह अपनी बात रखने के लिए इसका सहारा लेता है।
वह प्रकृति में देखी गई व्यापक व्यवस्था की ओर इशारा करते हुए पूछते हैं कि यह कैसे अस्तित्व में हो सकती है?
यदि चट्टानों के पीछे कोई प्राणी न होता, तो क्या हागिया का गुंबद बनाया जा सकता था?
सोफिया (अयासोफ़िया) मस्जिद में प्रवेश करने वाले लोगों में से एक व्यक्ति स्वयं था और उन्हें कोई निर्देश नहीं दे रहा था।

वह अन्य विचारोत्तेजक बिंदुओं को सामने लाते हैं जिन्हें आधुनिक विज्ञान समझ सकता है।
केवल यह कहकर उत्तर दें: “संयोग, दुर्घटना, संयोग, अर्थहीन।”
उनमें से कुछ इस प्रकार हैं: "ठीक है, आपने उस विशेष घटना या जानवर का वर्णन किया है, लेकिन यह पहली बार अस्तित्व में कैसे आया?"
समय?” और “ऐसा कैसे हुआ कि ब्रह्मांड में हर चीज़ इस तरह विकसित हुई है
क्या यह हमारी और जानवरों और पौधों की सभी ज़रूरतों को पूरा कर सकता है?

क्या यह सचमुच महज संयोग है?" क्या इस प्रश्न का उत्तर ईश्वर के अस्तित्व और एकता पर जोर देकर देना अधिक तर्कसंगत है, या यह दावा करके कि सब कुछ अंधे संयोग का परिणाम है?

सभी पैगम्बरों और संदेशवाहकों को दिए गए चमत्कार इस बात के संकेत हैं कि जो लोग उन्हें करते हैं, उन्हें ईश्वर ने जीवित किया है। इसके अलावा, वे ईश्वर द्वारा मानवीय ज्ञान की सबसे दूरगामी सीमा के संकेत हैं और हमें वैज्ञानिक प्रयोग और अवलोकन के माध्यम से उनका अनुसरण करने के लिए प्रोत्साहित करते हैं, जब तक कि वे मानवता की सामान्य संपत्ति न बन जाएं। उदाहरण के लिए, चूंकि मुहम्मद पत्थरों और स्पष्ट रूप से सूखी भूमि से पानी निकालने, निर्जीव वस्तुओं से बात करने और उनसे अपनी माँगें पूरी करवाने, लोगों को ठीक करने और अपनी प्रार्थनाएँ सुनने में सक्षम थे, इसलिए हमें भी वही परिणाम लाने के तरीके खोजने के लिए अपने सभी प्रयास करने चाहिए।

बीसवें पत्र में, सईद नूरसी ने ईश्वरीय एकता के विभिन्न पहलुओं पर चर्चा की है, जो इन वाक्यांशों से प्रकट होता है - ईश्वर के अलावा कोई ईश्वर नहीं है, (वह) एक है, उसका कोई साथी नहीं है, उसका राज्य है, सारी प्रशंसा उसी की है, केवल वही जीवन देता है और मरता है, वह जीवित है और मरता नहीं, उसके हाथ में सब अच्छा है, वह हर चीज पर शक्तिशाली है, और उसी की ओर घर वापसी है।

पहली नज़र में, प्रत्येक वाक्यांश का अर्थ काफी सीधा प्रतीत होता है: ईश्वर एक है, सब कुछ उसका है, जीवन देने और उसे छीनने की शक्ति रखता है, शाश्वत है और अच्छाई प्रदान करता है, और वह हमारा अंतिम गंतव्य है। लेकिन सैद नूरसी, ऐसी सतही समझ से संतुष्ट नहीं होकर, अर्थों की परतों को हटाकर और भी गहरे अर्थों को उजागर करता है, ठीक वैसे ही जैसे एक फूल की पूरी महिमा उसकी पंखुड़ियों की परतों से प्रकट होती है जो उसके मूल को प्रकट करने के लिए पीछे गिरती हैं।

उदाहरण के लिए, वह लिखते हैं कि ईश्वर के अलावा कोई ईश्वर नहीं है, जो हमारे भीतर यह समझ पैदा करता है कि हमें ईश्वर के अलावा किसी और पर या किसी चीज़ पर निर्भर नहीं रहना चाहिए, क्योंकि केवल ईश्वर ही हमारे रास्ते में अच्छाई या बुराई भेज सकता है। यह उनकी सृष्टि की विशाल बहुतायत और विविधता के बावजूद सृष्टि के क्षेत्र में उनकी एकता को भी साबित करता है, क्योंकि सभी चीज़ें उनके नाम और गुणों के प्रतिबिंब मात्र हैं और इस तरह उन्हें अपने निर्माता के रूप में इंगित करते हैं और हमें उनके बारे में थोड़ा ज्ञान प्राप्त करने की अनुमति देते हैं।

(वह) एक है, हमें सभी प्रकार के बहुदेववाद से मुक्त करता है और ईश्वर के अलावा किसी अन्य व्यक्ति या वस्तु को वास्तविक शक्ति प्रदान करने से मुक्त करता है, हमें ब्रह्माण्ड में व्याप्त पूर्ण व्यवस्था और संवेदनशील संतुलन पर ध्यान देने के लिए प्रेरित करता है और इस तरह से इसकी कार्यप्रणाली सुनिश्चित करता है कि हम इसके इतने आदी हो जाते हैं कि हम इसे हल्के में लेने लगते हैं।

इस प्रकार की जागरूकता, बदले में, अन्य नामों के अलावा, सर्वशक्तिमान और सर्वज्ञ, उनके नामों को प्रकट करती है, जिससे उनके बारे में हमारा ज्ञान बढ़ता है।

अन्य वाक्यांशों में भी गहरे अर्थ निहित हैं। इतने ऊंचे सत्य को व्यक्त करने के लिए इतने कम शब्दों का उपयोग कुरान की चमत्कारी शैली का सिर्फ़ एक पहलू है, जो सैद नूरसी के अनुसार, अक्सर सिर्फ़ सिरा ही प्रकट करती है और फिर हमें ईश्वरीय ज्ञान के सागर में गोता लगाने के लिए अवलोकन और चिंतन की अपनी शक्तियों का उपयोग करने के लिए कहती है, जिसकी प्रत्येक आयत - यहाँ तक कि प्रत्येक शब्द - सतह पर केवल एक लहर है।

उनतीसवें पत्र के अंत में, सईद नूरसी ने एक ऐसे विषय पर चर्चा की है जो इस्लामी दुनिया में विवादास्पद बना हुआ है, हालाँकि यह सदियों से इस्लाम का एक बुनियादी हिस्सा रहा है (दूसरों के अनुसार शुरू से ही): सूफीवाद (तरीका)। लोगों को इस्लाम की ओर आकर्षित करने और फिर उन्हें अपने दायरे में रखने के एक शक्तिशाली साधन के रूप में इसकी सिद्ध सफलता के बावजूद, कुछ मुसलमान और अन्य लोग भौतिकवाद, धर्मनिरपेक्षता और किसी भी रूप में धर्म के प्रति उदासीनता या सीधे अनादर से प्रेरित होकर इसे मुस्लिम दुनिया के पिछड़ेपन, अविकसितता, गरीबी, निरक्षरता के लिए दोषी ठहराते हैं - संक्षेप में, उन सभी भौतिक कमियों के लिए जो इसे पश्चिम से कमतर बनाती हैं।

सईद नूरसी ने तर्कपूर्ण तर्कों के साथ जवाब दिया: आप केवल कुछ अनुयायियों की गलतियों के लिए एक पूरी व्यवस्था की निंदा कैसे कर सकते हैं? (यदि यह स्वीकार्य था, तो लोकतंत्र या मानवाधिकारों की पश्चिम की बहुप्रशंसित अवधारणाओं की स्थिति क्या होगी?) आप मुस्लिम एकता और पहचान की जड़ पर कैसे प्रहार कर सकते हैं, जबकि मुस्लिम दुनिया बाहरी और आंतरिक हमलों के अधीन है? (क्या आसन्न खतरे के सामने आत्म-विनाश का रास्ता अपनाना तर्कसंगत है?) आप उन लोगों को कैसे वंचित कर सकते हैं जो ईश्वर के बारे में अधिक ज्ञान प्राप्त करना चाहते हैं ताकि वे ईश्वर के करीब आ सकें और परलोक में सफल हो सकें, जबकि आप उन्हें केवल यह अस्थायी अस्तित्व ही दे सकते हैं जिसका कोई स्थायी मूल्य या संतुष्टि नहीं है? चूंकि मानवता को ईश्वर की सेवा करने के लिए बनाया गया था, ताकि वह शरीयत (ईश्वरीय कानून) और पैगंबर के सुन्नाह (उनके "जीवित कुरान" के रूप में) के अनुरूप ईश्वरीय नामों और गुणों को प्रतिबिंबित कर सके, तो आप कौन होते हैं जो ईश्वर और पैगंबर की अवहेलना करते हुए कहते हैं कि सूफीवाद, जो "एक अनुशासन या तकनीक है जो लोगों को शरीयत का बेहतर तरीके से अभ्यास करने की अनुमति देता है," को त्याग दिया जाना चाहिए ताकि इस अस्थायी दुनिया और राष्ट्र-राज्य के हितों को बिना किसी बाधा के आगे बढ़ाया जा सके?

उनका दृष्टिकोण ऐसे लोगों द्वारा प्रस्तुत दृष्टिकोण से बिल्कुल भिन्न है।
अपने लेखन के माध्यम से वे लोगों को याद दिलाते हैं कि मुस्लिम जगत के अग्रणी वैज्ञानिक प्रायः सूफी थे और ऐसा कोई कारण नहीं है कि धार्मिक और वैज्ञानिक ज्ञान का ऐसा मेल सफल न हो।

आज हम मुस्लिम जगत को विश्व समुदाय के बीच अपना उचित स्थान दिलाने में अग्रणी भूमिका निभाएंगे।
विश्व की महान सभ्यताओं का इतिहास.

वह मानते हैं कि इस रास्ते पर चलने में कुछ खतरे भी हैं, जैसे
सूफीवाद के आध्यात्मिक आनंद के पक्ष में शरिया और सुन्नाह की उपेक्षा करना और
अपने सुखों पर गर्व करने के कारण निम्न स्तर पर पहुँच जाना या कम सुखों पर पहुँच जाना
आध्यात्मिक उपलब्धियाँ, लेकिन कहते हैं कि सभी वास्तविक और संभावित खतरे दूर हैं
सूफीवाद से लोगों और समाज को जो लाभ मिलता है, उससे यह कहीं अधिक है।
संपूर्ण। इसके अलावा, कौन सा रास्ता खतरे से पूरी तरह मुक्त है? क्या "लोकतांत्रिक" यूरोप ने नाज़ीवाद, फ़ासीवाद, साम्यवाद और अन्य संकटों को जन्म नहीं दिया?
पिछली सदी का? और फिर भी लोकतंत्र का मूलभूत सत्य कभी नहीं होता
ऐसे भयावह परिणामों के लिए सवाल उठाए जाने या उन्हें दोषी ठहराए जाने की आवश्यकता क्यों है?
क्या आध्यात्मिक तरीके से किसी भी तरह से व्यवहार किया जा सकता है?

अन्य पत्रों में सईद नूरसी द्वारा दिए गए सीधे उत्तर शामिल हैं
सदियों से मुस्लिम, ईसाई और यहूदी विद्वानों और धर्मशास्त्रियों द्वारा, साधारण विश्वासियों की तो बात ही छोड़िए, उठाए गए महान मुद्दे:

• ईश्वर का अस्तित्व और एकता: इस प्रकार यदि प्रत्येक प्राणी या कण का अस्तित्व प्रकृति, कारणों या स्वयं के कारण माना जाता है, तो प्रत्येक में ईश्वर का एकत्व अवश्य होगा।
सर्वव्यापी ज्ञान और पूर्ण शक्ति या अपने अद्भुत कर्तव्यों को पूरा करने के लिए आवश्यक अनगिनत क्रियाशील उपकरण। लेकिन अगर अस्तित्व है
एकता के एक मात्र तत्व को जिम्मेदार ठहराते हुए, प्रत्येक कण उसका अधिकारी बन जाता है
परिणामी कनेक्शन के माध्यम से। यह उसे किसी तरह से उसे प्रकट करने में सक्षम बनाता है और, उसकी
अभिव्यक्ति का एक उद्देश्य होने के साथ-साथ, उस पर निर्भर करता है
उसका असीम ज्ञान और शक्ति। सृष्टिकर्ता के साथ यह रिश्ता
सत्ता उसे अपने से कहीं अधिक कार्य और कर्तव्य करने की अनुमति देती है
शक्ति।
• जीवन का अर्थ: इस प्रकार यह संसार क्षेत्र है, और यह जीवन क्षेत्र है।
शब्द, जिसमें लोगों का परीक्षण किया जाता है ताकि ऊंचा हीरा जैसा मनोबल हो
बेस कोयला जैसे लोगों से अलग किया जा सकता है। यही कारण है कि शैतान थे
ईश्वरीय आज्ञाओं के साथ पैगंबरों को बनाया गया और भेजा गया।
इस तरह के परीक्षण से अच्छाई और बुराई में अंतर नहीं किया जा सकेगा और
समान व्यवहार: अबू बकर की आत्मा, जो उच्चतम स्तर तक पहुंची,
अबू जहल के समान स्तर पर रहेगा, जो सबसे निचले स्तर पर गिर गया। इस प्रकार शैतानों और बुराई का निर्माण पूरी तरह से अच्छा है, क्योंकि वे
अच्छे और सार्वभौमिक परिणाम प्राप्त करने का कारण बनें।
क्योंकि वे अपनी कमज़ोरी के कारण ऐसा करते हैं, अपने स्वतंत्र अधिकारों का दुरुपयोग करते हैं
इच्छाशक्ति, या कुछ बाहरी परिस्थितियाँ जिनके कारण वे प्रकट हुए।

परिणामस्वरूप, लोगों के साथ होने वाली सभी बुराइयाँ और दुर्भाग्य उनके अपने अंदर ही निहित हैं, ईश्वर द्वारा उनकी रचना में नहीं।

• मृत्यु का अर्थ: खुशखबरी! मृत्यु विनाश या विनाश नहीं है

अस्तित्वहीनता की ओर जाना, न कि शाश्वत अलगाव या संयोगवश घटित घटना बिना किसी लेखक के। बल्कि सर्वज्ञ और दयालु लेखक आपको सेवा से मुक्त कर रहा है, आपका निवास स्थान बदल रहा है, और मैं आपको उस चिरस्थायी खुशी की ओर भेज रहा हूँ जो आपका सच्चा घर है। मृत्यु उस मध्यवर्ती जगत से मिलन का द्वार है, जहां आप आप अपने 99 प्रतिशत दोस्तों से मिलेंगे।

• भविष्यद्वक्ताओं और संदेशवाहकों की भूमिका : सृष्टिकर्ता के रूप में

जानता है, जो जानता है वह बोलेगा। चूँकि वह बोलेगा, इसलिए वह बोलेगा उन लोगों से बात करें जिनमें चेतना, विचार और वाणी है। चूँकि वह ऐसा करेगा ऐसे लोगों से बात करें, वह मानवता से बात करेंगे, जिनकी प्रकृति और जागरूकता सभी चेतन प्राणियों में सबसे व्यापक है। चूँकि वह मानवता से बात करेंगे, वह सबसे परिपूर्ण और योग्य लोगों से बात करेंगे पते का.

• प्रार्थना का कारण: प्रार्थना एक प्रकार की उपासना है जिसके माध्यम से

सेवक परमेश्वर के सामने अपनी लाचारी और गरीबी का बखान करते हैं। प्रार्थना के स्पष्ट उद्देश्य प्रार्थना करने के कारण हैं, और इसके पुरस्कार हैं मुख्यतः परलोक में दिया जाता है। यदि आपकी प्रार्थना अनुत्तरित प्रतीत होती है, यह मत कहो कि मेरी प्रार्थना स्वीकार नहीं हुई, बल्कि कहो कि समय आ गया है। क्योंकि प्रार्थना अभी ख़त्म नहीं हुई है।"

चूंकि उनके श्रोताओं में अधिकांश मुस्लिम थे, इसलिए उनके विषय थे: उनके लिए विशेष रुचि, हालांकि वह नास्तिकों और अज्ञेयवादियों को संबोधित करने की उपेक्षा नहीं करते हैं। सईद नूरसी कुरान के चमत्कार का विश्लेषण करते हैं, पैगम्बर का स्वर्गारोहण, रमजान, सूफीवाद और इस्लामी विश्वास से संबंधित मुद्दे। इनमें, वह अपने उत्तरों को सभी लोगों के लिए स्पष्ट और समझने योग्य बनाने के लिए बहुत प्रयास करता है। धार्मिक बातों के पर्दे के पीछे छिपना संभव नहीं है और अंध विश्वास की मांग की जाती है।

अधिक व्यक्तिगत स्तर पर, वह समझाता है कि विश्वासियों को कैसा आचरण करना चाहिए वह खुद क्यों राजनीति और अन्य लोगों के प्रति दायित्वों से बचते हैं, विश्वासियों के बीच भाईचारे और बहनचारे का मूल्य और अन्य लोगों के साथ मजबूत संबंध। परिवार के सदस्य और रिश्तेदार, अकेलापन, अनैच्छिक (बुरे) विचार, और अन्य मुद्दे जो उनके छात्रों के लिए रुचिकर थे। ये सभी एक पर आधारित हैं कुरान की बुनियाद पर दृढ़ और पूरी तरह तर्कसंगत हैं, दिखाते हैं-

एक बार फिर इस बात पर जोर देते हुए कि कुरान मानव जीवन के हर क्षेत्र के लिए प्रासंगिक है, चाहे इसके पाठक जिस युग या स्थान में रहते हों।

सईद नूरसी अपने छात्रों और मुस्लिम दुनिया के साथ इस पत्र-व्यवहार को समाप्त करते हुए उन सभी बातों को संक्षेप में प्रस्तुत करते हैं जो उन्होंने आसानी से याद रखने योग्य वाक्यांशों में व्यक्त करने का प्रयास किया है। उदाहरण के लिए:

• (आज की दुनिया में) अन्याय न्याय की टोपी पहनता है, देशद्रोह देशभक्ति के जोश का लबादा पहनता है, जिहाद को आक्रामकता और मानवाधिकारों का उल्लंघन कहा जाता है, और गुलामी को मुक्ति के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। संक्षेप में, विपरीतों ने रूप बदल लिए हैं। • सभी क्रांतियाँ, सामाजिक भ्रष्टाचार और नैतिक असफलताएँ इस कारण से होती हैं: "जब तक मेरा अपना पेट भरा है, मुझे

परवाह नहीं है कि दूसरे भूख से मरें," और: "आपको काम करके मेरी सुविधा की लागत वहन करनी होगी ताकि मैं खा सकूँ।"

पहला रवैया ज़कात के ज़रिए ठीक होता है; दूसरा ब्याज पर रोक लगाकर। कुरान का न्याय दरवाज़े पर खड़ा है और ब्याज को दूर भगाता है, यह कहते हुए: "तुम्हें अंदर आने का कोई अधिकार नहीं है!" फिर भी मानवता ने इस निषेध को नज़रअंदाज़ किया और उसे बहुत बड़ा झटका लगा। इससे भी बड़ा झटका लगने से बचने के लिए उसे अब इस पर ध्यान देना चाहिए।

• कुरान मानवता के लिए दया है, और इसलिए एक ऐसी सभ्यता का आग्रह करता है जो अधिकतम लोगों के लिए अधिकतम खुशी सुनिश्चित करे।

पश्चिमी सभ्यता, अपने वर्तमान चरण में, पांच नकारात्मक सिद्धांतों पर आधारित है: यह शक्ति पर आधारित है, और शक्ति उत्पीड़न की ओर प्रवृत्त होती है; यह व्यक्तिगत स्वार्थ को साकार करना चाहती है, भले ही इसके कारण लोग चीजों को प्राप्त करने के लिए पागलों की तरह दौड़ पड़ते हैं; यह जीवन को संघर्ष मानती है, जो आंतरिक और बाह्य संघर्ष का कारण बनता है; यह राष्ट्रीय और/या नस्लीय अलगाववाद के माध्यम से एकीकृत करती है, और "दूसरों" के संसाधनों और क्षेत्रों को निगल कर "पोषण" करती है, जिससे दोनों ही भयानक संघर्ष उत्पन्न होते हैं; और यह नई सनक या उत्तेजित इच्छाओं (चाहे संतुष्टि वास्तविक हो या नहीं) को संतुष्ट करने का प्रयास करती है, और इस प्रकार लोगों पर अत्याचार करती है।

इस्लामी सभ्यता अधिकार (शक्ति नहीं) पर आधारित है, जिसके लिए न्याय और संतुलन की आवश्यकता होती है; सद्गुण को प्रोत्साहित करती है, जो आपसी स्नेह और प्रेम को बढ़ावा देती है; जीवन को आपसी मदद के रूप में देखती है, जो एकता और एकजुटता की ओर ले जाती है; एक समान धर्म के माध्यम से लोगों को एक समान राज्य में एकजुट करती है, जो आंतरिक शांति, भाईचारे और बाहरी दुश्मनों के खिलाफ स्वेच्छा से आत्मरक्षा की ओर ले जाती है; और लोगों को सत्य की ओर ले जाती है। इसलिए यह वैज्ञानिक प्रगति को प्रोत्साहित करती है और लोगों को नैतिक पूर्णता के माध्यम से मानवता के उच्च पदों पर पहुंचाती है। इस्लाम से कभी नाता न तोड़ो, क्योंकि यह

हमारे अस्तित्व की गारंटी देता है। दिल और आत्मा से उस पर कायम रहो, नहीं तो हम नष्ट हो जाएँगे पूरी तरह से.

• किसी चीज़ के अस्तित्व की पुष्टि न करना अक्सर पुष्टि करने के साथ भ्रमित होता है कि यह मौजूद नहीं है। किसी चीज़ के होने के संकेत या सबूत का अभाव यदि लोग इसके अस्तित्व को स्वीकार नहीं करते हैं तो यह बात उन्हें उचित नहीं लगती। इसके अस्तित्व को स्वीकार करने के लिए इच्छुक हैं। लेकिन किसी चीज़ के अस्तित्व को न मानने के लिए उसके अस्तित्व को साबित करने वाले स्पष्ट सबूत की आवश्यकता होती है, क्योंकि इसके अस्तित्व को न मानना संदेह है, जबकि इसके अस्तित्व को न मानना इनकार है। • हर दुर्भाग्य में ईश्वरीय कृपा की डिग्री होती है। इस बात का ध्यान रखें अधिक दुर्भाग्य, जिससे छोटे के पक्ष के लिए आभारी होना दुर्भाग्य। बाद वाले पर ध्यान केंद्रित करने और अतिशयोक्ति करने से यह बढ़ता है, और हृदय या कल्पना में यह अतिशयोक्तिपूर्ण प्रतिबिंब इसे बनाता है वास्तविक और परेशानी भरा.

• सब कुछ लेने से पहले किसी मामले की सफलता को ईश्वर को सौंपना आवश्यक सावधानियाँ रखना और सभी आवश्यक व्यवस्थाएँ करना आलस्य है। सभी उपाय करने के बाद इच्छित परिणाम की प्राप्ति को ईश्वर पर छोड़ देना जो किया जा सकता है, वह है उस पर भरोसा करना। परिणाम के बाद संतुष्टि अपना प्रयास करना एक प्रशंसनीय गुण है जो आगे और प्रयास करने को प्रोत्साहित करता है और व्यक्ति की ऊर्जा और उद्यमशीलता को पुनः सक्रिय करता है। एक पहले से ही प्रयास को नष्ट कर देता है.

• यदि लोग इस्लाम के आदेशों का सख्ती से तथा दृढ़ विश्वास के साथ पालन करें, पूरी ईमानदारी, इस्लामी समाधान खोजने की उनकी इच्छा और प्रयास नई समस्याएं उन्हें पूर्णता की ओर ले जाती हैं। ऐसी इच्छा या प्रयास जो इस्लामी आदेशों के प्रति उदासीन हैं और इसलिए इस्लाम से बाहर हैं, उन्हें बर्बादी की ओर ले जाएं। इन मुश्किल समयों के दौरान कार्रवाई का सही तरीका यह नहीं है कि "नए" कानून बनाने के लिए दूरगामी प्रयास किए जाएं। कुरान और सुन्नाह। बल्कि, यह दरवाजे बंद करना और यहां तक कि शटर भी बंद करना है नवीनता के विरुद्ध खिड़कियाँ। धार्मिक कर्तव्यों के प्रति उदासीन लोग, स्वतंत्र और इस बात को लेकर सहज हैं कि वे ऐसा करते हैं या नहीं, उन्हें पुरस्कृत नहीं किया जाना चाहिए उन्हें उन कर्तव्यों से मुक्त करने के लिए विशेष छूट दी गई है। दूसरों को उन्हें सुधरने की चेतावनी देनी चाहिए।

निष्कर्ष

धर्म पर लिखने वाले कई लोग अपना जीवन अकादमिक लेखन में बिताते हैं ऐसे ग्रंथ या धार्मिक ग्रंथ जो अमूर्त हैं या पाठक की समझ से अलग हैं

जीवन। अन्य लोग ऐसे सरल और “अच्छा महसूस कराने वाले” स्पष्टीकरण देते हैं कि वे बेकार से भी बदतर हैं और वास्तव में बहुत नुकसान पहुंचा सकते हैं।

हालांकि, सईद नूरसी ने सरल दृष्टांतों और रूपकों के माध्यम से समान बिंदुओं को उतनी ही वाक्पटुता से प्रस्तुत किया है, जिससे हर कोई लाभान्वित हो सकता है। इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि उनके समाधान और स्पष्टीकरण वास्तविक जीवन में फिट बैठते हैं, चाहे हमारा मानसिक, आध्यात्मिक या सांस्कृतिक विकास का स्तर कुछ भी हो। इस संबंध में, वह कुरान की शैली का अनुसरण करते हैं, जो हर व्यक्ति को संबोधित अंतिम ईश्वरीय रहस्योद्घाटन है, चाहे उसका विशेष युग, संस्कृति, भाषा, आयु या बुद्धि का स्तर कुछ भी हो।

हालाँकि बीसवीं सदी की दूसरी तिमाही में लिखे गए, सईद नूरसी के विचार समय के साथ पुराने नहीं हुए हैं। अगर जातीयता या किसी अन्य मानवीय विचार पर आधारित राष्ट्रवाद से बचने के उनके आह्वान पर ध्यान दिया गया होता, तो क्या हमें बोस्निया और रवांडा में अत्याचारों को सहना पड़ता, या नाजी जर्मनी, स्टालिनवादी रूस और माओवादी चीन के और भी भयानक उदाहरण देखने पड़ते? अगर हमने अपनी प्रगति को वैचारिक दावों और काल्पनिक विचारों के बजाय वैज्ञानिक ज्ञान और समझ पर आधारित किया होता, तो क्या हमें कम्युनिस्ट शासनों को वास्तविकता और लोगों को मानव बनाने वाली चीज़ों की अनदेखी करके अपने देशों और अपने नागरिकों को नष्ट करते देखना पड़ता? अगर हमने अपने ज्ञान और धन का उपयोग केवल कुछ वर्गों के बजाय पूरी मानवता के उत्थान के लिए किया होता, तो क्या हम अभी भी तीसरी दुनिया की गरीबी, कर्ज, निरक्षरता, मानवाधिकारों के उल्लंघन और हर कीमत पर सत्ता पर काबिज रहने वाले गुंडे नेताओं की विशाल और स्पष्ट रूप से अघुलनशील समस्याओं का सामना कर रहे होते?

क्या हम अपने अधिकांश संसाधनों को बेहतर हथियार बनाने या राष्ट्रीय अवसंरचनाओं को बेहतर बनाने पर खर्च करेंगे ताकि उन लोगों को भोजन और आधुनिक जीवन की सुविधाएँ प्रदान की जा सकें जिनके पास ये सुविधाएँ नहीं हैं; सैन्य अड्डे बनाने पर या स्कूल, क्लीनिक, अस्पताल और बेहतर आवास बनाने पर; उन लोगों से दूर जाने पर जो हमसे अलग हैं बजाय इसके कि हम अपने सभी बच्चों के बेहतर भविष्य के लिए मिलकर काम करें? उनके शब्दों को ध्यान से पढ़ें और उनमें खुद को खोजने की कोशिश करें ताकि आप अपने और अपने आस-पास के लोगों के जीवन को बेहतर बनाने में अपना योगदान दे सकें।

अंतिम टिप्पणी: इस पुस्तक में इस गलत धारणा को दूर करने का हरसंभव प्रयास किया गया है कि इस्लाम एक पुरुष-प्रधान धर्म है और केवल पुरुषों के लिए है।
यह दृष्टिकोण मीडिया और शिक्षा जगत में लोकप्रिय हो चुका है। हम यह बताना चाहेंगे कि किसी भी धर्म को उसके अनुयायियों की गलतफहमियों के लिए दोषी नहीं ठहराया जा सकता। इस्लाम सिखाता है कि आदम और हव्वा को बनाया गया, वे चूक गए और उन्हें समान रूप से क्षमा किया गया; कि ईश्वर के सामने पुरुष और महिला समान हैं।

आँखें; और वे अपनी जिम्मेदारियों और कर्तव्यों के संबंध में समान हैं
ईश्वर और दूसरों के प्रति। जैसा कि ईश्वर कुरान में कहते हैं: मैं किसी को भी ईश्वर के पास जाने की अनुमति नहीं दूंगा
तुममें से किसी के भी कर्म को व्यर्थ न जाने दो, चाहे वह पुरुष हो या स्त्री। तुम एक हो
दूसरे से (3:195)। हालाँकि, पाठ्य निष्ठा के हित में, अधिकांश
इस समय केवल पुरुषों का ही उल्लेख किया गया है।

— संपादक

प्रथम पत्र

पहला पत्र

जीवन की डिग्री • मृत्यु में आशीर्वाद • नरक का स्थान • प्रतीकात्मक प्रेम और वास्तविक प्रेम

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

... और हम उससे सहायता के लिए प्रार्थना करते हैं।

उसके नाम में, उसकी महिमा हो।

ऐसी कोई भी चीज़ नहीं है जो उसकी स्तुति से उसकी महिमा न करती हो।

इस पत्र में चार प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर हैं।

पहला प्रश्न: क्या ख़ाद्र अभी भी जीवित है?[1] यदि हाँ, तो कुछ विद्वान इसे अस्वीकार क्यों करते हैं?

जवाब: वह अभी भी जीवित है। जीवन की पाँच अवस्थाओं में से ख़ाद्र को दूसरी अवस्था प्राप्त है। यही कारण है कि ऐसे विद्वान इसे अस्वीकार करते हैं।

पहली डिग्री वह है जैसे हम यहाँ और अभी जीते हैं, जो कुछ शर्तों से बंधा हुआ है। दूसरी डिग्री खादर और एलिजा के जीवन में प्रकट होती है।

एक हद तक यह मुफ़्त है, क्योंकि जिनके पास यह है वे एक ही समय में अलग-अलग जगहों पर हो सकते हैं और सामान्य मानव जीवन की आवश्यकताओं से बंधे नहीं होते।

---

1 ख़ाद्र (ख़िदिर): ईश्वर के धर्मी सेवकों में से एक, जिसके बारे में माना जाता है कि वह एक पैगम्बर रहा होगा। वह शाश्वत जीवन या अमृत के माध्यम से अनंत काल की प्राप्ति का प्रतिनिधित्व करता है। मूसा के साथ उसके संगति से यह समझा जा सकता है (18:65-82) कि उसका मिशन अस्तित्व के आध्यात्मिक क्षेत्र से संबंधित है। उसे ईश्वर के ज्ञान और किसी प्रकार के शाश्वत जीवन का आशीर्वाद प्राप्त था, और वह जीवन की घटनाओं के पीछे की बुद्धि को समझा सकता है। (ट्र.)

उदाहरण के लिए, उन्हें खाने-पीने की ज़रूरत नहीं होती। कुछ ईश्वर-भक्त व्यक्तियों को जो छिपे हुए सत्य को पहचान सकते हैं, ख़ाद्र के साथ जो अनुभव हुए हैं, वे इस बात के लिए पर्याप्त हैं जीवन की इस डिग्री को प्रकाशित और सिद्ध करें। इसके अलावा, एक आध्यात्मिक डिग्री या स्टेशन जो संत अपनी आध्यात्मिक यात्रा में प्राप्त करते हैं वह है खद्र का स्टेशन। जो इस डिग्री को प्राप्त करता है वह खादर से मिल सकता है और सीधे उससे निर्देश प्राप्त कर सकता है। कभी-कभी इस पद पर आसीन व्यक्ति को भी ख़ाद्र समझ लिया जाता है।

तीसरी डिग्री भविष्यद्वक्ता यीशु और हनोक के जीवन में प्रकट होती है, जो अपने भौतिक शरीर के साथ स्वर्ग में रहते हैं। उनके शरीर किसी बंधन से बंधे नहीं हैं मानव जीवन की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए उन्होंने सूक्ष्म शरीर और देवदूत के समान जीवन की हद तक एक प्रकार का परिष्कार और चमक हासिल कर ली है। पैगंबर मुहम्मद[2] ने कहा है: "यीशु दुनिया के अंत से पहले वापस आएँगे समय के साथ-साथ मुहम्मद के शरिया का पालन करें।" इसका तात्पर्य यह है कि ईसाई धर्म अपने उधार तत्वों और अंधविश्वासों से शुद्ध होकर इस्लाम में शामिल हो गए। परिणामस्वरूप, परमेश्वर का यह चुना हुआ मार्ग (सच्चा धर्म) “प्रकाशन की तलवार” का उपयोग करेगा प्राकृतिक दर्शन द्वारा स्थापित अविश्वास और पूर्ण भौतिकवाद की प्रवृत्तियों को मिटाना।

चौथी डिग्री शहीदों का जीवन है। कुरान की कुछ आयतों में कहा गया है शहीदों को मृतक गैर-शहीदों की तुलना में उच्च स्तर का जीवन मिलता है। शहीदों ने अपने जीवन को उनके मार्ग में बलिदान कर दिया, सर्वशक्तिमान ईश्वर उन्हें सांसारिक जीवन के समान एक मध्यवर्ती जीवन प्रदान करता है, बिना किसी दर्द और परेशानी के। वे ऐसा करते हैं उन्हें मौत का दर्द महसूस नहीं होता या वे नहीं जानते कि वे मर चुके हैं। इसके बजाय, वे खुद को एक बेहतर दुनिया में स्थानांतरित मानते हैं और पूर्ण खुशी का आनंद लेते हैं। दूसरी ओर, मृतकों को पता है कि वे मर चुके हैं (हालाँकि उनका आत्माएं शाश्वत हैं) और शहीदों की तुलना में मध्यवर्ती जीवन में कम आनंद का अनुभव करते हैं।

इस अंतर को इस प्रकार समझाया जा सकता है: एक सपने में दो लोग स्वर्ग जैसे सुन्दर महल में प्रवेश करो। तुम्हें बहुत कम सुख मिलता है, क्योंकि वह जानता है कि वह सपना देख रहा है और जब वह ऐसा करेगा तो सब कुछ गायब हो जाएगा जागता है। दूसरे व्यक्ति को इस बात का पता नहीं होता और इसलिए वह पूरी तरह संतुष्ट और खुश महसूस करता है। प्रासंगिक कुरान की आयतों के अलावा, कुछ पैगंबरी आयतें भी हैं

---

[2] पैगम्बर मुहम्मद से संबंधित किसी भी प्रकाशन में उनके नाम या उपाधि के बाद निम्नलिखित शब्द लिखे जाते हैं: वाक्यांश "उस पर शांति और आशीर्वाद हो," उसके प्रति अपना सम्मान दिखाने के लिए और क्योंकि यह है ऐसा करना धार्मिक आवश्यकता है। इसी तरह का वाक्यांश उनके साथियों और अन्य लोगों के लिए भी इस्तेमाल किया जाता है प्रसिद्ध मुसलमान कहते हैं: “अल्लाह उससे प्रसन्न हो।” हालाँकि, जैसे-जैसे यह प्रथा आगे बढ़ती है गैर-मुस्लिम पाठकों को विचलित करने वाले हो सकते हैं, ये वाक्यांश इस पुस्तक में नहीं दिखाई देते हैं, यह समझ कि यह मान लिया गया है और इसका कोई अनादर करने का इरादा नहीं है। (संपादक)

परम्पराएँ (हदीस)3 और अनगिनत अनुभव साबित करते हैं कि शहीद एक महान योद्धा का नेतृत्व करते हैं। जीवन में कुछ हद तक चेतना है और वे जानते हैं कि वे जीवित हैं। यह बात विशेष रूप से अनुभव की गई वास्तविकता में स्पष्ट रूप से दिखाई देती है कि हमजा ईश्वर की इच्छा है कि उनकी सहायता करें, उनकी मृत्यु के बाद भी, जिनकी सहायता ईश्वर करना चाहता है, उनकी सहायता करें। और अपने कुछ सांसारिक मामलों को आगे बढ़ा सकते हैं।

मेरे एक छात्र, मेरे चचेरे भाई 'उबैद, मेरी कंपनी में शहीद हो गए और मेरी ओर से [पूर्वी तुर्की में रूसियों से लड़ते समय] प्रथम विश्व युद्ध]। मुझे उसका एक सच्चा सपना आया, जिसमें मैंने खुद को प्रवेश करते देखा उनकी कब्र पर जाएं और उन्हें शहीदों जैसा जीवन जीते हुए देखें। उसने मुझसे कहा कि वह ज़िंदा है और मैं मर चुकी हूँ। वह बहुत रोया था उन्होंने कहा, "मैंने रूसी आक्रमण से बचने के लिए भूमिगत एक बढ़िया घर बनवाया है।" आक्रमण। इस सपने ने, कुछ अन्य संकेतों के साथ, मुझे आश्वस्त किया कि कुछ स्थितियों में शहीदों का जीवन मृतकों से अधिक होता है।

पांचवी डिग्री मृतक का आध्यात्मिक जीवन है। मृत्यु एक परिवर्तन है निवास और सांसारिक कर्तव्यों से मुक्ति के साथ आत्मा मुक्त हो जाना, न कि अस्तित्वहीनता में पूर्ण विनाश। जीवन की यह डिग्री स्थापित है कुछ ईश्वरीय व्यक्तियों की आत्माओं जैसे बार-बार देखे गए तथ्यों से स्पष्ट है अपने मानव (भौतिक) रूपों में प्रकट होना और उन लोगों द्वारा देखा जाना जिनके पास छिपे हुए सत्यों में अंतर्दृष्टि। एक और सबूत यह है कि मृतक की हमसे संवाद करने की क्षमता तब भी होती है जब हम सपने में होते हैं या जागते हैं।

दूसरा प्रश्न: ऐसी आयतें जैसे: उसने मृत्यु और जीवन को बनाया है कि वह तुममें से कौन सबसे अच्छा आचरण रखता है, इसकी परीक्षा करो (67:2) इसका तात्पर्य है कि मृत्यु पैदा की गई है, जैसे जीवन, और इस प्रकार जीवित प्राणियों के लिए एक वरदान। लेकिन मृत्यु सड़न प्रतीत होती है, जीवन की रोशनी को बुझा देती है और जीवित शरीर को सड़ने का कारण बनती है, और सुखों को नष्ट कर देता है। यह आशीर्वाद कैसे हो सकता है?

उत्तर: मृत्यु इस सांसारिक जीवन के कर्तव्यों से मुक्ति है, निवास का परिवर्तन है, शरीर का स्थानांतरण है, अनंत जीवन का आमंत्रण और आरंभ है। संसार निरंतर कर्मों के माध्यम से जीवंत है।

---

3 हदीस शब्द हद्दाथा (सूचित करना) से लिया गया है, जिसका शाब्दिक अर्थ है समाचार या सूचना। हदीस शब्द का एक और शाब्दिक अर्थ है कुछ ऐसा जो किसी व्यक्ति के भीतर घटित होता है । समय के साथ, इसने हर शब्द, कार्य और अनुमोदन का अर्थ ग्रहण कर लिया है अल्लाह के रसूल को। मुहद्दिथुन (हदीस के विद्वान, या परंपरावादी) के अनुसार , ईश्वर के रसूल से जुड़ी हर बात हदीस (परंपरा) के अर्थ में शामिल है। हदीस को आमतौर पर सुन्नत के पर्याय के रूप में प्रयोग किया जाता है, इसलिए यह हर कार्य का रिकॉर्ड है, यह शब्द, ईश्वर के दूत की पुष्टि और पुष्टि है। यह इस्लामी कानून का दूसरा स्रोत है (कुरान प्रथम है) (अनुवाद)

सृजन और पूर्वनिर्धारण की, और फिर भी इसे लगातार छीन लिया जाता है
सृजन, दृढ़ संकल्प और ज्ञान के अन्य चक्रों के माध्यम से जीवन।
पौधों का, जीवन का सबसे सरल स्तर, ईश्वरीय कलात्मकता का कार्य है, जैसा कि उनका
जीवित - लेकिन अधिक परिपूर्ण और बेहतर ढंग से डिज़ाइन किया गया। ऐसा इसलिए है क्योंकि जब कोई फल
बीज मर जाता है, ऐसा लगता है कि वह सड़ कर मिट्टी में मिल गया है। लेकिन असल में, यह सड़ कर मिट्टी में मिल जाता है।
एक परिपूर्ण रासायनिक प्रक्रिया से गुजरता है, पूर्वनिर्धारित अवस्थाओं से गुजरता है
पुनः निर्माण की प्रक्रिया में, और फिर से एक विस्तृत नए वृक्ष के रूप में विकसित होता है। इस प्रकार बीज का
"मृत्यु" एक नए पेड़ की शुरुआत है, और मृत्यु, जो कुछ इस तरह बनाई गई है
जीवन, जीवन की तरह परिपूर्ण है।

जैसे-जैसे लोगों के पेट में फलों और जानवरों के मांस की मौत होती है, वे जागते हैं
मानव जीवन की दृष्टि से यह मृत्यु अधिक परिपूर्ण मानी जा सकती है
उनके जीवन। चूँकि एक पौधे की मृत्यु इतनी परिपूर्ण होती है और बहुत बड़ा उद्देश्य पूरा करती है,
प्रत्येक व्यक्ति की मृत्यु कहीं अधिक परिपूर्ण होनी चाहिए और उससे भी अधिक महान उद्देश्य की पूर्ति होनी चाहिए, क्योंकि
मानवता जीवन का सर्वोच्च स्तर है। "भूमिगत होने" के बाद, प्रत्येक व्यक्ति
हम में से कुछ को अनन्त जीवन में लाया जाएगा।

मृत्यु कई कारणों से एक वरदान है। मैं संक्षेप में चार कारणों का उल्लेख करना चाहूँगा:

पहला: यह हमें जीवन की कठिनाइयों से मुक्ति दिलाता है, जो धीरे-धीरे हमारे लिए असहनीय हो जाती हैं।
बुढ़ापे में यह और भी मुश्किल हो जाता है। यह हमें अपनी 99 प्रतिशत जरूरतों को फिर से पूरा करने का मौका भी देता है
जो मित्र पहले ही मर चुके हैं।

दूसरा: यह हमें सांसारिक जीवन से मुक्त करता है, जो अंतरिक्ष की एक अशांत, घुटन भरी, संकीर्ण कालकोठरी है,
और हमें शाश्वत के विस्तृत घेरे में प्रवेश कराता है।
प्रियजन की दया से हम बिना किसी कष्ट के सुखद एवं अनंत जीवन का आनन्द लेते हैं।

तीसरा: यह हमें बुढ़ापे और इसी तरह की अन्य स्थितियों से मुक्त करता है जो जीवन को कठिन बनाती हैं।
असहनीय। उदाहरण के लिए, यदि आपके बूढ़े माता-पिता और दादा-दादी
अपनी आँखों के सामने दुख को देखकर, आप मृत्यु को एक महान आशीर्वाद और जीवन को एक महान आशीर्वाद के रूप में देखेंगे
एक असहनीय दर्द के रूप में। इसके अलावा, कीटों (प्रेमियों) की शरद ऋतु की मृत्यु
सुंदर फूलों का आनंद लेना) उनके लिए दया की बात है, क्योंकि उन्हें सर्दियों की कठोरता और कठोरता को नहीं सहना पड़ता।

चौथा: नींद विश्राम और राहत का समय है, और इस प्रकार यह दया का समय है, खासकर बीमार और पीड़ित लोगों के लिए। इसी तरह, मृत्यु (नींद का "भाई") भी एक तरह की बीमारी है।
यह आशीर्वाद और दया है, विशेष रूप से उन लोगों के लिए जो ऐसे दुर्भाग्य से पीड़ित हैं
वे आत्महत्या के बारे में सोच सकते हैं। जहाँ तक गुमराह लोगों की बात है, तो जीवन और मृत्यु दोनों ही खतरे में हैं।
पीड़ा के भीतर पीड़ा और पीड़ा के बाद पीड़ा है।

तीसरा प्रश्न: नरक कहाँ है?

उत्तर: अल्लाह ही ग़ैब को जानता है। कह दो, "ज्ञान तो केवल अल्लाह के पास है।"
ईश्वर।" कुछ भविष्यसूचक परम्पराएँ बताती हैं कि यह पृथ्वी के नीचे मौजूद है।

अपनी वार्षिक गति से, पृथ्वी एक बड़ा चक्र बनाती है जो सर्वोच्च होगा पुनरुत्थान के बाद मस्टरिंग का मैदान। इसका मतलब है कि नरक नीचे है पृथ्वी की कक्षा। इसे देखा नहीं जा सकता, क्योंकि इसमें आग है जो प्रकाश नहीं देती। पृथ्वी की वार्षिक कक्षा में असंख्य जीव-जंतु मौजूद हैं, लेकिन हमारे लिए अदृश्य हैं क्योंकि वे कोई प्रकाश उत्सर्जित नहीं करते हैं। यह चंद्रमा की तरह है जब वह सूर्य के प्रकाश से छिप जाता है - वह प्रकाश उत्सर्जित नहीं कर सकता और इसलिए हमारे लिए अदृश्य हो जाता है।

एक छोटा नर्क है और एक बड़ा नर्क है। छोटा नर्क धरती के नीचे है या इसके केंद्र में। हम भूविज्ञान से जानते हैं कि हर बार तापमान में 1°C की वृद्धि होती है पृथ्वी के केंद्र की ओर 33 मीटर। इस प्रकार पृथ्वी के केंद्र का तापमान है 200,000°C, यह देखते हुए कि इसकी त्रिज्या 6,000 किलोमीटर है। यह एक प्रासंगिक भविष्यवाणी परंपरा से सहमत है।

इस संसार और मध्यवर्ती संसार दोनों में, लघु नर्क अनेक इच्छाओं की पूर्ति करता है। नरक के प्रमुख कार्यों में से एक। दूसरी दुनिया में, इसका विस्तार किया जाएगा प्रमुख नरक। पृथ्वी अपनी सामग्री को मस्टरिंग के सर्वोच्च मैदान में खाली कर देगी, जिसे पृथ्वी की कक्षा में बनाया जाएगा, और फिर छोटे नरक को पृथ्वी की कक्षा में स्थानांतरित किया जाएगा। भगवान के आदेश पर प्रमुख नरक।

कुछ प्रमुख मुताज़िली विद्वानों ने ग़लती से सोचा था कि नरक बाद में बनाया जाएगा, क्योंकि इसे अभी भी इसके भविष्य की सामग्री को शामिल करने के लिए पूरी तरह से विस्तारित किया जाना चाहिए। इसके अलावा, दूसरी दुनिया के स्टेशन हमसे छिपे हुए हैं, क्योंकि हमारी आँखें खुली हुई हैं। तारों की रोशनी जितनी गहरी नहीं है और ब्रह्मांड को छोटे-छोटे क्षेत्रों में विभाजित नहीं कर सकती। भविष्यवाणियों का तात्पर्य है कि प्रमुख नरक का संबंध इस दुनिया के साथ, जैसे कि तीव्र गर्मी को "से आने वाली" के रूप में वर्णित करना नरक की गर्मी।”

हम मुख्य नरक को देख या समझ नहीं सकते, लेकिन हम सर्वज्ञ ईश्वरीय नाम के माध्यम से इसकी प्रकृति की कुछ झलक पा सकते हैं।5 मुख्य नरक ऐसा प्रतीत होता है कि उसने कुछ कार्यों को छोटे नरक को सौंप दिया है।

---

4 इस संप्रदाय के संस्थापक वसील इब्न 'अता' (699-749) ने सिखाया कि जो मुसलमान पाप करते हैं प्रमुख पाप न तो आस्तिक या अविश्वासी हैं, बल्कि एक मध्यवर्ती स्थिति में हैं जिसे के रूप में जाना जाता है अपराध (फ़िस्क)। मुताज़िला अंततः कई अन्य संप्रदायों में विभाजित हो गया। तर्क का उपयोग करने और इस्लाम की व्याख्या करने पर अत्यधिक जोर देने की विशेषता प्रथम-क्रम तर्क का। वे यह भी मानते थे कि सृजन को शाब्दिक रूप से स्वीकार्य माना जा सकता है लोगों के कर्मों को इस प्रकार से व्यक्त करना कि हमारे कार्यों में ईश्वरीय नियति की कोई भूमिका नहीं है। (संपादक)

5 सईद नूरसी के विचार में, ईश्वर ने ब्रह्माण्ड को एक "पुस्तक" के रूप में बनाया है ताकि उसे वे लोग "पढ़" सकें जो इसे पढ़ना चाहते हैं। उसके बारे में सीखना और उसके करीब आना चाहते हैं। वह कहता है कि ब्रह्मांड (निर्मित कुरान), कुरान (प्रकट ब्रह्मांड), और मानवता तीन सार्वभौमिक पुस्तकें हैं जो इसे एक विश्वव्यापी पुस्तक बनाती हैं। सृष्टिकर्ता जिसे हम जानते हैं। ब्रह्मांड का क्रम, नियमितता, परस्पर संबंध, कार्यप्रणाली और इस प्रकार ईश्वर के नाम और गुण प्रदर्शित होते हैं जैसे कि अत्यंत दयालु, अत्यंत दयावान, सर्व-प्रदाता, सर्वज्ञ, सर्व-इच्छुक, सर्वशक्तिमान इत्यादि। (सं.)4

एक सर्वशक्तिमान, महिमावान, सर्वज्ञ, पूर्णता वाला, जो स्वामी है
आज्ञाकारी शब्दों की पूर्ण शक्ति हो! और यह है, ने चंद्रमा को बांध दिया है
पृथ्वी को और पृथ्वी को सूर्य को पूर्ण बुद्धि और व्यवस्था के साथ स्थापित किया है।
एक सिद्धांत के अनुसार, सूर्य और उसके उपग्रह पृथ्वी की ओर गति करते हैं।
सूर्यों का सूर्य (लाइरा तारामंडल में वेगा तारा) लगभग उतनी ही गति से
सूर्य के चारों ओर पृथ्वी की परिक्रमा जितनी महान।

इसके अतिरिक्त, उसने तारों को भी बनाया है, जो बिजली के लैंप के समान हैं।
विशेष अवसरों पर, महामहिम की संप्रभुता के उज्ज्वल प्रमाण के रूप में
और उसकी शक्ति की महानता। ऐसी शक्ति और बुद्धि प्रमुख बना सकती है
नरक सितारों की "गर्मी और आग" के स्रोत के रूप में कार्य करता है
वह अन्य दुनिया के स्वर्ग को स्वर्ग की रोशनी से रोशन कर सकता है।
नरक के कुछ हिस्सों को सज़ा की जगह और उन लोगों के लिए कालकोठरी बनाओ जो इसके लायक हैं। इसके अलावा, राजसी, सर्वज्ञ निर्माता की शक्ति,
जो एक पेड़ से युक्त थम्बनेल आकार का फल-गड्ढा बनाता है, वह नाबालिग बना सकता है
नरक एक नियत समय तक प्रमुख को घेरे रहता है।

निष्कर्षतः, स्वर्ग और नरक एक वृक्ष की नोक पर उगने वाले दो फल हैं।
सृष्टि के वृक्ष से अनंत काल तक फैली शाखा, दो विपरीत शाखाएँ
अस्तित्व की श्रृंखला के परिणाम। इन परिणामों के स्थान श्रृंखला के विपरीत छोर पर हैं: निचले छोर पर पतित, और ऊपरी छोर पर प्रकाशमान उत्कृष्ट।

स्वर्ग और नरक सांसारिक घटनाओं के प्रवाह के दो भण्डार हैं और
पृथ्वी के आध्यात्मिक उत्पाद। एक गोदाम को बुरे उत्पादों से भरा जा रहा है
और नीचे स्थित है, जबकि इसका विपरीत ऊपर है। वे दो तालाब हैं जो दो धाराओं के प्रवाह को प्राप्त करते हैं, एक दुष्ट और गंदे को ले जाता है जबकि दूसरा अच्छे और शुद्ध को ले जाता है। स्वर्ग वह स्थान है जहाँ ईश्वरीय कृपा और
दया स्वयं प्रकट होती है, जबकि नरक वह स्थान है जहाँ दैवीय क्रोध प्रकट होता है
और भय प्रदर्शित होते हैं। दयालु, सर्व-दयालु, सर्वशक्तिमान
महामहिमों में से एक, स्वयं को (अपने नामों और गुणों के माध्यम से) प्रकट करता है,
जहाँ भी वह चाहता है, अपनी प्रदर्शनी लगाता है।

स्वर्ग और नरक का अस्तित्व दसवीं और बारहवीं आयतों में सिद्ध हुआ।
उनतीसवाँ शब्द.6 हम यहाँ केवल इतना जोड़ना चाहेंगे कि फल का अस्तित्व शाखा के अस्तित्व जितना ही स्पष्ट है, परिणाम भी शाखा के अस्तित्व जितना ही स्पष्ट है।
श्रृंखला, स्टोररूम उत्पाद की तरह ही स्पष्ट है, पूल भी उत्पाद की तरह ही स्पष्ट है
धारा का, और प्रकटीकरण का स्थान उतना ही स्पष्ट है जितना (दिव्य)
दया और क्रोध.

---

6 सईद नर्सी, द वर्ड्स, द लाइट, इंक., 2005: न्यू जर्सी।

चौथा सवाल: विपरीत लिंग के प्रति प्रेम, जिसे मुस्लिम संतों और विद्वानों द्वारा "लाक्षणिक प्रेम" कहा जाता है, कभी-कभी वास्तविक प्रेम (निर्माता के प्रति प्रेम) बन सकता है। क्या यह दुनिया के प्रति प्रेम के साथ हो सकता है?

उत्तर: संसार के दो मुख हैं; एक नश्वर और क्षणभंगुर, दूसरा दर्पण जिसमें ईश्वरीय नाम प्रकट होते हैं और दूसरा बोया हुआ खेत।

अगले जीवन के लिए बीज के साथ। अगर इसके प्रेमी इसके क्षणभंगुर चेहरे से दूर होकर दूसरे की ओर मुड़ सकें, तो ऐसा प्रेम ईश्वर के प्रेम में बदल सकता है। लेकिन ऐसे प्रेमियों को अपनी विशेष, छोटी और नाशवान दुनिया को पूरी विशाल बाहरी दुनिया नहीं समझना चाहिए। अगर वे खुद को भूल जाते हैं, बाहरी दुनिया में डूब जाते हैं और उससे प्यार करने लगते हैं, तो वे, गुमराह लोगों के साथ, प्रकृति पूजा के दलदल में डूब जाएंगे - जब तक कि कोई चमत्कारिक रूप से उनकी मदद के लिए हाथ न आए।

इस सादृश्य पर विचार करें: हम चार लोग चार दीवारों वाले एक कमरे में हैं, और प्रत्येक दीवार पर एक पूरी लंबाई का दर्पण है। इससे कम से कम पाँच कमरे दिखाई देते हैं: एक वास्तविक और हम सभी के लिए सामान्य, और "निजी" कमरे हमारे प्रत्येक दर्पण में प्रतिबिंबित होते हैं। हम में से प्रत्येक अपने निजी कमरे के आकार, रूप और रंग को अपने स्वयं के दर्पण में हेरफेर करके बदल सकता है। उदाहरण के लिए, हम दर्पण को रंग कर इसे हरा या लाल बना सकते हैं, या इसे अलग-अलग आकार दे सकते हैं। लेकिन हम साझा वास्तविक कमरे को इतनी आसानी से नहीं बदल सकते। हालाँकि निजी और आम कमरे लगभग एक जैसे दिखते हैं, लेकिन उनका स्वभाव और प्रबंधन क्षमता काफी अलग है। आप अपनी प्रतिबिंबित, निजी कमरे को एक उंगली से नष्ट कर सकते हैं, जबकि आप साझा वास्तविक कमरे का एक पत्थर भी नहीं हिला सकते।

इसी तरह, दुनिया एक सजा हुआ स्टेशन है जिसमें हर व्यक्ति का जीवन एक पूर्ण लंबाई वाला दर्पण है। इस स्टेशन में, हममें से प्रत्येक के पास एक निजी दुनिया है जिसका स्तंभ, केंद्र या द्वार हमारा अपना जीवन है। हमारी निजी दुनिया की तुलना एक ऐसे पृष्ठ से की जा सकती है जिस पर हमारे कर्म हमारे जीवन की कलम से दर्ज होते हैं। हम अपनी निजी दुनिया से प्यार करते हैं, लेकिन अनिवार्य रूप से महसूस करते हैं कि यह दुनिया हमारे जीवन के इर्द-गिर्द बनी है और इसलिए, हमारे जीवन की तरह, क्षणभंगुर, अस्थिर और नाशवान है।

इसे देखते हुए, हमें अपना दिल ईश्वरीय नामों के प्रकटीकरण में लगाना चाहिए, न कि नाशवान चीज़ों में। इसके अलावा, हमें यह जानना चाहिए कि हमारी निजी दुनिया हमें एक खेत के रूप में सौंपी गई है जिसमें बीज बोने हैं ताकि हमारा स्वर्ग विकसित हो सके, और हमें इसे उन फलों के लिए प्यार करना चाहिए जो हम दूसरी दुनिया में प्राप्त करेंगे। अगर हम अपने कर्मों के फलों के लिए अपना प्यार समर्पित करते हैं और

ईश्वरीय अभिव्यक्तियाँ, संसार के प्रति हमारा प्रेम ईश्वर के प्रति प्रेम में बदल जाएगा। अन्यथा, जैसा कि कहा गया है: उन लोगों की तरह मत बनो जो ईश्वर को भूल गए, और इसलिए उसने उन्हें खुद को भूलने के लिए प्रेरित किया; वे अधर्मी हैं (59:19), हम अपने में डूब सकते हैं

अपने आप को और अपनी निजी दुनिया की अस्थायीता को भूलकर निजी दुनिया से दूर हो जाना प्रकृति, और इसलिए हमारे सांसारिक जीवन को इस तरह अपनाएं जैसे कि हम और यह हमेशा के लिए रहेंगे।

दुनिया के क्षणभंगुर चेहरे के प्रति ऐसा प्रेम अंतहीन पीड़ा और कष्ट का कारण बनता है, क्योंकि यह एक दयनीय करुणा और निराशाजनक कोमलता को जन्म देता है। संवेदनशील प्रेमी सभी प्राणियों के प्रति दया महसूस करते हैं और तदनुसार, उनकी भावनाएँ
सभी सुंदर, नश्वर प्राणियों के नाश से आहत हैं।
उनके लिए कुछ नहीं किया जाता, वे घोर निराशा से पीड़ित होते हैं।

दूसरी ओर, जो लोग परमेश्वर को पाते हैं, वे करुणा और कोमलता की ऐसी भावनाओं के कारण उत्पन्न होने वाली बीमारियों का इलाज खोज लेते हैं।
यह समझते हुए कि सभी जीवित प्राणियों की आत्माएं, जिनके नाश की उन्हें चिंता है,
ऐसी दया, दर्पण हैं जिनमें एक स्थायी प्राणी के स्थायी नाम हैं
निरंतर प्रतिबिंबित होने पर, उनकी कोमलता खुशी स्वीकार करने में बदल जाती है
और मन की शांति। वे समझते हैं कि सभी सुंदर (लेकिन नश्वर और नाशवान) प्राणियों के पीछे एक शुद्ध कृपा और एक पवित्र सौंदर्य प्रकट होता है
अपनी नाजुक कारीगरी, अलंकरण और
आश्चर्य है कि वे किस कृपापात्र और प्रकाशित हैं।

और इसलिए वे समझते हैं कि मृत्यु और नाश होना केवल प्रक्रियाएं हैं
सुंदरता और आनंद को ताज़ा करने और बढ़ाने के लिए नवीनीकरण और साथ ही प्रदर्शित करने के लिए ब्रह्मांड में दिव्य कलात्मकता देखी गई। उनकी खुशी और प्रशंसा
सभी दिव्य अभिव्यक्तियाँ बढ़ जाती हैं, साथ ही उनका उत्साह भी बढ़ जाता है।

वह शाश्वत है।

सईद नूरसी

दूसरा पत्र

दूसरा पत्र [7]

मैं उपहार लेने से क्यों मना करता हूँ?

उसके नाम में, उसकी महिमा हो।

ऐसी कोई भी चीज़ नहीं है जो उसकी स्तुति से उसकी महिमा न करती हो।

Tहर्ड: आपने मुझे एक उपहार भेजा है, और इस तरह से मैं एक बहुत ही महत्वपूर्ण सिद्धांत को तोड़ दूंगा। मेरा मतलब यह नहीं है कि मैं आपके उपहार को अस्वीकार कर दूंगा, जैसा कि मैंने अपने भाई 'अब्द अल-मजीद और मेरे भतीजे 'अब्द अल-रहमान के उपहार को अस्वीकार कर दिया था, क्योंकि आप मेरे धर्म में भाई हैं, धर्म में और इसकी सेवा में मुझसे अधिक उन्नत हैं, और मेरे अपने दिल के अधिक करीब हैं। इसलिए मैं पहली और आखिरी बार आपका उपहार स्वीकार करता हूं और बताता हूं कि, एक नियम के रूप में, मैं उपहार क्यों स्वीकार नहीं करता।

अपने जीवन के आरंभ में (जब मैं ओल्ड सईद[8] था), मैं ऋणग्रस्त होने से बचता था क्योंकि मैं ऋणग्रस्त होने के बजाय मरना पसंद करता था। मैंने इस सिद्धांत का त्याग नहीं किया है, हालाँकि मैंने बहुत कठिनाई और कठिनाई झेली है। मैं इसका पालन आत्म-त्याग या दूसरों की स्वतंत्रता दिखाने के लिए नहीं करता, बल्कि निम्नलिखित कारणों से करता हूँ: पहला कारण: गुमराह लोग मुस्लिम विद्वानों पर पैसा कमाने के लिए ज्ञान का उपयोग करने का आरोप लगाते

हैं और दावा करते हैं कि वे जीविका चलाने के लिए धर्म और धार्मिक ज्ञान का शोषण करते हैं। हमें अपने कर्मों के माध्यम से ऐसे आरोपों का खंडन करना चाहिए।

---

[7] यह एक शिष्य को लिखे गए पत्र का हिस्सा है जिसने एक उपहार भेजा था। (ट्र.)

[8] "ओल्ड सैड" सैद नूरसी के जीवन की अवधि को दर्शाता है, जो उनके जन्म से लेकर 1920 के दशक के शुरुआती वर्षों में इस्लाम की सेवा करने के एक अलग तरीके को अपनाने तक की अवधि थी। उनके जीवन का यह आखिरी हिस्सा निर्वासन और जेलों में बीता, और उन्हें बहुत उत्पीड़न सहना पड़ा। इस अवधि में, उन्होंने अपने लेखन और शिक्षण के माध्यम से इस्लाम को संरक्षित करने के लिए खुद को पूरी तरह से समर्पित कर दिया। "थर्ड सैड" 1950 में उभरा, जब हालात कुछ हद तक आसान हो गए थे।

1950-60 से उनकी रचनाएँ विश्वविद्यालय के छात्रों और बुद्धिजीवियों के बीच छपने और प्रसारित होने लगीं। (सं.)

दूसरा कारण: हमें सत्य का प्रचार करते समय पैगम्बरों का अनुसरण करना चाहिए। जैसा कि कुरान की कुछ आयतों में कहा गया है: मेरा पारिश्रमिक केवल ईश्वर पर निर्भर है (26:109, 127, 145, 164, 180), पैगंबर लोगों पर निर्भर नहीं थे। यह आयत वर्तमान संदर्भ में विशेष रूप से उपयुक्त है: उन लोगों का अनुसरण करो जो पारिश्रमिक नहीं मांगते, जो सीधे मार्ग पर हैं (36:21)।

तीसरा कारण: जैसा कि पहले शब्द में कहा गया है, मुसलमानों को ईश्वर के नाम पर देना और लेना चाहिए। दुर्भाग्य से, अब यह प्रथा नहीं रही। देने वाले या तो इस बुनियादी सिद्धांत की परवाह नहीं करते, और इसलिए अपने हित के लिए देते हैं और मौन रूप से आपको बाध्य करते हैं, या प्राप्तकर्ता वास्तविक उपकारकर्ता ईश्वर के बजाय प्रत्यक्ष साधनों और कारणों के प्रति कृतज्ञ हो जाते हैं।

चौथा कारण: संतोष, मितव्ययिता और ईश्वर पर भरोसा अनंत खजाने हैं जिन्हें किसी और चीज़ से नहीं बदला जा सकता। मैं लोगों से उपहार प्राप्त करके उस खजाने का दरवाज़ा बंद नहीं करना चाहता। मैं उस महान सर्व-प्रदाता का अनंत-ऋणी हूँ, क्योंकि उसने मुझे दूसरों के प्रति दायित्व में नहीं रखा है। मैं उसकी दया से चाहता हूँ कि मैं अपना शेष जीवन उसी सिद्धांत का पालन करते हुए बिताऊँ और केवल उसकी उदारता पर निर्भर रहूँ।

पाँचवाँ कारण: पिछले कुछ सालों ने मुझे यह विश्वास दिला दिया है कि मेरा स्वास्थ्य और स्वभाव मुझे उपहार स्वीकार करने की अनुमति नहीं देता, खास तौर पर अमीर लोगों और अधिकारियों से। चूँकि वे जो खाना देते हैं उसका मुझ पर बुरा असर होता है, इसलिए मुझे लगता है कि भगवान चाहते हैं कि मैं इससे दूर रहूँ। इसके अलावा, चूँकि मैं आमतौर पर एकांत पसंद करता हूँ, इसलिए मैं किसी को भी किसी भी समय अपने घर में नहीं आने दे सकता। अगर मैं उपहार स्वीकार करता हूँ, तो मुझे इसे विचारपूर्वक करना पड़ता है, भले ही मैं न चाहूँ। यह मेरे लिए बहुत अप्रिय है। इसके अलावा, मैं सूखी, बासी रोटी का एक टुकड़ा और कई पैच वाला लबादा पसंद करता हूँ, जो मुझे दिखावे और चापलूसी से दूर रखता है, और दूसरों को खुश करने के लिए मुझे उच्च गुणवत्ता वाली मिठाइयाँ और कपड़े भेंट करने पड़ते हैं।

छठा कारण: मुख्य कारण यह है कि मेरे आचार-व्यवहार के स्कूल (मदहब 'अमली) में सबसे सम्मानित व्यक्ति इब्न अल-हजर कहते हैं: "अगर आप धर्मनिष्ठ नहीं हैं तो आपकी कथित धर्मनिष्ठता के लिए आपको जो कुछ भी दिया जाता है, वह आपके लिए धार्मिक रूप से वर्जित है।" आज, लोगों की लालच और लालच उन्हें अपने उपहारों के लिए उच्च मूल्य वसूलने पर मजबूर करता है। मुझे एक धर्मनिष्ठ व्यक्ति और यहां तक कि एक संत मानते हुए, वे मुझे एक रोटी देते हैं। खुद को ईश्वरीय मानना आत्म-अभिमानी और अधर्म का प्रमाण होगा। लेकिन अगर मैं खुद को धर्मनिष्ठ नहीं जानता, तो लोगों की भेंट मेरे लिए धार्मिक रूप से वर्जित है।

अंततः, दान स्वीकार करने का अर्थ है इस संसार में परलोक के स्थायी फलों का उपभोग करना, क्योंकि स्वीकार किए गए दान और उपहार परलोक के लिए किए गए कर्मों के बदले में दिए जाते हैं।

वह शाश्वत है।

सईद नूरसी

तीसरा पत्र

तीसरा पत्र[9]

• कुरान की वाक्पटुता से एक प्रकाश
• विश्वास के दो बिंदु

उसके नाम में, उसकी महिमा हो।

ऐसी कोई भी चीज़ नहीं है जो उसकी स्तुति से उसकी महिमा न करती हो।

यदि आपने लिखा है कि आप मेरी भावनाओं को साझा करना चाहते हैं। उनमें से एक यहाँ है: एक रात जब मैं अपनी छोटी सी झोपड़ी में था ऊंचे, जंगली देवदार के पेड़ के सामने, मैंने सितारों से जगमगाते आसमान की ओर देखा और अभिव्यक्ति का एक शानदार चमत्कार और एक स्पष्ट प्रकाश की खोज की कुरान की शपथ की सर्वोच्च वाक्पटुता: नहीं! मैं ग्रहों की शपथ लेता हूँ कि पीछे हटो, आगे बढ़ो और छिप जाओ (81:15-16)। ये दो पद, जो चलते हुए तारों के छिपने और फिर से प्रकट होने का उल्लेख करते हैं, ईश्वरीय कलात्मकता के एक शानदार काम और चिंतन के लिए एक अद्भुत दृश्य की ओर ध्यान आकर्षित करते हैं।

वे ग्रह कभी-कभी स्थिर ग्रहों की परिधि में प्रवेश कर जाते हैं, सूर्य के प्रकाश-चक्र को छोड़कर जो उन्हें "आदेश" देता है, और प्रदान करता है दिव्य कलात्मकता का हमेशा नया प्रदर्शन। कभी-कभी वे अपने जैसे किसी दूसरे चमकीले सितारे के साथ प्रकट होते हैं और एक सुंदर दृश्य बनाते हैं। कभी-कभी, वे छोटे लोगों के बीच प्रवेश करते हैं और उनके कमांडिंग ऑफिसर के रूप में दिखाई देते हैं। शुक्र सूर्यास्त के बाद, साथ ही भोर से पहले इसके साथियों में से एक, विशेष रूप से वर्ष के इस समय में बेहतरीन दृश्य प्रस्तुत करता है। "निरीक्षण" के अपने कर्तव्यों को पूरा करने के बाद

---

[9] उपरोक्त पत्र से एक अंश। (अनुवाद)

दिव्य कलात्मकता के कार्यों को बुनने में शटल के रूप में कार्य करते हुए, वे
सूर्य के प्रकाश के दीप्तिमान घेरे में पुनः प्रवेश करते हैं और उसमें छिप जाते हैं।
ऐसा प्रदर्शन राजसी आधिपत्य और शानदार संप्रभुता को प्रदर्शित करता है
वह जो सभी आकाशीय पिंडों और पृथ्वी को उत्तम व्यवस्था में चलाता है
जैसे ब्रह्माण्ड के आकाश में हवाई जहाज़ या जहाज़।

उसकी संप्रभुता की शक्ति पर विचार करें। उसके कुछ हवाई जहाज़ और जहाज़
पृथ्वी से 1,000 गुना बड़े हैं, और फिर भी इतनी तेज़ गति से चलते हैं कि वे पृथ्वी को ढँक सकते हैं
एक सेकंड में वह दूरी तय कर सकते हैं जो एक व्यक्ति 8 घंटे में तय करता है। अब आप समझ सकते हैं कि ईमानदारी से विश्वास और पूजा में ऐसे शानदार संप्रभु के लिए खुद को समर्पित करना कितना शानदार खुशी और कितना बड़ा सम्मान है, और
इस संसार में उसके मेहमान बनो।

मैंने चाँद को देखा और चमत्कारी चमकीली रोशनी देखी
और चाँद को भी हमने अलग-अलग स्थानों पर निर्धारित किया है, यहाँ तक कि वह एक वृद्ध की तरह लौट आता है ।
ताड़ की डाल (36:39)। चाँद का निर्धारण और निर्देशन, साथ ही
पृथ्वी और के संबंध में रोशनी और बारीकी से गणना की गई स्थिति
सूर्य, उसके निर्धारक की असीम शक्ति को प्रदर्शित करने वाले अद्भुत चमत्कार हैं और
पोजिशनर। चंद्रमा अपने पर्यवेक्षकों को सिखाता है कि सब कुछ उसके लिए आसान है।
ऐसी शक्ति का स्वामी, जो चाहे कुछ भी कर सकता है।

सूर्य का इतनी सख्ती से पालन करें कि वह कभी खो न जाए और हमेशा अच्छा प्रदर्शन करे
अपने कार्य के दौरान, चंद्रमा अपने पर्यवेक्षकों से यह कहलवाता है: "उसकी जय हो जिसकी रचना बुद्धि को चकित कर देती है।" कुछ निश्चित समयों पर, जैसे कि मई के अंत में
जब चंद्रमा एक घुमावदार ताड़ की शाखा जैसे अर्धचंद्र के रूप में प्लीएडेस में प्रवेश करता है और प्लीएडेस खजूर के समूह के रूप में, यह एक विशाल,
आकाश के काले रंग के आवरण के पीछे चमकता हुआ वृक्ष, जिसके कुछ फल (तारे)
और एक शाखा (चंद्रमा) उस पर्दे को भेदती है और खुद को एक के साथ दिखाती है
इसके समूह (प्लीएडेस)। इस तमाशे को देखो, और लालित्य और सुंदरता को देखो
उपमा की वाक्पटुता: एक वृद्ध ताड़ की शाखा की तरह।

मुझे याद आया: उसने धरती को तुम्हारे अधीन कर दिया; इसलिए उसके इलाकों में चलो
(26:109, 127, 145, 164, 180), जो पृथ्वी की तुलना एक नम्र जहाज से करता है।
इस समानता को देखकर, मैंने स्वयं को अंतरिक्ष में तेजी से यात्रा कर रहे एक बड़े जहाज पर पाया,
और कहा: महिमा है उसकी, जिसने इसे हमारे अधीन कर दिया, और हम स्वयं भी
इसे अधीन करने में सक्षम नहीं थे (36:21), जिसे पैगंबर ने हमें सुनाने के लिए कहा
जब भी हम किसी जानवर पर सवार होते हैं या किसी वाहन में सवारी करते हैं।

मैंने देखा कि इसकी गति की प्रकृति पृथ्वी को एक फिल्म के समान बनाती है
प्रक्षेपण, जो पहले आकाश को गतिमान करता है और फिर तारों को गतिशील करता है
मानो वे एक शानदार सेना हों। ऐसे मनमोहक दृश्य एक प्रतिबिंब भर देते हैं-

मैं प्रशंसा और विस्मय से भर गया। "भगवान की जय हो," मैंने कहा, "कैसे
अद्भुत, अद्भुत कार्य इतनी अधिक मात्रा में और इतने कम खर्च पर आयोजित किए जाते हैं!” इसने मुझे विश्वास के दो बिंदुओं पर विचार करने के लिए प्रेरित किया।

प्रथम: हाल ही में एक आगंतुक ने पूछा: स्वर्ग और नरक हमसे बहुत दूर हैं।
यदि स्वर्ग के लोग मस्टरिंग के सर्वोच्च मैदान में उड़ जाएंगे
बिजली की गति से जन्नत, कैसे बोझिल होंगे नर्क के लोग
क्या वे अपने पापों के कारण अपने भारी शरीर के साथ नरक में पहुंचेंगे?

मैंने जवाब दिया: कल्पना कीजिए कि सभी देशों को पृथ्वी के दूसरी ओर एक बैठक के लिए आमंत्रित किया जाता है। प्रत्येक देश अपने स्वयं के बड़े जहाज पर वहाँ जाएगा।
इसी तरह पृथ्वी भी, जो कि विशाल "महासागर" में तेज़ गति से यात्रा करने की आदी है
ब्रह्मांड, अपने निवासियों को मस्टरिंग के सर्वोच्च मैदान तक पहुंचाएगा
न्याय दिवस। इसके अलावा, इसके केंद्र में 200,000 डिग्री सेल्सियस (उल्लेखित) की आग है
एक भविष्यवक्ता की कहावत के अनुसार, प्रत्येक 33 मीटर पर 1°C तापमान बढ़ता है
केंद्र की ओर और पृथ्वी की त्रिज्या 6,000 किलोमीटर है। कुछ परंपराएँ
बताते हैं कि यह आग इस दुनिया और परलोक में नर्क के कुछ कार्यों को पूरा करती है
मध्यवर्ती, और यह पृथ्वी द्वारा नर्क में छोड़ा जाएगा। इसके बाद,
पृथ्वी अपना स्थायी और कहीं अधिक सुन्दर रूप ग्रहण कर लेगी, और एक स्थायी प्राणी बन जाएगी।
दूसरी दुनिया में स्टेशन.

दूसरा: सर्वशक्तिमान सृष्टिकर्ता, एक और सर्वज्ञ, अनेक कार्य संपन्न करता है
वह कुछ चीजों से अनेक कार्य करता है और एक छोटी सी चीज का प्रयोग अनेक कार्यों के लिए करता है, ताकि उसका शक्ति की पूर्णता, उसकी बुद्धि की सुंदरता और उसकी एकता के प्रमाण मानवीय रूप से प्रकट होते हैं। जब सृजन करने की शक्ति को एक सत्ता के रूप में माना जाता है, तो सब कुछ
इतना आसान हो जाता है कि यह लगभग आवश्यक हो जाता है। इसके विपरीत, इसे अधिक के लिए जिम्मेदार ठहराना
एक से अधिक निर्माता और कारण ऐसी कठिनाइयाँ उत्पन्न करते हैं कि सब कुछ
असंभव हो जाता है। इस सादृश्य पर विचार करें: एक कमांडर (या एक बिल्डर) कई सैनिकों (या पत्थरों) का उपयोग करके आसानी से महान उपलब्धियां हासिल करता है। लेकिन अगर सैनिक
(या पत्थरों) को ये गतिविधियाँ स्वयं करनी पड़तीं, तो अंतिम परिणाम होता
बहुत भ्रम और कठिनाई.

इसी प्रकार, सभी खगोलीय पिंडों की गति और हर वस्तु के परिसंचरण के साथ-साथ मौसमी, दैनिक और रात्रि परिवर्तनों को भी जिम्मेदार ठहराते हुए,
एक ईश्वर को देखना आसान बनाता है, एक ग्रह को एक साथ घुमाकर ईश्वर को देखना
व्यवस्था, ऋतुओं के उत्तराधिकार में अद्भुत कला,
दिन और रात का परिवर्तन, तथा तारों, सूर्य और चंद्रमा की स्पष्ट गतिविधियों के आकर्षक दृश्य।

सभी प्राणियों के सेनापति के रूप में, वह उन्हें अपने आज्ञाकारी सैनिकों की तरह इकट्ठा करता है।
सेना। वह पृथ्वी को एक निजी सेना की तुलना में महत्वहीन बना सकता है

अन्य ग्रहों और आकाशगंगाओं, सभी तारों का कमांडर और सूर्य को एक
अपने निवासियों के लिए दीपक। वह सुंदरता के अतुलनीय दृश्य (चित्र) बुनता है
वह दिन और रात को चार मौसमों को शटल की तरह इस्तेमाल करके अपनी शक्ति का उपयोग करता है।
रात (बुद्धि की पुस्तक के पृष्ठ) समय को विभाजित करने और मापने के लिए, और प्रतिदिन चंद्रमा को
एक अलग तरीके से दिखाकर चंद्र महीनों की स्थापना करता है। इसके अलावा,
वह तारों को अलंकृत, सुंदर, आकर्षक और चमकते दीपकों के रूप में प्रस्तुत करता है।
स्वर्गदूतों के हाथ परमानंद में घूमते हैं, जिससे विशाल ज्ञान प्रदर्शित होता है
पृथ्वी और सितारों के बीच संबंध.

यदि ये सभी गतिविधियाँ किसी पूर्ण सत्ता का कार्य न होतीं
सारी सृष्टि पर शासन करो, फिर हर दिन पृथ्वी, चंद्रमा, सूर्य और सभी तारे
एक अंतहीन चक्र में एक वास्तविक, सचेत आंदोलन करना होगा और
अनंत गति से.

एकता और एक होने में असीम सहजता, और एकता और एक होने में असीम कठिनाई
भीड़ और विभाजन के कारण कारीगर और व्यापारी अपने व्यापार को सुविधाजनक बनाने के लिए निगम
बनाकर भीड़ से एकता प्राप्त करते हैं। संक्षेप में, गुमराही अनंत कठिनाई का मार्ग है, जबकि एकता और
मार्गदर्शन का मार्ग अनंत कठिनाई का मार्ग है।
असीम सहजता में से एक.

वह शाश्वत है।

सईद नूरसी

चौथा अक्षर

चौथा पत्र

की अभिव्यक्ति से एक किरण
ईश्वरीय नाम सर्वज्ञ

उसके नाम में, उसकी महिमा हो।

ऐसी कोई भी चीज़ नहीं है जो उसकी स्तुति से उसकी महिमा न करती हो।

ईश्वर की शांति, दया और कृपा आप पर बनी रहे
आप और आपके भाई!

प्रिय भाइयो,

I मैं अब माउंट कैम्डागी पर एक ऊंचे देवदार के पेड़ के पास अपनी झोपड़ी में हूं।
दूसरों से बिलकुल अलग-थलग, मुझे अकेलेपन की आदत हो गई है। जब भी मुझे इंसानी संगति की चाहत होती है, मैं तुम्हें अपने साथ कल्पना करता हूँ
और तुम्हारे साथ एक काल्पनिक बातचीत करके खुद को सांत्वना देता हूँ।
अगर संभव हो तो मैं कुछ महीने यहीं रहना चाहूंगा। जब मैं बारला लौटूंगा,
हम आमने-सामने बातचीत करने की कोशिश करेंगे, कुछ ऐसा जो मैं कर रहा हूं
तुमसे ज़्यादा की चाहत रखता हूँ। फिलहाल, मैं कुछ बातें लिख रहा हूँ
जो मेरे साथ घटित हुआ है।

प्रथम: यह कुछ हद तक रहस्य है, लेकिन कोई रहस्य अनसुलझा नहीं रहता
यह इस प्रकार है: कुछ सत्यनिष्ठ लोग सर्वप्रेममय ईश्वरीय नाम के प्रकटीकरण के पात्र हैं। वे आवश्यक रूप से ईश्वर की ओर देखते हैं।
उस नाम की अभिव्यक्ति के अंतर्गत सृष्टि की खिड़की के माध्यम से विद्यमान प्राणी सर्वोच्च डिग्री में है। ऐसा लगता है कि आपका बेचारा भाई बनाया गया है
दिव्य नामों के प्रकटीकरण का उद्देश्य सर्व-करुणामय है

और सर्वज्ञ हैं, जबकि कुरान को उसके अनंत रत्नों का संदेशवाहक मानते हैं। सभी शब्द इस ईश्वरीय कृपा की अभिव्यक्ति हैं। मुझे आशा है कि ईश्वर ने इसमें निम्नलिखित शब्द शामिल हैं : जिसे बुद्धि दी गई है, उसे बुद्धि दी गई है बहुत अच्छा दिया (2:269)।

दूसरा: फिर मुझे नक्शबंदी के तरीके के बारे में कहावत याद आई सिद्धांत: इस तरह, व्यक्ति को चार चीजों का त्याग करना चाहिए: संसार, इसके बाद, "बनना" और त्याग का विचार। इसे याद रखना एक और कहावत दिमाग में आई: हमारे रास्ते में, किसी की अपनी शून्यता की धारणा के आधार पर,10 चार चीजें आवश्यक हैं: धारणा और दैवी धन के सम्मुख अपनी पूर्ण निर्धनता को स्वीकार करना, ईश्वरीय शक्ति के समक्ष पूर्ण असहायता, पूर्ण कृतज्ञता या परमेश्वर के प्रति कृतज्ञता, तथा उसके कार्य में पूर्ण उत्साह।

तभी मुझे आपकी भव्य और रंगीन कविता याद आ गई जो इस प्रकार शुरू होती है: "ब्रह्मांड की किताब के रंगीन पन्नों को देखो।" उस कविता की खिड़की से मैंने तारों को देखा और चाहा कि मैं इसे पूरा करने वाला कवि होता। मैंने लिखा उस समय मेरे मन में जो कुछ भी आया, उसे लिखिए, हालाँकि मुझमें कविता लिखने की कोई प्रतिभा नहीं है। मेरे उत्तराधिकारी के रूप में, यदि आप चाहें तो इसे उचित कविता में ढाल सकते हैं। मुझे अचानक से यह बात सूझी:

सितारों की बातें सुनो और उनके सुन्दर उपदेशों पर ध्यान दो,
देखिये ज्ञान के इन प्रकाशमान संदेशों में क्या लिखा है।
वे सभी मिलकर यह सत्य प्रवचन दे रहे हैं:

"हम में से प्रत्येक एक उज्ज्वल प्रमाण है
की गौरवशाली संप्रभुता के लिए
एक सर्वशक्तिमान और महान् व्यक्ति।
हम निर्माता के अस्तित्व के साक्षी हैं,
और उसकी एकता और शक्ति के लिए...

---

10 कुरान में कहा गया है: मैं तुममें से किसी भी व्यक्ति के कर्म को व्यर्थ नहीं जाने दूंगा, चाहे वह कोई भी हो। चाहे तुम पुरुष हो या स्त्री: तुम एक दूसरे से भिन्न हो (3:195)। यह स्पष्ट है कि इस्लाम धार्मिक जिम्मेदारी में पुरुषों और महिलाओं के बीच भेदभाव नहीं करता है। प्रत्येक लिंग अधिकांश साझा करता है जिम्मेदारियों की तो बहुत सी बातें हैं, लेकिन हर एक की कुछ विशेष जिम्मेदारियां होती हैं। कुरान में आमतौर पर संबोधन के लिए पुल्लिंग का इस्तेमाल किया जाता है, क्योंकि यह अरबी की विशेषताओं में से एक है। लगभग हर भाषा में, पुल्लिंग का इस्तेमाल ऐसे समूह के लिए किया जाता है जिसमें दोनों शामिल होते हैं पुरुष और महिला, जैसे अंग्रेजी शब्द ' मानव जाति', जिसमें पुरुष और महिला दोनों शामिल हैं। इसलिए भाईचारे में बहनचारा भी शामिल है, और चूंकि विश्वासियों में पुरुष और महिलाएं दोनों शामिल हैं और महिला विश्वासियों, विश्वासियों भाई और बहन हैं। हालांकि, बनाए रखने के लिए मूल पाठ को ध्यान में रखते हुए तथा दोहराव से बचने के लिए, हम आमतौर पर स्त्रीलिंग रूपों का उल्लेख नहीं करते हैं। अनुवाद. (ट्र.)

हम उसके सूक्ष्म चमत्कार हैं जो पृथ्वी के चेहरे पर प्रकाश भेजते हैं और जिन पर देवदूत
भ्रमण करते हैं।
हम स्वर्ग की असंख्य विवेकशील आंखें हैं जो स्वर्ग की ओर निर्देशित हैं और
पृथ्वी की देखरेख करती हैं।[11]

हम सृष्टि के वृक्ष की स्वर्गीय शाखा से
जुड़े उत्तम फल हैं;
और आकाशगंगा की टहनियों से, जो महामहिम के ज्ञान के
हाथ से जुड़ी हुई हैं।
स्वर्ग के निवासियों के लिए,
हम घूमते-फिरते मस्जिद हैं,
घूमते हुए घर और ऊंचे घर,
प्रकाश फैलाने वाले लैंप, शक्तिशाली जहाज़ और विमान।

हम सर्वशक्तिशाली सम्पूर्णता की शक्ति के चमत्कार हैं,
वह सर्वज्ञ महामहिम है, हम में से प्रत्येक
उसकी रचनात्मक कला का एक आश्चर्य है,
उसकी बुद्धि की दुर्लभता, उसकी
सृष्टि का चमत्कार, प्रकाश का संसार।

जो सच्चा मानव है,
हम अनगिनत भाषाओं में अनगिनत प्रमाण प्रस्तुत करते हैं।
नास्तिकों की आंखें, चाहे वे अंधी ही क्यों न हों, कभी हमारा चेहरा नहीं देखतीं,
न ही उनके कान हमारी बातें सुनते हैं।
हम वे संकेत हैं जो सच बोलते हैं।
हम पर भी वही मुहर और मोहर है।

हम अपने प्रभु की आज्ञा मानते हैं और उनकी महिमा करते हैं,
और उपासना में उसका उल्लेख करें...
हम आकाशगंगा के सबसे विस्तृत घेरे में आनंदित प्रेमी हैं,
हमारे भगवान के नामों का पाठ करने वाली मंडली।

वह शाश्वत है।

सईद नूरसी

[11] ऐसा लगता है मानो तारे, आकाशीय पिंडों की "आँखें", सृष्टि के जटिल कार्यों को देख रहे हों
पृथ्वी पर वापस आएं और फिर स्वर्ग की ओर मुड़ें और अपने स्थायी रूपों का अवलोकन करें, ठीक वैसे ही जैसे स्वर्गदूत करते हैं
पृथ्वी पर प्रदर्शित दिव्य शक्ति के चमत्कारों का अवलोकन करें, अर्थात बीजों से बोई गई भूमि पर
स्वर्ग के फूलों का.

पांचवां अक्षर

पांचवां पत्र

आध्यात्मिक यात्रा का अंतिम पड़ाव

उसके नाम में, उसकी महिमा हो।

ऐसी कोई भी चीज़ नहीं है जो उसकी स्तुति से उसकी महिमा न करती हो।

Iमैम रब्बानी,[12] एक “सूर्य” और नक्श का सबसे बड़ा गुरु-
बंदी ने अपने पत्रों में कहा है: "मैं हज़ारों आध्यात्मिक सुख और परमानंद प्राप्त करने और चमत्कार करने की बजाय विश्वास के एक मामले को सरल शब्दों में बताना पसंद करूँगा। वह यह भी कहते हैं:

"सभी आध्यात्मिक यात्राओं का अंतिम पड़ाव पूर्ण बोध प्राप्त करना है
विश्वास की सच्चाइयों का।”

पुनः, वह कहते हैं:

> संतत्व तीन प्रकार का होता है: वह जो सबको ज्ञात हो
> (मामूली), मध्यम डिग्री का, और प्रमुख संतत्व का (
> सबसे बड़ा), जिसे सीधे उत्तराधिकार के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है
> भविष्यसूचक संदेश। यह महानतम संदेश सत्य का मार्ग प्रशस्त करता है
> आध्यात्मिक आदेशों के मध्यवर्ती क्षेत्र में प्रवेश किए बिना... एक
> नक्शबंदी के रास्ते पर दृढ़ विश्वास रखकर प्रगति की जा सकती है।

---

[12] इमाम रब्बानी (शेख अहमद सरहिन्दी) (1564?-1624): भारतीय सूफी और धर्मशास्त्री
मुगल बादशाह अकबर के शासनकाल में प्रचलित समन्वयवादी धार्मिक प्रवृत्तियों के खिलाफ भारत में सुन्नी इस्लाम को फिर से स्थापित करने और पुनर्जीवित करने के लिए काफी हद तक जिम्मेदार थे।
मरणोपरांत उपाधि: मुजद्दिद-ए अल्फ-ए थानी (द्वितीय [इस्लामी] सहस्राब्दी के पुनरोद्धारकर्ता)।
नक्शबंदी सूफी संप्रदाय, जिससे इमाम रब्बानी संबंधित थे, भारत, चीन, मलेशिया ...
मध्य एशिया, तुर्की और मलेशिया। (सं.)

विश्वास के स्तंभों और धार्मिक कर्तव्यों का पालन करना।
इनमें से किसी में भी कमी होने से इस मार्ग का अनुसरण करना असंभव हो जाता है।

इसका मतलब यह है कि नक्शबंदी का तरीका तीन तरह के मिशन को समाहित करता है। पहला और सबसे बड़ा मिशन सीधे विश्वास की सच्चाई की सेवा करना है, बिना किसी भेदभाव के। मध्यस्थता प्रभाव। इमाम रब्बानी ने विशेष रूप से ऐसी सेवा में प्रवेश किया अपने जीवन के अंतिम वर्षों में। दूसरा है अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने का प्रयास करना और अनिवार्य धार्मिक कर्तव्यों और पैगंबर के सुन्नाह13 को बढ़ावा दें आध्यात्मिक आदेश का पालन करके। तीसरा तरीका सूफी मार्ग का अनुसरण करना है ताकि आध्यात्मिक रोगों से शुद्ध हो जाओ। पहला अनिवार्य है, दूसरा आवश्यक है, और तीसरा अनावश्यक है।

इसे देखते हुए, यदि 'अब्द अल-कादिर अल-जिलानी, शाह नक्शबंद, 14' जैसे लोग और इमाम रब्बानी आज जीवित होते, तो वे उपदेश देते और धर्म की रक्षा करते। आस्था की सच्चाई और इस्लामी पंथ के मूल सिद्धांतों को ध्यान में रखें, क्योंकि इसके बिना कोई व्यक्ति शाश्वत सुख प्राप्त नहीं कर सकता। इनके प्रति किसी भी उपेक्षा का परिणाम शाश्वत दंड होता है। आस्था के बिना कोई व्यक्ति स्वर्ग में प्रवेश नहीं कर सकता, लेकिन कई लोग इसके हकदार हैं आध्यात्मिक आदेश का पालन किए बिना स्वर्ग। आदेश का पालन करने का वही अर्थ है फल के रूप में उपयोग और महत्व, जबकि विश्वास की सच्चाई व्यक्ति के आध्यात्मिक जीवन के लिए आवश्यक भोजन है। कोई व्यक्ति फल के बिना रह सकता है, लेकिन रोटी के बिना नहीं।

अतीत में, किसी संप्रदाय के अनुष्ठानों का 40 दिन से लेकर 40 वर्ष तक की निश्चित अवधि तक कठोर पालन करके केवल कुछ ही विश्वास सत्यों को प्राप्त किया जा सकता था। लेकिन अगर भगवान ने अपनी दया के माध्यम से आज एक ऐसा तरीका प्रेरित किया है जिससे लोग इन सच्चाइयों को 40 मिनट के भीतर प्राप्त करने के लिए उदासीन रहना अनुचित है। ईश्वर की दया पर भरोसा करते हुए, रिसाले-ए-नूर ऐसी ही एक सच्चाई स्थापित करने की कोशिश कर रहा है

---

१३ सुन्ना पैगंबर के हर कार्य, शब्द और पुष्टि का रिकॉर्ड है, साथ ही साथ इस्लामी कानून और जीवन का दूसरा स्रोत (कुरान पहला है)। इसके अलावा नए सिद्धांतों और नियमों की स्थापना के लिए, सुन्नाह कुरान में अस्पष्टताओं को स्पष्ट करता है इसमें जो संक्षेप में उल्लेख किया गया है, उसका विस्तार करके, निर्दिष्ट करता है कि क्या बिना शर्त है, और जो विशेष रूप से कहा गया है उससे सामान्यीकरण और जो विशेष रूप से कहा गया है उससे विशिष्टीकरण को सक्षम बनाता है जो सामान्यतः कहा जाता है। (सं.)

14 'अब्द अल-कादिर अल-जिलानी (1077/78-1166): कादिरियाह आदेश के पारंपरिक संस्थापक इस्लाम की सूफी शाखा। एक विचारक के रूप में उनकी उपलब्धि सूफी पेशे की “रहस्यवादी” प्रकृति को इस्लामी कानून की गंभीर मांगों के साथ समेटना था। उनकी अवधारणा सूफीवाद एक पवित्र युद्ध या जिहाद था जो किसी की अपनी इच्छा के विरुद्ध लड़ा जाता था ताकि उस पर विजय प्राप्त की जा सके। अहंकार और सांसारिकता से दूर रहना और ईश्वर की इच्छा के आगे समर्पण करना। शाह नक्शबंद (मृत्यु 1384): संस्थापक बुखारा, तुर्किस्तान में आदेश के, को अन-नक्शबंद, "चित्रकार" कहा जाता था, क्योंकि ईश्वर की वह छाप जो उसकी निर्धारित अनुष्ठानिक प्रार्थना (धिक्र) के दोहराव से मनुष्य पर पड़नी चाहिए। दिल, और इसलिए उनके अनुयायियों को नक्शबंदिया के रूप में जाना जाता है। इस आदेश को कोई जन समर्थन नहीं है, क्योंकि इसकी प्रार्थनाएँ दबी हुई हैं और खुद को ज़िक्र दोहराने पर ज़ोर देती हैं। (संपादक)

आज हमें अपने वर्तमान आध्यात्मिक रोगों के लिए एक सर्वाधिक उपयुक्त उपचार की, अंधकार के अनेक आवरणों से आक्रांत इस्लाम के मार्ग को प्रकाशित करने के लिए एक सर्वाधिक उपयोगी प्रकाश की, तथा गुमराही की घाटियों में एक सर्वाधिक सत्य मार्गदर्शक की अत्यंत आवश्यकता है।

अगर गुमराही सिर्फ़ अज्ञानता से आती है, तो इसे दूर करना आसान होगा। लेकिन अगर यह विज्ञान और ज्ञान के कारण है, तो इसे दूर करना बहुत मुश्किल है। दूसरे प्रकार की गुमराही अतीत में बहुत दुर्लभ थी और इसका इलाज लगभग असंभव था, क्योंकि वैज्ञानिक ज्ञान के माध्यम से गुमराह होने वाले लोग अपनी अज्ञानता को महसूस करने के लिए बहुत अभिमानी थे। आज, मेरे विचार से, सर्वशक्तिमान ईश्वर ने आधुनिक नास्तिकता के उपचार के रूप में कुरान के चमत्कार से आध्यात्मिक प्रकाश की चिंगारी के साथ हमें अनुग्रहित किया है।

वह शाश्वत है।

सईद नूरसी

छठा पत्र

छठा पत्र

विश्वास अकेलेपन से राहत देता है

उसके नाम में, उसकी महिमा हो।

ऐसी कोई भी चीज़ नहीं है जो उसकी स्तुति से उसकी महिमा न करती हो।

ईश्वर की शांति, दया और कृपा आप और आपके भाइयों पर बनी रहे जब तक दिन और रात चलते रहें, दोपहरें एक के बाद एक आती रहें, चंद्रमा पूरी तरह लुप्त होने के बाद पुनः प्रकट हो, और फरकादान (दो तारे बी और उर्से माइनोरिस) एक साथ हों।

P इस अलगाव और निर्वासन की दुनिया में मेरे लिए हमेशा साथ रहने वाले भाई, जोशीले दोस्त और सांत्वना के साधन। जैसे सर्वशक्तिमान ईश्वर आपको उन अर्थों को साझा करने में सक्षम बनाता है जो उसने मुझे दिए हैं, वैसे ही आपको मेरी भावनाओं को साझा करने का भी अधिकार है। हालाँकि मैं इस निर्वासन से उत्पन्न असहनीय कष्टों के बारे में नहीं बताऊँगा, क्योंकि इससे आपको अत्यधिक दुःख हो सकता है, मैं अपने आस-पास की परिस्थितियों के बारे में लिखूँगा।

पिछले 3 महीनों से मैं बहुत अकेला हूँ। ज़्यादा से ज़्यादा, हर 15 या 20 दिन में एक बार कोई आगंतुक आता है। अन्यथा, मैं अकेला हूँ। इसके अलावा, पर्वतारोहियों को इस क्षेत्र से गए हुए 20 दिन हो चुके हैं। रात के इस समय इन सुनसान पहाड़ों में, खामोश और पेड़ों की उदास आवाज़ों के बीच, मैं खुद को पाँच तरह के अकेलेपन में डूबा हुआ पाता हूँ, जो इस प्रकार हैं: पहला: बूढ़ा होने के कारण, मैं अपने अधिकांश समकालीनों, दोस्तों और रिश्तेदारों से अलग हो गया हूँ जो मध्यवर्ती दुनिया (इस जीवन और अगले जीवन के बीच) में

चले गए हैं और मुझे सबसे दयनीय अकेलेपन में छोड़ गए हैं। यह अकेलापन मुझे दूसरे प्रकार के अलगाव का एहसास कराता है जो अधिकांश प्राणियों के गायब होने से आता है जिनके साथ मैं जुड़ाव महसूस करता हूँ, जैसे कि अतीत

वसंत। यह अकेलापन एक और एहसास जगाता है, अपने गृहनगर और रिश्तेदारों से दूर होने के कारण होने वाला अलगाव। इनके अलावा, पहाड़ों की अंधेरी रात का नज़ारा मुझे चौथे तरह के अलगाव का एहसास कराता है।

अंत में, मैंने अपनी आत्मा को इस अतिथिगृह (संसार) से अनंत काल की यात्रा के दौरान पूर्ण वियोग में देखा है। मैं अचानक चिल्ला पड़ा: “परमेश्वर की जय हो!” यह सोचकर कि मैं इस तरह के वियोग को कैसे सहन कर सकता हूँ। इस बीच, मैंने महसूस किया कि मेरा हृदय यह दोहा कह रहा है:

हे प्रभु, मैं एक अजनबी हूँ, मैं अकेला और कमजोर हूँ, नपुंसक, बूढ़ा और
बीमार हूँ, और मेरे पास कोई विकल्प नहीं है; हे परमेश्वर, मैं आपकी दया की
भीख माँगता हूँ, आपसे क्षमा माँगता हूँ, और मैं आपकी कृपा के सिंहासन
से मदद के लिए पुकारता हूँ!

ठीक उसी समय ईमान की रोशनी, कुरान की असीम कृपा और दयालु ईश्वर की कृपा ने मेरी मदद की और पाँच तरह के अलगाव को गर्मजोशी भरे साथ के पाँच चक्रों में बदल दिया। जब मैंने पढ़ा: ईश्वर हमारे लिए पर्याप्त है; वह एक बेहतरीन रक्षक है (3:173), तो मेरा दिल बोला: अगर वे अपनी पीठ फेर लें, तो कहो: "ईश्वर मेरे लिए पर्याप्त है। उसके अलावा कोई ईश्वर नहीं है। मैंने उस पर भरोसा किया है। वह महान सिंहासन का स्वामी है" (9:129)।

मेरी आत्मा भी, जो अपने भयंकर दुःख में रो रही थी और विलाप कर रही थी, मेरी बुद्धि ने उसे समझाया, जिसने उससे कहा:

हे असहाय, रोना छोड़ो और भगवान पर भरोसा रखो, क्योंकि यह रोना
एक भूल है जो मुसीबत पर मुसीबत लाती है; यदि तुमने उसे पा लिया है जो तुम्हें कष्ट देता है,
तो यह कष्ट शांति और खुशी लाने वाले उपहार में बदल जाता है।

इसलिए शिकायत करने के बजाय भगवान का धन्यवाद करें, क्योंकि बुलबुल हमेशा
गुलाब की खुशी से खुश होती हैं।
लेकिन यदि आप उसे नहीं पाते, तो सारा संसार दुख, दुर्भाग्य और हानि का
स्थान बन जाता है।

जब आपके पास इतनी बड़ी जिम्मेदारी है (जैसे कि परमेश्वर का
स्वीकृत सेवक बनना और अनन्त जीवन प्राप्त करना), तो आप एक तुच्छ दुर्भाग्य पर क्यों रो रहे हैं?

आइए, ईश्वर पर भरोसा रखें और दुर्भाग्य के चेहरे पर मुस्कुराएं ताकि वह भी मुस्कुराए, क्योंकि जब
वह मुस्कुराता है तो वह कम हो जाता है और बदल जाता है।

फिर, मौलाना जलालुद्दीन की तरह,15 मैंने अपने आप से कहा:

---

[15] जलाल अल-दीन अल-रूमी, जिन्हें मौलाना (1207-73) के नाम से भी जाना जाता है: फारसी भाषा के महानतम सूफी गुरु और कवि, जो अपने गीतों और शिक्षाप्रद महाकाव्य मसनवी-ये के लिए प्रसिद्ध थे।
मनवी ("आध्यात्मिक दोहे"), जिसने मुस्लिम सूफी विचार और विचारधारा को व्यापक रूप से प्रभावित किया

उसने पूछा: "क्या मैं तुम्हारा पालनहार नहीं हूँ?" तो
आपने उत्तर दिया: "हाँ!"

उस “हाँ” के लिए कोई उसे कैसे धन्यवाद दे सकता है?
दुर्भाग्य सहकर!
उस “हाँ” का रहस्य क्या है?
कि तुम कहो: “मैं दरिद्रता और विनाश के घर में जंजीरों में जकड़ा
हुआ एक गुलाम हूँ।”

इस पर, मेरी आत्मा ने स्वीकार किया कि लोग ईश्वर की शक्ति और धन के सामने अपनी असहायता और गरीबी को समझकर और उस पर भरोसा करके और उसमें शरण लेकर प्रकाश का द्वार खोल सकते हैं। इसलिए उसने विश्वास और समर्पण के प्रकाश के लिए ईश्वर की प्रशंसा की और उसे धन्यवाद दिया। मुझे समझ में आया कि अताउल्लाह इस्कंदरानी की बुद्धिमानी भरी बातों में इस दोहे में कितना महान सत्य निहित है:

जिसने परमेश्वर को खो दिया है, उसने क्या पाया है?
और जिसने ईश्वर को पा लिया उसने क्या खोया?

इससे मुझे पैगंबरी परंपरा के आंतरिक अर्थ को समझने में मदद मिली: "अच्छी ख़बर उन लोगों की प्रतीक्षा कर रही है जो दूसरों से अलग हो गए हैं (अपनी इस्लामी मान्यताओं और जीवन शैली के कारण)।"

हालाँकि आस्था की रोशनी ने मेरे अकेलेपन और अलगाव की भावनाओं को दूर कर दिया, फिर भी उन्होंने मेरी आत्मा पर एक गहरी छाप छोड़ी। उन्होंने मुझे खुद से यह पूछने के लिए मजबूर किया कि क्या दुनिया के इस अतिथिगृह में मेरा कर्तव्य समाप्त हो गया है, क्योंकि यह दुनिया अनंत काल तक मेरे रास्ते में बस एक पड़ाव है, ताकि मैं उस कर्तव्य को आपको और शब्दों को सौंप सकूँ। इसीलिए मैंने आपसे पूछा कि क्या शब्द आस्था की सच्चाइयों के बारे में सभी संदेहों को दूर करने के लिए पर्याप्त थे, ताकि मैं दुनिया को भूल सकूँ और जैसा कि मौलाना जलाल अल-दीन ने कहा:

क्या आप जानते हैं कि 'समा' (परमानंद में घूमना) क्या है?
यह आत्म-अस्तित्व के प्रति अचेतन हो जाना है।
और स्वयं के पूर्ण विनाश में स्थायित्व का आनंद लेना।

वह शाश्वत है।

सईद नूरसी

साहित्य। रूमी की मृत्यु के बाद, उनके शिष्यों को मावलविया संप्रदाय के रूप में संगठित किया गया, जिसे पश्चिम में व्हर्लिंग दरवेश कहा जाता था। (संपादक)

सातवां पत्र

सातवां पत्र

पैगम्बर मुहम्मद का ज़ैनब से विवाह

उसके नाम में, उसकी महिमा हो।

ऐसी कोई भी चीज़ नहीं है जो उसकी स्तुति से उसकी महिमा न करती हो।

शांति और ईश्वर की दया और कृपा आप पर सदैव बनी रहे।

प्रिय भाइयो,

I मुझे बताया गया कि आपने दमिश्क के हाफिज से कहा था कि वह मुझे दो बातें बताएं: पहली, कि आज के गुमराह लोग, अतीत के पाखंडियों की तरह, दावा करते हैं कि पैगंबर ने अपनी कामुक इच्छाओं को संतुष्ट करने के लिए ज़ैनब बिन्त जहश से शादी की थी।

उत्तर: यह आरोप पूरी तरह से झूठा है और इसका उनके शुद्ध व्यक्तित्व और शुद्धता पर कभी कोई प्रभाव नहीं पड़ा है या नहीं पड़ेगा। इतिहास के अभिलेख और उनके समकालीन, चाहे वे मित्र हों या शत्रु, इस बात की गवाही देते हैं कि वह एकनिष्ठ थे और खदीजा से खुशी-खुशी विवाहित थे, जो उनसे कई साल बड़ी एक विधवा थीं, और 25 साल तक किसी भी तरह के दुराचार या अशुद्धता में लिप्त नहीं रहे, उस समय उनकी आयु 50 वर्ष थी। जैसा कि हम जानते हैं, 25 से 50 वर्ष की आयु के बीच के पुरुष वासना और कामुक इच्छाओं से जलते हैं। इससे पता चलता है कि 50 वर्ष की आयु के बाद, जब इच्छाएँ कम हो जाती हैं, तो उनकी शादियाँ महत्वपूर्ण उद्देश्यों के लिए की जाती थीं। एक उद्देश्य नीचे समझाया गया है।

पैगंबर के कार्य और आचरण के मानदंड, उनकी बातों की तरह, इस्लामी कानून और संविधान का दूसरा स्रोत हैं।

panions16 ने जो कुछ भी देखा, उसे विरासत में मिला और प्रसारित किया
उनके बीच रहते हुए, उनकी पत्नियाँ नियम और कानून बताती और बताती थीं
व्यक्तिगत और पारिवारिक जीवन के मानदंड। इस भारी जिम्मेदारी की मांग थी कि
उसे अलग-अलग स्वभाव, पालन-पोषण और चरित्र वाली पत्नियाँ होनी चाहिए। धार्मिक सूक्ष्म सत्यों और नियमों में से लगभग आधे का वर्णन
इन महिलाओं को शुद्ध पत्नियों के रूप में जाना जाता है।

ज़ैनब से उनकी शादी की व्याख्या इस प्रकार की गई है: मुहम्मद उनके पिता नहीं हैं
तुम्हारे लोगों में से कोई भी, लेकिन ईश्वर का दूत और नबियों की मुहर (33:40)।
कुरान की अन्य आयतों की तरह, यह आयत भी समझ के सभी स्तरों को संबोधित करती है। कुछ लोगों के लिए इसका अर्थ इस प्रकार है:

ज़ैद, पैगम्बर का स्वतन्त्र दास और सेवक जिसे उन्होंने ज़ैद कहा था
"मेरे बेटे," ने स्वीकार किया कि वह आध्यात्मिक रूप से अपनी पत्नी ज़ैनब से कमतर है।17
यह महसूस करते हुए कि उसका उत्कृष्ट चरित्र उसे पैगम्बर की पत्नी बनने के योग्य बनाता है, उसने कहा,
अंततः उसे तलाक देने की अनुमति दी गई। जैसा कि बताया गया है: हमने उसे विवाह में दे दिया
(33:37) फिर पैगम्बर ने अल्लाह के आदेश का पालन करते हुए उससे विवाह कर लिया ।
हालाँकि इससे उस समय की एक स्थापित सामाजिक परंपरा टूट गई। संक्षेप में, यह
विवाह स्वर्ग में निर्धारित किया गया था और इसका किसी भी कथित शारीरिक इच्छा से कोई संबंध नहीं था।

जैसा कि संकेत किया गया है: हमने उसका विवाह तुम्हारे साथ कर दिया, ताकि कोई समस्या न हो।
अपने दत्तक पुत्रों की पत्नियों के संबंध में विश्वासियों के लिए पाप और परेशानी (33:37),
इस आयत में कानून का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है जो समुदाय को लाभ पहुंचाता है। अगर बुजुर्ग या नेता अपने विषयों को संबोधित करते हैं, या भविष्यवक्ता सदस्यों को संबोधित करते हैं
अपने समुदाय के "पुत्रों" के रूप में, यह उनके पद, स्थिति और मिशन के कारण है, न कि इसलिए कि वे अपने विषयों के असली पिता हैं। न ही यह पति की तरह है
अपनी पत्नी से कहते हुए: "तुम मेरी माँ की पीठ की तरह हो," एक ऐसा कथन जो
जब तक वह आवश्यक शुल्क नहीं चुकाता, उसकी पत्नी को उसके पास जाने से मना कर दिया जाता है। इसलिए बेटियाँ
मुसलमानों की विधवाओं या पूर्व पत्नियों को पैगम्बर के लिए वर्जित नहीं किया गया है।18

---

16 साथी: वे लोग जो पैगम्बर के पास शिक्षा और मार्गदर्शन प्राप्त करने के लिए एकत्र होते थे।
जितना संभव हो सके उनके उदाहरण का अनुसरण करें। उन्हें मुस्लिम राष्ट्र का अभिजात वर्ग माना जाता है
और अग्रिम पंक्ति में हैं और उन्हें सर्वोच्च सम्मान और प्रशंसा दी जाती है। (ट्र.)

17 पैगम्बर ने ज़ैद और ज़ैनब से विवाह करने का अनुरोध किया था ताकि लोगों को यह दिखाया जा सके कि उन्हें क्या करना चाहिए।
दूसरों का उनके रंग या सामाजिक स्थिति के आधार पर आकलन न करें: ज़ैद एक अश्वेत पूर्व-दास था, जबकि ज़ैनब
वह एक कुलीन अरब महिला थीं। (सं.)

18 इस ईश्वरीय आदेश का एक उद्देश्य इस्लाम-पूर्व की गलत प्रथा को समाप्त करना था।
गोद लिए गए और पालक बच्चों को जैविक बच्चों के समान कानूनी दर्जा प्राप्त करने की अनुमति देना।
इस प्रकार, उदाहरण के लिए, कोई व्यक्ति कानूनी रूप से अपने दत्तक पुत्र की विधवा या पूर्व पत्नी से विवाह नहीं कर सकता।
यह प्रथा समाप्त कर दी गई क्योंकि किसी भी रिश्ते की तुलना बच्चे के रिश्ते से नहीं की जा सकती।
प्राकृतिक माता-पिता। न ही ऐसी घोषणाएँ पति द्वारा अपनी पत्नी को बताए जाने के समान हैं:

जैसा कि ऊपर बताया गया है, श्लोक ३३:४० से पता चलता है कि समझ के विभिन्न स्तरों वाले लोग यह निहितार्थ निकाल सकते हैं: उच्च पद और
ज़िम्मेदारी वाले लोग अपने अधीन काम करने वालों के प्रति पितावत स्नेह महसूस करते हैं। उदाहरण के लिए, यदि वे आध्यात्मिक नेता, पैगम्बर या संत हैं, तो उनकी करुणा और स्नेह एक पिता से कहीं अधिक होगा। जैसा कि लोग उन्हें देखेंगे
एक पिता के रूप में, वे ऐसे लोगों का अपने किसी मित्र से विवाह करना अनुचित समझ सकते हैं।
औरतें। इस भ्रम को दूर करने के लिए, कुरान हमें बताता है कि: "ईश्वरीय दया पैगंबर को आपके लिए बहुत स्नेह करने के लिए प्रेरित करती है। आपके रूप में उनकी स्थिति के कारण
नेता, आप उनके बच्चों की तरह हैं। लेकिन चूंकि वह आपके जैविक पिता नहीं हैं, इसलिए वह
अपनी औरतों में से किसी से शादी कर लो। उसका तुम्हें 'मेरे बेटे' कहना यह नहीं है कि तुम
कानूनी तौर पर उनके बेटे हैं।"

वह शाश्वत है।

सईद नूरसी

"तुम मेरी माँ की पीठ की तरह हो," जिसके कानूनी निहितार्थ हैं लेकिन कानूनी तौर पर यह नहीं है
उसकी पत्नी उसकी माँ: अल्लाह ने तुम्हारी पत्नियों को, जिनसे तुम कहते हो कि तुम मेरी माँ की पीठ की तरह हो, तुम्हारी माँ नहीं बनाया
और न ही उसने उन लोगों को, जिन्हें तुम मेरा बेटा कहते हो, तुम्हारा बेटा बनाया। यह सिर्फ़ एक बात है।
अपने मुँह से कही हुई बातें मत कहो। लेकिन परमेश्वर सच बोलता है और मार्ग दिखाता है (33:4)। यह अलगाव
प्राकृतिक वास्तविकता से "कानूनी" कल्पना को निकालने से पूरे समुदाय को लाभ हुआ। मैसेंजर के रूप में,
मुहम्मद को यह नया कानून और रिवाज स्थापित करना पड़ा। (ट्र.)

आठवां अक्षर

आठवाँ पत्र

दिव्य नामों की एक झलक, सर्व दयालु और सर्व करुणामय

उसके नाम में, उसकी महिमा हो।

ऐसी कोई भी चीज़ नहीं है जो उसकी स्तुति से उसकी महिमा न करती हो।

Tयहाँ कई कारण हैं कि क्यों ईश्वरीय नाम सर्व-दयालु और सर्व-करुणामय को हर अच्छे काम और इरादे की शुरुआत में कहे जाने वाले बसमलाह (ईश्वर के नाम पर, सर्व-दयालु, सर्व-करुणामय) में शामिल किया गया है। मुझे उम्मीद है कि मैं उनमें से कुछ को बाद में समझाऊँगा। अभी के लिए, मैं उनके द्वारा छोड़े जाने वाले एक प्रभाव के बारे में बात करूँगा

मुझ पर:

ऐसा लगता है कि इन दो महानतम दिव्य नामों में इतना व्यापक और शानदार प्रकाश है कि यह ब्रह्मांड को घेर लेता है, हर किसी की ज़रूरतों को हमेशा के लिए पूरा करता है, और उन्हें सभी शत्रुता से बचाता है। वे लोगों को प्रबुद्ध कर सकते हैं यदि वे ईश्वर की संपत्ति और शक्ति के सामने अपनी गरीबी और लाचारी को समझते हैं और बदले में, उनकी असीम करुणा और दया के लिए उन्हें धन्यवाद देते हैं। यह ईश्वर के प्रति सच्ची भक्ति और विनम्रता का मार्ग है।

इस मुद्दे पर मैं कुछ शोधकर्ताओं, समझदार लोगों और यहां तक कि इमाम रब्बानी, जिन्हें मैं अधिकांश विषयों में अपना गुरु मानता हूं, के विपरीत जोर देना चाहूंगा कि पैगंबर याकूब (जैकब) ने अपने बेटे पैगंबर यूसुफ (जोसेफ) के लिए जो गहराई से महसूस किया वह स्नेह था, प्रेम नहीं। स्नेह प्रेम से अधिक तीव्र, शुद्ध और अधिक उदात्त है, और इसलिए पैगंबर के लिए अधिक उपयुक्त है-

हुड का ऊंचा दर्जा। मेरी राय में, प्रेम अनुपयुक्त लगता है, खासकर जब नश्वर प्राणियों के लिए गहराई से महसूस किया जाता है।

इस प्रकार पैगंबर जैकब ने यूसुफ के लिए गहरा स्नेह महसूस किया, जिसे कुरान में बहुत ही शानदार ढंग से व्यक्त किया गया है। इसके अलावा, स्नेह व्यक्ति को दयालु ईश्वर के नाम को प्रकट करने में सक्षम बनाता है। प्रेम व्यक्ति को सच्चे प्रियतम की ओर निर्देशित होने पर सर्व-प्रेममय ईश्वर के नाम को प्रकट करने में सक्षम बना सकता है। मिस्र के अजीज (बाइबिल में पोतीफर) की पत्नी जुलैहा ने भी यूसुफ के लिए ऐसा ही महसूस किया था।

प्रेम की तुलना में स्नेह इतना अधिक उत्कृष्ट और गहरा है कि कुरान ने याक़ूब की भावनाओं को ज़ुलैहा की भावनाओं से भी अधिक श्रेष्ठ माना है।

इमाम रब्बानी ने यह समझते हुए कि पैगंबर नश्वर प्राणियों के लिए कोई प्रेम महसूस नहीं करते, कहा कि यूसुफ के लिए जैकब का प्रेम कोई दोष नहीं था, क्योंकि वह यूसुफ की आध्यात्मिक सुंदरता से प्यार करता था न कि उसके नश्वर व्यक्तित्व से। हालाँकि, इमाम रब्बानी को इसकी व्याख्या करते समय परेशानी हुई। वास्तव में, यूसुफ के लिए जैकब का स्नेह प्रेम से कहीं अधिक उज्ज्वल, शुद्ध और अधिक उदात्त है। वास्तव में, स्नेह सुंदर और गहराई से महसूस किया जाता है, जबकि अधिकांश मामलों में प्रेम ऐसी चीज़ नहीं है जिसके लिए हमें खुद को कमतर आंकना चाहिए।

इसके अलावा, स्नेह इतना व्यापक है कि लोगों का अपने बच्चों के प्रति स्नेह उन्हें सभी बच्चों और सभी जीवित प्राणियों के प्रति कुछ स्नेह महसूस कराता है। वे व्यापक दर्पण बन सकते हैं जिसमें ईश्वरीय नाम सर्व-दयालु स्वयं प्रकट होता है, जबकि प्रेम केवल प्रेमी तक ही सीमित होता है और प्रेमियों को अपने प्रियतम को प्राथमिकता देने के लिए दूसरों को कमतर आंकने का कारण बनता है। उदाहरण के लिए, एक प्रेमी ने कहा: "सूर्य मेरी प्रेमिका की सुंदरता के कारण शर्मिंदा महसूस करता है और खुद को बादल के पीछे छिपा लेता है ताकि वह दिखाई न दे।" इस प्रेमी को सूर्य, जो भगवान के आठ महान नामों को इतनी चमक से प्रकट करता है, को शर्मिंदा महसूस करने का क्या अधिकार है?

इसके अलावा, स्नेह एक सच्ची भावना है जिसका कोई गुप्त उद्देश्य नहीं है और जो बदले में कुछ नहीं चाहता, जबकि प्रेम प्रतिदान की मांग करता है। प्रेम के कारण होने वाले आंसू ऐसे ही प्रतिदान की मांग करते हैं, जबकि सबसे निम्न प्रकार का सच्चा स्नेह (जैसे कि जानवरों द्वारा अपने बच्चों के लिए महसूस किया जाने वाला) भी साबित करता है कि स्नेह किसी प्रतिदान की मांग नहीं करता। यूसुफ के लिए जैकब का स्नेह, सूरा यूसुफ का सबसे बेहतरीन पहलू, हमें ईश्वरीय नामों की ओर निर्देशित करता है जो दयालु और दयालु हैं और दिखाता है कि स्नेह का मार्ग ईश्वरीय करुणा की ओर ले जाता है। स्नेह की बीमारियों का इलाज इस सत्य में व्यक्त किया गया है: ईश्वर सबसे अच्छा संरक्षक है, और वह दयालुओं में सबसे दयालु है (12:64)।

वह शाश्वत है।

सईद नूरसी

नौवां अक्षर

नौवां पत्र [19]

• चमत्कार और ईश्वरीय उपहार • मानवीय प्रवृत्तियों का उन्मुखीकरण • ईमान (विश्वास-विश्वास) और इस्लाम

उसके नाम में, उसकी महिमा हो।

ऐसी कोई चीज़ नहीं है जो उसकी स्तुति से महिमावान न हो।

S दूसरा: मैं आपके उत्साह और सफलता के लिए आपको बधाई देता हूँ कुरान की सच्चाईयों को फैलाना। यह आपके लिए ईश्वरीय उपहार या ईश्वरीय सहायता या कुरान का चमत्कार है। मुझे लगता है कि ईश्वरीय उपहार और उसके द्वारा किए गए चमत्कारों के बारे में बात करने का समय आ गया है।

संतों की एजेंसी, मैं दोनों के बीच एक अंतर का उल्लेख करूंगा:

चमत्कारी कार्यों का प्रचार तभी किया जाना चाहिए जब उनसे बचा न जा सके।

हालाँकि, ईश्वरीय उपहार की घोषणा करना स्वीकृत है क्योंकि यह ईश्वर से प्राप्त अनुग्रहों का प्रचार करता है। हो सकता है कि ईश्वर पहले समूह के कुछ लोगों को चमत्कार-कार्यों के माध्यम से धीरे-धीरे विनाश की ओर ले जा रहा हो, क्योंकि वे उन चमत्कारों का श्रेय खुद को देते हैं जिनसे ईश्वर उन्हें अनुग्रहित करता है और इसलिए गर्व महसूस करते हैं। लेकिन अगर लोगों को ईश्वर द्वारा चमत्कार-कार्यों से सम्मानित किया जाता है, तो वे इसका श्रेय उन्हें देते हैं, और उनमें अधिक विश्वास और भरोसा रखते हैं, तो यह हानिरहित है। उन्हें इसका घमंड करने के लिए जानबूझकर इसका प्रचार या प्रदर्शन नहीं करना चाहिए।

---

19 यह उसी ईमानदार शिष्य को लिखे गए पत्र का एक हिस्सा है, [जिसे सातवां पत्र भेजा गया हो सकता है।] (ट्र.)

दिव्य उपहार दिव्य मार्गदर्शन और सहायता का एक तरीका है। यह हानिरहित है और चमत्कारी कार्य से अधिक उत्कृष्ट है, जो किसी को आगे ले जा सकता है
इस प्रकार इसे ईश्वरीय कृपा घोषित किया जा सकता है, क्योंकि इसे किसी की संपत्ति नहीं माना जा सकता। यही कारण है कि, मेरे भाई, कभी-कभी मेरा सार्वजनिक
ईश्वरीय मार्गदर्शन और सहायता के बारे में शब्द जो हमें सेवा करने में प्राप्त होते हैं
कुरान हमारे लिए ईश्वर की कृपा को व्यक्त करने का एक तरीका है। और यही कारण है कि मैं कभी-कभी आपको इस पवित्र सेवा में हमारी सफलताओं के बारे में लिखता हूं, क्योंकि मैं यह जानता हूं
आपको अधिक आभारी बनाता है.

तीसरा: जो लोग इस संसार को सैन्य अतिथिगृह समझते हैं और उसमें रहते हैं
तदनुसार वे सभी लोगों में सबसे अधिक खुश हैं। वे सबसे अधिक खुश रहने वाले व्यक्ति बन सकते हैं
ईश्वर द्वारा स्वीकृत और प्रिय, सर्वोच्च आध्यात्मिक पद, और सबसे मूल्यवान वस्तु को लगभग कुछ भी नहीं बेचते। ऐसे लोग सुखी जीवन जीते हैं
सीधे मार्ग पर चलो और उससे विचलित मत हो।

सांसारिक मामले और चीज़ें लगभग कांच की तरह बेकार और भंगुर हैं,
जबकि परलोक से संबंधित चीजें हीरे के समान मूल्यवान हैं और उन्हें तोड़ना असंभव है। सभी मानवीय प्रवृत्तियाँ, जैसे जिज्ञासा और प्रेम, जुनून और
लोगों में इच्छाएं पैदा की जाती हैं ताकि उन्हें परलोक में सुखी जीवन जीने में मदद मिल सके।
यदि कोई इस जीवन के लिए उनका शोषण करता है, तो वे केवल भंगुर कांच खरीदते हैं
हीरे की कीमत.

इस विषय पर मैं एक बात पर जोर देना चाहूँगा: प्रेम एक बहुत बड़ी चीज है।
प्रबल भावना। नश्वर प्राणियों के लिए इसे महसूस करना या तो प्रेमियों को अंतहीन दर्द और दुःख में डाल देता है या, चूँकि नश्वर प्राणी इतने सच्चे प्यार के लायक नहीं हैं,
प्रेमियों को स्थायी प्रियतम की खोज की ओर ले जाता है। बाद के मामले में,
यह सच्चा प्यार बन जाता है.

एक व्यक्ति की हजारों भावनाओं में से प्रत्येक के दो पहलू होते हैं: आलंकारिक और
वास्तविक। उदाहरण के लिए, हर कोई भविष्य के बारे में चिंता करता है, भले ही उनके पास पहले से ही कुछ हो।
इस बात की कोई गारंटी नहीं है कि वे कल जीवित रहेंगे। फिर, उन्हें एहसास होता है कि वे
वे अपने नियत समय पर ही मरेंगे। परिणामस्वरूप, वे चिंता करना बंद कर देते हैं
यहाँ उनके अनिश्चित भविष्य और उनके शाश्वत भविष्य पर ध्यान केंद्रित करें
मृत्यु। यह एक ऐसा भविष्य है जिसके बारे में चिंता करना उचित है, खासकर उन लोगों के लिए जो ऐसा करते हैं
ईश्वरीय आज्ञाओं पर ध्यान न देना।

इसी तरह, लोगों में धन और पद के लिए बहुत जुनून होता है। लेकिन
वे जल्द ही समझ जाते हैं कि धन, प्रसिद्धि और पद इनके लायक नहीं हैं, क्योंकि
ऐसी बातें उनकी गरिमा को खत्म कर सकती हैं, ऐसे अपमानजनक रवैये को प्रकट कर सकती हैं
और पाखंड, या उन्हें दूसरों के सामने झुकने और नम्र होने के लिए मजबूर करना।
लेकिन सबसे बढ़कर, ये चीज़ें अस्थायी हैं। अंत में, ऐसे लोग झुक जाते हैं

आध्यात्मिक पद और ईश्वर के समीपता की ओर बढ़ते हैं और अच्छे कर्मों में खुद को व्यस्त रखते हैं ताकि उनके पास अपने अनंत जीवन के लिए प्रावधान हो। इस प्रकार क्षणिक चीजों को प्राप्त करने की उनकी अत्यधिक महत्वाकांक्षा शाश्वत चीजों को प्राप्त करने में बदल जाती है।

लोगों का महत्वहीन, क्षणिक चीज़ों के प्रति अत्यधिक झुकाव हठी हो सकता है। लेकिन अगर उन्हें अंततः एहसास हो जाए कि इस हठीले लगाव से कोई फ़ायदा नहीं है, तो ऐसी हठ आस्था की सच्चाई या इस्लाम के मूल सिद्धांतों के लिए दृढ़ता बन सकती है, साथ ही अगले जीवन के लिए प्रयास करने के लिए भी।

अगर लोग अपनी आध्यात्मिक शक्तियों का इस्तेमाल अपनी कामुक और सांसारिक इच्छाओं को पूरा करने के लिए करते हैं और इस दुनिया में ऐसे जीते हैं जैसे कि वे हमेशा यहीं रहेंगे, तो वे शक्तियाँ अनैतिक गुणों को जन्म देंगी और बहुत बर्बादी का कारण बनेंगी। लेकिन अगर लोग इनका इस्तेमाल परलोक में समृद्धि के लिए करते हैं, जीवन की ज़रूरी ज़रूरतों को नज़रअंदाज़ किए बिना, तो ये शक्तियाँ दोनों दुनियाओं में प्रशंसनीय नैतिक गुणों और ज्ञान और सत्य के अनुसार खुशी की ओर ले जाएँगी।

आजकल उपदेशकों की सलाह अप्रभावी होने का एक कारण यह है कि वे लोगों को अपना स्वभाव बदलने के लिए आमंत्रित करते हैं। वे सलाह देते हैं: "ईर्ष्यालु या महत्वाकांक्षी मत बनो, शत्रुता मत करो या जिद्दी मत बनो, दुनिया से प्यार मत करो," इत्यादि। ऐसी सलाह बेकार है, क्योंकि यह मानव स्वभाव के विरुद्ध है। इसके बजाय, इन ऊर्जाओं को अच्छे कामों में लगाया जा सकता है और सकारात्मक लक्ष्यों की ओर निर्देशित किया जाना चाहिए। उदाहरण के लिए, दुनिया के लिए प्यार को दूसरी दुनिया के लिए प्यार में बदला जा सकता है, शत्रुता को अपने शारीरिक स्व के खिलाफ निर्देशित किया जा सकता है, और ईर्ष्या अच्छे काम करने के लिए प्रतिस्पर्धा करने का एक साधन बन सकती है।

चौथा: मुस्लिम विद्वानों ने इस बात पर विस्तार से चर्चा की है कि क्या इस्लाम और ईमान (विश्वास-विश्वास) अलग-अलग हैं। कुछ कहते हैं कि वे एक ही हैं और दूसरे कहते हैं कि वे अलग-अलग हैं, हालाँकि एक दूसरे के बिना स्वीकार्य नहीं है। मैं उनके बीच एक अंतर देखता हूँ, जो इस प्रकार है: इस्लाम एक पक्ष चुनना है, जबकि ईमान का अर्थ है निश्चितता के साथ पुष्टि करना।

दूसरे शब्दों में इस्लाम या मुसलमान होने का मतलब है सच्चाई का साथ देना, उसके प्रति समर्पित होना और उसका पालन करना। ईमान या आस्तिक (मुमिन) होने का मतलब है इस्लाम की सच्चाई की पुष्टि करना और उसे स्वीकार करना। मैं कुछ ऐसे लोगों को जानता हूँ जो कुरान की आज्ञाओं का दृढ़ता से समर्थन करते हैं, भले ही वे आस्तिक न हों। ऐसे लोगों को शाब्दिक अर्थ में मुसलमान माना जा सकता है (जो आत्मसमर्पण करते हैं) क्योंकि वे इस्लाम के कुछ तत्वों का पालन करते हैं, लेकिन उन सभी पर विश्वास नहीं करते। कुछ आस्तिक मुसलमान नहीं माने जा सकते, क्योंकि वे कुरान की आज्ञाओं पर ज़्यादा ध्यान नहीं देते या उनका पालन करने की कोशिश नहीं करते।

प्रश्न: क्या इस्लाम के बिना ईमान या मुसलमान होना - बिना आज्ञाकारिता और दैनिक जीवन में अभ्यास के - एक के लिए दूसरे में समृद्ध होने के लिए पर्याप्त है?
दुनिया ?

उत्तर: जो लोग कुरान के आदेशों के अनुसार जीवन जीते हैं
लेकिन ईमान के बिना, और जो ईमान वाले लोग ईश्वरीय आदेशों को अपने जीवन में लागू नहीं करते, वे परलोक में सफल नहीं हो सकते। इस्लाम के प्रमाण,
सृष्टि के सभी कणों के समान असंख्य और प्राणियों की श्रृंखला के समान मजबूत,
और कुरान और विश्वास की सच्चाई इतनी स्पष्टता से समझाई गई है
रिसाले-ए-नूर में पाठकों को दृढ़ विश्वास और समर्पण की भावना मिलती है।

जब भी मैं शाह नक्शबंद के दैनिक अनुष्ठान में अपने विश्वास को स्वीकार करने के बाद पढ़ता हूं: "हम इस स्वीकारोक्ति के साथ जीते हैं, और हम इसके साथ मरते हैं, और कल हम इसके साथ पुनर्जीवित होंगे," मुझे लगता है कि मैं एक भी नहीं छोड़ूंगा

विश्वास की सच्चाई, भले ही पूरी दुनिया मुझे पेश की जाए। यह असहनीय है
मेरे लिए एक भी विश्वास सत्य के विपरीत कोई भी विचार सोचना, एक सेकंड के लिए भी। अगर पूरी दुनिया मेरी निजी संपत्ति होती, यहाँ तक कि मेरी शारीरिक आत्मा भी
विश्वास के एक सत्य को स्थापित करने के बदले में इसे त्यागने का विरोध नहीं करेंगे।

जब मैं यह कहता हूँ: "हम सभी में विश्वास करते हैं, तो मेरे हृदय में एक दृढ़ विश्वास उत्पन्न होता है
जिन पैगम्बरों को तूने भेजा, और हम उन सभी धर्मग्रंथों पर विश्वास करते हैं जो तूने भेजे हैं
नीचे, और हम उन सभी की पुष्टि करते हैं। " मैं यह सोचना या विश्वास करना असंभव मानता हूं
अन्यथा, और गुमराह लोगों को असीम रूप से मूर्ख और बेवकूफ समझें।

मैं आपके माता-पिता को नमस्कार और आदर व्यक्त करता हूँ। मैं उनसे निवेदन करता हूँ कि
मेरे लिए प्रार्थना करने के लिए। वे मेरे अपने माता-पिता की तरह हैं, क्योंकि आप धर्म में मेरे भाई हैं। मैं आपके गांव के सभी लोगों को भी अपनी शुभकामनाएं भेजता हूं, खासकर
जो लोग आपको शब्द पढ़ते हुए सुनते हैं।

वह शाश्वत है।

सईद नूरसी

दसवाँ अक्षर

दसवाँ पत्र

• मैनिफ़ेस्ट रिकॉर्ड और मैनिफ़ेस्ट बुक • मस्टरिंग का सर्वोच्च प्लेन

उसके नाम में, उसकी महिमा हो।

ऐसी कोई भी चीज़ नहीं है जो उसकी स्तुति से उसकी महिमा न करती हो।

(इसमें दो प्रश्नों के उत्तर दिए गए हैं।)

प्रथम: कुरान में प्रकट अभिलेख (इमामुन मुबीन) और प्रकट पुस्तक (किताबुन मुबीन) का कई बार उल्लेख किया गया है ।

कुछ कुरान व्याख्याकार मानते हैं कि वे एक ही चीज़ हैं, जबकि अन्य कहते हैं कि उनके अलग-अलग अर्थ और अर्थ हैं। हालाँकि उनके वास्तविक विषय-वस्तु और अर्थ की व्याख्याएँ अलग-अलग हैं, लेकिन सभी इस बात पर सहमत हैं कि दोनों वाक्यांश ईश्वरीय ज्ञान का वर्णन करते हैं। कुरान के ज्ञानोदय के माध्यम से, मुझे निम्नलिखित विश्वास है:

अदृश्य दुनिया से संबंधित प्रकट अभिलेख, दिव्य ज्ञान और आदेशों के एक पहलू का वर्णन करता है। यह भूत और भविष्य से संबंधित है, वर्तमान से नहीं। दिव्य नियति की इस नोटबुक में वस्तुओं की उत्पत्ति, जड़ें और बीज शामिल हैं, न कि दृश्यमान रूप में उनके फलते-फूलते रूप

अस्तित्व।

मूल, जड़ें और बीज, जिनसे ईश्वर पूर्ण क्रम और कलात्मकता के साथ चीजों को उगाता है, यह दर्शाता है कि वे ईश्वरीय ज्ञान में निहित सिद्धांतों की एक नोटबुक के अनुसार व्यवस्थित हैं। बीज और फल, जो

अस्तित्व में आने वाले प्राणियों के सूचकांक और कार्यक्रम शामिल हैं, यह दर्शाता है कि वे दिव्य आदेशों के लघु रजिस्टर हैं। उदाहरण के लिए, एक बीज एक पेड़ बनाने के लिए कार्यक्रम और सूचकांक है, साथ ही यह दिव्य सिद्धांतों का एक लघु अवतार है जो पेड़ को अस्तित्व में लाता है और इस कार्यक्रम और सूचकांक को निर्धारित करता है।

संक्षेप में, प्रकट अभिलेख को सृजन के वृक्ष के सूचकांक और कार्यक्रम के रूप में समझा जा सकता है, जो अपनी शाखाओं को भूत और भविष्य के समय और अदृश्य दुनिया के माध्यम से फैलाता है। इस अर्थ में, यह दिव्य नियति का बहीखाता या उसके सिद्धांतों का रजिस्टर है। इन सिद्धांतों के निर्देशों और आवश्यकताओं के माध्यम से चीजों को अस्तित्व में लाने के लिए कणों का उपयोग और प्रबंधन किया जाता है।

प्रकट पुस्तक दृश्यमान या अवलोकनीय दुनिया से संबंधित है, और इस प्रकार अतीत और भविष्य की तुलना में वर्तमान से अधिक संबंधित है। यह ईश्वर की शक्ति और इच्छा का विवरण या पुस्तक है, न कि उनके ज्ञान और आदेशों का। यदि प्रकट अभिलेख दिव्य नियति की नोटबुक है, तो प्रकट पुस्तक दिव्य शक्ति की नोटबुक है। दूसरे शब्दों में, सभी चीजें अपने अस्तित्व और सार, विशेषताओं और कार्यों के माध्यम से परिपूर्ण कला और व्यवस्थितता प्रदर्शित करती हैं। यह साबित करता है कि हर चीज को एक प्रभावी इच्छा के नियमों और एक परम शक्ति के सिद्धांतों के अनुसार अस्तित्व दिया गया है, कि यह विशेष रूप से बनाई गई है और एक नियत माप और विशेष आकार दिया गया है। इस प्रकार दिव्य शक्ति और इच्छा के पास कानूनों का एक सार्वभौमिक, व्यापक रजिस्टर, एक महान नोटबुक है, जिसके अनुसार प्रत्येक चीज के लिए एक विशेष रूप और पदार्थ निर्धारित किया जाता है।

गुमराह करने वाले और दर्शनशास्त्र का अनुसरण करने वाले लापरवाह लोग आश्चर्यजनक रूप से इसे "प्रकृति" कहते हैं, जिससे यह पूरी तरह से अर्थहीन हो जाता है, भले ही उन्होंने ईश्वर की सर्वोच्च संरक्षित पट्टिका (लौहुन महफूज) के अस्तित्व को महसूस किया हो और दिव्य बुद्धि और इच्छा की उस सुस्पष्ट रूप से लिखी गई पुस्तक की अभिव्यक्तियों और प्रतिबिंबों को देखा हो। हालाँकि, प्रकट अभिलेख के निर्देशों (अर्थात्, दिव्य नियति के आदेश और निर्देश) के माध्यम से, दिव्य शक्ति जीवों की श्रृंखला बनाने या लिखने के लिए कणों का उपयोग करती है, जिनमें से प्रत्येक कड़ी समय के रूपक पृष्ठ (मिटाव और पुन: पुष्टि की पट्टिका [लौह महव वा इथबात]) पर चीजों के निर्माण में एक संकेत है।

इस प्रकार कण उस लेखन के कंपन और गति के कारण चलते हैं, जो तब होता है जब प्राणी अदृश्य दुनिया से प्रकट (भौतिक) दुनिया में, ज्ञान से शक्ति की ओर जाते हैं। मिटाने और पुनः पुष्टि की पट्टिका लिखने और मिटाने के लिए एक स्लेट है, एक हमेशा बदलती रहने वाली नोटबुक

निश्चित और निरंतर सुप्रीम संरक्षित टैबलेट, और इस बाद वाली टैबलेट की आकस्मिकताओं के क्षेत्र में नोटबुक, जहाँ सभी चीजें जीवन और मृत्यु, अस्तित्व और क्षणभंगुरता की निरंतर अभिव्यक्तियाँ हैं। यही वास्तविकता है
समय की। जिसे हम समय कहते हैं, वह सृष्टि में बहने वाली एक विशाल नदी है, जिसकी एक वास्तविकता है
बाकी सब चीजों की तरह। इसकी वास्तविकता शक्ति के लेखन की स्याही और पन्नों की तरह है
मिटाने और पुनः पुष्टि की पटिया पर। केवल ईश्वर ही अदृश्य को जानता है।

दूसरा प्रश्न: मस्टरिंग का सर्वोच्च मैदान कहां है?

उत्तर: हर चीज़ का सच्चा ज्ञान ईश्वर के पास है। बुद्धिमान सृष्टिकर्ता द्वारा हर चीज़ में दिखाई गई उत्कृष्ट बुद्धि (छोटी सी चीज़ में बड़ी बुद्धि जोड़कर) भी पृथ्वी की परिक्रमा में प्रकट होती है। यह नहीं है कि यह सब कुछ ईश्वर के द्वारा ही किया जाता है।
लक्ष्यहीन रूप से घूमता है, लेकिन एक विशाल वृत्त की परिधि खींचता है, जिसमें,
अपनी क्रांति के माध्यम से, यह लगातार सभी घटनाओं के परिणामों को खाली कर देता है
उसके भीतर घटित हो रहा है। क़यामत के दिन, प्रत्येक व्यक्ति अपने-अपने अस्तित्व को देखेगा।
जीवन का परिणाम.

एक भविष्यवाणी परंपरा के अनुसार, यह विशाल चक्र केन्द्रित होगा
दमिश्क के क्षेत्र पर, लेकिन इसके विस्तारित रूप में और
इसके बाद के आयाम और विशेषताएं। सभी परिणाम लगातार मस्टरिंग के रजिस्टरों या टैबलेट के सुप्रीम प्लेन में स्थानांतरित किए जाते हैं। यह मैदान,
अब अदृश्य के पर्दे के पीछे, प्रलय के दिन दिखाई देगा,
और पृथ्वी के निवासी इसे अपने नए परलोक रूप में देखेंगे।

समय के अंत में, पृथ्वी, जो एक क्षेत्र है (बीजों का उगना और मस्टरिंग के लिए कटाई करना), एक नदी (हमारे कर्मों को ले जाना), अनाज का एक माप,
एक बुशल (हमारे कर्मों के परिणाम को मापना और खाली करना), होगा
मस्टरिंग के सर्वोच्च मैदान को भरने के लिए पर्याप्त सामग्री का उत्पादन किया।
एक बीज की तरह कार्य करता है जिससे यह मैदान उगेगा, एक पेड़ की तरह, अपनी सारी
सामग्री। जिस तरह एक चमकदार बिंदु तेजी से घूमने से एक चमकदार वृत्त बनता है,
पृथ्वी की तीव्र और उद्देश्यपूर्ण गति, तुलना करने पर एक छोटा बिंदु
ब्रह्मांड के लिए, साथ ही इसके जीवन के परिणाम का उपयोग सुप्रीम बनाने के लिए किया जाएगा
कह दो, सच्चा ज्ञान अल्लाह के पास है।

वह शाश्वत है।

सईद नूरसी

ग्यारहवाँ अक्षर

ग्यारहवाँ पत्र

• अनैच्छिक विचार और कल्पनाएँ • कुरान के आदेशों की श्रेष्ठता

आधुनिक नागरिक कानून

उसके नाम पर.

ऐसी कोई भी चीज़ नहीं है जो उसकी स्तुति से उसकी महिमा न करती हो।

(यह पत्र, जो कुरान की चार आयतों के खजाने से चार रत्नों से संबंधित है, कुछ आध्यात्मिक बीमारियों का इलाज करता है।)

भाई रे,

T क़ुरआन ने मुझे निम्नलिखित चार बातें सिखाईं। मैं उनके बारे में उन लोगों के लिए लिख रहा हूँ जो इनके बारे में कुछ जानना चाहते हैं। यह पत्र चार क़ुरआन आयतों में निहित सत्य के खजाने से चार रत्नों से संबंधित है, जिनमें से प्रत्येक का एक अलग रूप और उपयोग है।

पहली बात: शैतान की चाल बहुत कमज़ोर है (4:76)।

हे मेरी आत्मा, जो अनैच्छिक विचारों और कल्पनाओं के कारण व्याकुल रहती है!

इनमें से ज़्यादातर चीज़ें अनैच्छिक होती हैं। अगर वे अच्छी हैं, तो उनका लोगों पर कुछ सकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है और उनकी अंतरात्मा में प्रतिबिंबित हो सकता है, जैसे कि एक दर्पण सूर्य की गर्मी और प्रकाश को प्रतिबिंबित करता है। अगर वे बुरी हैं तो वे किसी की आत्मा में प्रवेश नहीं करती हैं, जैसे कि किसी गंदी चीज़ का प्रतिबिंब गंदा नहीं होता और प्रतिबिंबित साँप नहीं काटता।

इस प्रकार अविश्वास की कल्पना करना अविश्वास नहीं है, जैसे श्राप की कल्पना करना अविश्वास है। वास्तव में शाप नहीं। विशेष रूप से, अनजाने में किए गए विचार, कल्पनाएँ और अनुमान हानिरहित हैं। अहल अल-सुन्ना वा अल-जमाआ (सत्य के लोग) के अनुसार,[20] कोई चीज़ बदसूरत या नीच है और पाप तभी है जब ईश्वर द्वारा निषिद्ध हो।
चूँकि अनैच्छिक विचार ईश्वरीय निषेधों में शामिल नहीं हैं, इसलिए उन्हें न तो नीच और न ही गंदा, भले ही उनके प्रतिबिंब कितने भी गंदे हों।

दूसरा विषय: यह चीड़, जंगली चीड़ और चिनार के पेड़ों से प्रेरित था बारला के पठार पर। इसे सत्रहवें शब्द के परिशिष्ट में पाया जा सकता है।[21]

तीसरा मामला: यह और अगला खंड दो उदाहरण प्रस्तुत करता है आधुनिक नागरिक कानून पर कुरान की आज्ञाओं की श्रेष्ठता। उदाहरण के लिए, कुरान यह आदेश देता है कि पुरुषों को (कुछ परिस्थितियों में) विरासत में संपत्ति मिलेगी महिलाओं की तुलना में दुगना (4:11)। यह पूरी तरह से न्यायपूर्ण और पूर्ण दया है महिलाओं के साथ ऐसा इसलिए है क्योंकि अधिकतर मामलों में और इस्लामी कानून के अनुसार, पति अपनी पत्नी और बच्चों का भरण-पोषण करता है, जबकि पत्नी के पास कोई कानूनी अधिकार नहीं है। अपने पति या खुद के लिए प्रावधान करने का दायित्व। इस प्रकार उसे मुआवजा दिया जाता है एक आदमी को जो विरासत मिलती है उसका आधा हिस्सा पाने के लिए।

यह एक पूर्ण दया है क्योंकि एक लड़की नाजुक है, कमजोर है, और इसलिए उसे पकड़ लिया गया है वह अपने पिता से बहुत स्नेह करती थी, जो कुरान के आदेश के कारण, वह उसे किसी ऐसे व्यक्ति के रूप में नहीं देखता जो उसका आधा हिस्सा लेकर उसे नुकसान पहुंचाएगा अपनी संपत्ति दूसरों को दे देता है। इसके अलावा, उसके भाई उसके प्रति दया महसूस करते हैं और ईर्ष्या के बिना उसकी रक्षा करते हैं, क्योंकि वे उसे प्रतिद्वंद्वी के रूप में नहीं देखते हैं जब वे संपत्ति का बंटवारा करते हैं। परिवार की संपत्ति। इस प्रकार, पूरे परिवार में उसे जो स्नेह और करुणा मिलती है, वह विरासत में मिली स्पष्ट हानि की भरपाई करती है।

अवास्तविक करुणा के कारण उसे उसके हिस्से से अधिक देना बहुत बड़ा अन्याय है - अवास्तविक इसलिए क्योंकि उससे अधिक करुणामय कोई नहीं है। ईश्वर। यदि कुरान की सीमाएँ लांघी जाएँ, तो महिलाएँ असुरक्षित हो सकती हैं परिवार के सदस्यों के शोषण और अत्याचार के प्रति, विशेष रूप से यह देखते हुए कि आधुनिक युग का बर्बर स्वार्थ, जो इस्लाम-पूर्व युग जितना ही बुरा हो सकता है अज्ञानता के अत्याचार की, जब नवजात लड़कियों को जिंदा दफना दिया जाता था। सभी कुरानिक उत्तराधिकार से संबंधित निषेधादेश इस बात की सच्चाई साबित करते हैं: हम (हे नबी!) तुम्हें सारे प्राणियों के लिए दया बनाकर भेजा है (21:107)।

चौथा विषय: आधुनिक सभ्यता, जो मूलतः एक प्रणाली है अन्याय (ज्यादातर मामलों में) क्योंकि इसमें वास्तविक मानवीय मूल्यों का अभाव है, यह लड़कियों से ज़्यादा माताओं को उनके अधिकारों से वंचित करके उनके साथ अन्याय करता है। सबसे शुद्ध और

---

[20] मुसलमानों का व्यापक बहुमत। सुन्नी के नाम से भी जाना जाता है। (सं.)

[21] नूरसी ने कहा, शब्द.

ईश्वरीय करुणा का सर्वोत्तम प्रतिबिम्ब, माँ का स्नेह सृष्टि का
सबसे सम्मानित वास्तविकता। एक माँ इतनी दयालु, आत्म-त्यागी और घनिष्ठ मित्र होती है कि वह अपने बच्चों के लिए सब कुछ, यहाँ तक कि अपना जीवन भी बलिदान कर देती है।
एक डरपोक मुर्गी, जिसकी मातृत्व निम्नतम स्तर का प्रतिनिधित्व करती है, एक पर हमला करेगी
अपने चूज़ों की रक्षा के लिए कुत्ता पालती है।

इस प्रकार वे सच्चे मानव हैं, उनसे भिन्न जो मानव प्रतीत होते हैं, किन्तु हैं पशुवत
संक्षेप में, इसे एक बहुत बड़ा अन्याय और शर्मनाक अपमान, हृदय विदारक कृतघ्नता और सामाजिक जीवन के लिए हानिकारक जहर समझें, कि ऐसी सम्मानित, प्रिय प्राणी को उसके बेटे के धन में से उसके उचित हिस्से से वंचित किया जाए। कुरान की आयत:
और उसकी माँ के लिए छठा वचन (4:11), न्याय और सार्वभौमिकता के साथ पूरी तरह मेल खाता है
सच।

वह शाश्वत है।

सईद नूरसी

बारहवाँ अक्षर

बारहवाँ पत्र

• आदम को स्वर्ग से क्यों निकाला गया • शैतान को क्यों बनाया गया •

परमेश्वर निर्दोष लोगों को दुर्भाग्य से क्यों पीड़ित

करता है

उसके नाम में, उसकी महिमा हो।

ऐसी कोई भी चीज़ नहीं है जो उसकी स्तुति से उसकी महिमा न करती हो।

आप और आपके दोस्तों पर शांति बनी रहे।

प्रिय भाइयो,

पिछली रात आपने मुझसे तीन सवाल पूछे थे, लेकिन मैंने जवाब नहीं दिया क्योंकि आपने उन पर अनुचित तरीके से विवादास्पद तरीके से चर्चा की थी। आस्था के मामले विवाद का विषय नहीं हो सकते। अब, मैं उन सवालों के संक्षिप्त जवाब लिखता हूँ। आप द वर्ड्स में विस्तृत जवाब पा सकते हैं - मैंने अपने भाई फार्मासिस्ट को बताया कि कौन से जवाब हैं। लेकिन मैं द ट्वेंटी-सिक्सथ वर्ड का उल्लेख करना भूल गया, जो ईश्वरीय नियति और मानव स्वतंत्र इच्छा के बारे में है। इसे भी पढ़ें, लेकिन अखबार की तरह नहीं। मैं चाहता हूँ कि वह इन वर्ड्स का अध्ययन करे, क्योंकि धर्म के कुछ मामलों में संदेह आस्था के स्तंभों में कमज़ोर विश्वास के कारण होता है, और वे वर्ड्स उन स्तंभों को निर्णायक रूप से साबित करते हैं।

आपका पहला प्रश्न: आदम को स्वर्ग से क्यों बाहर भेजा गया, और कुछ लोगों को नरक में क्यों डाला जाएगा?

उत्तर: ब्रह्मांड में मानवता का एक अनूठा कर्तव्य है। आदम को भेजा गया था पृथ्वी के प्रति इतना उदात्त कर्तव्य कि मानवता को विनाश का लक्ष्य बना दिया गया अनंत आध्यात्मिक विकास, एक व्यापक दर्पण जिसमें सभी दिव्य नाम प्रतिबिंबित होते हैं। इस कर्तव्य ने मानवता को अपनी पूरी क्षमता विकसित करने में सक्षम बनाया। अगर आदम स्वर्ग में रहता, तो उसका पद निश्चित होता और मानवता की पूरी क्षमता का विकास नहीं हुआ होता। स्वर्गदूतों की तरह परमेश्वर की आराधना करने के लिए बनाया गया है, जिनकी पूजा उन्हें आध्यात्मिक रूप से विकसित होने का कारण बना। दिव्य बुद्धि को एक अलग दुनिया की आवश्यकता रही होगी जिसमें मानवता उच्चतम रैंक प्राप्त कर सके और पूरी तरह से अपनी क्षमता का विकास करें। यही कारण है कि एडम को उसकी मृत्यु के बाद पृथ्वी पर भेजा गया था, जो, वास्तव में, मानव स्वभाव की पूर्ति के लिए आवश्यक है।

चूंकि यह निष्कासन मानवता के प्रति दया और पूर्ण सहमति थी बुद्धि से, अविश्वासियों को नरक में डालना बिल्कुल सही और न्यायसंगत है। प्रथम दृष्टया, यह अनुचित प्रतीत हो सकता है कि विवेक और न्याय के लिए अविश्वासियों को उनके अल्पकालीन अविश्वास के कारण अनन्त दण्ड की सजा देना अनुचित है। यहाँ रहता है। लेकिन वास्तव में यह पूरी तरह से न्यायसंगत और सही है कि सर्वशक्तिमान महामहिम में से एक उन्हें हमेशा के लिए नरक में डाल देता है, अविश्वास के कारण अपमान और अपमान सृष्टि के अस्तित्व को नकारता है तथा सभी प्राणियों की ईश्वर की गवाही का खंडन करता है। एकता। इसके अलावा, यह भगवान के सुंदर नामों को गलत साबित करता है, जो कि सभी जीवित और निर्जीव चीजों के दर्पणों में निरंतर दिखाई देता है। इसलिए अविश्वास एक असीम रूप से बड़ा अपराध है, और परमेश्वर अविश्वासियों को बुलाएगा सृष्टि के साथ अन्याय करने के लिए उन्हें दण्डित करो।22

आपका दूसरा सवाल: शैतान को क्यों बनाया गया? बुराई क्यों मौजूद है? जब बुराई पैदा करना स्वयं बुराई है, और कुरूपता पैदा करना कुरूपता है?

---

22 अन्य कार्यों में, सैद नूरसी ने ईश्वर द्वारा अविश्वासियों को अनन्त दण्ड की निंदा करने के लिए अतिरिक्त तर्क प्रस्तुत किए हैं, जैसे: अविश्वास विनाश और निषेध है। जिस इमारत को बनाने में सैकड़ों मजदूरों को वर्षों लगे, उसे एक व्यक्ति द्वारा तोड़ देने से नष्ट किया जा सकता है। मैच। फूलों और पेड़ों से भरे एक बगीचे की कल्पना करें, जिस पर पक्षी गाते हैं और जिसमें जानवर रहते हैं। वे सभी नहरों के माध्यम से उन तक पहुँचने वाले पानी पर जीवित रहते हैं, जिसे एक व्यक्ति को सौंपा गया है। अगर वह व्यक्ति ऐसा करता है तो उसे किस तरह की सज़ा मिलनी चाहिए पानी को बहने देकर बगीचे की सिंचाई करने के अपने कर्तव्य की उपेक्षा करता है, और इस प्रकार सभी को नुकसान पहुंचाता है बगीचे के निवासियों को मरना है? अविश्वास इसी के बराबर है, लेकिन कहीं अधिक बड़े पैमाने पर पैमाना - स्वयं सृष्टि का।

इसके अलावा, अविश्वासी जो अनन्त दण्ड के पात्र हैं, उन्होंने अपने पापों का परित्याग नहीं किया होगा। भले ही उन्हें धरती पर हमेशा के लिए रहना पड़े, लेकिन उनका अविश्वास सही नहीं है। इस अर्थ में और इस तरह के कारण लोगों का इरादा, अविश्वास अनंत है और यहाँ उनके छोटे जीवन तक सीमित नहीं है। चूँकि चेतावनियाँ ऐसे अविश्वासियों पर कोई फर्क नहीं डालतीं, इसलिए परमेश्वर उनके दिलों और सुनने की क्षमता को सील कर देता है, और उनकी आँखों को ढक देता है। इन लोगों का अहंकार, पाप और हमेशा के लिए अविश्वास का पीछा करने का इरादा उन्हें विश्वास करने की क्षमता खोने का कारण बनता है। (ट्र.)

उत्तर: बुराई को बनाना या उसे अस्तित्व प्रदान करना कोई बुराई नहीं है, क्योंकि लोगों के पास स्वतंत्र इच्छा होती है। ईश्वर हमारी इच्छा से किए गए कार्यों को वस्तुनिष्ठ अस्तित्व प्रदान करता है।
लोग कुछ करना चाहते हैं और करते हैं, और भगवान उसे बनाते हैं। और इसलिए यह हमारी अपनी इच्छा और बुराई करना ही बुरा और बदसूरत है, न कि भगवान द्वारा उसे वस्तुगत अस्तित्व देना। अगर भगवान ने वह नहीं बनाया जो हम चाहते हैं और करते हैं, तो हमारी स्वतंत्र इच्छा रद्द हो जाएगी।

साथ ही, ईश्वर की रचना में ब्रह्मांड शामिल है, न कि केवल एक कार्य, और इसका मूल्यांकन परिणामों के आधार पर किया जाना चाहिए, न कि केवल कार्यों के आधार पर। उदाहरण के लिए, बारिश कई परिणाम उत्पन्न करती है, जिनमें से लगभग सभी लाभकारी होते हैं। यदि कुछ लोगों को पानी के दुरुपयोग के कारण नुकसान होता है, तो वे यह तर्क नहीं दे सकते कि बारिश का निर्माण अनुग्रह के अलावा कुछ और है। आग के भी कई लाभ हैं। यदि कुछ लोगों को अपनी दुर्भावना और दुरुपयोग के कारण इससे नुकसान होता है, तो वे यह दावा नहीं कर सकते कि आग का निर्माण पूरी तरह से अच्छा होने के अलावा कुछ और है। चूँकि आग किसी के हाथ जलाने के लिए नहीं बनाई गई थी, इसलिए जो लोग गलती से अपने हाथ जला लेते हैं, उन्हें यह निष्कर्ष निकालने का कोई अधिकार नहीं है कि आग बनाना बुरा है।

संक्षेप में, किसी बड़ी भलाई के लिए छोटी बुराई का विरोध नहीं किया जाता। अगर लोग किसी बड़ी भलाई के बदले में छोटी बुराई सहने के लिए सहमत नहीं होते, तो उन्हें बड़ी बुराई का सामना करना पड़ता है। उदाहरण के लिए, लोग इस्लाम के लिए लड़ना नहीं चाहते क्योंकि ऐसा करने से उनकी जान और संपत्ति खतरे में पड़ जाती है। लेकिन ऐसी पवित्र लड़ाई के बहुत फ़ायदे हैं: मुसलमानों को आक्रमण से बचाया जाता है और इस्लाम उन्हें दोनों दुनिया में आशीर्वाद देता रहता है। अगर मुसलमान नुकसान उठाने के बहाने ऐसी लड़ाई का त्याग करते हैं, तो उन्हें और भी ज़्यादा नुकसान होगा। गैंग्रीन वाली उंगली को काटना ही होगा, हालाँकि यह एक बुराई लगती है, या फिर एक दिन पूरा हाथ काटना पड़ेगा (एक और भी बड़ी बुराई)।

इस प्रकार यह कोई बुराई नहीं है जिसे ईश्वर ने बनाया है और शैतानों तथा स्पष्टत: बुरे और विनाशकारी कार्यों को भी ईश्वर ने बनाया है, क्योंकि वे अच्छे और महत्वपूर्ण परिणाम उत्पन्न करते हैं।
उदाहरण के लिए, देवदूत उच्च आध्यात्मिक पद पर नहीं पहुँच पाते क्योंकि शैतान उन्हें भटकाव के लिए प्रेरित नहीं कर सकते। जानवरों के पद निश्चित होते हैं, इसलिए वे न तो उच्च पद पर पहुँच सकते हैं और न ही निम्न पद पर। लेकिन मनुष्य ऊपर से नीचे तक अनंत पद या पद प्राप्त कर सकते हैं।

महानतम पैगम्बरों और संतों तथा फिरौन और निम्रोद जैसे लोगों के बीच आध्यात्मिक विकास की एक अनंत लंबी रेखा है।

इस प्रकार यह संसार एक क्षेत्र है, और यह जीवन एक अवधि है, जिसमें लोगों का परीक्षण किया जाता है ताकि उच्च हीरे जैसी आत्माओं को नीच कोयले जैसी आत्माओं से अलग किया जा सके। इसी कारण शैतानों को बनाया गया और ईश्वरीय आदेशों के साथ पैगम्बरों को भेजा गया। इस तरह के परीक्षण के बिना, अच्छाई और बुराई का पता नहीं लगाया जा सकता

प्रतिष्ठित और समान रूप से व्यवहार किया जाएगा: अबू बकर की आत्मा, जो पैगंबरों के बाद सबसे ऊंचे स्तर पर पहुंच गई, अबू जहल की तरह ही उसी स्तर पर रहेगी, जो सबसे निचले स्तर पर गिर गई।23 इस प्रकार शैतानों और बुराई की रचना पूरी तरह से अच्छी है, क्योंकि वे अच्छे और सार्वभौमिक परिणामों को प्राप्त करने का कारण बनते हैं। जो लोग उनके कारण पीड़ित होते हैं, वे अपनी कमजोरी, अपनी स्वतंत्र इच्छा का दुरुपयोग या कुछ बाहरी परिस्थितियों के कारण ऐसा करते हैं, जो उनके द्वारा उत्पन्न होती हैं। नतीजतन, लोगों के साथ होने वाली सभी बुराई और दुर्भाग्य उनके स्वयं में निहित हैं, न कि ईश्वर द्वारा उन्हें बनाए जाने में।

यदि आप पूछें: चूंकि पैगम्बरों को भेजने के कारण शैतान के बहकावे में आकर बहुत से लोग या अधिकांश लोग अविश्वासी बन गए हैं, तो आप यह कैसे कह सकते हैं कि बुरी चीजें और कार्य करना अच्छा है, कि पैगम्बरों को उठाना मानवता के लिए दया है?

उत्तर: चूँकि गुणवत्ता हमेशा मात्रा से कहीं ज़्यादा महत्वपूर्ण होती है, इसलिए हमें अपना निर्णय लेने में केवल गुणात्मक मूल्यों पर विचार करना चाहिए। एक उदाहरण देते हैं: 100 खजूर की गुठली तब तक सिर्फ़ 100 सेंट की होती है जब तक कि उन्हें रोपकर ताड़ के पेड़ नहीं बना दिया जाता। लेकिन अगर सिर्फ़ 20 ही पेड़ बनते हैं और बाकी 80 ज़्यादा पानी की वजह से सड़ जाते हैं, तो आप कैसे कह सकते हैं कि उन्हें रोपना और पानी देना बुराई है? हर कोई इस बात से सहमत होगा कि 80 खजूर की गुठली की कीमत पर 20 पेड़ होना पूरी तरह से अच्छा है, क्योंकि 20 पेड़ों से 20,000 खजूर की गुठली मिलेगी।

फिर, 100 मोर के अंडों की कीमत शायद 500 सेंट है। लेकिन अगर वह अंडों पर बैठती है और केवल 20 ही फूटते हैं, तो कौन कह सकता है कि यह बुराई है कि 20 मोरों के बदले 80 अंडे खराब हो गए? इसके विपरीत, 80 अंडों की कीमत पर 20 मोर होना पूरी तरह से अच्छा है, क्योंकि 20 मोर अंडों से कहीं ज़्यादा मूल्यवान होंगे और ज़्यादा अंडे देंगे।

और ऐसा ही मानवता के साथ भी है। पैगम्बरों द्वारा हमारा उत्थान, साथ ही शैतान और हमारे शारीरिक स्वभाव के विरुद्ध हमारी लड़ाई, पशु-समान लोगों, अविश्वासियों और पाखंडियों (संख्या में अधिक लेकिन गुणवत्ता में कम) को खो देती है, जिसके बदले में सैकड़ों हज़ारों पैगम्बर, लाखों संत और ज्ञान और ईमानदारी वाले अरबों लोग - मानव दुनिया के सूर्य, चंद्रमा और सितारे आते हैं।

आपका तीसरा प्रश्न: क्या यह उचित है कि परमेश्वर निर्दोष लोगों और पशुओं को दुर्भाग्य और पीड़ा से पीड़ित करे?

---

23 अबू बकर (मृत्यु 634): पहले मुसलमानों में से एक, मदीना प्रवास के दौरान पैगंबर के साथी और पैगंबर की मृत्यु के बाद पहले खलीफा; अबू जहल (शाब्दिक अर्थ: अज्ञान का पिता): पैगंबर के मुख्य विरोधियों में से एक जिसने हर मोड़ पर उनसे लड़ाई की। वह बद्र की लड़ाई (624) के दौरान मारा गया। (संपादक)

उत्तर: उस पर कोई अन्याय नहीं किया जा सकता, क्योंकि वह सारी सृष्टि का स्वामी है और इसलिए वह उसके साथ जो चाहे कर सकता है। इस सादृश्य पर विचार करें: एक कुशल व्यक्ति कपड़ों का डिज़ाइनर आपको अपनी कला दिखाने के लिए एक मॉडल के रूप में काम करने के लिए पैसे देता है। वह आपको पहनाने के लिए अपने मनचाहे ढंग से आभूषणों से सजे परिधान को तैयार करता है और आपको बताता है कि आप उसे कैसे पहन सकते हैं। बैठो और खड़े हो जाओ। आप कैसे कह सकते हैं: "मुझे बैठाकर तुम मुझे परेशानी में डालते हो और खड़े हो जाओ। इसके अलावा, तुमने इस कपड़े को भी नुकसान पहुंचाया है जो मुझे सुंदर दिखाता है। " इस तरह की आपत्तियाँ सरासर अशिष्टता होगी।

ईश्वर, महान सृष्टिकर्ता, आपको कलात्मक ढंग से निर्मित वस्त्र पहनाते हैं (जैसे, शरीर, जिसमें आंखें, कान, नाक और जीभ आदि जड़े हुए हैं)। अपने सुन्दर नामों के कामों को दिखाओ, वह तुम्हें बीमार, भूखा और प्यासा बनाता है, और वह आपको दुर्भाग्य से पीड़ित करता है। वह आपको विभिन्न परिस्थितियों से अवगत कराता है ताकि आप पूर्ण हो सकते हैं और उसके सुंदर नाम प्रकट हो सकते हैं। इस पर आपकी आपत्ति के कारण ज्ञान के कई उदाहरण आपको चुप करा देंगे।

एकरसता और जड़ता एक प्रकार की गैर-अस्तित्व है, जबकि गतिविधि और परिवर्तन पीड़ा और दुर्भाग्य के माध्यम से परिपक्व जीवन। जीवन मजबूत होता है और शुद्धतर तथा दिव्य सुन्दर नामों के संचालन के माध्यम से पूर्णतः विकसित होता है। अंततः, जीवन वह कलम बन जाता है जिसके द्वारा लोग निर्णय लेते हैं और वे अपना भाग्य स्वयं लिखते हैं। इसलिए वे अपने पुरस्कार (या दण्ड) के पूर्ण हकदार हैं। परलोक में.

यह आपके उन तीन प्रश्नों का मेरा संक्षिप्त उत्तर है जिन पर आपने विवाद किया था।

मेरे प्यारे भाई, यह पत्र फार्मासिस्ट और उन लोगों के लिए पढ़िए जो आपके विचार से विवाद के दौरान कौन-कौन लोग उपस्थित थे, जिन्हें इसे सुनना चाहिए। मेरे शिष्य फार्मासिस्ट को मेरा नमस्कार, और उसे बताइए कि धर्म में ऊपर बताए गए विश्वास के ऐसे सूक्ष्म मामलों पर सार्वजनिक रूप से विवाद करने की अनुमति नहीं है। ऐसे विवाद, जिनका किसी भी स्थापित अनुपात और निर्णय संतुलन में कोई आधार नहीं है, इस्लाम को नुकसान पहुंचाते हैं और प्रतिभागियों को नुकसान पहुंचाते हैं। ऐसे मामलों पर गंभीरता से चर्चा की जानी चाहिए और विचारों का आदान-प्रदान किया जाना चाहिए।

कृपया उनसे कहें कि उन्हें अपने किसी भी संदेह के बारे में मुझे लिखना चाहिए। ऐसे मामलों के बारे में उनके पास क्या है। उनके मृत पिता के बारे में उनके सपने की व्याख्या इस प्रकार की जा सकती है: उनके पिता, जो एक डॉक्टर थे, भगवान की दया उन पर हो, बहुत से धर्मपरायण व्यक्तियों को चंगा करके उनका बहुत भला किया होगा, और जिन लोगों ने उसका स्वागत किया था, उनकी आत्माएं उसके बेटे को दिखाई दीं जब उनके पिता की मृत्यु हुई तो उन्होंने पक्षियों को देखा।

मैं ईश्वर से उन सभी मित्रों के लिए प्रार्थना करता हूँ जो उस रात यहाँ उपस्थित थे, और उनका अभिवादन करें.

वह शाश्वत है।

सईद नूरसी

तेरहवीं और सोलहवीं
पत्र

तेरहवें और सोलहवें पत्र [24]

राजनीति और अन्य व्यक्तिगत मामलों के प्रति उदासीनता

उसके नाम पर.

ऐसी कोई भी चीज़ नहीं है जो उसकी स्तुति से उसकी महिमा न करती हो।

सलामती हो उन पर जो सच्चे मार्गदर्शन पर चलते हैं, और निन्दा और निंदा
जो लोग अपनी मनमानी और मनमर्जी का अनुसरण करते हैं, उन पर धिक्कार है!

मेरे प्यारे भाई,

आप मेरे स्वास्थ्य और स्थिति के बारे में पूछते हैं, जानना चाहते हैं क्यों मैं प्रमाण पत्र के लिए सरकार के पास आवेदन नहीं करता (मैं एक बार था मस्जिदों में उपदेश देने के लिए दिया जाता है), और आश्चर्य है कि मैं राजनीति के प्रति इतना उदासीन क्यों हूं। चूंकि मैं अक्सर ऐसे सवालों से परेशान रहता हूं, इसलिए मुझे लगता है कि मुझे खुद को समझाना चाहिए। ऐसा करते हुए, मैं खुद को कुछ कठोर सवालों की इजाजत देता हूं मेरे दोस्तों की रक्षा के लिए भाषा और निराधार चिंताओं से शब्द और सांसारिक लोगों के साथ कष्टकारी व्यवहार।

आपका पहला सवाल: आप कैसे हैं? चीज़ें कैसी चल रही हैं?

उत्तर: उस अत्यन्त दयालु ईश्वर का बहुत-बहुत धन्यवाद, जो अत्यन्त दयालु है। गुमराह, सांसारिक लोगों द्वारा मेरे प्रति किए गए सभी अन्याय को बदल दिया है-

---

[24] सैद नूरसी ने अपने कार्यों में जिन मुख्य विषयों पर चर्चा की है, उनसे निपटने के बजाय, ये दो पत्र उनसे उनके उत्पीड़न के बारे में पूछे गए सवालों के जवाबों से संबंधित हैं सहने के लिए और कुछ राजनीतिक मुद्दों को उन्होंने अनदेखा किया। इसलिए, हमने उन्हें एक ही पत्र में संक्षेप में प्रस्तुत करना चुना है। (ट्र.)

मेरे लिए दया का भाव। जब उन्होंने मुझे अन्यायपूर्ण तरीके से बरला में निर्वासित किया, तो मैंने राजनीति छोड़ दी थी और खुद को वैन में माउंट अराक की एक गुफा में एकांत में रख लिया था। फिर भी बुद्धिमान, दयालु निर्माता ने इस निर्वासन को दया का भाव बना दिया। पहाड़ में मेरा एकांत, जहाँ मैं इतना सुरक्षित नहीं था, शायद केवल ईश्वर की प्रसन्नता के लिए नहीं किया गया होता, जबकि यहाँ कुछ भी मुझे केवल ईश्वर के प्रति सच्ची भक्ति से विचलित नहीं करता।

जब मैं रूस में युद्ध बंदी था, तो मेरा इरादा अपना बाकी जीवन एक गुफा में बिताने का था। दयालुतम दयालु ईश्वर की स्तुति और धन्यवाद हो, क्योंकि उसने मेरे लिए बरला को एक गुफा बना दिया है - लेकिन इस अतिरिक्त कृपा के साथ कि मेरा कमज़ोर शरीर गुफा जीवन की कठिनाइयों से नहीं गुज़रता। फिर भी, संदिग्ध अधिकारी जो डरते हैं कि मैं शासन-विरोधी गतिविधियों में शामिल हो सकता हूँ, कुरान की मेरी सेवा को नुकसान पहुँचाते हैं।

दूसरा, इन लोगों ने उपदेश देने के लिए मेरा प्रमाणपत्र वापस नहीं किया, हालाँकि उन्होंने सभी निर्वासित उपदेशकों को प्रमाणपत्र प्रदान किए और सभी कैद अपराधियों को माफ़ी दी। लेकिन मेरे दयालु भगवान ने इस अन्याय को दया में बदल दिया है, मुझे एकांत के इस शांत स्थान पर रहने के लिए मजबूर किया है ताकि मैं अपना जीवन और प्रयास कुरान की सेवा और उसके प्रकाश को फैलाने के लिए समर्पित कर सकूँ।

तीसरा, इन लोगों ने मुझे एक गांव में निर्वासित कर दिया, जबकि वे शक्तिशाली, प्रभावशाली सरदारों को शहरों और कस्बों में रहने और अपने रिश्तेदारों से मिलने की अनुमति देते हैं जो उनके सांसारिक मामलों में हस्तक्षेप कर सकते हैं। बहुत कम संख्या को छोड़कर, मेरे रिश्तेदारों और साथी नागरिकों को मिलने की अनुमति नहीं है। मेरे सर्व-दयालु निर्माता ने इस अलगाव को किसी भी दुर्भावनापूर्ण इरादे और चिंता से मुक्त करके एक और महान दया में बदल दिया, जिससे यह कुरान की सच्चाइयों से ज्ञान के लिए खुला रह गया।

इन लोगों ने निर्वासन के अपने पहले 2 वर्षों के दौरान मेरे द्वारा लिखे गए कुछ पत्रों पर भी आपत्ति जताई। इससे भी बदतर, वे अब भी धार्मिक पूजा के लिए भी, महीने में दो या तीन आगंतुकों को मेरे पास आने की अनुमति नहीं देते। लेकिन मेरे दयालु भगवान और बुद्धिमान निर्माता ने इस अन्याय को दया में बदल दिया, क्योंकि उन्होंने मुझे इन "अतिरिक्त प्रार्थना के 3 महीनों" में एक स्वागत योग्य वापसी में प्रवेश कराया, जिसके दौरान कोई व्यक्ति 90 वर्षों की प्रार्थना और भक्ति का पुरस्कार प्राप्त कर सकता है।

मेरे उत्तर के लिए यही पर्याप्त है।

आपका दूसरा प्रश्न: मैं प्रमाण पत्र के लिए आवेदन क्यों नहीं करता?

उत्तर: इस मामले में मैं नियति से बंधा हूँ, गुमराह, सांसारिक लोगों से नहीं। मेरी अर्जी नियति से है, और मैं सरकार से पूछूँगा

मैं अपना प्रमाणपत्र तभी बहाल करूंगा जब नियति मुझे ऐसा करने की अनुमति दे और यहां मेरे लिए प्रावधान करना बंद कर दे। दूसरे शब्दों में, सब कुछ एक कारण से होता है: एक स्पष्ट और एक वास्तविक। विभिन्न गुमराह, सांसारिक लोग मेरे निर्वासन के स्पष्ट कारण हैं, जबकि वास्तविक कारण ईश्वरीय नियति है।

जिन लोगों को डर था कि मैं इस्लाम की बहुत सेवा कर सकता हूँ और उनके सांसारिक मामलों में हस्तक्षेप कर सकता हूँ, उन्होंने मुझे निर्वासित करके बहुत बड़ा अन्याय किया। लेकिन यह केवल एक स्पष्ट कारण है। वास्तविक कारण यह है कि ईश्वरीय नियति ने देखा कि मैं इस्लाम और (धार्मिक) ज्ञान की ईमानदारी से सेवा नहीं कर सकता, और इसलिए उन लोगों ने मुझे निर्वासित कर दिया ताकि मैं ऐसी सेवा कर सकूँ और मेरे निर्वासन को दया में बदल दिया। चूँकि मैं ईश्वरीय नियति से बंधा हुआ हूँ, और वह नियति पूरी तरह से न्यायपूर्ण है, इसलिए मुझे केवल उसी के लिए आवेदन करना चाहिए और करता हूँ। स्पष्ट कारण का प्रभावों से लगभग कोई लेना-देना नहीं है, इसलिए मैं उसके लिए आवेदन क्यों करूँ?

नियति मुझे अपने गृहनगर में प्रचार करने के लिए प्रमाण-पत्र के लिए आवेदन करने की अनुमति क्यों नहीं देती, इसके निम्नलिखित कारण हैं: एक: मैं इन गुमराह, सांसारिक लोगों के मामलों में हस्तक्षेप

नहीं करता, इसलिए मुझे उन पर कोई दायित्व लागू नहीं होता। मैं केवल ईश्वरीय नियति के आदेशों का पालन कर सकता हूँ, जो मुझे बांधते हैं। मेरा आवेदन इसी तरह होना चाहिए, और ऐसा ही है।

दो: चूँकि यह अस्थायी अतिथिगृह परिवर्तन और विनाश के अधीन है, इसलिए यह वास्तविक, स्थायी घर नहीं है। चूँकि मैं अपने गृहनगर में रहते हुए भी इस संसार में स्थायी रूप से नहीं हूँ, इसलिए किसी विशेष स्थान पर रहने का प्रयास करना व्यर्थ है। यदि उस घर का स्वामी आप पर दयालु है, तो प्रत्येक निवासी आपका मित्र है और प्रत्येक स्थान आपका घर है। लेकिन यदि कोई उसकी कृपा और दया प्राप्त नहीं कर सकता, तो उसके निवासी शत्रु हैं और प्रत्येक स्थान निर्वासन और अलगाव का स्थान है।

तीन: कानून के अनुसार ही आवेदन करना चाहिए। लेकिन पिछले 6 सालों से मेरे साथ मनमाना और गैरकानूनी व्यवहार किया जा रहा है। मेरे साथ सिर्फ़ निर्वासित जैसा व्यवहार नहीं किया गया है, बल्कि मुझे लगभग सभी कानूनी और नागरिक अधिकारों का आनंद लेने से प्रतिबंधित किया गया है। मैं कानून के नाम पर उन लोगों के खिलाफ आवेदन क्यों करूँ जो इसका पालन नहीं करते?

चार: जब जिला गवर्नर ने मेरी ओर से उनसे पूछा कि क्या मैं कुछ दिनों के लिए बदरा गांव में रह सकता हूं, तो उन्होंने मना कर दिया। अगर इतनी छोटी सी अर्जी को अस्वीकार कर दिया गया, तो मैं किसी महत्वपूर्ण अर्जी के लिए क्यों आवेदन करूं, जिसका मतलब होगा उनके सामने खुद को विनम्र करना?

पाँचवाँ: अपने अधिकार की माँग करना अन्याय और न्याय का अनादर है और उन लोगों पर लागू होता है जो गलत को सही मानते हैं। मैं ऐसा नहीं करना चाहता ऐसा कोई गलत काम करना या न्याय के प्रति अनादर दिखाना।

छह: ये लोग मेरे साथ न्यायपूर्ण व्यवहार नहीं करते क्योंकि उन्हें लगता है कि मैं न्यायपूर्ण हूँ। राजनीति में लगे हुए हैं। बल्कि, वे ऐसा गैर-धार्मिक लोगों की समिति की ओर से करते हैं, चाहे जानबूझकर या अनजाने में, क्योंकि मैं इस्लाम के प्रति समर्पित हूं।
इसलिए उनसे प्रार्थना करने का मतलब है कि मैं इस्लाम में अपने विश्वास से तौबा करूँ और उनके तरीके से हमदर्दी रखूँ।
अगर मैंने उनसे प्रार्थना की और उनसे मदद की उम्मीद की, तो ईश्वर ने मुझे माफ कर दिया।
नियति, जो पूरी तरह से न्यायपूर्ण है, मुझे उनके माध्यम से दण्डित करेगी। वे देते हैं
मुझे परेशानी होती है क्योंकि मैं इस्लाम के प्रति समर्पित हूँ। लेकिन चूँकि मेरी भक्ति और पाप-ईमानदारी में कुछ कमियाँ हैं, इसलिए ईश्वरीय नियति कभी-कभी मुझे सज़ा देती है।
यदि ऐसा है तो मुझे इन परेशानियों से मुक्ति मिलना असंभव लगता है।

सात: अधिकारी उन लोगों की मदद करने के लिए जिम्मेदार हैं जो समुदाय को लाभ पहुंचाते हैं और उन लोगों को रोकते हैं जो इसे नुकसान पहुंचाते हैं। लेकिन जिस अधिकारी ने मुझे हिरासत में लिया, वह
निगरानी दल ने मुझे रंगे हाथों पकड़ने के लिए मेरे पास तब आया जब मैं एक वृद्ध आगंतुक को ईश्वर की एकता में विश्वास के अनुभव की खुशी के बारे में समझा रहा था।
मेरे मेहमान को इस खुशी से वंचित कर दिया और मुझे नाराज़ कर दिया। और फिर भी इसी अधिकारी ने
जो लोग बुरे आचरण दिखाते हैं और गांव के सामाजिक जीवन को नुकसान पहुंचाते हैं, उनकी चापलूसी की जाती है।

कैदियों को, चाहे उन्होंने कितने भी अपराध किए हों, यह अधिकार प्राप्त है।
निगरानी के प्रभारी अधिकारी से मिलने का अधिकार, चाहे उसकी स्थिति कोई भी हो
लेकिन मैं यहां वरिष्ठ अधिकारी से नहीं मिला हूं, न ही दो
पिछले एक साल से निगरानी के प्रभारी और स्थानीय सरकार में महत्वपूर्ण पदों पर आसीन लोग मेरे स्वास्थ्य के बारे में नहीं पूछते, हालाँकि
वे कई बार मेरे कमरे से गुजरे हैं। मुझे लगा कि वे बाहर ही रहते हैं
शत्रुता का, लेकिन बाद में यह स्पष्ट हो गया कि उन्होंने ऐसा इस डर से किया कि कहीं मैं
उन्हें निगल जाओ (उनका ब्रेनवॉश कर दो)।

इसलिए यह एक बेकार अपमान और वास्तव में अनुचित होगा
ऐसे अधिकारियों वाली सरकार को एक विश्वसनीय, गंभीर प्राधिकारी के रूप में स्वीकार करना
जिसे मैं लागू कर सकता था। अगर ओल्ड सईद अब जीवित होते, यानी अगर मैं
जैसा व्यवहार मैं राजनीति और सांसारिक मामलों में व्यस्त रहते हुए करता था, वैसा ही व्यवहार मैं भी करूंगा।
अंतरा25 ने किया:

---

25 अंतरा: छठी शताब्दी के एक अरब योद्धा और कवि, जो अपने समय में [लगभग 600] विख्यात थे।
उन्हें एक नायक के रूप में इसलिए याद किया जाता है क्योंकि वे एक गुलाम के रूप में जन्म से उठकर एक आदिवासी सरदार बन गए थे। उनकी कविता का प्रतिनिधित्व इस प्रकार किया जाता है
मुअल्लक़त की एक कविता से । उनकी महानता ने कई किंवदंतियों को जन्म दिया, और वे एक महान व्यक्ति बन गए
लोकप्रिय अरबी महाकाव्य सिरात अंतर का नायक । इसमें वह एक बेडौइन के आदर्श का प्रतिनिधित्व करता है
मुखिया, अमीर, उदार, बहादुर और दयालु। उसका नाम अंतर भी है। कोलंबिया
विश्वकोश, 6वां संस्करण (2001). (सं.)

जीवन का जल अपमान में पिया गया
नरक की यातनाओं के समान है,
जबकि नरक गर्व का स्थान होगा,
यदि मैं वहां सम्मान और गरिमा के साथ रह सकूं।

लेकिन पुराना सईद अब जीवित नहीं है, और नया सईद ऐसे लोगों से बात करना बेकार और निरर्थक समझता है। उनकी दुनिया उन्हें ऐसा करने का कारण बने
नाश हो जाना! हालाँकि मैं लंबे समय से उनकी दुनिया से वाकिफ़ हूँ और उनकी राजनीति से दूर हूँ, लेकिन हो सकता है कि इसका असर उन पर पड़े, वे ढेर लगाना जारी रखते हैं
निराधार संदेह और बहानों के कारण मुझ पर असहनीय संकट आ गया है।
इस प्रकार मैं उन पर लागू करके उनके संदेह के लिए कोई आधार प्रदान नहीं करूंगा।

आठ: ईश्वरीय नियति मुझे निर्दयी हाथों से दण्ड देती है
वे गुमराह, सांसारिक लोग जिनके प्रति मैं कभी-कभी झुकाव महसूस करता हूँ, यहाँ तक कि
हालांकि वे इसके लायक नहीं हैं, ऐसे अयोग्य लोगों से प्यार करने का इनाम
मैं चुप रहता हूँ, क्योंकि मैं खुद को इसका हकदार मानता हूँ
सज़ा.

प्रथम विश्व युद्ध के दौरान मैंने दो साल तक रूसियों से लड़ाई लड़ी,
स्वयंसेवक रेजिमेंट और मेरे योग्य मित्रों और शिष्यों का बलिदान।
सेना कमांडर और तत्कालीन सैन्य स्टाफ प्रमुख अनवर पाशा ने इसकी सराहना की
मेरी सेवाओं के लिए मैं घायल हो गया और मुझे बंदी बना लिया गया। कैद से लौटने पर, मैं
सिक्स स्टेप्स जैसी किताबें लिखकर खतरे को आमंत्रित किया और इस तरह से समाज को अपमानित किया
इस्तांबुल में ब्रिटिश आक्रमणकारियों ने हमला किया। मैंने यह उन लोगों की मदद करने के लिए किया जो अब वहां रह रहे हैं
मुझे, बिना किसी कारण के, ऐसी निर्दयी निगरानी में रखा गया। वे मेरी मदद का बदला चुकाते हैं
क्रूरता के साथ। 3 महीनों में, उन्होंने मुझे उतनी ही पीड़ा दी है जितनी मैंने रूस में 3 साल की कैद के दौरान अनुभव की थी।

रूसियों ने मुझे पढ़ाने दिया, हालांकि वे मुझे स्वयंसेवक कुर्दों का क्रूर कमांडर मानते थे। मैंने अपने 90 अधिकारियों में से अधिकांश को पढ़ाया।
कैद में दोस्त। एक बार रूसी कैंप कमांडर आया और उसने मेरी बात सुनी।
पहले तो उन्होंने सोचा कि ये पाठ राजनीतिक हैं और वे इन पर प्रतिबंध लगाना चाहते थे, लेकिन
बाद में उन्होंने मुझे जारी रखने की अनुमति दे दी। बाद में हमने बार-रैक में एक कमरे को मस्जिद के रूप में बदल दिया जिसमें मैंने नमाज़ पढ़ाई। उन्होंने कभी हमारे काम में दखल नहीं दिया
प्रार्थना करने या मुझे बातचीत करने से मना किया।

लेकिन मेरे साथी देशवासी, जिनके विश्वास को मैं सुरक्षित और मजबूत करने का प्रयास करता हूं, वे बिना किसी कारण के मुझ पर कड़ी निगरानी रखते हैं और मुझे मुझसे मिलने से रोकते हैं।
और दूसरों से संवाद करना, हालांकि उन्हें पता है कि मैंने राजनीति से पूरी तरह से दूरी बना ली है। वे मुझे अपने निजी कमरे में पढ़ाने से भी मना करते हैं,
हालाँकि मेरे पास आवश्यक प्रमाण पत्र है, और प्रार्थना का नेतृत्व करने या उसमें भाग लेने के लिए भी

उस मस्जिद में जिसकी मैंने मरम्मत की और 4 साल तक नमाज़ पढ़ाई। वे अब भी ऐसा करते हैं
मुझे प्रार्थना का नेतृत्व करने की अनुमति नहीं दी जा रही है, यहां तक कि उन तीन लोगों के लिए भी जो मेरे नियमित
मण्डली और घनिष्ठ मित्र हैं, ताकि मुझे सामूहिक प्रार्थना के पुरस्कार से वंचित किया जा सके।

इन सब अन्यायों के अतिरिक्त, जब भी कोई मेरी प्रशंसा करता है—
हालाँकि मुझे प्रशंसा पसंद नहीं है और न ही मैं प्रशंसा चाहता हूँ - मेरे निगरानी-लांस का प्रभारी अधिकारी क्रोधित
और ईर्ष्यालु हो जाता है। फिर वह कुछ क्रूर तरीकों का सहारा लेता है
मेरे प्रभाव को तोड़ना और अपने सुपरवाइजर द्वारा सराहना पाने के लिए मुझे परेशान करना
रियोर्स.

ऐसी परिस्थितियों में रहते हुए, मैं भगवान के अलावा और किससे प्रार्थना करूँ?
सर्वशक्तिमान? यदि न्यायाधीश वकील के अधिकार को ग्रहण कर लेता है, तो कोई कारण नहीं है कि
उस पर लागू होता है। इस बारे में आपकी जो भी राय हो, मेरा मानना है कि
उन दोस्तों में कई पाखंडी लोग हैं। पाखंडी लोग अविश्वासियों से भी बदतर हैं और इसलिए, मुझे अविश्वासी रूसियों
से ज़्यादा तकलीफ़ होती है
किया।

हे तुम जो अपनी क्रूरता और पाखंड के कारण अभागे हो!
मैंने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है या बिगाड़ रहा हूँ जिसके कारण तुम मुझे इतना कष्ट दे रहे हो?
इसके विपरीत, मैं आपके विश्वास को सुरक्षित करने और आपको शाश्वत आनंद प्राप्त करने में मदद करने की कोशिश
कर रहा हूं। क्या आप मुझे इतनी पीड़ा से कुचल रहे हैं क्योंकि मेरी सेवा
क्या यह केवल ईश्वर के लिए नहीं है? हम सबसे बड़ी अदालत में हिसाब चुकता करेंगे
इस मामले पर मेरे अंतिम शब्द हैं: ईश्वर हमारे लिए पर्याप्त है, और
वह महानतम है जिस पर हम भरोसा करते हैं। वह रक्षक के रूप में कितना अच्छा है, और
वह कितना अच्छा सहायक है।

आपका तीसरा सवाल: आप तुर्की की राजनीतिक स्थिति (विशेष रूप से) और दुनिया की स्थिति (सामान्य
रूप से) के प्रति इतने उदासीन क्यों हैं?
क्या आप इन सभी घटनाओं के सामने अपना रवैया बदलते हैं? क्या आप
चुप रहो क्योंकि तुम गुमराह, सांसारिक लोगों से डरते हो, या क्योंकि तुम उन्हें स्वीकार करते हो
क्या हो रहा है?

उत्तर: कुरान की सेवा करने के कारण मुझे राजनीति छोड़नी पड़ी, यहाँ तक कि
इसके बारे में सोचना भूल जाओ। मेरा पूरा जीवन दिखाता है कि डर मुझे रोक नहीं सकता
मैं जो सही मानता हूँ, उसका पालन करता हूँ। मुझे किस बात से और क्यों डरना चाहिए? मेरा एकमात्र
इस दुनिया से मेरा रिश्ता मौत है। मेरे पास न तो बच्चे हैं, न ही कोई संपत्ति और न ही कोई
वंश। भगवान उन लोगों को आशीर्वाद दें जो मेरी झूठी सांसारिक प्रसिद्धि को तोड़ने की कोशिश करते हैं और
महिमा की रक्षा करने वाले नहीं, बल्कि उसकी रक्षा करने वाले। अब मेरे पास सिर्फ़ मेरा जीवन है और जैसा कि आप जानते हैं,
मुझे पूरा यकीन है कि मेरी ज़िंदगी और मौत सिर्फ़ भगवान के हाथ में है।

मैं अपमानजनक जीवन की अपेक्षा सम्मानजनक मृत्यु को प्राथमिकता देता हूँ। ओल्ड सईद की तरह, किसी ने कथित तौर पर कहा है:

हम ऐसे लोग हैं जो औसत दर्जे के होने को राजी
नहीं होते; या तो हम संसार में
किसी से श्रेष्ठ नहीं होते या फिर कब्र में चले जाते
हैं।

कुरान की सेवा करना मुझे मानवता की राजनीतिक और सामाजिक स्थितियों पर विचार करने से रोकता है, क्योंकि अन्य बातों के अलावा, हम इस दुनिया में यात्री हैं।

कुरान की रोशनी पर भरोसा करते हुए मैं कहता हूं कि इस सदी में मानवता दलदल में पहुंच गई है। मानवता के पूरे कारवां बड़ी मुश्किल से इस सड़े हुए दलदल में आगे बढ़ने की कोशिश कर रहे हैं। एक छोटा सा अल्पसंख्यक सुरक्षित रास्ता अपनाता है और कुछ लोग खुद को इससे बाहर निकाल लेते हैं, लेकिन बहुसंख्यक अंधेरे में भटकते रहते हैं। हालांकि इस बहुसंख्यक का 20 प्रतिशत हिस्सा इस संघर्ष से काफी खुश है, इसकी गंदगी और गंदगी को कस्तूरी और एम्बरग्रीस समझ रहा है, जबकि बाकी 80 प्रतिशत को पता है कि वे एक गंदे दलदल में हैं, लेकिन उन्हें सुरक्षित रास्ता (उन्हें बाहर निकालने वाला) नहीं दिख रहा है।

हमें उस बहुसंख्यक को दलदल से बाहर निकालना होगा। ऐसा करने के लिए, हमें 20 प्रतिशत लोगों को वापस होश में लाने के लिए गदा का इस्तेमाल करना होगा या 80 प्रतिशत लोगों को सुरक्षा का रास्ता दिखाने के लिए रोशनी देनी होगी। मैं देखता हूँ कि ज़्यादातर लोग गदाएँ रखते हैं, लेकिन लगभग कोई भी असहाय 80 प्रतिशत लोगों को रोशनी नहीं देता। अगर कुछ लोगों के पास अभी भी रोशनी है, तो उन पर भरोसा नहीं किया जाता क्योंकि वे भी गदाएँ रखते हैं। लोग रोशनी की ओर आकर्षित होने के बाद पीटे जाने से डरते हैं। इसके अलावा, अगर गदा टूट जाए तो रोशनी बुझ सकती है।

यह दलदल गुमराह लोगों के आधुनिक भ्रष्ट सामाजिक जीवन का प्रतिनिधित्व करता है। नशे में धुत्त 20 प्रतिशत वे लोग हैं जो स्वेच्छा से जीवन के भौतिक सुखों में लिप्त रहते हैं और हठपूर्वक प्रकाश का विरोध करते हैं। दलदल में भ्रमित होने वाले अधिकांश लोग भटकाव को नापसंद करते हैं लेकिन इससे बाहर नहीं निकल पाते। गदाएँ राजनीतिक प्रवृत्तियों और आंदोलनों का प्रतिनिधित्व करती हैं, जबकि प्रकाश कुरान की सच्चाई है। किसी को भी प्रकाश का विरोध या उसके प्रति शत्रुता महसूस नहीं करनी चाहिए, क्योंकि केवल शैतान ही इससे घृणा करता है। इस प्रकार मैंने शैतान और राजनीति से ईश्वर की शरण ली, राजनीति की गदा को फेंक दिया और प्रकाश को मजबूती से पकड़ लिया। राजनीतिक प्रवृत्तियों में शामिल बहुत से लोग प्रकाश से प्यार करते हैं। किसी को भी कुरान की रोशनी और सच्चाई से मुंह नहीं मोड़ना चाहिए या उन पर आरोप नहीं लगाना चाहिए, जो ईमानदारी से और बिना किसी छिपे राजनीतिक उद्देश्यों और आकांक्षाओं के पेश की जाती हैं, जब तक कि वे मानव शैतान न हों जो राजनीति के नाम पर नास्तिकता और अधर्म का समर्थन करते हैं।

मैं भगवान का शुक्रिया अदा करता हूं कि राजनीति छोड़ने से मैं गरीबी कम करने से बच गया।
कुरान की हीरे जैसी सच्चाई को राजनीतिक उद्देश्यों के लिए इस्तेमाल करने के आरोप के तहत कांच के टुकड़ों में बदल दिया गया है। इसके विपरीत, ये हीरे अभी भी कांच के टुकड़ों में ही बने हुए हैं।
हर सामाजिक स्तर के अधिकाधिक लोगों की नजरों में हमारा मूल्य बढ़ेगा।

इसके अलावा, आस्तिक लोग राजनीति के माध्यम से अपने उद्देश्य की पूर्ति नहीं कर सकते।
तूफानी परिस्थितियाँ। राजनीति के माध्यम से इस्लाम के लिए जो भी सेवा की जाती है, उसका अंततः प्रमुख इस्लाम विरोधी व्यवस्था को ही लाभ होता है, क्योंकि विदेशी
सत्ताधारी राजनीतिक जीवन की बागडोर अपने हाथ में लेते हैं। राजनीति में शामिल होने से विभाजन भी होता है
मुसलमानों को विरोधी राजनीतिक गुटों में बांटना जिसका नकारात्मक प्रभाव पड़ता है
व्यक्तिगत हृदय और सामूहिक जीवन—कुछ लोग इतने जिद्दी होते हैं कि
मुसलमान अपने भाई-बहनों को शैतान या शैतानी समूह कह सकते हैं
सदस्य को देवदूत के रूप में देखना, इस बात पर निर्भर करता है कि वे किसी निश्चित सदस्य का समर्थन करते हैं या नहीं।
राजनीतिक दल। जब मैंने एक विद्वान व्यक्ति को एक अच्छे, गुणी व्यक्ति की कड़ी निंदा करते देखा, जो उसके राजनीतिक विचारों से सहमत नहीं था और फिर एक भ्रष्ट व्यक्ति की प्रशंसा की
उनके राजनीतिक गुट का सदस्य होने के नाते, मैं राजनीति की बुराइयों से निराश हो गया
और पूरी तरह से पीछे हट गए, कहा: "मैं शैतान और राजनीति से भगवान की शरण लेता हूं-
आईटीआईसी।"

राजनीति के प्रति मेरी उदासीनता का एक और महत्वपूर्ण कारण यह है कि शाश्वत सुख केवल विश्वास से ही प्राप्त किया जा सकता है। विश्वास के बिना व्यक्ति
वह दोनों दुनियाओं में दुखी है और उसे सबसे अधिक दुख झेलना पड़ता है।
इसलिए, चाहे उनकी व्यक्तिगत आस्था या अविश्वास, धर्मपरायणता या अधर्म कुछ भी हो,
ईमानदारी या निष्ठाहीनता, शैतान के अलावा किसी को भी सेवा का विरोध करने का अधिकार नहीं है
आस्था।

इसके अलावा, विश्वास ही इस्लाम का आधार या आत्मा है, और यह
इस्लाम के कण-कण में इसकी मौजूदगी है। लोग जितने ज़्यादा आस्थावान होंगे, उतना ही ज़्यादा वे इस्लाम के प्रति समर्पित होंगे।
धर्म के अन्य क्षेत्रों में वे अधिक सफल हो सकते हैं। राजनीति पर निर्भर रहने से आम तौर पर दो खतरनाक परिणाम सामने आते हैं: विश्वासियों को या तो निराशा होती है
लगातार निराशाओं के कारण भगवान की दया, और निंदा की जाती है
दण्ड: ईश्वर की दया से निराश न हों (39:53) या किसी भी तरह से हर पार्टी के निर्णय या गतिविधि का समर्थन करने के लिए मजबूर महसूस न करें, चाहे वह नियमों के अनुरूप हो
इस्लाम स्वीकार करो या न करो, और इस प्रकार इस खतरे का सामना करो: और अत्याचारियों पर निर्भर न रहो, ताकि
आग तुम्हें छूती है (11:113)।

ये गुमराह, सांसारिक लोग लोगों के विश्वास को सुरक्षित और मजबूत करने के लिए समर्पित सेवा से डरते हैं। मैं कभी-कभी उन्हें यह कहते हुए सुनता हूँ: "कहा जाता है
वह 50,000 आदमियों जितना शक्तिशाली है, इसलिए हम उसे रिहा नहीं करते।'' मेरा उत्तर है:

ऐ गुमराह दुनियावी लोगो! तुम अपने पाखंड के कारण बदकिस्मत हो!
आप अपने काम में इतने अक्षम क्यों हैं, जबकि आपकी एकमात्र चिंता इस दुनिया से है? यदि आप मुझसे डरते हैं, तो कोई भी व्यक्ति मुझसे 50 गुना अधिक कार्य कर सकता है। यदि आप कुरान की सच्चाइयों की घोषणा करने के मेरे मिशन और मेरे विश्वास की आध्यात्मिक शक्ति से डरते हैं, तो जान लें कि मैं 50,000 लोगों के बराबर नहीं बल्कि 50 मिलियन लोगों के बराबर शक्तिशाली हूँ। मैं आपमें से सभी यूरोपीय नास्तिकों को चुनौती देता हूँ। मैं कुरान की रोशनी से उनके सकारात्मकता और प्रकृतिवाद के महलों को नष्ट कर देता हूँ। यदि यूरोप के सभी नास्तिक दार्शनिक, जिनमें आप भी शामिल हैं, मेरे खिलाफ सहयोग करते हैं, तो ईश्वर की इच्छा से वे मुझे मेरे रास्ते से एक इंच भी नहीं हटा पाएँगे।

यह सच है, इसलिए मेरे कर्तव्य में बाधा डालना बंद करो। तुम्हारे प्रयास व्यर्थ हैं, क्योंकि भगवान के आदेश का विरोध पशु बल या भौतिक शक्ति से नहीं किया जा सकता है, और क्योंकि एक बार भगवान ने प्रकाश जला दिया है, तो उसे फूंक मारकर नहीं बुझाया जा सकता है।

प्रशंसा अल्लाह के लिए है, जिसने हमें इस मार्ग पर चलने का मार्ग दिखाया। यदि उसने हमें मार्ग न दिखाया होता, तो हम मार्ग पर न आ पाते। निस्संदेह हमारे रब का रसूल सत्य लेकर आया।

वह शाश्वत है।

सईद नूरसी

चौदहवाँ पत्र

यह पत्र सैद नूरसी द्वारा नहीं लिखा गया था, या पत्रों में शामिल नहीं किया गया था।

पंद्रहवाँ पत्र

पंद्रहवाँ पत्र

संतत्व के बारे में एक सूक्ष्मता • अली की खिलाफत के दौरान आंतरिक युद्ध • लगभग सार्वभौमिक धर्मांतरण के बाद मानवता का अंतिम धर्मत्याग • इसका अर्थ: सभी चीजें नाशवान हैं, सिवाय उसके चेहरे के (28:88)

उसके नाम में, उसकी महिमा हो।

ऐसी कोई भी चीज़ नहीं है जो उसकी स्तुति से उसकी महिमा न करती हो।

Y हमारा पहला सवाल: कहा जाता है कि सबसे नीची कोटि का साथी सबसे महान संत से भी बड़ा होता है। अगर ऐसा है, तो वे अपनी सूझ-बूझ और बुद्धि से उन षड्यंत्रकारियों की पहचान क्यों नहीं कर पाए, जो अंततः उनके बीच थे?

चार सही मार्ग वाले खलीफाओं में से तीन को शहीद कर दिया गया?26 उत्तर: यहाँ दो बातें हैं।

पहला बिंदु: संतत्व के बारे में एक सूक्ष्म बात समझाकर कुछ प्रकाश डाला जा सकता है, अर्थात, संतत्व दो प्रकार का होता है: लघु और प्रमुख।

आम तौर पर सूफी संप्रदाय का सख्ती से पालन करके मामूली संतत्व प्राप्त किया जाता है। कभी-कभी मानव प्रवृत्ति और पशुवत इच्छाओं पर काबू पाने के बदले में ईश्वर द्वारा अप्रत्याशित चमत्कारों की कृपा की जाती है।

[26] सईद नूरसी दूसरे खलीफा उमर इब्न अल-खत्ताब (मृत्यु 644) का उल्लेख कर रहे हैं, जिनकी हत्या एक गैर-मुस्लिम फारसी गुलाम अबू लुलु फिरोज ने व्यक्तिगत कारणों से कर दी थी; तीसरे खलीफा उथमान इब्न अफ्फान (मृत्यु 656) की, जिनकी हत्या उनके एक निर्णय से नाराज मिस्र के विद्रोहियों ने कर दी थी; और चौथे खलीफा अली इब्न अबू तालिब (मृत्यु 661) की, जिनकी हत्या एक खरिजिये ने की थी, जो नहरवान के युद्ध (658) में अपने समूह की हार का बदला लेना चाहता था। (संपादक)

साथियों को प्रमुख संत का दर्जा प्राप्त था, जो पैगंबर मिशन की प्रत्यक्ष विरासत के माध्यम से और, बिना शरिया का पूर्ण पालन करते हुए धार्मिक आदेश का पालन करना सत्य की प्राप्ति और अंततः ईश्वर के समीपता प्राप्त करना। हालांकि, ऐसा संतत्व छोटे से अधिक बड़ा और अधिक मूल्यवान, शायद ही कभी पसंद किया जाता है चमत्कारी काम करना। इसलिए यह सुरक्षित है, क्योंकि चमत्कारी काम करने से संतों को लाभ हो सकता है खुद को चमत्कार बताना और इस तरह आध्यात्मिक विनाश लाना। कई वर्षों तक धार्मिक आदेश के अनुशासन का पालन किए बिना,
साथियों ने कृपा के माध्यम से प्रमुख संतत्व का पद प्राप्त किया और पैगंबर की उपस्थिति का अमृत।

इसे एक उदाहरण से समझाया जा सकता है: लोग हाल ही में गुजरी घटना को फिर से जी सकते हैं शक्ति और भाग्य की रात (लैलातुल क़द्र) को दो तरीकों से।27 एक, वे कर सकते हैं पूरे साल जीना और अगले साल इस रात तक पहुँचना। यह है तरीका दीक्षा प्राप्त व्यक्ति अपने अंतिम गंतव्य तक पहुँच जाता है। दूसरा, वे अपने अंतिम गंतव्य तक पहुँच सकते हैं। अपने भौतिक अस्तित्व को त्यागकर, आत्मा के क्षेत्र में प्रवेश करें, और पर्याप्त ऊंचाई तक उठें समय को एक बिंदु के रूप में देखना। जबकि भौतिक अस्तित्व सीमित है समय और स्थान से मुक्त है, जबकि आत्मा भूत और भविष्य दोनों से लगभग मुक्त है जब लोगों की आंतरिक इंद्रियां इतनी परिष्कृत और एकाग्र हो जाती हैं तो वे एक बिंदु पर एकत्रित हो जाती हैं। उन्हें इस तरह से तीक्ष्ण किया गया है कि वे आत्मा के स्तर पर जी सकें। इस प्रकार सबसे तेज़ तरीका है शक्ति और भाग्य की नई रात को फिर से जीना आध्यात्मिक-आध्यात्मिक अस्तित्व के क्षेत्र में प्रवेश करना और वर्तमान क्षण में अतीत और भविष्य को एक करना है। लेकिन यह ईश्वर की निकटता से ही उसे प्राप्त किया जा सकता है, क्योंकि लोग ईश्वर के जितने अधिक निकट होते हैं, वे सभी समय और स्थान प्रतिबंधों से उतने ही अधिक मुक्त होते हैं।

एक अन्य उदाहरण यह है कि सूर्य हमसे बहुत निकट है, जबकि हम उससे बहुत दूर हैं। यह, इसके परावर्तित प्रकाश और ऊष्मा के माध्यम से। यदि हम इसके प्रतिबिंबों में इसकी निकटता महसूस करते हैं और हमारे अंदर इसके प्रतिबिंबित रूप के माध्यम से इसकी पहचान और हमारे साथ संबंध को समझते हैं दर्पण को देखते ही हम उसके करीब आ जाते हैं और उससे नजदीकी संबंध बना लेते हैं। लेकिन अगर हम दर्पण को देखने की कोशिश करें तो हम उसके करीब आ जाते हैं और उससे नजदीकी संबंध बना लेते हैं। अपने सुदूर प्रारंभिक बिंदु से इसे जानने और उस तक पहुँचने के लिए हमें विचार और शोध की एक लंबी यात्रा करनी होगी। दूसरे शब्दों में, हमें इसके निर्माण, ऊष्मा, प्रकाश और सात रंगों के बारे में बहुत ही मांग वाले, लंबे वैज्ञानिक अध्ययन की आवश्यकता होगी।

---

27 शक्ति की रात: इसका उल्लेख सूरत अल-क़द्र (97) में किया गया है, यह सबसे महत्वपूर्ण में से एक है इस्लामी कैलेंडर की घटनाएँ, क्योंकि यही वह समय था जब ईश्वर ने कुरान को प्रकट करना शुरू किया था महादूत गेब्रियल। इसके अलावा, इस रात को नरक बंद रहता है और स्वर्ग खुला रहता है लोगों की प्रार्थना। परंपरा कहती है कि यह विषम संख्या वाली रातों में से एक पर पड़ता है रमज़ान के आखिरी 10 दिन। कई लोगों का मानना है कि यह रमज़ान 27 की रात को पड़ता है। यह इतना पवित्र है कि इस दिन किए गए सभी अच्छे कर्म पिछले दिनों किए गए सभी अच्छे कर्मों के बराबर हैं। परमेश्वर की दृष्टि में 1,000 महीने का समय। (संपादक)

ठीक इसी प्रकार, प्रत्यक्ष उत्तराधिकार से संतत्व प्राप्त होता है। पैगम्बर का मिशन लोगों को ईश्वर के करीब लाने में सक्षम बनाता है प्रत्यक्ष, अप्रतिबंधित संबंध। तदनुसार, प्रमुख संतत्व बहुत अधिक है मामूली संतत्व की तुलना में, जो केवल लंबे वर्षों के अभ्यास के बाद ही प्राप्त किया जा सकता है एक आदेश के भीतर आध्यात्मिक अनुशासन।

दूसरा बिन्दु: मुस्लिम समुदाय के भीतर विद्वेषी और षड्यंत्रकारी लोग साथियों के समय में समुदाय कुछ लोगों तक सीमित नहीं था यहूदियों को आसानी से नियंत्रित किया जा सकता था। विभिन्न धर्मों और संस्कृतियों के कई लोग इसमें शामिल हुए तेजी से मुस्लिम विजय के दौरान इस्लाम, और उनके कुछ मोहक और भ्रामक विचार और विचारधाराएँ इस्लाम के शुद्ध शरीर में प्रवेश कर गईं। अपने राष्ट्रीय सम्मान और गरिमा का बदला लेना चाहते थे, जिसे उमर की सैन्य जीतों ने बुरी तरह से चोट पहुंचाई थी। बताया जाता है कि कुछ चतुर और षडयंत्रकारी पाखंडियों ने मौजूदा सामाजिक परिस्थितियों का फायदा उठाया। इसे देखते हुए, दमन के माध्यम से साजिशों से निपटा नहीं जा सकता था

लेकिन केवल सामाजिक परिस्थितियों में सुधार करके और विभिन्न प्रवृत्तियों को दिशा देकर विचारों को सही दिशा में ले जाना।

प्रश्न: उमर के पास इतनी गहरी, अद्भुत अंतर्दृष्टि और ज्ञान था कि वह इराक में लड़ रही मुस्लिम सेना को जीत हासिल करने में मदद की और नारा लगाया: “पीछे हटो” पहाड़ की ओर! मदीना की मस्जिद के मंच से यह नारा लगाया गया था। यह बात उसके कमांडर सरिया ने सुनी। ऐसे में उसे कैसे पता नहीं चल सकता था कि वह क्या कर रहा है? क्या वह व्यक्ति उमर के पड़ोस में रहने वाला उसका हत्यारा था?

उत्तर: पैगम्बर याकूब से पूछा गया कि उन्होंने यूसुफ को क्यों नहीं देखा? (जोसेफ) कनान के एक नजदीकी कुएँ में, हालाँकि उसकी कमीज़ की खुशबू मिस्र से एक संदेश उसके पास पहुंचा, तो उसने उत्तर दिया:

> हमारी स्थिति, विशेष रूप से चमत्कार-कार्य के संबंध में, बिजली की तरह है
> जो कभी दिखाई देता है और कभी छिपा रहता है।
>
> मानो हम पूरे ब्रह्मांड के साथ सबसे ऊंचे बिंदु पर बैठे हों
> हमारे सामने फैला हुआ है, लेकिन कभी-कभी हम यह नहीं देख पाते कि हमारे सामने क्या है
> हमसे आगे.

यद्यपि लोग अपने कार्यों में स्वतंत्र हैं, परन्तु ईश्वरीय नियति में शक्ति है हर चीज़ पर: जब तक ईश्वर न चाहे तब तक तुम चाह नहीं सकते (76:30)। इसलिए ईश्वरीय इच्छा अनिवार्य रूप से प्रबल होता है। जहाँ भाग्य बोलता है, वहाँ मानव स्वतंत्र इच्छा की कोई भूमिका नहीं होती। जब नियति का आदेश लागू किया जाता है, लोग इसके प्रति अंधे हो जाते हैं।

आपका दूसरा प्रश्न: अली के शासनकाल के दौरान आंतरिक युद्धों के बारे में क्या कहना है? खिलाफत, और उन प्रतिभागियों जिन्होंने हत्या की और मारे गए?

उत्तर: ऊँट की लड़ाई, जो अली (एक पर) और उसके साथियों के बीच हुई थी। एक तरफ) और दूसरी तरफ आयशा, जुबैर और तल्हा के बीच टकराव हुआ था।

पूर्ण न्याय और सापेक्ष न्याय।28 अली का मानना था कि पूर्ण न्याय
यह नियम वैसा ही होना चाहिए जैसा अबू बकर और उमर के समय में था।
उनके विरोधियों ने जोर देकर कहा कि सापेक्ष न्याय को प्राथमिकता दी जानी चाहिए। उन्होंने तर्क दिया कि मौजूदा परिस्थितियाँ पूर्ण न्याय को लागू करने की अनुमति नहीं देतीं, क्योंकि लोगों की
नए मुसलमानों के अधूरे आत्मसातीकरण और समय बीतने के कारण ईमानदार विश्वास और शुद्ध इरादे धूमिल हो गए थे। चूँकि दोनों पक्ष ईश्वर की कृपा चाहते थे
इस्लाम की स्वीकृति प्राप्त की और इस्लाम के भले के लिए काम किया, यद्यपि अली अपने मत में अधिक परिपूर्ण थे, सभी प्रतिभागी स्वर्ग में प्रवेश करेंगे, चाहे उन्होंने हत्या की हो या मारे गए हों।

न्यायविद जो न्यायालय द्वारा खुले छोड़े गए कानूनी मामलों में सत्य के लिए प्रयास करते हैं
अगर सही फैसला दिया गया तो कुरान और पैगंबर को भगवान से दोहरा इनाम मिलेगा। अगर गलत फैसला दिया गया तो उन्हें एक इनाम मिलेगा।
पुरस्कृत करो और दण्डित मत करो। एक ऐसा व्यक्ति जो भरोसेमंद माना जाता है, जिसका वचन
हमारे क्षेत्र में आधिकारिक रूप से स्वीकार किया जाता है, कहा जाता है कि उसने कहा: "मत करो
हत्यारे और अपराधी दोनों के लिए साथियों के बीच युद्ध के बारे में गपशप
मारे गए लोग जन्नत वालों में गिने जाएंगे।”

पूर्ण न्याय को समझाने के लिए, यह श्लोक है: जो कोई किसी आत्मा की हत्या करता है - जब तक कि वह
हत्या या देश में उत्पात फैलाने के लिए ऐसा किया जाएगा मानो उसने मानवता की हत्या की हो
(5:32), इसका तात्पर्य यह है कि किसी भी निर्दोष व्यक्ति को उसके अधिकार से वंचित नहीं किया जा सकता
जीवन के लिए बलिदान या समुदाय के लिए बलिदान। कोई भी अधिकार भगवान के लिए अधिकार है
दृष्टि, और इस प्रकार इसे किसी महान या मौलिक व्यक्ति के लिए समाप्त नहीं किया जा सकता है।

सापेक्ष न्याय का अर्थ है कि सम्पूर्ण के लिए भाग का त्याग किया जा सकता है।
यदि व्यक्ति के अधिकारों से समुदाय को हानि पहुँचती है तो उस पर विचार नहीं किया जाता, तथा
यह मानता है कि बड़ी बुराई से बचने के लिए छोटी बुराई को प्राथमिकता दी जाती है। हालाँकि, यह
यदि पूर्ण न्याय संभव है तो सापेक्ष न्याय को नियम बनाना गलत है।
इमाम अली पूर्ण न्याय के आधार पर खिलाफत की स्थापना जारी रखना चाहते थे, जबकि उनके विरोधी सापेक्ष न्याय पर जोर देते थे, उनका कहना था कि अन्य सभी न्यायपूर्ण नहीं हैं।
अब यह संभव नहीं था.

---

28 ऊँट की लड़ाई (656): जब अली इब्न अबी तालिब को चौथा खलीफ़ा चुना गया
'उथमान की हत्या के बाद, पैगंबर के अनुयायियों में से एक 'आयशा (मृत्यु 678) के नेतृत्व में कुछ मुसलमानों ने
विधवाएँ और अबू बकर (प्रथम खलीफ़ा) की बेटी, ज़ुबैर इब्न अल-अवाम (मृ. 656),
और तल्हा इब्न उबैदुल्लाह (मृत्यु 656) ने मांग की कि वह उस्मान के हत्यारों को सज़ा दे। लेकिन अली
उनका मत था कि चूंकि मामला केवल उस्मान के विरोध में नहीं था
और वहां सामान्य अशांति थी, उन्हें पहले देश में सुरक्षा स्थापित करनी थी और फिर
उथमान की हत्या से निपटने के लिए। हालांकि, बाकी लोगों ने अपनी राय पर जोर दिया और बसरा की ओर चल पड़े, जहां
उन्होंने एक सेना एकत्र की। खलीफा अली ने उन पर चढ़ाई की। अली
ज़ुबैर और तल्हा को वास्तविक लड़ाई से हटने के लिए राजी किया, लेकिन दोनों मारे गए
अपने-अपने सैनिकों द्वारा। युद्ध अली की जीत के साथ समाप्त हुआ। (ट्र.)

प्रश्न: इमाम अली अपनी असाधारण क्षमताओं के बावजूद, अद्भुत बुद्धिमत्ता और महान योग्यता के धनी, अपने पूर्ववर्तियों की तुलना में राज्य प्रशासन में कम सफल?

उत्तर: उस धन्य व्यक्ति को एक अधिक महत्वपूर्ण कार्य सौंपा गया था। यदि वे राजनीति में सफल होते तो 'राजकुमार' नहीं बन पाते संतों का।" उसने अपने लिए एक आध्यात्मिक राज्य सुरक्षित कर लिया जो कि संतों से भी ऊँचा था। सबसे महान सांसारिक पद, जो क़यामत के दिन तक कायम रहेगा।

सिफ्फिन (657) में अली और मुआविया के बीच युद्ध खिलाफत और सल्तनत.29 इमाम अली ने कुछ धार्मिक आदेशों का बचाव किया और इस्लामी सच्चाई को सल्तनत और राजनीतिक सुविधावाद के कुछ सिद्धांतों के खिलाफ़ रखते हुए, वर्तमान जीवन की अपेक्षा आने वाली दुनिया को प्राथमिकता देते हैं। उन्होंने कुछ धार्मिक आदेशों के सख्त पालन से छूट देने का अपना मामला उठाया ताकि वे सल्तनत के माध्यम से इस्लामी सामाजिक जीवन को सुदृढ़ कर सकें। कुछ धार्मिक सिद्धांतों की कीमत पर भी कुछ राजनीतिक नीतियों को आगे बढ़ाने की कोशिश में, मुआविया का समूह ग़लती में पड़ गया।

उमय्यदों के विरुद्ध हसन और हुसैन का संघर्ष संघर्षों में से एक था। धर्म बनाम राष्ट्रवाद.३० उमय्यदों ने मुस्लिम राज्य की स्थापना राष्ट्रवाद और इस प्रकार इस्लाम के बजाय रिश्तेदारी के बंधन को प्राथमिकता दी। इससे मुस्लिम समुदाय को दो तरह से नुकसान पहुंचा: इससे गैर-अरब लोग परेशान और भयभीत हो गए, और सही क्या है, इस बारे में गंभीरता से सोचने से रोका गया। और न्यायपूर्ण। नस्लवादी शासक न्याय नहीं कर सकते, क्योंकि वे अधिकार और न्याय प्रदान करते समय सह-धर्मियों की अपेक्षा अपने ही देशवासियों को प्राथमिकता देते हैं। इस्लाम

---

29 मुआविया इब्न अबी सुफ़यान (मृत्यु 680): अली की शहादत के बाद खिलाफत के उत्तराधिकारी (661) और उमय्यद राजवंश (661-750) के संस्थापक। उन्होंने राजधानी को स्थानांतरित कर दिया दमिश्क, जहां वे 640 से गवर्नर के रूप में कार्यरत थे। उन्होंने मुस्लिमों में एकता बहाल की भूमि। हालाँकि, अपनी मृत्यु से पहले अपने बेटे यज़ीद के राज्यारोहण को सुनिश्चित करके, उन्होंने खिलाफत को वंशानुगत सल्तनत में परिवर्तित करना। (ट्र.)

30 हसन (624-80) और हुसैन (626-80) पैगंबर के पोते थे, जो उनकी बेटी फातिमा और उनके पति अली से पैदा हुए थे। अपने पिता की मृत्यु के बाद हसन को खलीफा चुना गया। मुआविया के खिलाफ़ एक बड़ी सेना खड़ी की, लेकिन दलबदलुओं से परेशान हो गया। उसने शांति का रास्ता खोला बातचीत और, 661 में, अपने दावे को त्याग दिया और, अपने भाई के साथ, पूरी तरह से राजनीति से हट गए। हुसैन ने मुआविया के बेटे यजीद को राज्य का असली मुखिया मानने से इन्कार कर दिया था। उनमें आवश्यक योग्यताओं का अभाव था। कुफा (इराक) के लोगों द्वारा नेतृत्व करने के लिए आमंत्रित किया गया उन्होंने एक न्यायपूर्ण, विशुद्ध इस्लामी शासन प्रणाली को बहाल करने के लिए एक अभियान शुरू किया। रिश्तेदारों और अनुयायियों का एक छोटा समूह। हालाँकि, ज़्यादातर कूफ़ानियों ने उनका समर्थन नहीं किया। इराक के गवर्नर ने शीघ्र ही सेना को घेर लिया और कर्बला में उनमें से अधिकांश को मार डाला। हुसैन का सिर काटकर यज़ीद के पास भेज दिया गया। हसन और हुसैन दोनों को सभी मुसलमान बहुत प्यार करते थे और शिया उन्हें क्रमशः अपना दूसरा और तीसरा इमाम मानते हैं, अली पहले इमाम हैं। (ट्र.)

जैसा कि एक परंपरा में कहा गया है, इस्लाम इसकी मनाही करता है: "इस्लाम 15वीं सदी के नस्लवाद की मनाही करता है" अज्ञानता और आदेश है कि (एबिसिनियन) के बीच कोई असमानता नहीं होनी चाहिए एक काला गुलाम और एक कुरैशी सरदार, बशर्ते दोनों मुसलमान हों।" इस प्रकार, हुसैन धार्मिक बंधन को पुनः स्थापित करने के लिए उन्होंने उमय्यदों से युद्ध किया और फलस्वरूप शहादत प्राप्त की।

प्रश्न: यदि वह सही पक्ष में था, तो वह असफल क्यों हुआ? दिव्य क्यों क्या भाग्य और करुणा उसे ऐसे दुखद अंत की अनुमति देते हैं?

उत्तर: उनके कुछ गैर-अरब समर्थक अपनी हत्या का बदला लेना चाहते थे। राष्ट्रीय गौरव को ठेस पहुंचाई। इस प्रतिशोध ने शुद्ध मिशन को धूमिल कर दिया और हुसैन और उनके करीबी दोस्तों के पवित्र कारण। परिणाम हार थी। दिव्य नियति ने उन्हें इतना दर्दनाक अंत सहने की अनुमति दी क्योंकि हसन, हुसैन, और उनके वंशजों को एक आध्यात्मिक राज्य के लिए नियत किया गया था। जैसा कि आमतौर पर आध्यात्मिक और सांसारिक राज्य को एक साथ जोड़ना कठिन होता है, उन्हें ऐसा करने के लिए मजबूर किया गया। सांसारिक चिंताओं से दूर रहें और अपने दिलों को सांसारिक महत्वाकांक्षाओं से खाली कर दें। परिणामस्वरूप, उन्हें एक स्थायी आध्यात्मिक राज्य से पुरस्कृत किया गया और उन्हें महानतम संतों द्वारा अपनाए गए मार्ग का नेतृत्व करने के लिए चुना गया।

आपका तीसरा प्रश्न: उनके साथ इतना कठोर व्यवहार क्यों किया गया?

उत्तर: उमय्यदों के शासन के तीन सिद्धांतों के कारण कुछ ग़लती की हद: सरकार की सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए लोगों की बलि दी जा सकती है (निर्मम राजनीति का एक सिद्धांत); प्रशासन पर आधारित होना चाहिए नस्लीय या राष्ट्रीय वरीयता (वैचारिक नस्लवाद किसी भी चीज़ का त्याग करता है) जाति या राष्ट्र की भलाई); तथा पारंपरिक उमय्यद-हाशिमाइट प्रतिद्वंद्विता, जो मुआविया के बेटे यजीद और उसके जैसे शासकों के अधीन जारी रही।

एक और बात भी है। हुसैन के कुछ गैर-अरब समर्थक उन्हें उम्मीद थी कि वे अपने आहत राष्ट्रीय गौरव और अन्यायपूर्ण व्यवहार का बदला लेंगे उमय्यदों के अधीन दास। ऐसे लोगों ने उमय्यदों की नस्लीय भावनाओं को भड़काया। हालाँकि, ईश्वरीय नियति के दृष्टिकोण से, हुसैन और उनके रिश्तेदारों उन्हें इतना मूल्यवान आध्यात्मिक राज्य और इतना ऊंचा आध्यात्मिक पद मिला कि कर्बला में उन्होंने जो कष्ट सहे, वे उसकी तुलना में फीके पड़ गए और उन्हें सहन करना काफी आसान लगता है। निजी सैनिकों को जो रैंक मिल सकती है, उस पर विचार करें एक घंटे की यातना के बाद शहादत प्राप्त होती है, जिसे अन्य लोग एक घंटे की यातना के बाद ही प्राप्त करते हैं। एक दशक के प्रयास के बाद। अगर इन शहीद सैनिकों से पूछा जाए कि भगवान ने उनके साथ कैसा व्यवहार किया, वे जवाब देते कि उन्होंने बहुत कम लागत के बदले में बहुत अधिक कमाया है।

आपका चौथा सवाल: समय के अंत से कुछ समय पहले, यीशु वापस लौटो और दज्जाल (ईसा विरोधी) को मार डालो, और अधिकांश लोग इस्लाम अपना लेंगे। हालाँकि, एक अन्य परंपरा कहती है कि पुनरुत्थान का दिन नहीं आएगा

यदि कुछ लोग अभी भी परमेश्वर को याद करते हैं और उसका उल्लेख करते हैं। लगभग सार्वभौमिक धर्मांतरण के बाद लोग धर्मत्याग कैसे करेंगे?

उत्तर: इस्लाम के स्तंभों में कमज़ोर आस्था रखने वाले लोग इसे लगभग इस्लाम ही मानते हैं। यह असंभव है कि यीशु समय के अंत से पहले वापस आएंगे, शरिया का पालन करेंगे, और दज्जाल को मार डालो, जिसकी भविष्यवाणी एक प्रामाणिक परंपरा में की गई है। यीशु की वापसी के बारे में इसी तरह की परंपरा, सुफियान (एक और दज्जाल जो मुस्लिम दुनिया में दिखाई देते हैं), और महदी संकेत देते हैं कि दो प्रवृत्तियाँ हैं समय के अंत से पहले अविश्वास प्रकट होगा।

एक: पाखंड की आड़ में काम करने वाला एक भयानक व्यक्ति दिखाई देगा मुस्लिम दुनिया। पाखंडियों का नेतृत्व करते हुए और पैगंबर के संदेशवाहक होने से इनकार करते हुए, वह शरिया को नष्ट करने की कोशिश करेगा। सौभाग्य से, एक धन्य वंशज पैगंबर के परिवार31 के लोग उनका विरोध करेंगे और लोगों के मुखिया होंगे संतत्व और आध्यात्मिक पूर्णता, पाखंड की इस प्रवृत्ति को मिटा देगी।

दो: दूसरी प्रवृत्ति नास्तिकता है, जो प्रकृतिवादी और नास्तिकतावाद का परिणाम है। भौतिकवादी दर्शन से सकारात्मक दर्शन को बल मिला। आदिम लोग राजा या उसकी सेना की टुकड़ियों को नहीं पहचानते, वे प्रत्येक सैनिक को एक तरह की स्वतंत्र राजसत्ता और संप्रभुता प्रदान करनी होगी। ऐसे लोग अंततः खुद को किसी तरह की या किसी हद तक स्वतंत्र राजसत्ता और संप्रभुता प्रदान करेंगे। देवत्व। परिणामस्वरूप उनके नेता, कुछ भौतिक और मानसिक साधनों द्वारा समर्थित प्रेतात्मवाद और सम्मोहन विद्या की तरह, खुद को देवता बना लेगा। भविष्यवाणी परंपराएँ उसे बुलाती हैं दज्जाल। किसी के लिए ईश्वर होने का दावा करना कितनी बेवकूफी है, जब वह ईश्वर के बारे में भी कुछ नहीं कह सकता। मच्छर के पंख से या मक्खी या कीटाणु से पराजित हो जाता है!

जब नास्तिकता की यह प्रवृत्ति लगभग अपने चरम पर होगी, तब यीशु का सच्चा, मूल धर्म फिर से प्रकट होगा। यानी, यह ईश्वरीय दया के स्वर्ग से उतरेगा, और ईसाई धर्म का वर्तमान संस्करण, अपने पापों से शुद्ध होकर आएगा। उधार लिए गए तत्व, इस्लाम की सच्चाइयों के साथ एक हो जाएंगे या परिवर्तित हो जाएंगे और कुरान का पालन करेंगे। सच्चा धर्म बहुत मजबूत हो जाएगा इस मिलन से नास्तिक प्रवृत्ति को परास्त करें। सर्वशक्तिमान, पैगम्बर, अपने हर शब्द और रिपोर्ट में सच्चे, बताया गया कि यीशु समय के अंत में नीचे आएगा। चूँकि वह यह सच है। चूँकि परमेश्वर ने वादा किया है, इसलिए वह अपना वादा पूरा करेगा।

इस बात को देखते हुए, कोई भी इस बात से कैसे इनकार कर सकता है कि महामहिम, कौन विशिष्ट उद्देश्यों के लिए दुनिया में कुछ स्वर्गदूतों को भेजता है, कभी-कभी मनुष्य का रूप, जो कुछ आध्यात्मिक प्राणियों को मनुष्य के रूप में भेजता है

---

३१ पैगम्बर का परिवार: पैगम्बर, अली, फातिमा, हसन और हुसैन। ये लोग हैं अहल अल-बैत, यानी घर का परिवार (या लोग) के नाम से जाना जाता है। पैगंबर की पत्नियाँ इस पदनाम में शामिल नहीं है। (ट्र.)

लोगों के साथ-साथ कुछ मृत संतों की आत्माएं भी उनके "ऊर्जा लिफाफे" में हैं,
क्या इस्लाम से संबंधित एक महत्वपूर्ण उद्देश्य के लिए समय के अंत से पहले यीशु को दुनिया में वापस लाया जाएगा?32

परमेश्वर याद रखें कि यीशु अपने परिष्कृत भौतिक शरीर के साथ निकटतम स्वर्ग में है और एक विशेष स्तर के जीवन का आनंद ले रहा है, जैसा कि पहले अध्याय में बताया गया है।
पत्र। भले ही वह "पूरी तरह" मर गया हो और दूसरी दुनिया में सबसे दूर चला गया हो
कोने में, यह ईश्वरीय बुद्धि के अनुरूप होगा कि ईश्वर उसे पुनर्जीवित करें और
उसे यहाँ भेजो। भगवान ने यह वादा किया है, और ऐसा ही होगा। इसके अलावा,
पैगंबर ने उस वादे के आधार पर यह सब भविष्यवाणी की थी। हालाँकि, जब यीशु वापस लौटेंगे, तो केवल उनके सबसे करीबी लोग ही विश्वास की रोशनी के ज़रिए उन्हें पहचान पाएँगे।

प्रश्न: कुछ रिवायतों में बताया गया है कि दज्जाल अपने दोस्तों के लिए झूठा स्वर्ग और अपने विरोधियों के लिए झूठा नरक बनाएगा।
गधा, जिसका एक कान स्वर्ग जैसा है और दूसरा नर्क जैसा। अन्य
परम्पराओं के अनुसार उसका शारीरिक कद बहुत बड़ा होगा। इसका क्या मतलब है?

जवाब: दज्जाल एक इंसान है, एक साज़िशकर्ता है, एक बेवकूफ शैतान है जो खुदा को भूल गया है। वह अपने अत्याचारी शासन और अपनी निरंकुशता के स्पष्ट वैभव के कारण खुद को देवता मानता है। नास्तिकता की प्रवृत्ति, जिसका वह प्रतिनिधित्व करता है,
शक्तिशाली और व्यापक है। परंपराएं उसे एक विशाल के रूप में वर्णित करती हैं
मनुष्य वास्तव में इस प्रवृत्ति के बारे में हैं, न कि दज्जाल के व्यक्तित्व के बारे में।
एक बार मैंने जापानी कमांडर-इन-चीफ की तस्वीर देखी थी, जिसका एक पैर कटा हुआ था।
एक प्रशांत महासागर में और दूसरा पोर्ट आर्थर [अब लुशुन, चीन] में। यह
जापान की शक्ति और विशाल प्रभाव का प्रदर्शन किया।

दज्जाल का झूठा स्वर्ग आधुनिक सभ्यता की क्षणभंगुर कल्पनाएँ, मनमोहक खिलौने और मनोरंजन है। उसका गधा आधुनिक वाहनों का प्रतिनिधित्व करता है
ट्रेनों से लेकर अंतरिक्ष यान तक परिवहन। एक छोर पर कोयला जलाने वाली कार है
इंजन, एक "फायरप्लेस" जिसमें वह अपने विरोधियों को फेंकता है, जबकि दूसरा
अंतिम कार स्वर्ग की तरह समृद्ध रूप से सुसज्जित है, जिसमें वह अपने अनुयायियों को प्रवेश देता है।
रेलगाड़ियाँ, आधुनिक भ्रष्ट सभ्यता का एक बहुत ही महत्वपूर्ण "सवार", एक झूठी कहानी लाती हैं
सांसारिक लोगों को भ्रष्ट करने और मुस्लिम देशों को उपनिवेश बनाने, शोषण करने में मदद करने के लिए स्वर्ग
उनकी सम्पत्ति हड़प ली और मुसलमानों को गुलाम बना लिया।33

इस नाटकीय घटनाक्रम के दौरान, इस्लाम अपनी एकता के कारण कहीं अधिक मजबूत होगा।
एक शुद्ध ईसाई धर्म के साथ और बहुसंख्यक लोगों तक इसका प्रकाश फैलाएगा-

---

32 महादूत गेब्रियल कभी-कभी अपने साथी दिह्या के रूप में पैगंबर के पास आते थे।
भगवान यहाँ कुछ आध्यात्मिक प्राणियों को लोगों के रूप में भेजते हैं, साथ ही कुछ लोगों की आत्माओं को भी भेजते हैं।
मृत संतों को उनके “ऊर्जा लिफाफे” में। (ट्र.)

33 दूसरे शब्दों में, दज्जाल ने उपनिवेश स्थापित करने के लिए आधुनिक वाहनों, हथियारों और प्रौद्योगिकी का उपयोग किया।
मुस्लिम देशों में जाकर मुसलमानों को गुलाम बनाया जाता है। सईद नूरसी ने विशेष रूप से ट्रेनों का हवाला दिया क्योंकि वे

लेकिन समय के अंत से कुछ समय पहले, अविश्वास की एक नई प्रवृत्ति दिखाई देगी
और इसका बहुत बड़ा प्रभाव होगा। परिणामस्वरूप, अधिकांश लोग
अविश्वास में फिसल जाओ और केवल कुछ ही लोग अंत तक अपने विश्वास को बनाए रखेंगे
दिन। फिर भी, ईश्वर, विश्वासियों के लिए अपनी दया से, उन्हें मृत्यु देगा
दुनिया के विनाश से ठीक पहले ताकि वे इस भयानक घटना का अनुभव न करें। दुनिया अविश्वासियों के सिर पर नष्ट हो जाएगी।

आपका पाँचवाँ प्रश्न: क्या वे आत्माएँ जो परम शांति के द्वारा स्थायित्व प्राप्त कर चुकी हैं?
क्या मृत्यु प्रलय दिवस की घटनाओं से प्रभावित होगी?

उत्तर: वे अपने पद के अनुसार प्रभावित होंगे, ठीक वैसे ही जैसे स्वर्गदूत होते हैं।
जब परमेश्वर अपनी महिमा के गुण प्रकट करता है तो हम प्रभावित होते हैं
पापियों का नाश करके अभिभूत करना। जिस प्रकार गर्म कमरे में बैठे लोगों के दिल और दिमाग कांपते हुए लोगों को देखकर प्रभावित होते हैं
बाहर की ठंड से, इसलिए वे चेतन आत्माएं जो अनंत काल में चली गई हैं, उन पर, जैसा कि कुरान में संकेत दिया गया है, उन महत्वपूर्ण घटनाओं का प्रभाव पड़ेगा
वह ब्रह्मांड जिसके साथ उनका कुछ संबंध है। यातना के लोग
वे उनसे पीड़ा में प्रभावित होंगे, जबकि खुश लोग उनसे आश्चर्य और विस्मय में प्रभावित होंगे, और यहां तक कि एक हर्षित उम्मीद में भी
अंतिम, अंतहीन आनंद निकट आ रहा है।

कुरान की कई आयतें मानवता (और जिन्न) को प्रलय की धमकी देती हैं
चौंकाने वाली घटनाएँ और तनाव कि हर कोई उनका अनुभव करेगा।
उस समय जीवित हैं तो वे उन्हें शारीरिक रूप से अनुभव करेंगे, जबकि वे आत्माएं जिनकी
वे शव जो कब्रों में पिघल गए हैं या पिघल जाएंगे, वे भी इसमें शामिल हैं,
कुछ हद तक, इस कुरानिक खतरे के भीतर।

आपका छठा प्रश्न: क्या यह सच है कि सभी चीज़ें नाशवान हैं, सिवाय उसके चेहरे के (28:88)
क्या इसका संबंध स्वर्ग, नरक और उनके निवासियों से भी है?

उत्तर: इस विषय पर अनेक योग्य विद्वानों, संतों और गहन बुद्धि तथा अंतर्दृष्टि वाले लोगों ने चर्चा की है। कुछ लोगों का मानना है कि इसमें स्थायी दुनिया के निवासी शामिल नहीं हैं, जबकि अन्य का मानना है कि ये स्थायी दुनिया के निवासी हैं।

जब उन्होंने यह पत्र लिखा था, तब ये परिवहन के मुख्य साधन थे। उन्होंने ऐसा इसलिए भी किया क्योंकि
साम्यवाद, या व्यापक अर्थ में भौतिकवाद या नास्तिकता इसके अर्थ में शामिल हैं
दज्जाल। बड़ी संख्या में निर्दोष मुसलमानों को रेलगाड़ियों द्वारा सोवियत यातना शिविरों में ले जाया गया।
आधुनिक भ्रष्ट सभ्यता के लिए रेलगाड़ियाँ बहुत महत्वपूर्ण थीं, विशेषकर उन्नीसवीं और बीसवीं शताब्दी के पूर्वार्ध में, और आज भी उनका महत्व बना हुआ है।
जबकि उन्होंने इस भ्रष्ट सभ्यता और मुस्लिम दुनिया में इस्लाम विरोधी शासन के विशेषाधिकार प्राप्त समर्थकों को समृद्ध रूप से सुसज्जित डिब्बों में आनंद के स्थानों पर ले जाया, साम्राज्यवादी शक्तियों ने उनका उपयोग मुस्लिम देशों को उपनिवेश बनाने, शोषण करने और गुलाम बनाने के लिए किया।
और, एशिया और अफ्रीका की तरह, उन्हें खलिहान जैसे डिब्बों में काम करने या एकाग्रता शिविरों में ले जाया जाता है। सोवियत संघ और अन्य जगहों पर, उनमें से अधिकांश की मृत्यु हो गई। (ट्र.)

लोग भी विनाश में प्रवेश करेंगे, यद्यपि इतनी कम अवधि के लिए कि वे इसे महसूस नहीं करेंगे। आध्यात्मिक खोज के कुछ संत जो चरम सीमा तक जाते हैं तर्क देते हैं कि ईश्वर को छोड़कर सारा अस्तित्व हमेशा के लिए नष्ट हो जाएगा। लेकिन यह ऐसा नहीं हो सकता, क्योंकि ईश्वरीय सार और ईश्वर के गुण और नाम शाश्वत हैं। इस प्रकार स्थायित्व की दुनिया में स्थायी प्राणी पूर्ण विनाश का अनुभव नहीं कर सकते, क्योंकि वे ईश्वर के शाश्वत गुणों और नामों की अभिव्यक्तियाँ हैं और वे दर्पण हैं जिनमें वे प्रतिबिंबित होते हैं।

अब मैं संक्षेप में दो बिंदुओं का उल्लेख करना चाहता हूं जो मेरे दिमाग में आए हैं। कुरान के अर्थों का अनंत सागर:

पहला बिंदु: सर्वशक्तिमान पूर्ण रूप से सर्वशक्तिमान है, इसलिए उसके लिए सृजन और विनाश समान रूप से आसान है। वह एक पल में पूरी सृष्टि को नष्ट या फिर से बना सकता है। इसके अलावा, पूर्ण अस्तित्वहीनता कभी भी अस्तित्व में नहीं आ सकती।

अस्तित्व में है, क्योंकि वहाँ एक व्यापक ज्ञान है। चूँकि सब कुछ समाहित है या अनंत ईश्वर के भीतर एक प्रकार का अस्तित्व या आदर्श रूप है

ज्ञान, अस्तित्वहीनता के लिए कोई स्थान नहीं है।

दिव्य ज्ञान के चक्र में सापेक्षिक अस्तित्वहीनता, वस्तुतः दिव्य ज्ञान की अभिव्यक्तियों को प्रतिबिंबित करने वाला एक नाममात्र का आवरण है।

कुछ गहन समझ वाले लोगों ने ऐसे रूपों को आदर्श कहा है अस्तित्व के "आदर्श" इसके आधार पर, गैर-अस्तित्व में जाने का मतलब है बाहरी वस्त्र (शरीर) उतारना और आध्यात्मिक चक्र में वापस लौटना दिव्य ज्ञान में अस्तित्व या अस्तित्व। दूसरे शब्दों में, जो अपना भौतिक शरीर छोड़कर नष्ट हो जाता है, वह आध्यात्मिक शरीर धारण कर लेता है और, वह चक्र जहाँ (दिव्य) शक्ति कार्य करती है, (दिव्य) ज्ञान के चक्र में प्रवेश करता है।

दूसरा बिन्दु: चूंकि कोई भी वस्तु अपने आप अस्तित्व में नहीं रह सकती, इसलिए हर वस्तु का अस्तित्व भी अपने आप अस्तित्व में नहीं रह सकता। ईश्वर पर निर्भर करता है। चूँकि यह स्थायी ईश्वरीय अभिव्यक्ति के रूप में विद्यमान है नाम, दिव्यता को प्रतिबिंबित करने के कारण इसकी एक स्थायी, उदात्त वास्तविकता है नाम जो इसके अस्तित्व का कारण है। श्लोक: सभी चीजें नाशवान हैं, सिवाय उसके चेहरे के (28:88) यह एक तलवार के समान भी है जो लोगों को उस चीज़ से आज़ाद करती है जो उनके लिए नहीं है। ईश्वर (जैसे, संसार, शरीर और जीवन की व्यर्थताएँ)। इस प्रकार लोगों के पास जो कुछ भी है या भगवान के लिए करो इस श्लोक के अर्थ में शामिल नहीं है।

संक्षेप में, यदि लोग ईश्वर को पा लें और केवल उसके लिए कार्य करें, तो 'सब चीजें नाशवान हैं, सिवाय उसके' के अर्थ में शामिल करने के लिए कुछ भी शेष नहीं रहेगा। (28:88) अतः यदि वे अपने कर्मों को सदैव बनाए रखना चाहें और प्रतिफल पाना चाहें स्थायी खुशी के लिए, उन्हें परमेश्वर की खोज करनी चाहिए और उसके लिए जीना चाहिए और अच्छा आनंद.

वह शाश्वत है।

सईद नूरसी

सत्रहवाँ पत्र

सत्रहवाँ पत्र

बच्चे की मौत पर सांत्वना

उसके नाम पर.

ऐसी कोई भी चीज़ नहीं है जो उसकी स्तुति से उसकी महिमा न करती हो।

मेरे प्रिय भाई और मेरे साथी यात्री ,
इसके बाद, हाफ़िज़ खालिद इफेंडी,

ईश्वर के नाम पर, जो दयालु, कृपालु है।

धैर्यवानों को शुभ सूचना दे दो कि जब उनपर कोई मुसीबत आती है तो वे कहते हैं कि हम अल्लाह ही के हैं और उसी की ओर लौटकर जाने वाले हैं। (2:155-56)

आपके बच्चे की मृत्यु से मुझे बहुत दु:ख हुआ है। लेकिन चूँकि यह निर्णय ईश्वर का है, इसलिए उसके निर्णय को स्वीकार करना विश्वास के स्तंभों और चिह्नों में से एक है। सर्वशक्तिमान आपको धैर्यवान बनकर इसे सहने की शक्ति प्रदान करे। वह आपके दिवंगत बच्चे को परलोक में आपकी समृद्धि का साधन बनाए। मैं इस अवसर पर आप जैसे ईश्वर-भक्त, पवित्र विश्वासियों को सांत्वना देने और उन्हें शुभ समाचार देने के लिए पाँच बिंदुओं को स्पष्ट करना चाहूँगा।

पहला बिंदु: अमर बच्चों से कुरान का मतलब यह है: अगर किसी मोमिन के बच्चे यौवन से पहले मर जाते हैं, तो वे हमेशा के लिए जन्नत में प्यारे बच्चों की तरह रहेंगे। वे हमेशा के लिए खुशी और आनंद के साधन होंगे

अपने माता-पिता के लिए, जो उनके आलिंगन में उनके लिए उनके प्यार का आनंद लेंगे। कुछ लोग तर्क देते हैं कि जन्नत के लोग बच्चों के लिए प्यार को छोड़कर सभी सुखों का आनंद लेंगे, क्योंकि जन्नत पीढ़ी का स्थान नहीं है। हालाँकि, कुरान की अभिव्यक्ति अमर बच्चे संकेत देते हैं कि उन्हें अपने मृत बच्चों के शुद्ध स्नेह से हमेशा के लिए पुरस्कृत किया जाएगा, जबकि इस दुनिया में वह प्यार या स्नेह अधिकतम 10 वर्षों तक सीमित है, और फिर अक्सर दु:ख और संतान संबंधी कृतघ्नता से घायल हो जाता है।

दूसरा बिंदु: एक बार एक व्यक्ति को उसके बच्चे के साथ जेल में डाल दिया गया, जिसकी जिम्मेदारी उसी पर थी। उसे न केवल खुद की पीड़ा सहनी थी, बल्कि उसे अपने बच्चे की देखभाल भी करनी थी। जब वह पीड़ित था, तो देश के दयालु शासक ने एक दूत को महल में बच्चे की देखभाल करने के लिए भेजा, क्योंकि बच्चा उसका अधीन था।

उस आदमी की प्रतिक्रिया एक व्यथित चीख थी: "यह बच्ची ही मेरी सांत्वना का एकमात्र साधन है। मैं उसे नहीं छोड़ सकता।" हालाँकि, उसके साथी कैदियों ने उसे सलाह दी:

> तुम्हारा दुख बेमानी है। अगर तुम्हें अपनी बच्ची पर दया आती है, तो उसे इस घुटन भरी, गंदी जेल से निकालकर एक खूबसूरत, विशाल महल में ले जाओ। अगर तुम उसे अपने फायदे के लिए यहाँ रखना पसंद करते हो, तो सोचो कि उसकी देखभाल करने में तुम्हें कितनी मेहनत करनी पड़ती है। उसे शासक को सौंपना तुम्हारे हित में है, जिसकी करुणा और सहानुभूति वह निश्चित रूप से जगाएगी, ताकि वह तुमसे मिलना चाहे। शासक उसे जेल नहीं भेजेगा, बल्कि इस शर्त पर तुम्हें बुलाएगा कि तुम उसकी बात मानो और उस पर भरोसा करो।

मेरे भाई, यह ऊपर दिए गए दृष्टांत की तरह है कि सभी विश्वासियों को जिनके बच्चे या बच्चे मर गए हैं, उन्हें इस तरह सोचना चाहिए: (पूर्व-यौवन) बच्चे मासूम होते हैं। उनके सर्व-दयालु और सर्व-उदार निर्माता ने अपनी पूर्ण करुणा से उन्हें अपनी देखभाल में ले लिया है, जबकि मैं उन्हें मन या नैतिकता में पर्याप्त प्रशिक्षण देने में असमर्थ हूँ। इसके अलावा, उनका निर्माता उनके प्रति मुझसे कहीं अधिक स्नेही है।

बच्चे कितने खुश हैं, क्योंकि भगवान ने उन्हें इस दुनिया की थकाऊ जिंदगी से निकालकर सबसे ऊंचे स्वर्ग में पहुंचा दिया है। अगर वे लंबे समय तक जीवित रहते, तो शायद वे भटक जाते। इसलिए मुझे शोक नहीं करना चाहिए। अगर वे बड़े होकर नेक इंसान बनते, तो शायद वे मेरा भला कर सकते थे, लेकिन अब वे अनंत सुख का आनंद ले रहे हैं। इसके अलावा, वे माता-पिता के प्यार के माध्यम से मेरे लिए अनंत सुख का साधन बनेंगे और मेरे अनंत सुख के लिए भगवान से प्रार्थना करेंगे-

स्वर्ग में दु:ख। इस प्रकार जिसने मात्र संभावित पुरस्कार से कहीं अधिक बड़ा पुरस्कार प्राप्त किया है, उसे रोना-पीटना नहीं चाहिए।

तीसरा बिन्दु: बच्चे ईश्वर के प्राणी और सेवक हैं, इसलिए उन्हें ईश्वर का सेवक होना चाहिए।
उसने उन्हें एक निश्चित अवधि के लिए उनके माता-पिता की देखभाल में रखा है और
अपने ही हित में। बदले में, परमेश्वर ने उनके माता-पिता को उनके प्रति आनंद देने वाला स्नेह महसूस कराया है।
इसलिए विश्वासियों को उनके लिए विलाप नहीं करना चाहिए
जब ईश्वर, दयालु सृष्टिकर्ता, उन्हें अपने से दूर ले जाता है, तो वे अपने बच्चों को बहुत दु:खी महसूस करते हैं।
उसकी करुणा के कारण.

चौथा बिंदु: यदि दुनिया शाश्वत होती और मानवता हमेशा जीवित रहती तो माता-पिता को मृत बच्चों के लिए विलाप करने का कुछ अधिकार होता। लेकिन जैसे-जैसे यह दुनिया अमर होती जाती है, वैसे-वैसे माता-पिता को मृत बच्चों के लिए विलाप करने का कुछ अधिकार होता।
वे केवल एक अतिथिगृह हैं, अंततः मृत्यु हमें वहीं ले जाएगी जहां वे गए हैं।
चूंकि अलगाव अस्थायी है और पुनर्मिलन का निर्णय इंटरमीडिएट में लिया गया है
संसार (मृत्यु और अंतिम न्याय के बीच) और स्वर्ग, विश्वासियों
हमें हर बात के लिए परमेश्वर को धन्यवाद देना चाहिए और हर विपत्ति को इस पूर्ण विश्वास के साथ सहना चाहिए कि न्याय उसी का है।

पाँचवाँ बिंदु: स्नेह, ईश्वरीय करुणा की सबसे मधुर और सबसे सुंदर अभिव्यक्तियों में से एक है, यह एक प्रकार का जीवन जल है जो मानवता को प्रेम की तुलना में अधिक तेज़ी से ईश्वर की ओर ले जाता है। चूँकि सांसारिक प्राणियों के प्रति प्रेम बदल सकता है
ईश्वर के प्रति प्रेम में, यद्यपि बहुत कठिनाई के बाद, स्नेह किसी को ईश्वर के प्रति प्रेम में बदल सकता है,
सच्चे दिल से ईश्वर को समर्पित, लेकिन बिना किसी कठिनाई के। माता-पिता
वे अपने बच्चों से उतना ही प्यार करते हैं जितना वे अपने बच्चों से जुड़ी हर चीज़ से करते हैं।
अगर वे ईमानवाले हैं, तो जब उनके बच्चे उनसे दूर कर दिए जाएँगे, तो वे दुनिया को त्याग देंगे और पूरी तरह से परमेश्ँवर की ओर मुड़ जाएँगे। वे आएँगे
उस जगह में गहरी दिलचस्पी महसूस करना जहां उनके बच्चे गए हैं और, यह मानते हुए कि यह क्षणभंगुर दुनिया दिल से दिलचस्पी लेने लायक नहीं है, वे
एक उच्च आध्यात्मिक अवस्था.

हालाँकि, गुमराह लोग अपना ज्ञान खोने के बाद बहुत खराब स्थिति में हैं।
वे अनैतिक जीवन जीते हैं और परमेश्वर की आज्ञाओं की उपेक्षा करते हैं। परिणामस्वरूप,
उनका मानना है कि मौत उनके बच्चों को नरम बिस्तर से अंधेरी मिट्टी पर ले जाती है
कब्र के और इसलिए काफी निराश और दुखी हैं। उनका अविश्वास
जन्नत, जिसे अल्लाह ने अपनी रहमत से अपने बन्दों के लिए तैयार किया है,
उनके दु:ख को बढ़ाता है। लेकिन विश्वासियों को यकीन है कि दयालु परमेश्वर
बच्चों के निर्माता ने उन्हें इस गंदी दुनिया से स्वर्ग में ले लिया है,
और इसलिए बच्चों की मृत्यु को “उचित धैर्य” के साथ सहन करें।

अतः ऐ मेरे भाई, तुम चिन्ता न करो, यह एक अस्थायी वियोग है। कह दो, "हे प्रभु, यह एक अस्थायी वियोग है।" न्याय परमेश्वर का है। हम परमेश्वर के हैं, और हम उन्हीं के पास लौट रहे हैं"— और धैर्य रखें.

वह शाश्वत है।

सईद नूरसी

अठारहवाँ पत्र

अठारहवाँ पत्र

निराधार भौगोलिक दावे • अस्तित्व की एकता का सिद्धांत • ब्रह्मांड में अद्भुत, निरंतर गतिविधि के लिए दिव्य उद्देश्य

उसके नाम में, उसकी महिमा हो।

ऐसी कोई चीज़ नहीं है जो उसकी स्तुति से महिमा न करती हो।

तीन महत्वपूर्ण मामले

F सबसे महत्वपूर्ण बात: अल-फ़ुतुहात अल-मक्किया (मक्कान विजय) के लेखक मुही अल-दीन इब्न अल-अरबी और अल-इंसान अल-कामिल (सार्वभौमिक मनुष्य) के लेखक सईद 'अब्द अल-करीम अल-जिली जैसे प्रसिद्ध संत पृथ्वी की सात परतों, माउंट क़ाफ़ (श्वेत पृथ्वी) के बाद एक स्थान और एक अजीब चीज़ जिसे वे मशमशिया कहते हैं, के बारे में चर्चा करते हैं।[34] भूगोलवेत्ता और भूविज्ञानी ऐसी जगहों को नहीं पहचानते हैं और इस ग्रह पर किसी भी जगह का ऐसा नाम नहीं है। अगर ये दावे झूठे हैं, तो उन्हें संत और सत्य के लोग कैसे माना जा सकता है?

[34] मुही अल-दीन इब्न अल-अरबी (1165-1240): एक प्रसिद्ध मुस्लिम सूफ़ी-दार्शनिक जो अस्तित्व की एकता के सिद्धांत के लिए प्रसिद्ध थे; सईद 'अब्द अल-करीम अल-जिली (1365-लगभग 1424): एक सूफ़ी जिसका "पूर्ण, सार्वभौमिक मनुष्य" का सिद्धांत पूरे इस्लामी जगत में लोकप्रिय हो गया। उनके विचार अल-अरबी से बहुत प्रभावित थे। (संपादक)

उत्तर: वे दोनों संत और सत्य के लोग हैं। उन्होंने जो देखा
एक वास्तविकता है, लेकिन हो सकता है कि उन्होंने अपने दृष्टिकोण की व्याख्या और नामकरण में गलती की हो।
दृष्टि संपन्न लोग समाधि जैसी अवस्था में अपने दर्शन की व्याख्या नहीं कर सकते,
जैसे लोग सपने देखते समय अपने सपनों की व्याख्या नहीं कर सकते।
इसकी व्याख्या केवल सत्य और सत्यापन वाले शुद्ध लोगों द्वारा ही की जा सकती है जो सच्चे हैं
पैगम्बर के मिशन (अस्फीया) के उत्तराधिकारी। जब ऐसे दूरदर्शी लोग पहुँचते हैं
शुद्ध सत्य के लोगों की श्रेणी में आएँ और अपनी गलतियों के प्रति जागरूक हों
कुरान और सुन्नाह की रोशनी में, वे उन्हें सही करते हैं।

इस दृष्टांत पर विचार करें: दो धर्मपरायण चरवाहे अपने पशुओं का दूध दुहते थे और उसे लकड़ी के कटोरे में इकट्ठा करते थे। चरवाहे ने बांसुरी बजाई और फिर उसे एक लकड़ी के कटोरे में रख दिया।
कटोरे के पार, उनमें से एक सो गया। जब वह सो रहा था, तो दूसरे ने देखा कि उसके दोस्त की नाक से एक मक्खी जैसी कोई चीज़ उड़ी और उसके बाद,
कुछ देर तक दूध के आसपास भिनभिनाता रहा, बांसुरी से होकर गुजरा और गायब हो गया
गम-ट्री के नीचे एक छेद में। कुछ ही देर बाद, मक्खी जैसी चीज़
छेद से बाहर आया, बांसुरी के बीच से गुजरा, सो रहे चरवाहे की नाक के पास लौटा, और उसे जगा दिया।

जागने के बाद, चरवाहे ने अपना अजीब सपना सुनाया। "भगवान करे
इसे अच्छाई में बदल दो," उसके दोस्त ने कहा, और उससे पूछा कि उसने क्या देखा था।
आदमी ने जवाब दिया: "मैंने एक दूधिया झील देखी जिसके पार एक अजीब सी चादर फैली हुई थी
खिड़कियों वाला पुल। पुल से गुजरते हुए, मैंने एक जगह देखी जो खिड़कियों से ढकी हुई थी
झाड़ियाँ उखड़ी हुई थीं, जिसके नीचे एक गुफा थी। मैं गुफा में गया और पाया
उसमें एक खजाना है।" उसके बुद्धिमान मित्र ने सपने की व्याख्या की: "दूधिया झील
वह लकड़ी का कटोरा है, और अजीब पुल उस पर पड़ी बांसुरी है।
झाड़ियाँ वहाँ पर वह गम-पेड़ हैं, और गुफा वह छोटा सा छेद है। अब
कुल्हाड़ी लाओ ताकि मैं तुम्हें खजाना दिखा सकूं। उन्होंने पेड़ खोदा और
खजाना मिल गया, जिससे वे दोनों इस दुनिया में खुश हो गये।

हालाँकि सोते हुए चरवाहे ने जो देखा वह असत्य नहीं है, फिर भी वह यह नहीं कह सकता कि उसकी दृष्टि वस्तुतः वास्तविकता से मेल खाती है, क्योंकि वह अभौतिक दुनिया को भौतिक दुनिया से भ्रमित कर सकता है। जो चरवाहा जागता रहा, वह
वह स्वप्न की व्याख्या कर सकता है, क्योंकि वह दो संसारों के बीच अंतर कर सकता है।
इस प्रकार वास्तविकता तक पहुँचने के लिए, व्यक्ति को भौतिक और आध्यात्मिक दुनिया के बीच अंतर करना होगा। कल्पना करें कि आप एक छोटे से कमरे में हैं और आपके सामने एक दर्पण है।
प्रत्येक दीवार। इसमें प्रवेश करते हुए, आपको इसकी कई छवियां दिखाई देंगी, जैसे कि यह एक दीवार हो
पूरा पड़ोस। आप कह सकते हैं कि आप अपने कमरे को उतना ही बड़ा देखते हैं
पूरा पड़ोस, लेकिन यह दावा करना कि आपका कमरा सचमुच इतना बड़ा है, गलत है,
क्योंकि आप ऐसा तभी कर सकते हैं जब आप विचारों की दुनिया को भौतिक दुनिया से भ्रमित कर देंगे।
दुनिया।

पृथ्वी की सात परतों या स्तरों के बारे में कुछ समझदार, धर्मपरायण लोगों द्वारा दिए गए विवरणों पर केवल भौगोलिक दृष्टि से विचार नहीं किया जाना चाहिए।
उदाहरण के लिए, वे जिन्न की श्रेणी की बात करते हैं, जो कि जिन्न से हज़ारों गुना ज़्यादा है।
पृथ्वी जितनी विशाल। यह अवास्तविक है। लेकिन अगर हम पृथ्वी को चीड़ की तरह मानें
पेड़ के बीज, विचारों की दुनिया में उससे उगने वाला आदर्श पृथ्वी "पेड़" या
आत्माएं एक विशाल चीड़ के पेड़ की तरह होंगी। इस कारण से, उनकी प्रगति के दौरान
आध्यात्मिक पथ आध्यात्मिक दृष्टि वाले कुछ लोग पृथ्वी की कुछ परतों को देख पाते हैं
विचारों की दुनिया में बहुत विशाल है। चूँकि वह दुनिया और भौतिक दुनिया
दिखने में एक दूसरे से मिलते जुलते हैं, दूरदर्शी उन्हें भ्रमित करते हैं और रिकॉर्ड करते हैं
उनके दर्शन भौतिक तथ्यों के रूप में हैं। इस प्रकार उनके विवरण अवास्तविक माने जाते हैं। जिस प्रकार एक विशाल महल या उद्यान दर्पण में प्रतिबिंबित होता है, उसी प्रकार संसार भी
विचार या आध्यात्मिक वास्तविकताएं, जब पृथ्वी के क्षेत्र में प्रतिबिंबित होती हैं, तो ऐसा प्रतीत होता है
पृथ्वी से हजारों गुना बड़ा है।

निष्कर्षतः, इससे पता चलता है कि आध्यात्मिक दृष्टि का दर्जा निम्न है
अदृश्य में विश्वास। इस प्रकार आध्यात्मिक खोज के माध्यम से प्राप्त संत के निष्कर्ष, प्रत्यक्षदर्शी द्वारा देखे गए निष्कर्षों की तुलना में कम महत्व रखते हैं।
सत्य और प्रमाण पर आधारित शुद्ध लोग, जो कुरान और सुन्नह पर भरोसा करते हैं।
दूसरे शब्दों में, चिंतन, बौद्धिक अंतर्ज्ञान या आध्यात्मिक खोज के माध्यम से प्राप्त सभी आध्यात्मिक अवस्थाओं, दर्शनों और निष्कर्षों का मूल्यांकन किया जाना चाहिए।
कुरान और सुन्नाह के सिद्धांतों और मानकों के अनुसार
सत्य के शुद्ध लोगों द्वारा उनसे प्राप्त किया गया।

दूसरी महत्वपूर्ण बात: अधिकांश लोग उन लोगों के पद को महत्व देते हैं जो
सत्ता की पारलौकिक एकता को सर्वोच्च और सबसे परिपूर्ण के रूप में स्थापित करें। लेकिन
पैगम्बर के परिवार से कोई इमाम नहीं, कोई साथी या इमाम नहीं
निम्नलिखित पीढ़ी (तबीउन) के संस्थापकों सहित
न्यायशास्त्र के चार स्कूलों में से किसी ने भी कभी इसका उल्लेख नहीं किया है। क्या यह दृष्टिकोण सही है?

उत्तर: भगवान न करे कि कोई भी उन पवित्र लोगों से बड़ा हो
विद्वान जो “पैगम्बरत्व के सूर्य के सबसे निकट के तारे हैं।” इसके अलावा,
पैगम्बर के शुद्ध उत्तराधिकारियों का मार्ग सबसे उत्तम और सुरक्षित है।
सत्ता की पारलौकिक एकता केवल कुछ संतों द्वारा किया गया एक दावा है, जबकि
आध्यात्मिक परमानंद की स्थिति में। इसके अनुयायी, हालांकि उनका मार्ग अपूर्ण है,
जब वे इस पद को प्राप्त कर लेते हैं और इसे सर्वोच्च मानते हैं तो वे आध्यात्मिक आनंद में चले जाते हैं। यदि वे
आध्यात्मिक अवस्था में प्रवेश करते हैं जिसमें वे कुछ छिपी हुई बातों को समझ सकते हैं
सत्य, हर घटना का श्रेय केवल ईश्वर को दें, किसी भी कारण को जिम्मेदार न ठहराएं

[35] इस्लाम के चार कानूनी स्कूलों के संस्थापक अबू हनीफा (सी.६९९-७६७), मलिक इब्न अनस हैं (712-95), अल-शफीई (767-820), और इब्न हंबल (780-855)। वे इस्लामी विश्वास के सभी मूल सिद्धांतों पर सहमत हैं, और केवल व्यवहार से संबंधित मामूली मामलों में मतभेद रखते हैं। (संपादक)

चाहे उनके जीवन में या ब्रह्माण्ड के संचालन में, और परमेश्वर के प्रत्यक्ष प्रभाव को समझें
मामलों में हेरफेर करके, वे कुछ हद तक पूर्णता प्राप्त कर सकते हैं
सत्ता की पारलौकिक एकता को स्वीकार करना।

हालाँकि, यह स्वीकृति उनकी आध्यात्मिक स्थिति और
वैज्ञानिक ज्ञान पर नहीं। वे भगवान के नाम पर ब्रह्मांड के अस्तित्व को नकारने की हद तक जा सकते हैं, क्योंकि वे सब कुछ भगवान में नष्ट हुआ हुआ देखते हैं।
हालाँकि, जो लोग कार्य-कारण में दृढ़ता से विश्वास करते हैं, और इसलिए ब्रह्मांड को देखते हैं
इस कानून के अधीन होने और भौतिकवाद में डूबे होने के कारण, वे इसकी ओर प्रवृत्त हो सकते हैं
अद्वैतवाद या सर्वेश्वरवाद (ब्रह्मांड के नाम पर ईश्वर को नकारना)।
सबसे सुरक्षित और व्यापक तरीका वह है जो साथियों द्वारा स्थापित किया गया है और उसका पालन किया जाता है
उनके अनुयायियों द्वारा। उन्होंने सिखाया कि प्रत्येक चीज़ का एक निश्चित, उद्देश्य होता है
वास्तविकता और यह कि परमेश्वर जैसा कुछ भी नहीं है: उसके जैसा कुछ भी नहीं है (४२:११)।

ईश्वर अंतरिक्ष में विभाजित या सम्मिलित होने से परे है, क्योंकि वह सृष्टिकर्ता है
जिसने सब कुछ बनाया। अस्तित्व एक भ्रम नहीं है, जैसा कि भगवान ने कहा है।
सत्ता की पारलौकिक एकता, क्योंकि सब कुछ सृष्टिकर्ता का कार्य है।
अस्तित्व स्वयं ईश्वर नहीं है, बल्कि सभी ईश्वर से हैं। सभी प्राकृतिक घटनाएँ या अस्तित्व शाश्वत नहीं हो सकते, क्योंकि वे समय के साथ निर्मित होते हैं और
समय और स्थान में समाहित है। दो तुलनाएँ इसे स्पष्ट करेंगी।

पहली तुलना: एक न्यायप्रिय शासक की कल्पना कीजिए जिसकी भूमिका न्याय प्रदान करना है
उनकी सरकार के न्याय विभाग में उनकी भूमिका स्पष्ट रूप से दिखाई देती है।
खलीफा, धार्मिक मामलों के प्रशासन का उनका कार्य प्रकट होता है
धार्मिक मामलों और विज्ञान विभाग के सर्वोच्च कमांडर के रूप में
शाही सेनाओं में उनका प्रतिनिधित्व सैन्य मामलों के विभाग द्वारा किया जाता है।
अगर कोई यह दावा करे कि वह केवल एक न्यायप्रिय शासक है और इसलिए न्याय करने तक ही सीमित है, तो यह सरकार के अन्य विभागों के वास्तविक अस्तित्व को नकारना होगा। धार्मिक और सैन्य मामलों के विभाग

इसे “वास्तविक” के बजाय “आदर्श” या “नाममात्र” के रूप में देखा जाएगा, या कुछ अधिकारियों द्वारा नाममात्र रूप से प्रतिनिधित्व किया जाएगा।

इस कथन का यह भी अर्थ है कि राजा अपने शासन के साथ “न्यायप्रिय” है
न्याय विभाग तक सीमित है, और उसके अन्य नाम (खलीफा,
सर्वोच्च कमांडर) केवल नाममात्र, आदर्श या सैद्धांतिक रूप से। लेकिन प्रकृति
राजशाही के लिए वास्तविक नामों की आवश्यकता होती है, और इन्हें वास्तविक रूप में प्रदर्शित किया जाना चाहिए
विभागों। सादृश्य के माध्यम से, दिव्य साम्राज्य में ऐसी वास्तविक चीजें होनी चाहिए
पवित्र नाम सर्व दयालु, सर्व प्रदान करने वाले, सर्व प्रदान करने वाले,
सृष्टिकर्ता, सर्वदा सक्रिय, सर्वदानी, तथा परम दयालु।
इन नामों को वास्तविक दर्पणों की आवश्यकता होती है जिनमें वे प्रतिबिम्बित होते हैं।

इस प्रकार, सत्ता की एकता, जो इस मान्यता पर आधारित है कि केवल ईश्वर ही अस्तित्व में है, चीजों को भ्रम में बदल देती है।

हालाँकि, अगर अस्तित्व की एकता पर जोर देने वाले लोग दिव्य अस्तित्व पर ध्यान केंद्रित करते हैं, साथ ही उनके नाम, एक और अद्वितीय पर भी, लेकिन एक और अद्वितीय की अभिव्यक्तियों को अनदेखा करते हैं, उन्हें काल्पनिक या भ्रामक मानते हैं, तो यह हानिकारक नहीं हो सकता है। इन नामों की "भ्रामक" अभिव्यक्तियाँ ईश्वर के दर्पण में कुछ भी नहीं जोड़ेंगी या उस पर प्रतिबिंबित नहीं होंगी।

दिव्य अस्तित्व वास्तविक अस्तित्व की छाया है, जिससे यह दर्पण अधिक चमकीला हो जाता है। लेकिन अस्तित्व की एकता के अनुसार, सर्व-दयालु, सर्व-प्रदान करने वाले, सर्व-अभिभूत, सर्व-बाध्यकारी और सृष्टिकर्ता जैसे नामों की अभिव्यक्तियाँ भी भ्रामक हैं, जबकि वास्तव में उनमें पर्याप्त वास्तविकता है और उन्हें ब्रह्मांड में अपने वास्तविक कार्यों के माध्यम से खुद को प्रकट करना चाहिए। परिणामस्वरूप, उनकी अभिव्यक्तियाँ भी वास्तविक हैं।

पैगंबर के परिवार से निकले साथी और शुद्ध न्यायविद और इमाम इस बात से आश्वस्त थे कि चीजों की एक निश्चित, वस्तुगत वास्तविकता होती है। इसका मतलब यह है कि ईश्वर वास्तव में अपने नामों के माध्यम से खुद को प्रकट करता है और उसकी रचना के परिणामस्वरूप हर चीज का एक आकस्मिक (गैर-तत्वीय) अस्तित्व होता है। यह अस्तित्व, चाहे अनिवार्य रूप से विद्यमान प्राणी के अस्तित्व की तुलना में कितना भी कमजोर, अस्थिर और अस्थायी क्यों न हो, एक भ्रम नहीं है। सर्वशक्तिमान अपने नाम निर्माता को प्रकट करके अस्तित्व प्रदान करता है और अपनी रचना को अस्तित्व में लाता है।

दूसरी तुलना: चार दीवारों वाले एक कमरे की कल्पना करें जिसमें हर दीवार पर एक पूरी लंबाई का दर्पण लगा हो। कमरे का प्रतिबिंब प्रत्येक दर्पण में अलग-अलग दिखाई देता है और तदनुसार, दर्पण की गुणवत्ता और रंग ग्रहण करता है। दो लोग इस कमरे में प्रवेश करते हैं। एक दर्पण में देखता है और कहता है कि सब कुछ इसमें है। हालाँकि दूसरा समझाता है कि अन्य दर्पणों में अलग-अलग प्रतिबिंब होते हैं, पहला व्यक्ति इस बात पर जोर देता है कि केवल एक दर्पण और एक प्रतिबिंब होता है। इसके अलावा, उसके विचार में, अन्य प्रतिबिंब - यदि वे वास्तव में मौजूद हैं - दर्पण के एक कोने में दिखाई देने वाले महत्वहीन और गौण प्रतिबिंबों से अधिक कुछ नहीं हो सकते हैं जिसमें वह देख रहा है। वह आगे कहता है: "मैं इसे इसी तरह देखता हूँ, इसलिए यह वास्तविकता है।"

दूसरा जवाब देता है: "मैं मानता हूँ कि तुम जो देखते हो। लेकिन तुम वास्तविकता का केवल एक पहलू ही देखते हो, क्योंकि तुम्हारे जैसे दूसरे दर्पण भी हैं, और उनमें से कोई भी उतना छोटा और महत्वहीन नहीं है जितना तुम दावा करते हो।"

इसी तरह, प्रत्येक दिव्य नाम एक विशेष दर्पण की मांग करता है जिसमें वह प्रतिबिंबित हो। दयालु और सर्व-प्रदाता नाम, ईश्वर के लिए आवश्यक होने के कारण, दया और प्रावधान की आवश्यकता वाले प्राणियों के अस्तित्व की मांग करते हैं।

जिस प्रकार सर्व-दयालु ईश्वर वास्तविक प्राणियों के अस्तित्व की मांग करता है,
दया और प्रावधान, दयालु नाम के लिए स्वर्ग के अस्तित्व की आवश्यकता है। इसलिए यदि कोई नामों को अनिवार्य रूप से विद्यमान मानता है
अस्तित्व, एक और अद्वितीय, एकमात्र आवश्यक और वास्तव में विद्यमान
सभी नामों को नाममात्र या सैद्धांतिक रूप में धारण करना चाहिए, तथा अन्य सभी नामों को नाममात्र या सैद्धांतिक रूप में धारण करना चाहिए।
बहुत कम सम्मान में नाम.

यही कारण है कि साथियों और उनके अनुयायियों और
शुद्ध विद्वान, पैगम्बर के परिवार से आने वाले इमाम, और
अग्रणी न्यायविदों द्वारा चुना जाना सबसे सुरक्षित और सबसे उत्तम है। कुरान के इन सबसे प्रमुख छात्रों ने संतत्व का सर्वोच्च पद प्राप्त किया है।

> तेरी महिमा हो। हमें कोई ज्ञान नहीं सिवाय उसके जो तूने सिखाया है
> तू सर्वज्ञ, अत्यन्त तत्वदर्शी है। हे हमारे पालनहार! तू हम पर कोई आँच न आने दे।
> हमारे दिलों को भटकने से रोको, जब तुमने हमारा मार्गदर्शन किया है। हमें यह उपहार दो
> आपकी दया से, क्योंकि आप उपहार देने वाले हैं। मेरे भगवान, कृपा प्रदान करें
> बरकत हो उस पर जिसे तूने सारे आलमों के लिए रहमत बनाकर भेजा, और उस पर
> परिवार और साथी.

तीसरी महत्वपूर्ण बात: इसे तर्क और दर्शन से नहीं समझा जा सकता।

> वह प्रत्येक क्षण एक नये स्वरूप में रहता है। (55:29)

> जो चाहता है, निरन्तर और स्वेच्छापूर्वक करता है। (85:16)

प्रश्न: ब्रह्माण्ड की निरन्तरता का ईश्वरीय उद्देश्य क्या है?
सृष्टि की अद्भुत गतिविधि का, इसके निरंतर नवीनीकरण का कारण क्या है?

उत्तर: इस मामले को विस्तार से बताने में लगभग 1,000 पृष्ठ लगेंगे।
पर्याप्त रूप से, लेकिन मैं संक्षिप्त रहूंगा और स्पष्टीकरण को कुछ पृष्ठों तक सीमित रखूंगा।
यदि कोई व्यक्ति उत्साहपूर्वक कोई प्राकृतिक या सामाजिक कर्तव्य निभाता है, तो पर्यवेक्षक
दो कारणों का अनुमान लगाया जा सकता है: अंतिम कारण (कुछ करने से क्या प्राप्त किया जा सकता है)
इसलिए) और मकसद या आवश्यक कारण (किसी की इसे करने की इच्छा और बाद में इसे करने में आनंद)।
उदाहरण के लिए, भूख लगने पर खाना खाने से कुछ लोगों को संतुष्टि मिलती है
संतुष्टि [आवश्यक कारण], जबकि भोजन शरीर को पोषण देता है [परम कारण]।

इसी प्रकार, यह निरंतर, अद्भुत गतिविधि दो प्रकार की दिव्य शक्तियों के कारण होती है
नाम और नाम दो व्यापक उद्देश्यों या परिणामों के लिए किया जाता है। पहला उद्देश्य और कारण यह है कि भगवान के सुंदर नाम अनगिनत तरीकों और प्रकारों में खुद को प्रकट करते हैं। यह सृष्टि में बहुलता का कारण बनता है। इसके अलावा, दिव्य
नाम लगातार प्रकट होते रहते हैं और अपने कार्यों को प्रदर्शित करने का प्रयास करते हैं।

यह ब्रह्मांड की पुस्तक,[36] को उसके सभी "वाक्यों" के साथ, शब्दों और अक्षरों को लगातार नवीनीकृत किया जाना चाहिए। इस पुस्तक का प्रत्येक भाग, जो दिव्य नामों की अभिव्यक्ति है, पवित्रता का संकेत या संकेत है दिव्य सार ताकि चेतन जीव उसे जान सकें।

दूसरा कारण या उद्देश्य यह है कि प्रत्येक प्राणी सक्रिय है क्योंकि वह क्रियाकलापों के लिए तरसता है और उनमें आनंद लेता है। सभी में एक निश्चित आनंद है गतिविधि, बल्कि सभी गतिविधियाँ किसी न किसी तरह का आनंद हैं। इसी तरह भगवान, अनिवार्यतः विद्यमान सत्ता, अपनी आवश्यक स्वतंत्रता के अनुरूप सृष्टि और पूर्ण पूर्णता का प्रतीक, असीम पवित्र स्नेह और प्रेम है। ऐसा स्नेह और प्रेम एक असीम पवित्र उत्साह का कारण बनता है, जो एक असीम पवित्र आनंद को जन्म देता है जो असीम पवित्र आनंद का स्रोत है। अपने दिव्य "सार" के लिए विशेष इस आनंद के लिए, भगवान के पास असीम करुणा है। बदले में, यह करुणा उसके प्राणियों को उनके सापेक्ष सुख प्राप्त करने का कारण बनती है उन्हें अपनी पूरी क्षमता का एहसास करने में सक्षम बनाकर पूर्णता। पूर्णता और इसे प्राप्त करने में उन्हें जो आनंद मिलता है, उससे भगवान इतने प्रसन्न होते हैं कि उनकी असीम पवित्र खुशी के लिए सृष्टि के चक्र की आवश्यकता होती है।

मैं भौतिकवादी दर्शन और धर्मनिरपेक्ष प्राकृतिक विज्ञान के अनुयायियों पर आश्चर्यचकित हूं। इस नाजुक दिव्य ज्ञान से अनजान, वे इस तरह के आरोप लगाते हैं गतिविधि, जो पूर्ण ज्ञान, बुद्धि और अंतर्दृष्टि को प्रदर्शित करती है, अचेतन प्रकृति, अंधे संयोग और कारणता को दर्शाती है। और इसलिए वे इसमें आते हैं गुमराही के अँधेरे गड्ढे.

> कह दो, "ऐ अल्लाह!" और उन्हें छोड़ दो कि वे गोते लगाने का खेल खेलें।
>
> हे हमारे पालनहार, हमारे हृदयों को विचलित न कर, इसके बाद कि तू हमें मार्ग दिखा दे।
> हमें अपनी दया का उपहार दो, क्योंकि तुम दान देने वाले हो।
> हे ईश्वर, आपकी रचना के रहस्य को सुलझाने वाले को तथा उसके भक्तों को, ब्रह्माण्ड के कणों के बराबर
> शांति और आशीर्वाद प्रदान कीजिए।
> परिवार और साथी, जब तक पृथ्वी और आकाश विद्यमान हैं।

वह शाश्वत है।

सईद नूरसी

---

[36] फुटनोट 5 देखें. (सं.)

उन्नीसवाँ पत्र

उन्नीसवाँ पत्र

पैगम्बर मुहम्मद के चमत्कार

(नोट: इस ग्रंथ में वर्णित सभी परंपराएं स्मृति से हैं,
मेरे पास संदर्भ के लिए कोई पुस्तक नहीं है। यदि शब्दों में कोई गलती है, तो कृपया उसे सुधार लें या उसे पैराफ्रेज के रूप में लें।
परंपरा विद्वानों के बीच प्रचलित राय के अनुसार, इस तरह की व्याख्या स्वीकार्य है।)

T उनका ग्रंथ मुहम्मद के चमत्कारी दूत जहाज को 300 से अधिक चमत्कारों के माध्यम से चित्रित करता है, जो उन्होंने किए थे, और यह एक महान ग्रंथ है।
निम्नलिखित कारणों से आश्चर्यचकित होइए:

प्रथम: यद्यपि यह ग्रंथ 100 से अधिक पृष्ठों में विस्तृत है
और यह परम्पराओं और आख्यानों पर आधारित है, मैंने इसे ग्रामीण इलाकों में रहते हुए, प्रतिदिन 2 या 3 घंटे काम करते हुए लिखा था। मैंने इसे 2 या 3 दिनों में पूरा किया, काम करते हुए
पूरी तरह से स्मृति से.

दूसरा: अपनी लम्बाई के बावजूद, यह ग्रंथ लेखकों और लेखकों को बोर नहीं करता।
पाठकों की नज़र में यह सुखद है। वास्तव में, इसने इतना उत्साह जगाया है,
यहाँ तक कि कुछ आलसी लेखकों में भी, कि इन कठिन और संकटपूर्ण समयों में जितने भी
इस क्षेत्र में एक वर्ष के भीतर 70 प्रतियां हस्तलिखित की गई हैं।[37]
जो लोग इस ग्रंथ की विशिष्टता से परिचित हैं, वे निष्कर्ष निकालते हैं कि यह अवश्य ही एक चमत्कार होगा।
उनके संदेशवाहक होने के चमत्कार से आ रही है।

[37] नूर (प्रकाश) ग्रंथों की 1950 तक गुप्त रूप से हाथ से प्रतिलिपि बनाई जाती थी, क्योंकि सरकार उस समय का इस्लाम विरोधी रवैया था और मुसलमानों पर अत्याचार करता था। (ट्र.)

नौ लेखकों द्वारा हस्तलिखित प्रतियाँ, जिनमें एक अनुभवहीन भी शामिल है और तवाफ़ुक़ से बेखबर, [38] पैगम्बर को संदर्भित करने वाले शब्द पाए गए पूरे ग्रंथ में अनजाने में एक दूसरे के नीचे व्यवस्थित किया गया है।

पांचवें भाग में कुरान का जिक्र करने वाले शब्दों के लिए भी यही बात कही गई है। निष्पक्ष सोच वाले लोग इस तवाफ़ुक़ को महज़ संयोग नहीं बल्कि एक रहस्यमय घटना के रूप में देखेंगे।

उनके चमत्कारी संदेशवाहकत्व से प्राप्त संकेत और आश्चर्य। आवश्यक बातें इस ग्रंथ की शुरुआत में बताई गई बातें बहुत महत्वपूर्ण हैं।

परंपरावादियों के अनुसार, इसमें वर्णित सभी परंपराएं प्रामाणिक हैं, और उनके संदेशवाहकत्व से संबंधित सबसे स्थापित घटनाओं की रिपोर्ट करें।

इस ग्रंथ की उपयोगिता गिनाने के लिए, उसी लंबाई का एक और ग्रंथ होगा इसलिए हम उन लोगों को आमंत्रित करते हैं जो इसकी उपयोगिता जानना चाहते हैं। इसे पढ़ें।

सईद नूरसी

[सैद नूरसी कभी-कभी अपने लेखन की ओर ध्यान आकर्षित करते हैं। यह नहीं है आत्म-प्रशंसा से किया गया। बल्कि, एक मुस्लिम मार्गदर्शक और प्रेरित विद्वान के रूप में इस्लामी विश्वास, पूजा और के स्तंभों को समझाने के लिए समर्पित नैतिकता के साथ-साथ उन्हें लोगों के मन और दिल में स्थापित करना, और जो कुछ वह लिखता है उसकी सत्यता के प्रति पूर्णतः आश्वस्त होकर, वह मार्गदर्शन द्वारा अपेक्षित शैली का अनुसरण करता है। हमें इसे ध्यान में रखना चाहिए, क्योंकि साथ ही जिस अवधि के दौरान उन्होंने लिखा था - एक बहुत ही कठिन समय जिसके दौरान इस्लाम का गंभीर उत्पीड़न हुआ था। (ट्र.)]

उनके चमत्कार

उसके नाम में, उसकी महिमा हो।

ऐसी कोई भी चीज़ नहीं है जो उसकी स्तुति से उसकी महिमा न करती हो।

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

उसने अपने रसूल को मार्गदर्शन और धर्म के साथ भेजा है।
सत्य को हर धर्म से ऊपर उठा सके। ईश्वर ही सत्य के लिए पर्याप्त है।
गवाह: मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं। (48:28-29)

---

[38] तवाफ़ुक़: ईश्वर द्वारा चीज़ों और घटनाओं को इस प्रकार व्यवस्थित करना कि उसके बन्दों को अच्छा परिणाम प्राप्त हो, जैसे कि किसी पृष्ठ पर एक के नीचे एक प्रमुख शब्दों की अनजाने में व्यवस्था या एक ही स्थान पर अलग-अलग पृष्ठों पर। (ट्र.)

चूँकि मुहम्मद की पैगम्बरी उन्नीसवीं और इकतीसवीं आयत में सिद्ध हो चुकी है, इसलिए यहाँ हम उस महान सत्य की कुछ झलकियाँ 19 संकेतों के रूप में प्रस्तुत कर रहे हैं।

पहला संकेत: ब्रह्मांड का स्वामी और मालिक ज्ञान के साथ सब कुछ करता है, हर मामले को बुद्धि से नियंत्रित करता है, सब कुछ पूरी तरह से निर्देशित करता है, सब कुछ पूरी तरह से नियंत्रित करता है, और सब कुछ इस तरह से व्यवस्थित करता है कि वह उनके लिए जो उद्देश्य और उपयोग चाहता है, उसे प्रदर्शित करे। जैसा कि बनाने वाला जानता है, जानने वाला बोलेगा। चूँकि वह बोलेगा, इसलिए वह उन लोगों से बोलेगा जिनके पास चेतना, विचार और वाणी है। चूँकि वह ऐसे प्राणियों से बात करेगा, इसलिए वह मानवता से बात करेगा, जिसका स्वभाव और जागरूकता सभी सचेत प्राणियों में सबसे व्यापक है। चूँकि वह मानवता से बात करेगा, इसलिए वह उन लोगों से बात करेगा जो सबसे परिपूर्ण और संबोधित करने के योग्य हैं।

चूँकि वह सबसे उत्तम और सम्बोधन के योग्य, सर्वोच्च नैतिकता वाले और मानवता का मार्गदर्शन करने वाले व्यक्ति से बात करेंगे, इसलिए वह मुहम्मद से बात करेंगे, जिनके पास सर्वोच्च स्वभाव और नैतिकता है और जिनका अनुसरण मानवता का पाँचवाँ हिस्सा करता है (सबसे ईमानदारी से)। दुनिया का आधा हिस्सा उनके आध्यात्मिक शासन के अधीन है, और उनके प्रकाश की चमक ने 13 शताब्दियों से अधिक समय से मानवता को प्रकाशित किया है। विश्वासी, मानवता का प्रकाशित वर्ग, दिन में पाँच बार अपनी निष्ठा की शपथ को नवीनीकृत करते हैं, उनकी खुशी के लिए प्रार्थना करते हैं, उन पर ईश्वर की कृपा की कामना करते हैं, और उनकी प्रशंसा करते हैं और उनसे प्यार करते हैं। इस प्रकार, वह मुहम्मद से बात करेंगे और उन्हें अपना संदेशवाहक और मानवता का मार्गदर्शक बनाएंगे। वास्तव में, उन्होंने ऐसा किया है।

दूसरा संकेत: पैगम्बर ने अपनी पैगम्बरियत का ऐलान किया और क़ुरान तथा लगभग 1,000 चमत्कारों को पेश करके इसे साबित किया। उनका होना भी उतना ही निश्चित है जितना कि उनका पैगम्बर होना। दूसरा सबूत यह है कि क़ुरान में कहा गया है कि सबसे जिद्दी अविश्वासियों ने उन पर जादू-टोना करने का आरोप लगाया। चमत्कारों को नकारने में असमर्थ होने के कारण, उन्होंने खुद को संतुष्ट करने या अपने अनुयायियों को गुमराह करने के लिए उन्हें जादू-टोना कहा।

मुहम्मद के चमत्कार इतने निश्चित हैं कि परंपरावादियों ने भी इसकी पुष्टि की है।
और उन्हें सर्वसम्मति से रिपोर्ट किया। चमत्कार ब्रह्मांड के निर्माता द्वारा उसकी नबी होने की पुष्टि है और इसका प्रभाव यह है: "आपने सच कहा है।" उदाहरण के लिए, यदि कोई शासक की उपस्थिति में दावा करता है कि शासक ने उसे किसी विशेष पद पर नियुक्त किया है, तो शासक का "हाँ" उस व्यक्ति के दावे को साबित करने के लिए पर्याप्त है। इसके अलावा, यदि शासक उस व्यक्ति के अनुरोध पर अपने सामान्य व्यवहार और दृष्टिकोण को बदलता है, तो यह उसके दावे को और मजबूत बनाता है।

पैगंबर ने ब्रह्मांड के निर्माता का दूत होने का दावा किया, और
बदले में, भगवान ने उसकी प्रार्थना और अनुरोध पर अपना अखंड क्रम बदल दिया ताकि
इसके परिणामस्वरूप होने वाले चमत्कार उसके दावे को साबित कर देंगे। उसके सैकड़ों चमत्कारों में से कुछ हैं
उसकी उंगलियों से बहता पानी, जो चाँद को चीरता हुआ उसके इशारे से दिखाई देता है
उसकी उंगली, एक पेड़ उसके पास आकर उसकी पुष्टि करता है और उसकी गवाही देता है,
और 200 या 300 लोगों को केवल 2 या 3 लोगों के लिए पर्याप्त भोजन खिलाना।

हालाँकि, उनकी सच्चाई और उनकी पैगम्बरी के सबूत
उनके चमत्कारों तक ही प्रमाण सीमित नहीं हैं। वास्तव में, उनके सभी कर्म और कृत्य,
शब्द और व्यवहार, नैतिक आचरण और शिष्टाचार, साथ ही चरित्र और
उपस्थिति, उसकी सच्चाई और गंभीरता साबित करें। दरअसल, ऐसे लोग
उस समय के प्रसिद्ध यहूदी विद्वान अब्दुल्ला इब्न अल-सलाम का मानना था
पहली नज़र में ही उसे देखकर कहा: “इस चेहरे पर कोई झूठ नहीं छिप सकता, न ही कोई छल हो सकता है
इसमें पाया गया।”

प्रखर विद्वानों का कहना है कि उनकी पैगम्बरी और उनके पैगंबर होने के प्रमाण
चमत्कारों की संख्या लगभग 1,000 है; लेकिन वास्तव में यह केवल शुरुआत है। अनगिनत लोगों ने अपने-अपने
तरीके से इसकी पुष्टि की है, और
कुरान स्वयं अपने स्वयं के प्रमाणों के अतिरिक्त ऐसे हजारों प्रमाण प्रस्तुत करता है
चमत्कार के 40 पहलू। चूँकि पैगम्बर होना एक सच्चाई है, और इससे भी अधिक
100,000 लोगों ने इसका दावा किया है और चमत्कार किए हैं, मुहम्मद की पैगंबरी किसी भी अन्य पैगंबर की
पैगंबरी की तुलना में अधिक सुरक्षित रूप से स्थापित है।
अन्य पैगम्बरों की पैगम्बरी से संबंधित सभी साक्ष्य, गुण और विशेषताएं उनके व्यक्तित्व में अधिक परिपूर्ण और
व्यापक रूप में पाई जाती हैं।
पैगम्बर मुहम्मद के बारे में यह कहा जा सकता है कि वे पैगम्बर के रूप में चुने जाने के लिए कहीं अधिक योग्य हैं।

तीसरा संकेत: पैगम्बर के चमत्कार बहुत विविध हैं।
संदेशवाहक सार्वभौमिक है, वह चमत्कारों से जुड़ा हुआ है
सृष्टि की लगभग सभी प्रजातियाँ। जब एक गौरवशाली शासक का सहायक प्रवेश करता है
विविध उपहारों से युक्त एक शहर में, जनसंख्या के प्रत्येक वर्ग का एक प्रतिनिधि उसका प्रसन्नतापूर्वक और अपनी
भाषा में स्वागत करता है।

इसी तरह, जब शाश्वत संप्रभु के सर्वोच्च दूत ने सम्मानित किया
मानवता के लिए एक दूत के रूप में ब्रह्मांड में आये और सृष्टिकर्ता का प्रकाश लेकर आये
ब्रह्मांड की सच्चाइयों से संबंधित सत्य और आध्यात्मिक उपहारों के बारे में बताते हुए, उन्हें प्रत्येक प्रजाति द्वारा
पैगंबर के रूप में स्वागत किया गया - खनिज तत्वों से लेकर पौधों तक,
पशु-पक्षी और मनुष्य, तथा चाँद-सूरज से लेकर सितारे तक - प्रत्येक में
अपनी भाषा बोलना और उसके चमत्कारों में से एक को धारण करना। इसके लिए बहुत कुछ करना होगा
उनके सभी चमत्कारों का उल्लेख करने के लिए कई खंड हैं। शुद्ध-आत्मा वाले सावधानीपूर्वक विद्वानों ने

उनकी पैगम्बरी के प्रमाणों के संबंध में कई खण्ड संकलित किए गए हैं, अतः यहां हम उन चमत्कारों की मुख्य श्रेणियों को सर्वसम्मति से संक्षेप में ही इंगित करें प्रामाणिक रूप में स्वीकार किया गया।

ये प्रमाण दो मुख्य श्रेणियों में आते हैं। पहले (इरहासत) में शामिल हैं उनके जन्म से पहले, जन्म के समय और अपनी मृत्यु की घोषणा करने से पहले चमत्कारी घटनाएँ घटीं। पैगम्बरत्व। दूसरी श्रेणी अन्य सभी प्रमाणों से संबंधित है और इसके दो प्रकार हैं उप-श्रेणियाँ: उनकी मृत्यु के बाद की अद्भुत घटनाएँ और प्रकट हुई घटनाएँ उनकी पैगम्बरी के दौरान। इस बाद वाले समूह को उनके स्वयं के व्यक्तित्व, नैतिक आचरण और पूर्ण चरित्र में प्रकट प्रमाणों में विभाजित किया गया है, और वे जो बाहरी दुनिया से संबंधित चमत्कार। इस दूसरे उपसमूह में शामिल हैं आध्यात्मिकता और कुरान से संबंधित चमत्कार, और भौतिक वास्तविकता और सृष्टि से संबंधित चमत्कार। बाद की श्रेणी को उनके मिशन के दौरान चमत्कारी घटनाओं में विभाजित किया गया है, जिन्होंने या तो अविश्वासियों के विद्रोह को तोड़ा या विश्वासियों के विश्वास को मजबूत किया। इस शाखा में 20 अलग-अलग प्रकार हैं,

प्रत्येक के कई उदाहरण हैं और कम से कम अर्थ में इसकी पुष्टि की गई है सर्वसम्मति से (जैसे, चंद्रमा को विभाजित करना, उसकी उंगलियों से पानी बहना, थोड़े भोजन से कई लोगों को संतुष्ट करना, और जानवरों, पेड़ों द्वारा संबोधित किया जाना, और चट्टानें)। दूसरी शाखा में भविष्य में घटित कुछ घटनाएँ शामिल हैं जैसा उसने भविष्यवाणी की थी।[39]

चौथा संकेत: भविष्य में होने वाली घटनाएँ, जो उसने सर्वज्ञ परमेश्वर के द्वारा पहले ही बता दी थीं। अदृश्य के निर्देशों की गिनती नहीं की जा सकती। चूँकि उसकी सच्ची रिपोर्ट पूर्ववर्ती युगों, पैगम्बरों और उनके राष्ट्रों के बारे में जानकारी अधिकतर इसी में पाई जाती है। कुरान में, यहाँ हम उनकी कुछ सही भविष्यवाणियों के बारे में बता रहे हैं उनके साथी, परिवार और समुदाय। विषय की पूरी समझ सुनिश्चित करने के लिए, हम प्रस्तावना के रूप में छह आवश्यक बातें समझाते हैं।

पहली बात: पैगम्बर का हर कार्य और हर स्थिति उनकी महानता की गवाही देती है। नबी होना और वफ़ादारी। लेकिन उनमें से सभी का चमत्कारी होना ज़रूरी नहीं है, क्योंकि उन्हें सर्वशक्तिमान ने मानव रूप में मानव का मार्गदर्शन और नेतृत्व करने के लिए भेजा था प्राणियों को उनके सामूहिक मामलों और व्यक्तिगत कर्मों दोनों में खुशी मिलती है इस दुनिया और अगले, और भगवान की कला और चमत्कार का खुलासा करने के लिए उसकी शक्ति के कार्य, जिनमें से प्रत्येक एक चमत्कार है, हालांकि यह हमें ऐसा प्रतीत होता है साधारण और परिचित। यदि वह अपने सभी कार्यों में असाधारण होता, तो वह वह अपने कार्यों, अवस्थाओं और व्यवहारों के माध्यम से मनुष्यों का मार्गदर्शन नहीं करता और उन्हें निर्देश नहीं देता।

---

[39] दुर्भाग्यवश, मैं वैसा नहीं लिख सका जैसा मैं लिखना चाहता था, और इसलिए मैंने वही लिखा जो मेरा दिल चाहता था। इस वर्गीकरण के क्रम का पालन नहीं किया जा सका।

अपनी बात को सिद्ध करने के लिए उसे कुछ असाधारण घटनाओं की जानकारी दी गई उन्होंने हठी अविश्वासियों को पैगम्बरी का उपदेश दिया, तथा आवश्यकता पड़ने पर चमत्कार भी किए। लेकिन उनके चमत्कार कभी ऐसे नहीं थे कि लोग उनके खिलाफ विश्वास करने के लिए मजबूर हो जाएं। उनकी इच्छा, क्योंकि ऐसा करने से परीक्षण और परीक्षण के इस क्षेत्र में मानव की स्वतंत्र इच्छा समाप्त हो जाएगी। अगर ऐसा नहीं होता, तो कोई विकल्प नहीं होता, जिसका अर्थ है कि अबू जहल का मानना था कि अबू बकर की तरह कोई भी ऐसा नहीं हो सकता था इस जीवन और अगले जीवन में, अपने कर्मों के लिए जिम्मेदार ठहराए जाते हैं।

यह आश्चर्य की बात है कि इतने सारे लोगों ने उस पर विश्वास किया, कोई चमत्कार, कुछ शब्द या उसके चेहरे की झलक जैसा कोई एक संकेत, कुछ आज लोग ऐसे भटक जाते हैं मानो उनकी पैगम्बरी के हज़ारों सबूत ही न हों यद्यपि वे प्रामाणिक संचरण माध्यमों से हम तक पहुंचे हैं तथा असंख्य समझदार लोगों को इस्लाम स्वीकार करने के लिए प्रेरित किया है।

दूसरा आवश्यक: संदेशवाहक एक मानव प्राणी है और इसलिए एक दूत के रूप में कार्य करता है। वह ईश्वर का संदेशवाहक भी है और इस प्रकार एक दुभाषिया और सर्वशक्तिमान का दूत.

उनका संदेश दो प्रकार के ईश्वरीय रहस्योद्घाटन पर आधारित है: स्पष्ट और निहित। स्पष्ट रहस्योद्घाटन के मामले में, दूत केवल व्याख्या और घोषणा करता है - उसकी विषय-वस्तु में उसका कोई हिस्सा नहीं है। वे पवित्र परंपराएँ (हदीस क़ुदसी) जिनके अर्थ और विषय-वस्तु केवल ईश्वर के लिए लेकिन जिसका शब्द पैगंबर का है, यहाँ शामिल हैं। निहित रहस्योद्घाटन के मामले में, जिसका सार और मूल ईश्वरीय रहस्योद्घाटन और प्रेरणा पर आधारित है, पैगंबर को इसकी अनुमति है उन्हें समझाएँ और उनका वर्णन करें। जब वह ऐसा करता है, तो वह प्रत्यक्ष पर निर्भर करता है रहस्योद्घाटन और प्रेरणा या अपनी खुद की अंतर्दृष्टि पर। अपनी खुद की व्याख्या देते समय, वह या तो उस अनुभूति शक्ति पर निर्भर करता है जो उसे ईश्वर के कारण दी गई है वह अपने पैगम्बरीय मिशन को व्यक्त करता है या अपने समय की सामान्य प्रथाओं, रीति-रिवाजों और समझ के प्रकारों के अनुरूप व्यक्ति के रूप में बोलता है।

इस प्रकार प्रत्येक पैगम्बर परम्परा के सभी विवरण आवश्यक रूप से उसी से प्राप्त नहीं होते न ही शुद्ध रहस्योद्घाटन से, न ही उसके संदेशवाहक होने के उदात्त संकेत हैं अपने मानवीय विचारों और व्यवहारों में खोज की। चूँकि कुछ सत्य ऐसे होते हैं संक्षिप्त और सारगर्भित रूप में उसे पता चला, और वह उनका वर्णन करता है उसकी अंतर्दृष्टि और सामान्य समझ के अनुसार, उसके द्वारा प्रयुक्त रूपकों, रूपकों या संकेतों को स्पष्टीकरण या व्याख्या की आवश्यकता हो सकती है।

याद रखें कि मानव मन कुछ सत्यों को केवल सादृश्य के माध्यम से ही समझ सकता है। उदाहरण के लिए, एक बार पैगम्बर की उपस्थिति में एक तेज़ आवाज़ सुनाई दी।

उन्होंने कहा: "यह उस चट्टान की आवाज़ है जो 70 मिनट से नीचे की ओर लुढ़क रही है"

सालों से यह नरक की सबसे निचली गहराई तक पहुंच चुका है।'' एक घंटे बाद खबर आई हाल ही में 70 वर्ष की आयु में पहुंचे एक कुख्यात पाखंडी की मृत्यु हो गई थी और नरक में चले गए। इस रिपोर्ट में पैगंबर की व्याख्या को दर्शाया गया है वाक्पटु दृष्टान्त.

तीसरा आवश्यक: अनेक विश्वसनीय अधिकारियों द्वारा बताई गई परंपरा निर्विवाद है। इस प्रकार के संबंध (तवातुर) के दो प्रकार हैं: स्पष्ट तवातुर (विश्वसनीय अधिकारियों द्वारा प्रसारित अनेक श्रृंखलाओं वाली एक परंपरा) और तवातुर अर्थ के संबंध में। इस दूसरे के भी दो प्रकार हैं: वे जो मौन सहमति से संबंधित हैं और वे जो अलग-अलग तरीकों से सर्वसम्मति से संबंधित हैं लोगों के बीच अलग-अलग शब्दों में। पहले मामले में, एक परंपरा जो कि बिना किसी विवाद को जन्म दिए दूसरों की उपस्थिति या मौन रहना निहित स्वीकृति का आनंद लेता है। यदि चुप रहने वाले लोग रुचि रखते हैं वे कथन में त्रुटियों और झूठ के प्रति बहुत संवेदनशील माने जाते हैं, उनकी चुप्पी इसका तात्पर्य कहीं अधिक निश्चितता के साथ स्वीकृति से है। दूसरी तरह की तवातुर अर्थ के संबंध में, तब होता है जब कोई घटना अलग-अलग लोगों द्वारा सर्वसम्मति से बताई जाती है, लेकिन अलग-अलग शब्दों का उपयोग करके, क्योंकि इससे इसकी वास्तविक घटना का भी पता चलता है। इसके अलावा, कभी-कभी केवल एक ही संचरण श्रृंखला वाली रिपोर्ट कुछ स्थितियों में या कुछ के माध्यम से तवातुर की डिग्री के बराबर है बाहरी संकेत.

पैगम्बर के अधिकांश चमत्कार और उनकी पैगम्बरी के प्रमाण इस दायरे में आते हैं। किसी भी श्रेणी में। हालाँकि कुछ केवल एक ही श्रृंखला के माध्यम से ट्रांसमीटर से संबंधित हैं, उन्हें निश्चित रूप से माना जा सकता है जैसे कि वे तवातुर के माध्यम से संबंधित हैं, क्योंकि उन्हें पुष्ट प्राधिकारियों द्वारा स्वीकार कर लिया गया है। ऐसे प्राधिकारियों में वे लोग थे जिन्होंने 100,000 से अधिक परंपराओं को याद किया था, जो इतने ईश्वर-सचेत थे कि 50 वर्षों तक उन्होंने सुबह की प्रार्थना भगवान के साथ की थी। रात्रि प्रार्थना का वुज़ू (स्नान) (लंबी रात तक जागकर बिताना), और जिन्होंने परम्परा की छह प्रामाणिक पुस्तकों का संकलन किया।40

उन अधिकारियों द्वारा काफी जांच के बाद स्वीकार की गई किसी भी परंपरा का तवातुर की निश्चितता , भले ही इसमें ट्रांसमीटरों की केवल एक श्रृंखला हो, जैसे लोग पैगम्बर की परम्पराओं और उच्च शैली से इतने परिचित थे कि वे 100 रिपोर्टों में से एक झूठी परंपरा को तुरंत पहचान सकते थे और उसे खारिज कर सकते थे। जैसे एक कुशल जौहरी शुद्ध हीरे को पहचान लेता है, वैसे ही वे भ्रमित नहीं हो सकते थे पैगंबर के शब्दों के साथ अन्य शब्द। हालाँकि, इब्न अल-जौज़िया जैसे सावधानीपूर्वक अधिकारी अपनी आलोचना में इतने अधिक थे कि वे मानते थे-

---

40 ये बुखारी (मृत्यु ८७०), मुस्लिम (मृत्यु ८७५), अबू धाबी (मृत्यु ८८५), और अब्दुल कलाम (मृत्यु ८८५) द्वारा संकलित परंपराओं की पुस्तकें हैं। दाऊद (मृत्यु 888), तिर्मिधि (मृत्यु 892), इब्न माजा (मृत्यु 886), और अल-नसाई (मृत्यु 915)। (एड.)

कई प्रामाणिक परंपराओं को झूठा साबित कर दिया। इसका मतलब यह नहीं है कि हर झूठे शब्द का अर्थ ग़लत है; बल्कि इसका मतलब यह है कि वह शब्द पैगम्बर से संबंधित नहीं है।

प्रश्न: प्रत्येक परंपरा को प्रेषकों की एक श्रृंखला के माध्यम से संबंधित करने का क्या लाभ है, ताकि वे एक प्रसिद्ध घटना के लिए भी कह सकें: "यह अमुक से और अमुक से संबंधित है, आदि"?

उत्तर: इसके कई लाभ हैं, जैसे कि सत्यनिष्ठ और विश्वसनीय कथावाचकों, सावधानीपूर्वक परंपरावादियों, साथ ही साथ उल्लेखित विवेकशील अधिकारियों की एकमतता को दिखाना। साथ ही, यह दर्शाता है कि श्रृंखला में प्रत्येक विद्वान इसकी प्रामाणिकता पर अपनी मुहर लगाता है।

प्रश्न: चमत्कारों को शरिया के मूल नियमों के समान महत्व क्यों नहीं दिया गया?

उत्तर: शरिया के नियम ज़्यादातर लोगों द्वारा अपने जीवन को दिशा देने के लिए इस्तेमाल किए जाते हैं और ये सभी पर लागू होते हैं। दूसरी ओर, चमत्कारों के बारे में सभी को जानने की ज़रूरत नहीं होती है और उन्हें सिर्फ़ एक बार सुनने की ज़रूरत होती है। उदाहरण के लिए, कुछ धार्मिक दायित्वों (जैसे कि अंतिम संस्कार की प्रार्थना) को सिर्फ़ कुछ लोगों द्वारा ही मनाया जाना चाहिए, पूरे समुदाय द्वारा नहीं। उसी तरह, चमत्कारों के बारे में भी सिर्फ़ कुछ लोगों को ही जानने की ज़रूरत होती है। यही कारण है कि चमत्कार, चाहे शरिया नियम से इसकी स्थापना कितनी भी मज़बूत क्यों न हो, सिर्फ़ एक या दो कथावाचकों द्वारा प्रसारित किया जाता है, जबकि शरिया नियम दस या बीस लोगों द्वारा प्रसारित किया जाता है।

चौथा आवश्यक: संदेशवाहक ने कुछ ऐसी भविष्य की घटनाओं की भविष्यवाणी की जो बार-बार होती हैं, न कि मानव इतिहास में विशेष महत्व रखने वाली अलग-अलग घटनाओं की। उनके भी कई पहलू हैं, जिनमें से प्रत्येक को एक अलग परंपरा के माध्यम से समझाया गया है। एक रिपोर्टर इन पहलुओं को एक ही कथन की तरह जोड़ता है, जिससे परंपरा वास्तविकता से अलग दिखाई देती है।

उदाहरण के लिए, महदी के बारे में कई कहानियों में अलग-अलग विवरण और वर्णन हैं। लेकिन मामले की सच्चाई यह है कि ईश्वर के दूत ने रहस्योद्घाटन पर भरोसा करते हुए एक महदी के बारे में बताया जो हर सदी में विश्वासियों के मनोबल को बनाए रखने, उन्हें सामाजिक उथल-पुथल पर निराशा में पड़ने से रोकने और पैगंबर के परिवार (सबसे शानदार वंश) के सदस्यों के प्रति उनकी हार्दिक भक्ति को सुरक्षित रखने के लिए प्रकट होगा। उन्होंने हर सदी में एक महदी की भविष्यवाणी की जो समय के अंत के लिए वादा किए गए महान महदी के समान था। उदाहरण के लिए, अब्बासिद खलीफा अल-महदी, जिन्हें पैगंबर के परिवार से संबंधित माना जाता है, में महान महदी की कई विशेषताएं थीं। इसलिए, महदी के बारे में कहानियों में

महान महदी के गुणों को उन महान खलीफाओं या संतों के साथ भ्रमित करने के कारण मतभेद हैं जो उनसे पहले आए थे।

पाँचवी ज़रूरी बात: चूँकि सिर्फ़ अल्लाह ही ग़ैब को जानता है, इसलिए पैग़म्बर साहब खुद उसे नहीं जानते थे। उन्होंने अपने साथियों को वही बताया जो अल्लाह ने ग़ैब के बारे में उनसे कहा था।

सर्वशक्तिमान सर्वशक्तिमान सर्वज्ञ और दयालु भी है। इसलिए उसकी बुद्धि और करुणा के लिए भविष्य की अधिकांश घटनाओं को छिपाना ज़रूरी है, क्योंकि लोग उनमें से कई को अप्रिय मानते हैं, इसलिए उनके बारे में पहले से जानना दुखद होगा। यही कारण है कि हम नहीं जानते कि हम कब मरेंगे और हम जो दुर्भाग्य अनुभव करेंगे, वे अदृश्य के पर्दे के पीछे रह जाते हैं।

ईश्वरीय बुद्धि और करुणा की यह भी मांग है कि पैगम्बर को यह न पता हो कि उनकी मृत्यु के बाद उनके परिवार और साथियों का क्या होगा, क्योंकि उनकी गहरी करुणा और कोमलता है।41 फिर भी सर्वशक्तिमान के पास कुछ घटनाओं के बारे में बताने का एक ईश्वरीय उद्देश्य था, हालाँकि उनके सभी दुखद पहलू नहीं थे। उन्होंने पैगम्बर को सुखद घटनाओं के बारे में बताया, या तो रूपरेखा में या विस्तार से, जिसे उन्होंने फिर अपने साथियों को सुनाया।

अंततः, उसकी ख़बरें हमारे युग में उन महान परंपरावादियों द्वारा सटीक रूप से प्रेषित की गईं, जो धर्मपरायणता, न्याय और सत्यनिष्ठा की पराकाष्ठा पर थे, और जो ऐसी विशिष्ट चेतावनियों से डर के मारे काँप उठते थे, जैसे: "जो कोई भी जानबूझकर मेरे बारे में झूठ बोलेगा, उसे आग में रहने के लिए तैयार रहना चाहिए"42 और लेकिन जो व्यक्ति ईश्वर के विरुद्ध झूठ बोलता है, उससे बड़ा अत्याचारी कौन है? (39:32)।

छठा आवश्यक: कई इतिहास की किताबें और जीवनियाँ पैगंबर के व्यवहार और विशेषताओं का वर्णन करती हैं। लेकिन अधिकांश उनके मानवीय स्वभाव पर चर्चा करते हैं, और इस प्रकार उनके आध्यात्मिक व्यक्तित्व और उनके अस्तित्व की पवित्र प्रकृति को अनदेखा करते हैं, जो दोनों ही बहुत उदात्त और शानदार हैं। क्योंकि, "कारण कर्ता के समान है" के नियम के अनुसार, सभी मुसलमानों की प्रार्थनाओं का पुरस्कार उनके पैगंबर होने के दिन से लेकर (समय के अंत तक) उनकी पूर्णता के खातों में जोड़ा जाता है। हर दिन उन्हें मुसलमानों द्वारा अनगिनत दुआएँ मिलती हैं और साथ ही भगवान की असीम दया भी मिलती है, जिसे वे समान रूप से प्राप्त करते हैं।

---

[41] उदाहरण के लिए, ईश्वर के रसूल ने एक बार अपनी पत्नियों से कहा: "काश मुझे पता होता कि तुममें से कौन उस कार्यक्रम में भाग लेगा," जिससे पता चलता है कि उन्हें नहीं पता था कि आयशा ऊँट की लड़ाई में भाग लेंगी। अगर उन्हें पता होता, तो उनके प्रति उनके प्यार और स्नेह को ठेस पहुँचती। हालाँकि, बाद में उन्हें किसी तरह इस बात की जानकारी मिली और उन्होंने अली से कहा: "शायद तुम्हारे और आयशा के बीच कोई मामला हो। उसके साथ नरमी से पेश आओ और उसे सुरक्षित उसके घर वापस भेज दो।"

[42] जलाल अल-दीन अल-सुयुति, जामी अल-सगीर; 70 साथियों से संबंधित।

इसके अलावा, चूँकि वह सृष्टि का परिणाम और सबसे उत्तम फल है, साथ ही ब्रह्मांड के निर्माता, उनके सच्चे स्वरूप के प्रिय और व्याख्याता और सच्ची परिपूर्णताएँ उसके दर्ज किए गए मानवीय विवरणों में समाहित नहीं हो सकतीं गुण। निश्चित रूप से महादूत गेब्रियल और द्वारा सेवा की गई एक कद बद्र की लड़ाई के दौरान माइकल को सहायक के रूप में नहीं देखा जा सकता है उदाहरण के लिए, एक घोड़े की कीमत पर मोल-तोल का विवरण।

गलती से बचने के लिए, हमें उनके सच्चे स्वभाव और उनके संदेशवाहक पद पर उनके शानदार आध्यात्मिक व्यक्तित्व पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए। अन्यथा हम जोखिम में पड़ सकते हैं उसके प्रति अनादर प्रदर्शित करना या उसके व्यक्तित्व के बारे में अनिश्चितताएं रखना।

निम्नलिखित सादृश्यों पर विचार करें: मान लीजिए कि रोपे गए खजूर के बीज अंकुरित होते हैं और ऊपर और बाहर की ओर बढ़ने वाला एक लंबा, फलदार वृक्ष बन जाता है; या कि एक सेते हुए मोर के अंडे से चूजा निकलता है, एक सुंदर मोर-मुर्गा बनता है, और दिव्य शक्ति की कलम से सुशोभित होकर, और भी बड़ा और सुंदर हो जाता है। खजूर-पत्थर और अंडे में गुण, गुण और ठीक-ठीक होते हैं

संतुलित तत्व हैं, लेकिन वे उतने प्रभावशाली और महत्वपूर्ण नहीं हैं जितने कि पेड़ और उनसे निकला मोर। यह वर्णन करते हुए, खजूर-गुठली और अंडे के गुणों के साथ-साथ पेड़ और मोर, प्रत्येक वस्तु के गुणों को इस तरह से पहचाना जाना चाहिए कि विवरण का अनुसरण करने वाला कोई भी व्यक्ति इसे उचित पा सके। यदि ऐसा नहीं किया जाता है (उदाहरण के लिए, यह दावा करना कि एक खजूर-गुठली [और पेड़ नहीं] हज़ारों खजूर पैदा करती है, या (कि अंडा पहले से ही पक्षियों का राजकुमार है), लोग विरोधाभास और इनकार की ओर ले जाएंगे।

ईश्वर के रसूल के मानवीय स्वभाव की तुलना खजूर या अंडे से की जा सकती है, लेकिन उनका वास्तविक स्वरूप, पैगम्बर के मिशन से प्रकाशित है। जैसे कि तूबा वृक्ष या स्वर्ग का शाही पक्षी। इसके अलावा, उसका सच्चा स्वरूप यह और भी अधिक परिपूर्ण होता जा रहा है। इसे देखते हुए, जब कोई सोचता है वह महान व्यक्ति बाज़ार में एक बेडौइन के साथ सौदेबाजी कर रहा है, उसे चाहिए उसकी शानदार सारभूत प्रकृति पर नजर डालें, जो स्वर्गारोहण के दौरान राफ़्राफ पर सवार हुआ, गेब्रियल को पीछे छोड़ दिया, और दिव्य उपस्थिति तक पहुंच गया। अन्यथा, अपर्याप्त सम्मान दिखाने या दूसरों को समझाने में असफल होने का जोखिम रहता है। किसी की पृथ्वी-बद्ध आत्मा का उसके वास्तविक स्वरूप से परिचय।

पाँचवाँ संकेत: हम भविष्य में होने वाली घटनाओं की भविष्यवाणी करने वाली कई भविष्यसूचक परम्पराओं का उल्लेख करेंगे, जो इस प्रकार हैं:

- पैगम्बर ने अपने साथियों की मौजूदगी में मंच से घोषणा की: "मेरा पोता हसन एक महान व्यक्ति है। उसके माध्यम से, ईश्वर आपको आशीर्वाद देगा।"

दो बड़ी सेनाओं में सामंजस्य स्थापित करना।”43 चालीस साल बाद, जब दो सबसे बड़ी मुस्लिम सेनाओं जब दोनों सेनाओं का आमना-सामना हुआ तो हसन ने मुआविया के साथ शांति स्थापित कर ली और इस भविष्यवाणी को पूरा किया।

• पैगम्बर ने अली से कहा: "तुम शपथ तोड़ने वालों, अन्यायियों से लड़ोगे, और भटकने वालों के बारे में।”44 इस तरह से उसने ऊँटों की लड़ाइयों की भविष्यवाणी की और सिफ्फिन, साथ ही वे जो ख़ारिजियों के विरुद्ध लड़े।45 एक बार जब ज़ुबैर के साथ अच्छे और स्नेहपूर्ण शब्दों में बातचीत करते हुए, पैगंबर ने कहा अली: “ज़ुबैर तुमसे लड़ेगा, लेकिन वह ग़लत होगा।”46

• उसने अपनी पत्नियों से यह भी कहा: “तुममें से एक गंभीर विद्रोह का नेतृत्व करेगी। उसके आस-पास के लोग मारे जाएँगे, और हव'आब के कुत्ते उस पर भौंकेंगे।”47 ये सभी भविष्यवाणियाँ अली और आयशा के बीच हुई लड़ाई से सिद्ध हो गईं। तल्हा और जुबैर ने ऊँट की लड़ाई के दौरान मुआविया के विरुद्ध युद्ध लड़ा सिफ्फिन में, तथा हरौरा और नहरवान में ख़ारिजियों के विरुद्ध लड़ाई लड़ी।

• पैगंबर ने 'अली' से कहा कि 'अब्द अल-रहमान इब्न मुल्जम अल-खरिजी, जिसके बारे में वह जानता था कि वह अली की दाढ़ी को उसके ही सिर के खून से रंग देगा।48 इसके अलावा, उन्होंने ख़ारिजाइट के पास मौजूद एक शारीरिक निशान का भी उल्लेख किया धुल-थड्या। जब उस आदमी की लाश मृतकों के बीच पाई गई ख़ारिजियों के अनुसार, अली ने इसे अपने उद्देश्य की सत्यता के प्रमाण के रूप में दूसरों के सामने प्रस्तुत किया। इस प्रकार चमत्कार को सार्वजनिक कर दिया गया।49

• उम्म सलमा और अन्य लोगों ने बताया कि पैगंबर ने हुसैन की भविष्यवाणी की थी तफ़ (कर्बला) में मृत्यु,50 एक दुखद घटना जो 50 साल बाद घटित हुई। उन्होंने बार-बार कुछ विवरणों के साथ यह भी भविष्यवाणी की कि उनका परिवार उसकी मृत्यु के बाद उसे हत्या और निर्वासन का सामना करना पड़ेगा।51 उसने जो भी भविष्यवाणी की थी वह सब सच हुई।

---

43 बुखारी, किताब अल-सुलह, 3:244; इब्न हनबल, मुसनद, 5:37.

44 हकीम, मुस्ताद्रक, 3:139; बहाक़ी, दलाइल अल-नुबुव्वा, 6:414।

45 ख़ारिजियों का मानना था कि जो लोग कोई गंभीर गलती या पाप करते हैं और ईमानदारी से पश्चाताप नहीं करते, वे मुसलमान नहीं रह जाते। केवल स्वीकारोक्ति ही पर्याप्त नहीं है, क्योंकि विश्वास के साथ-साथ नेक काम भी होने चाहिए। वे जिहाद को इस्लाम के स्तंभों में से एक मानते थे, क्योंकि

उनका मानना था कि "अच्छाई का आदेश देना और बुराई से रोकना" का मतलब सत्य को प्रमाणित करना है तलवार। हालाँकि स्थापित सत्ता के खिलाफ़ उनके लगभग निरंतर विद्रोह के कारण पहली दो इस्लामी शताब्दियों के दौरान उनका सफाया हो गया था, फिर भी वे आज भी छोटे-छोटे इलाकों में पाए जाते हैं ओमान के साथ-साथ उत्तरी और पूर्वी अफ्रीका में भी। (सं.)

46 इब्न कथिर, अल-बिदया वा अल-निहाया, 6:213; हकीम, उक्त., 3:366.

47 बहाकी, उक्त., 6:405-410; हकीम, उक्त., 3:120.

48 इब्न हनबल, मुसनद, 1:102; हेथामी, मजमा', 9:138; हकीम, उक्त., 3:113.

49 बुखारी, 9:22; मुस्लिम, 7:745; बहाकी, दलैल, 6:426.

50 इब्न हनबल, मुसनद, 6:294; हेथामी, मजमा', 9:188; बहाक़ी, उक्त., 6:468.

51 हकीम, 4:482; अल-जामी अल-सगीर, नहीं। 2558.

प्रश्न: अली के असाधारण साहस और गहन ज्ञान के कारण, पैगंबर के साथ उनकी रिश्तेदारी के अलावा, उन्हें खलीफा बनने के लिए भी योग्य बनाया गया। इसलिए अबू बकर, उमर और उस्मान ने उनसे पहले शासन क्यों किया? और क्यों क्या मुस्लिम समुदाय को उनके खिलाफत के दौरान इतनी अव्यवस्था का सामना करना पड़ा?

उत्तर: पैगम्बर के परिवार से निकले एक महान संत ने कहा है: "ईश्वर के दूत अली की खिलाफत चाहते थे, लेकिन उन्हें सूचित किया गया प्रेरणा से पता चला कि भगवान की इच्छा कुछ और ही है। इस पर, उन्होंने त्याग दिया उसकी इच्छा पूरी की और परमेश्वर की इच्छा के आगे समर्पण किया।"

ईश्वर की इच्छा भिन्न होने का एक कारण यह रहा होगा: यदि अली ने पैगम्बर की मृत्यु के ठीक बाद खलीफा बनना, एक ऐसा समय जब साथियों को पहले से कहीं अधिक समझौते और एकता की आवश्यकता थी, संभवतः जैसा कि उनके खिलाफत के दौरान हुआ, कई लोगों में एक प्रवृत्ति उत्पन्न हुई होगी अपने शुद्ध, निडर, वीर और स्वतंत्र व्यवहार और रवैये के साथ-साथ अपने व्यापक रूप से लोगों और जनजातियों को प्रतिस्पर्धा करने के लिए प्रेरित किया। इस तरह की प्रतिस्पर्धा ने विश्वासियों को विभाजित कर दिया होगा।

दूसरा कारण यह है कि युवा मुस्लिम समुदाय, जो फैल रहा है जनजातीय और जातीय अंतर्संबंध के माध्यम से तेजी से, धीरे-धीरे 73 संप्रदायों का निर्माण हुआ जैसा कि पैगंबर ने भविष्यवाणी की थी, वैसा ही उभरकर सामने आया। इस प्रकार, आंतरिक संघर्ष और अशांति को बढ़ावा देने वाली परिस्थितियों में, अली के साहस और बुद्धिमत्ता वाले व्यक्ति की आवश्यकता थी, कोई ऐसा व्यक्ति जो हाशिमियों और उनके अनुयायियों के बल और सम्मान का आनंद लेता हो। पैगम्बर का परिवार। अली ने हर कठिनाई से लड़ते हुए पैगम्बर की भविष्यवाणी को पूरा किया: "मैंने कुरान के अवतरण के लिए लड़ाई लड़ी। तुम इसके सही अर्थ के लिए लड़ोगे इसकी जबरन, झूठी व्याख्या के विरुद्ध स्पष्टीकरण।"[52]

अली की अनुपस्थिति में, सांसारिक राज्य का वैभव संभवतः समाप्त हो गया होता। उमय्यदों को पूरी तरह से गुमराह कर दिया। लेकिन उनकी उपस्थिति और पैगम्बर के परिवार ने उमय्यद नेताओं को स्वयं को सीमित रखने, मुस्लिम समुदाय के सामने अपनी स्थिति को मजबूत करना, और इस्लाम की सच्चाई और सिद्धांतों तथा कुरान की आज्ञाओं की रक्षा और प्रचार-प्रसार के लिए अपनी ओर से सर्वश्रेष्ठ प्रयास करना (यदि स्वेच्छा से नहीं) या कम से कम अपने नागरिकों और अनुयायियों को प्रोत्साहित करना। परिणाम, अनगिनत सावधानीपूर्वक मुस्लिम न्यायविद, प्रतिष्ठित परंपरावादी, संत और उनके शासनकाल के दौरान धर्मपरायण शुद्ध लोग उभरे। अगर उन्हें सामना नहीं करना पड़ता पैगम्बर के परिवार की उत्तम धर्मपरायणता, संतत्व और सद्गुणों के बावजूद, वे संभवतः शुरू से ही पूरी तरह से भटक गए होते, जैसा कि उनके और 'अब्बासिड्स' शासन के अंत में हुआ।

---

[52] इब्न हनबल, मुसनद, 3:83; हेथामी, मजमा', 9:133; तिर्मिज़ी, 5:635.

प्रश्न: खिलाफत पैगम्बर के परिवार में क्यों नहीं रही, जबकि उसके सदस्य सबसे अधिक योग्य थे?

उत्तर: सांसारिक राज्य भ्रामक है, और पैगंबर के परिवार को इस्लाम की सच्चाई और कुरान के आदेशों को सुरक्षित रखने के लिए नियुक्त किया गया था। खिलाफत या राज्य द्वारा धोखा न खाने के लिए, व्यक्ति को या तो पैगंबर की तरह अचूक होना चाहिए या चार सही मार्गदर्शित खलीफाओं, उमय्यद खलीफा उमर इब्न अब्दुल अजीज या अब्बासिद खलीफा अल-महदी की तरह असाधारण रूप से शुद्ध हृदय वाला होना चाहिए। मिस्र में फ़ातिमी, उत्तरी अफ्रीका में अल-मोहद और फारस में सफ़वीद सभी दिखाते हैं कि सांसारिक राज्य पैगंबर के परिवार के लिए उपयुक्त नहीं है, क्योंकि यह उन्हें इस्लाम की रक्षा और सेवा करने के अपने आवश्यक कर्तव्य की उपेक्षा करने का कारण बनता है। जब उन्होंने सांसारिक राज्य से परहेज़ किया, तो उन्होंने इस्लाम और कुरान की शानदार और सफलतापूर्वक सेवा की।

हसन के वंशज प्रमुख संतों पर विचार करें, विशेष रूप से चार सबसे प्रतिष्ठित (हसन अल-खरकानी, हयात इब्न क़ैस अल-हररानी, शेख हसन अल-शदेज़िली, और विशेष रूप से 'अब्द अल-कादिर अल-जिलानी) और हुसैन के वंशज इमामों, विशेष रूप से ज़ैन अल-अबिदीन और जाफ़र अल-सादिक पर।

उनमें से प्रत्येक ने सर्वोच्च पद का आध्यात्मिक मार्गदर्शक बनकर, अधर्म के काले बादलों को दूर करके, कुरान की रोशनी और इस्लाम की सच्चाई को फैलाया। उन्होंने खुद को पैगम्बर के सच्चे उत्तराधिकारी के रूप में दिखाया।

प्रश्न: इस भयानक और खूनी उथल-पुथल के पीछे ईश्वरीय बुद्धि क्या थी, और ईश्वरीय करुणा ने उन मुसलमानों के साथ ऐसी घटनाएं क्यों घटित होने दीं, जो इसके लायक नहीं थे?

उत्तर: वसंत की तेज़ बारिश सब्ज़ियों, बीजों और पेड़ों में निहित प्रवृत्तियों को सक्रिय और विकसित करती है ताकि प्रत्येक अपने तरीके से खिले और फले-फूले और अपना स्वाभाविक कार्य पूरा करे। इसी तरह, सहाबा और उनके उत्तराधिकारियों के समय में उथल-पुथल ने विभिन्न प्रतिभाओं को सक्रिय किया। बहुत से लोग इस्लाम को बचाने के लिए उठ खड़े हुए, उन्हें डर था कि यह ख़तरे में है। महिलाओं और पुरुषों ने मुस्लिम समुदाय में निभाए जाने वाले कर्तव्य को अपने कंधों पर उठाया और अपनी पूरी क्षमता से उसे पूरा करने का प्रयास किया। प्रत्येक समूह ने एक अलग कार्य किया, जैसे कि पैगंबरी परंपराओं को संरक्षित करने, शरिया की रक्षा करने, कुरान और विश्वास की सच्चाइयों को बनाए रखने आदि का प्रयास करना। इससे धार्मिक और प्राकृतिक विज्ञान की कई शाखाएँ फलने-फूलने लगीं, साथ ही कई विद्वान लोग सामने आए। एक शानदार सभ्यता के बीज विशाल मुस्लिम दुनिया में बिखरे हुए थे, और प्राचीन दुनिया का आधा हिस्सा "गुलाब के बगीचों" में बदल गया। फिर भी, इन गुलाब के बगीचों में "कांटे" (विचलित संप्रदाय) भी दिखाई दिए।

ऐसा लग रहा था मानो ईश्वरीय शक्ति ने उस युग को गौरव से झकझोर दिया हो, उसे जोरदार ढंग से पलट दिया हो, और इस तरह सभी लोगों में जोश भर दिया हो। उस आंदोलन से सक्रिय होकर केन्द्रापसारी बल, बड़ी संख्या में प्रतिष्ठित न्यायविद, प्रबुद्ध परंपरावादी, कुरान और परंपराओं के धन्य यादकर्ता, पवित्रता के लोग और प्रमुख मुस्लिम दुनिया भर में फैले संतों की। इस प्रकार दिव्य शक्ति ने प्रेरित किया उन्होंने मुसलमानों को उत्साह के साथ कुरान के खजाने से परिचित कराया।

अब हम अपने विषय पर लौटते हैं। पैगम्बर ने हजारों लोगों की भविष्यवाणी की थी। घटनाएँ, जो सभी सच हुईं। यहाँ हम केवल कुछ का उल्लेख कर रहे हैं। अधिकांश सहमत हैं परंपराओं की छह सबसे प्रामाणिक पुस्तकों पर, जिनमें दो सबसे अधिक शामिल हैं प्रसिद्ध: सहीह अल-बुखारी और सहीह अल-मुस्लिम। कई लोगों को इस बात का पूरा यकीन है कि तवातुर को उनके अर्थ के संबंध में निश्चित माना जा सकता है, जबकि अन्य को सावधानीपूर्वक शोधकर्ताओं द्वारा सत्यापन के आधार पर निश्चित माना जा सकता है जैसे कि वर्णित किया गया हो सभी प्रामाणिक हैं ।

• “आप (सहयोगी) अपने सभी दुश्मनों को हरा देंगे और मक्का पर विजय प्राप्त करेंगे, ख़ैबर, दमिश्क, यरुशलम, इराक और फ़ारस। तुम फ़ारसी और बाइज़ेंटाइन शासकों के ख़ज़ानों को आपस में बाँटोगे।”53 ये

साम्राज्य अपने समय की महाशक्तियाँ थीं। पैगम्बर ने यह नहीं कहा “मुझे लगता है” या “मुझे लगता है”; बल्कि, उसने ऐसा कहा जैसे उसने इसे देखा हो। उसने यह भविष्यवाणी तब की जब वह मक्का और उसके आस-पास व्याप्त शत्रुता के कारण मुट्ठी भर अनुयायियों के साथ सबसे कठिन परिस्थितियों में था। •

“मेरी मृत्यु के बाद, आपको अबू बकर और उमर के मार्ग का अनुसरण करना चाहिए।”54

दूसरे शब्दों में, अबू बकर और उमर खलीफा के रूप में उनके उत्तराधिकारी होंगे और ईश्वर और उसके रसूल को खुश करने के लिए इतनी अच्छी तरह से काम करो। उन्होंने यह भी घोषणा की अबू बकर का शासनकाल छोटा होगा, लेकिन उमर लंबे समय तक शासन करेंगे अधिक समय तक युद्ध करो और अनेक विजय प्राप्त करो।

• “पृथ्वी मेरे सामने रखी गई थी, और मुझे इसके सबसे दूरस्थ कोने दिखाए गए थे पूर्व और पश्चिम। मेरा राष्ट्र जो कुछ भी निर्धारित किया गया था उस पर विस्तार करेगा मेरे सामने।”55

• बद्र की लड़ाई से पहले, उन्होंने उन सटीक स्थानों का संकेत दिया जहां बहुदेववादी कुरैशी नेताओं को मार दिया जाएगा, और कहा: "अबू जहल यहाँ मारा जाएगा, 'उतबा यहाँ, उमय्या यहाँ,' आदि, और कहा: "मैं मार डालूँगा उमय्या इब्न अल-ख़लाफ़।”56

---

53 इब्न हनबल, मुसनद, 3:83; 'अली अल-कारी', शरह अल-शिफा' (बुखारी, मुस्लिम और अन्य लोगों से), 1:678-79।

54 हकीम, 3:75; तिर्मिधि, इब्न हनबल, इब्न माजा और बहाकी द्वारा भी संबंधित।

55 मुस्लिम, 4:2215; हाकिम, 4:445; तिर्मिज़ी, इब्न हंबल और इब्न माजा द्वारा भी इसका उल्लेख किया गया है।

56 मुस्लिम, नहीं. 1779; इब्न हनबल, 1:390; क़दी 'इयाद, शिफ़ा', 1:343; हकीम, 2:327.

• उन्होंने अपने साथियों को युद्ध के दौरान घटित होने वाली घटनाओं की जानकारी दी मुता (दमिश्क के पास) का, मानो उसे देख रहे हों, हालांकि इसमें समय लगेगा किसी को पैदल वहां पहुंचने में एक महीने का समय लगता है। उन्होंने कहा: "ज़ैद ने झंडा ले लिया है और मारा गया है; अब इब्न रवाहा ने इसे ले लिया है और मारा गया है; अब जाफर ने इसे ले लिया है और मारा गया है; अब भगवान की तलवारों में से एक (यानी, खालिद) दो या तीन सप्ताह बाद, याला इब्न मुनब्बीह वापस लौटे युद्ध के मैदान से। उनकी उपस्थिति में, पैगंबर ने लड़ाई का विस्तार से वर्णन किया और याला ने भगवान की कसम खाई कि सब कुछ हो चुका था बिल्कुल जैसा वर्णित है।

• "मेरे बाद खिलाफत 30 साल तक चलेगी और फिर उसकी जगह ले लेगी एक कठोर राजतंत्र।58 यह मामला निश्चित रूप से पैगंबर के साथ शुरू हुआ और एक दया के रूप में। फिर यह दया और खिलाफत होगी, जिसके बाद यह बदल जाएगा एक कठोर राजतंत्र में, और अंततः अधर्म और अत्याचार में।"59 दूसरे शब्दों में: चार सही मार्गदर्शित खलीफाओं और 6- की खिलाफत हसन की खिलाफत के बाद खिलाफत एक राजतंत्र बन गई, जो बाद में अत्याचार और भ्रष्टाचार में बदल गई

अपने राष्ट्र.

• "उथमान को कुरान पढ़ते समय मार दिया जाएगा। भगवान शायद ऐसा करेंगे उसे कमीज़ पहनाओ, लेकिन वे उसे उतारना चाहेंगे।"60 इस प्रकार उनका मतलब था कि 'उथमान खलीफा बन जाएगा, उसका पदच्युत कर दिया जाएगा उन्होंने कहा कि वह कुरान पढ़ते समय शहीद हो जाएंगे। • एक प्रामाणिक कथन के अनुसार, जब पैगम्बर को कप में रखा गया था,

उन्होंने अब्दुल्ला इब्न जुबैर को खून को दफनाने का आदेश दिया। इब्न जुबैर ने इसे आशीर्वाद के रूप में पी लिया था, उन्होंने कहा: "लोगों के लिए अफसोस तुम्हारे कारण उन पर क्या बीतेगी, और जो घटेगा उसके कारण तुम पर हाय! इस प्रकार उसने भविष्यवाणी की कि साहसी इब्न जुबैर मुसलमानों का नेतृत्व करेगा और उन्हें भयानक परिस्थितियों का सामना करना पड़ेगा । इस तरह के हमले किए जाएं कि लोगों को भारी नुकसान उठाना पड़े। इब्न जुबैर ने घोषणा की उमय्यदों के शासन के दौरान मक्का में उनकी खिलाफत हुई और उन्होंने वीरतापूर्वक लड़ाई लड़ी उनके खिलाफ लड़ाई लड़ी, जब तक कि अंततः तानाशाह हज्जाज ने उन्हें शहीद नहीं कर दिया एक भयंकर युद्ध.

---

57 बुखारी, 5:182; हकीम, 3:298; अबू नुअयम, दलैल अल-नुबुव्वा, 2:529।

58 अल-जामी अल-सगीर, नहीं। 3336; इब्न हनबल, 4:273; इब्न हिब्बन, साहिह, 8:227; अबू दाऊद, सुन्ना, 8; तिर्मिज़ी, फ़ितन, 48.

59 वही.

60 हकीम, 3:100; इब्न हनबल, 6:114; तिर्मिज़ी, नहीं. 2706; मजमा', 5:188.

61 हकीम, 3:554; अल-मतालिब अल-'आलिया, 4:21; क़दी 'इयाद, शिफ़ा' अल-शरीफ़, 1:339।

• पैगंबर ने उमय्यद राज्य की स्थापना की भविष्यवाणी की और कहा कि यजीद और वालिद समेत उसके शासकों में से कोई भी अन्यायी नहीं होगा।62 उन्होंने यह भी भविष्यवाणी की थी कि मुआविया मुसलमानों पर शासन करेगा और उसे न्यायपूर्ण रहने की सलाह दी थी। और सौम्य: "जब तुम शासन करो, तो नम्रता से काम लो।"63 पैगंबर ने यह भी भविष्यवाणी की थी उमय्यदों के बाद अब्बासियों के लंबे शासन के बारे में कहते हुए: "के वंशज 'अब्बास काले झंडों के साथ दिखाई देंगे और कई गुना अधिक समय तक शासन करेंगे' उन (उमय्यादों) पर।"64

• उन्होंने चंगेज खान और हुलगू के भयानक विनाश की भविष्यवाणी की, जिसके कारण अब्बासिद राज्य का पतन हो गया: "अरबों पर हाय

• पैगम्बर ने साद इब्न अबी वक्कास से

कहा, जब वह गंभीर रूप से बीमार थे: "उम्मीद है कि तुम्हें बख्श दिया जाएगा ताकि कुछ लोग इसके माध्यम से लाभ उठा सकें तुम्हें और दूसरों को तुम्हारे माध्यम से नुकसान पहुंचाया जाएगा,"66 यह सुझाव देते हुए कि साद एक महान सेनापति बनो और कई विजय अभियान चलाओ। जबकि कई लोगों को इस्लाम में धर्मांतरण करने से लाभ होगा, कई अन्य को नुकसान होगा उसके माध्यम से क्योंकि वह उनके राज्यों को नष्ट कर देगा। बाद में, साद ने मुस्लिम सेनाओं की कमान संभाली जिसने फारस के सासानी साम्राज्य को नष्ट कर दिया और बहुत से लोगों को इस्लाम के मार्गदर्शन में लाया।

• जब नेगस, अबीसीनियाई शासक जिसने इस्लाम धर्म अपना लिया था, की मृत्यु 7 वर्ष बाद हुई पैगंबर के मदीना प्रवास के दौरान, उन्होंने अपने साथियों को बताया कि क्या हुआ था घटना के बाद उनके अंतिम संस्कार की प्रार्थना की गई। एक सप्ताह बाद, खबर आई कि उसी दिन नेगस की मृत्यु की घोषणा की गई थी रसूल ने घोषणा की।67

• जब पैगम्बर अपने साथियों के साथ उहुद या नूर पर्वत की चोटी पर होते थे चार सबसे करीबी दोस्तों के बीच, पहाड़ कांप उठा। उसने कहा: "स्थिर रहो, क्योंकि आप एक सच्चे नबी (अबू बकर) और शहीद (उमर, 'उथमान, और 'अली)।"68

अब हे दुखी, निर्दयी और अभागे व्यक्ति, जो कहता है कि मुहम्मद एक बुद्धिमान व्यक्ति थे और फिर सत्य के उस सूर्य के प्रति अपनी आँखें बंद कर लेते हो!
उनके 15 प्रकार के प्रमुख चमत्कारों में से अभी तक आपने केवल एक का छोटा सा हिस्सा ही सुना है

---

62 अल-जामी अल-सगीर, नहीं। 412, 2579; शिफ़ा', 1:338; तिर्मिज़ी और हकीम द्वारा संबंधित।

63 इब्न हज़र, मतालिब अल-अलिया, 4085, इब्न हनबल और अबू याला द्वारा संबंधित।

64 इब्न हनबल, 3:216; हकीम, अल-मुस्ताद्रक, 3:326; बहाकी, दलैल, 6:513.

65 बुखारी, किताब अल-फ़ितन, 9:60; मुस्लिम, नहीं. 2880; हकीम, 1:108.

66 अबू नु'आयम, हिलायत अल-अवलिया', 1:94, बुखारी और मुस्लिम से भी संबंधित है।

67 बुखारी, 2:109; मुस्लिम, इब्न मलिक, अबू दाऊद और नसाई द्वारा भी इसका उल्लेख किया गया है।

68 मुस्लिम, 4:1880; बुखारी, तिर्मिज़ी, हाकिम और अबू दाऊद द्वारा भी इसका उल्लेख किया गया है।

प्रकार - जो उसकी भविष्यवाणियों से संबंधित है जिसमें तवातुर की निश्चितता है। जो व्यक्ति अपने ज्ञान से ऐसी भविष्य की घटनाओं का केवल सौवां भाग भी भविष्यवाणी कर सकता है। हमारी अपनी अंतर्दृष्टि सर्वोच्च प्रतिभा की होनी चाहिए। भले ही हम केवल उसे एक प्रतिभाशाली व्यक्ति के रूप में माना जाता है, जैसा कि आप करते हैं, क्या ऐसा व्यक्ति अंतर्दृष्टि के साथ हो सकता है सौ प्रतिभाशाली लोगों ने किसी भी चीज को झूठ माना है या खुद को इतना नीचा दिखाया है झूठी जानकारी देना? ऐसे व्यक्ति की दोनों दुनिया में खुशी के बारे में कही गई बातों पर ध्यान न देना पूरी तरह से मूर्खता है।

छठा चिन्ह:

- पैगम्बर ने अपनी बेटी फातिमा से कहा: "तुम पहला परिवार होगे (मेरी मृत्यु के बाद) मेरे साथ जुड़ने के लिए किसी सदस्य को नियुक्त किया।”69 जब छह महीने बाद उनकी मृत्यु हो गयी, उसकी बातें सच साबित हुईं। उसने अबू ज़र से यह भी कहा: "तुम्हें निकाल दिया जाएगा यहाँ (मदीना) से, अकेले जियेंगे और अकेले मरेंगे।”70 उन्होंने जो कहा वह 20 साल बाद हुआ।

- एक बार वह उम्म हरम (अनस इब्न मलिक की चाची) के घर में जागा और मुस्कुराते हुए कहा: "मैंने सपना देखा कि मेरा समुदाय लड़ रहा था समुद्र में सिंहासनों पर बैठे राजाओं की तरह।" उम्म हरम ने पूछा: "प्रार्थना करें कि मैं उनके साथ रहो।” उसने दृढ़ता से उत्तर दिया: “तुम उनके साथ रहोगी।”71 चालीस साल बाद वह की विजय के दौरान अपने पति उबादा इब्न सामित के साथ थीं साइप्रस। वहीं उनकी मृत्यु हुई, और उनकी कब्र एक दर्शनीय स्थल बनी हुई है।
- “ठाक़ीफ़ जनजाति एक झूठा व्यक्ति पैदा करेगी जो नबी होने का दावा करता है, साथ ही खून के प्यासे तानाशाह के रूप में।"72 दूसरे शब्दों में, कुख्यात मुख्तार (जो पैगंबर होने का दावा किया) और अपराधी हज्जाज (जिसने 100,000 लोगों की हत्या की लोग)।
- “कॉन्स्टेंटिनोपल (इस्तांबुल) पर विजय प्राप्त की जाएगी (मेरे समुदाय द्वारा)। वह सेनापति कितना धन्य है जो इसे जीतता है, और उसका राजा कितना धन्य है सेना।"73 कॉन्स्टेंटिनोपल सुल्तान मेहमद द कॉन्करर के हाथों में चला गया, जिसने इस प्रकार 1453 में उन्हें उच्च आध्यात्मिक पद प्राप्त हुआ।
- "यदि धर्म को प्लीएडेस पर लटका दिया जाता, तो फारसियों के वंशज उस तक पहुंचो और उसे पकड़ लो,”74 जो फारस के अद्वितीय विद्वानों की ओर संकेत करता है और अबू हनीफा जैसे संत।

---

69 बुखारी, 4:248; मुस्लिम, 4:1904; इब्न हनबल, 6:77, बहाक़ी, 7:164.

70 शिफ़ा अल-शरीफ़, 1:343, इब्न हनबल, इब्न हिब्बन और इब्न कथिर द्वारा संबंधित।

71 अल-जामी अल-सगीर, 6:24, बुखारी, मुस्लिम, तिर्मिज़ी, सहित अन्य से संबंधित।

72 हाकिम, 3:453, मुस्लिम, इब्न हंबल और तिर्मिज़ी द्वारा भी उल्लेखित है।

73 बुखारी, तारिख अल-सगीर, 139; हकीम, 4:422, इब्न हनबल और हेथामी भी।

74 अल-लु'लू' वा अल-मार्जन, 3:183, बुखारी, मुस्लिम और तिर्मिधि द्वारा संबंधित।

• "कुरैश का एक विद्वान पृथ्वी के भागों को ज्ञान से भर देगा।"75 यह इमाम शाफ़ई को संदर्भित करता है,
जिन्होंने इस्लाम के चार धर्मों में से एक की स्थापना की थी।
कानूनी स्कूल.

• "मेरा समुदाय 73 संप्रदायों में विभाजित होगा, और उनमें से केवल एक ही अलग होगा।"
बच जाओगे।" जब उनसे पूछा गया कि वे कौन थे, तो उन्होंने जवाब दिया: "जो लोग
मैं और मेरे साथी," जिसका मतलब था सुन्नत के लोग
और समुदाय (अहल अल-सुन्ना वा अल-जमा).76

• "कादरिया इस समुदाय के मागियन हैं,"77 जिससे भविष्यवाणी की गई
कादरिया संप्रदाय78, जो कई शाखाओं में विभाजित हो गया और
तकदीर।

• उन्होंने कई समूहों की भविष्यवाणी की जो कई गुटों में विभाजित हो जाएंगे,
उन्होंने अली से कहा: "तुम्हारे कारण, यीशु की तरह, दो समूह नष्ट हो जायेंगे:
एक तो तुम्हारे प्रति अत्यधिक प्रेम के कारण, और दूसरा तुम्हारे प्रति अत्यधिक शत्रुता के कारण।"79
मसीही, यीशु के प्रति अपने अत्यधिक प्रेम के कारण,
यहूदियों ने मर्यादा का उल्लंघन किया और उसे परमेश्वर का "पुत्र" माना, जबकि
वे अपनी दुश्मनी में इतने आगे बढ़ गए कि उनकी पैगम्बरी और सिद्धताओं को नकार दिया।
यह राफिदियों,80 , ख़ारिजियों, और नसीबाओं को संदर्भित करता है,
क्रमशः उमय्यदों के चरमपंथी पक्षधर।

प्रश्न: कुरान मांग करता है कि हम पैगम्बर के परिवार से प्रेम करें, और
पैगम्बर ने इसे बहुत प्रोत्साहित किया। शियाओं का उनके प्रति प्रेम उनके लिए एक वरदान साबित हो सकता है।
यह एक बहाना है, क्योंकि प्रेम करने वाले लोगों की तुलना नशे में धुत्त लोगों से की जा सकती है। इसलिए
शिया, खास तौर पर राफिद, उनके प्यार से लाभ क्यों नहीं उठा पाते?
क्या पैगम्बर ने उनके अत्यधिक प्रेम के लिए उनकी निंदा की थी?

उत्तर: प्यार दो तरह का होता है। पहला किसी से प्यार करना।
सच्चे प्यार को पाने का एक साधन, जो कि पैगंबर के परिवार के नाम पर प्यार है
ईश्वर और उसके रसूल के प्रति प्रेम। इस तरह का प्रेम पैगंबर के प्रति प्रेम को बढ़ाता है
और सर्वशक्तिमान ईश्वर से प्रेम करने का एक साधन बन जाता है। इसलिए यह वैध है, इसकी अधिकता
यह हानिरहित है और इसे अपराध नहीं माना जाता है, और यह निंदा का विषय नहीं है
और दूसरों के प्रति शत्रुता।

---

75 कश्फ़ अल-ख़फ़ा', 2:53, इब्न हनबल, तायालिसी, इब्न हज़ार और बहाक़ी द्वारा संबंधित।

76 इब्न हनबल, 2:332; अबू दाऊद, इब्न माजा और तिर्मिज़ी द्वारा भी संबंधित।

77 अल-जामी अल-सगीर, 4:l50, अबू दाऊद, हकीम और इब्न माजा द्वारा संबंधित।

78 यह संप्रदाय, जो दूसरी इस्लामी शताब्दी में प्रकट हुआ, स्वतंत्र इच्छा की वकालत करता था, तर्क देता था कि
लोग अपना आचरण स्वयं बना सकते हैं (अच्छा और बुरा दोनों), और कार्य-कारण को एक कारक के रूप में स्वीकार कर सकते हैं।
मानव आचरण का आवश्यक अंग बन जाना, इस प्रकार ईश्वरीय नियति को अस्वीकार करना।

79 हकीम, 3:123; इब्न हनबल, इब्न हिब्बान और बज़ार द्वारा भी संबंधित।

80 मजमा अल-ज़वायद, 10:22; फत अल-रब्बानी, 24:20; नसाई, अल-ख़ासाई, 3:19.

दूसरा साधन को ही अपना वास्तविक उद्देश्य मान लेता है। ऐसे लोग साधन को ही भूल जाते हैं। पैगंबर और अली (रफीदियों) के वीरतापूर्ण कार्यों के कारण उनके प्रति अपना प्रेम समर्पित करते हैं पूर्णता के कारण, तथा हसन और हुसैन को उनकी असाधारणता के कारण सद्गुणों को, चाहे वे ईश्वर और उसके पैगम्बर को पहचानते हों या नहीं। यह प्रेम ईश्वर और उसके रसूल से प्रेम करने का कोई ज़रिया नहीं है। इसके अलावा, इसकी अधिकता से दूसरों के प्रति अपमान और शत्रुता। अली के प्रति रफीदियों का अत्यधिक प्रेम इस प्रकार की अतिशयता और अत्याधिकता ने उन्हें अबू बकर और उमर की खिलाफत को अस्वीकार करने, अपनी सिद्धियों को अस्वीकार करने और अंततः सीधे मार्ग से विचलित कर दिया।

नकारात्मक प्रेम आध्यात्मिक विनाश का कारण बनता है।

- "जब फ़ारसी और रोमन लड़कियाँ आपकी सेवा करेंगी, तो आप आंतरिक संघर्षों और गृहयुद्ध का सामना करेंगे, और दुष्ट सत्ता में आ जाएँगे, शिकार करेंगे अच्छाई पर।"81 यह 30 साल बाद सच हुआ। • "अली ख़ैबर पर विजय प्राप्त करेंगे।"82 पैगंबर के चमत्कार के रूप में और उससे परे सारी उम्मीदों के बावजूद, अगले दिन अली ख़ैबर के दरवाज़े पर पहुँच गए किले को ढाल की तरह इस्तेमाल किया और अंततः खैबर पर विजय प्राप्त की। विजय के बाद गेट को एक तरफ फेंक दिया, आठ (एक अन्य संस्करण 40 कहता है) मजबूत आदमी इसे उठा नहीं सकते थे।83
- "क़यामत तब तक नहीं आएगी जब तक दो गिरोह आपस में न लड़ लें अन्य), हालांकि वे एक ही दावे करते हैं,"84 युद्ध की भविष्यवाणी करते हुए अली और मुआविया के बीच सिफ़िन।
- "अम्मार को एक विद्रोही समूह द्वारा मार दिया जाएगा।"85 जब अम्मार मारा गया सिफिन में अली ने इसका उल्लेख इस बात के सबूत के तौर पर किया कि मुआविया और उनके अनुयायी विद्रोही थे। हालांकि, मुआविया और अम्र इब्न अल-अस ने इसका अर्थ इस तरह लगाया: "विद्रोही ही उनके हत्यारे हैं, हम सब नहीं।"
- "जब तक उमर जीवित है, तब तक (मेरे समुदाय में) अव्यवस्था नहीं आएगी जीवित।"86
- जब साहल इब्न अम्र को इस्लाम धर्म अपनाने से पहले बंदी बना लिया गया, उमर ने पैगम्बर से कहा: "मुझे उसके दांत निकालने दो, क्योंकि वह बहुत वाक्पटु है। यह भाषण कुरैशी अविश्वासियों को हमसे लड़ने के लिए उकसाता है। ने कहा: "उमर, शायद वह आपके लिए एक सुखद स्थिति ग्रहण करेगा।"87

---

81 हेथामी, 10:237; अल-जामी अल-सगीर, 813; शिफ़ा', 1:237; इब्न हिब्बन, 8:253.

82 बुखारी, 5:171; मुस्लिम, नहीं. 2406; इब्न हनबल, 5:333; हकीम, 3:109.

83 सुयुति, तारिख अल-ख़ुलाफ़ा', 164; इब्न कथिर, अल-बिदया, 4:189, हकीम, इब्न द्वारा भी संबंधित इसहाक और बेहाकी।

84 अल-जामी अल-सगीर, 6:174; बुखारी, मुस्लिम और अबू दाऊद द्वारा संबंधित।

85 मुस्लिम, 4:22-36; बुखारी, 1:122; लगभग 30 सहाबा से सम्बंधित।

86 बहाक़ी, 6:386; मुस्लिम, 4:2218; बुखारी द्वारा भी संबंधित।

87 हकीम, 4:282; इब्न हजर, अल-इसाबा फाई तमीज़ अल-सहाबा, 2:93; शिफ़ा', 1:344.

पैगम्बर की मृत्यु के बाद, सहल ने मक्का में एक शानदार उपदेश दिया और दु:खी साथियों को सांत्वना दी। उल्लेखनीय रूप से, यह उपदेश अर्थ और शब्दावली में यह भाषण लगभग वैसा ही था जैसा कि उस समय दिया गया था। उसी समय और उसी उद्देश्य के लिए, मदीना में अबू बकर द्वारा।

• "मुझे आश्चर्य है (सुराक़ा), जब आप दोनों पहनेंगे तो आपके साथ कैसा होगा चोस्रोस (फारसी राजा) के कंगन।"88 चोस्रोस को उमर के शासनकाल के दौरान पराजित किया गया था, जिन्होंने सुराका पर कंगन पहनाए और कहा: "प्रशंसा अल्लाह का शुक्र है, जिसने इन्हें चौसरो से उतारकर सुराक़ा पर रख दिया।''89 पैगम्बर ने यह भी घोषणा की: "एक बार (शासन) चोस्रोस (जिसका अर्थ है सस्सानिद राजवंश) चला गया, कोई दूसरा चोस्रोस नहीं होगा,"90 (इस प्रकार ईरान में सासानी शासन के अंत की भविष्यवाणी)।

• जब चोस्रोस (पैगंबर के शासनकाल के दौरान सस्सानिद राजा) के दूत जब वह मदीना पहुंचा तो पैगम्बर ने उससे कहा: "चोसरो को मार दिया गया है इसकी पुष्टि करने के बाद, दूत (जिसे फ़िरोज़ बताया जाता है) ने इस्लाम स्वीकार कर लिया ।

• जब ईश्वर के दूत मक्का विजय के लिए निकलने वाले थे, ख़तीब इब्न अबी बलता द्वारा भेजा गया एक गुप्त पत्र पहले से ही भेजा जा रहा था कुरैश ने अली और मिक्कदाद को यह कहते हुए भेजा: "पत्र-वाहक फलां जगह पर है। जाओ और उसे ले आओ।" उन्होंने वैसा ही किया जैसा उसने कहा था। जब पैगम्बर ने ख़तीब से पूछा कि उसने पत्र क्यों भेजा है, तो ख़तीब ने कहा, बहाना बनाया और माफ़ कर दिया गया.92

• ईश्वर के दूत ने प्रार्थना की: "उतबा इब्न अबी लहब को निगल लिया जाए भगवान के कुत्तों में से एक ने उसे मार डाला ।"93बाद में, इस आदमी को एक शेर ने खा लिया यमन की यात्रा के दौरान। • मक्का की

विजय के बाद, बिलाल अल-हबाशी काबा के शिखर पर खड़े हुए। छत पर चढ़कर लोगों को नमाज़ (अज़ान) के लिए बुलाया। कई कुरैशी नेताओं ने, अर्थात्, अबू सुफ़यान, अत्ताब इब्न असीद और हारिथ इब्न हिशाम, काबा के पास एक साथ बैठे थे। अत्ताब ने कहा: "मेरे पिता भाग्यशाली हैं कि उन्हें काबा के पास जाने की अनुमति नहीं मिली। इस पल का गवाह बनो।" हरिथ ने तिरस्कारपूर्वक पूछा: "क्या मुहम्मद इस काले कौवे के अलावा किसी और को मुअज़्ज़िन के रूप में नहीं ढूंढ सकते थे?" अबू सुफ़यान ने कोई टिप्पणी नहीं की, उन्होंने कहा: "मुझे डर है कि वह आएगा

88 इब्न हजर, उक्त, नहीं. 3115; 'अली अल-कारी, शरह अल-शिफ़ा', 1:703.

89 शिफ़ा', 1:344; अल-इसाबा भी , नहीं। 3115.

90 मुस्लिम, 4:2236; बुखारी, तिर्मिज़ी और तबरानी द्वारा भी इसका उल्लेख किया गया है।

91 'अली अल-कारी, उक्त, 1:700; अल-जामी अल-सगीर, 875; अबू नुअयम, 2:348.

92 बुखारी, 5:184; मुस्लिम, क्रमांक 2494; इब्न हनबल, 1:80.

93 शिफ़ा', 1:343; हकीम, बेहाकी और इब्न इशाक द्वारा संबंधित।

मैं जो भी कहूँ उसे जान लेना, इसलिए कुछ नहीं कहना। भले ही कोई न बताए इस बाथा (अर्थात् मक्का) की चट्टानें ऐसा करेंगी।" इसके तुरंत बाद, ईश्वर के दूत उनके पास आये और उनकी बातचीत को दोहराया उसी समय अत्ताब और हरीथ ने इस्लाम धर्म अपना लिया।94

अब तुममें से जो लोग पैगम्बर को नहीं पहचानते, उन दो बातों पर गौर करो जिद्दी कुरैशी नेताओं ने सिर्फ़ एक चमत्कार देखने के बाद ही इस पर यकीन कर लिया। तुम कितने बर्बाद हो चुके हो कि तुम सैकड़ों चमत्कारों को सुनने के बाद भी आश्वस्त नहीं हो, जैसे कि यह एक, जो तवातुर के माध्यम से आया था। लेकिन आइये अपने विषय पर लौटें।

• मुसलमानों ने बद्र की लड़ाई के दौरान अब्बास को पकड़ लिया। फिरौती के लिए अब्बास ने कहा कि उसके पास पैसे नहीं हैं। ईश्वर के दूत ने कहा: "तुम इतनी रकम अपनी पत्नी उम्म फदल के पास फलां जगह छोड़ गए एक जगह (उसने पैसे की सही रकम बताई और जगह का नाम बताया)।”95 अब्बास ने इसकी पुष्टि की: "केवल हम दोनों (यानी अब्बास और उसकी पत्नी) यह जानता था,” और फिर पूर्ण विश्वास प्राप्त किया। • लेबिद, एक खतरनाक यहूदी जादूगर, ने एक मजबूत और प्रभावी मंत्र का आविष्कार किया पैगंबर को नुकसान पहुंचाने के लिए। कंघी के चारों ओर कुछ बाल लपेटते हुए, उसने मंत्रमुग्ध कर दिया और उसे एक कुएँ में फेंक दिया। ईश्वर के दूत ने अपने कुछ साथियों से कहा, जिसमें अली ने कहा था: “अमुक कुएं के पास जाओ और जादू को हटा दो उन्होंने ऐसा ही किया और जैसे ही उन्होंने अपने घुटने खोले, पैगम्बर की बेचैनी कम हो गई। बाल.96

• अबू हुरायरा सहित कुछ महत्वपूर्ण साथियों की संगति में और हुदैफा, पैगम्बर ने उन दोनों में से एक का क्या हश्र होगा, इसका उल्लेख किया है उसके बाद के धर्मत्याग के कारण: "तुममें से एक व्यक्ति आग में डाला जाएगा मेरे दांत उहुद पर्वत से भी बड़े हैं।" अबू हुरायरा ने बाद में बताया: "मैं इतना डर गए, क्योंकि उस समूह के केवल दो सदस्य ही बचे थे। उनमें से एक मैं था। अंत में, दूसरा आदमी यामामा की लड़ाई में मारा गया मुसैलिमा की संगति में धर्मत्यागी।''97

• इस्लाम धर्म अपनाने से पहले, 'उमैर और सफ़वान ने हत्या करने का फैसला किया पैगम्बर मुहम्मद के पास जाकर उनसे एक बड़ा इनाम प्राप्त किया। जब उमर मदीना आए तो इस इरादे से, भगवान के दूत ने उसे बुलाया, साजिश सुनाई, और

---

94 इब्न हजर, अल-मतालिब अल-'आलिया, 4366; इब्न हिशाम, सीरा, 2:413.

95 हेथामी, मजमा अल-ज़वायद, 6:85; इब्न हनबल, हकीम और बहाकी द्वारा संबंधित।

96 बुखारी, 4:148; मुस्लिम, 4:1719; इब्न माजा, 3545; इब्न हनबल, 4:367.

97 मजमा अल-ज़वायद, 8:289; तबरानी द्वारा और थोड़े अंतर के साथ मुस्लिम द्वारा संदर्भित; शिफा', 1:342.

अपना हाथ 'उमैर की छाती पर रखा। 'उमैर ने कबूल किया और एक बन गया मुस्लिम.98

उनकी कई भविष्यवाणियां संचरण की श्रृंखलाओं के साथ दर्ज हैं परंपरा की प्रामाणिक पुस्तकों में। यहाँ वर्णित अधिकांश पुस्तकों में प्रमाण- तवातुर के अर्थ में कलंक , जिसका उल्लेख इमाम अल-बुखारी द्वारा अल-जामी अल-सहीह और इमाम अल-मुस्लिम द्वारा अल-जामी अल-सहीह में किया गया है (जिसे आमतौर पर तवातुर के नाम से जाना जाता है) बुखारी और मुस्लिम या सहीह अल-बुखारी और सहीह अल-मुस्लिम, क्रमशः), जिन्हें सावधानीपूर्वक शोधकर्ताओं द्वारा सबसे प्रामाणिक स्रोतों के रूप में स्वीकार किया जाता है कुरान के बाद, और सुन्न अल-तिर्मिज़ी, सुन्न अल-नसाई, सुन्न अबू धाबी में दाऊद, मुसनद अल-हकीम, मुसनद अल-अहमद इब्न हनबल, और दलाईल अल-बहाकी।

अब हे भ्रमित व्यक्ति, इसे समझाने का प्रयास मत करो। मुहम्मद को बुद्धिमान व्यक्ति कहना। उनकी सभी भविष्यवाणियाँ सच साबित हुई हैं (या सच साबित हुई हैं) सच होगा, इसे केवल दो तरीकों से समझाया जा सकता है। पहला यह कि वह उनकी दृष्टि इतनी तीव्र और प्रतिभा इतनी व्यापक थी कि वे सभी कालखंडों में पैठ बना लेते थे। और स्थानों के बारे में जाना और इस तरह अतीत और भविष्य के बारे में जाना। अगर किसी के पास यह गुण, यह एक आश्चर्य से अधिक कुछ नहीं होगा, भगवान की ओर से एक चमत्कारी उपहार ब्रह्मांड का निर्माता, और सबसे महान चमत्कारों में से एक।

दूसरा यह कि वह एक अधिकारी है जिसे एक सत्ता द्वारा निर्देश दिया जाता है जो सब कुछ नियंत्रित और देखता है, सभी समय और स्थानों को आदेश देता है, और रिकॉर्ड करता है सब कुछ एक बड़े बहीखाते में दर्ज है। फिर वह अपने रसूल से जो कुछ भी है बयान करता है और जब भी वह चाहे। इस प्रकार मुहम्मद दूसरों को निर्देश देते हैं जैसा कि वह स्वयं निर्देश देते हैं- अपने शाश्वत प्रशिक्षक द्वारा निर्देशित।

- उकैदिर के खिलाफ लड़ने के लिए खालिद इब्न अल-वालिद को नियुक्त करते समय, प्रमुख दावत अल-जंदाल के बारे में, पैगंबर ने उससे कहा: "तुम उसे (उकायदिर) पाओगे जंगली बैल के शिकार पर," और कहा कि उसे बिना किसी प्रतिरोध के पकड़ लिया जाएगा।99 खालिद ने ठीक उन्हीं परिस्थितियों में उकैदिर को ढूंढा और उस पर कब्जा कर लिया।
- कुछ समय बाद कुरैश ने उस पत्ते को लटका दिया जिसमें सामग्री थी काबा की दीवार पर बनी हाशिम (पैगंबर के कबीले) के खिलाफ बहिष्कार, पैगंबर ने उनसे कहा: "कीड़े पत्ते खा गए हैं, सिवाय वे गए और पाया कि यह ऐसा ही है ।100

---

98 मजमा अल-ज़वायद, 8:286; शिफ़ा', 1:342; इब्न कथिर, अल-बिदया, 3:313।

99 इब्न साद, तबक़ात, 2:119; हकीम, 4:519; शिफ़ा', 1:344; बहाक़ी, 2:66.

100 इब्न कथिर, अल-बिदया, 3:96; बहाक़ी, 2:311; शिफ़ा', 1:345; इब्न हिशाम, 1:371.

• “यरूशलेम की विजय के समय एक महामारी फैलेगी।” यह शहर उमर की खिलाफत के दौरान विजय प्राप्त की गई थी, और एक व्यापक महामारी फैली थी भड़क उठा और तीन दिन में लगभग 70,000 लोग मारे गये।101

• ईश्वर के दूत ने बसरा और बगदाद की स्थापना की भविष्यवाणी की,102 कि दुनिया भर से खज़ाने बगदाद में आएंगे, और अरब तुर्कों और आसपास रहने वाले लोगों से लड़ेंगे कैस्पियन सागर,103 जिनमें से अधिकांश ने बाद में अरबों को अपना बना लिया और उन पर शासन किया अपने ही देश में। उसने कहा: "तुम्हारे बीच गैर-अरबों का बोलबाला होगा, तुम्हारी लूट का माल खा जाऊँगा और तुम्हारे सिर काट डालूँगा।”104

• "युवा, दुष्ट कुरैशी मेरे समुदाय को बर्बाद कर देंगे।"105 इसने ऐसी भविष्यवाणी की यज़ीद और वालिद जैसे दुष्ट उमय्यद नेताओं की भविष्यवाणी की। उन्होंने यह भी भविष्यवाणी की कि यमामा जैसे कुछ क्षेत्रों में लोग धर्मत्याग करेंगे,106 और घोषणा की खाई की लड़ाई के दौरान: "इसके बाद, न तो कुरैश और न ही संघी मुझसे लड़ेंगे, लेकिन मैं उनसे लडूंगा।”107

• पैगंबर ने अपनी मृत्यु से कुछ महीने पहले ही इसकी भविष्यवाणी कर दी थी, उन्होंने कहा: "भगवान के सेवकों में से एक को एक विकल्प दिया गया है और उसने चुना है जो परमेश्वर के पास है।”108

• "उसका (ज़ैद इब्न सावहान का) एक अंग उससे पहले जन्नत में पहुँच जाएगा।"109 यह बात तब सच हुई जब ज़ैद ने एक लड़ाई के दौरान अपना एक हाथ खो दिया।

अदृश्य से संबंधित ये भविष्यवाणियां उनकी दस भविष्यवाणियों में से केवल एक हैं। चमत्कार के प्रकार। हमने यहाँ इनमें से किसी एक प्रकार का उल्लेख नहीं किया है, और पच्चीसवें वचन में भविष्यवाणियों से संबंधित इस और अन्य 4 प्रकारों का सारांश दिया है। कोई भी व्यक्ति जिसका मन और हृदय भ्रष्ट न हो, वह बस इस पर विचार कर सकता है
यह एक प्रकार अन्य चार के साथ मिलकर यह विश्वास करने के लिए कि मुहम्मद
वह ईश्वर के दूत हैं और उन्हें सर्वशक्तिमान ईश्वर ने निर्देश दिया है।
वह प्रत्येक वस्तु का रचयिता है और अदृश्य का भी सर्वज्ञ है।

---

101 बुखारी, 7:168; मुस्लिम, नहीं. 2219; इब्न हनबल, 4:195.

102 बसरा: अल-जामी अल-सगीर, 6:268, अबू दाऊद द्वारा संबंधित; बगदाद: अल-बिदया वा अल-निहाया, 10:102; अबू नुऐम और खतीब द्वारा भी संबंधित।

103 अल-शिफ़ा', 1:337, बुखारी, मुस्लिम, अबू दाऊद और तिर्मिज़ी द्वारा संबंधित।

104 मजमा अल-ज़वायद, 7:310, हकीम, तायालिसी और इब्न हनबल द्वारा संबंधित।

105 बुखारी, 9:60; इब्न हनबल, 2:288; हकीम, मुस्ताद्रक, 4:479.

106 बुखारी, 4:247; मुस्लिम, 4:1781.

107 इब्न हनबल, 4:262, बुखारी, इब्न हिब्बन और तबरानी द्वारा भी संबंधित है।

108 मुस्लिम, संख्या 2382; बुखारी और तिर्मिज़ी द्वारा भी संदर्भित।

109 मजमा अल-ज़वायद, 9:398, बहाकी, इब्न अदिय और अबू याला द्वारा संबंधित।

सातवाँ संकेत: हम पैगम्बर के चमत्कारों के कुछ उदाहरणों का उल्लेख करते हैं
भोजन बढ़ाने से संबंधित जिसमें अर्थ में तवातुर की निश्चितता है ।
लेकिन आगे बढ़ने से पहले कुछ परिचयात्मक टिप्पणियाँ उपयुक्त हैं।

नीचे वर्णित प्रत्येक चमत्कार विभिन्न माध्यमों से प्रसारित किया गया था—कभी-कभी
लगभग 16 चैनल। अधिकांश बड़े समूहों के सामने हुए और सत्य और अच्छी प्रतिष्ठा वाले कई व्यक्तियों द्वारा सुनाए गए। उदाहरण के लिए, 70 में से एक
चार मुट्ठी भोजन से तृप्त हुए लोग घटना का वर्णन करते हैं, जबकि बाकी लोग
चुप रहते हैं (यानी, वे उसका विरोध नहीं करते)। उनकी चुप्पी सहमति दर्शाती है। यह बात खास तौर पर सच्चे, सीधे और ईमानदार लोगों के लिए सच है
साथी जो हर झूठ को नकारते हैं और उसका विरोध करते हैं। नीचे दी गई घटनाएँ
अनेक लोगों द्वारा वर्णित किए गए हैं और गवाहों की चुप्पी से उनकी पुष्टि होती है, इस प्रकार प्रत्येक घटना अर्थ की दृष्टि से निश्चित हो जाती है।

इसके अलावा, इतिहास की पुस्तकों और पैगम्बर की जीवनियों में भी यह दर्ज है कि
साथियों ने कुरान और उसकी आयतों को सुरक्षित रखने के अलावा,
रसूल के कामों और कथनों को रिकॉर्ड करके सुरक्षित रखें, खास तौर पर चमत्कारों और ईश्वरीय आदेशों से संबंधित कामों को, और उनकी प्रामाणिकता की पुष्टि करें। उन्होंने कभी भी किसी तुच्छ कार्य या स्थिति की उपेक्षा नहीं की।

पैगंबर, जैसा कि परंपरा की पुस्तकों द्वारा पुष्टि की गई है।

जब पैगम्बर जीवित थे, तब चमत्कार और परम्पराएँ प्रचलित थीं।
धार्मिक आदेशों का आधार कई साथियों द्वारा लिखा गया था, विशेष रूप से "सात अब्दुल्ला", विशेष रूप से अब्दुल्ला इब्न अब्बास ("दुभाषिया"
कुरान के) और अब्दुल्ला इब्न अम्र इब्न अल-अस। करीब 30 या 40 साल बाद, हज़ारों ताबिउन शोधकर्ताओं ने इन्हें दर्ज किया, और बाद में चार इमामों पर
इस्लामी न्यायशास्त्र के विद्वान और हज़ारों समझदार परंपरावादी भी इसमें शामिल होंगे
उन्हें लिखें और प्रेषित करें.

पैगम्बर के प्रवास के दो शताब्दियों बाद, छह पुस्तकों के संकलनकर्ताओं ने
परम्पराओं की प्रतिष्ठित एवं सर्वाधिक प्रामाणिक पुस्तकें, जिनमें सबसे ऊपर हैं
इमाम अल-बुखारी और इमाम मुस्लिम ने इस पवित्र पुस्तक को संरक्षित करने का कार्य अपने कंधों पर लिया।
परंपराएँ। इस बीच, सावधानीपूर्वक आलोचकों ने अविश्वासियों या लापरवाह और अज्ञानी लोगों द्वारा बनाई गई झूठी रिपोर्टों की पहचान की। बाद की शताब्दियों में,
परम्पराओं को मनगढ़ंत और विकृतियों से अलग रखा जाता रहा
इब्न अल-जौजी और जलाल अल-दीन अल-सुयुती जैसे गहन ज्ञान वाले लोगों और सावधानीपूर्वक शोधकर्ताओं द्वारा, जिन्हें जागते हुए कई बार सम्मानित किया गया था
ईश्वर के दूत की उपस्थिति और बातचीत के साथ, जैसा कि पुष्टि की गई है
आध्यात्मिक बोध वाले।

इस प्रकार नीचे दिए गए चमत्कार अनेक सुरक्षित माध्यमों से हम तक आते हैं
और भरोसेमंद हाथ, जिसके लिए हम परमेश्वर को धन्यवाद देते हैं, क्योंकि यह उसकी कृपा से है।
किसी को भी उनकी प्रामाणिकता पर संदेह करने का अधिकार नहीं है। पैगंबर द्वारा भोजन की वृद्धि से संबंधित
प्रामाणिक रूप से वर्णित चमत्कारों के उदाहरण
उनके आशीर्वाद इस प्रकार हैं:

पहला उदाहरण: सहीह अल-बुखारी और सहीह अल-मुस्लिम, और अन्य
परंपरा की छह सबसे प्रामाणिक पुस्तकों में बताया गया है कि पैगम्बर की ज़ैनब से शादी के जश्न के दौरान, उम्म सुलयम
(अनस की मां)
उन्होंने कुछ मुट्ठी भर खजूर भूनकर अनस से कहा कि वे उन्हें पैगम्बर के पास ले जाएं।
उन्होंने ऐसा ही किया, और उनसे कहा गया: "जाओ और फलां-फलां को आमंत्रित करो (कुछ लोगों के नाम लेते हुए)
और जो कोई भी तुम्हें मिले।" अनस ने वैसा ही किया जैसा उसे बताया गया था, और धीरे-धीरे लगभग 300
साथियों ने पैगम्बर के कमरे और बड़े हॉल को भर दिया जहां गरीब,
विद्वान साथी रहते थे। पैगंबर ने उनसे कहा: "दस के गोले बनाओ।"
खजूर पर हाथ रखकर उसने प्रार्थना की और लोगों से मदद करने को कहा
सभी ने तब तक खाया जब तक वे संतुष्ट नहीं हो गए। फिर उसने अनस से कहा कि वह बर्तन साफ कर दे।
टेबल। अनस ने बाद में बताया: "जब मैंने टेबल पर खाना रखा तो मुझे नहीं पता था कि उसमें और खाना है या नहीं
बर्तन से बाहर निकलने पर या जब मैंने उसे हटाया।"110

दूसरा उदाहरण: अबू अय्यूब अल-अंसारी, जिन्होंने पैगम्बर मुहम्मद की मेजबानी की थी।
अपने प्रवास के कुछ महीनों बाद, वह बताता है: "मैंने दो लोगों के लिए पर्याप्त भोजन बनाया
लोग: ईश्वर के दूत और अबू बकर। हालाँकि, पैगंबर ने मुझसे कहा कि
30 प्रतिष्ठित अंसारी (सहायक) को आमंत्रित करें। तीस आदमी आए और खाना खाया। फिर उसने
मुझे और 60 लोगों को आमंत्रित करने के लिए कहा, जो मैंने किया। वे भी आए और खाया। भगवान का
फिर मैसेंजर ने मुझे 70 और लोगों को आमंत्रित करने को कहा, जो मैंने किया। वे आए और खाना खाया।
जब उन्होंने खाना खत्म किया तो कटोरे में अभी भी खाना बचा हुआ था। उस चमत्कार को देखने के बाद, खाने वाले
सभी लोगों ने वफादारी की शपथ ली।
एक सौ अस्सी आदमियों ने दो लोगों के लिए तैयार किया गया खाना खाया।"111

तीसरा उदाहरण: उमर, अबू हुरैरा, सलमा अल-अक़्वा और अबू अम्रत
अल-अंसारी की रिपोर्ट के अनुसार, एक सैन्य अभियान के दौरान सेना के पास भोजन नहीं था।
जब पैगंबर को इसकी जानकारी मिली तो उन्होंने उनसे कहा कि वे अपना सारा भोजन इकट्ठा कर लें।
हर कोई कुछ खजूर लेकर आया था - सबसे बड़ी संख्या कुछ मुट्ठी भर खजूर की थी -
और उन्हें एक चटाई पर रख दिया। सलमा बताती हैं: "मैंने अनुमान लगाया कि यह राशि लगभग 100 डॉलर होगी।
एक लेटे हुए बकरे के बराबर।" ईश्वर के दूत ने इसकी वृद्धि के लिए प्रार्थना की और
सभी सैनिक अपना कटोरा लेकर आए। वे आगे बढ़े और प्रत्येक सैनिक ने अपना कटोरा उठाया।
कटोरा भर गया। फिर भी, कुछ खाना बच गया। एक साथी जो

[110] बुखारी, 4:234; बहाक़ी, दलैल, 3:465; मुस्लिम द्वारा भी संबंधित.
[111] अल-शिफ़ा', 1:292; तबरानी, इब्न कथिर और बहाकी द्वारा संबंधित।

बाद में उन्होंने कहा: "जिस तरह से खजूर प्रचुर मात्रा में आए, उससे मुझे एहसास हुआ कि यदि पृथ्वी पर सभी लोग आ जाएं, तो भी पर्याप्त होगा।”112

चौथा उदाहरण: बुखारी और हज़रत मुहम्मद बिन सलमान सहित परम्परा की प्रामाणिक पुस्तकें। मुस्लिम, रिपोर्ट करते हैं कि 'अब्द अल-रहमान इब्न अबू बक्र ने कहा: "हम, 130 साथी, एक अभियान पर भगवान के दूत के साथ थे। चार से आटा
मुट्ठी भर गेहूं रोटी बनाने के लिए तैयार किया गया था, एक बकरा मारा गया था और पकाया गया, और उसका कलेजा और गुर्दे भून दिए गए। मैं भगवान की कसम खाता हूँ कि भगवान का मैसेंजर ने हम में से प्रत्येक को भुने हुए हिस्सों में से एक टुकड़ा दिया और पका हुआ हिस्सा हमारे सामने रख दिया। कटोरों में मांस। हमने तब तक खाया जब तक हमारा पेट नहीं भर गया, और फिर भी कुछ बचा हुआ था मैंने उसे ऊँट पर लाद दिया।”113

पाँचवाँ उदाहरण: जैसा कि प्रामाणिक पुस्तकों में दर्ज है, जाबिर अल-अंसारी बताते हैं शपथ के तहत: "ट्रेंच या अहज़ाब की लड़ाई के दौरान, हमारा भोजन ऐसा लग रहा था लगभग 1,000 लोगों द्वारा इससे बनी रोटी खाने के बाद भी इसकी मात्रा कम नहीं हुई चार मुट्ठी जौ और एक पका हुआ बकरा (का मांस)। भोजन था मेरे घर में खाना पकाया गया। और जब सब लोग खाकर चले गए, तब भी बर्तन में मांस उबल रहा था और आटे से रोटी बनाई जा रही थी। ईश्वर के दूत
उसने अपने मुँह से पानी आटे और बर्तन में डाला, और फिर बहुतायत के लिए प्रार्थना की।”114 चूँकि इस घटना को 1,000 लोगों ने देखा था, जाबिर ने शपथ लेकर यह बात कही थी और किसी ने भी इसका खंडन नहीं किया था, इसलिए इसे इतना निश्चित माना जा सकता है मानो इसे 1,000 लोगों ने मिलकर कहा हो।

छठा उदाहरण: जैसा कि प्रामाणिक रूप से बताया गया है, अबू तल्हा (अनस के चाचा) ने कहा: "ईश्वर के दूत ने थोड़ी सी राई की रोटी से 70 से 80 लोगों को खाना खिलाया जिसे अनस अपनी बांह के नीचे ले आया। पैगम्बर ने रोटी तोड़ने का आदेश दिया छोटे-छोटे टुकड़ों में काटा और फिर बहुतायत के लिए प्रार्थना की।
सभी के लिए पर्याप्त जगह होने के कारण, लोग दस-दस की पाली में खाना खाते थे। सभी लोग संतुष्ट होकर लौटते थे।”115

सातवाँ उदाहरण: शिफा अल-शरीफ और सहीह अल-मुस्लिम सहित परम्परा की प्रामाणिक पुस्तकों में बताया गया है कि जाबिर अल-अंसारी ने कहा: “एक आदमी ने पूछा
अल्लाह के रसूल से अपने परिवार के भरण-पोषण के लिए भोजन माँगा। रसूल ने उसे आधा दिया जौ का एक बोझ। वह और उसका परिवार लंबे समय तक उसमें से खाते रहे। जब उन्होंने देखा कि यह घट नहीं रहा था, उन्होंने यह देखने के लिए इसे मापा कि इसमें कितना था कम हो गया। इससे बहुतायत का आशीर्वाद समाप्त हो गया, और जौ शुरू हो गया

---

112 मुस्लिम, संख्या 1729, बुखारी द्वारा भी संदर्भित।

113 मुस्लिम, संख्या 2057; हाकिम, 2:618; बुखारी और इब्न हंबल द्वारा भी संदर्भित।

114 मुस्लिम, नहीं. 3029; बुखारी, 5:138; इब्न हनबल, मुसनद, 3:218.

115 बुखारी, 4:234; मुस्लिम, नहीं. 2040; बहाक़ी, 6:88; इब्न हनबल, 3:218.

जब उस आदमी ने भगवान के दूत को बताया कि क्या हुआ था, तो उसने कहा
उत्तर दिया: 'यदि आपने इसे न मापा होता, तो यह आपके जीवन भर के लिए पर्याप्त होता।'"116

आठवाँ उदाहरण: सुनन अल-तिर्मिज़ी, सुनन जैसी प्रामाणिक किताबें
अल-नसाई, दलाईल अल-बहाकी, शिफ़ा अल-शरीफ़, और अन्य लोग समुरा इब्न को उद्धृत करते हैं
जुनदुब ने बताया कि ईश्वर के रसूल के पास मांस का एक कटोरा लाया गया और उन्हें खिलाया गया।
सुबह से शाम तक लोगों के समूह।117 जैसा कि इस अनुभाग में बताया गया है
इन परम्पराओं की प्रामाणिकता पर जब परिचय दिया गया तो ऐसा लगा मानो वहां उपस्थित सभी लोग
इस घटना को बताया और सामुरा ने इसे उनकी ओर से और उनके साथ साझा किया
अनुमोदन।

नौवां उदाहरण: जैसा कि ऐसे विश्वसनीय और भरोसेमंद शोधकर्ताओं द्वारा बताया गया है
क़ादी 'इयाद (शिफ़ा' अल-शरीफ़ के लेखक), इब्न अबी शायबा, और तबरानी, अबू
हुरैरा कहती हैं: "अल्लाह के रसूल ने मुझे सुफ्फा के गरीब लोगों को आमंत्रित करने के लिए कहा था118
जो मस्जिद के हॉल को अपने घर के रूप में इस्तेमाल करते थे। वहाँ 100 से अधिक लोग थे
मैंने उन्हें ढूंढा और उन सभी को बुलाया। एक प्लेट में खाना रखा गया
हमारे सामने थाली रखी गई थी। हम सबने उसमें से अपनी इच्छानुसार खाया। जब हम उठे, तो थाली में से कुछ भी नहीं निकला।
यह उतना ही भरा हुआ था जितना कि हमारे सामने रखे जाने पर था। हालाँकि, हमारी उँगलियों के निशान
खाने पर जो लिखा था उससे पता चलता था कि हमने इसे खाया है।"119 हालाँकि केवल अबू हुरैरा ही
इस घटना का वर्णन करते हुए, यह इतना निश्चित है जैसे कि सुफ्फा के प्रत्येक सदस्य ने इसे वर्णित किया हो, क्योंकि अबू हुरैरा उनके नाम से वर्णित
करते हैं और उनकी पुष्टि पर भरोसा करते हैं। क्या ऐसे पूर्ण, सत्यनिष्ठ लोग चुप रहते यदि यह वर्णन सत्य न होता?

दसवां उदाहरण: इमाम अली कहते हैं कि ईश्वर के रसूल ने लोगों को इकट्ठा किया।
अब्दुल मुत्तलिब के वंशज, लगभग 40 लोग, जिनमें से कुछ खाना खा सकते थे
एक युवा ऊँट को एक बार में एक गैलन से ज़्यादा दूध पिलाना। लेकिन भगवान का
मैसेंजर ने केवल मुट्ठी भर खाना तैयार किया था। उन्होंने तृप्त होने तक खाया, और
भोजन की मात्रा कम नहीं हुई। फिर रसूल ने उनके लिए एक चीज़ लायी
दूध से भरा लकड़ी का कटोरा, जो शायद केवल तीन या चार लोगों के लिए पर्याप्त हो।
वे तृप्त होने तक पीते रहे, और दूध की मात्रा कम नहीं हुई।120 यह
चमत्कार उतना ही निश्चित है जितना अली की बहादुरी और वफादारी।

---

116 शिफ़ा', 1:91; मुस्लिम, नहीं. 2281; बहाक़ी, 6:114.

117 तिर्मिज़ी, नहीं. 2629; दारिमी, हकीम और इब्न हनबल द्वारा भी संबंधित।

118 सुफ्फा के लोग गरीब मुहाजिरीन (मदीना में प्रवास करने वाले) थे जो मदीना में रहते थे।
मस्जिद के हॉल में जाकर उन्होंने खुद को इस्लाम के प्रति समर्पित कर दिया, खास तौर पर पैगंबर की पवित्रता को बनाए रखने के लिए।
परंपराएँ। पैगम्बर ने उनकी आजीविका का प्रबंध किया। (ट्र.)

119 शिफ़ा', 1:293; बहाक़ी, 6:101; तबरानी और इब्न हनबल द्वारा भी संबंधित।

120 मजमा अल-ज़वायद, 8:302, इब्न हनबल, बज़ार और तबरानी द्वारा संबंधित।

ग्यारहवाँ उदाहरण: अली और फातिमा की शादी की दावत में, भगवान की कृपा से रसूल ने बिलाल से कहा: "कुछ मुट्ठी आटे की रोटी बनाओ, और एक ऊँट का बच्चा कटवा दो।" बिलाल बताते हैं: "मैं खाना लाया, और उसने आशीर्वाद के लिए उस पर अपना हाथ रखा। बाद में, साथी अंदर आए समूह ने खाया और चले गए। पैगंबर ने बचे हुए भोजन की प्रचुरता के लिए प्रार्थना की और अपनी प्रत्येक पत्नियों को एक पूरा कटोरा भेजा, यह कहते हुए कि उन्हें खाना चाहिए और जो कोई उनके पास आए, उसे भोजन कराते थे।"121 ऐसी धन्य प्रचुरता आवश्यक थी इस तरह के एक धन्य विवाह के लिए.

बारहवां उदाहरण: इमाम जाफर अल-सादिक ने बताया कि फातिमा ने वह केवल अपने और अली के लिए ही पर्याप्त भोजन जुटा पाती थी। उसने अली को ईश्वर के दूत को आमंत्रित करने के लिए भेजा उनके साथ खाना खाने के लिए। वह आया और उनसे कहा कि वे हर एक के लिए एक डिश खाना भेजें अपनी पत्नियों के साथ भोजन किया और फिर बचा हुआ भोजन उनके लिए अलग रख दिया, अली, फातिमा और उनके बच्चे। फातिमा कहती हैं: "जब हमने बर्तन हटाया, तब भी यह पूरी तरह भरा हुआ था भगवान की इच्छा से, हमने इसे काफी लंबे समय तक खाया।"122 मुझे आश्चर्य है कि आप क्यों इस चमत्कार पर ऐसे विश्वास मत करो जैसे कि तुमने इसे स्वयं देखा हो, क्योंकि यह हम तक पहुंचता है इतने प्रतिष्ठित और सम्मानित कथावाचकों के माध्यम से। शैतान भी ऐसा कर सकता है इस पर विवाद मत करो!

तेरहवाँ उदाहरण: अबू दाऊद जैसे सच्चे परंपरा अधिकारी, अहमद इब्न हनबल, और बहाकी डुकैन अल-अहमद इब्न साद से बयान करते हैं अल-मुज़ैन, नुमान इब्न मुक़र्रिन अल-अहमद अल-मुज़ैन से, जो साथ में थे उसके छह भाई एक साथी थे, और जरीर से निम्नलिखित घटना हुई मूलतः उमर द्वारा रिपोर्ट की गई और विभिन्न चैनलों के माध्यम से प्रसारित की गई: "एक बार ईश्वर के रसूल ने उमर को आदेश दिया: 'अहमसी जनजाति के 400 घुड़सवारों को उनकी यात्रा के लिए भोजन प्रदान करें।' उमर ने उत्तर दिया: 'ऐ रसूल! भगवान की कृपा से, सभी प्रावधान एक साथ एक युवा ऊंट के आकार के बारे में हैं पैगम्बर ने उससे कहा कि वह उसे उन्हें दे दे। तारीखों के अनुसार, उमर ने उन्हें 400 घुड़सवारों के लिए पर्याप्त रकम दी। बाद में इस घटना की रिपोर्ट करते समय कहते हैं: 'खाना कम नहीं हुआ।'"123 इस चमत्कार की पुष्टि गवाहों की चुप्पी से होती है। ऐसे कथनों को नज़रअंदाज़ न करें सिर्फ इसलिए कि वे केवल दो या तीन व्यक्तियों द्वारा संबंधित हैं, क्योंकि मौन द्वारा पुष्टि उनके अर्थ को तवातुर का अधिकार और निश्चितता प्रदान करती है अर्थ से.

---

121 शिफ़ा': 1:297; बहाक़ी, दलैल, 3:160.

122 शिफ़ा', 1:294; इब्न हजर, अल-मतालिब अल-'आलिया, 4:73। संचरण की श्रृंखला इस प्रकार है: अपने पिता मुहम्मद अल-बाकिर से, अपने पिता इमाम ज़ैन अल-अबिदीन से, अली से।

123 मजमा अल-ज़वायद, 8:304; बहाक़ी, 5:365; इब्न हनबल, 5:445.

चौदहवाँ उदाहरण: जैसा कि बुखारी और मुस्लिम सहित परम्परा की प्रामाणिक पुस्तकों में वर्णित है , जाबिर के पिता की मृत्यु यहूदियों के भारी कर्ज में डूबे होने के कारण हुई।
जाबिर ने अपने पिता की सारी संपत्ति लेनदारों को दे दी, लेकिन वे संतुष्ट नहीं थे। उसके बगीचे में लगे फल सालों तक बाकी कर्जों को नहीं चुका पाते। ईश्वर के दूत ने कहा: "फलों को तोड़ो और उन्हें ढेर कर दो।" उसने ऐसा ही किया।

फिर पैगम्बर ने उनके चारों ओर चक्कर लगाया और प्रार्थना की। जाबिर ने अपने पिता का कर्ज चुका दिया, लेकिन बाग की वार्षिक उपज के बराबर फल अभी भी बचे हुए थे।
एक और रिवायत के मुताबिक जो कुछ बचा वह उसके क़र्ज़दारों को दिए गए पैसे के बराबर था। इस बात से यहूदी क़र्ज़दार बहुत हैरान हुए।124
चूँकि यह मोजिज़ा अपने गवाहों की तरफ़ से बयान किया गया है, इसलिए इसका मतलब तवातुर की तसल्ली से भरा हुआ है ।

पंद्रहवाँ उदाहरण: तिर्मिज़ी और बैहकी जैसे सावधानीपूर्वक शोधकर्ता अबू हुरैरा के कथन को उद्धृत करते हैं: “एक युद्ध के दौरान (एक अन्य वर्णन के अनुसार “तबुक की लड़ाई के दौरान”) सेना का भोजन समाप्त हो गया। ईश्वर के दूत ने पूछा: 'क्या कुछ भी नहीं है?' मैंने उत्तर दिया: 'मेरे काठी के थैले में कुछ (दूसरे संस्करण के अनुसार “15”) खजूर बचे हैं।' उन्होंने मुझे उन्हें लाने के लिए कहा, जो मैंने किया। अपना हाथ थैले में डालते हुए, उन्होंने मुट्ठी भर खजूर निकाले और उन्हें एक प्लेट में रखते हुए प्रचुरता के लिए प्रार्थना की। फिर उन्होंने सेना को दस-दस के समूहों में बुलाया। जब सभी ने खा लिया, तो ईश्वर के दूत ने मुझसे कहा: 'वह (थैला) ले लो जो तुम लाए हो, इसे पकड़ो और इसे उल्टा मत करो।' बाद में, पैगंबर के समय और फिर अबू बकर, उमर और उस्मान के समय में, मैंने उन खजूरों को खाया। (एक अन्य संस्करण में, अबू हुरैरा ने कहा: "मैंने उनमें से कई भार भगवान के मार्ग में दिए। जब उस्मान शहीद हुए, तो खजूर और थैला लूट लिया गया।"125)

अबू हुरैरा ईश्वर के रसूल, ब्रह्मांड के शिक्षक और सृष्टि के गौरव के पवित्र विद्यालय सुफ्फा में एक निरंतर और महत्वपूर्ण छात्र और शिष्य थे। इसके अलावा, पैगंबर ने अबू हुरैरा के लिए एक मजबूत याददाश्त के लिए प्रार्थना की थी। यह चमत्कार, जो कई लोगों के सामने हुआ था, इसलिए इसे निश्चित माना जाना चाहिए जैसे कि इसे पूरी सेना द्वारा बताया गया हो।

सोलहवाँ उदाहरण: हदीस की सटीक किताबों में, जिसमें बुखारी भी शामिल है, यह वर्णन है कि एक बार अबू हुरैरा को भूख लगी और वह अल्लाह के रसूल के पीछे-पीछे उनके घर चले गए। उन्होंने देखा कि उनके लिए दूध का एक कटोरा उपहार के रूप में लाया गया था, अल्लाह के रसूल ने उन्हें दूध पिलाया।

---

124 बुखारी, 3: 210; अबू दाऊद, 1:17; इब्न हनबल और नासाई द्वारा भी संबंधित।

125 शिफ़ा', 1:295, इब्न हनबल, बहाकी और तिर्मिज़ी द्वारा संबंधित।

रसूल ने उसे सुफ्फा के लोगों को आमंत्रित करने के लिए कहा। अबू हुरैरा कहते हैं:
“मैंने खुद से कहा: ‘मैं यह सारा दूध पी सकता हूँ, क्योंकि मुझे इसकी सबसे ज़्यादा ज़रूरत है।’ लेकिन
चूंकि यह पैगम्बर का आदेश था, इसलिए मैं उन सभी को ले आया - 100 से अधिक लोग।
रसूल ने मुझे दूध उन्हें देने को कहा। मैंने प्रत्येक को कटोरा दिया,
एक-एक करके, और उनमें से प्रत्येक ने तृप्त होने तक पीया। अंत में पैगंबर ने कहा
मैं: ‘हम दोनों बचे हैं। तुम पहले पियो!’ जब मैं पी रहा था, तो उसने मुझसे बार-बार कहा: ‘और पियो,’ जब तक मैंने कहा:
‘मैं उस महान व्यक्ति की कसम खाता हूँ जिसने मुझे सबसे बड़ा इनाम दिया है।’
मैंने तुम्हें यह सत्य बताकर भेजा है कि मैं अब और अधिक नहीं पी सकता।' तब प्रभु ने तुम्हें यह सत्य बताकर भेजा है कि मैं अब और अधिक नहीं पी सकता।
पैगम्बर ने बाकी का पानी पी लिया और कहा: 'अल्लाह के नाम पर' और उसकी प्रशंसा की।'”126

यह चमत्कार, जो दूध के समान ही शुद्ध और मीठा है, परम्परा की सभी छह प्रामाणिक पुस्तकों में वर्णित है, विशेषकर इमाम बुखारी द्वारा, जिन्होंने 500,000 पंक्तियाँ याद की थीं।
परंपराएँ। इसके अलावा, यह अबू हुरैरा, एक वफादार, प्रसिद्ध द्वारा वर्णित है
पैगंबर के पवित्र स्कूल सुफ्फा का छात्र और एक साथी
एक गहरी याददाश्त। वह उस स्कूल के सभी अन्य छात्रों का प्रतिनिधित्व करता था, और इसलिए उसका
रिपोर्ट में तवातुर की निश्चितता है । ऐसा सच्चा व्यक्ति, जो
उन्होंने अपना जीवन इस्लाम और पैगंबरी परंपराओं के लिए समर्पित कर दिया, जिन्होंने यह परंपरा सुनी और बताई कि: "जो कोई भी जानबूझकर मेरे बारे में झूठ बोलता है उसे
आग में अपनी सीट के लिए तैयार हो जाओ," कोई निराधार घटना या कहावत बताइए?
इससे उन सभी परम्पराओं के मूल्य और प्रामाणिकता को हानि पहुँचेगी जिन्हें उसने याद किया था और वह सूफ़ा के लोगों के विरोध का लक्ष्य बन जायेगा!

हे प्रभु, आपने अपने पुत्र पर जो आशीर्वाद बरसाया है, उसके लिए मैं आपका आभारी हूँ।
ऐ रसूल, जो उपकार तूने हमें प्रदान किये हैं, उन पर प्रचुरता प्रदान कर!

एक महत्वपूर्ण बात: कमज़ोर चीज़ें आपस में जुड़ जाने पर मज़बूत बन जाती हैं। बारीक मुड़े हुए धागे मज़बूत रस्सी बन जाते हैं और लपेटने पर मज़बूत धागे मज़बूत हो जाते हैं।
रस्सियाँ नहीं टूट सकतीं। अब, 15 तरह के चमत्कारों में से हमने केवल
एक प्रकार, जो बहुतायत के आशीर्वाद से संबंधित है। अब तक उद्धृत 16 उदाहरण इस प्रकार का केवल एक भाग बनाते हैं। प्रत्येक उदाहरण मजबूत है
पैगम्बर होने का प्रमाण देने के लिए पर्याप्त है। हालाँकि, अगर असंभव मान लिया जाए तो कुछ
उन्हें कमजोर माना जाता था, फिर भी हम उन्हें ठीक से कमजोर नहीं कह सकते थे, क्योंकि जो भी मजबूत के साथ जुड़ जाता है वह भी मजबूत हो जाता है।

ऊपर बताए गए 16 उदाहरणों पर एक साथ विचार करने पर यह पता चलता है कि
एक महान और मजबूत चमत्कार जिसका अर्थ है तवातुर की निश्चित शक्ति । और यह चमत्कार, जब चमत्कारों के 14 अन्य भागों के साथ जुड़ जाता है
बहुतायत का अभी तक उल्लेख नहीं किया गया है, एक सर्वोच्च चमत्कार प्रकट करता है जितना मजबूत

126 तिर्मिज़ी, नहीं. 2479; बुखारी, 8:120; हकीम, 3:15; बहाक़ी, 4:101.

सबसे अटूट केबल। अंत में, इस सर्वोच्च चमत्कार को अन्य 14 प्रकार के चमत्कारों में जोड़ें और देखें कि वे मुहम्मद की पैगंबरी के लिए कितना निश्चित, निर्णायक और अकाट्य प्रमाण प्रदान करते हैं।

इस प्रकार प्रमाणों के इस संग्रह से निर्मित उनकी नबूवत का स्तंभ, एक पहाड़ की तरह मजबूत है। आप उन लोगों के संदेहों को समझ सकते हैं जो उनकी नबूवत पर विश्वास नहीं करते हैं, उन लोगों के संदेहों के रूप में जो उदात्त और स्थापित आकाशों को कमजोर या नाजुक मानते हैं क्योंकि उनके पास दृश्यमान स्तंभ नहीं हैं। प्रचुरता के ये चमत्कार दर्शाते हैं कि पैगंबर मुहम्मद सर्वशक्तिमान और सर्व-दयालु के इतने प्रिय दूत और सम्मानित सेवक थे कि वह, जो सृष्टि के प्रावधानों की आपूर्ति करता है, ने जब भी आवश्यक हो, अपने सामान्य कार्य करने के तरीके को बदल दिया और उन्हें अदृश्य से दावतें भेजीं - जैसे कि वह शून्य से सृजन करता है।

अरब में पानी और कृषि की कमी है। इसलिए इसके लोग, खास तौर पर इस्लाम के शुरुआती दौर में साथी, अक्सर भोजन और पानी की कमी से जूझते थे। नतीजतन, उनके कुछ सबसे बड़े चमत्कार भोजन और पानी से जुड़े थे। पैगम्बर होने के प्रमाण के बजाय, ये चमत्कार ज़रूरत के जवाब थे, एक दिव्य उपहार, भगवान का एक अनुग्रह, और उन लोगों के लिए सबसे दयालु व्यक्ति द्वारा प्रदान की गई दावत थी, जिन्होंने किसी भी चमत्कार को देखने से पहले उनकी पैगम्बर होने की पुष्टि की थी। जब चमत्कार हुए, तो उनका विश्वास और दृढ़ विश्वास और भी मजबूत, उज्ज्वल और अधिक ज्वलंत हो गया।

आठवाँ चिन्ह: यह भाग पानी से जुड़े चमत्कारों के बारे में है।

परिचय: अगर किसी घटना की रिपोर्ट में कई लोगों का उल्लेख न हो तो वह घटना अवश्य घटित हुई है, भले ही वह केवल एक या दो व्यक्तियों द्वारा रिपोर्ट की गई हो, क्योंकि लोग स्वभाव से ही झूठ को झूठ कहने के लिए प्रवृत्त होते हैं। अगर संबंधित व्यक्ति सहाबी थे, जो आम लोगों की तुलना में झूठ के प्रति अधिक असहिष्णु थे, अगर वर्णित घटना ईश्वर के रसूल से संबंधित थी, और अगर व्यक्तिगत वर्णनकर्ता कोई प्रसिद्ध सहाबी था, तो वह वर्णनकर्ता सभी गवाहों की ओर से वर्णन करता है।

वैसे भी, नीचे दिए गए प्रत्येक चमत्कार विभिन्न संचरण मार्गों से नीचे आए और कई साथियों द्वारा हजारों सटीक ताबिउन विद्वानों को सौंपे गए। इन विद्वानों ने, बदले में, उन्हें अगले युग के अधिकारियों को प्रेषित किया। प्रत्येक युग के सावधानीपूर्वक शोधकर्ताओं ने उन्हें अत्यंत सावधानी और सम्मान के साथ अपने उत्तराधिकारियों को सौंप दिया। इस प्रकार वे हजारों विश्वसनीय हाथों से गुजरने के बाद हमारे पास पहुँचे।

इसके अलावा, पैगंबर और उनके मार्गदर्शक खलीफाओं के जीवित रहते संकलित परंपराओं के पाठ सुरक्षित रूप से पैगंबर के हाथों में पहुंच गए।

बुखारी और मुस्लिम जैसे सबसे प्रतिभाशाली परंपरा विद्वान, जिन्होंने सबसे सावधानीपूर्वक जांच और वर्गीकरण, एकत्रित, प्रस्तुत और उन्हें सिखाया। भगवान उन्हें भरपूर इनाम दे!

ईश्वर के रसूल की उंगलियों से पानी का बहना, साथ ही कई लोगों द्वारा इसे पीने से, तवातुर की निश्चितता होती है , क्योंकि यह संबंधित है उन लोगों द्वारा जो झूठ पर सहमत होने में असमर्थ हैं। इसके अलावा, यह हुआ लोगों के बड़े समूहों के सामने तीन बार। कई समझदार शोधकर्ता (विशेष रूप से बुखारी, मुस्लिम, इमाम मलिक, इमाम शुअयब और इमाम क़तादा) इस चमत्कार को प्रसिद्ध साथियों के एक समूह (उनमें अनस,

जाबिर और इब्न मसऊद) ऐसे चमत्कारों के असंख्य उदाहरणों में से हम यहां केवल नौ का ही उल्लेख कर रहे हैं।

पहला उदाहरण: बुखारी, मुस्लिम और परंपरा की अन्य प्रामाणिक पुस्तकें हज़रत अनस ने रिवायत किया कि: “ज़ौरा में अल्लाह के रसूल के साथ हम 300 लोग थे। उन्होंने हमें दोपहर की नमाज़ के लिए वुज़ू करने को कहा, लेकिन हम ऐसा नहीं कर सके। हमें पर्याप्त पानी नहीं मिला। उन्होंने हमें थोड़ा पानी लाने का आदेश दिया, जो हमने किया, और उसने अपने हाथ उसमें डुबाए। मैंने देखा कि उसकी उंगलियों से फव्वारे की तरह पानी बह रहा था। सभी 300 लोगों ने उस पानी से वुज़ू किया और उसमें से पानी पिया।127
अनस ने यह घटना 300 लोगों की ओर से बताई है। क्या वे वहां रह पाते?
अगर वह झूठ बोल रहा होता तो क्या वह चुप रहता?

दूसरा उदाहरण: विश्वसनीय परम्परागत पुस्तकों, विशेषकर सहीह अल-बुखारी और सहीह अल-मुस्लिम में जाबिर इब्न अब्दुल्ला अल-अंसारी को यह कहते हुए वर्णित किया गया है:
"हुदैबिया के अभियान के दौरान हम (1,500 लोग) प्यासे हो गए। भगवान की कृपा से हम प्यासे हो गए। रसूल ने चमड़े की पानी की थैली (क़िरबा) से वुज़ू किया और फिर पानी में डुबोया मैंने देखा कि उसकी उंगलियों से पानी फव्वारे की तरह बह रहा है। सभी 1,500 लोगों ने उसमें से पानी पिया और अपनी पानी की थैलियाँ भर लीं।" सलीम इब्न अबी अल-जाद ने जाबिर से पूछा कि वहाँ कितने लोग थे, और उसने उत्तर दिया: "
पानी एक लाख लोगों के लिए भी पर्याप्त होता, लेकिन
हम में से केवल 1,500 लोग ही

होंगे।”128 चूँकि इस चमत्कार को 1,500 लोगों ने देखा था, इसलिए इसके अनुयायियों की संख्या पत्रकारों की संख्या 1,500 मानी जानी चाहिए, क्योंकि लोग विरोध करते हैं और मना कर देते हैं और जहाँ तक सहाबा का सवाल है, जिन्होंने अपनी आत्मा और अपनी सम्पत्ति का बलिदान कर दिया, सत्य और सच्चाई के लिए अपने पिता और माता, कबीले और मातृभूमि को त्यागने वाले, क्या झूठ का सामना होने पर वे चुप रह सकते थे, खासकर झूठ बोलने के बाद?
पैगंबर की चेतावनी सुनकर: "जो कोई भी मेरे बारे में झूठ बोलता है-

---

[127] नसाई, 1:60; बुखारी, 4:233; मुस्लिम, संख्या 2279; तिर्मिज़ी, संख्या 3635.

[128] मुस्लिम, नहीं. 1856; बुखारी, 4:234; बहाक़ी, 4:110.

क्या उन्हें आग में बैठने के लिए तैयार होना चाहिए? उनकी चुप्पी स्वीकारोक्ति का संकेत देती है-
ऐन्स.

तीसरा उदाहरण: परम्परा की प्रामाणिक पुस्तकों के अनुसार, उपरोक्त
सभी अल-बुखारी और अल-मुस्लिम, जाबिर बताते हैं: "बुवत के अभियान के दौरान,
अल्लाह के रसूल ने वज़ू का हुक्म दिया, हमने जवाब दिया कि पानी नहीं है।
संदेशवाहक ने हमें थोड़ा सा खोजने की कोशिश करने को कहा। हमें थोड़ी सी रकम मिल गई
पानी का। उसने अपना हाथ उस पर रखा और एक प्रार्थना पढ़ी, जो मैं नहीं कर सका
उन्होंने सुना, और फिर कारवां में सबसे बड़ा पानी का कुंड मांगा। वे लाए
मैंने उसे अल्लाह के रसूल के सामने रख दिया, और उन्होंने उसमें अपने हाथ रख दिए।
मैंने उसके हाथों पर थोड़ा पानी डाला और उसकी उंगलियाँ अलग कर दीं। मैंने देखा
उसकी उंगलियों से भरपूर पानी बहकर हौद में भर गया। मैंने उन लोगों को बुलाया जिन्होंने
उन्हें पानी की ज़रूरत थी। जब उन्होंने पानी पीया और वुज़ू के लिए ले गए, तो मैंने पैग़म्बर से कहा
कि सभी लोग आ गए हैं। उसने अपने हाथ ऊपर उठाए, और कुंड अभी भी भरा हुआ छोड़ दिया
पूरी तरह से।"129

इस चमत्कार में तवातुर के अर्थ की निश्चितता है , क्योंकि जाबिर,
उस समय पैगम्बर का सेवक था और इस प्रकार घटना में प्रथम स्थान रखता था,
इब्न मसूद ने भी इसे सभी गवाहों के नाम से बताया है।
"मैंने पैगम्बर की उंगलियों से पानी को फव्वारे की तरह बहते देखा।"130

इन तीन उदाहरणों पर एक साथ विचार करें और देखें कि क्या अकाट्य और
यह निश्चित चमत्कार है। एक साथ मिलकर, वे साबित करते हैं कि पानी बह रहा है
पैगम्बर की उंगलियों पर किया गया यह चमत्कार स्पष्ट रूप से तवातुर है। यह चमत्कार इतना महान है कि
मूसा द्वारा एक चट्टान के 12 अलग-अलग बिंदुओं से पानी निकलने का चमत्कार इसके समकक्ष नहीं माना जा
सकता। चट्टान से पानी का फूटना संभव है, और
सामान्य घटनाओं में इसके उदाहरण मिल सकते हैं, लेकिन पानी के लिए कोई समानांतर नहीं है
मांस और हड्डियों से प्रचुर मात्रा में बहता हुआ।

चौथा उदाहरण: इमाम मलिक अपने मुवत्ता में मुआद से बयान करते हैं
इब्न जबल ने लिखा है कि: "तबुक के अभियान के दौरान, हम एक फव्वारा के पास आए
वह मुश्किल से बह रहा था - जेट एक पतली डोरी जितनी मोटी थी। भगवान का
रसूल ने हमें थोड़ा सा पानी इकट्ठा करने को कहा। कुछ लोग अपनी हथेलियों में थोड़ा सा पानी लेकर आए, जिससे
रसूल ने अपना चेहरा और हाथ धोया।
फिर हमने उसे वापस फव्वारे में डाल दिया। अचानक फव्वारे को पानी देने वाली धारा साफ हो गई, और पानी
इतनी अधिक मात्रा में बहने लगा कि पानी की कमी हो गई।
पूरी सेना के लिए।"

---

129 मुस्लिम, संख्या 3006-14.

130 बुखारी, 4:235, तिर्मिज़ी और नसाई द्वारा भी वर्णित।

इमाम इब्न इसहाक, कथावाचकों में से एक, रिपोर्ट करते हैं: "फव्वारा अच्छी तरह से बह गया है धरती के नीचे गरजने जैसी आवाज के साथ। ईश्वर के दूत ने मुआज़ से कहा कि वह इस जगह को बगीचों में बदलते देखने के लिए लंबे समय तक जीवित रह सकता है। और इसलिए यह हुआ.131

पाँचवाँ उदाहरण: बुखारी (बारा से) और (सलामा इब्न अल-अकवा से), साथ ही अन्य सटीक पुस्तकें (अन्य कथावाचकों से), बताती हैं: "हुदैबिया के अभियान के दौरान हम में से चार सौ लोग एक कुएँ के पास पहुँचे। वहाँ 50 लोगों के लिए मुश्किल से पानी पर्याप्त था। हमने सारा पानी बाहर निकाल दिया कुआँ। ईश्वर के दूत आए और कुएँ के पास बैठ गए और एक बाल्टी पानी माँगा, जिसे हमने भरकर लाया। उन्होंने अपनी लार बाल्टी में डाली, प्रार्थना की और फिर इस पानी को वापस कुएँ में डाल दिया। अचानक पानी भर गया

पानी बहने लगा और कुएँ के किनारे तक पहुँच गया। पूरी सेना और उनके जानवर उन्होंने उसमें से तब तक पिया जब तक कि उनकी तृप्ति नहीं हो गई, और फिर उन्होंने अपनी थैलियाँ पानी से भर लीं।"132

छठा उदाहरण: प्रामाणिक परंपरा की पुस्तकें, जैसे मुस्लिम और इब्न जरीर अल-तबारी विशेष रूप से, अबू क़तादा के माध्यम से बताते हैं: "हम जा रहे थे मदद के लिए, क्योंकि कमांडर मुता की लड़ाई में शहीद हो गए थे। मेरे पास पानी की थैली थी। ईश्वर के दूत ने मुझसे कहा था: 'अपना पानी संभाल कर रखो बैग को सावधानी से रखना, क्योंकि यह हमारे लिए बहुत उपयोगी होगा।' इसके तुरंत बाद प्यास ने जकड़ लिया हम 72 थे (अल-तबारी के अनुसार 300)। ईश्वर के दूत ने मुझसे कहा: 'लाओ तुम्हारा पानी का थैला।' मैंने वैसा ही किया। उसने उसे लिया और उसके किनारे को अपने होठों तक लाया। मैं नहीं चाहता कि तुम पानी का थैला लो। पता नहीं उसने उसमें सांस ली या नहीं। फिर हम सभी 72 लोगों ने उसमें से पानी पिया और हमारे पानी के बैग भर दिए। जब मैंने उसे वापस लिया, तो वह अभी भी उतना ही भरा हुआ था जितना पहले था इस चमत्कार पर विचार

करें और कहें: "हे ईश्वर, उस पर और उसके परिवार पर कृपा करें। " घर में उतनी ही शांति और आशीर्वाद हो जितनी पानी की बूँदें हैं।"

सातवाँ उदाहरण: परम्परा की प्रामाणिक पुस्तकें, विशेष रूप से सहीह अल-बुखारी और साहिह अल-मुस्लिम, रिपोर्ट करते हैं कि 'इमरान इब्न हुसैन ने कहा: "हम एक सैन्य अभियान के दौरान पानी खत्म हो गया था। मैसेंजर ने मुझे बताया और अली: 'फलां जगह एक औरत अपने साथ रास्ता बना रही है। जानवर, जो पानी की थैलियों से लदा हुआ है। जाओ और उसे ले आओ।' 'अली और मैंने पाया महिला अपने सामान के साथ ठीक वैसे ही और जहाँ वर्णित था, उसे ले आई (पैगंबर से) पैगंबर ने आदेश दिया: 'एक बर्तन में थोड़ा पानी डालो।' हमने कहा: 'एक बर्तन में थोड़ा पानी डालो।' उसने ऐसा ही किया। जब उसने भरपूरी के लिए प्रार्थना की, तो हमने पानी को वापस उसकी थैली में डाल दिया।

---

131 मुवत्ता', सफ़र, 2; इब्न हनबल, 5:228; बुखारी और मुस्लिम द्वारा भी संबंधित।

132 बुखारी, 4:234; बहाक़ी, 4:110; मुस्लिम द्वारा भी संबंधित.

133 मुस्लिम, नहीं. 681; अबू दाऊद, नहीं. 437-41; अबू नुअयम, 4:282.

तब पैगम्बर ने घोषणा की: 'सभी लोग आएं और अपना थैला भरें।' लोग आये और पीकर अपनी थैलियाँ भर लीं। बाद में, उन्होंने कहा कि महिला के लिए कुछ इकट्ठा किया जाना चाहिए, और उन्होंने उसकी स्कर्ट को भर दिया उन्होंने क्या एकत्र किया।"

इमरान आगे कहते हैं: "मैंने कल्पना की कि दोनों पानी की थैलियाँ लगातार भर रही हैं। ईश्वर के दूत ने महिला से कहा: 'अब तुम जा सकती हो। हमने तुम्हारा कोई भी सामान नहीं लिया है। जल; बल्कि, परमेश्वर ने हमें (अपने भण्डार से) जल दिया।'"134

आठवाँ उदाहरण: कुछ परंपरावादी, मुख्यतः इब्न खुज़ैमा ने अपने सहीह में वर्णित है कि उमर ने कहा: "हम अभियान के दौरान पानी से वंचित हो गए थे। तबुक। हममें से कुछ लोगों को अपने ऊँटों को मारना पड़ा और उसके अंदर का पानी पीना पड़ा। अबू बकर ने अल्लाह के रसूल से बारिश के लिए दुआ करने की अपील की। उन्होंने अपने हाथ ऊपर उठाए प्रार्थना करने के लिए, और मुश्किल से उन्हें नीचे उतारा जब बादल घिर आए और भारी बारिश शुरू हो गई। जब हमने अपने बर्तन भर लिए, तो बादल चले गए। यह बारिश यह हमारे क्षेत्र तक ही सीमित था, क्योंकि यह हमारे क्षेत्र से आगे नहीं जाता था।"135 इस प्रकार इस घटना का संयोग से कोई लेना-देना नहीं था; यह पूरी तरह से एक चमत्कार था पैगम्बर मुहम्मद के.

नौवां उदाहरण: 'अम्र इब्न शुऐब, 'अब्दुल्ला इब्न' अम्र के पोते इब्न अल-अस और जिनके कथनों पर चार इमामों ने भरोसा किया, बताते हैं कि पहले अपनी नबी के रूप में, ईश्वर के दूत ने धु अल-हिजाज़ तक ऊंट पर यात्रा की (अराफात के निकट) अपने चाचा अबू तालिब के साथ। जब अबू तालिब ने कहा कि उन्हें प्यास लगी है, ईश्वर के दूत घोड़े से उतरे और ज़मीन पर पैर पटकने लगे। पानी बाहर निकल आया, और अबू तालिब ने उसमें से पीया।136 एक विवेकशील विद्वान का कहना है कि यद्यपि इसे इरहासत माना जाता है, क्योंकि यह उनकी पैगम्बरी से पहले हुआ था 137 इसे उनकी पैगम्बरी का एक आश्चर्य भी माना जा सकता है, क्योंकि इसके बाद यह पानी 1,000 वर्षों तक उसी स्थान पर बहता रहा।

इसी प्रकार, 90 अलग-अलग विवरण (लेकिन 90 अलग-अलग घटनाएं नहीं) रिपोर्ट करते हैं पानी से जुड़े चमत्कार। पहले सात उदाहरण निश्चित रूप से हैं तवातुर के रूप में अर्थ में स्थापित । हालाँकि अंतिम दो वर्णित नहीं हैं संचरण की कई मजबूत श्रृंखलाओं के माध्यम से, प्रामाणिक स्रोत, मुख्य रूप से इमाम बेहाकी और हकीम, समर्थन और पुष्टि करने के लिए एक और चमत्कार की रिपोर्ट करते हैं आठवें उदाहरण में उल्लेखित: उमर ने बताया कि उन्होंने अपील की भगवान के दूत से बारिश के लिए प्रार्थना करने को कहा, क्योंकि सेना को पानी की जरूरत थी।

---

134 मुस्लिम, 682; बुखारी, 4:233.

135 मजमा अल-ज़वायद, 6:194, बज़ार, बहाकी और तबरानी से संबंधित।

136 शिफ़ा', 1:290, बेहाक़ी, 2:15; इब्न साद और तबरानी द्वारा भी संबंधित।

137 इरहासत: पैगम्बर मुहम्मद के स्वर्गवास से पहले घटित असाधारण घटनाओं की श्रृंखला जन्म, जन्म के समय, तथा पैगम्बर होने की घोषणा से पहले। (ट्र.)

दूत ने अपने हाथ ऊपर उठाए, बादल एक साथ उमड़ पड़े, और इतनी वर्षा हुई कि सेना की ज़रूरतें पूरी करने के लिए। इसके बाद बादल चले गए।138 ऐसा लगा जैसे बादलों को पानी देने के लिए भेजा गया था, क्योंकि वे आये, पर्याप्त पानी दिया, और फिर गायब हो गया.

जिस तरह यह रिवायत आठवें उदाहरण का समर्थन करती है, इब्न अल-जौज़िया भी कई प्रामाणिक परम्पराओं को मिथ्या बताकर खारिज करने वाले एक शोधकर्ता का कहना है: "यह घटना बद्र की लड़ाई के दौरान हुई थी और इसका उल्लेख इस प्रकार है : उसने तुम पर आकाश से जल बरसाया ताकि उसके द्वारा तुम पवित्र हो जाओ... (8:11)।" चूँकि यह श्लोक घटना को संदर्भित करता है, इसकी सत्यता पर संदेह नहीं किया जा सकता। इसके अलावा, यह एक बार-बार दोहराए जाने वाले और सर्वसम्मति से बताए गए चमत्कार के अनुसार पैगंबर द्वारा प्रार्थना के लिए हाथ उठाए जाने के तुरंत बाद बारिश हुई। कई बार ऐसा हुआ है, तवातुर के माध्यम से बताया कि जब उन्होंने मंच पर अपने हाथ उठाए तो बारिश हुई इससे पहले कि वह उन्हें नीचे उतारता, वे गिरने लगते।

नौवां संकेत: ईश्वर के दूत का एक प्रकार का चमत्कार यह है कि पेड़ उनके आदेशों का पालन किया और उनके पास पहुंचे। यह चमत्कार, उन लोगों की तरह है जो उनसे जुड़े थे अपनी उंगलियों से बहते पानी के साथ, अर्थ में तवातुर की निश्चितता है। विभिन्न चैनलों के माध्यम से कई उदाहरण बताए गए हैं।

पैगम्बर के आदेश पर पेड़ों का खुद को उखाड़कर उनके निकट आना स्पष्ट तवातुर माना जा सकता है, क्योंकि सबसे प्रसिद्ध, भरोसेमंद साथी (उदाहरण के लिए, अली, इब्न अब्बास, इब्न मसूद, इब्न उमर, याला इब्न मुर्रा, जाबिर, अनस इब्न मलिक, बुरायदा, उसामा इब्न ज़ायद, और ग़ायलान इब्न सलामा) ने भी निश्चितता के साथ उसी चमत्कार की सूचना दी। तबीउन विद्वानों को उनकी रिपोर्ट सीधे प्राप्त हुई, जो नीचे आ गई है हमें और इस प्रकार कई तावतुर का अधिकार है । इसलिए यह चमत्कार अर्थ में तवातुर की निश्चितता है । हम केवल कुछ उदाहरणों का उल्लेख करते हैं।

पहला उदाहरण: इब्न माजा, दारिमी, और बहाकी (अली और अनस के माध्यम से) इब्न मलिक), और बज़ार और इमाम बेहाकी (उमर से) बताते हैं: "तीन सहाबा ने रिवायत किया है कि अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहू अलैहि वसल्लम) काफ़िरों के इन्कार से बहुत परेशान थे। उन्होंने दुआ की: 'ऐ रब, मुझे कोई निशानी दिखा दे ताकि मैं फिर कभी न मानूँ जो कोई भी मेरा विरोध करता है।' अनस बताता है कि गेब्रियल भी वहाँ मौजूद था, और कि उनके निर्देश पर ईश्वर के दूत ने एक तरफ स्थित एक पेड़ को बुलाया वह घाटी जिसमें वे स्थित थे, अपनी जगह से निकलकर उसके पास आ गई। उसने उसे वापस जाने को कहा, और वह वापस लौट आया और अपने स्थान पर जाकर बस गया।"139

138 अबू नुअयम, 2:523; हकीम और बेहाकी द्वारा भी संबंधित।

139 शिफ़ा', 1:302; बहाकी, इब्न माजा, दारिमी, बज़ार और इब्न हनबल द्वारा संबंधित।

दूसरा उदाहरण: कादी इयाद, मुस्लिम पश्चिम (उत्तरी अफ्रीका) के विद्वान और अल-अंडालस), अपने अल-शिफा अल-शरीफ में अब्दुल्ला इब्न उमर से उल्लेख करते हैं सबसे प्रतिष्ठित कथावाचकों की एक अच्छी श्रृंखला के माध्यम से: "एक बेडौइन आया एक अभियान के दौरान ईश्वर के दूत ने पूछा: 'तुम कहाँ हो? तुम कहाँ जा रहे हो?' उसने उत्तर दिया: 'मेरे परिवार के पास।' पैगम्बर ने पूछा: 'क्या तुम नहीं जा रहे हो? क्या आप कुछ बेहतर चाहते हैं?' जब बेडौइन ने पूछा कि वह क्या हो सकता है, ईश्वर के दूत ने उत्तर दिया: 'इस बात की गवाही देने के लिए कि ईश्वर के अलावा कोई ईश्वर नहीं है, वह अकेला है, उसका कोई साझी नहीं है और मुहम्मद उसके सेवक और रसूल हैं।' बद्दू ने पूछा: 'क्या आप इसे साबित कर सकते हैं?' ईश्वर के दूत ने उत्तर दिया: 'वह घाटी के किनारे का पेड़ गवाही देगा।'"

इब्न उमर घटना का बाकी हिस्सा बताते हैं: "वह पेड़ हिल गया, उखड़ गया धरती से उठकर रसूल अल्लाह के पास पहुंचा और रसूल अल्लाह ने तीन बार पूछा गवाही देने के लिए, और हर बार यह उसकी सच्चाई की गवाही देता था। फिर उसने आदेश दिया पेड़ को वापस जाकर अपने स्थान पर बसने के लिए कहा, और उसने वैसा ही किया।"140

इब्न साहिब अल-असलामी बताते हैं कि बुरायदा ने कहा: "एक बार एक बेडौइन ने पूछा जब हम ईश्वर के दूत के साथ एक अभियान पर थे, तब हमें एक चमत्कार की उम्मीद थी। रसूल ने एक पेड़ की ओर इशारा करते हुए कहा: 'उस पेड़ से कहो कि ईश्वर का रसूल पेड़ हिल गया, अपने आप को मुक्त कर लिया, और दूत के पास आ गया, कहा: 'आप पर शांति हो, हे ईश्वर के रसूल!' बेडौइन ने कहा: 'अब इसे अपने स्थान पर वापस जाने को कहो।' जब ईश्वर के दूत ने उसे ऐसा करने का आदेश दिया, पेड़ वापस चला गया। जब बेडौइन ने कहा: 'मुझे अपने सामने सजदा करने दो,' पैगम्बर ने उत्तर दिया: 'किसी को भी ऐसा करने की अनुमति नहीं है।' बेडौइन ने कहा: 'तो मैं तुम्हारा हाथ चूमूंगा,' और उसने उसे ऐसा करने की अनुमति दी।'141

तीसरा उदाहरण: परम्परा की प्रामाणिक पुस्तकें, जिनमें मुस्लिम सहीह भी शामिल है, जाबिर के हवाले से कहा गया है: "हम ईश्वर के रसूल के साथ एक अभियान पर गए थे। उन्होंने शौच के लिए जगह तलाशी। जब उन्होंने देखा कि वहाँ वहाँ कोई परदे के पीछे की जगह नहीं थी, वह दो पेड़ों के पास गया और उनमें से एक को शाखा से खींच लिया दूसरे के बगल में। पेड़ एक आज्ञाकारी ऊँट की तरह था जिसे कोई खींच रहा था उसने उनसे कहा: 'ईश्वर की अनुमति से, मेरे ऊपर एकजुट हो जाओ।' पेड़ों ने ऐसा किया और एक पर्दा बना दिया। शौच के बाद, उसने उन्हें आदेश दिया कि वे अपने स्थानों पर वापस चले जाओ।"142 एक अन्य संस्करण में जाबिर ने इसे बहुत ही हल्के ढंग से बताया है, नगण्य अंतर.143

---

140 शिफ़ा', 1:298; तिर्मिधि, इब्न हिब्बान, बहाकी और हकीम द्वारा संबंधित।

141 शिफ़ा', 1:299; बज़ार, मुसनद, 3:49.

142 मुस्लिम, नहीं. 3006-12; बहाक़ी, 6:8.

143 शिफा', 1:299.

चौथा उदाहरण: उसामा इब्न ज़ायद, एक बहादुर कमांडर और सेवक ईश्वर के दूत, रिपोर्ट करते हैं: "हम ईश्वर के दूत के साथ एक अभियान पर गए थे। शौच के लिए कोई बंद जगह न मिलने पर उन्होंने मुझसे पूछा: 'क्या मैं तुम्हें शौच के लिए ले जाऊँगा? क्या तुम्हें कोई पेड़ या चट्टान दिख रही है?' जब मैंने कहा कि हां, तो उसने मुझसे कहा: 'जाओ और कहो पेड़ों को ईश्वर के दूत ने आदेश दिया कि वे आपस में जुड़ें ताकि वह वह स्वयं शौच कर ले और फिर चट्टानों से भी ऐसा ही करने को कहे।' मैं गया और उसे बताया उन्हें ऐसा करने के लिए कहा, और मैं भगवान की कसम खाता हूँ कि पेड़ एक साथ जुड़ गए और चट्टानें दीवार खड़ी कर दी। शौच के बाद ईश्वर के दूत ने मुझसे कहा: 'उनसे कहो अलग होने के लिए।' मैं उस महान परमेश्वर की शपथ लेता हूँ, जिसके हाथ में मेरी आत्मा है, कि पेड़ और चट्टानें अलग हो गईं और अपने स्थान पर वापस चली गईं।"144 ये दोनों हुनैन की लड़ाई के संबंध में याला इब्न मुर्रा, घायलन इब्न सलामा अल-थकाफी और इब्न मसूद द्वारा भी घटनाओं की सूचना दी गई थी।

पाँचवाँ उदाहरण: इमाम इब्न फवारक, जिन्हें दूसरे शाफ़ी के रूप में जाना जाता है न्यायशास्त्र में उनकी उत्कृष्टता और उत्तम चरित्र का लेखा-जोखा देते हुए, रिपोर्ट दी गई है: "ईश्वर के रसूल को कभी-कभी घोड़े पर यात्रा करते समय नींद आती थी। ताइफ़ की लड़ाई के दौरान एक रात कमल का पेड़ उसके सामने प्रकट हुआ। उसके लिए रास्ता बनाने और उसके घोड़े को नुकसान पहुंचाने से बचने के लिए, पेड़ दो हिस्सों में विभाजित हो गया और भगवान का मैसेंजर अपने घोड़े पर सवार होकर वहां से गुजरा था। वह पेड़ आज भी बना हुआ है तो हमारे समय तक।"145

छठा उदाहरण: या'ला रिपोर्ट करती है: "एक अभियान के दौरान एक तल्हा या समुरा पेड़ आया और अल्लाह के रसूल के चारों ओर घूमने लगा, मानो परिक्रमा कर रहा हो, और फिर अपनी जगह पर वापस चला गया। अल्लाह के रसूल ने कहा: 'इसने मुझे सलाम करने की अल्लाह से इजाज़त मांगी है।'"146

सातवाँ उदाहरण: परंपरावादी इब्न मसऊद को यह कहते हुए उद्धृत करते हैं: "जब नुसायबीन के जिन्न अल्लाह के हुक्म से इस्लाम कबूल करने के लिए बटनुल-नखल आए थे। रसूल को एक पेड़ ने उनके आने की खबर दी।" इमाम मुजाहिद बताते हैं इब्न मसऊद से रिवायत है कि जब जिन्न ने उनसे उनकी नबी होने का सबूत मांगा, एक पेड़ पैगंबर के पास आया और फिर उनके आदेश पर अपने स्थान पर लौट गया। यह चमत्कार उनके लिए इस्लाम धर्म अपनाने के लिए पर्याप्त था।147

जिन लोगों ने ऐसे 1000 चमत्कारों के बारे में सुना है और फिर भी विश्वास नहीं करते हैं शैतानों से भी ज़्यादा गुमराह हैं। जिन्न ऐसे लोगों को मूर्ख कहते हैं हममें से कुछ लोग परमेश्वर पर बहुत झूठ बोला करते थे (72:4)

---

[144] उपरोक्त, 1:300, बहाकी, इब्न हनबल और अबू याला द्वारा संबंधित।

[145] वही, 1:301.

[146] शिफ़ा', 1:301; हकीम, 2:617; इब्न हनबल, 4:170; बहाक़ी, 6:23.

[147] बुखारी, 5:58; मुस्लिम, अबू दाऊद, तिर्मिधि और इब्न हनबल द्वारा भी संबंधित।

आठवाँ उदाहरण: तिर्मिज़ी इब्न अब्बास से रिपोर्ट करते हैं: "ईश्वर के दूत ने एक बद्दू से पूछा: 'अगर वह पेड़ की शाखा मेरे पास आती है जब मैं उसे पुकारता हूँ, तो क्या तुम गवाही दोगे कि मैं दूत हूँ?' उसने जवाब दिया कि वह ऐसा करेगा, और इसलिए दूत ने उसे पुकारा। शाखा टूट गई और उसके पास कूद गई।

फिर जब रसूल ने इसे ऐसा करने का आदेश दिया तो यह वापस अपनी जगह पर आ गया।"148 कई इसी तरह के उदाहरण

विभिन्न कथाओं के माध्यम से बताए गए हैं। सात या आठ रस्सियाँ जब एक साथ आती हैं तो एक मजबूत रस्सी बनती हैं। इसी तरह, जब सबसे प्रसिद्ध साथियों द्वारा बताए गए इन पेड़-संबंधी चमत्कारों को एक साथ लिया जाता है, तो उनके अर्थ या यहां तक कि वास्तविक शब्दों में भी तवातुर की निश्चितता होनी चाहिए। वास्तव में, वे सहाबा द्वारा उन्हें अगली पीढ़ी को सौंपने के माध्यम से स्पष्ट तवातुर की डिग्री प्राप्त करते हैं। विशेष रूप से, बुखारी की सहीह, मुस्लिम की सहीह, इब्न हिब्बान की सहीह और तिर्मिज़ी की सुनन जैसी परंपरा की प्रामाणिक किताबें ट्रांसमीटरों की श्रृंखला (पैगंबर के समय तक ले जाती हैं) को इतनी अच्छी तरह और विश्वसनीय रूप से नोट और रिकॉर्ड करती हैं कि बुखारी की सहीह में एक विवरण पढ़ना, उदाहरण के लिए, साथियों से सुनने के बराबर है।

जब वृक्ष अल्लाह के रसूल को पहचानते हैं, उसके रसूल होने की पुष्टि करते हैं, उसे पुकारते हैं, सलाम करते हैं, उसके आदेशों का पालन करते हैं, तो वे काफ़िर जो अपने आप को मनुष्य कहते हैं, बेकार लकड़ी के टुकड़े और जहन्नम के योग्य के अलावा और कुछ कैसे माने जा सकते हैं?

दसवाँ संकेत: यह शोक करने वाले खंभे से संबंधित है, जिसे तवातुर के रूप में रिपोर्ट किया जाता है और यह पेड़ से संबंधित चमत्कारों को पुष्ट करता है। यह घटना, जो पैगंबर की मस्जिद में एक विशाल जमावड़े के सामने हुई, ऐसे चमत्कारों को पुष्ट करती है और पुष्ट करती है, क्योंकि खंभा एक पेड़ से आया था। लेकिन यह चमत्कार अपने आप में मुतवातिर है (स्पष्ट तवातुर की निश्चितता है), जबकि पेड़ों से संबंधित चमत्कार मुतवातिर हैं जब समग्र रूप से देखा जाता है।

पैगम्बर मुहम्मद अपनी मस्जिद में उपदेश देते समय खजूर के पेड़ पर झुककर उपदेश देते थे। लेकिन जब उन्होंने नए बने उपदेश मंच पर उपदेश देना शुरू किया तो लोगों ने खजूर के पेड़ को ऊँट की तरह कराहते हुए सुना।

उसका विलाप तभी बंद हुआ जब पैगम्बर ने उस पर हाथ रखकर उसे सांत्वना दी।
उस पर.

यह चमत्कार व्यापक रूप से जाना जाता है और इसमें स्पष्ट तवातुर की निश्चितता है ।
इसे 15 विभिन्न चैनलों के माध्यम से साथियों के एक प्रतिष्ठित समूह द्वारा रिपोर्ट किया गया था, जिनमें ऐसे प्रतिष्ठित विद्वान और अग्रणी परंपरावादी शामिल हैं

148 तिर्मिज़ी, नहीं. 3632; हकीम, 2:620; बहाक़ी, 6:15.

अनस इब्न मलिक और जाबिर इब्न अब्दुल्ला अल-अंसारी (दोनों)
जिनकी सेवा पैगंबर ने की), अब्दुल्ला इब्न उमर, अब्दुल्ला इब्न अब्बास,
साहल इब्न साद, अबू सईद अल-खुदरी, उबे इब्न काब, बुरायदा और उम्म
सलमा (विश्वासियों की माँ)। सैकड़ों तबीउन अधिकारियों को प्राप्त हुआ
इसे साथियों और प्रामाणिक परम्परागत पुस्तकों, विशेषकर बुखारी से प्राप्त करें
और मुस्लिम, ने इसे अगली शताब्दियों तक प्रसारित किया।

जाबिर कहते हैं कि ईश्वर के दूत उस खंभे के सहारे झुकते थे, जिसे 'खंभा' कहा जाता था। अपनी मस्जिद में धर्मोपदेश देते समय खजूर के पेड़ के तने को खजूर के पेड़ के तने से काटा जाता था। एक पुल-पिट बनने के बाद, पैगंबर अपना धर्मोपदेश उसी से देते थे। इस अलगाव के कारण, खंभा गर्भवती ऊंट की तरह कराहने लगा। अनस ने बताया कि यह कराहता था
एक भैंसे की तरह और मस्जिद को हिला दिया। साहल इब्न साद कहते हैं:
“जब वह कराहता था, तो कई लोग फूट-फूट कर रो पड़ते थे।”

उबे इब्न काब के अनुसार, खंभा इतना अधिक हिल गया कि वह टूट गया।
एक अन्य रिवायत में बताया गया है कि ईश्वर के दूत ने कहा: "यह कराह उठा क्योंकि यह
(उपदेश के दौरान) भगवान के नामों के पाठ से अलग कर दिया गया था।”
एक अन्य संस्करण के अनुसार, उन्होंने कहा: "यदि मैंने उन्हें गले नहीं लगाया होता और सांत्वना नहीं दी होती
वह तो अपने अलगाव के कारण प्रलय के दिन तक रोती रहती
रसूल से।”

बुरायदा के अनुसार, पैगम्बर ने अपना हाथ उस समय खंभे पर रखा जब
वह रोने लगा और बोला: "यदि तुम चाहो तो मैं तुम्हें जंगल से वापस लाऊंगा
जहाँ से तुम आये थे ताकि तुम फिर से जड़ें जमा सको, पूरी तरह से फलो-फूल सको, और
फिर से फल दो। या, अगर तुम चाहो तो मैं तुम्हें स्वर्ग और भगवान के दोस्तों में रोप दूँगा
तुम्हारे फल खाएंगे।” फिर उसने यह बात सुनी, और मस्जिद में मौजूद लोग
खंभे को यह कहते हुए सुना: “मुझे स्वर्ग में रोप दो, और परमेश्वर के मित्र उससे खाएंगे
मेरे फल उस जगह पर हों जहाँ सड़न न हो।" ईश्वर के दूत ने उत्तर दिया कि
उन्होंने कहा: “इसने क्षणभंगुर की अपेक्षा अनंत काल की दुनिया को प्राथमिकता दी है।”

सुप्रसिद्ध विद्वान हसन अल-बसरी जब भी रोते थे
अपने शिष्यों को यह चमत्कारी घटना सुनाते हुए कहते थे: “एक टुकड़ा
लकड़ी भगवान के महान, सबसे प्रिय के लिए इस तरह के प्यार और उत्साह को दर्शाती है
मैसेंजर। आपको इस प्यार को लकड़ी के टुकड़े से कहीं ज़्यादा महसूस करने की ज़रूरत है।”149

149 बुखारी, साहिह, 4:237; इब्न हनबल, मुसनद, नं. 2236, 2237, 2400, 2401, 2430-32;
मुस्लिम, सहीह, नहीं. 2374; क़दी 'इयाद, अल-शिफ़ा' अल-शरीफ़, 1:304-5; नसाई, सुनान, 3:102;
तिर्मिधि, सुनान, संख्या 3631; बहाक़ी, दलाइल अल-नुबुव्वा, 6:66; अबू नुअयम, दलाइल अल-नुबुव्वा, 2:399; दारिमी, सुनान, नंबर 39; कन्ज़ अल-उम्मल, 12:411-18.

और हम कहते हैं: "यह सच है, और उसके लिए प्यार और उत्साह उसके शानदार सुन्ना और शरिया का पालन करके संभव है।"

प्रश्न: भोजन और पानी से संबंधित प्रचुरता के चमत्कारों की रिपोर्ट शोक ध्रुव के समान कई माध्यमों से क्यों नहीं की गई, जबकि अधिक लोगों ने उन्हें देखा था?

जवाब: चमत्कार दो तरह के होते हैं। कुछ लोगों ने उनके नबी होने की पुष्टि की। शोक करने वाला खंभा इसी तरह का है, क्योंकि यह एक ऐसा प्रमाण है जो ईमान वालों के ईमान को मजबूत करता है, पाखंडियों को ईमान और ईमानदारी की ओर प्रेरित करता है और काफिरों को ईमान लाने के लिए प्रेरित करता है। इसी कारण से सभी ने इसे देखा और इसे फैलाने के लिए इतनी कोशिश की गई। भोजन और पानी से जुड़े दूसरे प्रकार के चमत्कार चमत्कार या ईश्वरीय उपहार हैं, यहां तक कि ज़रूरत के कारण दयालु द्वारा दी गई दावतें भी हैं, न कि प्रत्यक्ष चमत्कार।

हालाँकि ये उनकी नबूवत के चमत्कारी सबूत हैं, लेकिन उनकी असली अहमियत यह है कि जो खुदा एक खजूर की गुठली से सैकड़ों टन खजूर पैदा करता है, थोड़ी सी रोटी से 1000 लोगों की दावत करता है और पैगम्बर की उंगलियों से बहते पानी से पवित्र योद्धाओं की प्यासी सेना को तृप्त करता है। यही कारण है कि भोजन और पानी से संबंधित प्रत्येक चमत्कार शोक संतप्त ध्रुव के चमत्कार की डिग्री तक नहीं पहुँचता है।

हालाँकि, इन दोनों तरह के चमत्कारों के उदाहरणों को, उनकी संपूर्णता में, शोकग्रस्त खंभे की तरह ही व्यापक रूप से रिपोर्ट किया गया माना जाता है। इसके अलावा, जबकि उपस्थित प्रत्येक व्यक्ति प्रचुर मात्रा में भोजन और पानी के केवल प्रभाव (और घटनाएँ नहीं) देख सकता था, कुछ लोग केवल उनके होने के साक्षी थे, खंभे की कराह सभी ने सुनी। यह एक और कारण है कि बाद वाला इतना व्यापक रूप से क्यों फैला।

प्रश्न: साथियों ने पैगंबर के हर कार्य और स्थिति का रिकॉर्ड अत्यंत सावधानी से सुरक्षित रखा। तो फिर ऐसे महत्वपूर्ण चमत्कार 10 या 12 से अधिक संचरण लाइनों के माध्यम से क्यों नहीं बताए गए? और मुख्य रिपोर्टर केवल जाबिर, अनस और अबू हुरैरा जैसे साथी ही क्यों हैं, और उदाहरण के लिए, अबू बकर और उमर क्यों नहीं?

उत्तर: पहले भाग का उत्तर इस पत्र के आरंभ में, चौथे चिह्न के तीसरे आवश्यक भाग में दिया गया है। दूसरे भाग के बारे में, जिस प्रकार एक रोगी डॉक्टर के पास जाता है, इंजीनियरों से इंजीनियरिंग के मामलों के बारे में सलाह ली जाती है, और मुफ़्तियों से धार्मिक मुद्दों के बारे में पूछा जाता है, उसी प्रकार कुछ विद्वान साथियों को पैगंबरी परंपराओं में आने वाली पीढ़ियों को निर्देश देने के लिए सौंपा गया और उन्होंने खुद को समर्पित कर दिया। उदाहरण के लिए, अबू हुरैरा ने परंपराओं को संरक्षित करने के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया, जबकि उमर ने अपने कंधों पर पैगंबरी परंपराओं को रखा।

प्रशासनिक मामले और खिलाफत की समस्याएं। इस प्रकार उमर ने वर्णन किया
केवल कुछ ही हदीसें, क्योंकि उसे अबू हुरैरा जैसे लोगों पर भरोसा था,
अनस और जाबिर को मुसलमानों को हदीसों की शिक्षा देने के लिए नियुक्त किया गया। वास्तव में, हदीसों की एक परंपरा
यदि किसी सुप्रसिद्ध व्यक्ति द्वारा इसकी रिपोर्ट की गई हो तो इसे स्थापित माना जा सकता है
सच्चे, ईमानदार और भरोसेमंद साथियों से संबंधित। यह देखते हुए,
इसे दूसरों द्वारा संबंधित करने की कोई आवश्यकता नहीं है। यही कारण है कि कुछ महत्वपूर्ण
घटनाओं के केवल एक, दो या तीन चैनल होते हैं।

ग्यारहवाँ संकेत: यहाँ हम अनगिनत उदाहरणों में से केवल आठ का ही हवाला देंगे
चट्टानों और पहाड़ों जैसी निर्जीव वस्तुओं से संबंधित चमत्कारों के बारे में।

पहला उदाहरण: काजी इयाद ने अपने शिफा अल-शरीफ और एक अन्य लेख के माध्यम से बताया है कि
बुखारी जैसे महान परंपरा अधिकारियों से कथावाचकों की उत्कृष्ट श्रृंखला,
पैगंबर के सेवक इब्न मसऊद कहते हैं: "जब हम अल्लाह के रसूल के साथ खाना खा रहे थे तो हम सुन सकते थे कि
खाना अल्लाह की स्तुति कर रहा है।"150

दूसरा उदाहरण: अबू ज़र्र से परम्परा की सटीक रिपोर्ट
और अनस ने कहा कि अनस ने कहा: "हम ईश्वर के रसूल के साथ थे। उसने अपने हाथ में कुछ कंकड़ रखे, और वे
ईश्वर की स्तुति करने लगे। फिर उसने उन्हें अबू धाबी में रख दिया।
बकरीद का हाथ थाम लिया और उन्होंने अपनी महिमा का बखान जारी रखा।"151 अबू ज़र्र ने बताया है
फिर अल्लाह के रसूल ने उन कंकरियों को उमर और हज़रत मुहम्मद (अलैहिस्सलाम) के हाथों में रख दिया।
हज़रत उस्मान ने भी उनके बाद अपनी महिमा का बखान जारी रखा। हज़रत अनस और हज़रत उस्मान दोनों ने अपनी महिमा का बखान जारी रखा।
अबू ज़र ने कहा कि ईश्वर के रसूल ने अंततः उनके हाथों में कंकड़ रख दिये,
जिसके बाद कंकड़ों ने अपनी महिमा बंद कर दी।152

तीसरा उदाहरण: अली, जाबिर और आयशा कहते हैं कि चट्टानें और पहाड़
अल्लाह के रसूल से कहेंगे: "ऐ अल्लाह के रसूल, आप पर शांति हो।"
अली कहते हैं: “साल के शुरूआती दिनों में जब भी हम मक्का के उपनगरों में घूमते थे
उनकी नबी के दिन, जिन पेड़ों और चट्टानों के पास से हम गुजरते थे वे कहते थे: 'शांति उस पर हो
'हे ईश्वर के रसूल, आप।'”153 जाबिर बताते

हैं: “जब ईश्वर के रसूल किसी चट्टान या पेड़ के पास आते थे, तो वे
उनके प्रति समर्पण में कहेंगे: "आप पर शांति हो, हे ईश्वर के रसूल।"154
जाबिर इब्न समूरा के अनुसार, ईश्वर के दूत ने एक बार कहा था: "मैं एक चट्टान को पहचानता हूँ
जो मेरा स्वागत करता था।”155 कुछ लोगों के अनुसार, वह काबा के काले झंडे का जिक्र कर रहे थे ।
पत्थर। आयशा ने रिवायत किया: "अल्लाह के रसूल ने कहा: 'जब गेब्रियल मेरे पास पत्थर लेकर आए तो

---

150 बुखारी, 4:235, तिर्मिज़ी, सं. 3712.

151 शिफ़ा', 1:306; बहाक़ी, दलैल, 6:66.

152 शिफ़ा', 1:306; मजमा अल-ज़वायद, 5:179; तबरानी और बज़ार द्वारा संबंधित।

153 तिर्मिज़ी, नहीं. 3630; हकीम, 2:607; अबू नुअयम, 2:389.

154 शिफ़ा', 1:307, बहाकी द्वारा संबंधित।

155 मुस्लिम, नहीं. 2277; तिर्मिज़ी, नहीं. 3703; इब्न हनबल, 5:89.

संदेश, हर बार जब मैं किसी चट्टान या पेड़ के पास से गुजरता तो वह कहता: "तुम्हें शांति मिले, हे ईश्वर के रसूल।'156

चौथा उदाहरण: अब्बास कहते हैं कि ईश्वर के दूत ने अब्बास को ढक दिया। और उसके चार बेटों (अब्दुल्ला, उबैदुल्ला, फदल और कुसम) को एक टुकड़ा दिया गया कपड़े का एक टुकड़ा लिया और प्रार्थना की: "हे मेरे भगवान, यह मेरे पिता का भाई है और ये हैं उसके बेटों को आग से बचाओ, जैसे मैंने उन्हें अपने कपड़े से बचाया है। घर की छत, दरवाज़े और दीवारें एक साथ इस प्रार्थना में शामिल हो गईं, और कहा: “आमीन, आमीन।”157

पाँचवाँ उदाहरण: मुख्यतः इमाम बुखारी और ऐसे अन्य परंपरावादी इब्न हिब्बन, अबू दाऊद और तिर्मिज़ी के रूप में, अनस, अबू हुरैरा की रिपोर्ट, उस्मान और सईद इब्न ज़ैद (जिनसे जन्नत का वादा किया गया था उनमें से दो) “ईश्वर के रसूल, अबू बकर, उमर और उस्मान उहुद पर्वत पर चढ़े। पहाड़ या तो भय से या खुशी के कारण कांप उठा। ईश्वर का दूत उसने आदेश दिया: 'चुप हो जाओ, हे उहुद, क्योंकि तुम्हारे पास एक सच्चा नबी है, और दो शहीद।”158 इस तरह, भगवान के दूत ने शहादत की भविष्यवाणी की उमर और उस्मान की।

इस रिवायत के एक पूरक में बताया गया है कि ईश्वर के दूत ने मदीना प्रवास के दौरान अविश्वासियों द्वारा साबिर पर्वत पर चढ़ने के कारण उन्हें चोट लग गई। पहाड़ ने कहा: "हे ईश्वर के दूत, कृपया मुझे छोड़ दें, क्योंकि मैं ईश्वर से डरता हूँ यदि वे तुम पर तब प्रहार करेंगे जब तुम मेरे ऊपर हो, तो वे मुझे दण्ड देंगे।” इस पर, पर्वत थौर ने उसे पुकारा: "हे ईश्वर के रसूल, मेरे पास आओ!" यही कारण है कि अंतर्ज्ञान वाले लोग साबिर पर डर और थौर पर सुरक्षा महसूस करते हैं।159 यह उदाहरण दर्शाता है कि ये महान पर्वत ईश्वर के सेवक हैं जो उसकी महिमा करते हैं और
अपने कर्तव्यों का पालन करें। इसके अलावा, वे पैगंबर को जानते हैं और उनसे प्यार करते हैं।

छठा उदाहरण: अब्दुल्लाह इब्न उमर ने कहा: “उपदेश देते समय उपदेशक ने उपदेश देते हुए कहा: लोग ईश्वर को उसकी सच्ची बातों से नहीं मापते। क़ियामत के दिन पूरी धरती उसकी मुट्ठी भर होगी, और आकाश उसके दाहिने हाथ में लपेटा जाएगा (39:67), और कहा: 'अल्लाह, वह जो तेरे लिए है, तेरे लिए है। सर्व-सम्मोहक, स्वयं की महिमा करता है और कहता है: "मैं सर्व-सम्मोहक हूँ, मैं ही हूँ मैं सर्वव्यापी, सर्वमहान और सर्वोपरि हूँ।'' जब उन्होंने यह कहा, मंच इतना कांप रहा था कि हमें डर लग रहा था कि कहीं अल्लाह का रसूल गिर न जाए।''160

---

156 शिफा, 1:37; बैहाकी, 2:135.

157 मजमा अल-ज़वायद, 9:269; बहाक़ी, 6:71; इब्न माजा, 2:209.

158 अबू दाऊद, संख्या 4651; तिर्मिज़ी, संख्या 3781; बुखारी, मुस्लिम, हकीम और अन्य ने भी इसका उल्लेख किया है। इब्न माजा.

159 शिफ़ा', 1:308; 'अली अल-कारी, शरह अल-शिफ़ा', 1:630।

160 मुस्लिम, 4:2147; हाकिम, 2:252; नासाई और इब्न हंबल द्वारा भी इसका उल्लेख किया गया है।

सातवाँ उदाहरण: इब्न अब्बास (“उम्माह के विद्वान” और “
कुरान के व्याख्याता”) और इब्न मसूद (पैगंबर के सेवक और एक महान
साथी विद्वान) की रिपोर्ट है कि काबा में 360 मूर्तियाँ स्थापित थीं
मक्का की विजय के दिन, अल्लाह के रसूल ने एक घुमावदार छड़ी से उन पर एक-एक करके इशारा किया, और
कहा: सत्य आ गया है और झूठ मिट गया है। निस्संदेह झूठ का हमेशा मिटना तय है (17:81)।

जिस मूर्ति की ओर उसने इशारा किया वह नीचे गिर गई। यदि उसने मूर्ति के चेहरे की ओर इशारा किया, तो वह पीछे की ओर गिर गई;
यदि वह मूर्ति की पीठ की ओर इशारा करता तो वह मुंह के बल गिर जाती। इस प्रकार वे सभी नीचे गिर गए।161

आठवां उदाहरण: यह भिक्षु बहिरा की प्रसिद्ध कहानी है।
उनकी पैगम्बरी की घोषणा की गई, ईश्वर के दूत ने दमिश्क की यात्रा की
उनके चाचा अबू तालिब और कुछ अन्य कुरैशी के व्यापारिक कारवां
वे मठ के पास रुके, जहाँ बहिरा नामक एक प्रसिद्ध संन्यासी रहता था।
वह अप्रत्याशित रूप से बाहर आया। जब उसने मुहम्मद को देखा तो वह अचानक बाहर आ गया।
काफिले में विश्वासपात्र होकर उसने कहा: "वह सारे संसार का स्वामी है और
एक पैगंबर होगा।" कुरैशी ने पूछा: "तुम्हें यह कैसे पता?"
भिक्षु ने उत्तर दिया: "जब आप आ रहे थे तो मैंने कारवां के ऊपर बादल का एक टुकड़ा देखा। जब आप बैठे, तो वह
उसकी तरफ चला गया और उस पर छाया बन गया। मैंने भी देखा कि बादल का एक टुकड़ा कारवां के ऊपर था।
उसने देखा कि चट्टानें और पेड़ उसके सामने झुके हुए लग रहे थे।
केवल पैगम्बरों के लिए।”162

ऐसे लगभग 80 उदाहरण हैं। इन आठ उदाहरणों को एक साथ जोड़कर एक ऐसी मजबूत और अटूट श्रृंखला बनाई जा सकती है। समग्र रूप से देखा जाए तो मुहम्मद के पैगम्बर होने की गवाही देने वाली निर्जीव वस्तुओं से संबंधित ऐसे चमत्कारों का अर्थ निश्चित रूप से तवातुर है । प्रत्येक उदाहरण दूसरों से अतिरिक्त शक्ति प्राप्त करता है, जैसे एक पतला स्तंभ मजबूत होने से मजबूत हो जाता है।

मोटे स्तंभों से जुड़े हुए हैं। इसी तरह, लोग अपने आप में कमज़ोर हैं। लेकिन जब
वे एक सेना में शामिल होते हैं, जिनमें से प्रत्येक के पास 1,000 लोगों को चुनौती देने की पर्याप्त शक्ति होती है।

बारहवाँ चिन्ह: ग्यारहवें चिन्ह से संबंधित निम्नलिखित तीन उदाहरण
संकेत, बहुत महत्वपूर्ण हैं.

पहला उदाहरण: जैसा कि सभी व्याख्याकारों के सावधानीपूर्वक सत्यापन और सभी परंपरावादियों की रिपोर्टों के माध्यम से स्थापित किया गया है, यह आयत: जब आपने फेंका, तो यह आप नहीं थे
कि फेंक दिया, लेकिन भगवान ने फेंक दिया (8:17), निम्नलिखित घटना को संदर्भित करता है:
बद्र की लड़ाई में, ईश्वर के दूत ने मुट्ठी भर मिट्टी और कंकड़ लिए और
उन्हें अविश्वासियों की सेना पर फेंकते हुए कहा: "तुम्हारे चेहरे विकृत हो जाएं।"
वह मुट्ठी भर मिट्टी प्रत्येक अविश्वासी की आँखों में समा गई, और “तुम्हारे चेहरे पर खुशी हो”

---

161 मजमा अल-ज़वायद, 6:176, बुखारी, मुस्लिम और तिर्मिज़ी द्वारा संबंधित।

162 तिर्मिज़ी, नहीं. 3699; हकीम, 2:615; इब्न हिशाम, 1:115; शिफ़ा', 1:83.

विकृत!" हर किसी ने सुना। परिणामस्वरूप वे चिंतित हो गए
हालांकि उन्होंने हमला शुरू कर दिया था, लेकिन उन्हें पीछे हटना पड़ा।163
परंपरावादी, विशेष रूप से इमाम मुस्लिम, रिपोर्ट करते हैं कि हुनैन की लड़ाई के दौरान भी यही घटना घटी थी। परिणामस्वरूप, और ईश्वर की शक्ति से
और अनुमति के बिना, प्रत्येक के चेहरे पर मुट्ठी भर मिट्टी मारी गई और उन्हें
युद्ध के मैदान से भाग जाओ, अपनी आँखों में व्यस्त रहो।164 चूँकि ये असाधारण

घटनाएँ मानवीय क्षमता और भौतिक कारणों से परे हैं, कुरान घोषित करता है: जब तुमने फेंका, तो यह तुम नहीं थे जिन्होंने फेंका, बल्कि
परमेश्वर ने फेंका (8:17)।

दूसरा उदाहरण: विश्वसनीय परंपरावादी, विशेषकर इमाम बुखारी और
इमाम मुस्लिम कहते हैं कि ख़ैबर की लड़ाई के बाद एक यहूदी महिला ने एक आदमी को भून दिया।
बकरे को जहर देकर पैगम्बर मुहम्मद के पास भेज दिया गया।
जब मैं उसे खाने ही वाला था कि अचानक अल्लाह के रसूल ने कहा: "अपने हाथ हटा लो!
इससे मुझे पता चलता है कि इसमें ज़हर है।" बिशर इब्न अल-बरा को छोड़कर सभी ने इसे खाना बंद कर दिया,
जिसने इसका एक निवाला खा लिया था और बाद में ज़हर के कारण उसकी मृत्यु हो गई।
ईश्वर के दूत ने यहूदिन (ज़ैनब) को बुलाया। जब उनसे पूछा गया कि उसने ऐसा क्यों किया?
उसने कहा: "मैंने सोचा था कि अगर आप पैगम्बर हैं तो इससे आपको कोई नुकसान नहीं होगा,
और अगर तुम राजा होते तो लोग तुमसे बच जाते।"165

निम्नलिखित बिंदु पर विचार करें, जो इस चमत्कार को और भी अधिक बढ़ा देता है
असाधारण घटना: एक रिपोर्ट के अनुसार, कुछ साथियों ने भी सुना
बकरा बोल रहा है। यहूदियों ने ईश्वर के दूत और उनके बेटे को नुकसान पहुंचाने का प्रयास किया था।
साथ ही, अपने करीबी साथियों को भी साथ ले जाओ। हालाँकि, पैगंबर की चेतावनी सच साबित हुई
सच है और उनकी साजिश का पर्दाफाश हो गया और उसे नाकाम कर दिया गया। जब पैगंबर, जिनके साथियों ने उनसे कभी कोई झूठा बयान नहीं सुना था, ने कहा: "यह बकरी बताती है
मुझे वह...,'' हर किसी ने उसी निश्चय के साथ उस पर विश्वास किया मानो उन्होंने पहले ही ऐसा कर लिया हो
बकरी ने स्वयं यह बात सुनी।

तीसरा उदाहरण: निम्नलिखित एक अन्य चमत्कार के तीन उदाहरण बताता है-
यह मूसा के चमकदार, सफेद हाथ और छड़ी के समान है।

प्रथम: इमाम अहमद इब्न हंबल अबू सईद अल-खुदरी की प्रामाणिकता के बारे में बताते हैं और पुष्टि करते हैं कि ईश्वर के दूत ने क़तादा इब्न नुमान को एक छड़ी दी थी
अंधेरी बरसात की रात में, कहते हुए: "यह छड़ी तुम्हारे आस-पास के क्षेत्र को 7 मील दूर तक रोशन करेगी
मीटर। जब आप घर पहुंचेंगे, तो आपको एक काली छाया दिखाई देगी जो शैतान है। ड्राइव करें
उसे अपने घर से दूर भगाओ।" क़तादा छड़ी लेकर चला गया, जिसमें से कुछ ध्वनि निकल रही थी

---

163 मजमा अल-ज़वायद, 6:84; अबू दाऊद, इब्न हनबल और बहाकी द्वारा संबंधित।

164 मुस्लिम, संख्या 1775.

165 अबू दाऊद, मुक़द्दिमा, 11; बुखारी, 2:121; हकीम, 3:219; दारिमी, 1:35; इब्न हनबल, 1:305; बैहाकी, 6:256.

मूसा के चमकते, सफ़ेद हाथ की तरह रोशनी। जब वह घर पहुंचा, तो उसने पाया
उस व्यक्ति ने बताया और उसे भगा दिया।166

दूसरा: बद्र की लड़ाई के दौरान, जो आश्चर्यों का स्रोत थी,
उक्काशा इब्न मिहसन अल-असद ने बहुदेववादियों से लड़ते हुए अपनी तलवार तोड़ दी।
ईश्वर के दूत ने उसकी टूटी तलवार की जगह एक छड़ी रख दी और उससे कहा
लड़ाई जारी रखो। अचानक, भगवान की शक्ति और अनुमति से, छड़ी बदल गई
एक लंबी सफ़ेद तलवार में बदल दिया। उसने उससे लड़ाई की और उसे तब तक अपने पास रखा जब तक कि वह मारा नहीं गया
यमामा की लड़ाई के दौरान शहीद हुए।167 यह घटना निर्विवाद है, क्योंकि
उक्काशा को उस तलवार पर इतना गर्व था कि जीवन भर उसका व्यापक रूप से प्रचार होता रहा।
जिसे "सहायता" के नाम से जाना जाता है।

तीसरा: इब्न अब्द अल-बर्र, अपने समय के सबसे प्रतिभाशाली विद्वानों में से एक,
अल्लाह के रसूल के चचेरे भाई अब्दुल्लाह इब्न जहश ने कहा कि,
उहुद की लड़ाई के दौरान उसकी तलवार टूट गई। पैगम्बर ने उसे एक छड़ी दी,
जो बाद में उसके हाथ में तलवार बन गई। इब्न जहश ने उससे युद्ध किया, और
चमत्कार यह हुआ कि युद्ध के बाद भी तलवार बची रही।168 साल बाद, जैसा कि इब्न माजा ने बताया है
सैय्यद अल-नस ने पैगंबर की जीवनी में लिखा है कि इसे बुगई तुर्की को बेच दिया गया था।
200 दिरहम के लिए.169 ये दोनों तलवारें मूसा की लाठी की तरह चमत्कार हैं, सिवाय इसके कि
उसके बाद वे तलवारें ही रहीं, जबकि मूसा की लाठी ने अपना चमत्कारी पहलू खो दिया
उनकी मृत्यु के बाद.

तेरहवीं निशानी: चमत्कार का एक और प्रकार, एक मुतवातिर चमत्कार जिसके अनेक उदाहरण हैं, वह है
पैगम्बर द्वारा अपनी कृपा से बीमारों और घायलों को चंगा करना।
सांस। अपनी संपूर्णता में, ऐसे चमत्कार अर्थ में मुतवातिर हैं । कुछ
घटनाओं के अर्थ में भी तवातुर की निश्चितता है । बाकी को भी निश्चित किया जाना चाहिए
परंपरा के वैज्ञानिक सिद्धांतों के अनुसार प्रामाणिक माना जाता है,
हालाँकि उनका वर्णन केवल एक ही संचरण श्रृंखला पर निर्भर करता है, क्योंकि
वे इस विज्ञान के समझदार नेताओं द्वारा संबंधित और सत्यापित हैं।
अनेक प्रासंगिक उदाहरणों के बावजूद, हम केवल कुछ का ही हवाला देते हैं:

पहला उदाहरण: काजी इयाद अपने शिफा में अनेक माध्यमों और एक सेवक साद इब्न अबी वक्कास के
उच्च कोटि के कथावाचकों की श्रृंखला के माध्यम से रिपोर्ट करते हैं।
और ईश्वर के दूत के सैन्य कमांडर, सेना के प्रमुख कमांडर
वह सेना जिसने उमर के खिलाफत के दौरान फारस पर विजय प्राप्त की, और दस में से एक
साथियों ने उनके जीवन में ही स्वर्ग का वादा किया था। उसने कहा: "मैं उनके पास था
उहुद की लड़ाई के दौरान ईश्वर के दूत ने अधर्मियों पर तीर चलाए।

166 मजमा अल-ज़वायद, 2:166, इब्न हनबल, इब्न खुजैमा और हकीम द्वारा संबंधित।

167 सिरा इब्न हिशाम, 1:637; बहाक़ी, 4:97; इब्न अल-जौज़ी, ज़ाद अल-मआद, 3:186।

168 इस्तिआब, 3:879; इब्न हजर, अल-इसाबा, नहीं। 4583; बेहाकी द्वारा भी संबंधित।

169 'उयुन अल-अथर, 2:20; इब्न हजर, अल-इसाबा, नहीं। 4583.

जब तक उसका धनुष टूट नहीं गया, उसके बाद उसने अपने तीर दूसरों को देने शुरू कर दिए हर बार जब उसने मुझे एक पंखहीन तीर दिया, तो उसने मुझे इसे चलाने का आदेश दिया, जो मैंने किया। और वह पंखों के समान उड़कर एक अविश्वासी के शरीर को छेदता हुआ निकल गया। इस बीच, क़तादा इब्न नुमान को चोट लगी और उसकी एक आँख बाहर निकल आई। ईश्वर के दूत ने अपने हाथ से आँख की पुतली को उसके स्थान पर लगा दिया। आँख तुरन्त ठीक हो गयी, मानो कुछ हुआ ही न हो, और दूसरी आँख से भी बेहतर हो गयी।"170

यह घटना इतनी प्रसिद्ध हो गयी कि जब क़तादा के पोते में से एक खलीफा उमर इब्न अब्दुल अजीज से मिला, तो उसने निम्नलिखित काव्यात्मक कथन प्रस्तुत किया:

मैं उस व्यक्ति का बेटा हूँ
जिसकी आँख उसके गाल पर उभरी हुई थी,
लेकिन मुस्तफा के हाथों से आश्चर्यजनक रूप से बहाल किया गया था;
फिर वह पहले जैसा हो गया; वह
सबसे सुन्दर आँखें,
और सबसे अद्भुत था इसका पुनरुद्धार।

यौम धिकारद की लड़ाई के दौरान एक तीर अबू क़तादा के चेहरे पर लगा। अल्लाह के रसूल ने घायल आदमी का चेहरा साफ़ किया और अबू क़तादा ने कहा: "मैं न कभी दर्द महसूस हुआ, न ही घाव सड़ने लगा।"171

दूसरा उदाहरण: परम्परा की प्रामाणिक पुस्तकें, मुख्यतः सहीह अल-बुखारी और सहीह मुस्लिम, बताती हैं: अली, जो तीव्र पीड़ा से पीड़ित थे आँखों के सामने, ख़ैबर की लड़ाई के दौरान ध्वजवाहक नियुक्त किया गया था। यह तब समाप्त हुआ जब ईश्वर के दूत ने अपनी लार अली की आँखों पर लगाई, और उसकी आँखें बहुत बेहतर हो गईं। अगली सुबह, अली लड़ाई में शामिल हो गया और, गढ़ के भारी लोहे के दरवाजे को उखाड़कर और उसे ढाल के रूप में इस्तेमाल करके, विजय प्राप्त की ख़ैबर का गढ़.172 उसी लड़ाई में, सलमा इब्न अक्वा के पैर में घाव हो गया जब अल्लाह के रसूल ने उस पर साँस फूँकी तो वह ठीक हो गया।173

तीसरा उदाहरण: पैगंबर के जीवनी लेखक, जिनमें अल-नसाई भी शामिल हैं, बताते हैं उस्मान इब्न हुनैफ़ ने कहा: "मेरी आँखें खुलने के लिए प्रार्थना करें।" ईश्वर के दूत उससे कहा कि वज़ू करो, दो रकअत नमाज़ पढ़ो, और फिर कहो: "हे ईश्वर, मेरे मेरी अपील आप से है और मैं पैगंबर मुहम्मद के माध्यम से आपकी ओर मुड़ता हूं, दया के पैगम्बर। हे मुहम्मद, मैं आपके माध्यम से ईश्वर की ओर मुड़ता हूँ, कि वह

170 शिफ़ा', 1:322, इब्न इशाक, तबरानी और बहाकी द्वारा संबंधित।

171 शिफा, 1:322, तिर्मिज़ी और बैहकी द्वारा वर्णित।

172 बुखारी, 4:58; इब्न हनबल, 1:85; मुस्लिम और तबरानी से भी संबंधित।

173 बुखारी, 5:170; शिफ़ा', 1:323.

हे परमेश्वर, उसे मेरा मध्यस्थ बना दे।” वह वैसा ही करने चला गया जैसा वह था
जब वह वापस लौटा तो हमने देखा कि उसकी आँखें पहले ही खुल चुकी थीं।174

चौथा उदाहरण: इब्न वाहब, एक महान परंपरा विशेषज्ञ, रिपोर्ट करते हैं: जब
बद्र की लड़ाई के 14 शहीदों में से एक, मुअव्विद इब्न अफ़रा ने
अबू जहल के साथ, शापित अबू जहल ने उसका एक हाथ काट दिया। मुअव्विद
अपना कटा हुआ हाथ अल्लाह के रसूल के पास ले गया। रसूल ने कटे हुए हाथ को मुअव्विद की कलाई पर चिपका दिया
और उस पर अपनी लार लगाई। यह ठीक हो गया
एक बार, और मुअव्विज़ युद्ध में लौट आया और तब तक लड़ा जब तक वह शहीद नहीं हो गया।१७५ इब्न वहब ने बताया
कि उसी लड़ाई के दौरान, हुबैब इब्न यासफ़
कंधे पर तलवार का ऐसा वार हुआ कि लगा जैसे उसका कंधा
दो भागों में विभाजित हो गया था। ईश्वर के दूत ने भागों को एक साथ रखा, साँस ली
और उनका घायल कंधा ठीक हो गया।176

हालाँकि इन दोनों परम्पराओं का विवरण केवल एक ही साथी द्वारा दिया गया है,
उनकी घटना निश्चित मानी जा सकती है, क्योंकि वे एक ऐसे युद्ध के दौरान घटित हुई थीं जो स्वयं चमत्कारों का स्रोत था,
इब्न वहब जैसे महान अधिकारी द्वारा सत्यापित की गई थी, और इसी तरह की घटनाओं की भी रिपोर्ट की गई है। वास्तव में, लगभग 1,000
प्रामाणिक कथाओं के माध्यम से स्थापित उदाहरण संकेत करते हैं कि पैगम्बर
घाव ठीक हो गए.

प्रश्न: आपने इनमें से कई परंपराओं को मुतवातिर बताया है, जबकि हम उनमें से अधिकांश को पहली बार सुन रहे हैं। एक मुतवातिर कैसे हो सकता है?
परंपरा इतने लम्बे समय तक अज्ञात रही?

उत्तर: कई मुतवातिर तथ्य धार्मिक विद्वानों और विद्वानों के लिए स्पष्ट हैं।
दूसरों के लिए अज्ञात। कई परंपराएं जो परंपरावादियों के लिए मुतवातिर हैं
दूसरों द्वारा व्यक्तिगत रूप से रिपोर्ट किए गए के रूप में भी नहीं माना जाना चाहिए।
विज्ञान की किसी भी शाखा में सिद्धांत केवल उस शाखा के अधिकारियों के लिए ही स्पष्ट होते हैं
शाखा, और दूसरों को अधिकारियों पर भरोसा करना चाहिए या उस शाखा में प्रवेश करना चाहिए
उनके अपने अवलोकन। अब तक हमने जिन भी घटनाओं का उल्लेख किया है, उन्हें
परंपरावादियों, शरिया के विद्वानों, पद्धतिविदों और ज्ञान की कई अन्य शाखाओं के विद्वानों द्वारा मुतवातिर , तवातुर की निश्चितता के रूप में
या तो वास्तविक शब्दों में या अर्थ में। यदि अशिक्षित लोग इस बात से अनभिज्ञ हैं
और यदि वे लोग जो सत्य के प्रति अंधे हैं, उन्हें नहीं जानते, तो यह
यह उनकी अपनी गलती है.

174 अल-जामी अल-सगीर, नहीं। 1290, नसाई, तिर्मिधि, इब्न माजा, इब्न खुजैमा और द्वारा संबंधित हाकिम.

175 शिफ़ा', 1:324; 'अली अल-कारी, शरह अल-शिफा', 1:656।

176 शिफ़ा', 1:324, बहाकी, इब्न इशाक, इब्न कथिर और इब्न हज़र द्वारा संबंधित।

पाँचवाँ उदाहरण: इमाम बाघवी ने रिपोर्ट की और पुष्टि की कि युद्ध के दौरान खाई के पास, एक अविश्वासी ने अली इब्न अल-हकम का पैर तोड़ दिया। जब भगवान का मैसेंजर ने उस पर हाथ फेरा, पैर तुरंत ठीक हो गया।
घोड़े से उतरे बिना ही युद्ध करना।177

छठा उदाहरण: परंपरावादी, मुख्यतः इमाम बेहाकी, बताते हैं कि एक बार इमाम अली बहुत बीमार थे। वह अकेले थे और अपने लिए प्रार्थना कर रहे थे।
इलाज के लिए, भगवान के दूत अंदर आए और भगवान से उसे ठीक करने के लिए कहा। फिर उन्होंने कहा अली ने उठकर उसे अपने पैर से छुआ। अली तुरन्त ठीक हो गए और बाद में उन्होंने कहा: "तब से मुझे कभी भी वही बीमारी नहीं हुई।"178

सातवाँ उदाहरण: यह शूरहबिल अल-जुफी की प्रसिद्ध कहानी है।
अपनी हथेली में तलवार पकड़ने और घोड़े की लगाम थामना उसके लिए असम्भव हो गया।
ईश्वर के दूत ने ट्यूमर को पोंछा और तब तक मालिश की जब तक उसका कोई निशान नहीं रह गया शेष 179

आठवाँ उदाहरण: छह बच्चों को पैगम्बर के चमत्कारों से सम्मानित किया गया।
वे इस प्रकार हैं:

• इब्न अबी शायबा, उत्तम चरित्र और गहन शोध के व्यक्ति तथा प्रसिद्ध परंपरावादी, रिपोर्ट करते हैं: “एक महिला भगवान के दूत के पास आई एक मंदबुद्धि लड़के के साथ जो बोल नहीं सकता था। ईश्वर के दूत ने उसका चेहरा धोया अपने मुँह में पानी भरा, हाथ धोए, पानी महिला को दिया, और उससे कहा कि वह लड़के को यह पिला दे। लड़के के ऐसा करने के बाद, उसने वह पूरी तरह से ठीक हो गया और इतना समझदार और बुद्धिमान हो गया कि यहाँ तक कि सबसे विवेकशील व्यक्ति से भी श्रेष्ठ है।”180
• इब्न अब्बास बताते हैं कि एक पागल बच्चा ईश्वर के रसूल के पास लाया गया। पैगम्बर ने अपना हाथ बच्चे की छाती पर रखा, जिससे वह बेहोश हो गया। बच्चे को अचानक एक छोटी सी ककड़ी जैसी काली वस्तु उल्टी होने लगती है। बच्चा तुरन्त ठीक हो गया।181
• इमाम बेहकी और नसाई ने बताया कि एक उबलता हुआ बर्तन मुहम्मद इब्न ख़तीब की बांह पर गिर गया और पूरी तरह से जल गया। ईश्वर के दूत ने उन्हें चंगा किया घायल हाथ को सहलाकर और अपनी लार लगाकर लड़के को बचाया।182

---

177 उक्त., 1:323; मजमा अल-ज़वायद, 6:143; बहाक़ी, 6:185.

178 इब्न हनबल, 1:107; शिफ़ा', 1:323; इब्न हिब्बन, 9:47; बहाक़ी, 6:179.

179 मजमा अल-ज़वायद, 8:298, तबरानी और बहाकी द्वारा संबंधित।

180 इब्न माजा, नहीं. 3532; हकीम, 2:618; बहाक़ी, 6:82.

181 इब्न हनबल, 4:172; दारिमी, 1:11-12; बहाकी और तबरानी द्वारा भी संबंधित।

182 हकीम, अल-मुस्ताद्रक, 4:62-63; तबरानी और बेहाकी द्वारा भी संबंधित।

• एक गूंगा लड़का अल्लाह के रसूल के पास आया। जब अल्लाह के रसूल ने पूछा
लड़के ने उसे बताया कि वह कौन था, और कहा: "आप ही संदेशवाहक हैं," और कहने लगा:
बोलो.183

• जलालुद्दीन अल-सुयुती, अपने युग के अग्रणी विद्वान, जिन्हें जागते हुए कई बार ईश्वर के दूत से बातचीत करने का
सौभाग्य प्राप्त हुआ था,
संबंधित और सत्यापित किया गया कि यामामा से एक नवजात शिशु लाया गया था
अल्लाह के रसूल की तरफ़। जब रसूल ने उसकी तरफ़ अपना रुख़ किया तो
बच्चा बोलने लगा और बोला: "मैं गवाही देता हूं कि आप संदेशवाहक हैं।"
ईश्वर के दूत ने उत्तर दिया: "ईश्वर तुम्हें आशीर्वाद दे।" उसके बाद, बच्चा
बचपन में कभी नहीं बोले। उन्हें इस चमत्कार और "भगवान तुम्हें आशीर्वाद दें" की प्रार्थना से सम्मानित किया गया
था,184 और वे प्रसिद्ध हो गए
मुबारक अल-यमामा (यमामा से धन्य व्यक्ति) शीर्षक। • एक बुरे स्वभाव वाले लड़के ने ईश्वर के दूत के
सामने से गुजरते हुए उन्हें बाधित किया
जब वह प्रार्थना कर रहा था। ईश्वर के दूत ने कहा: "हे ईश्वर, उसे जाने न दें
कोई निशान नहीं।" इसके बाद, लड़के को उसके बुरे व्यवहार के लिए दंडित किया गया
चलने में असमर्थ हो जाना.185

• एक बच्चे जैसी सोच वाली बेशर्म औरत ने एक बार एक निवाला माँगा
अल्लाह के रसूल ने उसे एक खाना दिया, लेकिन वह
जवाब दिया: "मुझे वह चाहिए जो तुम्हारे मुँह में है।" ईश्वर के दूत ने उसे दिया
इसे खाने के बाद वह मदीना की सबसे शर्मीली महिला बन गई।186

इन आठों की तरह, शायद ऐसे चमत्कारों के 800 और उदाहरण हैं, जिनमें से ज़्यादातर परंपरा की किताबों और उनकी जीवनी में दर्ज हैं। चूँकि उनका हाथ लुक़मान की दवा की दुकान जैसा था, उनकी लार ख़द्र के जीवन देने वाले पानी (अमृत) जैसी थी, और उनकी साँस ईसा की स्वास्थ्य देने वाली साँस जैसी थी,

और चूँकि मानवता बीमारी के अधीन है, इसलिए कई लोगों ने उसका सहारा लिया।
युवा और पागल लोग उसके पास आते थे और ठीक हो जाते थे।

अबू 'अब्द अल-रहमान अल-यमनी (जिसे तावस के नाम से भी जाना जाता है), इनमें से एक सबसे महान तबीउन विद्वान और वह व्यक्ति जिसने 40 बार हज किया और 40 वर्षों तक रात की प्रार्थना के साथ सुबह की प्रार्थना की

---

183 इब्न कथिर, अल-बिदया वा अल-निहाया, 6:158, बहाकी से भी संबंधित है।

184 शिफ़ा', 1:319; कन्ज़ अल-उम्मल, 4:379; बहाक़ी, 6:59.

185 शिफा, 1:328; बैहकी, 5:243; इब्न हिब्बान ने भी इसका ज़िक्र किया है। [इस घटना को ग़लत नहीं ठहराया जाना चाहिए]
गलत समझा गया। संदेशवाहक ने यह समझ लिया होगा कि लड़का बहुत नुकसान पहुंचाएगा
अपने और समाज दोनों के लिए तथा दोनों पक्षों की भलाई के लिए इसे रोकने के लिए
लड़के ने, विशेष रूप से परलोक में अपने अनन्त जीवन और समाज के संबंध में प्रार्थना की
उसके खिलाफ़। इसी तरह की एक महत्वपूर्ण घटना कुरान में वर्णित है (18:74, 8 0-81) (ट्र.)]

186 मजमा अल-ज़वायद, 8:312; शिफ़ा', 1:325; तबरानी द्वारा संबंधित।

लगातार, निश्चितता के साथ कहा गया: "जब भी कोई पागल व्यक्ति आता था
ईश्वर के दूत ने जैसे ही उस पर हाथ रखा, वह ठीक हो गया।
उसकी छाती पर। इसमें कोई अपवाद नहीं था।" इतने बड़े अधिकारी के रूप में,
जो खुशी के युग के अंतिम चरण (प्रकृतिवाद के समय) में रहते थे।
पैगंबर साहब और उनके चार मार्गदर्शक खलीफाओं) का विश्वास इतना पक्का था कि इसमें कोई संदेह नहीं है
कि पैगंबर साहब ने अपने पास आने वाले हर व्यक्ति को ठीक कर दिया।
जब यह तथ्य ज्ञात हुआ, तो हम मान सकते हैं कि हजारों लोगों ने अपील की होगी
उसे।

चौदहवीं निशानी: रसूल की दुआओं से जुड़े चमत्कार भी
महत्वपूर्ण हैं। ऐसे चमत्कार निश्चित और वास्तव में मुतवातिर हैं ,
कई बार ऐसा हुआ है। उनमें से ज़्यादातर तवातुर की हद तक पहुँच जाते हैं या
मुतवातिर के समान ही प्रसिद्ध हैं ; बाकी सभी मुतवातिर के समान ही निश्चितता रखते हैं।
सुप्रसिद्ध मुतवातिर परंपराएं, क्योंकि उन्हें महानतम लोगों द्वारा वर्णित किया गया है
अधिकारियों ने कहा कि ऐसे कई उदाहरणों में से हम केवल कुछ ही उदाहरण बता रहे हैं जो इतने प्रसिद्ध हैं
मुतवातिर के समान, या उसकी समान निश्चितता है।

पहला उदाहरण: इमाम बुखारी और इमाम मुस्लिम सहित परंपरावादी,
रिपोर्ट है कि ईश्वर ने बारिश के लिए पैगम्बर की सभी प्रार्थनाओं को तुरंत स्वीकार कर लिया। कभी-कभी बारिश
तब शुरू हो जाती थी जब वह अपने हाथ नीचे नहीं करते थे।
जैसा कि पहले बताया गया है, बादल उसकी सेना की ज़रूरतों को पूरा करते नज़र आते थे
पानी के लिए। बचपन में भी, उनके दादा 'अब्द अल-मुत्तलिब
उसके साथ बारिश के लिए प्रार्थना करने जाओ, और यह उसके प्रति सम्मान से होगा।
अब्दुल मुत्तलिब की कविताओं ने इसे प्रसिद्ध बना दिया।

पैगम्बर की मृत्यु के बाद उमर एक बार अब्बास को अपने साथ प्रार्थना करने के लिए ले गए।
बारिश की कामना करते हुए कहा: "हे ईश्वर, यह आपके प्यारे पैगंबर के चाचा हैं। हमें बारिश दीजिए
उसके बाद बारिश हुई।187 जैसा कि इमाम बुखारी और मुस्लिम ने बताया है,
ईश्वर के दूत से बारिश के लिए प्रार्थना करने को कहा गया और उन्होंने ऐसा ही किया। इतनी भारी बारिश हुई
उन्होंने उससे प्रार्थना करने को कहा कि बारिश रुक जाए। उसने ऐसा ही किया और बारिश रुक गई
तुरन्त.188

दूसरा उदाहरण: यह तवातुर के रूप में अच्छी तरह से जाना जाता है कि जब वहाँ भी
केवल 40 साथी थे और वे गुप्त रूप से प्रार्थना कर रहे थे, भगवान के दूत
प्रार्थना की: "हे ईश्वर, उमर इब्न अल-खत्ताब या अम्र इब्न अल-हिशाम के द्वारा इस्लाम को मजबूत करें।" कुछ दिनों
बाद, उमर ने इस्लाम धर्म अपना लिया और इस्लाम के प्रसार का माध्यम बन गए।
खुलेआम इस्लाम का प्रचार और महिमामंडन किया।189 उन्होंने की उदात्त उपाधि प्राप्त की
फारूक (सत्य और झूठ के बीच अंतर करना)।

---

187 बुखारी, 2:35; बहाक़ी, 6:147.

188 शिफा', 1:327, बुखारी और मुस्लिम द्वारा वर्णित।

189 तिर्मिज़ी, नहीं. 3684; इब्न हनबल, 2:95; हकीम, 2:465; बहाक़ी, 2:215.

तीसरा उदाहरण: ईश्वर के दूत ने विभिन्न प्रतिष्ठित लोगों के लिए प्रार्थना की साथियों। उनकी प्रार्थनाएँ इतनी सहजता से स्वीकार की गईं कि उन्हें चमत्कार माना जा सकता है। निम्नलिखित कई उदाहरणों में से कुछ हैं:

जैसा कि मुख्य रूप से बुखारी और मुस्लिम ने बताया है, ईश्वर के दूत ने प्रार्थना की इब्न अब्बास के लिए: "हे ईश्वर, उसे धर्म का गहरा ज्ञानी बनाओ और उसे क़ुरआन का अंतरतम अर्थ सिखाओ।"190 परिणामस्वरूप, इब्न अब्बास "कुरान के व्याख्याता" की उत्कृष्ट उपाधि और "उम्माह के विद्वान" होने का उच्च पद प्राप्त किया। जब इब्न अब्बास अभी छोटे थे, उमर ने उन्हें अपनी सलाहकार सभा में शामिल किया, जिसमें शामिल थे साथियों के विद्वान और बुजुर्ग.

इमाम बुखारी सहित परम्पराओं की प्रामाणिक पुस्तकों के संकलनकर्ता, रिपोर्ट है कि अनस की माँ ने ईश्वर के दूत से प्रार्थना करने को कहा कि अनस बहुत से वंशज और बहुत सारी संपत्ति। उसने प्रार्थना की: "हे परमेश्वर, बहुतायत दे उसके धन और संतान पर कृपा कर, और जो कुछ तूने उसे दिया है, उस पर आशीर्वाद दे।" बुढ़ापे में अनस ने ईश्वर की कसम खाकर कहा: “मैंने अपने 100 बच्चों को दफ़न कर दिया है। मेरी संपत्ति के बारे में, कोई भी मेरे जितना खुश नहीं रहा है। आप मेरी संपत्ति को देखिए। प्रचुर धन, जो पैगंबर की प्रार्थना के कारण है।”191

इमाम बेहाकी सहित परंपरावादियों का कहना है कि ईश्वर के दूत वादा किए गए दस साथियों में से एक, अब्द अल-रहमान इब्न औफ़ के लिए प्रार्थना की जीवित रहते हुए ही स्वर्ग की प्राप्ति, प्रचुर धन-संपत्ति प्राप्त करना। परिणामस्वरूप, उसे ऐसी प्राप्ति हुई धन-संपत्ति इतनी अधिक थी कि एक बार उन्होंने भगवान के कार्य में 700 लदे हुए ऊँट दान में दे दिये थे।192 अब पैगंबर की प्रार्थना की आशीषों पर विचार करें और कहें: "भगवान के अनुग्रह कितने महान हैं" आशीर्वाद का।"

इमाम बुखारी समेत परंपरा के कथावाचक बताते हैं कि ईश्वर के रसूल ने उर्वा इब्न अबी जादा के लिए व्यापार में लाभ के लिए प्रार्थना की थी। उर्वा कहती हैं: “कभी-कभी मैं कूफ़ा के बाज़ार जाती और शाम को खाना खाकर घर लौटती।
40,000 (दिरहम) कमाए।" इमाम बुखारी टिप्पणी करते हैं: 'अगर उसने थोड़ा सा लिया होता अगर उसके हाथ में मिट्टी होती तो वह उससे लाभ कमाता।"193 अब्दुल्ला इब्न जाफर, जिनके लिए ईश्वर के दूत ने समृद्धि के लिए प्रार्थना की थी, प्रसिद्ध हो गए अपनी अपार संपत्ति के कारण। वह अपनी उदारता के लिए भी उतना ही प्रसिद्ध था जितना कि वह वह अपने धन के लिए था।194

उपर्युक्त चमत्कार इस बात को स्पष्ट करने के लिए पर्याप्त हैं।

---

[190] इब्न हनबल, मुसनद, 1:264; बुखारी, मुस्लिम और हकीम द्वारा भी संबंधित।

[191] बुखारी, 8:93, 100; मुस्लिम, नहीं. 2480; इब्न हनबल, 6:430.

[192] शिफ़ा', 1:326; बहाक़ी, 6:218; अबू दाऊद, नहीं. 2109.

[193] बुखारी, 4:252; इब्न हजर, अल-इसाबा, 2:476; बहाक़ी, 6:220.

[194] इब्न हजर, मतलिब अल-अलिया, 4077; अबू या'ला और तबरानी द्वारा संबंधित।

इमाम तिर्मिज़ी और अन्य परंपरावादियों का कहना है कि ईश्वर के रसूल साद इब्न अबी वक्कास के लिए प्रार्थना की: "हे भगवान, उसकी प्रार्थना का उत्तर दें।"195 उसके बाद, साद अपनी दुआओं के कबूल होने के लिए मशहूर हो गए। उसे अपने अभिशाप का डर था। ईश्वर के दूत ने यह भी प्रार्थना की कि अबू क़तादा जवान बने रहें, और कहें: "भगवान आपके चेहरे को खुशहाल बनाए। हे भगवान, उसके बालों और जब अबू क़तादा की मृत्यु 70 वर्ष की आयु में हुई, तो वह युवा प्रतीत हो रहे थे। 15 साल के लड़के के रूप में.196

एक बार कवि नबीघा ने भगवान के समक्ष अपनी एक कविता सुनाई। जब उन्होंने यह दोहा पढ़ा:

> हमारा सम्मान और प्रशंसा आसमान तक पहुंच गई है; हम और भी
> ऊपर जाना चाहते हैं!

पैगंबर ने उनसे मजाक में पूछा: "कहां, ऐ अबू लैला?" उसने जवाब दिया: "कहां हे ईश्वर के रसूल, स्वर्ग। ” इसके बाद, उन्होंने एक और सार्थक वाक्य पढ़ा कविता और ईश्वर के दूत ने प्रार्थना की: "भगवान आपके मुंह को विकृत न करें।" परिणामस्वरूप, जब नबीघा 15 वर्ष का हुआ तो उसके सभी दांत निकल आए। 120 साल तक। जब भी उसका कोई दांत टूटता, उसकी जगह नया दांत आ जाता।197

ईश्वर के दूत ने इमाम अली के लिए प्रार्थना की: "हे ईश्वर, उनके लिए यह पर्याप्त है कि वे गर्मी और सर्दी।" नतीजतन, इमाम अली को न तो ठंड और न ही गर्मी महसूस हुई, भले ही वह वह आदतन गर्मियों में सर्दियों के कपड़े या सर्दियों में गर्मियों के कपड़े पहनते थे। कहा: "पैगंबर की प्रार्थना के कारण मुझे सर्दी या गर्मी से कोई परेशानी नहीं होती।"198 ईश्वर के दूत ने फातिमा के लिए भी प्रार्थना की: "हे ईश्वर, उसे कष्ट न देना फ़ातिमा ने कहा: "उसकी प्रार्थना के बाद मुझे कभी भूख नहीं लगी।"199

तुफैल इब्न अम्र ने एक बार पैगम्बर से अपने लिए चमत्कार करने को कहा। पैगंबर ने प्रार्थना की: "हे भगवान, उसके लिए प्रकाश प्रदान करें।" एक प्रकाश दिखाई दिया तुफैल की आंखों के बीच में एक छेद हुआ था, जिसे बाद में एक छड़ी के सिरे पर स्थानांतरित कर दिया गया। इस कारण उन्हें ज़ु अल-नूर (प्रकाश का स्वामी) के नाम से जाना जाने लगा।200

ये कुछ सुप्रसिद्ध घटनाएँ हैं जो प्रामाणिकता प्राप्त कर चुकी हैं।

एक बार अबू हुरैरा ने पैगम्बर मुहम्मद से भूलने की शिकायत की। पैगम्बर ने उससे कहा कि वह ज़मीन पर एक कपड़ा बिछा दे।

---

195 तिर्मिधि, 3752; हकीम, 3:499; इब्न हिब्बान और अबू नुऐम द्वारा भी संबंधित।

196 शिफ़ा', 1:327, बहाकी द्वारा संबंधित।

197 इब्न हजर, अल-इसाबा, नंबर 8639; बहाक़ी, 6:232; इब्न कथिर, अल-बिदया, 6:168.

198 इब्न हनबल, 1:99; इब्न माजा, 1:43; बहाकी और तबरानी द्वारा भी संबंधित।

199 मजमा अल-ज़वायद, 9:203, बहाकी और तबरानी से संबंधित।

200 शिफ़ा', 1:328, बहाकी, इब्न जरीर और इब्न इशाक द्वारा संबंधित।

उसने कुछ हरकतें कीं जैसे कि वह अपने हाथों में कुछ अदृश्य चीजें भरकर उन्हें कपड़े पर बाँध रहा हो। ऐसा तीन-चार बार करने के बाद उसने अबू से कहा
हुरैरा ने उसे उठाने के लिए कहा। उसके बाद अबू हुरैरा ने, जैसा कि बाद में उन्होंने खुदा की कसम खाकर कहा, कभी कुछ नहीं भूला.201

चौथा उदाहरण: गंभीर उत्पीड़न के तहत, ईश्वर के दूत को कभी-कभी उत्पीड़कों की स्थिति का उल्लेख ईश्वर से करना पड़ता था:

प्रथम: फारसी चोस्रोस, परविज़ ने उसे भेजे गए पत्र को फाड़ दिया
पैगंबर ने जब यह सुना तो उन्होंने प्रार्थना की: "हे ईश्वर, उसे फाड़ डालो और
उसने मेरा पत्र फाड़कर अपना शासन चलाया। परिणामस्वरूप, परविज़ को उसके अपने बेटे ने मार डाला
(शिरविया) ने खंजर से, और साद इब्न अबी वक्कास ने उसके राज्य को टुकड़े-टुकड़े कर दिया
जिसके कारण सासानी साम्राज्य पूरी तरह से ध्वस्त हो गया।202 सम्राट
बीजान्टियम और अन्य राज्यों के शासक नष्ट नहीं हुए, क्योंकि उन्होंने पैगंबर के पत्रों का सम्मान किया।

दूसरा: एक प्रसिद्ध मुतवातिर परंपरा कहती है, और कुरान की आयतें इशारा करती हैं
इस्लाम के शुरुआती दिनों में जब ईश्वर के दूत काबा में प्रार्थना करते थे,
कुरैशी नेता उसके चारों ओर इकट्ठा हो जाते और उसके साथ बहुत बुरा व्यवहार करते।
उन्हें अपनी स्थिति के बारे में भगवान को बताना पड़ता था। इब्न मसूद टिप्पणी करते हैं: "मैं भगवान की कसम खाता हूँ कि मैं
बद्र की लड़ाई के बाद मैंने उनकी सारी लाशें देखीं।”203

तीसरा: ईश्वर के दूत ने प्रार्थना की कि विशाल मुदार जनजाति कायम रहे
अकाल पड़ा, क्योंकि उन्होंने उसका खंडन किया था। बारिश रुक गई, और सूखा और
मुदार में अकाल पड़ा। जब मुदार के एक उप-कबीले कुरैश ने पूछा
ईश्वर के दूत से बारिश के लिए प्रार्थना करने को कहा, उन्होंने ऐसा किया और इस तरह सूखा समाप्त हो गया
और अकाल.204 इस घटना को मुतवातिर माना जाता है.

पाँचवाँ उदाहरण: पैगम्बर की कुछ विशेष लोगों के प्रति नाराजगी का परिणाम यह हुआ कि उनके भयानक विनाश में। हम तीन उदाहरण देते हैं:

पहला: उसने उतबा इब्न अबी लहब को श्राप दिया: "हे ईश्वर, अपने कुत्तों में से एक भेजो
कारवां में कुछ समय बाद जब उतबा यात्रा कर रहा था, एक शेर ने उसे उठा लिया
बाहर निकलकर उसे फाड़ दिया। यह बहुत प्रसिद्ध घटना संबंधित थी और
प्रमुख परंपरा विद्वानों द्वारा सत्यापित।

दूसरा: ईश्वर के दूत ने अमीर इब्न अज़बत को आदेश देने के लिए भेजा
मुहल्लम इब्न जस्सामा ने उसे मार डाला। जब ईश्वर के दूत को इस बारे में पता चला, तो वह क्रोधित हो गया और प्रार्थना की: "हे ईश्वर, उसे माफ न करें

---

201 बुखारी, 4:253; मुस्लिम, तिर्मिज़ी और इब्न हंबल द्वारा भी इसका उल्लेख किया गया है।

202 बुखारी, 6:10; अबू नुअयम, दलाइल अल-नुबुव्वा, 2:348।

203 मुस्लिम, 3, नहीं. 1794; बुखारी, 5:94; इब्न हनबल, 1:417.

204 बुखारी, 2:37; बहाक़ी, 2:324.

205 बहाक़ी, 2:335; कन्ज़ अल-उम्मल, 438-439; अबू नुऐम, 2:454.

मुहल्लम।"206 मुहल्लम की मृत्यु 7 दिन बाद हुई। उन्होंने उसकी लाश को कब्र में रख दिया, लेकिन कब्र ने उसे अस्वीकार कर दिया। उन्होंने उसे कई बार दफ़नाने की कोशिश की, लेकिन हर बार कब्र ने शव को बाहर फेंक दिया। अंत में, एक आवरण बनाना पड़ा।

तीसरा: पैगम्बर ने एक आदमी को बाएं हाथ से खाना खाते देखा। उन्होंने उसे चेतावनी दी उसे अपने दाहिने हाथ से खाने के लिए कहा। उस आदमी ने, जो अपने स्वाभिमान को ठेस पहुँचा रहा था, जवाब दिया: “मैं ऐसा नहीं कर सकता।” ईश्वर के दूत ने कहा: “तुम इसे फिर कभी इस्तेमाल न करो।”
उसके बाद वह आदमी अपना दाहिना हाथ फिर कभी नहीं उठा सका।207

छठा उदाहरण: पैगंबर की प्रार्थना और स्पर्श के माध्यम से प्रकट हुए कई चमत्कारों में से, हम कुछ का उल्लेख करते हैं जिन्होंने निश्चितता प्राप्त की है। वे
निम्नानुसार हैं:

प्रथम: पैगम्बर ने खालिद इब्न वालिद (ईश्वर की तलवार) को कुछ दिये।
खालिद ने अपने बालों की एक मूठ मारी और अपनी जीत के लिए दुआ मांगी। खालिद ने उन बालों को अपनी पगड़ी में रख लिया।
उनकी क़द्र और दुआ की बदौलत खालिद हर लड़ाई में विजयी हुए।
युद्ध.208

दूसरा: सलमान अल-फारिसी पहले यहूदियों का गुलाम था। उसके स्वामी
[अपनी मुक्ति के लिए] बहुत अधिक फिरौती की मांग करते हुए कहा: "हम तुम्हें मुक्त कर देंगे यदि तुम 300 खजूर के पेड़ लगाओगे और जब वे फल देंगे, तो तुम उन्हें दे दोगे
हमें अतिरिक्त 50 किलो सोना दिया जाएगा।”

सलमान ने पैगम्बर को अपनी स्थिति बताई। अल्लाह के पैगम्बर ने मदीना के आस-पास कहीं खजूर के पेड़ लगाए, और एक और पेड़ लगाया गया।
एक अन्य व्यक्ति। उसी वर्ष के भीतर, सभी 300 पेड़ों ने फल दिया, सिवाय एक के
दूसरे व्यक्ति ने जो लगाया था, उसे रसूल ने उखाड़कर फिर से लगाया और उसमें भी फल लगे। फिर उसने अपने मुंह से थोड़ा पानी एक पेड़ पर डाला।
अंडे के आकार का सोने का टुकड़ा लिया और प्रार्थना करने के बाद सलमान को दे दिया और उनसे कहा
सलमान ने जो भी मांगा, वह दे दिया। सलमान के ऐसा करने के बाद भी यह अभी भी सबसे बड़ा हथियार बना हुआ है। समान आकार.209 यह चमत्कारी घटना, सलमान के जीवन की सबसे महत्वपूर्ण घटना है
विश्वसनीय परंपरावादियों द्वारा बताया गया है कि यह घटना जीवन के अंतिम चरण में घटित हुई थी।

तीसरा: उम्म मलिक नाम की एक महिला साथी मक्खन चढ़ाती थी
एक चमड़े के थैले (उक्का) में से पैगम्बर को दिया गया । एक बार उन्होंने इसे वापस कर दिया
उस पर प्रार्थना करते हुए, और उसे कहा कि वह इसे खाली न करे या निचोड़े नहीं। उसके बाद, उसके बच्चे जब भी कुछ चाहते तो थैले में मक्खन ढूँढ़ लेते। यह लंबे समय तक चलता रहा, जब तक कि उन्होंने इसे निचोड़ा और आशीर्वाद समाप्त नहीं कर दिया।210

---

[206] शिफ़ा', 1:329; इब्न हिशाम, सीरा, 4:247.

[207] मुस्लिम, नहीं. 2021; इब्न हिब्बान, बेहाकी और तबरानी द्वारा भी संबंधित।

[208] हकीम, 3:289; शिफ़ा', 1:331; बहाक़ी, 6:249.

[209] इब्न हनबल, 5:441-42; इब्न साद, तबक़ात, 4:53-57; हकीम, 2:16.

[210] मुस्लिम, नहीं. 2280; इब्न हनबल, 3:242; बहाक़ी, दलैल, 6:113.

सातवाँ उदाहरण: पानी के मीठे हो जाने के कई उदाहरण हैं
और एक सुखद सुगंध उत्सर्जित करते हैं। हम उनमें से कुछ का उल्लेख इस प्रकार करते हैं:

प्रथम: बैहाकी समेत परंपरावादी बताते हैं कि बीर अल-कुबा (अ.
कुआं) अक्सर सूख जाता था। जब अल्लाह के रसूल ने अपना कुछ पानी डाला
इसमें हमेशा बहुत सारा पानी भरा रहता था।211

दूसरा: परंपरावादी, विशेषकर अबू नुआयम ने अपनी दलील अल-नुबुव्वा में लिखा है,
बताया जाता है कि जब ईश्वर के दूत ने अपनी लार कुएं में डाली तो
अनस के घर जाकर दुआ मांगी तो उसका पानी मदीना में सबसे मीठा हो गया।212

तीसरा: इब्न माजा ने बताया कि एक बार कोई व्यक्ति एक बाल्टी पानी लेकर आया।
ज़मज़म कुएँ का पानी पैगम्बर को दिया। फिर उन्होंने कुछ पानी अपने मुँह में डाला और
जब उन्होंने इसे बाल्टी में खाली किया तो बाल्टी से कस्तूरी जैसी गंध आई।213

चौथा: इमाम अहमद इब्न हंबल बताते हैं कि एक बाल्टी पानी
कुएँ से लिया गया। जब अल्लाह के रसूल ने बाल्टी में अपनी लार डाली और पानी कुएँ में डाला, तो कुएँ से कस्तूरी की खुशबू आने लगी।214

पांचवां: हम्माद इब्न सलामा, एक पवित्र कथावाचक जो बहुत सम्मानित और विश्वसनीय थे
इमाम मुस्लिम और मुस्लिम पश्चिम (उत्तरी अफ्रीका और
अल-अंदालुस) में बताया गया है कि ईश्वर के दूत ने एक चमड़े के थैले में पानी भरा,
उसमें एक प्रार्थना फूँकी, और फिर उसे बाँधकर कुछ साथियों को देते हुए कहा: "इसे तब तक मत खोलना जब तक कि तुम वुज़ू न कर लो।" जब
उन्होंने ऐसा किया तो देखा कि अन्दर दूध था और उस पर मलाई भी थी।215

ये पांच घटनाएं प्रसिद्ध एवं महत्वपूर्ण अधिकारियों द्वारा वर्णित हैं।
यहां उद्धृत चमत्कारों के साथ, वे इस प्रकार के चमत्कारों को निश्चित रूप से अर्थ में मुतवातिर के रूप में दर्शाते हैं।

आठवाँ उदाहरण: पैगम्बर के आने के बाद बांझ बकरियों ने खूब दूध दिया
उन्हें छुआ और प्रार्थना की। इस तरह के चमत्कार के कई उदाहरण हैं। हम केवल कुछ का ही उल्लेख करते हैं जो सबसे प्रसिद्ध और सबसे प्रामाणिक हैं, जैसे
इस प्रकार है:

प्रथम: पैगम्बर की सभी विश्वसनीय जीवनियों में यह उल्लेख मिलता है कि मदीना प्रवास के दौरान वह और अबू बकर अतीका बिन्त अल-हुदैय्या के घर पर रुके थे।
(जिसे उम्म मा'बाद के नाम से भी जाना जाता है) उसके पास एक बहुत पतली, बांझ बकरी थी। जब
दूत ने पूछा कि क्या बकरी दूध देती है, उसने जवाब दिया: "यह तो दूध भी नहीं देती"
इसकी नसों में खून है। यह दूध कैसे पैदा कर सकता है?" ईश्वर के दूत ने कहा

---

211 शिफ़ा', 1:331, बहाकी द्वारा संबंधित।

212 वही, 1:331.

213 इब्न माजा, नहीं. 659; शिफ़ा', 1:332.

214 इब्न हंबल, 22, 67; इब्न माजा द्वारा भी उल्लेखित।

215 शिफा', 1:334, इब्न साद द्वारा संबंधित।

उसकी पीठ और कमर को सहलाया, उसके थन को सहलाया, प्रार्थना की, और फिर उसे एक बर्तन लाने को कहा और अपनी बकरी का दूध दुह लिया। उसने ऐसा किया, और अल्लाह के रसूल, अबू बकर, और पूरी घर के सभी सदस्य पूरी तरह से संतुष्ट होने तक शराब पीते रहे। इस घटना के बाद बकरी बड़ी हो गई मोटा और मजबूत और बहुत सारा दूध पैदा करने वाला.216

दूसरा: यह इब्न मसऊद की बकरी की प्रसिद्ध कहानी है।
धर्मांतरण के समय, इब्न मसूद एक चरवाहा था जो कुछ लोगों के झुंड की देखभाल करता था
मक्का के सरदारों ने एक दिन अल्लाह के रसूल और अबू बकर को वहां पर रोक दिया जहां पर वह रुके थे।
जब वह भेड़-बकरियों को चरा रहा था, तो उन्होंने उससे दूध मांगा।
ने कहा: "बकरियाँ मेरी नहीं हैं।" ईश्वर के दूत ने कहा: "मेरे लिए एक बकरी लाओ
बांझ बकरी।" इब्न मसऊद ने एक ऐसी बकरी पकड़ी जिसने पिछले दो वर्षों से संभोग नहीं किया था।
पैगम्बर ने बकरी के थन को सहलाया और प्रार्थना की। जब उन्होंने उसका दूध निकाला और
उसका शुद्ध, स्वादिष्ट दूध पीकर इब्न मसऊद मुसलमान बन गया।

तीसरा: साद जनजाति की हलीमा पैगम्बर की धाय थी।
जब उसकी जनजाति अकाल और सूखे से त्रस्त थी, तो जानवरों ने कोई उत्पादन नहीं किया
दूध। लेकिन जब भावी दूत को शिशु के रूप में दूध पिलाने के लिए भेजा गया
हलीमा अपनी बकरियों के साथ अकेली थी और उनके आशीर्वाद से वह घर लौट आई।
शाम को वे पूरी तरह संतुष्ट हो जाते हैं और उनके थन दूध से भर जाते हैं।218

यद्यपि ऐसे चमत्कारों के उदाहरण जीवनी में भी मिलते हैं
पैगम्बर साहब ने कहा कि इस उद्देश्य के लिए ये कुछ ही पर्याप्त हैं।

नौवां उदाहरण: जब प्रभु यीशु मसीह ने लोगों के सिर और चेहरे को छुआ और प्रार्थना की, तो अनेक आश्चर्यकर्म हुए, जिनमें से हम केवल एक का ही वर्णन करते हैं।
इनमें से कुछ प्रसिद्ध इस प्रकार हैं:

पहला: उसने उमर इब्न साद के सिर पर हाथ फेरा और दुआ मांगी। नतीजतन, यह
जब वह अस्सी वर्ष की आयु में मरा तो उसके सिर पर एक भी सफेद बाल नहीं था।219

दूसरा: पैगम्बर ने क़ैस इब्न ज़ैद के सिर पर हाथ फेरा और दुआ मांगी।
परिणामस्वरूप, क़ैस के सारे बाल सफ़ेद हो गए, सिवाय उस क्षेत्र के, जब वह बूढ़ा हो गया था।
100 वर्ष पुराना.220

तीसरा: 'अब्द अल-रहमान इब्न ज़ायद इब्न अल-खत्ताब एक छोटा, बदसूरत आदमी था।
पैगम्बर ने उसके सिर पर हाथ फेरा और प्रार्थना की, जिसके बाद वह लगभग शांत हो गया।
सबसे लंबा और सबसे सुंदर आदमी.221

---

216 मजमा अल-ज़वायद, हकीम, बज़ार और इब्न साद द्वारा संबंधित।

217 इब्न हनबल, 5:210; इब्न कथिर, अल-बिदया, 6:102; इब्न हिब्बन, 8:149.

218 मजमा अल-ज़वायद, 8:220-221, इब्न हनबल, इब्न हिब्बन और इब्न साद द्वारा संबंधित।

219 शिफा', 1:334.

220 वही, 1:334.

221 वही, 1:335.

चौथा: जब 'ऐज़ इब्न 'अम्र का चेहरा युद्ध में घायल हो गया था हुनैन, पैगम्बर ने खून को पोंछ दिया। उसके चेहरे का वह हिस्सा छू गया पैगंबर द्वारा इतना उज्ज्वल हो गया कि परंपरावादियों ने इसका वर्णन "जैसा" किया भूरे घोड़े के माथे पर सफेदी।”222

पांचवां: जब उन्होंने क़तादा इब्न सलमान के चेहरे पर हाथ फेरा और प्रार्थना की, तो यह शुरू हुआ दर्पण की तरह चमकना।223

छठी: ज़ैनब, उम्म सलमा (विश्वासियों की माँ) की बेटी और ईश्वर के रसूल की सौतेली बेटी, एक बच्ची थी जब उसने कुछ छिड़का उसके चेहरे पर उसके स्नान का पानी छिड़का गया। परिणामस्वरूप, उसके चेहरे पर एक असाधारण सुंदरता आ गई। 224

ऐसे कई उदाहरण हैं, जिनमें से अधिकांश का वर्णन इस प्रकार है: परंपरावादी। एक साथ लिया जाए तो वे एक चमत्कार का प्रतिनिधित्व करते हैं, जिसका अर्थ मुतवातिर की निश्चितता है , भले ही हम उनमें से प्रत्येक को प्रकृति में व्यक्तिगत मानते हों और तदनुसार, संदिग्ध रूप से रिपोर्ट किया गया हो।

किसी भी घटना की विभिन्न तरीकों से रिपोर्ट करके यह निष्कर्ष निकाला जाता है कि वह घटित हुई है, भले ही अलग-अलग रिपोर्ट व्यक्तिगत रूप से संदिग्ध हों। एक व्यक्ति कहता है: “फलां घर गिर गया।” दूसरा कहता है: "नहीं, एक अलग घर ढह गया है।" तीसरा तीसरे घर के ढहने की रिपोर्ट करता है, और इसी तरह आगे भी। प्रत्येक रिपोर्ट संदिग्ध हो सकती है और यहां तक कि यह सच नहीं है, लेकिन एक बात पक्की है—एक घर ढह गया। ऊपर बताए गए सभी छह उदाहरण प्रामाणिक हैं, और कुछ मशहूर भी हैं। भले ही हम हर एक को एक ही नज़र से देखें यद्यपि ये दोनों बातें संदिग्ध हैं, फिर भी जब इन्हें एक साथ लिया जाता है तो ये चमत्कार की घटना सिद्ध करते हैं, जैसे कि उपरोक्त सादृश्य में मकान का ढह जाना निश्चित है।

इस प्रकार अब तक उद्धृत चमत्कार की प्रत्येक श्रेणी दृढ़ता से स्थापित है, और संबंधित व्यक्तिगत घटनाएँ संपूर्णता को चित्रित या प्रस्तुत करती हैं। जैसे कि संदेशवाहक के हाथ, उंगलियाँ, लार, साँस और प्रार्थना उसके चमत्कारों के साधन हैं, वैसे ही उसके शरीर के अन्य अंग (भौतिक या अभौतिक) भी उसके चमत्कारों के साधन हैं।
अनेक आश्चर्य। इतिहास की पुस्तकें और उनकी जीवनी से संबंधित पुस्तकें इन चमत्कारों को व्यक्त करके और अपनी पैगम्बरता के विभिन्न प्रमाणों को प्रदर्शित करके उसके आध्यात्मिक, नैतिक और शारीरिक गुण।

पंद्रहवाँ संकेत: चट्टानें, पेड़, चाँद और सूरज उसे पहचानते हैं और उसकी नबी होने की गवाही देते हैं, और हर एक उसके चमत्कारों में से एक का प्रदर्शन करता है। उसी तरह, जानवर, मुर्दे, जिन्न और फ़रिश्ते भी उसे पहचानते हैं और गवाही देते हैं-

---

222 उपरोक्त, 1:334; मजमा अल-ज़वायद, 9:412, तबरानी द्वारा संबंधित।

223 शिफ़ा', 1:334; इब्न हजर, अल-इसाबा, 3:225.

224 शिफ़ा', 1:334; तबरानी और इब्न 'अब्द अल-बीरर द्वारा संबंधित।

उनके चमत्कारों का पात्र बनकर उनकी पैगम्बरी की पुष्टि की। यह चिन्ह है तीन भागों में समझाया गया है, इस प्रकार:

पहला भाग: पशु जगत ने ईश्वर के दूत को पहचाना और चमत्कार करने के लिए उसके लिए साधन बन गया। हालाँकि ऐसे कई उदाहरण हैं, लेकिन हम उनमें से कुछ ही प्रसिद्ध उदाहरणों का उल्लेख करते हैं जिनमें निश्चितता है मुतवातिर का अर्थ है, सटीक अधिकारियों द्वारा सहमति, या द्वारा स्वीकार किया गया उम्मा.

पहली घटना: इसका मतलब मुतवातिर माना जाता है । पैगंबर के मदीना प्रवास के दौरान, उन्होंने और अबू बकर ने खुद को छिपा लिया थावर गुफा में अपने पीछा करने वालों से। दो कबूतरों ने इसके प्रवेश द्वार की रक्षा की प्रहरी; एक मकड़ी, द्वारपाल के रूप में कार्य करते हुए, प्रवेश द्वार को ढक देती है मोटा जाल.225 उबैय इब्न अल-खलफ, एक प्रमुख कुरैशी जो होगा बद्र की लड़ाई के दौरान पैगम्बर द्वारा मारा गया, गुफा की जांच कर रहा था, उसके दोस्त भी इसमें शामिल होना चाहते थे। लेकिन उसने उनसे कहा: "इसका कोई मतलब नहीं है। यह वेब ऐसा लगता है कि इसे मुहम्मद के जन्म से पहले ही बुना गया था।" दूसरों ने कहा: "क्या वे कबूतर, जो वहाँ खड़े हैं, तब भी वहाँ होते अगर कोई अंदर होता?"226 इब्न वहब ने यह भी बताया है कि मक्का की विजय के दौरान कबूतरों के एक समूह ने पैगम्बर को छाया प्रदान की थी।227

आयशा बताती हैं: "हमारे घर में दाजिन नाम का एक कबूतर था। जब भगवान का दूत घर पर था तो यह शांत रहता था, लेकिन जैसे ही वह इसे छोड़ देता इधर-उधर चहलकदमी करने लगेगा।"228 इसका मतलब है कि पक्षी ने परमेश्वर की आज्ञा का पालन किया सन्देशवाहक के समक्ष शांत रहकर उसे प्रसन्न रखें।

दूसरी घटना: यह एक भेड़िये से संबंधित है। अबू सईद अल-खुदरी, सलामा इब्न अल-अक्वा, इब्न अबी वाहब, अबू जैसे प्रसिद्ध साथी हुरैरा और उहबान (सीधे तौर पर शामिल चरवाहा) इस घटना की रिपोर्ट करते हैं, जो इसे अर्थ में तवातुर की निश्चितता देता है । एक बार एक भेड़िये ने एक भेड़िये ने एक बकरी को झुंड से निकाल लिया, लेकिन चरवाहे ने बकरी को बचा लिया। भेड़िये ने कहा: "तुमने बकरी को अपने झुंड से वंचित कर दिया, लेकिन चरवाहे ने बकरी को बचा लिया। भगवान से डरे बिना मुझे मेरा खाना नहीं दिया।" चरवाहा बुदबुदाया: "कितना अजीब है! क्या भेड़िया बोलता है?" भेड़िये ने जवाब दिया: "आश्चर्य की बात यह है कि उस पहाड़ी के पीछे बैठा पैगम्बर तुम्हें जन्नत की दावत दे रहा है, लेकिन तुम उसे पहचान नहीं पा रहे हो!

सभी रिपोर्टें बोलने वाले भेड़िये पर सहमत हैं। अबू हुरैरा की रिपोर्ट के अनुसार, एक अधिक विश्वसनीय चैनल के माध्यम से प्रेषित, चरवाहे ने भेड़िये से कहा: "मैं तो जाऊँगा, लेकिन मेरी बकरियों की रखवाली कौन करेगा?" "मैं जाऊँगा," भेड़िये ने जवाब दिया।

---

225 इब्न हनबल, 1:248; इब्न कथिर, अल-बिदया वा अल-निहाया, 3:179-81।

226 शिफ़ा', 1:313, तबरानी, बज़ार और बहाकी द्वारा संबंधित।

227 वही, 1:313.

228 उपरोक्त, 1:309, इब्न हनबल, बज़ार, अबू याला और बहाकी द्वारा संबंधित।

चरवाहा बकरियों को भेड़िये के नीचे छोड़कर ईश्वर के दूत से मिलने गया। वह जल्द ही आस्तिक बन गया।229 जब वह वापस लौटा, तो उसने भेड़िये को देखा बकरियों पर नज़र रखते हुए; एक भी नहीं खोई थी। फिर उसने एक बकरी का वध किया भेड़िया उसका गुरु बन गया था।

अबू सुफ़यान और सफ़वान, दो प्रमुख कुरैशी ने एक बार एक भेड़िये को एक हिरन का पीछा करते हुए देखा। जब हिरन काबा के बाड़े में गया, तो भेड़िया भाग गया। वापस लौटे और मौखिक रूप से मुहम्मद के पैगम्बर होने की गवाही दी। आश्चर्यचकित होकर, अबू सुफ़यान ने सफ़वान को चेतावनी दी: "अगर हमने इस चमत्कार के बारे में दूसरों को बताया, तो मुझे पूरे मक्का में डर लगेगा मुसलमानों में शामिल हो जाएँगे।230 संक्षेप में, यह चमत्कार निश्चित है और अर्थ में तवातुर है ।

तीसरी घटना: यह ऊँट की कहानी है। यह पाँच ऊँटों के ज़रिए बताई गई है। या छह चैनल ऐसे साथियों द्वारा जैसे अबू हुरैरा, थलाबा इब्न मलिक, जाबिर इब्न 'अब्दुल्ला, 'अब्दुल्ला इब्न जाफ़र, और 'अब्दुल्ला इब्न अबी औफ़ा'। ए ऊँट ने ईश्वर के दूत के सामने झुककर प्रणाम किया, मानो उन्हें नमस्कार कर रहा हो, और बोला अन्य रिपोर्टों में कहा गया है कि यह ऊँट अंगूर के बगीचे में जंगली हो गया था, जो भी इसके पास आया उस पर हमला कर दिया। जब ईश्वर का दूत प्रकट हुआ, तो यह आया उसके सामने झुककर सम्मान की निशानी दी और घुटनों के बल बैठ गया ताकि रसूल उस पर लगाम लगा सके। तब ऊँट ने ईश्वर के रसूल से शिकायत की: "उन्होंने मुझे सबसे भारी काम में लगाया और अब वे मुझे मारना चाहते हैं, इसलिए मैं पागल हो गया हूँ।" ईश्वर के रसूल ने उसके मालिक से पूछा कि क्या यह सच है, और

उन्होंने जवाब दिया कि यह था.231

पैगम्बर के पास एक ऊँट था जिसका नाम 'अब्दा' था। पैगम्बर की मृत्यु के बाद, यह ऊँट ने दु:ख के मारे कुछ भी नहीं खाया-पीया और अन्ततः मर गया ।232 अबू इशाक अल-इस्फ़ारानी जैसे महत्वपूर्ण अधिकारियों ने बताया कि यह ऊँट बोलता था एक महत्वपूर्ण घटना के बारे में ईश्वर के रसूल से बातचीत की। जाबिर इब्न अब्दुल्लाह की रिपोर्ट एक बार सैन्य अभियान के दौरान उनका ऊँट थक गया था। दूत ने उसे थोड़ा सा हिलाया, जिससे उत्पन्न खुशी और चपलता ने ऊँट को आगे बढ़ाया। इतनी तेजी से आगे बढ़ें कि कोई भी उन्हें पकड़ न सके या रोक न सके ।233

चौथी घटना: इमाम बुखारी सहित परंपरावादियों का कहना है कि एक रात अफवाह फैली कि दुश्मन मदीना पर हमला करने वाला है। बहादुर घुड़सवार जांच करने के लिए निकल पड़े। रास्ते में उन्हें एक आदमी दिखाई दिया जो वह अल्लाह का रसूल था जो उनकी तरफ़ आ रहा था और उसने उनसे कहा:

---

229 मजमा अल-ज़वायद, 8:291, इब्न हनबल द्वारा संबंधित।

230 शिफा', 1:311.

231 हकीम, 2:99; इब्न हनबल, 3:158; मुस्लिम, 1:268; इब्न माजा, 1:121.

232 शिफा', 1:313.

233 बुखारी, 7:6; मुस्लिम, 3:1222.

"कुछ भी नहीं है।"234 वह अबू तल्हा के घोड़े पर सवार था और जांच कर रहा था किसी और के सामने इस मामले को उजागर न करें। उसने अबू तल्हा से कहा: "आपका घोड़ा बहुत तेज़ और आरामदायक," हालाँकि इससे पहले यह बहुत धीमा था। उस रात, कोई भी अन्य घोड़ा दौड़ में उसे हरा नहीं सका। एक अन्य अवसर पर, मैसेंजर ने अपने घोड़े को रुकने को कहा ताकि वह प्रार्थना कर सके। घोड़ा स्थिर रहा जब तक उसने प्रार्थना समाप्त नहीं कर ली।235

पांचवी घटना: सफीना, जो पैगम्बर मुहम्मद का सेवक था, मुआज़ से मिलने के लिए निकला। इब्न जबल, ईश्वर के दूत के आदेश पर यमन के गवर्नर बने। रास्ते में उसे एक शेर मिला और उसने उससे कहा: "मैं रसूल का सेवक हूँ।" शेर ने आवाज़ लगाई और उसे कोई नुकसान पहुँचाए बिना चला गया। एक और रिवायत के मुताबिक, मदीना लौटते समय सफ़ीना का सामना शेर से हुआ। हालाँकि, वह रास्ता भटक गया और शेर ने न केवल उसे कोई नुकसान नहीं पहुंचाया बल्कि उसे दिखाया भी रास्ता.236

उमर कहते हैं कि एक बद्दू ने छिपकली लेकर अल्लाह के रसूल से कहा: “अगर यह जानवर आपकी नबी होने की गवाही देता है, तो मैं आप पर विश्वास करूंगा। अन्यथा, मैं नहीं करूँगा।” जब ईश्वर के दूत ने छिपकली से पूछा, तो उसने गवाही दी 237 उम्म सलमा (विश्वासियों की माँ) रिपोर्ट है कि एक बार एक मृग ने ईश्वर के दूत से बात की और गवाही दी उसकी पैग़म्बरी की ओर।238

हमने अनेक समान उदाहरणों में से केवल कुछ प्रसिद्ध उदाहरणों का ही हवाला दिया है। इसलिए हम उन लोगों से कहते हैं जो परमेश्वर के दूत को नहीं पहचानते और उसकी आज्ञा नहीं मानते: "जानवरों से पीछे रहने की कोशिश मत करो जब तुम जान लो कि यहाँ तक कि वे भी जानवरों से पीछे हैं। भेड़िये और शेर ईश्वर के दूत को पहचानते हैं और उसकी आज्ञा मानते हैं।”

दूसरा भाग: लाशें, जिन्न और फ़रिश्ते ईश्वर के रसूल को पहचानते हैं। जिन्न और फ़रिश्तों से सम्बन्धित चमत्कार मुतावतिर हैं और उनकी संख्या बहुत अधिक है। हज़ारों। कई उदाहरणों से पता चलता है कि लाशें भगवान को पहचानती हैं मेसेंजर में, हम केवल कुछ विश्वसनीय अधिकारियों द्वारा बताए गए उदाहरणों का हवाला देते हैं, जो इस प्रकार हैं:

प्रथम: हसन अल-बसरी, इमाम अली के एक समर्पित शिष्य और सबसे महान इस्लाम के बाह्य और आंतरिक दोनों आयामों के धार्मिक विद्वान, ताबिउन, ने बताया कि एक आदमी बुरी तरह रोता हुआ अल्लाह के रसूल के पास आया और कहा: “मेरी छोटी बेटी पास की उस नदी में मर गई, और मैंने उसकी लाश वहीं छोड़ दी।” अल्लाह के रसूल को उस पर दया आई और उन्होंने कहा: "आओ, हम वहाँ चलें।"

---

234 मुस्लिम, नहीं. 2307; अबू दाऊद, 4988; तिर्मिज़ी, 1685.

235 शिफा', 1:315.

236 हकीम, 3:606; बज़ार, तबरानी और अबू नुआयम द्वारा भी संबंधित।

237 कन्ज़ अल-उम्मल, 12:358, बहाकी, हकीम और अबू नुअयम द्वारा संबंधित।

238 शिफ़ा', 1:314, तबरानी, बेहाकी, अबू नुअयम और इब्न कथिर द्वारा संबंधित।

जब वह उस स्थान पर पहुंची जहां उसे दफनाया गया था, तो ईश्वर के दूत ने उसे बुलाया। उसने तुरन्त उत्तर दिया: "मैं यहाँ हूँ, आपके आदेशों का पालन करने के लिए तैयार हूँ।" मैसेंजर ने पूछा कि क्या वह अपने माता-पिता के पास लौटना चाहती है। "नहीं," उसने कहा, "क्योंकि मुझे यहाँ एक बेहतर जगह मिल गई है।"239

दूसरा: इमाम बैहकी और इब्न अदी जैसे महत्वपूर्ण परंपरावादी रिपोर्ट है कि अनस इब्न मलिक ने कहा: "एक धर्मपरायण वृद्ध महिला का इकलौता बेटा अप्रत्याशित रूप से मर गया। वह बहुत दुखी हुई और प्रार्थना की: "हे भगवान, मैं यहीं पर आकर बसी थी तेरी कृपादृष्टि प्राप्त करने और तेरे रसूल की सेवा करने के लिए, जिसके पास मैं गया था वफ़ादारी की शपथ। अपने रसूल की खातिर, मुझे मेरा बेटा लौटा दो, जो मेरी देखभाल करने वाला एकमात्र व्यक्ति वही था।" अनस कहता है: "उस मृत बेटे को जीवित किया गया और हमारे साथ खाया।"240

पैगंबर की प्रशंसा में लिखी गई अपनी किताब कसीदा अल-बुरा में इमाम बुसिरी ने कहा है, इस चमत्कारी घटना को संदर्भित करता है:

> यदि उनके द्वारा किये गए चमत्कार पर्याप्त होते
> अपनी अद्वितीय रैंक का प्रदर्शन करने के लिए,
> उनके नाम का उल्लेख मात्र ही काफी होगा
> सड़ी हुई हड्डियाँ (नव मृत हड्डियों की तो बात ही छोड़िए)।

तीसरा: बैहाकी और अन्य लोग अब्दुल्लाह इब्न उबैउल्लाह अल-अंसारी को उद्धृत करते हैं: "मैं उस समय मौजूद था जब साबित इब्न क़ैस इब्न शम्मास को दफनाया गया था यमामा की लड़ाई के दौरान शहीद हो गए। जब उन्हें दफनाया जा रहा था, तो लोगों ने सुना उससे कहो: 'मुहम्मद ईश्वर के रसूल हैं, अबू बकर सच्चे हैं, उमर सच्चे हैं शहीद, और 'उथमान पवित्र और दयालु है।' हमने कब्र को केवल इसलिए खोला उसे मरा हुआ पाओ।"241 साबित ने उमर की शहादत से पहले ही भविष्यवाणी कर दी थी उमर खलीफा बने।

चौथा: दलाईल अल-नुबुव्वा में इमाम तबरानी और अबू नुअयम (सबूत) नुमान इब्न बशीर की रिपोर्ट: "ज़ैद इब्न ख़ारिजा की मृत्यु हो गई बाजार में अप्रत्याशित रूप से उसकी मौत हो गई। हम उसका शव घर ले गए। महिलाएं रो रही थीं शाम और देर शाम की प्रार्थनाओं के बीच कुछ समय के लिए, जब उसे यह कहते हुए सुना गया: 'चुप रहो, चुप रहो!' और धाराप्रवाह बोलना जारी रखा: 'मुहम्मद अल्लाह का रसूल है, ऐ रसूल, सलामती तुम पर हो। हमने उससे पूछा, और पाया कि वह मर चुका है।"242

---

239 शिफा', 1:320.

240 अल-बिदाया वा अल-निहाया, 6:292; शिफ़ा', 1:320; बेहाकी, 6:50।

241 शिफा', 1:320.

242 अल-बिदाया वा अल-निहाया, 6:293; हकीम और बेहाकी द्वारा संबंधित।

यदि जीवित लोग भी उसकी पुष्टि नहीं करते, जबकि मृतक उसके पैगम्बर होने की गवाही देते हैं, तो वे लाशों से भी अधिक निर्जीव और मृत हैं।
मृतकों की तुलना में.

ईश्वर के दूत के समक्ष प्रकट होने और उनकी सेवा करने वाले स्वर्गदूतों का वृत्तांत, और
जो जिन्न उस पर ईमान लाते हैं और उसकी आज्ञा का पालन करते हैं, उन्हें मुतवातिर का दर्जा प्राप्त है ,
क्योंकि कुरान की कई आयतों में इस बात की स्पष्ट पुष्टि की गई है। उदाहरण के लिए,
कुरान में कहा गया है कि बद्र की लड़ाई के दौरान 5,000 फ़रिश्तों ने उनके साथ मिलकर काम किया - जैसे कि अग्रिम मोर्चे पर तैनात सैनिक। ऐसा सेना को मज़बूत बनाने के लिए किया गया था।
विश्वासियों का यह विश्वास कि वे जीतेंगे, युद्ध में भाग नहीं लेंगे
सीधे तौर पर। ये देवदूत बाकी सभी के बीच उस सम्मान से प्रतिष्ठित हैं, बस
क्योंकि बद्र के लोग अन्य सभी साथियों से प्रतिष्ठित थे।

यहाँ दो पहलुओं पर विचार किया जाना चाहिए: स्वर्गदूतों का अस्तित्व
और जिन्न और हमारे साथ उनका रिश्ता (अट्ठाईसवें वचन में निर्णायक रूप से साबित), और कुछ मुसलमानों की देखने और बातचीत करने की क्षमता
उन्हें रसूल के आशीर्वाद और चमत्कारों के माध्यम से बचाया गया। कई परंपरावादी अधिकारी, विशेष रूप से बुखारी और मुस्लिम, रिपोर्ट करते हैं कि अर्खंगेल गेब्रियल आए थे
अल्लाह के रसूल जब एक मनुष्य के रूप में अपने कुछ साथियों के साथ बैठे थे।
सफेद कपड़े पहने हुए। उन्होंने विश्वास, इस्लाम और उत्कृष्टता और सद्गुण के बारे में पूछा
(इहसान) जब अल्लाह के रसूल उन्हें परिभाषित कर रहे थे, तो सहाबा
सबक सीखा और प्रश्नकर्ता को स्पष्ट रूप से देखा। जब प्रश्नकर्ता, जो
ऐसा लग रहा था कि वह कोई आगंतुक है, हालांकि, उनके आश्चर्य के लिए, उसमें कोई लक्षण नहीं थे
यात्रा के दौरान अचानक गायब हो गया, ईश्वर के दूत ने कहा: "वह गेब्रियल था,
जो तुम्हें तुम्हारा धर्म सिखाने आये हैं।”243

परंपरावादी भी प्रामाणिक कथाओं के माध्यम से रिपोर्ट करते हैं, जिसमें अर्थ में मुतवातिर की निश्चितता है , कि साथियों ने अक्सर गेब्रियल को देखा था
ईश्वर के दूत दिह्या के रूप में, एक बहुत ही सुंदर साथी। उदाहरण के लिए,
उमर, इब्न अब्बास, उसामा इब्न ज़ायद, हरीथ, आयशा और उम्म सलामा की रिपोर्ट:
"हमने अक्सर जिब्रील को ईश्वर के रसूल के साथ दिह्या के रूप में देखा।"244
यदि वे गेब्रियल को न देख पाते तो क्या वे ऐसा कहते?

फारस के विजेता और दस साथियों में से एक साद इब्न अबी वक्कास को जीवित रहते हुए स्वर्ग का वादा किया गया था, उन्होंने बताया: "उहुद की लड़ाई के दौरान
हमने देखा कि दो आदमी सफ़ेद कपड़े पहने हुए हैं जो अल्लाह के रसूल के दोनों तरफ खड़े हैं, मानो उनकी रक्षा कर रहे हों। हमने निष्कर्ष निकाला कि वे महादूत गेब्रियल और

---

243 बुखारी, 1:19-20; शिफा, 1:341, मुस्लिम और कई अन्य लोगों द्वारा भी उल्लेखित है।

244 इब्न हनबल, मुसनद, 1:212; बुखारी, 4:250; बहाक़ी, 7:52, 87.

माइकल।"245 जब इस्लाम का ऐसा नायक कहता है कि उसने उन्हें देखा, तो क्या वह ऐसा नहीं कर सकता था? उन्हें देखा?

अबू सुफ़यान इब्न हारिथ इब्न अब्दुल मुत्तलिब, पैगम्बर के चचेरे भाई,
रिपोर्ट: "हमने बद्र की लड़ाई के दौरान आसमान और धरती के बीच सफ़ेद कपड़े पहने घुड़सवारों को देखा।"246 एक दिन, हमजा ने ईश्वर के दूत से कहा कि वह गेब्रियल से मिलना चाहता है। काबा में दूत ने उनकी बात मान ली, लेकिन हमजा को कोई रास्ता नहीं सूझा।
वह दृश्य सहन नहीं कर सका और बेहोश हो गया।247

इसी प्रकार के कई उदाहरण इस प्रकार के चमत्कार को प्रदर्शित करते हैं, और इंडि-
यह भी कहा गया है कि फ़रिश्ते भी उनकी नबी की रौशनी के इर्द-गिर्द पतंगों की तरह घूमते हैं।

साथी और आम मुसलमान दोनों मिल सकते हैं और बातचीत कर सकते हैं
जिन्न। सबसे निश्चित उदाहरण इब्न मसूद का है, जिसे परंपरावादियों ने जिन्न कहा है।
सबसे प्रामाणिक वर्णनों में से एक के माध्यम से रिपोर्ट करें, जैसे कि: "मैंने देखा
जिस रात उन्हें इस्लाम में परिवर्तित किया गया, उस रात बटन अल-नखला में जिन्न थे।
सूडानी ज़ुट जनजाति के लंबे पुरुषों से मिलते जुलते थे।”248

परंपरावादियों द्वारा स्वीकारी और वर्णित एक और प्रसिद्ध घटना
खालिद इब्न वालिद से संबंधित है। जब 'उज़्ज़ा (इस्लाम से पहले की मूर्ति) को ध्वस्त किया गया,
एक महिला जिन्न एक काली औरत के रूप में उभरी। खालिद ने उसे दो टुकड़ों में काट दिया
अपनी तलवार से टुकड़े-टुकड़े कर दिए। तब ईश्वर के दूत ने कहा: "वे उसकी मूर्ति 'उज्जा' में पूजा करते रहे हैं। अब से, उसकी पूजा किसी भी तरह से नहीं की जाएगी
अब और नहीं।”249

उमर ने कहा: "जब हम अल्लाह के रसूल के पास थे, तो हामा नाम का एक जिन्न आया।
वह एक बूढ़े आदमी के रूप में प्रकट हुआ जिसके हाथ में एक छड़ी थी। उसने इस्लाम धर्म अपना लिया। ईश्वर के दूत ने उसे कुरान की कुछ छोटी-छोटी आयतें सिखाईं और सीखने के बाद
उसका पाठ पढ़कर जिन्न चला गया।''250 यद्यपि कुछ परंपरावादी इस बात पर प्रश्न उठाते हैं
घटना की सटीकता के बारे में, प्रतिष्ठित अधिकारी इस बात पर सहमत हैं कि यह घटना घटी थी।

इस संबंध में हमने बहुत से उदाहरण दिए हैं, इसलिए लंबी व्याख्या की कोई आवश्यकता नहीं है। हालाँकि, हम यह भी जोड़ते हैं: प्रकाश और शिक्षा के माध्यम से
ईश्वर के रसूल के अनुयायी होने के कारण, और उनका अनुसरण करने से, हजारों ऐसे प्रतिष्ठित, पवित्र ईश्वर-भक्त लोग जैसे कि अब्दुल-कादिर अल-जिलानी से मिले और उनसे बातचीत की
फ़रिश्ते और जिन्न। इस प्रकार यह घटना तवातुर सौ की डिग्री तक पहुँच गई है
बार.

---

245 मुस्लिम, नहीं. 2036; बुखारी, 7:192; हकीम, 2:264.

246 शिफ़ा', 1:362; इब्न हनबल, 1:347; बुखारी और बेहाकी द्वारा भी संबंधित।

247 शिफ़ा', 1:362; सुयुति, अल-खासाईस अल-कुबरा', 1:311।

248 इब्न हनबल, 6:165; सुयुति, उक्त., 1:343; शिफ़ा', 1:362.

249 अबू नुअयम, 2:535; शिफ़ा', 1:362; इब्न कथिर, अल-बिदया, 4:316।

250 बहाक़ी, 5:416; सुयुति, 2:350.

तीसरा भाग: ईश्वर के रसूल की सुरक्षा एक स्पष्ट चमत्कार है, जैसा कि इस प्रकार व्यक्त किया गया है: ईश्वर तुम्हें लोगों से बचाएगा (5:67) और इसका उदाहरण इस प्रकार है:
कई घटनाएँ। जब ईश्वर के दूत ने ईश्वरीय संदेश की घोषणा की,
उन्होंने सिर्फ एक जनजाति या जाति, कुछ राजनेताओं या किसी विशेष को चुनौती नहीं दी
धर्म नहीं, बल्कि सभी शासक और सभी धर्म। अपने चाचा और कबीले की स्थिति के बावजूद जो उनके सबसे बड़े दुश्मनों में से एक है, साथ ही कई षड्यंत्र भी
अपने विरुद्ध निर्देशित, उन्होंने पूर्ण संतोष के साथ अपने बिस्तर पर अंतिम सांस ली और 23 वर्षों तक बिना किसी बाधा के सर्वोच्च अमूर्त क्षेत्र में पहुंचे।
एक रक्षक या किसी भी तरह की सुरक्षा। यह स्पष्ट रूप से ऊपर उद्धृत आयत की सच्चाई को दर्शाता है और ईश्वर के दूत के लिए एक दृढ़ समर्थन प्रदान करता है।
इस संबंध में, हम कई निर्विवाद रूप से निश्चित अनुकरणीय घटनाओं में से केवल कुछ का उल्लेख करते हैं, जो इस प्रकार हैं:

पहली घटना: सभी परंपरावादी और पैगंबर के जीवनी लेखक रिपोर्ट करते हैं
कि कुरैश ने उसे मारने की कोशिश की। किसी शैतान या शैतान की सलाह पर
खुद को नज्द के एक आदमी के रूप में पेश करते हुए, उन्होंने कम से कम एक आदमी को नज्द से चुना
प्रत्येक कबीले के लोगों के बीच किसी भी तरह के अंतर-कबीले विवाद से बचने के लिए अबू जहल और अबू लहब ने नेतृत्व किया।
लगभग 200 लोगों ने पैगंबर के घर को घेर लिया। अली, जो
उस रात जो व्यक्ति ईश्वर के दूत के साथ था, उसे ईश्वर के दूत के बिस्तर पर सोने के लिए कहा गया।
जब कुरैश ने घर को घेर लिया तो रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) वहाँ से चले गए और उन पर धूल डालकर बिना देखे ही चले गए।251

दूसरी घटना: ईश्वर के दूत और अबू बकर ने थावर गुफा छोड़ दी, जहां
ईश्वर ने उनकी रक्षा के लिए एक मकड़ी और दो कबूतर भेजे और मदीना के लिए प्रस्थान किया।
इस बीच, कुरैशी सरदारों ने एक बहुत बहादुर आदमी सुराक़ा को उन्हें मारने के लिए भेजा, जिसके बदले में उन्हें बड़ा इनाम मिला। अबू बकर चिंतित हो गए जब उन्होंने कहा कि वे उन्हें मार डालेंगे।
उसने सुराक़ को आते देखा। ईश्वर के दूत ने उसे वही बात दोहराई जो उसने कहा था
गुफा में: “चिंता मत करो, क्योंकि भगवान हमारे साथ है।” फिर उसने सुराक़ा की ओर देखा, और
सुराक़ा के घोड़े के खुर ज़मीन में धँस गए। सुराक़ा ने घोड़े को खींच लिया
वह आजाद हुआ और उनका पीछा करने लगा, लेकिन उसके घोड़े के खुर फिर से फंस गए और
उसने उस जगह से धुआँ उठते देखा। तभी उसे एहसास हुआ कि न तो
न तो वह और न ही कोई और ईश्वर के रसूल पर हाथ डाल सकता था, और उसे पूछना पड़ता था
तिमाही के लिए। भगवान के दूत ने उसे मुक्त कर दिया, कहा: "वापस जाओ, और सुनिश्चित करें कि
कोई और नहीं आता।”252

इसके अलावा, एक चरवाहे ने अल्लाह के रसूल और अबू बकर को देखा और कुरैश को सूचित करने के लिए मक्का की ओर भागा। हालाँकि, जब वह वहाँ पहुँचा तो वह अपने पिता के साथ था।

---

[251] शिफ़ा', 1:349; इब्न हनबल, 4:269; बहाक़ी, 2:465; अबू नुअयम, 1:202-4.

[252] बुखारी, 4:245-46; मुस्लिम, नहीं. 2009; बहाक़ी, 2:483.

उसे याद नहीं कि वह उनसे क्या कहना चाहता था। कुछ भी याद न कर पाने के कारण उसे कुछ भी याद नहीं आ रहा था। छोड़ दिया और बाद में ही एहसास हुआ कि उसे भुला दिया गया था।253

तीसरी घटना: घटफान और अनमार के सैन्य अभियान के दौरान, अचानक ही एक साहसी सरदार जिसका नाम घवरास था, दूत के पास आया। उसने अपनी तलवार दूत के सिर पर रखते हुए कहा:
"तुम्हें मुझसे कौन बचाएगा?" ईश्वर के दूत ने उत्तर दिया: "ईश्वर।" फिर उन्होंने प्रार्थना की:
"हे ईश्वर, अपनी इच्छानुसार मुझे उससे बचाओ।" एक ही सांस में, दोनों के बीच एक झटका उसके कंधे घवरास को गिरा दिए, और उसकी तलवार उसके हाथ से फिसल गई। भगवान की दूत ने तलवार ली और पूछा: "अब तुम्हें मुझसे कौन बचाएगा?"
इसके बाद ईश्वर के दूत ने घवरास को माफ कर दिया और उसे अपने कबीले में वापस जाने की अनुमति दे दी। ऐसे बहादुर आदमी के कुछ भी न कर पाने पर आश्चर्यचकित होकर उसके साथियों ने पूछा:
"क्या हुआ? तुम कुछ क्यों नहीं कर सके?" उसने समझाया कि क्या हुआ था और कहा: "मैं सर्वश्रेष्ठ मानव जाति की उपस्थिति से आया हूँ।"254 इसी तरह की एक घटना में, एक पाखंडी व्यक्ति

गुप्त रूप से ईश्वर के रसूल के पास पहुंचा।
बद्र की लड़ाई के दौरान पीछे से, ईश्वर के दूत पर वार करने के लिए अपनी तलवार उठाई, उसी क्षण पैगम्बर ने मुड़कर उसकी ओर देखा। इससे वह कांपना और अपनी तलवार गिरा देना.255

चौथी घटना: अधिकांश व्याख्याकार इस घटना को, जो लगभग उतनी ही प्रसिद्ध है जितनी कि मुतवातिर, इस बात के प्रकटीकरण का अवसर मानते हैं: हमने उनकी गर्दन ठोड़ी तक बंधी होती है, इसलिए उनके सिर ऊपर होते हैं। हमने पहले भी कहा है उनके पीछे एक आड़ और उनके पीछे एक आड़ है, और हमने उन्हें ढाँप दिया है, ताकि वे (36:9) अबू जहल ने एक बड़ा पत्थर उठाया और कसम खाई कि अगर वह अगर वह पैगंबर को सजदा करते देखता तो उस पत्थर से उन पर वार करता। पैगंबर को सजदा करते देखकर उसने पत्थर उठाया और पैगंबर के सिर पर पटक दिया। लेकिन उसके हाथ नहीं लगे। हवा में जम गया। ईश्वर के दूत ने अपनी प्रार्थना समाप्त की और खड़े हो गए। केवल फिर क्या अबू जहल के हाथ खुल गए, या तो खुदा की इजाज़त से या क्योंकि उनके पास बंधे रहने का कोई कारण नहीं था।256

इसी तरह की एक घटना में, अबू जहल के कबीले (वालिद इब्न मुगीरा) का एक व्यक्ति, एक रिपोर्ट के अनुसार) भगवान की मूर्ति को चोट पहुंचाने के लिए एक बड़ी चट्टान के साथ काबा गया था। जब वह सजदा कर रहे थे, तब पैगम्बर मुहम्मद ने उन पर हमला किया। हालाँकि, उनकी आँखें बंद हो गईं और वह ईश्वर के दूत को नहीं देख सका। अभी भी देखने में असमर्थ (हालाँकि वह देख सकता था

253 शिफ़ा', 1:351; 'अली अल-कारी, शरह अल-शिफा', 1:715।

254 हकीम, 3:29-30; शिफ़ा', 1:348; बहाक़ी, 3:373-79; मुस्लिम द्वारा भी संबंधित.

255 शिफा', 1:347.

256 उपरोक्त, 1:351; मुस्लिम, नहीं. 2797; इब्न हनबल, 2:37.

(सुन) तो वह उन लोगों की ओर लौट गया जिन्होंने उसे भेजा था।257 जब अल्लाह के रसूल ने
अपनी प्रार्थना समाप्त करने के बाद, हत्यारे की आँखें खुल गईं, क्योंकि
उन्हें बंद रखने की कोई आवश्यकता नहीं थी।

अबू बकर बताते हैं कि सूरत अल-मसद (तब्बत) के बाद, जो इस प्रकार शुरू होता है
अबू लहब के हाथ नाश हो (111:1), अबू लहब की पत्नी ने प्रकट किया,
उसमें जलाऊ लकड़ी ले जाने वाले के रूप में वर्णित किया गया है (१११:४), एक चट्टान उठाई और
वह काबा के पास गई। अल्लाह के रसूल और अबू बकर उसके पास बैठे थे।
अल्लाह के रसूल को न देख पाने के कारण अबू बकर से पूछा: "तुम्हारा दोस्त कहाँ है? मैं
सुना है उसने मुझ पर व्यंग्य किया है। अगर मैं उसे देख लूंगा तो उसके मुंह पर इसी से वार करूंगा
चट्टान!"258 वह उसे नहीं देख सकी जो ईश्वर की सुरक्षा में था, जो
हदीस कुदसी का उद्देश्य : "तुम्हारे बिना, मैंने दुनियाओं का निर्माण नहीं किया होता।"
और इसलिए वह उसकी उपस्थिति में प्रवेश नहीं कर सकती थी। वह अपनी योजना को कैसे अंजाम दे सकती थी?

पांचवी घटना: अमीर इब्न तुफैल और अर्बाद इब्न क़ैस ने पैग़म्बर की हत्या की साज़िश रची। अमीर ने अर्बाद से कहा: "मैं उसे व्यस्त रखूँगा; तुम उसे मारो।"
वे उसके पास गए, लेकिन अरबाद ने कुछ नहीं किया। जब बाद में आमिर ने पूछा
अरबाद ने उससे पूछा कि उसने ईश्वर के दूत पर प्रहार क्यों नहीं किया, तो उसने उत्तर दिया: "मैं ऐसा कैसे कर सकता था?"
जब भी मैं उसे मारने का इरादा करता था, मैं तुम्हें हमारे बीच में देखता था। क्या तुम्हें उम्मीद थी कि मैं तुम्हें मारूँगा?
तुम्हें मारने के लिए?"259

छठी घटना: उहुद या हुनैन की लड़ाई के दौरान, शायबा इब्न
उस्मान अल-हजाबिया पीछे से चुपके से पैगंबर के पास पहुंचे।
वह अपने पिता और चाचा का बदला लेना चाहता था, जिनकी हत्या हमजा ने की थी।
उसने अपनी तलवार उठाई, लेकिन अचानक वह उसके हाथ से फिसल गई।
उसकी ओर मुड़ा और अपना हाथ उसकी छाती पर रख दिया। इस घटना को बताते हुए शैबा ने कहा
कहा: "उस पल, मेरे लिए कोई और उससे अधिक प्रिय नहीं था।" उसने गले लगा लिया
इस्लाम तुरन्त लागू हो गया और अल्लाह के रसूल ने उसे जाकर लड़ने को कहा। शैबा ने कहा:
"मैंने अल्लाह के रसूल के सामने लड़ाई की। अगर मैं अपने पिता से मिलता तो मैं उनसे भी लड़ता।
उसे मार डाला है।"260

मक्का की विजय के दिन, फदहला ने ईश्वर के दूत से संपर्क किया
उसे मार डालने के इरादे से। ईश्वर के दूत ने उस पर मुस्कुरा कर पूछा,
उसने मन में सोचा, और प्रार्थना की कि फदहला को क्षमा कर दिया जाए।
उस समय, फधाला ने बाद में स्वीकार किया: "दुनिया में कोई भी ऐसा नहीं था
उस क्षण वह मुझसे अधिक प्रिय था।"261

---

257 शिफ़ा', 1:351; बहाक़ी, 3:197.

258 हकीम, 2:351; बैहाकी, 2:195.

259 बहाक़ी, 5:318; शिफ़ा', 1:353; अबू नुअयम, 1:207.

260 शिफ़ा', 1:353; इब्न हजर, अल-इसाबा, 2:157; अबू नुऐम, 1:195.

261 शिफ़ा', 1:354; 'अली अल-कारी, शरह अल-शिफा', 1:718.

सातवीं घटना: कुछ यहूदियों ने एक बड़ी चट्टान को गिराने की साजिश रची पैगम्बर का सिर उस समय काटा गया जब वह एक विशेष छत के नीचे बैठे थे। जब परमेश्वर के दूत जाने के लिए खड़े हुए तो वे ऐसा करने ही वाले थे। परमेश्वर के आदेश के परिणामस्वरूप सुरक्षा के कारण उनकी साजिश नाकाम हो गई।262

ऐसे कई उदाहरण हैं। परंपरावादी, विशेषकर इमाम बुखारी और मुसलमान, 'आयशा' से वर्णित है कि जब भगवान आपको लोगों से बचाएगा जब अल्लाह के रसूल ने उन लोगों से कहा जिन्होंने समय से उनकी रक्षा की थी समय से कहा: "मुझे छोड़ दो, क्योंकि मेरा प्रभु, पराक्रमी और महिमावान, मेरी रक्षा करता है।"263

जैसा कि यह ग्रंथ दर्शाता है, ब्रह्मांड में प्रत्येक चीज़ पहचानती है और ईश्वर के रसूल से संबंधित है, और प्रत्येक अपनी विशिष्ट प्रकार की विशेषताओं को प्रदर्शित करता है चमत्कार। इससे पता चलता है कि पैगंबर मुहम्मद पैगंबर और दूत हैं ईश्वर, ब्रह्मांड के निर्माता और सृष्टि के स्वामी का एक महत्वपूर्ण संदेश शासक द्वारा नियुक्त निरीक्षक को राज्य के प्रत्येक विभाग द्वारा मान्यता प्राप्त होती है। प्रशासन और प्रत्येक से संबंधित है क्योंकि उसे एक कर्तव्य निभाना होगा शासक की ओर से प्रत्येक विभाग। उदाहरण के लिए, एक न्यायिक निरीक्षक न्यायिक विभाग से जुड़ा हुआ है और अन्य विभागों में अज्ञात है। इसी तरह, एक सैन्य निरीक्षक को नागरिक प्रशासन द्वारा मान्यता नहीं दी जाती है, इत्यादि। जैसा कि ऊपर सिद्ध किया गया है, दैवीय विभाग का प्रत्येक विभाग
राज्य, स्वर्गदूतों से लेकर कीड़े-मकौड़ों तक, जानता है, पहचानता है, या सारे संसार के पालनहार के दूत और प्रभु की मुहर के विषय में सुना है। और, इसके अलावा, उनकी पैगम्बरी का क्षेत्र सभी पिछले पैगम्बरों की तुलना में कहीं अधिक व्यापक है।

सोलहवीं निशानी: जो चमत्कार उनकी नबूवत से पहले हुए लेकिन उनसे संबंधित थे उन्हें इरहासत कहते हैं। वे तीन प्रकार के होते हैं, जो इस प्रकार हैं:

प्रथम प्रकार: तौरात द्वारा दी गई मुहम्मद की पैगम्बरी की ख़बरें, बाइबल, भजन और अन्य पैगम्बरों को भेजे गए पृष्ठ, जैसा कि कुरान में उल्लेख किया गया है। चूँकि ये मूलतः ईश्वर द्वारा अपने पैगम्बरों को बताए गए पवित्र शास्त्र हैं, इसलिए ये यह उचित है कि वे उस पैगम्बर का उल्लेख करें जो उनके धर्मों का स्थान ले लेगा, मानव सभ्यता का स्वरूप बदल दें, और आधी दुनिया को प्रकाशित कर दें इस्लाम की रौशनी। ये किताबें, जो छोटी-छोटी घटनाओं की भी भविष्यवाणी करती हैं, मुहम्मद की पैगम्बरी का उल्लेख नहीं किया गया, जो सबसे महत्वपूर्ण घटना है

मानव इतिहास में सबसे बड़ा संकट कौन सा है?

---

262 शिफ़ा', 1:352; अल-ख़ासाई अल-कुबरा', 1:525 में इब्न इशाक और नासाई द्वारा भी संबंधित है।

263 हकीम, 2:213; बहाक़ी, 2:184; तिर्मिधि द्वारा भी संबंधित।

यह देखते हुए कि उन्हें ऐसा करना ही होगा, जिन लोगों के पास ये ग्रंथ भेजे गए थे, वे या तो अपने धर्मों को विनाश से बचाने के लिए और अपनी पुस्तकों को निरस्त होने से बचाने के लिए इसे झूठ बताकर निंदा करेंगे, या इसकी पुष्टि करेंगे ताकि इस सत्यवादी व्यक्ति के माध्यम से उनके धर्म अंधविश्वास और भ्रष्टाचार से मुक्त रहें। दोस्त और दुश्मन दोनों इस बात पर सहमत हैं कि उनकी किताबों में ऐसा कुछ भी नहीं है जो उनकी नबी होने का खंडन या खंडन करता हो; इसके विपरीत, वे सर्वसम्मति से इसकी पुष्टि करते हैं। इस तथ्य का उपयोग करते हुए, साथ ही इस तरह की पुष्टि के लिए एक निश्चित कारण और एक बुनियादी कारण के अस्तित्व का उपयोग करते हुए, हम इस पुष्टि को तीन निश्चित प्रमाणों के माध्यम से साबित करेंगे।

पहला प्रमाण: ईश्वर के दूत ने क़ुरआन की ज़बान से किताब वालों (यहूदियों और ईसाइयों) को घोषणा की: "तुम्हारे धर्मग्रंथ मुझे बताते हैं और जो कुछ मैं कहता हूँ, उसकी पुष्टि करते हैं।" इसके अलावा, वह उन्हें निम्नलिखित आयतों के ज़रिए चुनौती देते हैं:

> कह दो, "यदि तुम सच्चे हो तो अब तौरात लाओ और उसे पढ़ो।" (3:93)
>
> कह दो, “आओ, हम अपने बेटों को और तुम्हारे बेटों को, अपनी स्त्रियों को और तुम्हारी स्त्रियों को, अपने आपको और अपने आपको बुलाएँ, फिर नम्रता से प्रार्थना करें और झूठ बोलनेवालों पर अल्लाह की लानत भेजें।” (3:61)

इतनी कड़ी चुनौतियों के बावजूद, किसी भी यहूदी विद्वान या ईसाई पादरी ने कभी कोई गलती नहीं पाई जिसके आधार पर उसे चुनौती दी जा सके। अगर उन्होंने ऐसा किया होता, तो उस समय के कई जिद्दी और ईर्ष्यालु अविश्वासियों, साथ ही पाखंडी यहूदियों और सभी अविश्वासियों ने पूरे देश में इसका प्रचार किया होता।

उस समय के बहुदेववादियों की तरह, यहूदियों और ईसाइयों को भी उसके विरुद्ध युद्ध करना पड़ा, जब वे उसका विरोध करने में सक्षम नहीं थे। उन्होंने युद्ध करना चुना, लेकिन वे बिखर गए और पलायन करने को मजबूर हो गए, क्योंकि उन्हें कोई गलती नहीं मिली। अगर उन्हें पता होता, तो वे खुद को बचा हुआ समझते।

दूसरा प्रमाण: टोरा, सुसमाचार और भजन संहिता के शब्दों में कुरान की चमत्कारी पूर्णता नहीं है। इसके अलावा, कई विदेशी शब्द और विचार उनमें प्रवेश कर गए हैं क्योंकि अनुवाद मूल ग्रंथों से बहुत दूर हो गए हैं। इसके अलावा, उनके कई व्याख्याकारों की बातें और गलतियाँ, चाहे जानबूझकर की गई हों या नहीं, मूल आयतों के साथ भ्रमित हो गई हैं, और अज्ञानी लोगों और विभिन्न दुश्मनों की विकृतियाँ शामिल कर ली गई हैं। और इसलिए ये शास्त्र बहुत अधिक परिवर्तन और भ्रष्टाचार से ग्रस्त हैं।

प्रसिद्ध विद्वान शेख रहमतुल्लाह अल-हिंदी ने एक बार हजारों परिवर्तनों को साबित करके पुजारियों और ईसाई और यहूदी विद्वानों को चुप करा दिया था

उन पुस्तकों में किए गए। हालाँकि अब भी, इतने सारे बदलावों के बाद, प्रसिद्ध विद्वान हुसैन अल-जिसरी अभी भी उनमें से 110 टुकड़े निकाल सकते हैं
मुहम्मद के पैगम्बर होने के बारे में साक्ष्य, जिसे उन्होंने अपने ग्रंथ में शामिल किया
रिसाला अल-हमीदिया

कई यहूदी और ईसाई विद्वान मानते हैं कि मुहम्मद का
उनके धर्मग्रंथों में उनकी विशेषताओं का वर्णन है। प्रसिद्ध रोमन सम्राट
हेराक्लियस, जो एक गैर-मुस्लिम था, ने कहा: "मैं सहमत हूँ कि ईसा ने मुहम्मद के जन्म की भविष्यवाणी की थी
आगमन।"264 एक अन्य रोमन शासक जिसका नाम मुकावकीस था, मिस्र का गवर्नर था,
और इब्न सूरिया, इब्न अख़ताब और उनके भाई काब इब्न असद और ज़ुबैर इब्न बतिया जैसे प्रसिद्ध यहूदी विद्वान, हालांकि गैर-मुस्लिम बने रहे,
उन्होंने स्वीकार किया: "हमारी पुस्तकों में उनका और उनके गुणों का उल्लेख है।"265

दूसरी ओर, कई प्रसिद्ध यहूदी विद्वान और ईसाई भिक्षु
जब उन्होंने देखा कि मुहम्मद के पास अधिकार है तो उन्होंने अपना हठ तोड़ा और धर्म परिवर्तन कर लिया।
उनके धर्मग्रंथों में अंतिम पैगम्बर के बारे में वर्णित विशेषताएँ।
अपने कुछ पूर्व सह-धर्मवादी विद्वानों को यह दिखाकर चुप करा दिया कि
टोरा और गॉस्पेल में संदर्भ। उनमें से प्रसिद्ध थे
'अब्दुल्ला इब्न सलाम, वाहब इब्न मुनब्बीह, अबू यासिर, शमुल, और असिद और
थलाबा (सया के दो बेटे).266 शमुल तुब्बा के शासनकाल के दौरान रहता था,
यमन के शासक, और दोनों मुहम्मद की पैगम्बरता में विश्वास करते थे, भले ही
उसका जन्म अभी कुछ समय बाद होने वाला था।

इब्न हयाबान ने एक बार मदीना में बानी नादिर जनजाति का दौरा किया था।
मुहम्मद के पैगम्बर होने की घोषणा। उसने उनसे कहा: "उद्भव
एक नबी का आगमन निकट है, और वह यहीं पर प्रवास करेंगे।" इब्न हयाबान की मृत्यु यहीं हुई। बाद में,
जब उस जनजाति ने ईश्वर के दूत से लड़ाई की, तो असीद और थलाबा ने सार्वजनिक रूप से बुलाया
अपने कबीले के लोगों से कहा: "अल्लाह की कसम, यह वही है जिसके आने का वादा इब्ने इसराएल ने किया था।"
हयाबान।''267 किन्तु उन्होंने उस आह्वान की उपेक्षा की, और इस प्रकार उन्होंने जो कमाया, वह पाया।

टोरा में वर्णित पैगंबर को देखने के बाद, कई यहूदी विद्वानों ने
जैसे इब्न बनयामिन, मुखायरिक और काब अल-अखबर ने धर्म परिवर्तन किया और इस तरह उन लोगों को चुप करा दिया जो अविश्वास पर जोर देते थे।268

और फिर प्रसिद्ध ईसाई भिक्षु बहिरा हैं, जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है। जब वह 12 वर्ष के थे, तो पैगंबर अपने चाचा के साथ एक व्यापारिक यात्रा पर गए थे
दमिश्क के लिए मिशन। अपने सेल से, बहिरा ने देखा कि एक बादल छाया हुआ था-

---

264 तिर्मिज़ी, 2:167; शिफ़ा', 1:364.

265 शिफ़ा', 1:366, 384; बहाक़ी, 3:361-62; इब्न कथिर, अल-बिदया, 4:80-81।

266 शिफ़ा', 1:364; बहाक़ी, 6:240-49; तिर्मिज़ी, 2:206.

267 अबू नईम, 1:82; बहाक़ी, 2:80-81.

268 शिफ़ा', 1:364; बहाक़ी, 3:161-63.

कारवां में एक निश्चित व्यक्ति को बुलाकर उसने उन सभी को भोजन के लिए आमंत्रित किया। मुहम्मद के लिए। जब उसने देखा कि छाया प्रदान करने वाला बादल बना हुआ है जहाँ कारवां पड़ाव डालता है, वह सोचता है: "जिसे मैं खोज रहा हूँ वह अभी भी वहीं होगा," और फिर एक आदमी को भेजा कि जो लोग बचे हुए थे उन्हें ले आए। जब मुहम्मद को लाया गया, बहिरा ने अबू तालिब से कहा: "तुरंत मक्का लौट जाओ। यहूदी बहुत ईर्ष्यालु हो सकते हैं और उसके खिलाफ साजिश रच सकते हैं, क्योंकि उसका वर्णन बाइबिल में दर्ज है। टोरा।"269

अबीसीनिया में कुछ नेस्टोरियन और साथ ही नेगस (अबीसीनिया के शासक) जब उन्होंने अपने धर्म में वर्णित पैगम्बर को पाया तो उन्होंने एक साथ इस्लाम धर्म अपना लिया। धर्मग्रंथ.270 प्रसिद्ध ईसाई विद्वान दग़ात्र ने भी पैग़म्बर को ईसाइयों की किताबों में वर्णित है और उन्होंने इस्लाम स्वीकार कर लिया। जब उन्होंने खुलेआम जब उन्होंने बाइजेंटाइन में धर्म परिवर्तन की घोषणा की, तो उन्हें शहीद कर दिया गया।271

ऐसे धर्मांतरण के कुछ अन्य उदाहरण हैं हारिथ इब्न अबी शूमार अल-ग़स्सानी (एक ईसाई नेता), इब्न नतूर और अल-जरुद (दमिश्क के प्रमुख धार्मिक नेता), इलिया (वर्तमान ग्रीस में) के शासक और हेराक्लियस (बीजान्टियम का सम्राट)। हेराक्लियस ने अपने धर्म परिवर्तन की बात छुपाई सांसारिक राज्य की खातिर.272 सलमान अल-फारिसी, एक ईसाई पैदा हुए, पैगम्बर का वर्णन सुनने के बाद उन्हें खोजने के लिए।273 तमीम (एक प्रसिद्ध विद्वान), साथ ही नेगस, अबीसीनिया के ईसाई और पुजारी नजरान के सभी लोगों ने घोषणा की कि उन्होंने पैगंबर का वर्णन अपनी पुस्तकों में पाया है और उस पर विश्वास किया।274

तीसरा प्रमाण: अब हम सुसमाचार से कुछ आयतें उद्धृत करते हैं, टोरा और स्तोत्र जो पैगम्बर मुहम्मद का वर्णन करते हैं।

पहला उदाहरण: भजन संहिता में हम पढ़ते हैं: हे परमेश्वर, अन्तराल के बाद हमारे पास भेज- वह (जो अन्तिम नबी है) वह है जो (तेरा) मार्ग स्थिर करेगा।[275]

" वह जो (आपका) मार्ग स्थापित करेगा" पैगम्बर मुहम्मद को संदर्भित करता है।

सुसमाचार में हम पढ़ते हैं: मसीहा ने कहा: मैं अपने और तुम्हारे पिता के पास जा रहा हूँ ताकि वह तुम्हें पैराक्लीट भेजे (यूहन्ना 16:7), (अर्थात अहमद या मुहम्मद) और मैं पिता से विनती करूंगा, और वह तुम्हें एक और पैराक्लीट देगा

---

269 इब्न साद, तबकात, 1:76; इब्न हिशाम, सीरा, 115; शिफ़ा', 1:308; हकीम, 2:615.

270 शिफा', 1:364.

271 शिफ़ा', 1:364; बहाक़ी, 6:240-49; तिर्मिज़ी, 2:206.

272 बुखारी, 1:7; अबू नईम, 1:101-2.

273 हकीम, 3:604; इब्न हनबल, 5:437; इब्न हिशाम, 1:233.

274 शिफा', 1:364.

275 हालाँकि यह बाइबल के वर्तमान संस्करणों में शब्दश: मौजूद नहीं है, यह बाइबल में दर्ज है।
हुज्जत अल्लाह 'अला अल-अलामिन फाई मुजिजात अल-सैय्यद अल-मुर्सलिन , यूसुफ नहबानी, पी। 104. (ट्र.)

हमेशा तुम्हारे साथ रहूँगा (यूहन्ना 14:16)। पैराक्लीट, जिसका अर्थ है "प्रशंसित व्यक्ति जो सत्य को झूठ से अलग करता है," पैगंबर मुहम्मद को संदर्भित करता है, जैसा कि उल्लेख किया गया है
उन पुस्तकों में.276

टोरा कहता है:

> परमेश्वर ने अब्राहम से कहा: "हागर बच्चों को जन्म देगी।
> उसके बेटों में से एक जिसका हाथ सब से ऊपर होगा, और सब के हाथ
> अन्य लोग उसके लिए श्रद्धा से खुलेंगे।"277

टोरा की एक अन्य आयत कहती है:

> और उसने कहा: "ऐ मूसा! मैं उनके लिए तुम्हारे जैसा एक नबी पैदा करूँगा,
> उनके भाइयों (इश्माएल की संतान) में से मैं अपना नाम उनके भाइयों (इश्माएल की संतान) में से रखूँगा।
> उसके मुंह में वचन है, और वह उनको सब कुछ बता देगा जो मैं आज्ञा दूंगा
> यदि कोई मेरे शब्दों को नहीं सुनता जो पैगंबर कहते हैं
> अपने नाम से मैं स्वयं उससे लेखा लूंगा।" (व्यवस्थाविवरण
> 18:18-19)

टोरा की तीसरी आयत इस प्रकार है:

> मूसा ने कहा: "ऐ मेरे रब, मैंने तौरात में एक ऐसा समुदाय पाया है, जो
> समुदायों में से सर्वश्रेष्ठ, जो (के लाभ के लिए) उठाया जाएगा
> मानवता। वे अच्छाई का आदेश देते हैं और बुराई से रोकते हैं, और ईश्वर में विश्वास करते हैं।
> वह मेरी कौम है! (ईश्वर ने) कहा: "वह मुहम्मद की कौम है।"278

---

276 वेबस्टर की न्यू वर्ल्ड डिक्शनरी के अनुसार , पैराक्लीट शब्द ग्रीक शब्द से निकला है
पैराक्लीटोस, जिसका अर्थ है "मध्यस्थ, अधिवक्ता, दलीलकर्ता।" हालाँकि, ग्रीस के यान्या से उन्नीसवीं सदी के विद्वान अबिदीन पाशा, जो ग्रीक भाषा को बहुत अच्छी तरह जानते थे और जिनके कार्य
यूनानी साहित्य पर एक लेख की ग्रीक अधिकारियों द्वारा अत्यधिक प्रशंसा की गई थी, लिखते हैं कि इसका वास्तविक उद्गम
पिरिकलिटोस, जिसका अर्थ है अहमद, जिसकी बहुत प्रशंसा की जाती है। (हुसैन जिसरी, रिसाला अल-हमीदिया,
59) कुरान में यह भी कहा गया है कि ईसा ने पैगम्बर मुहम्मद के बारे में भविष्यवाणी की थी।
अहमद, मुहम्मद का पर्यायवाची (61:6)। ईसाईयों का दावा है कि यीशु ने पैराक्लीट का इस्तेमाल किया था
पवित्र आत्मा। हालाँकि, पवित्र आत्मा का मध्यस्थता से क्या सटीक संबंध है,
दलील या वकालत करना, जो पैगंबर मुहम्मद की मुख्य विशेषताओं को संदर्भित करता है,
भले ही हम स्वीकार करते हैं कि यह शब्द पैराक्लीटोस से निकला है। इसके अलावा, सुसमाचार अनुवादक उस शब्द का उपयोग करने के बजाय
पैराक्लीट का अनुवाद करना पसंद करते हैं, लेकिन सभी अलग-अलग शब्दों का उपयोग करते हैं।
इसके अलावा, यीशु न केवल पैराक्लीट के रूप में बल्कि "परमेश्वर" के रूप में भी आनेवाले की खुशखबरी देता है।
सत्य की आत्मा," कई अन्य कार्यों के साथ, जो एक पैगम्बर और एक पैगंबर के पास होने चाहिए।
किसी "आत्मा" या देवदूत को नहीं। (ट्र.)

277 यद्यपि बाइबल के वर्तमान संस्करणों में इसका शब्दशः उल्लेख नहीं है, 'अली अल-कारी'
इसे शरह अल-शिफा, 1:743 में दर्ज किया गया है । टोरा कहता है: मैं दासी-वन्त (हगर) के बेटे को एक राष्ट्र बनाऊँगा (उत्पत्ति, 21:13); हगर ... लड़के को उठाती है और उसे अपने साथ ले जाती है
हाथ, क्योंकि मैं उसे एक महान राष्ट्र बनाऊंगा (21:18)। (ट्र।)

278 अली अल-कारी, ibid., 1:746.

याद रखें: उन किताबों में मुहम्मद नाम सीरियाई भाषा में दिया गया है। समकक्ष, जैसे मुशफ्फा, मुन्हमन्ना, हिमयता। मुहम्मद का उल्लेख स्पष्ट रूप से केवल कुछ ही स्थानों पर किया गया है, और ईर्ष्यालु यहूदी उन सन्दर्भों को बदल दिया गया।

भजन संहिता में कहा गया है:

> ऐ दाऊद! तुम्हारे बाद एक नबी आएगा जिसका नाम अहमद (मुहम्मद) होगा, वह सच्चा और पालनहार होगा और उसकी क़ौम को क्षमा कर दिया जाएगा ।

अब्दुल्ला इब्न अम्र इब्न अल-अस, जिन्होंने पहले के इतिहास का व्यापक अध्ययन किया था। ईश्वरीय पुस्तकें; अब्दुल्ला इब्न सलाम, ईश्वरीय पुस्तकों को अपनाने वाले पहले प्रसिद्ध यहूदी विद्वान थे। इस्लाम के अनुयायी; और काब इब्न अल-अख़बार, जो कि अग्रणी यहूदी विद्वानों में से एक थे, सभी ने टोरा में निम्नलिखित आयत की ओर संकेत किया, जो अभी तक भ्रष्ट नहीं हुई थी वर्तमान सीमा तक। मूसा को संबोधित करने के बाद, यह आयत पैगंबर को संबोधित करती है निम्नलिखित तनाव में आना:

> ऐ नबी! हमने आपको एक गवाह, शुभ सूचना देने वाला बनाकर भेजा है।
> तू मेरा बन्दा है, मैं तुझे सचेत करनेवाला और अनपढ़ों के लिए आश्रय देनेवाला हूँ।
> तुम्हें “परमेश्वर पर भरोसा रखनेवाला” नाम दिया है, जो कठोर और सख्त नहीं है,
> जो बाज़ारों में शोरगुल नहीं मचाता; जो बुराई को अपने मन से नहीं रोकता
> बुराई करता है, लेकिन इसके बजाय क्षमा करता है और माफ़ करता है। भगवान उसकी जान नहीं लेगा
> जब तक कि वह उसके द्वारा टेढ़ी जाति को सीधा न कर दे
> उन्हें) यह घोषणा करने के लिए प्रेरित किया कि, “ईश्वर के अलावा कोई देवता नहीं है।”280

टोरा की एक अन्य आयत कहती है:

> मुहम्मद ईश्वर के दूत हैं। उनका जन्मस्थान मक्का है।
> तैयबा में प्रवास करेंगे। उनके शासन का केंद्र दमिश्क है, और उनका
> समुदाय निरंतर ईश्वर की स्तुति में व्यस्त रहता है।281

इस आयत में, एक सीरियाई शब्द जिसका अर्थ मुहम्मद है, वास्तव में उल्लेख किया गया है शब्द मुहम्मद.

एक और तौरात आयत, तू मेरा बन्दा और रसूल है; मैंने तेरा नाम रखा है “परमेश्वर पर भरोसा रखनेवाला,” [282] यह उस पैगम्बर को संबोधित है जो मूसा के बाद आएगा, इश्माएल की संतान से: इसहाक के बच्चों के चचेरे भाई। इसके अलावा: मेरा दास एक है

---

[279] इब्न कथिर, अल-बिदया वा अल-निहाया, 2:326; शरह अल-शिफ़ा', 1:739.

[280] बुखारी, बुयु', 50; इब्न हनबल, मुसनद, 2:174; दारिमी, 1:14-15.

[281] दारिमी, 1:14-15; अबू नईम, दलाइल अल-नुबुव्वा, 1:72.

[282] कस्तलानी, अल-मवाहिब अल-लदुन्निया, 6:192।

"चुना हुआ," जो न तो कठोर है और न ही सख्त। [283] "मुख्तार" (चुना हुआ) एक है "मुस्तफा" का पर्यायवाची, जो उनके नामों में से एक है।

सुसमाचारों में ईसा के बाद आने वाले पैगम्बर का कई नामों से उल्लेख मिलता है। एक अन्य श्लोक जो उसका वर्णन करता है: उसके पास एक लोहे की छड़ी है जिसके साथ वह लड़ो, जैसा कि उसका समुदाय करेगा, [284] संकेत है कि एक पैगम्बर तलवार लेकर आएगा जिहाद छेड़ना। क़ुरान 48:29 इस आयत से सहमत है, अन्य इंजील का संदर्भ देता है छंद, और कहा कि उसका समुदाय, उसकी तरह, मजदूरी करने के लिए बाध्य होगा जिहाद.

और सुसमाचार में उनकी समानता यह है:

> [एक] बीज की तरह जो अपनी टहनियाँ फैलाता है, फिर उन्हें मजबूत बनाता है; फिर यह मोटा हो जाता है और अपने तने में खड़ा हो जाता है, जिससे बोने वालों के पेट में पानी भर जाता है आश्चर्य और प्रसन्नता, ताकि यह अविश्वासियों को उनके प्रति क्रोध से भर दे।
> (48:29)

टोरा में एक आयत कहती है: प्रभु सिनाई से आए, उन पर प्रकाश डाला सेईर से, और पारान पर्वत से चमका (व्यवस्थाविवरण 33:2)। प्रभु सिनाई से आया मूसा की पैगम्बरी को संदर्भित करता है, जो सेईर से उन पर छा गया (सेईर पर्वत दमिश्क के निकट हैं) ईसा की पैगम्बरी होने का उल्लेख करता है, और वह पारान पर्वत (हिजाज़ के पारान पर्वत) से चमका था, जिसका उल्लेख है मुहम्मद का संदेशवाहक होना।285 यह आयत आगे कहती है, कुरान की अभिव्यक्ति: यह टोरा में उनकी उपमा है, इसके बारे में यह कहता है पैगम्बर के साथी जो पारान के पहाड़ों से निकलेंगे: पवित्र लोगों के झंडे उसके साथ, उसके दाहिनी ओर हैं। [286] यह श्लोक कॉम- का वर्णन करता है पनिअन्स को "पवित्र लोग" कहा जाता है, जिसका अर्थ है कि वे परमेश्वर के धन्य, धर्मी और संत-मित्र हैं।

यशायाह 42 में पैगम्बर मुहम्मद का वर्णन करते हुए निम्नलिखित आयतें हैं, जो मानव इतिहास के अंतिम चरण में आएंगे:

> यह मेरा सेवक है, जिसे मैं सम्भालता हूं, मेरा चुना हुआ जिस पर मैं भरोसा रखता हूं।
> मैं उस पर अपनी आत्मा डालूंगा, और वह न्याय को लाएगा
> वह न तो चिल्लाएगा, न ही चिल्लाएगा, न ही सड़कों पर अपनी आवाज ऊंची करेगा।

---

[283] अली अल-कारी, ibid., 1:739.

[284] यूसुफ नहबानी, ibid., 105.

[285] टोरा उस स्थान को पारान कहता है जहाँ हागर अपने बेटे (इश्माएल) के साथ रही थी (उत्पत्ति, 11:15)। 21:21) कुरान उस स्थान को मक्का कहता है, जो उस समय निर्जन था (14:37)

[286] बाइबल के कई संस्करणों में यह लगभग एक जैसा है, जैसे कि द बाइबल द्वारा प्रकाशित संस्करण। बाइबल कंपनी (इस्तांबुल)। हालाँकि, हमें एक अलग अनुवाद मिलता है, यदि एक अलग अनुवाद नहीं है गिदोन इंटरनेशनल संस्करण में परिवर्तन: वह लाखों पवित्र लोगों के साथ आया था दक्षिण, उसकी पहाड़ी ढलानों से (व्यवस्थाविवरण 33:2)। (ट्र.)

> वह कुचले हुए नरकट को नहीं तोड़ेगा, और न ही सुलगती हुई बत्ती को बुझाएगा। वह सच्चाई से न्याय लाएगा; जब तक वह पृथ्वी पर न्याय स्थापित नहीं कर लेता, तब तक वह न तो डगमगाएगा और न ही हतोत्साहित होगा। द्वीप उसकी व्यवस्था पर अपनी आशा रखेंगे। (यशायाह 42:1-4)

मीका 4 में अराफात पर्वत और मुहम्मद के राष्ट्र का वर्णन किया गया है, साथ ही सभी क्षेत्रों से वहां आने वाले तीर्थयात्रियों द्वारा की गई प्रार्थनाओं और स्तुतियों का भी वर्णन किया गया है:

> अन्तिम दिनों में यहोवा के मन्दिर का पर्वत सब पहाड़ों से ऊँचा किया जाएगा; वह सब पहाड़ियों से ऊँचा किया जाएगा, और लोग उसकी ओर उमड़ पड़ेंगे। बहुत सी जातियाँ आएंगी और कहेंगी: "आओ, हम यहोवा के पर्वत पर चढ़कर परमेश्वर के भवन में जाएँ। वह हमें अपने मार्ग सिखाएगा, कि हम उसके पथों पर चलें।" (मीका 4:1-2)

भजन 72 की निम्नलिखित आयतें स्पष्ट रूप से पैगम्बर मुहम्मद का वर्णन करती हैं:

> वह समुद्र से समुद्र तक और नदी से पृथ्वी के छोर तक शासन करेगा।
>
> रेगिस्तान के कबीले उसके सामने झुकेंगे और उसके दुश्मन धूल चाटेंगे। तर्शीश और दूर के तटों के राजा उसे भेंट लाएंगे; यमन और सबा के राजा उसे उपहार भेंट करेंगे। सभी राजा उसके सामने झुकेंगे और सभी राष्ट्र उसकी सेवा करेंगे, क्योंकि वह उन जरूरतमंदों को बचाएगा जो पुकारते हैं, उन दुखियों को जिनका कोई मददगार नहीं है। वह कमजोरों और जरूरतमंदों पर दया करेगा और जरूरतमंदों को मौत से बचाएगा। वह उन्हें उत्पीड़न और हिंसा से बचाएगा, क्योंकि उनका खून उसकी दृष्टि में कीमती है। वह लंबे समय तक जीवित रहे! लोग हमेशा उसके लिए प्रार्थना करें और उसे पूरे दिन आशीर्वाद दें... उसका नाम हमेशा कायम रहे। जब तक सूरज रहेगा, तब तक यह कायम रहे। सभी राष्ट्र उसके द्वारा धन्य होंगे और वे उसे धन्य कहेंगे। (भजन 72:8-17)

पैगम्बर डेविड के बाद, क्या पैगम्बर मुहम्मद के अलावा कोई अन्य पैगम्बर हुआ है जिसने अपने धर्म को पूर्व से पश्चिम तक फैलाया, जिसके नाम पर अनेक शासक श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं, जिसके मार्ग का अनुसरण अनेक लोग उसके प्रति गहरी श्रद्धा के कारण करते हैं, तथा जिसके लिए मानवता का पांचवां हिस्सा प्रतिदिन ईश्वर की शांति और आशीर्वाद की प्रार्थना करता है?

यूहन्ना 16:7 में लिखा है: " मैं तुम्हारे भले के लिए जा रहा हूँ। जब तक मैं नहीं जाऊँगा, तब तक सांत्वना देनेवाला तुम्हारे पास नहीं आएगा। पैगम्बर मुहम्मद के अलावा मानवता का सच्चा सांत्वना देनेवाला कौन हो सकता है? निश्चित रूप से वह मानवता का गौरव और सांत्वना देनेवाला है, क्योंकि वह उन सभी लोगों को बचाता है जो उसका अनुसरण करते हैं और उन्हें अनंत विनाश से बचाता है।

यूहन्ना 16:8 में लिखा है: जब वह आएगा, तो वह संसार को पाप, धार्मिकता और न्याय के विषय में दोषी ठहराएगा। पैगम्बर मुहम्मद के अलावा कौन आया और उसने अपने समय में व्याप्त अव्यवस्था को भलाई और न्याय में बदल दिया ।

दुनिया को पाप और बहुदेववाद से बचाने और इसके जीवन में क्रांतिकारी बदलाव लाने के लिए सद्भाव की आवश्यकता है। राजनीति और शासन?

पैगम्बर मुहम्मद, जिनका उल्लेख कई बार कई शब्दों में किया गया है। बाइबल में वर्णित नाम, मानवता का स्वामी है। वास्तव में, वह ऐसा स्वामी है 14 शताब्दियों में से प्रत्येक में कई लाखों लोगों ने उनका अनुसरण किया है जब से वह जीवित है। वे उसकी आज्ञाओं का पालन स्वेच्छा से और प्रतिदिन नए सिरे से करते हैं वे उस पर ईश्वर का आशीर्वाद मांगकर उसके प्रति अपनी निष्ठा दर्शाते हैं।

यूहन्ना 16:12-13 में लिखा है:

> मुझे तुमसे बहुत कुछ कहना है, जितना तुम अब सहन नहीं कर सकते। लेकिन जब वह अर्थात् सत्य का आत्मा आएगा, तो तुम्हें सब सत्य का मार्ग बताएगा। वह अपनी ओर से नहीं बोलेगा, बल्कि वही बोलेगा जो वह सुनेगा, तथा वह तुम्हें बताएगा कि आगे क्या होने वाला है।

ये आयतें बिलकुल स्पष्ट हैं। पैगम्बर मुहम्मद के अलावा और किसने सबको सत्य की ओर बुलाया, हमेशा वही कहा जो उसने ईश्वर से सुना (उसके द्वारा)। गेब्रियल) ताकि उसका प्रत्येक शब्द ईश्वरीय रहस्योद्घाटन पर आधारित हो, और सूचित हो क्या आप लोगों को क़यामत के दिन और आख़िरत के बारे में विस्तार से बता सकते हैं?

अन्य पैगम्बरों की पुस्तकों में ईश्वर के दूत का उल्लेख इस प्रकार किया गया है: अहमद, मुहम्मद, के अनुरूप विभिन्न सिरिएक और हिब्रू नाम और मुख्तार। पैगम्बर शुऐब के पन्नों में उनका नाम मुशफ्फा है (मुहम्मद)। तोराह में उनका उल्लेख मुनहमन्ना (मुहम्मद) के रूप में किया गया है। और हिमयता ("अल-हरम का पैगंबर")। भजन संहिता में उन्हें अल-मुख्तार ("चुना हुआ व्यक्ति") कहा गया है, और टोरा में अल-हतम अल-खतम के रूप में। टोरा और भजन संहिता में उन्हें मुकीम अल-सुन्ना ("वह जो मानवता के लिए ईश्वरीय मार्ग स्थापित करता है और लागू करता है") के रूप में संदर्भित किया गया है। अब्राहम के पन्नों में, साथ ही टोरा में उनका उल्लेख मजमाज़ के रूप में किया गया है, और टोरा में अह्याद के रूप में।

ईश्वर के दूत ने कहा: "कुरान में मेरा नाम मुहम्मद है, बाइबल में उन्हें अहमद और तोरा अह्याद कहा गया है। बाइबल में उन्हें "अल्लाह का सेवक" कहा गया है। तलवार और लाठी का स्वामी।" उन सभी पैगम्बरों में से जिन्होंने तलवार और लाठी को धारण किया था तलवार, पैगंबर मुहम्मद, जिन्हें भगवान ने अपने समुदाय के साथ जिहाद करने के लिए कहा था, सबसे महान हैं। सुसमाचार में भी उन्हें "वह व्यक्ति जो तलवार पहनता है" के रूप में संदर्भित किया गया है एक मुकुट।" यह एक पगड़ी को संदर्भित करता है,287 और अरबों ने सिर को ढकने के लिए टोपी पहनी है प्राचीन काल से ही उन्हें एक आवरण में रखा गया है। इसलिए निस्संदेह संदर्भ पैगंबर मुहम्मद का है।

287 मुस्लिम पुरुषों द्वारा पहनी जाने वाली पगड़ी उच्चता या उत्कर्ष का प्रतीक है। (ट्र.)

बाइबिल के व्याख्याकार पैराक्लीट (या फराक्लीट) को इस प्रकार परिभाषित करते हैं, “वह जो सत्य और असत्य में अंतर करता है।” दूसरे शब्दों में, यह उस व्यक्ति का नाम है जो
मानवता की भावी पीढ़ियों को सही मार्ग पर ले जाएगा। यीशु को इस प्रकार उद्धृत किया गया है
सुसमाचार में कहा गया है कि उसे चले जाना चाहिए ताकि वह व्यक्ति आए जो मानवता को सत्य की ओर ले जाएगा। यीशु के बाद पैगम्बर मुहम्मद के अलावा और कौन आया
मानवता के नेता के रूप में, सत्य को असत्य से अलग किया, और मार्गदर्शन किया
मानवता? यीशु ने हमेशा अपने लोगों से कहा कि: “एक आएगा, और [उसके बाद]
मेरी कोई ज़रूरत नहीं होगी। मैं उसका अग्रदूत हूँ और उसकी अच्छी ख़बरें लाता हूँ
इसकी पुष्टि कुरान की निम्नलिखित आयत से होती है:

> और याद रखो, मरियम के बेटे ईसा ने कहा था: “ऐ इसराइल की संतानो, मैं
> मैं तुम्हारे पास ईश्वर का रसूल हूँ, जो नाज़िल हुई बातों की पुष्टि करता हूँ
> मेरे सामने तौरात में और एक रसूल की खुशखबरी लेकर आया
> जो मेरे बाद आएगा, उसका नाम अहमद है।” (61:6)

शमुन अल-सफा की कब्र में, प्रसिद्ध यात्री एवलिया सेलेबी ने देखा
एक हिरन की खाल पर लिखी सुसमाचार की निम्नलिखित आयतें:

> 'आईटुन अज्रीबुन पेरुफ्टुन। लॉ घिसलिन. मुड़ा हुआ अफ़ज़ुलत; की कलुशीर; ट्यूनुमिनिन
> मावमीड. इस्फ़ेडस टैकार्डिस, बिस्ट बिथ। (इब्राहीम की संतान का एक युवक
> वह एक पैगम्बर होगा। वह झूठा नहीं होगा। उसका जन्मस्थान मक्का है; वह
> धार्मिकता के साथ आएगा; उसका धन्य नाम अहमद मुहम्मद है।
> उनके अनुयायी इस दुनिया में और अगले में भी समृद्ध होंगे।)288

सुसमाचारों में यीशु द्वारा मानवता के सबसे महत्वपूर्ण नेता के आगमन की बार-बार की गई खुशखबरी दर्ज है और कुछ सीरियाई और हिब्रू भाषाओं में उसका उल्लेख किया गया है।
नामों का अर्थ, जैसा कि सावधानीपूर्वक विशेषज्ञों द्वारा देखा गया है, अहमद, मुहम्मद,
और फ़ारूक़ (वह जो सत्य और असत्य में भेद करता है)।

प्रश्न: यीशु ने अंतिम पैगम्बर के आने की शुभ सूचना क्यों दी?
क्या यह भविष्यवाणी अन्य भविष्यद्वक्ताओं की तुलना में अधिक जोरदार ढंग से की गयी है?

उत्तर: पैगम्बर मुहम्मद ने यहूदियों के विरुद्ध ईसा की पवित्रता की घोषणा की थी।
निंदा करने वालों का विरोध किया, उनके इनकार के खिलाफ उसका बचाव किया, और यीशु के महान मार्ग को शुद्ध किया
परिवर्तन और भ्रष्टाचार। इसके अलावा, यहूदियों के बोझिल धार्मिक कानून के बजाय, उन्होंने एक व्यवहार्य और सर्वव्यापी धर्म प्रस्तुत किया, जिसमें एक उच्च-

---

288 जिस भाषा का उल्लेख किया गया है वह सीरियाई होनी चाहिए, क्योंकि कई सीरियाई लोग अभी भी दक्षिण-पूर्वी क्षेत्र में रहते हैं।
तुर्की, जहाँ कई ईसाई संत - यीशु के सच्चे, एकेश्वरवादी अनुयायी - दफ़न हैं।
दिलचस्प बात यह है कि ऐसे एकेश्वरवादी ईसाईयों के अध्ययन और प्रयासों के कारण
एरियस जैसे विद्वानों के अनुसार, पूर्वी ईसाई आमतौर पर एकेश्वरवादी थे और इसलिए उन्हें आसानी से स्वीकार कर लिया गया था
इस्लाम। दूसरी ओर, पश्चिमी ईसाई धर्म ने इस्लाम के सिद्धांत को बनाए रखने पर जोर दिया।
त्रिदेव और अन्य उधार लिए गए पंथ। (ट्र.)

यीशु के धर्म के नियम को पूरा करने वाला कानून बनाया गया। यही कारण है कि यीशु अक्सर उसके आने की खुशखबरी सुनायी।

जैसा कि पहले बताया गया है, टोरा, सुसमाचार, भजन और अन्य धर्मग्रंथों के पृष्ठ पैगम्बरों में एक वादा किए गए नबी का कई बार जोरदार उल्लेख मिलता है, वह है कि आकर उसे विभिन्न नामों से उल्लेख करें। चूंकि इस पैगम्बर का उल्लेख सभी नबियों की किताबों में है, तो मुहम्मद के अलावा वह और कौन हो सकता है? वह पैगम्बर कौन था जो मानव इतिहास के अंतिम चरण में आया?

दूसरा प्रकार: दूसरे प्रकार की इरहासत में निम्नलिखित भविष्यवाणियाँ शामिल हैं: पैगम्बर मुहम्मद के आगमन के बारे में भविष्यवक्ताओं और रहस्यवादियों द्वारा बताया गया है। ईसा मसीह और मुहम्मद के पैगम्बर बनने के बीच का कालखंड। एक हद तक, वे अपने समय के संत माने जाते थे। उन्होंने उनके आने की भविष्यवाणी की थी कविताएँ लिखीं और उन्हें बाद की पीढ़ियों को सौंप दिया। ऐसे कई उदाहरण हैं इस प्रकार के, लेकिन हम केवल कुछ प्रसिद्ध लोगों का उल्लेख करते हैं जो इतिहासकारों और पैगंबर के जीवनीकारों द्वारा स्वीकार और प्रसारित किया गया।

पहला उदाहरण: यमन के शासक टुब्बा ने पैगम्बर के गुणों को देखा पिछले शास्त्रों में, उस पर विश्वास किया, उसी पर कब्जा करने की कामना की उन्होंने अपना नाम अली रखा और निम्नलिखित दोहे में अपने विश्वास की घोषणा की:

मैं अहमद की गवाही देता हूँ कि वह एक रसूल है
मानवता के निर्माता ईश्वर से;
यदि मैं उसे देखने के लिए पर्याप्त समय तक जीवित रह पाता, तो मैं एक
मंत्री और उनके चचेरे भाई की तरह.289

दूसरा उदाहरण: क़ुस इब्न सईदा सबसे प्रसिद्ध और महत्वपूर्ण अरब वक्ता होने के साथ-साथ एक प्रबुद्ध एकेश्वरवादी भी थे। मुहम्मद से पहले एक पैगंबर के रूप में उठाया गया था, उन्होंने मुहम्मद की पैगम्बरी की घोषणा की ये श्लोक:

हमारे बीच (ईश्वर ने) अहमद को भेजा
अब तक का सबसे अच्छा पैगम्बर,
उस पर ईश्वर की कृपा हो।290

वह अली की स्थिति में होना चाहता था।

तीसरा उदाहरण: काब इब्न लूअय, जो पैगम्बर के पूर्वजों में से एक थे, प्रेरणा के माध्यम से मुहम्मद की पैगम्बरी की घोषणा की:

असावधानी के समय में
मुहम्मद अचानक प्रकट होंगे;
वह ऐसी ख़बरें देगा जो सब सच्ची होंगी।291

---

289 हकीम, 2:388; अल-बिदया वा अल-निहाया, 2:166.

290 शिफ़ा', 1:363; अल-बिदया, 2:230; बहाक़ी, 2:101.

291 अल-बिदया, 2:244; शिफ़ा', 1:364.

चौथा उदाहरण: यमनी शासक सैफ इब्न धिआज़ान ने पिछले शास्त्रों में रसूल का वर्णन देखा, उस पर विश्वास किया और उससे प्रेम किया।
जब अब्दुल मुत्तलिब (पैगंबर के दादा) आए तो
यमन में कुरैशी व्यापार कारवां के साथ, सैफ ने उन्हें बुलाया और कहा:
"हिजाज़ में एक बच्चा पैदा होगा जिसके कंधों के बीच एक निशान होगा
सील जैसा दिखता है। वह मानवता का नेता होगा।" निजी तौर पर, उन्होंने 'अब्द' से कहा
अल-मुत्तलिब: "आप उनके दादा हैं,"292 इस प्रकार उन्होंने चमत्कारिक तरीके से मुहम्मद के पैगंबर होने की भविष्यवाणी की।

पाँचवाँ उदाहरण: जब पहला प्रकाशितवाक्य आया तो परमेश्वर का दूत चिंतित था
उनके पास आया। उनकी पत्नी ख़दीजा ने वराक़ा इब्न नौफ़ल (उनकी चचेरी बहन) से कहा
उसने उससे कहा कि वह मुहम्मद को उसके पास भेजे।
रसूल वरका के पास गया। जब उसने उसे वह्य के बारे में बताया, तो वरका ने कहा,
टिप्पणी की: "हे मुहम्मद, आपके लिए शुभ सूचना है। मैं गवाही देता हूं कि आप
और यीशु ने तुम्हारे विषय में शुभ सूचना दी है।"293

छठा उदाहरण: ज्ञानी असकलान अल-हिम्येरी हमेशा किसी से पूछते थे
उन्होंने कुरैशी से कहा, "क्या तुममें से कोई पैगम्बर होने का दावा करता है?"
लोग हमेशा नकारात्मक जवाब देते थे। पैगम्बर द्वारा अपनी घोषणा के बाद
जब उन्होंने कहा कि कोई व्यक्ति ऐसा दावा कर रहा है, तो उन्होंने उत्तर दिया: "यह वही है जिसके लिए अल्लाह ने ऐसा दावा किया था।"
दुनिया इतने लंबे समय से इंतज़ार कर रही है।"294

सातवाँ उदाहरण: प्रसिद्ध ईसाई विद्वान इब्न अल-अला ने पैगंबर की नबूवत की घोषणा से पहले और उन्हें देखे बिना ही उनके बारे में भविष्यवाणी कर दी थी। जब वह आखिरकार पैगंबर से मिले, तो उन्होंने कहा: "उसकी कसम जिसने भेजा
आपको सच्चाई के साथ, मैंने आपका वर्णन सुसमाचार में पाया, और वर्जिन
मरियम के बेटे ने तुम्हारे बारे में खुशखबरी दी है।"295

आठवाँ उदाहरण: अबीसीनिया के नेगस, जिसका पहले उल्लेख किया गया है, ने कहा: "काश मैं इस राज्य पर अधिकार करने के बजाय उसकी सेवा में था।"296

उन ज्ञानियों के अतिरिक्त जिन्होंने भविष्य की खबरें दी थीं
ईश्वरीय प्रेरणा पर उनका ज्ञान, वे भविष्यवक्ता जिन्हें अनुमति दी गई थी
(पैगंबर के समय तक) अदृश्य और अदृश्य की कुछ ख़बरें प्राप्त करने के लिए
आत्माओं और जिन्न के माध्यम से भविष्य की भी भविष्यवाणी की गई थी और उनके आगमन और पैगम्बर होने की भी।
ऐसे अनेक उदाहरणों में से हम केवल कुछ का ही हवाला दे रहे हैं। इनमें निश्चितता की भावना है।

---

292 हकीम, 2:388; अल-बिदया, 2:328; शिफ़ा', 1:143.

293 इब्न हनबल, 4:304; बुखारी, 1:3.

294 शिफा', 1:363.

295 'अली अल-कारी, शरह अल-शिफ़ा', 1:744.

296 शिफ़ा', 1:364; बहाक़ी, 2:285.

तवातुर का अर्थ है और कई इतिहास की पुस्तकों और आत्मकथाओं में दर्ज हैं
पैगम्बर के.

पहला उदाहरण: शिक्क, एक प्रसिद्ध भविष्यवक्ता जो आधे आदमी की तरह दिखता था।
एक आँख, एक हाथ और एक पैर वाला व्यक्ति, बार-बार मुहम्मद के भविष्य की भविष्यवाणी करता था
सन्देशवाहक। उनकी रिपोर्टें इतिहास की पुस्तकों में तवातुर के अर्थ में निश्चितता के साथ दर्ज हैं।297

दूसरा उदाहरण: दमिश्क के प्रसिद्ध ज्योतिषी सतीह एक ज्योतिषी थे।
राक्षसी जिसकी हड्डियाँ, यहाँ तक कि अंग भी लगभग न थे, और जिसका चेहरा
वह उसके वक्ष का एक भाग जैसा दिखता था। वह बहुत लंबा जीवन जीता था और बहुत प्रतिष्ठित था
उनकी सच्ची भविष्यवाणियों के लिए। फारस के चोस्रोस ने विद्वान दूत मुबाज़ान को भेजा
उसे एक अजीब सपने की व्याख्या करने के लिए कहा गया जिसमें उसके महल के 14 शिखर दिखाए गए थे
(मुहम्मद के जन्म की रात को) गिरना। सतीह ने कहा: "अब से,
तुम्हारे देश में 14 शासक होंगे और फिर वह पूरी तरह से नष्ट हो जाएगा।
धर्म का प्रचार करते हुए दिखाई देंगे। वह आपके शासन और धर्म दोनों को खत्म कर देगा।”298
इस प्रकार सतीह ने स्पष्ट रूप से अंतिम पैगम्बर के आगमन की भविष्यवाणी की।

सवाद इब्न करीब अल-दावसी, खुनाफ़र, अफ'आ जैसे प्रसिद्ध भविष्यवक्ता
नज़रान, जिज़ल इब्न जिज़ल अल-किंडी, इब्न खलासत अल-दावसी, और फातिमा बिन्त नु'मान
अल-नज्जारिया ने भी पैगंबर के इतिहास की किताबों और जीवनी में अपनी भविष्यवाणियां दर्ज करवाईं। उन्होंने उनके
आने की भविष्यवाणी की और कहा कि वह भविष्यवक्ता बनेंगे।
मुहम्मद.299 साद इब्न बिन्त अल-कुरैज़, उस्मान के रिश्तेदार, ने मुहम्मद की पैगम्बरी के बारे में भविष्यवाणी के माध्यम से जाना और इस्लाम के शुरुआती दिनों में बताया
'उथमान को जाने और विश्वास करने के लिए कहा। 'उथमान ने ऐसा किया, और साद ने इसे व्यक्त किया
निम्नलिखित दोहे:

> मेरे शब्दों के माध्यम से, भगवान ने उस्मान को उस चीज़ का मार्गदर्शन किया,
> जिसके द्वारा उसकी पूर्णता है।
> सचमुच परमेश्वर सत्य का मार्गदर्शन करता है!300

जिन्न अपने भविष्यवक्ता को हतीफ कहते हैं। उन्हें देखा नहीं जा सकता, लेकिन वे
सुना जा सकता है। इन प्राणियों ने बार-बार ईश्वर के दूत के आने की भविष्यवाणी भी की। हतीफों की कुछ प्रसिद्ध और असंख्य खबरें और संदेश
निम्नानुसार हैं:

---

297 अबू नईम, दलाइल अल-नुबुव्वा, 1:123; शिफ़ा', 1:365.

298 बहाक़ी, 2:126-129; शिफ़ा', 1:365.

299 बहाक़ी, 2:248; अल-बिदया, 2:335; शिफ़ा', 1:365.

300 सुयुति, अल-खासाईस अल-कुबरा', 1:258।

• एक हातिफ ने ज़ियाब इब्न अल-हरिथ और अन्य को इस्लाम में बुलाकर लाया
उसे जोर से:

हे धायाब, हे धायाब, सबसे अजीब बात सुनो:
मुहम्मद को किताब लेकर भेजा गया था। वह मक्का में बुला रहे हैं, फिर भी
वे उसे स्वीकार नहीं करते.301

• एक अन्य हातिफ ने सामिया इब्न क़र्रत अल-कताफ़ानी को पुकारा:

सत्य आ गया है और उज्ज्वल हो गया है;
झूठ नष्ट हो गया है और जड़ से उखाड़ दिया गया है,302
और कुछ लोगों का धर्मांतरण भी हुआ।

इसके अलावा, मूर्तियों और यहां तक कि मूर्तियों के सामने बलि चढ़ाए गए जानवर भी ईश्वर की शक्ति और अनुमति से मुहम्मद के संदेशवाहक होने की घोषणा करते हैं। उदाहरण के लिए, मज़ान जनजाति के मूर्ति ने उन्हें मुहम्मद के पैगम्बर होने की घोषणा के बारे में बताया चिल्लाते हुए: "वह पैगंबर है जिसे भेजा गया है। वह अपने साथ आया है
303 अब्बास इब्न मिरदास को दीमर नामक एक मूर्ति ने धर्मांतरित कर दिया था। एक दिन, उस मूर्ति को यह कहते हुए सुना गया: “सच्चे देवता से पहले दीमर की पूजा की जाती थी।” पैगम्बर मुहम्मद का संदेश। अब दीमर का समय समाप्त हो गया है।" 304
धर्म परिवर्तन के समय, उमर ने मूर्तियों के लिए बलि चढ़ाते हुए सुना: "हे बलि देनेवाले, समृद्धि के साधन हाथ में हैं। एक वाक्पटु व्यक्ति घोषणा कर रहा है: 'कोई साधन नहीं है देवता नहीं बल्कि ईश्वर।'”305

ऐसे और भी कई उदाहरण हैं, जिनका वर्णन विश्वसनीय पुस्तकों में प्रामाणिक रिपोर्टों में मिलता है।

इसके अलावा, विभिन्न चट्टानें, कब्र स्थल और कब्र के पत्थर पाए गए पुरानी लिपियों में इस तरह के अंश अंकित हैं, जैसे "मुहम्मदुन मुस्लिहुन अमीन” (मुहम्मद, एक सुधारक, एक भरोसेमंद व्यक्ति)। कुछ लोग ऐसे आयोजनों के माध्यम से धर्मांतरित हुए। 306 ऐसे अंश केवल ईश्वर के दूत को संदर्भित कर सकते हैं, क्योंकि उनके जन्म से ठीक पहले के समय में केवल सात मुहम्मद थे, जिनमें से कोई भी “सुधारक” बनने के योग्य नहीं था या कभी भी नामित नहीं किया गया था।

या “भरोसेमंद व्यक्ति।”

तीसरा प्रकार: इसमें उस समय की अद्भुत घटनाएं शामिल हैं

पैगंबर के जन्म से संबंधित कई अन्य घटनाएं पहले भी घटित हुई थीं

---

[301] वही, 1:358.

[302] शरह अल-शिफा, 1:748.

[303] इब्न 'अब्द अल-बिर्र, अल-इस्तियाब, 3:446; अल-बिदया, 2:337.

[304] अल-बिदया, 2:341-42; बहाक़ी, 1:118.

[305] बुखारी, 5:61; अल-बिदया, 2:332.

[306] इब्न हनबल, 4:215; शिफ़ा', 1:467; इब्न साद, तबकात, 4:215.

उसे सन्देशवाहक का कार्य सौंपा गया था, और प्रत्येक चमत्कार उसके चमत्कारों में से एक है।
अनेक उदाहरणों में से हम कुछ का उल्लेख कर रहे हैं जो बहुत प्रसिद्ध हो गए
और परम्परा अधिकारियों द्वारा सत्यापित प्रामाणिकता के रूप में स्वीकार किया गया।

पहला उदाहरण: पैगम्बर के जन्म की रात उनकी माँ और
'उथमान इब्न अल-अस और 'अब्द अल-रहमान इब्न अल-औफ़ की माताओं ने देखा
शानदार रोशनी। प्रत्येक महिला ने कहा: "उसके जन्म के दौरान, हमने एक रोशनी देखी जो
पूर्व और पश्चिम को प्रकाशित किया।"307

दूसरा उदाहरण: उस रात काबा के अन्दर मूर्तियाँ गिर गईं।308

तीसरा उदाहरण: उस रात, चोस्रोस का महल हिल गया और टूट गया,
और उसके 14 शिखर ढह गए.309

चौथा उदाहरण: उस रात, फारस में सावा नामक छोटी झील
(फारसियों द्वारा पवित्र) पृथ्वी में डूब गया।
इस्तखराबाद में मागियंस, जो 1,000 वर्षों से लगातार जल रहा था,
बाहर चला गया.310

इन घटनाओं से संकेत मिलता है कि उस रात पैदा हुआ व्यक्ति अग्नि-पूजा को समाप्त कर देगा, फारसी
शासकों के महल को नष्ट कर देगा और फारसी राजाओं के शासन पर प्रतिबंध लगा देगा।
उन चीज़ों का पवित्रीकरण जिन्हें परमेश्वर पवित्र करने की अनुमति नहीं देता है।

पाँचवाँ उदाहरण: उसके जन्म की रात से पहले घटित घटनाएँ
इन्हें भी इरहासत माना जाता है। इनमें से हाथी की घटना (105:1-5)
सबसे प्रसिद्ध अब्राहम, एबिसिनियन साम्राज्य के लिए यमन के गवर्नर,
काबा को नष्ट करने के लिए मक्का पर चढ़ाई की। उसने अपना विशाल हाथी काबा के पास रख दिया।
महमूद अपनी सेना के आगे थे। जब वे मक्का के पास पहुंचे तो हाथी रुक गया। चूँकि वे उसे आगे नहीं बढ़ा पाए,
इसलिए वे पीछे हट गए।
रास्ते में, अबाबील पक्षियों के एक समूह ने उन पर हमला किया और उन्हें भगा दिया। यह विचित्र बात है
यह घटना इतिहास की किताबों में दर्ज है। यह मुहम्मद के पैगम्बर होने का भी प्रतीक है, क्योंकि इस चमत्कारी घटना
ने काबा और उनके जन्मस्थान मक्का को बचा लिया था।
और वह अपने प्यारे घर के लिए प्रार्थना करता था। यह घटना एक ऐसे समय घटी जब
यह उनके जन्म के करीब का समय था।

छठा उदाहरण: जब अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) हलीमा के घर में ठहरे हुए थे।
बचपन के दौरान, हलीमा और उनके पति दोनों अक्सर परिवार में रहते थे
एक छोटा बादल उसके सिर को छाया दे रहा था।311 उन्होंने इस घटना का वर्णन किया, और यह बात सच साबित हुई
इसी तरह, जब पैगम्बर मुहम्मद 15 वर्ष की आयु में दमिश्क की यात्रा पर गए थे।

---

307 शिफ़ा', 1:366; इब्न साद, उक्त, 1:63; बहाक़ी, 1:80-92; हकीम, 2:600.

308 बेहाकी, 1:19.

309 अबू नुअयम, 1:139; बहाक़ी, 1:126.

310 सुयुति, अल-ख़ासाईस, 1:128; शिफ़ा', 1:366.

311 इब्न साद, तबकात, 1:97; इब्न कथिर, अल-बिदया, 2:273; शिफ़ा', 1:368.

12 अपने चाचा के साथ, ईसाई भिक्षु बहिरा ने मुहम्मद के ऊपर स्थित एक छोटे से छाया प्रदान करने वाले बादल को देखा और दूसरों को दिखाया।

312 इससे पहले कि वह मुहम्मद के पास जाता, उसने देखा कि मुहम्मद एक छोटे से छाया प्रदान करने वाले बादल को देख रहा था।

पैगम्बर होने के नाते, ख़दीजा ने देखा कि दो फ़रिश्ते, बादल के रूप में, ईश्वर के पैगम्बर पर छाया कर रहे थे, जब वे उनकी दासी मयसारा के साथ व्यापारिक यात्रा से लौट रहे थे। जब उन्होंने मयसारा को इस बारे में बताया, तो उसने जवाब दिया:

"मैंने पूरी यात्रा में यही देखा।"313

सातवाँ उदाहरण: एक प्रामाणिक वर्णन में बताया गया है कि उसके जन्म से पहले पैगम्बरहुड, ईश्वर के दूत एक बार एक पेड़ के नीचे बैठे थे। जो पहले शुष्क था वह स्थान अचानक हरा हो गया, और पेड़ की शाखाएं झुक गईं और उसके सिर के ऊपर मुड़ गईं, जिससे उसे छाया मिल सके।314

आठवां उदाहरण: ईश्वर के दूत अबू तालिब के साथ उनके शासनकाल के दौरान रहे। बचपन में जब भी अबू तालिब और उनका परिवार उनके साथ खाना खाते थे, तो वे तृप्त; जब उसने उनके साथ नहीं खाया तो वे तृप्त नहीं हुए ।315

एक प्रसिद्ध और प्रमाणित घटना। उम्म अयमान, जिन्होंने ईश्वर की सेवा की मेसेंजर जब वह बच्चा था, तो बताता है: "उसने कभी भूख की शिकायत नहीं की और प्यास, न तो जब वह छोटा था और न ही जब वह बड़ा हुआ।"316

नौवां उदाहरण: उसकी धाय (हलीमा) की बकरियों का दूध और सामान (जनजाति के अन्य लोगों के विपरीत) उनके आशीर्वाद से उनकी संख्या में वृद्धि देखी गई।317

इसके अलावा, मक्खियाँ भी उन्हें परेशान नहीं करती थीं।318 उनके वंशजों में से एक, सैयद 'अब्द अल-कादिर अल-जिलानी को यह गुण विरासत में मिला।

दसवां उदाहरण: पैगम्बर के जन्म के बाद, और विशेषकर उसके जन्म के दौरान। उनके जन्म की रात को, टूटते हुए तारे अधिक बार दिखाई देने लगे। यह इस बात का संकेत था कि शैतान और जिन्न अब अदृश्य का ज्ञान प्राप्त नहीं कर सकते थे।319

चूँकि ईश्वर के रसूल को रहस्योद्घाटन की प्राप्ति होगी, इसलिए ज्योतिषियों और जिन्न द्वारा दी गई अदृश्य के बारे में कोई भी जानकारी, जो आमतौर पर गलत और झूठ से मिश्रित, को समाप्त करना होगा। यह आवश्यक था ताकि लोग ऐसे शब्दों को रहस्योद्घाटन या संदेह के रूप में न समझें कुरान ने भविष्य कथन को समाप्त कर दिया, जो व्यापक रूप से प्रचलित था मुहम्मद को पैगम्बर बनाए जाने से पहले। कई ज्योतिषियों ने इसे अपनाया

---

312 अबू नुअयम, दलैल, 1:168-172; तिर्मिधि (तुहफ़त अल-अहवाज़ी द्वारा सत्यापित संस्करण , नं। 3699); इब्न हिशाम, 1:180-81.

313 शिफ़ा', 1:368; बहाक़ी, दलाईल अल-नुबुव्वा, 2:65।

314 शिफ़ा', 368; शरह अल-शिफ़ा', 1:753.

315 अबू नुअयम, 1:166; शिफ़ा', 1:367.

316 शिफ़ा', 1:368; बहाक़ी, 6:125; सुयुति, अल-ख़ासाईस, 1:111.

317 अल-बिदया, 2:273; इब्न हिशाम, 1:173; शिफ़ा', 1:366.

318 शिफा', 1:368.

319 शिफा, 1:347-48.

इस्लाम के विरुद्ध विद्रोह कर दिया, क्योंकि उन्हें कोई मुखबिर नहीं मिला जो उन्हें अदृश्य की जानकारी दे सके।320

निष्कर्ष के तौर पर, कई घटनाओं और लोगों ने इसकी पुष्टि की या अन्य कारणों का कारण बने मुहम्मद की पैगम्बरी होने की पुष्टि करने के लिए। समस्त सृष्टि, एक व्यक्ति के रूप में और एक प्रजाति के रूप में, भगवान की अनुमति के साथ, दुनिया के आध्यात्मिक नेता के आगमन की उत्सुकता से प्रतीक्षा की और घोषणा की ।321यह नेता दुनिया को बदल देगा दुनिया की आध्यात्मिक और नैतिक संरचना, इसे के लिए बीज बोने की जमीन बनाती है इसके बाद, दुनिया के प्राणियों के वास्तविक मूल्य की घोषणा करो, क्षणभंगुर मानवता और जिन्न को शाश्वत विनाश से बचाओ, दुनिया के लिए ईश्वरीय उद्देश्य को प्रकट करो। ब्रह्माण्ड की रचना, तथा सृष्टिकर्ता को सभी को ज्ञात कराना। जैसा कि सिद्ध हुआ पिछले संकेतों और उदाहरणों में, सृष्टि की प्रत्येक प्रजाति ने उसका स्वागत किया उसके लिए विभिन्न प्रकार के चमत्कार करने का साधन बनकर, जिससे उसकी पैगम्बरी होने की पुष्टि हो।

सत्रहवाँ संकेत: कुरान के बाद, पैगम्बर का सबसे बड़ा चमत्कार उनका चरित्र और व्यक्तित्व, उनका नैतिक उदाहरण है। दोस्त और दुश्मन दोनों ही एक दूसरे से सहमत हैं उनमें सभी नैतिक गुणों का उच्चतम स्तर था। महानतम बहादुरी के धनी अली ने बार-बार कहा था: "लड़ाई के सबसे भीषण दौर में हम ईश्वर के रसूल के गढ़ में चले जाओ और उसके पीछे शरण लो उसी तरह, उनमें सभी प्रशंसनीय विशेषताएँ सर्वोच्च स्तर पर विद्यमान थीं। इस महानतम चमत्कार के लिए हम पाठकों को काजी इयाद के शिफा अल-शरीफ का संदर्भ देते हैं, जो यह पुस्तक पैगम्बर के चमत्कारी नैतिक चरित्र को बहुत ही सुन्दरता से समझाती और प्रमाणित करती है।

एक और महान चमत्कार, जिसकी पुष्टि मित्र और शत्रु दोनों ने की है, वह है उनका सर्वोच्च पवित्र कानून (शरिया), जिसके जैसा कानून पहले कभी नहीं आया और न ही कभी आएगा। इस सर्वोच्च चमत्कार के आंशिक स्पष्टीकरण के लिए, परामर्श करें हमारे लेखन, विशेषकर 33 शब्द, 33 अक्षर, 31 झलकियाँ और 13 किरणें।

रसूल के निश्चित और मुतवातिर चमत्कारों में से एक है रोटी और अनाज को अलग करना। अपनी तर्जनी उंगली के इशारे से चाँद को देखा। इस चमत्कार की जानकारी कुछ लोगों ने दी है सबसे प्रमुख साथी (उदाहरण के लिए, इब्न अल-मसूद, इब्न अब्बास, इब्न उमर, इमाम अली, अनस और खुदायफा) द्वारा संसार को यह संदेश दिया गया कि क़यामत निकट है और चाँद फट गया (54:1)। जिद्दी कुरैशी मुश्रिकों ने इसका विरोध नहीं किया

---

320 आज, ज्योतिष विद्या फिर से माध्यम के रूप में सामने आई है। हालाँकि, यह विषय अभी भी चर्चा में है। इस पुस्तक के दायरे से बाहर.

321 यह प्राणी, जिसे भगवान ने "तुम्हारे बिना मैं संसार की रचना नहीं करता" शब्दों से संबोधित किया था, इतना महान नेता है कि उसका शासन 14 शताब्दियों के बाद भी जारी है। उनके जीवन के बाद से प्रत्येक शताब्दी में लाखों लोगों और आधी दुनिया ने स्वयं को उनके बैनर तले। उनकी प्रजा, जिनकी संख्या आज 1.5 बिलियन से अधिक है, उनका अनुसरण करने का प्रयास करती है वे उनके प्रति गहरी श्रद्धा रखते हैं और प्रतिदिन ईश्वर से उनके लिए शांति और आशीर्वाद की प्रार्थना करते हैं। इस प्रकार वे प्रतिदिन उसके प्रति अपनी निष्ठा की शपथ दोहराते हैं।

खबर तो सुनी, लेकिन दावा किया कि यह जादू है। इस प्रकार अविश्वासी भी इसकी गवाही देते हैं घटना। उनका मिराज (स्वर्गारोहण) स्वर्ग के निवासियों को दिखाया गया एक और भी बड़ा चमत्कार है। पाठक मिराज के ग्रंथ का संदर्भ ले सकते हैं, जो एक छोटा सा हिस्सा है
जिसका विवरण इस ग्रंथ के अंत में परिशिष्ट के रूप में दिया गया है। हम इसका उल्लेख करेंगे एक और चमत्कार जो पैगम्बर ने मेराज के संबंध में किया था।

जब अल्लाह के रसूल ने कुरैश को इस घटना की सूचना दी तो उन्होंने इनकार कर दिया उस पर विश्वास करने के लिए, उन्होंने कहा: "यदि आप वास्तव में मस्जिद अल-अक्सा की यात्रा करते हैं यरूशलेम, जैसा कि आप दावा करते हैं, इसके दरवाजों और दीवारों का वर्णन करें। ईश्वर के दूत बाद में कहते हैं: "मैं उनके सवाल और इनकार से इस तरह परेशान था कि मेरे साथ पहले कभी ऐसा नहीं हुआ। अचानक, भगवान ने मेरे बीच का पर्दा हटा दिया और बैत अल-मकदिस (मस्जिद अल-अक्सा) और मुझे दिखाया। मैंने इसे देखा और मैंने इसे वैसा ही वर्णित किया जैसा कि यह मेरी आँखों के सामने था।"322 इस प्रकार कुरैश को एहसास हुआ कि ईश्वर के दूत सही और पूर्ण विवरण दे रहे थे।

इसके अलावा, ईश्वर के दूत ने उनसे कहा: "अपनी यात्रा के दौरान मैंने एक व्यक्ति को देखा आपके कारवां का यह जहाज़ कल इस समय यहाँ पहुँचेगा।"
कुरैश ने वादा किए गए समय पर उसके आने का इंतज़ार किया। ऐसा लगता है कि कारवां लगभग एक घंटे की देरी होने वाली है। पैगंबर के वचन को पूरा करने के लिए यह बात सत्य साबित हुई कि पृथ्वी एक घंटे तक नहीं घूमती।323 इसकी पुष्टि सावधानीपूर्वक शोधकर्ताओं ने की है।

यह देखते हुए कि पृथ्वी ने पैगम्बर मुहम्मद के शब्दों की पुष्टि करने के लिए घूमना बंद कर दिया, और सूर्य ने आकाश में अपने स्पष्ट विश्राम द्वारा इसका साक्ष्य दिया,
जरा सोचिए कि उन लोगों का दुर्भाग्य कितना बड़ा है जो इसकी पुष्टि नहीं करते और ऐसे व्यक्ति का अनुसरण करो, और जो लोग इसका अनुसरण करते हैं उनका सौभाग्य कितना विशाल है: "हमने सुना और माना" और घोषणा करते हैं: "विश्वास के लिए परमेश्वर का धन्यवाद हो" और इस्लाम।"

अठारहवाँ संकेत: संदेशवाहक का सबसे बड़ा और शाश्वत चमत्कार है कुरान, जिसमें उनकी पैगम्बरी के सैकड़ों प्रमाण शामिल हैं और जिसके ४० चमत्कारिक पहलू सिद्ध हो चुके हैं।३२४ यहाँ हम उल्लेख करते हैं इस संबंध में कुछ महत्वपूर्ण बिंदु इस प्रकार हैं:

पहला बिंदु: प्रश्न: कुरान की चमत्कारिकता मुख्य रूप से इसकी चमत्कारिकता में निहित है वाक्पटुता, जिसे एक हजार विवेकशील विद्वानों में से केवल एक ही समझ सकता है। क्या हर किसी को अपनी समझ के अनुसार इस चमत्कारिकता की झलक नहीं मिलनी चाहिए?

322 मुस्लिम, 1:156-57; तिर्मिधि, संख्या 3133; बुखारी, 5:66; इब्न हनबल, 3:378.

323 'अली अल-कारी, शरह अल-शिफ़ा', 1:704; बहाक़ी, दलाइल अल-नुबुव्वा, 2:404।

324 देखें सईद नूरसी, द वर्ड्स.

जवाब: क़ुरआन में हर किसी के लिए अलग-अलग तरह की चमत्कारिकता है और यह सबसे बेहतरीन तरीके से बताया गया है। वाकपटु और बुद्धिमान लोगों के लिए
बयानबाजी में, यह अपनी चमत्कारिक वाक्पटुता दिखाता है; कवियों और वक्ताओं के लिए, यह प्रदर्शित करता है
इसकी चमत्कारी और अद्वितीय उदात्त शैली, जिसकी नकल नहीं की जा सकती, यद्यपि
यह सबको पसंद आता है। समय बीतने से इसकी ताज़गी पर कोई असर नहीं पड़ता, इसलिए
यह हमेशा नया होता है। इसका छंदबद्ध और लयबद्ध गद्य और पद्य दोनों में ही एक अलग पहचान है।
सबसे महान बड़प्पन और आकर्षण.

ज्योतिषियों और भविष्यवक्ताओं के लिए कुरान की चमत्कारिकता में निम्नलिखित बातें शामिल हैं:
यह अदृश्य के बारे में जो रिपोर्ट देता है। इतिहासकारों और इतिहासकारों के लिए, इसकी चमत्कारिकता यह है कि यह अतीत के राष्ट्रों, भविष्य की स्थितियों के बारे में जानकारी देता है
और घटनाएँ, और मध्यवर्ती दुनिया और परलोक। सामाजिक और
राजनीतिक वैज्ञानिकों के लिए, यह अपने पवित्र सिद्धांतों की चमत्कारिकता प्रस्तुत करता है,
जो शरिया का हिस्सा हैं। जो लोग ईश्वर के ज्ञान में लगे हुए हैं और
प्रकृति के दिव्य नियमों के अनुसार, कुरान अपने पवित्र अर्थों में अपनी चमत्कारिकता दर्शाता है।
दिव्य सत्य। संतत्व के लिए आध्यात्मिक मार्ग का अनुसरण करने वालों के लिए, यह प्रकट होता है
इसके छंदों में गहन, बहुआयामी अर्थ हैं जो क्रमिक गति में उभरते हैं
समुद्र की लहरों की तरह.

संक्षेप में, कुरान अपनी चमत्कारिकता के 40 पहलुओं को सभी को दिखाता है
एक अलग खिड़की खोलकर। यहां तक कि जो लोग इसे सिर्फ सुनते हैं और लाभ उठा सकते हैं
इसका अर्थ बहुत सीमित है, मैं इस बात से सहमत हूँ कि कुरान किसी अन्य कुरान की तरह नहीं है।
किताब। कोई भी साधारण व्यक्ति जो इसे सुनता है, वह कहता है: "यह कुरान या तो नीचे है
अन्य पुस्तकों से अधिक महत्वपूर्ण है—जो कि पूर्णतया असंभव है, और जिसका दावा उसके शत्रु [और शैतान] भी नहीं करते—या उन सब से ऊपर है और इसलिए एक चमत्कार है।”
अब हम उस चमत्कारिकता के पहलू की व्याख्या करेंगे जिसे एक साधारण व्यक्ति केवल सुनकर अनुभव कर सकता है।

चमत्कारी कुरान दुनिया को चुनौती देता है और दो तरह की विचारधाराओं को जन्म देता है।
भावनाएँ: सबसे पहले, उसके दोस्त उसकी शैली की नकल करना चाहते हैं और उसकी तरह बोलना और लिखना चाहते हैं
दूसरे, इसके दुश्मनों में आलोचना करने और अपने प्रिय कुरान की निंदा करने का जुनून पैदा हो जाता है।
विवाद, साथ ही साथ प्रतिस्पर्धा करके चमत्कारिक होने के अपने दावे को नकारना
इसकी शैली। इन दो प्रभावों के तहत, लाखों किताबें लिखी गई हैं
अरबी में - और हमारे पास अभी भी वे हैं। जो कोई भी उनमें से सबसे वाक्पटु और अलंकारिक को सुनता है, वह कहेगा कि कुरान किसी भी अन्य की तरह नहीं लगता है
उन्हें।

एक और चमत्कारी पहलू जो यह अशिक्षित लोगों को दिखाता है वह यह है कि
पाठ करने से कोई बोर नहीं होता। एक अनपढ़ व्यक्ति, यहां तक कि जो पढ़ता भी है
जो कुरान का अर्थ नहीं समझ पाता, वह सुनकर निस्संदेह कहेगा-

इसे पढ़ते हुए: “यदि मैं एक बहुत ही सुंदर और प्रसिद्ध दोहे को दो या तीन बार सुनूं
कई बार मुझे बोरियत महसूस होने लगती है। लेकिन कुरान के मामले में यह सच नहीं है, क्योंकि ज़्यादातर लोग कुरान को लेकर बहुत ज़्यादा चिंतित रहते हैं।
मैं जितना सुनता हूँ, यह उतना ही सुखद होता जाता है। यह कोई मानवीय रचना नहीं हो सकती।”

कुरान अपनी चमत्कारिकता को इसे सीखने वाले बच्चों को भी दिखाता है।
दिल। हालाँकि कुरान में कई समान आयतें और अंश हैं जो शायद
भ्रम पैदा करते हैं, बच्चे इसे आसानी से याद कर लेते हैं, भले ही वे इसे याद न रख सकें
किसी और चीज़ के बारे में एक ही पैराग्राफ़ लंबे समय तक। जो लोग बीमार हैं और
मृत्यु के निकट पहुँचे हुए लोग, जो जरा सी भी आवाज से विचलित हो जाते हैं, उनके लिए कुरान की तिलावत
और ध्वनि, ज़मज़म के पानी की तरह मधुर और सुखदायक हो जाती है।
जिससे इसकी चमत्कारिकता का एक और पहलू सामने आता है।
देख सकते हैं लेकिन सुन या सीख नहीं सकते, लगभग 40 वर्गों के लोगों में से एक हैं
क़ुरआन अपने चमत्कारी गुणों को दिखाता है, उनमें से किसी को भी कम नहीं करता,
अन्य संकेत भी हैं.325

---

325 उदाहरण के लिए, हाफ़िज़ उथमान की प्रति में कई संबंधित शब्द हैं जो एक दूसरे से मेल खाते हैं
अन्य अलग-अलग पन्नों पर। यदि चादरें उनके कुत्ते के नीचे हैं तो आठवीं (सूरत अल-काहफ) हैं
छेदा गया, थोड़ा विचलन के साथ यह क़ितमीर (सूरत अल-फ़ातिर) से होकर गुज़रेगा , इस प्रकार
कुत्ते का नाम। सूरत अल-सफ्फात में मुखदारुन और मुखदारिन (वे हमारे सामने पेश किए जाएँगे)
एक दूसरे से मेल खाते हैं और सूरा या सीन में एक के नीचे एक दो बार पाया जाता है।
मथना (जोड़े में) कुरान में तीन बार आता है; ये दोनों एक दूसरे से मेल खाते हैं।
एक दूसरे से, एक सूरत अल-फ़ातिर की शुरुआत में और दूसरा सूरा के अंत में
'सबा', संयोग से नहीं हो सकता।
ऐसे कई उदाहरण मौजूद हैं। कभी-कभी एक ही शब्द लगभग एक ही जगह पर आता है
पाँच या छह पन्नों पर। मैंने एक बार कुरान में लाल स्याही से लिखे ऐसे ही अंश देखे थे,
आमने-सामने के पन्नों पर एक दूसरे का सामना करना पड़ा। यह एक अलग तरह के चमत्कार की ओर इशारा करता है। बाद में, मैंने
विभिन्न पृष्ठों पर एक दूसरे के आमने-सामने कई और अंश देखे गए।
कुरान की आयतों और अध्यायों को पैगंबर के निर्देशानुसार व्यवस्थित किया गया और बाद में उनकी नकल की गई
ईश्वरीय प्रेरणा से निर्मित इसकी डिजाइन और सुलेख चमत्कारी हैं। कोई भी मामूली विचलन मानवीय कृत्यों का परिणाम है।

इसके अलावा, प्रत्येक लम्बा या मध्यम मदीना सूरा अल्लाह को बहुत ही महत्वपूर्ण तरीके से दोहराता है : एक शीट के दोनों ओर या दो आमने-सामने वाले पृष्ठों पर पांच, छह, सात, आठ, नौ या ग्यारह बार - एक सुंदर और महत्वपूर्ण संख्यात्मक अनुपात।

यद्यपि कुरान में प्रेरक वाक्पटुता की सभी विशेषताएं हैं (जैसे, लय, तुक,
और कलात्मक शैली) जो हमारा ध्यान आकर्षित करती है, यह हमेशा उन लोगों को उदात्त गंभीरता, मन की शांति और उनकी उपस्थिति में होने की शांति प्रदान करती है जो उन्हें याद करते हैं और प्रार्थना करते हैं
भगवान। अन्य प्रकार की प्रेरक वाक्पटुता अक्सर परेशान करती है, क्योंकि उनकी सुंदरता बाधा डालती है
यह मन की शांति को नष्ट करता है तथा गंभीरता और आंतरिक एकाग्रता को कमजोर करता है।
पिछले 8 या 9 सालों से मैं इमाम शाफ़ई की मशहूर दुआ रोज़ाना पढ़ता हूँ।
यह अपनी तरह का सबसे सुंदर, अर्थपूर्ण और भावपूर्ण है, और यहां तक कि इसने मिस्र में सूखे और अकाल के मौसम को भी समाप्त कर दिया, मैंने देखा कि इसकी तुकांत और छंदबद्ध शब्दावली
प्रार्थना की गंभीरता को बाधित करता है। इसलिए मैंने यह निष्कर्ष निकाला कि कुरान की चमत्कारी-वास्तविक, स्वाभाविक, बेजोड़ और अनूठी लय और छंद शांति और गंभीरता को बनाए रखते हैं। जो लोग ईश्वर को याद करते हैं और प्रार्थना करते हैं, वे अपने दिलों में इस चमत्कार को महसूस करते हैं,
भले ही उनके मन को इसका एहसास न हो।

दूसरा बिंदु: चूंकि मूसा के समय में जादू बहुत प्रचलित था, इसलिए उसके चमत्कार भी उसी तरह के थे। चूंकि यीशु के समय में दवाइयों की मांग बहुत थी, इसलिए उसके चमत्कार भी उसी तरह के थे। चमत्कार उसी प्रकार के थे। जब मुहम्मद को पैगम्बर के रूप में पाला गया, तो चार अरब में कलाएँ लोकप्रिय थीं: वाक्पटुता और लिखने और बोलने में प्रवाह, कविता और वक्तृता, भविष्य कथन और भविष्यवाणी, और अतीत के बारे में ज्ञान और ब्रह्माण्ड विज्ञान.

जब चमत्कारी कुरान आया, तो उसने इन सभी विषयों के विशेषज्ञों को चुनौती दी चार क्षेत्र। सबसे पहले, इसने वाक्पटु लोगों को घुटनों के बल ला दिया जब उन्होंने सुना दूसरे, इसने कवियों और वक्ताओं को इतना चौंका दिया कि वे आश्चर्य में अपनी उंगलियां दबाते रहे और अपने सबसे प्रसिद्ध सात को हटा दिया कविताएँ, जो तब तक सोने में लिखी जाती थीं और काबा की दीवारों पर लटकी रहती थीं। तीसरा, इसने भविष्यवक्ताओं और जादूगरों को हमेशा के लिए चुप करा दिया, उन्हें यह भूला दिया उनके अदृश्य ज्ञान और उनके जिन्न को देश से निकाल देने के कारण चौथा, इसने उन लोगों को बचाया जो थोड़ा इतिहास और ब्रह्मांड विज्ञान जानते थे मिथकों और मनगढ़ंत बातों से उन्हें अवगत कराया और उन्हें अतीत की घटनाओं की वास्तविकता से परिचित कराया और सृष्टि के प्रकाशमान तथ्य। इस प्रकार ये चार समूह, घुटने टेकते हुए कुरान को पढ़कर लोग अत्यन्त आश्चर्यचकित और भयभीत हो गए, इसके विद्यार्थी बन गए और कभी भी इसे चुनौती देने का प्रयास नहीं किया।

एक संभावित प्रश्न: हमें कैसे पता चलेगा कि किसी ने हमारे साथ विवाद नहीं किया है? क्या आप कुरान के अनुसार ऐसी चुनौती को स्वीकार करते हैं या यह कि ऐसी चुनौती असंभव है?

उत्तर: अगर यह संभव होता तो कोई न कोई इसे आजमाता। कुरान के विरोधियों को ऐसी चुनौती की जरूरत थी, क्योंकि उन्हें लगा कि इससे उनके धर्म, जीवन और संपत्ति को खतरा है। इस तरह उन्होंने कुरान को चुनौती दी होगी। कुरान में यदि वे ऐसा कर सकते तो बहुत से अविश्वासी और पाखंडी थे। इस तरह की प्रतियोगिता का विज्ञापन करने के लिए तैयार हैं, ठीक वैसे ही जैसे वे दुर्भावनापूर्ण प्रचार करते हैं

एक और चमत्कारी पहलू यह है कि कुरान ईश्वर के दूत, महानतम ईश्वरीय नाम के मानवीकरण के उद्देश्य के पास उच्चतम और सबसे उज्ज्वल डिग्री के विश्वास को दर्शाता है। एक पवित्र मानचित्र की तरह, यह परलोक और भगवान के महान सत्यों का विवरण देता है।
यह हमें स्वाभाविक रूप से दिखाता है कि इस्लाम कितना महान् और सच्चा धर्म है।

यह ब्रह्माण्ड के रचयिता को सृष्टि के स्वामी के रूप में भी संबोधित करता है, जिसमें उसकी सारी शक्तियाँ सम्मिलित हैं। महिमा और ऐश्वर्य। इसलिए, जैसा कि कुरान कहता है: कहो: यदि सारी मानवता और जिन्न वे इस क़ुरआन के समान कुछ बनाने के लिए एकत्र हुए, परन्तु वे इसके समान कुछ नहीं बना सके (17:88)। इस प्रकार के सभी प्रयास तुलनात्मक रूप से कुछ भी नहीं हैं, क्योंकि कुरान की नकल नहीं की जा सकती, जिसका मुख्य कारण ऊपर वर्णित तीन आवश्यक पहलू हैं।
प्रत्येक पृष्ठ के अंत में इसकी पंक्तियाँ एक सुन्दर कविता के साथ पूर्ण हो जाती हैं।
इसकी चमत्कारिकता का यह उत्कृष्ट लक्षण इस तथ्य के कारण है कि इसका सबसे लम्बा श्लोक (मुदायन) [ऋण व्यवसाय]) पृष्ठों के लिए आदर्श या मानक लंबाई प्रदान करता है, जबकि सूरत अल-इखलास (ईमानदारी) और सूरत अल-कवथर (बहुतायत) अपनी पंक्तियों के लिए भी यही करते हैं।

इस्लाम के खिलाफ़। अगर कोई चुनौती सफल होती, तो उसे रिकॉर्ड किया जाता (अतिशयोक्ति के साथ)। लेकिन सभी इतिहास की किताबें हमारे पास आ चुकी हैं, और कोई भी नहीं उनमें से किसी में भी मुसयलीमा की कुछ निरर्थक पंक्तियों के अलावा कुछ भी नहीं है अल-कज्जाब (झूठा), एक स्वयंभू (और झूठा) पैगम्बर। वे कभी नहीं इसे चुनौती देने का साहस किया, हालाँकि कुरान ने उन्हें 23 वर्षों तक चुनौती दी थी एक तरीका जिसने उन्हें उकसाया और परेशान किया, वह इस प्रकार है:

> आओ और इस कुरान जैसा एक ग्रंथ बनाओ। एक अनपढ़ आदमी, मुहम्मद अलैहिस्सलाम की तरह ऐसा करो। अगर वह ऐसा नहीं कर सकता, तो सबसे ज़्यादा लिखने में जानकार और पारंगत व्यक्ति प्रयास करें। यदि वह ऐसा नहीं कर सकता, तो सभी को इकट्ठा करें अपने विद्वान और वाक्पटु लोगों को साथ लेकर चलें और उन्हें साथ मिलकर काम करने दें। अपने देवी-देवताओं को पुकारो। अगर तुम फिर भी कुछ नहीं कर सकते, तो उच्चतम वाक्पटुता वाली सभी पुस्तकों का उपयोग करो, और प्रलय तक आने वाले सभी अविश्वासियों को अपने अनुभवों का उपयोग अपने प्रयास में करने दो। अगर फिर भी आप ऐसा नहीं कर सकते, केवल 10 सूराओं के समान उत्पादन करने का प्रयास करें। यदि आप ऐसा नहीं कर सकते तो निराधार कहानियों से एक रचना बनाएं और केवल कुरान की छंदात्मक आयत और वाक्पटुता से मेल खाने वाली कल्पनाशील कहानियाँ। यदि आप ऐसा नहीं कर सकते, तो केवल एक अध्याय बनाएँ। यदि आप ऐसा नहीं कर सकते इस पर भी एक छोटा अध्याय लिखिए, अन्यथा आपका धर्म, जीवन, संपत्ति और परिवार इस दुनिया और उसके बाद में दांव पर लग जाएंगे!

इन आठ विकल्पों के साथ, कुरान ने चुनौती दी है और चुप करा दिया है पिछले 14 शताब्दियों से सभी लोगों और जिन्नों के लिए यह एक चुनौती रही है। सबसे आसान तरीका (खुली चुनौती) अपनाने के बजाय, इस्लाम के शुरुआती दिनों में रहने वाले अविश्वासियों ने सबसे कठिन रास्ता (युद्ध) चुना और इस तरह अपने जीवन, संपत्ति को खतरे में डाल दिया, और परिवार। अगर कोई इस सबसे आसान शर्त को भी पूरा कर सकता है चुनौती, कोई बुद्धिमान लोग नहीं, विशेष रूप से वे जो पैगम्बर के समय में रहते थे और कुरैशी बौद्धिक अभिजात वर्ग को युद्ध का रास्ता चुनने के लिए मजबूर होना पड़ता। संक्षेप में, जैसा कि जाहिज़ ने कहा, उन्हें तलवार से संघर्ष का सहारा लेना पड़ा क्योंकि शब्दों द्वारा चुनौती देना असंभव था।

प्रश्न: कुछ विवेकशील विद्वानों का मानना है कि कुरान का कोई भी सूरा, किसी भी पद्य, वाक्य या शब्द पर विवाद हो सकता है और ऐसा कभी किसी ने नहीं किया है यह बात अतिशयोक्तिपूर्ण और स्वीकार करने में कठिन लगती है, क्योंकि मानव निर्मित कई शब्द कुरान से कुछ हद तक मिलते-जुलते हैं।

उत्तर: कुरान की चमत्कारिकता के बारे में दो राय हैं। प्रचलित राय यह है कि इसकी वाक्पटुता और अर्थ के गुण इससे परे हैं मानवीय क्षमता। दूसरा कहता है कि कोई चुनौती दे सकता है और प्रतिस्पर्धा कर सकता है एक सूरा के साथ, लेकिन सर्वशक्तिमान ईश्वर इसे मुहम्मद का चमत्कार बताकर रोक देता है। उदाहरण के लिए, यदि कोई पैगम्बर किसी ऐसे व्यक्ति से कहे जो खड़ा हो सकता है: “तुम खड़े नहीं हो सकोगे

खड़ा होना" और यह सच हो गया, तो इसे पैगंबर का चमत्कार माना जाएगा।
इस स्कूल को सरफा के नाम से जाना जाता है, जो सिखाता है कि सर्वशक्तिमान ईश्वर हमें दुष्टों से बचाता है।
लोगों और जिन्नों को एक सूरा भी बनाने से रोका। अगर यह सच नहीं होता, तो शायद वे
एक सूरा को चुनौती दें। इस प्रकार विद्वान जो मानते हैं कि एक शब्द भी नहीं
कुरान को चुनौती दी जा सकती है कि वह सही है, क्योंकि सर्वशक्तिमान इसे रोकता है
कुरान की चमत्कारिकता का विवरण।

जहां तक प्रचलित, अधिक पसंदीदा दृष्टिकोण का सवाल है, तो इसमें एक सूक्ष्म बिंदु है: सभी
कुरान के शब्द और आयतें आपस में जुड़ी हुई हैं। कभी-कभी एक शब्द किसी से संबंधित होता है।
10 अन्य घटनाएँ, इस प्रकार 10 संबंध रखती हैं और 10 प्रदान करती हैं
वाक्पटुता के उदाहरण। मेरे इशारत अल-इजाज़ (चमत्कार के संकेत) में, एक
कुरान की व्याख्या की कुंजी, मैं कुछ उदाहरण दिखाता हूं
सूरत अल-फ़ातिहा और सूरत अल-बकरा की प्रारंभिक आयतें ।

उदाहरण के लिए, कोई व्यक्ति अपने सबसे महत्वपूर्ण रत्न को सबसे उचित स्थान पर रख सकता है।
किसी सुसज्जित महल की दीवार के सजावटी पैटर्न में ही रखें
संपूर्ण डिज़ाइन जानने के बाद। इसी तरह, आँख की पुतली को उसके सही स्थान पर रखने से शरीर के सभी कार्यों और जटिल संगठन के साथ-साथ आँख के कार्य के साथ उसके संबंध को जानना भी शामिल है। ठीक उसी तरह,
विज्ञान और गहन सत्य के अग्रणी लोग अनेकों प्रदर्शन करते हैं
कुरान के शब्दों के बीच संबंध और प्रत्येक शब्द का अन्य आयतों और अभिव्यक्तियों के साथ कई गुना संबंध। अक्षरों के रहस्यों के विद्वान इससे भी आगे बढ़कर यह साबित करते हैं कि कुरान के प्रत्येक अक्षर में कई आंतरिक अर्थ हैं
ऐसे अर्थ, जिन्हें यदि पूरी तरह से समझाया जाए तो वे कई पन्ने भर सकते हैं।

चूँकि कुरान हर चीज़ के रचयिता का वचन है, इसलिए प्रत्येक शब्द
छिपे अर्थों से बने एक आदर्श शरीर के मूल या हृदय के रूप में कार्य कर सकता है
इसके चारों ओर या एक आदर्श वृक्ष के बीज के रूप में रखा गया है। इसलिए, हालांकि कुछ
मानव निर्मित शब्द कुरान के शब्दों के समान हो सकते हैं, जिससे उन्हें
[और बीच] के सभी रिश्तों पर उचित रूप से विचार करके
कुरान के शब्द सर्वज्ञ ज्ञान का आह्वान करते हैं।

तीसरा बिन्दु: सर्वशक्तिमान ईश्वर ने एक बार मेरे हृदय में एक संक्षिप्त चिन्तन की प्रेरणा दी
कुरान की चमत्कारिक प्रकृति पर। मैं इसका अनुवाद (मूल से) दे रहा हूँ
अरबी) नीचे:

पवित्र है वह ईश्वर जो स्वयं अपनी एकता का साक्षी है; जिसने अपनी कृपा, महिमा और पूर्णता के गुणों को क़ुरआन के माध्यम से प्रकट किया है;
और जिसकी छह भुजाएँ प्रकाशमान हैं और जिनमें न तो कोई संदेह है और न ही कोई शंका।
परमेश्वर के संप्रभुता के सिंहासन द्वारा समर्थित, जहाँ से यह प्रकाश धारण करता है
रहस्योद्घाटन के अनुसार, यह दो दुनियाओं की खुशी की ओर ले जाता है और इसका लक्ष्य है

स्वर्ग और शाश्वत आनंद का प्रकाश। इसके ऊपर चमत्कार की मुहर चमकती है,
इसके नीचे प्रमाण और साक्ष्य के स्तम्भ हैं, और इसके अन्दर शुद्ध मार्गदर्शन है।
यह मन को इस तरह की चेतावनियों के माध्यम से इसकी पुष्टि करने का आग्रह करता है: क्या वे
क्या यह समझ और चिंतन नहीं करता? यह हृदय को आध्यात्मिक सुख प्रदान करता है
अंतरात्मा को उसके चमत्कारिक होने की गवाही देता है। तो फिर किस ओर या किस कोने से संदेह के तीर ऐसे
चमत्कारिक कुरान पर आक्रमण कर सकते हैं?

चमत्कारी कुरान में सभी पुस्तकों की विषय-वस्तु सम्मिलित है जो सभी को दी गई है।
पैगम्बरों के साथ-साथ सभी संतों और एकेश्वरवादियों का, चाहे उनका मार्ग, स्वभाव और समय कुछ भी हो। दूसरे
शब्दों में, हृदय और बुद्धि वाले सभी लोग ईश्वर का उल्लेख करते हैं।
कुरान के नियमों और बुनियादी बातों को अपनी पुस्तकों में इस तरह से शामिल करें कि उनकी पहचान का पता चले
पुष्टि, और इसलिए "कुरान के दिव्य वृक्ष" की जड़ों की तरह हैं।

क़ुरआन वास्तव में एक रहस्योद्घाटन है। वह महान परमेश्वर जिसने इसे अवतरित किया
मुहम्मद के हाथों से किए गए चमत्कारों के माध्यम से यह बात सिद्ध होती है।
कुरान की चमत्कारिकता से पता चलता है कि यह ईश्वर के सर्वोच्च सिंहासन से आता है।
अंत में, जब रहस्योद्घाटन शुरू हुआ तो पैगम्बर मुहम्मद का भय, उनकी स्थिति
इसे प्राप्त करते समय उनकी तल्लीनता और एकाग्रता, और कुरान के प्रति उनका बेजोड़ पाप-ईमानदारी और भक्ति,
ये सब साबित करते हैं कि यह रहस्योद्घाटन है,
पिछले अनंत काल से प्राप्त,326 और पैगंबर को सौंपा गया।

कुरान शुद्ध मार्गदर्शन है, क्योंकि इसका विपरीत (अविश्वास) स्पष्ट रूप से है।
गुमराही। कुरान अनिवार्य रूप से विश्वास के प्रकाश का स्रोत है, क्योंकि
इस प्रकाश का विपरीत अंधकार है। कुरान सत्य का स्रोत है
जिसका रास्ता न तो कल्पना और न ही अंधविश्वास खोज सकता है। सत्यवादी दुनिया
इस्लाम की छवि उसके अवतरण, उसके द्वारा प्रस्तुत सुदृढ़ कानून और
इसके द्वारा अभिव्यक्त सभी सर्वोच्च गुण अदृश्य और दृश्य जगत के संबंध में इसकी पूर्ण सत्यता की गवाही देते हैं।

कुरान लोगों को जीवन में खुशियों का मार्ग दिखाता है और उनका मार्गदर्शन करता है।
दुनिया। जिसे भी इस पर संदेह है उसे इसे एक बार पढ़ना चाहिए और इसके शब्दों पर ध्यान देना चाहिए।

---

326 अतीत अनंत काल (अज़ल) जैसा लोग कल्पना करते हैं, समय का केवल आरंभिक बिंदु नहीं है और इसलिए
किसी चीज़ के अस्तित्व के लिए ज़रूरी है। दरअसल, बीता हुआ अनंत काल एक दर्पण की तरह है जो अतीत को दर्शाता है,
वर्तमान और भविष्य। समय के प्रवाह से खुद को अलग रखते हुए, लोग एक ऐसी कल्पना करते हैं
अतीत के समय की सीमा जो चीजों की एक निश्चित श्रृंखला के माध्यम से विस्तारित होती है। वे इसे अतीत अनंत काल कहते हैं। तर्क करने का ऐसा
तरीका न तो सही है और न ही स्वीकार्य है। निम्नलिखित सूक्ष्म
यह बिंदु मामले को स्पष्ट कर सकता है। कल्पना करें कि आप एक दर्पण पकड़े हुए हैं। सब कुछ दर्पण पर प्रतिबिंबित होता है।
दायाँ भाग अतीत का प्रतिनिधित्व करता है, जबकि बायीं ओर प्रतिबिंबित प्रत्येक वस्तु भविष्य का प्रतिनिधित्व करती है।
दर्पण केवल एक दिशा को ही प्रतिबिंबित कर सकता है, क्योंकि जब आप इसे पकड़ते हैं तो यह दोनों तरफ एक साथ नहीं दिखा सकता है। ऐसा करने
के लिए, आपको अपनी मूल स्थिति से इतना ऊपर उठना होगा कि बायाँ और दायाँ एक हो जाएँ, और पहले के बीच कोई अंतर न रहे

और अंतिम, शुरुआत या अंत। (ट्र.)

उत्तम और जीवनदायी फल दर्शाते हैं कि यह सत्य में गहराई से निहित है और
सच्ची शक्ति, क्योंकि एक फल की शक्ति एक पेड़ के जीवन को दर्शाती है। बस देखो कि कितने सारे फल हैं
हर सदी में यह उत्तम, सशक्त और चमकदार फल-संतत्व, पवित्रता और गहन ज्ञान वाले लोगों को जन्म देता है। अनगिनत
संकेतों से आने वाले दृढ़ विश्वास और अंतर्ज्ञान के माध्यम से, कुरान को इतना सम्मान और चाहा जाता है

लोगों, जिन्न और फ़रिश्तों द्वारा इसकी तिलावत करने के बाद वे इकट्ठा होते हैं
उसके चारों ओर पतंगों की तरह उड़ते हैं।

इसके अतिरिक्त, सभी गहन ज्ञान वाले लोग इस बात पर सहमत हैं कि
कुरान की पुष्टि और पुष्टि तर्कसंगत प्रमाणों से की गई है। इब्न सिना (एविसेना) और इब्न रुश्द (एवर्रोस) जैसे दर्शनशास्त्र के
प्रतिभाशाली लोग और विशेष रूप से
सबसे विद्वान धर्मशास्त्री, कुरान के मूल सिद्धांतों की सच्चाई साबित करते हैं
अपने-अपने तर्क के तरीकों से। मानवता का स्वभाव ही ऐसा है, जब तक कि
यह पवित्र आत्मा अदूषित रहता है, तथा कुरान की सच्चाई की पुष्टि करता है, क्योंकि केवल इसका प्रकाश ही किसी व्यक्ति को संतुष्ट कर सकता है।
व्यक्ति के विवेक को शांति मिलती है और उसके हृदय को शांति मिलती है।

कुरान एक शाश्वत चमत्कार है जो लगातार अपनी चमत्कारिकता को प्रकट करता रहता है। यह अन्य चमत्कारों की
तरह कभी फीका या नष्ट नहीं होता, न ही इसकी आयु बढ़ती है
समय। कुरान का मार्गदर्शन इतना समावेशी और व्यापक है कि महादूत
गेब्रियल और छोटे बच्चे साथ-साथ इसे सुनते हैं, दोनों ही अपने-अपने पाठ सीखते हैं। इब्न सिना जैसे प्रतिभाशाली दार्शनिक
इसके सामने घुटने से घुटने मिलाकर बैठते हैं
साधारण वाचकों को इसकी शिक्षा प्राप्त करने के लिए। कभी-कभी साधारण वाचक, गुण के कारण
अपनी पवित्रता और विश्वास की ताकत के कारण, वे इब्न सीना से अधिक लाभ उठाते हैं।

कुरान का मार्गदर्शन ऐसी गहरी अंतर्दृष्टि प्रदान करता है कि ब्रह्मांड को किताब के पन्नों की तरह देखा और समझा
जा सकता है। एक घड़ीसाज़ की तरह जो घड़ी को खोलकर उसके छोटे से छोटे हिस्से का वर्णन करता है, कुरान भी ऐसा ही
करता है।
ब्रह्मांड को उसके सभी क्षेत्रों और कणों के साथ समझाता है। सबसे बढ़कर, यह बताता है
कि "ईश्वर के अलावा कोई देवता नहीं है" और उसकी एकता की घोषणा करता है।

> हे ईश्वर, कुरान को संसार में हमारा साथी बना, कब्र में हमारा हमदर्द, परलोक में हमारा
> सिफ़ारिशकर्ता और जीवन में हमारा प्रकाश बना।
> सिरात पुल, एक पर्दा और नरक की आग से सुरक्षा, एक दोस्त
> स्वर्ग, और सभी अच्छाइयों के लिए मार्गदर्शक और नेता। हे ईश्वर, प्रकाशमान हो
> हमारे दिलों और कब्रों को ईमान और कुरान की रोशनी से रोशन करो, और
> उस व्यक्ति के लिए कुरान के प्रमाण को उज्ज्वल करें जिसके लिए
> आपने इसे भेजा है। उन पर और उनके परिवार पर ईश्वर की ओर से शांति और आशीर्वाद हो।
> दयालु और चिंताशील। आमीन।

उन्नीसवीं निशानी: पिछली निशानियों ने साबित कर दिया कि मुहम्मद ही अल्लाह के रसूल हैं।
सर्वशक्तिमान ईश्वर के संदेशवाहक। हज़ारों लोगों से उनकी संदेशवाहकता स्पष्ट है

निर्णायक प्रमाणों में, पैगम्बर मुहम्मद ईश्वर की एकता और शाश्वत खुशी के सबसे उज्ज्वल संकेत और सबसे निश्चित प्रमाण हैं।

यहाँ हम इस उज्ज्वल चिन्ह, इस सत्य-भाषण प्रमाण का बहुत ही संक्षिप्त विवरण देते हैं। चूँकि वह वह प्रमाण है जिसके माध्यम से ईश्वर का ज्ञान प्राप्त होता है, इसलिए हमें प्रमाण और जिस तरह से यह प्रमाण के रूप में कार्य करता है, दोनों को पहचानना चाहिए।

ईश्वर के दूत, हर दूसरे प्राणी की तरह, व्यक्तिगत रूप से ईश्वर के अस्तित्व और एकता का प्रमाण हैं। इसके अलावा, वह वही हैं जिन्होंने अपने शब्दों में और अन्य सभी प्राणियों के शब्दों में इस सत्य की घोषणा की। अब हम 15 मुख्य बातों में बताते हैं कि यह प्रमाण कितना स्पष्ट, सच्चा और सत्य है।

पहला आवश्यक: जो व्यक्ति वचन, कर्म और आचरण में ब्रह्माण्ड के निर्माता का प्रमाण देता है, वह सत्यवादी है और सृष्टि के सत्यों द्वारा पुष्ट होता है, क्योंकि सभी प्राणी ईश्वर की एकता के प्रमाण होने के कारण, इस एकता की घोषणा करने वाले की पुष्टि करते हैं। इसलिए सारी सृष्टि उसके उद्देश्य का समर्थन करती है। उसका उद्देश्य भी सत्य है क्योंकि उसकी घोषणा, जिसमें मुख्य रूप से ईश्वरीय एकता शामिल है, पूर्ण पूर्णता और शाश्वत सुख के शुद्ध आशीर्वाद को दर्शाती है, और सभी सार्वभौमिक सत्यों की सुंदरता और पूर्णता के साथ पूर्ण सामंजस्य में है। इसे देखते हुए, ईश्वर का दूत ईश्वरीय एकता और शाश्वत सुख का एक स्पष्ट और सत्य प्रमाण है, और सारी सृष्टि उसकी सत्यता की पुष्टि करती है।

दूसरा ज़रूरी: चूँकि इस सच्चे और प्रमाणित प्रमाण में हज़ारों चमत्कार हैं जो सभी दूसरे पैगम्बरों से बेहतर हैं, साथ ही एक शाश्वत पवित्र कानून और मानवता और जिन्न को शामिल करने वाला संदेश भी है, इसलिए वह सभी पैगम्बरों का मुखिया है। इस वजह से, उनके सभी चमत्कारों का सार और उनकी सर्वसम्मत पुष्टि उसके पास है। दूसरे शब्दों में, सभी दूसरे पैगम्बर एक ही मान्यता पर सहमत हैं, और उनके चमत्कार उसकी ईमानदारी और सच्चाई का समर्थन करते हैं।

इसके साथ ही, वह सभी संतों के साथ-साथ पवित्रता और गहन ज्ञान वाले सभी लोगों का गुरु और नेता है, जिन्होंने उसकी शिक्षा, मार्गदर्शन और पवित्र कानून (शरिया) के माध्यम से पूर्णता प्राप्त की है। इस प्रकार उनके चमत्कारों और सर्वसम्मत पुष्टि का मूल उसके पास है, साथ ही उनके सत्यापित निष्कर्षों की ताकत भी। चूँकि उसने सत्य तक पहुँचने के लिए उनके द्वारा अपनाए गए मार्ग को खोला है - और खुला रखता है - इसलिए उनके सभी चमत्कार, निष्कर्ष और एक ही विश्वास पर आम सहमति उसकी सत्यनिष्ठा का समर्थन करती है। ईश्वर की एकता का यह प्रमाण, जैसा कि सभी पिछली निशानियों में दिखाया गया है, ऐसे निश्चित, स्पष्ट और निश्चित चमत्कार और अद्भुत इर्शासत को समाहित करता है कि, उसकी नबूवत के अन्य सबूतों के साथ, उनकी पुष्टि पर विवाद नहीं किया जा सकता है।

तीसरा आवश्यक: परमेश्वर की एकता का यह संदेशवाहक, जिसके पास इतने सारे स्पष्ट चमत्कार हैं, और अनन्त खुशी का शुभ समाचार लाने वाला, ऐसा है
उनके धन्य अस्तित्व में ऐसे उत्कृष्ट गुण थे, उनके धर्मोपदेश में ऐसे उत्कृष्ट गुण थे, तथा धर्म और पवित्र कानून में ऐसे बहुमूल्य गुण थे कि वे
उन्होंने ऐसा उपदेश दिया कि उनके कट्टर दुश्मन भी उन्हें स्वीकार करते थे। चूँकि उनके व्यक्तित्व, कार्य और धर्म में सबसे प्रशंसनीय गुण समाहित हैं,
वह सभी सिद्धियों का मूर्त रूप, स्वामी और प्रतिनिधि है,
सृष्टि में पाए जाने वाले प्रशंसनीय गुण। यह उत्तम अवस्था जो उसने अपने जीवन में प्राप्त की
अस्तित्व, कार्य और धर्म उसकी ईमानदारी का एक मजबूत सबूत और समर्थन है
और सत्यता ऐसी कि उसे हिलाया नहीं जा सकता।

चौथा सार: ईश्वर की एकता और शाश्वत सुख का यह संदेशवाहक, सभी सिद्धियों का स्रोत और सर्वोच्च नैतिकता का शिक्षक, बोलता है
केवल वही जो प्रकट किया गया है और जो उसे उसके शाश्वत गुरु द्वारा बोलना सिखाया गया है।
ऐसा इसलिए है क्योंकि, जैसा कि पिछले संकेतों में आंशिक रूप से समझाया गया है, ब्रह्मांड का निर्माता
उन्हें उनकी पैगम्बरी होने के हजारों प्रमाण प्रदान किये और यह दर्शाया कि
वह उसकी ओर से बोलता है और अपना संदेश संप्रेषित करता है। दूसरा,
कुरान के 40 चमत्कारी पहलू बताते हैं कि पैगंबर सर्वशक्तिमान के हैं।
दुभाषिया।

तीसरा, उसकी पूर्ण ईमानदारी, धार्मिकता, गंभीरता, विश्वसनीयता, तथा अन्य सभी कार्य और स्थितियाँ दर्शाती हैं कि वह केवल अपने ही बारे में बोलता है।
सृष्टिकर्ता की ओर से। चौथा, सत्य के सभी लोग जिन्होंने उसकी बात सुनी है, पुष्टि करते हैं,
गहन अध्ययन और प्रेरित खोज के माध्यम से, और सच्चे ज्ञान की निश्चितता के साथ विश्वास करें कि वह अपने अधिकार से नहीं बोलता है; बल्कि,
ब्रह्माण्ड का रचयिता उसे सिखाता है और जो उसने सिखाया है उसे बोलने के लिए बाध्य करता है
अब तक इन आवश्यक बातों में जो साक्ष्य प्रस्तुत किए गए हैं, उन्हें जब एक साथ जोड़ दिया जाता है, तो यह उनकी ईमानदारी और सच्चाई के लिए एक बहुत मजबूत समर्थन है।

पाँचवाँ सार: परमेश्वर के शाश्वत वचन का यह व्याख्याता आत्माओं को देखता है,
फ़रिश्तों से बातचीत करता है और इंसानों और जिन्न दोनों को राह दिखाता है। वह इंसानों और जिन्न, निराकार निवास के निवासियों और फ़रिश्तों को सिखाता है, यह दिखाते हुए कि
इन निवासों से परे के क्षेत्रों तक उसकी पहुंच है और उनके साथ उसके संबंध हैं।
ऊपर बताए गए चमत्कार और उनका जीवन ही इस बात को प्रमाणित करता है।
इसलिए, अदृश्य भविष्यवक्ताओं की बातों से मेल नहीं खाता। किसी व्यक्ति, जिन्न, आत्मा या फ़रिश्ते (जिब्राईल को छोड़कर) को उसकी रिपोर्ट में कोई अधिकार नहीं है। और बहुत से लोग हैं जो भविष्यवक्ताओं की रिपोर्ट में कोई भूमिका नहीं रखते।
कई बार ऐसा भी होता है जब गेब्रियल भी उससे पीछे रह जाता है।

छठा सार: फ़रिश्तों, मानवता और जिन्न का स्वामी वृक्ष है
सृष्टि का सबसे उत्तम और सबसे उज्ज्वल फल, ईश्वर की कृपा का मूर्त रूप

करुणा, प्रभु के प्रेम का प्रतिबिम्ब, प्रभु के प्रेम का सबसे शानदार प्रमाण
सर्वशक्तिमान, सत्य का सबसे उज्ज्वल प्रकाश, ब्रह्मांड के गुप्त सत्यों की कुंजी,
सृष्टि के रहस्य को प्रकट करने वाले, सृष्टि के दिव्य उद्देश्य को बताने वाले, ईश्वर की प्रभुता के उद्घोषक, उनकी सुन्दर कला का वर्णन करने वाले,
और, अपनी व्यापक क्षमताओं के कारण, सबसे उत्कृष्ट उदाहरण
सृष्टि की समस्त परिपूर्णताएँ।

ऐसे चरित्र गुण, उनके आध्यात्मिक व्यक्तित्व के साथ, स्पष्ट रूप से दर्शाते हैं
यह प्रदर्शित करें कि वह ब्रह्मांड के निर्माण का अंतिम कारण है या,
दूसरे शब्दों में कहें तो सृष्टिकर्ता ने अपने तरीके से ब्रह्माण्ड की रचना की है।
यह तर्क दिया जा सकता है कि यदि ईश्वर ने उसे नहीं बनाया होता, तो वह उसे नहीं बनाता
ब्रह्मांड। निश्चित रूप से, कुरान की सच्चाई और विश्वास का प्रकाश है कि वह
मानवता और जिन्न के लिए लाए गए, साथ ही उनके अस्तित्व में देखे गए सबसे उत्कृष्ट गुण और शानदार सिद्धियां, इस तर्क के स्पष्ट प्रमाण हैं-
उल्लेख.

सातवीं आवश्यक बात: यह “सत्य का प्रमाण” (अल-हक़) और “ईश्वर का प्रकाश” है।
सत्य" ऐसा धर्म और पवित्र कानून प्रदान करता है जिसमें दोनों दुनिया में खुशी हासिल करने के सभी सिद्धांत शामिल हैं। वे ब्रह्मांड के सत्य और कार्यों के साथ-साथ ब्रह्मांड के निर्माता के नामों और नामों को पूरी तरह से समझाते हैं।
विशेषताएँ: इस्लाम और उसके पवित्र कानून इतने परिपूर्ण और व्यापक हैं, और
ब्रह्मांड और उसके निर्माता का इस तरह से वर्णन करें, कि जो कोई भी प्रतिबिंबित करता है
इस्लाम मानता है कि यह उस ईश्वर की घोषणा है जिसने इस सुन्दर ब्रह्माण्ड को बनाया है, तथा यह ब्रह्माण्ड और उसके निर्माता का वर्णन करता है।

एक भव्य महल की तरह जो अपने वास्तुकार की कुशलता को दर्शाता है, तथा वास्तुकार द्वारा लिखी गई पुस्तिका ताकि अन्य लोग उसे बेहतर तरीके से जान सकें, धर्म भी उसी प्रकार है।
और पैगंबर मुहम्मद द्वारा प्रचारित पवित्र कानून को प्रदर्शित करते हैं,
उनकी व्यापकता, उदात्तता और सच्चाई, कि वे द्वारा डिज़ाइन किए गए हैं
वही सत्ता जिसने ब्रह्माण्ड का निर्माण किया और उसका प्रबंधन करना जारी रखा है।
ब्रह्माण्ड की उत्तम व्यवस्था के लिए इस्लाम की सबसे सुन्दर व्यवस्था की आवश्यकता है।
चेतन प्राणियों के दायरे में अभिव्यक्ति।

आठवां आवश्यक: इन गुणों से प्रतिष्ठित और समर्थित
सबसे अडिग प्रमाणों के साथ, पैगम्बर मुहम्मद ने अपना संदेश घोषित किया
मानवता और जिन्न, अदृश्य के नाम पर, सभी लोगों के लिए समय की परवाह किए बिना
और, उसकी आवाज़ इतनी मजबूत है कि वे सभी उसे सुनेंगे और सुनते भी हैं,
जैसा हम करते हैं.

नौवीं आवश्यक बात: उनका भाषण इतना प्रभावी और तीक्ष्ण होता है कि लोग-
हर समय लोग उसे सुनते हैं, और उसकी आवाज हर शताब्दी में गूंजती है।

दसवीं आवश्यक बात: उनके तरीके से पता चलता है कि वह जो देखते हैं, वही बताते हैं, क्योंकि सबसे खतरनाक समय में भी वह अत्यंत विश्वास और आश्वासन के साथ बोलते हैं और दुनिया को चुनौती देते हैं।

ग्यारहवीं आवश्यक बात: वह इतनी प्रबलता से तथा अपने हृदय की गहराई से पुकारता है कि संसार का आधा भाग तथा समस्त मनुष्यों का पाँचवाँ भाग कुरान की पुकार पर कान लगाता है तथा आज्ञाकारी होकर उसके अधीन हो जाता है।

बारहवीं अनिवार्य बात: वह इतनी ईमानदारी से आमंत्रित करता है, और इतनी मौलिकता से मार्गदर्शन और प्रशिक्षण देता है, कि वह अपने सिद्धांतों को सभी समय और स्थानों पर स्थायी, कभी न मिटने वाले निशान के रूप में छोड़ जाता है।

तेरहवीं ज़रूरी बात: जो आज्ञाएँ वे देते हैं, उनकी सच्चाई पर उनका भरोसा और विश्वास इतना ज़्यादा है कि वे कभी भी उनमें से किसी एक को वापस नहीं लेंगे या उस पर पछतावा नहीं करेंगे, चाहे पूरी दुनिया उनके खिलाफ़ एकजुट क्यों न हो जाए। उनके जीवन का हर उदाहरण इस बात का गवाह है।

चौदहवाँ आवश्यक: वह इतने दृढ़ विश्वास और निश्चय के साथ पुकारता है कि वह किसी का ऋणी नहीं होता और परिस्थिति चाहे जो भी हो, वह किसी भी प्रकार की चिंता नहीं करता। अत्यंत ईमानदारी और ईमानदारी के साथ, और बिना किसी हिचकिचाहट के, वह दूसरों को जो बताता है उसे स्वीकार करने और उसका पालन करने वाला पहला व्यक्ति होता है। उसकी धर्मपरायणता और संतोष, साथ ही दुनिया के क्षणभंगुर आकर्षणों के प्रति उसका तिरस्कार, इस तथ्य को साबित करता है जो दोस्त और दुश्मन दोनों को समान रूप से पता है।

पंद्रहवीं ज़रूरी बात: वह इस्लाम का पालन करने, अपने निर्माता की पूजा करने और धार्मिक निषेधों का पालन करने में सबसे आगे है। इससे साबित होता है कि वह अनंत काल के शासक का दूत, उद्घोषक और सबसे ईमानदार सेवक है, साथ ही उसके शाश्वत वचन का व्याख्याकार भी है।

इन 15 आवश्यक बातों से, हम यह निष्कर्ष निकालते हैं कि इस व्यक्ति ने, जो ऊपर वर्णित गुणों से विख्यात था, अपना जीवन एक सिद्धांत के लिए समर्पित कर दिया और लगातार इसकी घोषणा की: "ईश्वर के अलावा कोई देवता नहीं है," और इस प्रकार ईश्वर की पूर्ण एकता की घोषणा की।

> हे ईश्वर, उसे और उसके परिवार को शांति प्रदान कर तथा उसकी कौम के लोगों के अच्छे कर्मों के अनुसार आशीर्वाद प्रदान कर। तेरी महिमा है, हमें कोई ज्ञान नहीं है सिवाय उस ज्ञान के जो तूने हमें सिखाया है। तू ही सर्वज्ञ, अत्यन्त तत्वदर्शी है।

परिशिष्ट 1

पैगम्बर की महानता के बारे में आगे की टिप्पणियाँ

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

पहली बूंद: तीन महान और सार्वभौमिक चीजें हमें हमारे भगवान से परिचित कराती हैं: ब्रह्मांड की पुस्तक (जिसका अन्यत्र वर्णन किया गया है), पैगंबरों की मुहर (ब्रह्मांड की सर्वोच्च निशानी की पुस्तक) और कुरान। अब हमें पैगंबरों की मुहर को पहचानना और सुनना चाहिए, जो ईश्वर के सभी नामों और गुणों, उसके अस्तित्व और एकता के साथ उसका स्पष्ट प्रमाण और उद्घोषक है।

उस शानदार प्रमाण के सार्वभौमिक व्यक्तित्व को देखें: पृथ्वी की सतह उसकी मस्जिद है, मक्का उसका मिहराब (प्रार्थना स्थल) है, और मदीना उसका उपदेशक है।
हमारे पैगंबर सभी विश्वासियों के नेता, सभी मानवता के उपदेशक, सभी पैगंबरों के प्रमुख, सभी संतों के स्वामी और सभी पैगंबरों और संतों से मिलकर बने एक मंडली के ईश्वर की याद में नेता हैं। सभी पैगंबरों को अपनी जड़ों के रूप में और सभी संतों को अपने सदाबहार फलों के रूप में रखते हुए, वह एक उज्ज्वल वृक्ष हैं। सभी पैगंबर, अपने चमत्कारों के सहारे, और सभी संत, अपने चमत्कारों पर भरोसा करते हुए, उनके इस दावे की पुष्टि और पुष्टि करते हैं कि "ईश्वर के अलावा कोई देवता नहीं है।" अतीत और भविष्य में ईश्वर के नामों के सभी प्रतिष्ठित वाचक इन शब्दों को एक स्वर में दोहराते हैं, मानो कह रहे हों: "आप सच बोलते हैं, और आप जो कहते हैं वह सही है!" ऐसे अनगिनत समर्थनों द्वारा पुष्टि किए गए तर्क को कौन सा भ्रम झुठला सकता है?

दूसरी बूंद: जिस प्रकार सभी पैगम्बरों और संतों की सर्वसम्मति और एकमतता ईश्वरीय एकता के इस उज्ज्वल प्रमाण की पुष्टि करती है, उसी प्रकार पवित्र आत्मा के पवित्र आत्मा में सैकड़ों चिन्ह हैं।

प्रकट किए गए धर्मग्रंथ (जैसे, टोरा और गॉस्पेल), उनके पैगम्बर होने के हजारों संकेत जो उनके मिशन से पहले सामने आए, प्रसिद्ध रिपोर्टें
अदृश्य से आती आवाज़ें, भविष्यवक्ताओं की सर्वसम्मत गवाही, हज़ारों
चमत्कार, और उसके शरिया का न्याय और सत्य - सभी उसकी पुष्टि और पुष्टि करते हैं। इसी तरह, उसके प्रशंसनीय गुणों की पूर्णता, अपने मिशन में उसका पूरा भरोसा, इसकी पूर्ति के संबंध में उसके सबसे उत्कृष्ट गुण, और ईश्वर, पूजा, शांति और दृढ़ता के प्रति उसका असाधारण भय -

ये सभी बातें उसके विश्वास की मजबूती को दर्शाती हैं। इसके अलावा, उसकी पूरी निश्चितता और पूर्ण दृढ़ता से उनके दावे की निर्विवाद सच्चाई स्पष्ट रूप से दिखती है।

तीसरी बूंद: हमारी कल्पना में, चलो अरब में चलते हैं
एज ऑफ हैप्पीनेस में जाकर उनसे मिलें, जब वह अपना मिशन पूरा कर रहे हों। देखिए!
हम एक व्यक्ति को उसके चरित्र की उत्कृष्टता और उसके रूप की उत्कृष्टता से प्रतिष्ठित देखते हैं
सुंदरता। वह एक चमत्कारी पुस्तक रखता है और सच्चा प्रवचन करता है। वह
मानवता, जिन्न, फ़रिश्तों - बल्कि सभी प्राणियों के लिए एक शाश्वत उपदेश देता है।
वह विश्व की रचना के रहस्य को सुलझाता है और उसकी व्याख्या करता है, खोज करता है और
ब्रह्मांड के जटिल रहस्य को सुलझाता है, और सभी प्राणियों द्वारा लगातार पूछे जाने वाले और भ्रमित करने वाले प्रश्नों के ठोस और संतोषजनक उत्तर प्रदान करता है
मन: मैं कौन हूँ? मेरे जीवन का उद्देश्य क्या है? मैं कहाँ से आया हूँ?
मैं कहां जा रहा हूं? मेरा अंतिम गंतव्य क्या है?

चौथी बूंद: देखो! वह सत्य का ऐसा प्रकाश फैलाता है कि, यदि तुम
उसके मार्गदर्शन के प्रकाश के बिना ब्रह्मांड को देखो, आप इसे एक स्थान के रूप में देखते हैं
शोक की, उन प्राणियों की जो एक दूसरे के लिए पराए या शत्रुतापूर्ण हैं, निर्जीव प्राणियों की जो भयानक लाशें हैं, और जीवित प्राणियों की जो अनाथ हैं
मौत और जुदाई के आघातों के नीचे रोते हुए। लेकिन वह जो प्रकाश फैलाता है
सार्वभौमिक शोक के उस स्थान को प्रार्थना के स्थान में परिवर्तित कर देता है जहाँ
भगवान के नाम और स्तुति का पाठ खुशी और परमानंद में किया जाता है। वे विदेशी, शत्रुतापूर्ण
प्राणी मित्र और भाई-बहन हैं। मूक, निर्जीव प्राणी मान लेते हैं
परिचित, आज्ञाकारी अधिकारियों और विनम्र सेवकों का रूप। रोते, शिकायत करते अनाथ बच्चे अपने जीवन में भगवान के नाम और स्तुति का पाठ करते हैं और
अपनी मृत्यु के माध्यम से अपने कर्तव्यों से मुक्त होने के लिए धन्यवाद अर्पित करें।

पांचवी बूंद: पुनः, इस प्रकाश के माध्यम से, ब्रह्मांड की गति, विविधताएं, परिवर्तन और रूपांतरण अब निरर्थक नहीं माने जाते हैं।
और व्यर्थ के संयोग के खिलौने हैं, लेकिन अपने वास्तविक रूप और कार्य में प्रकट होते हैं:
ब्रह्माण्ड के स्वामी के संदेश, सृजन के चिन्हों से अंकित एक पृष्ठ,
भगवान के नामों को प्रतिबिंबित करने वाला एक दर्पण। दुनिया को खुद एक किताब के रूप में दिखाया गया है
सभी की अनंत-प्रार्थना की गई बुद्धि। इस प्रकाश के बिना, हमारी असीम

कमज़ोरी, लाचारी, गरीबी और ज़रूरतें हमें नीचे गिरा देती हैं
और फिर हमारी बुद्धि हमें दुःख, पीड़ा और चिंता पहुँचाकर हमें और भी दुखी बना देती है।

लेकिन जब यह प्रकाश हमें प्रकाशित करता है, तो हम सभी जानवरों और प्राणियों से ऊपर उठ जाते हैं, और हमारी गरीबी और लाचारी अनंत धन का साधन बन जाती है
ईश्वर पर निर्भरता से हम शक्ति और शक्ति प्राप्त करते हैं। हम ईश्वर होने के स्तर तक पहुँच जाते हैं।
विनती करके हम प्रिय सम्राट बन जाते हैं, और विलाप करके हम प्रिय सम्राट बन जाते हैं
पृथ्वी का प्रतिनिधि। दूसरे शब्दों में, केवल यह प्रकाश ही ब्रह्मांड को रोकता है,
मानवता और सभी चीज़ों को शून्य में तब्दील होने से बचाने वाला व्यक्ति। ऐसा व्यक्ति
ऐसे अद्भुत ब्रह्मांड में आवश्यक है, क्योंकि उसके बिना ऐसा नहीं होगा
ब्रह्माण्ड और सभी संसारों के अस्तित्व की कोई आवश्यकता नहीं है।

छठी बूंद: यह प्राणी अनंत सुख की शुभ सूचना देता है। वह ईश्वर की असीम दया का अनावरण और घोषणा करता है, देखता है और
प्रभु की संप्रभुता के राज्य की सुन्दरता का बखान करता है, और प्रकट करता है
और दिव्य नामों के खजाने को प्रदर्शित करता है। यदि आप उसे एक समर्पित व्यक्ति के रूप में देखते हैं
ईश्वर के उपासक के रूप में, आप उन्हें प्रेम का आदर्श और दया की प्रतिमूर्ति, साथ ही मानवता का गौरव और सृष्टि का वृक्ष देखेंगे।
सबसे शानदार फल। यदि आप उसे एक दूत के रूप में देखते हैं, तो आप उसे देखेंगे
ईश्वर का प्रमाण, सत्य का दीपक, मार्गदर्शन का सूर्य और सुख का साधन बनो। देखो! उसकी ज्योति पूर्व से पश्चिम तक चमकती हुई बिजली की तरह चमक रही है,
और आधी दुनिया और मानवता के पांचवें हिस्से ने उनके मार्गदर्शन को स्वीकार कर लिया है
और इसे अपने जीवन की तरह सुरक्षित रखा। तो फिर हमारे दुष्ट-आदेश देने वाले स्वभाव और
क्या शैतान अपने मिशन के सार, "ईश्वर के अलावा कोई देवता नहीं है" को स्वीकार नहीं करता?

सातवीं बूंद: विचार करें कि कैसे उसने अपने लोगों की बुराई और बर्बर रीति-रिवाजों और अनैतिक गुणों के प्रति गहरी आसक्ति को मिटा दिया; उन्हें सुसज्जित और सुसज्जित किया
उसके हताश, जंगली और अडिग लोगों को सभी प्रशंसनीय गुणों से युक्त; और
उन्हें दुनिया का शिक्षक और स्वामी बनाया, खासकर "सभ्य" लोगों के लिए
राष्ट्रों पर उसका प्रभुत्व बाहरी नहीं था; बल्कि, उसने उनके मन, आत्मा, हृदय और आत्माओं पर विजय प्राप्त की और उन्हें अपने अधीन कर लिया। वह दिलों का प्रिय बन गया,
मन का शिक्षक, आत्माओं का प्रशिक्षक, और आत्माओं का शासक।

आठवीं बूंद: धूम्रपान जैसी छोटी सी आदत को एक छोटे से समुदाय से स्थायी रूप से केवल एक शक्तिशाली शासक द्वारा और महान प्रयास से ही हटाया जा सकता है।
लेकिन देखिए कि कैसे इस आदमी ने बड़ी जल्दी से बड़ी संख्या में लोगों की जमी हुई आदतों को खत्म कर दिया।
जुनूनी समुदाय जिनके पास बाहरी शक्ति और प्रयास बहुत कम हैं, और फिर
उन्हें उच्च गुणों से प्रतिस्थापित किया जो उनके अस्तित्व में अंतर्निहित हो गए।
ऐसे और भी कई चमत्कारी काम किए हैं। जो लोग देखने से इनकार करते हैं

उस धन्य समय की गवाही, हम उन्हें अरब की वर्तमान वास्तविकता के साथ चुनौती देते हैं। उन्हें सैकड़ों दार्शनिकों, शिक्षाविदों, समाजशास्त्रियों और मनोवैज्ञानिकों के साथ एक सदी तक वहाँ जाने दें और देखें कि क्या वे कर सकते हैं

पैगम्बर ने एक वर्ष में जो हासिल किया, उसका सौवां हिस्सा भी हासिल नहीं कर सकते।

नौवीं बूंद: एक महत्वहीन व्यक्ति अपने बारे में जानकारी दिए बिना लोगों के समूह से किसी महत्वहीन बात पर झूठ नहीं बोल सकता।
चिंता या बेचैनी के माध्यम से। और फिर भी यह व्यक्ति, संदेशवाहक के नाम पर एक बहुत बड़ा कार्य करते हुए और उसके खिलाफ सुरक्षा की आवश्यकता रखते हुए
दुश्मनों से लड़ते हुए, बड़ी सभाओं के सामने आसानी से महान कारणों के बारे में बोलते हैं (और
पूरे इतिहास को बिना किसी चिंता या झिझक के पढ़ सकते हैं। इसके अलावा, वह जो भी इतनी शुद्ध ईमानदारी और ईमानदारी से घोषणा करते हैं, उसमें कोई विरोधाभास नहीं पाया जा सकता है।
बहुत गंभीरता से काम करता है। इसके अलावा, वह ऐसा इतने तीव्र, ऊंचे तरीके से करता है कि वह अपने दुश्मनों को परेशान कर देता है। कोई धोखा कैसे हो सकता है?
वह जो कुछ कहता है, वह कुछ और नहीं बल्कि रहस्योद्घाटन है। सत्य को उजागर नहीं किया जा सकता
भ्रामक है, और जो इसे देखता है वह धोखा नहीं खा सकता। उसका मार्ग, जो शुद्ध है
सत्य है, इसमें कोई छल नहीं है।

दसवीं बूंद: उन जिज्ञासा-उत्तेजक, आकर्षक, आवश्यक और विस्मयकारी सत्यों पर विचार करें जिन्हें वह दिखाता है और उन बातों पर विचार करें जिन्हें वह साबित करता है।
लोग जिज्ञासु होते हैं। मान लीजिए कोई कहता है: "यदि आप अपनी आधी संपत्ति दान कर दें, तो मंगल या बृहस्पति से कोई आकर आपको इसके बारे में बताएगा, साथ ही
अपने भविष्य के बारे में सोचो और यह भी कि तुम्हारे साथ क्या घटित होगा।" यदि तुममें जरा भी जिज्ञासा है,
आप जैसा कहा जाएगा वैसा ही करेंगे। लेकिन यह व्यक्ति दूसरी बातें करता है:
हे प्रभु, जिसके राज्य में चंद्रमा एक मक्खी की तरह पतंगे (पृथ्वी) के चारों ओर उड़ता है,
और पतंगा एक दीपक (सूर्य) के चारों ओर फड़फड़ाता है, जो हजारों में से सिर्फ एक है
सम्राट के अनगिनत अतिथिगृहों में से एक में दीपों की रोशनी। साथ ही, वह इतनी अद्भुत दुनिया के बारे में सच बोलता है और ऐसी क्रांति की भविष्यवाणी करता है जो कभी नहीं होगी
अगर धरती बम होती और फट जाती तो कितना अजीब होता। सुनिए वह कौन सी सूरह पढ़ता है,
जो इस प्रकार शुरू होते हैं:

> जब सूर्य मुड़ा हुआ होगा। (81:1)
>
> जब आकाश फट जायेगा (82:1)
>
> (वह दिन) शोरगुल और कोलाहल का दिन है। (101:1)

वह ऐसे भविष्य के बारे में इतनी सच्चाई से बात करता है कि, इसके संबंध में, इस में भविष्य
दुनिया एक तुच्छ मृगतृष्णा की तरह है। वह हमें ऐसी खुशी की इतनी गंभीरता से सूचना देता है
कि समस्त सांसारिक सुख शाश्वत सूर्य की तुलना में बिजली की चमक के समान हैं।

ग्यारहवीं बूंद: ब्रह्मांड के स्पष्ट आवरण के नीचे ऐसे चमत्कार हमारी प्रतीक्षा कर रहे हैं। हमें इन चमत्कारों को हमें बताने और समझाने के लिए एक अद्भुत और चमत्कार करने वाले व्यक्ति की आवश्यकता है। उसका आचरण साबित करता है कि उसने उन्हें देखा है - और देखता है - और वह हमें बताता है कि उसने क्या देखा है। वह हमें सिखाता है कि उन स्वर्गों और पृथ्वी का एकमात्र ईश्वर, जो हमें अपनी कृपाओं से पोषित करता है, हमसे क्या चाहता है और हम उसे कैसे प्रसन्न कर सकते हैं। जबकि हमें सब कुछ छोड़कर उस व्यक्ति के पास भागना चाहिए और फिर उसकी बात माननी चाहिए जो हमें इन और कई अन्य आवश्यक और जिज्ञासा जगाने वाली चीजों के बारे में निर्देश देता है, अधिकांश लोग इतने बहरे और अंधे हैं - यहाँ तक कि पागल भी - कि वे इस सत्य को नहीं देख, सुन या समझ सकते हैं।

बारहवीं बूंद: सभी प्राणियों के रचयिता की एकता का स्पष्ट प्रमाण और सच्चा प्रमाण होने के साथ-साथ यह व्यक्ति पुनरुत्थान और शाश्वत सुख का निर्णायक प्रमाण और स्पष्ट प्रमाण है। यह देखते हुए कि वह अपने मार्गदर्शन के माध्यम से शाश्वत सुख प्राप्त करने का कारण है, वह इसके अस्तित्व का कारण है और अपनी प्रार्थनाओं और प्रार्थनाओं के माध्यम से इसके निर्माण का साधन है।

देखिए! इस सर्वोच्च प्रार्थना के दौरान प्रार्थना करते समय ऐसा लगता है मानो अरब - यहाँ तक कि पृथ्वी भी - उनकी शानदार उपस्थिति के माध्यम से प्रार्थना करती है और अपनी याचिका करती है। वह इतनी विशाल मण्डली के बीच प्रार्थना करते हैं कि ऐसा लगता है मानो आदम के समय से लेकर समय के अंत तक पूर्णता के सभी शानदार लोग उनका अनुसरण कर रहे हैं और उनकी प्रार्थनाओं पर "आमीन" कह रहे हैं। वह इतनी सार्वभौमिक आवश्यकता के लिए प्रार्थना करते हैं कि पृथ्वी और स्वर्ग के निवासी, वास्तव में सभी प्राणी, उनकी प्रार्थना में शामिल होते हैं, यह घोषणा करते हुए: "हाँ, हे स्वामी, हमें वह प्रदान करें, क्योंकि हम भी इसकी इच्छा रखते हैं।"

वह इतनी आवश्यकता और दु:ख के साथ, तथा इतने प्रेम, लालसा और विनती भरे अंदाज में प्रार्थना करता है कि वह ब्रह्माण्ड को आँसू बहाने पर मजबूर कर देता है और उसे अपनी प्रार्थना में शामिल होने के लिए मजबूर कर देता है।

और देखो! जिस लक्ष्य और उद्देश्य के लिए वह प्रार्थना करता है, वह मानवता और दुनिया को, यहाँ तक कि पूरी सृष्टि को, अपमान, मूल्यहीनता और बेकारपन के सबसे निचले स्तर से ऊपर उठाकर मूल्य, स्थायित्व और उत्कृष्ट कर्तव्यों के उच्चतम स्तर पर ले जाता है। वह इतने ऊंचे और मदद चाहने वाले, इतने मधुर और दया-याचना वाले तरीके से प्रार्थना और निवेदन करता है, कि ऐसा लगता है मानो वह सभी प्राणियों और स्वर्ग और अनुग्रह के दिव्य सिंहासन को सुनने के लिए मजबूर कर रहा है।

और फिर, उन्हें परमानंद में लाते हुए, वह उनसे कहलवाता है: “आमीन, हे परमेश्वर, आमीन!”

वह अपनी आवश्यकताओं की भीख ऐसे शक्तिशाली, सर्वश्रुत और सर्वज्ञ सत्ता से मांगता है।
वह इतना दयालु, सर्वज्ञ, सर्वदर्शी है कि वह प्राणी सबसे गुप्त प्राणी की गुप्त आवश्यकता को देखता है, सुनता है और उसे स्वीकार करता है।

वह विनती करता है और उस पर दया करता है। वह इसकी ज़रूरतें पूरी करता है, भले ही यह प्राणी अपने स्वभाव की जीभ से मांगता है, और उसे इस प्रकार बुद्धिमानी से देता है,
देखने वाला, और दयालु रूप है कि इसमें कोई संदेह नहीं है कि केवल एक सर्व-श्रवण और सर्व-देखने वाला, एक सर्व-उदार और सर्व-करुणामय है
ऐसा कर सकते हैं.

तेरहवीं बूँद: क्या चाहता है वह, मानवता का यह अभिमान,
यह अद्वितीय प्राणी और सभी प्राणियों की महिमा, जो अपने पीछे सभी श्रेष्ठ लोगों के साथ और हाथ ऊपर उठाकर प्रार्थना के लिए खड़ा है? वह शाश्वत की तलाश कर रहा है
खुशी, अनंत जीवन, ईश्वर से मुलाकात और स्वर्ग। वह ये सब चाहता है
दिव्य नामों के माध्यम से, जो अपनी सुंदरता और संचालन को प्रदर्शित करते हैं
प्राणियों के दर्पण। यहां तक कि उनकी एक प्रार्थना भी, यदि दया, कृपा, बुद्धि और न्याय जैसे असंख्य कारणों से उस अनुरोध को पूरा न करती,
स्वर्ग का निर्माण करने के लिए पर्याप्त है, जो दिव्य शक्ति के लिए बनाना जितना आसान है
वसंत। जिस तरह उनके संदेशवाहक ने परीक्षण का यह स्थान खोला, उनकी पूजा और
परमेश्वर की सेवा करने से अगली दुनिया का रास्ता खुल गया।

मुझे आश्चर्य है कि ब्रह्माण्ड का उत्तम क्रम, जिसके कारण बुद्धिमान और चिंतनशील लोग कहते हैं कि कोई भी "नया" ब्रह्माण्ड अधिक मौलिक और अद्भुत नहीं हो सकता, साथ ही साथ उसकी दया की कला और उसकी महारथ की निर्दोष सुंदरता भी, कैसे एक दूसरे से अलग हो सकती है?
अतुलनीय सुंदरता, कुरूपता, निर्दयता और
पैगम्बर की प्रार्थना को स्वीकार न करके तथा स्वर्ग का निर्माण न करके अव्यवस्था फैलाई जा रही है।
आश्चर्य है कि वह सबसे महत्वपूर्ण और आवश्यक इच्छाओं को कैसे अस्वीकार कर सकता है
और सबसे तुच्छ इच्छाओं को संतुष्ट करना। ऐसा करना असंभव है!

तो, मेरे काल्पनिक दोस्त, चलो वापस चलते हैं। भले ही हम 100 साल तक रहें, हम
हम उनके अद्भुत और उल्लेखनीय कार्यों का सौवां हिस्सा भी पूरी तरह से नहीं समझ पाए। हम उन्हें देखते-देखते कभी नहीं थकेंगे। अपनी वापसी के दौरान, हम
प्रत्येक शताब्दी को देखें कि कैसे प्रत्येक शताब्दी प्रवाह के माध्यम से पूरी तरह से खिल गई है
मार्गदर्शन के उस सूर्य से प्राप्त प्रकाश, और उससे कैसे हजारों परिणाम प्राप्त हुए
अबू हनीफा, शफ़ीई, बायज़िद अल-बिस्तामी, 'अब्द अल-कादिर अल-जिलानी, शाह नक्शबंद, इमाम ग़ज़ाली और इमाम रब्बानी जैसे शानदार फल।

अपने अवलोकनों के विवरण को स्थगित करते हुए, हमें आशीर्वाद का आह्वान करना चाहिए
उस चमत्कार करने वाले और मार्गदर्शन लाने वाले पर जो उसके कुछ कार्यों का उल्लेख करता है
कुछ चमत्कार:

> उनपर - हमारे स्वामी मुहम्मद पर - जिनकी ओर दयालु और दयावान अल्लाह ने सत्य का विवेकपूर्ण मापदंड भेजा।
>
> पवित्र क़ुरआन) सर्वशक्तिमान सिंहासन से, शांति और आशीर्वाद हो जो सब पर समान हो।
>
> उसकी क़ौम के बहुत से अच्छे कामों की क़द्र है। उस पर जिसकी पैग़म्बरी का पूर्वानुमान तौरात, इंजील और स्तोत्रों में किया गया था; जिसका पैग़म्बर-

> पैगंबर बनने से पहले चमत्कारिक घटनाओं और जिन्न, मानवता के संतों और भविष्यवक्ताओं की आवाज़ों से पैगंबर मुहम्मद की भविष्यवाणी की गई थी; और जिसके इशारे पर चाँद फट गया, उसकी कौम की साँसों की संख्या के बराबर शांति और आशीर्वाद हो।
>
> जिसके इशारे पर वृक्ष आते थे; जिसकी प्रार्थना से वर्षा होती थी; जिसे बादल गर्मी से बचाते थे; जिसने एक ही भोजन से सैकड़ों लोगों को तृप्ति मिलती थी; जिसकी उंगलियों से कौसर के झरने के समान पानी बहता था; जिसके लिए ईश्वर ने छिपकली, चिकारा, भेड़िया, ऊँट, पहाड़, चट्टान, खंभा और मिट्टी के ढेले को बोलने की शक्ति दी; जिसने स्वर्गारोहण (मेराज) किया और जिसकी आंख नहीं डगमगाई, उस पर शांति और आशीर्वाद हो, जो कुरान के अक्षरों की संख्या के बराबर हो, जो सर्वशक्तिमान की अनुमति से, हवा के दर्पणों में दर्शाए गए शब्दों में बनते हैं, जब कुरान के सभी पाठक, रहस्योद्घाटन की शुरुआत से लेकर समय के अंत तक, इसके शब्दों को पढ़ते हैं। हे ईश्वर, उन प्रत्येक आशीर्वाद के लिए हमें क्षमा कर और हम पर दया कर। आमीन।

चौदहवीं बूंद: चमत्कारों का खजाना और खुद एक सर्वोच्च चमत्कार, कुरान मुहम्मद की पैगम्बरी और ईश्वर की एकता को इतनी निर्णायक रूप से साबित करता है कि किसी और सबूत की जरूरत नहीं है। अब हम इस चमत्कार को परिभाषित करते हैं और इसकी चमत्कारिकता की एक या दो झलकियों का उल्लेख करते हैं जिन्हें कुछ लोग समझ नहीं पाए हैं।

कुरान, जो हमें हमारे मालिक से परिचित कराता है, ब्रह्मांड की महान पुस्तक का शाश्वत अनुवादक है; धरती और आकाश के पन्नों में छिपे ईश्वरीय नामों के खजानों को प्रकट करने वाला; घटनाओं की रेखाओं के नीचे छिपी सच्चाइयों की कुंजी; दयालु के उपकारों का खजाना; इस दृश्यमान दुनिया के परदे के पार अदृश्य दुनिया से आने वाले शाश्वत संबोधन; इस्लाम की आध्यात्मिक और बौद्धिक दुनिया का सूर्य; आख़िरत की दुनियाओं की नींव, योजना और नक्शा; ईश्वरीय सार, गुणों और कार्यों का व्याख्याता, स्पष्ट व्याख्याकार, स्पष्ट प्रमाण और स्पष्ट अनुवादक; मानवता का शिक्षक, प्रशिक्षक, मार्गदर्शक और नेता; और सच्ची बुद्धि। यह ज्ञान और कानून, प्रार्थना और पूजा, आदेश और आह्वान, आह्वान और ईश्वर के ज्ञान की पुस्तक है; एक ऐसी पुस्तक जिसमें मानवता की सभी आध्यात्मिक आवश्यकताओं के लिए पुस्तकें हैं, जैसे एक पवित्र पुस्तकालय जिसमें ऐसी पुस्तकें हैं जिनसे सभी संत, अत्यंत सत्यनिष्ठ लोग, तथा सभी शुद्ध और विवेकशील विद्वान अपने विशेष मार्ग प्राप्त करते हैं।

इसके दोहराव में चमत्कारिकता की झलक पर विचार करें, जिसे कुछ लोग तर्क का विषय बनाते हैं। फिर भी ऐसा दोहराव वांछनीय है, क्योंकि कुरान प्रार्थना, प्रार्थना और आह्वान की पुस्तक है। इस संदर्भ में, दोहराव-

प्रार्थना एक बहुत ही आवश्यक और सुंदर वाक्पटुता है, क्योंकि ईश्वर को पुकारने के लिए यह आवश्यक है कि कुरान दिलों को प्रभावित करने और उन्हें प्रकाशित करने में सक्षम हो। बार-बार प्रार्थना करने से, शक्ति प्राप्त होती है और दिलों में समा जाती है।

आदेशों और सम्मनों की पुष्टि और प्रवर्तन के लिए पुनः कथन की आवश्यकता होती है।

इसके अलावा, हर कोई जब चाहे तब पूरा कुरान नहीं पढ़ सकता, लेकिन आम तौर पर वह एक सूरा पढ़ सकता है। यही कारण है कि कुरान के सबसे महत्वपूर्ण उद्देश्यों को ज़्यादातर लंबे सूरों में दोहराया जाता है, जिससे हर सूरा एक छोटे कुरान की तरह बन जाता है। ईश्वरीय एकता, पुनरुत्थान और मूसा की कहानी जैसे उद्देश्यों और विषयों को दोहराया जाता है ताकि कोई भी उनके लाभों से वंचित न रहे। इसके अलावा, आध्यात्मिक स्वाद और ज़रूरतें अलग-अलग होती हैं, ठीक वैसे ही जैसे शारीरिक स्वाद और ज़रूरतें होती हैं। मानवता को हर साँस में कुछ की ज़रूरत होती है।

जिस तरह शरीर को हर पल हवा की जरूरत होती है, उसी तरह आत्मा को हू-हुवा (वह-ईश्वर) कण की जरूरत होती है। इसे हर घंटे दूसरों की जरूरत होती है, जैसे बिस्मिल्लाह (ईश्वर के नाम पर)। इसलिए बार-बार होने वाली जरूरतों से पुनरावृत्ति होती है, और इसलिए कुरान उन जरूरतों को इंगित करने, उन्हें गहराई से महसूस करने और लोगों को उन्हें संतुष्ट करने की आवश्यकता के प्रति जागरूक करने के लिए दोहराता है।

इसके अलावा कुरान संपूर्ण धर्म (इस्लाम) का संस्थापक और आधार है और इसकी दुनिया की नींव है। यह मानवता के सामाजिक जीवन को बदलने और लोगों के बार-बार उठने वाले सवालों का जवाब देने के लिए आया था। संस्थापक के लिए पुष्टि करने के लिए दोहराव आवश्यक है, और जोर देने के लिए पुनरावृत्ति आवश्यक है। कुछ नया स्थापित करने के लिए पुष्टि और मजबूती की आवश्यकता होती है, और इसलिए पुनरावृत्ति की आवश्यकता होती है।

कुरान ऐसे महत्वपूर्ण मामलों और सूक्ष्म सत्यों के बारे में बात करता है कि उन्हें लोगों के मन और दिल पर छापने के लिए अलग-अलग संदर्भों में दोहराना ज़रूरी है। वास्तव में, ऐसा दोहराव सिर्फ़ दिखावटी है, क्योंकि वास्तव में प्रत्येक शब्द के कई अर्थ, कई लाभ और कई पहलू और स्तर होते हैं। शब्द या आयत हमेशा एक अलग जगह, तरीके, संदर्भ और एक अलग अर्थ, उद्देश्य और लाभ के लिए होते हैं। कुछ ब्रह्मांड-संबंधी मामलों का उल्लेख संक्षिप्त, सांकेतिक तरीके से किया गया है। ऐसा करना कोई दोष नहीं है, जैसा कि कुछ अविश्वासी और नास्तिक दावा करते हैं, बल्कि यह चमत्कार की एक झलक है, क्योंकि कुरान मानवता का मार्गदर्शन करने के लिए आया था।

प्रश्न: कुरान में प्राणियों के बारे में विज्ञान और भौतिकवादी या प्रकृतिवादी दर्शन की तरह बात क्यों नहीं की गई है? इसमें कुछ बातों का बहुत ही संक्षिप्त रूप से उल्लेख किया गया है और अन्य बातों का स्पष्ट रूप से सरल और सतही तरीके से उल्लेख किया गया है जिसे आम लोगों के लिए समझना आसान है।

उत्तर: विज्ञान और भौतिकवादी दर्शन सत्य के मार्ग से भटक गए हैं। कुरान कोई विज्ञान की किताब नहीं है, इसलिए उसे ब्रह्मांड संबंधी मामलों पर विस्तार से बात करने की ज़रूरत नहीं है। इसमें सृष्टि के कुछ तथ्यों का उल्लेख किया गया है ताकि लोगों को पता चल सके।

दिव्य सार, गुण और नामों का अर्थ समझाकर
ब्रह्मांड की पुस्तक ताकि उसके निर्माता को जाना जा सके। इसलिए यह
विज्ञान सृष्टि के निर्माण पर इसलिए विचार करता है ताकि उसे अपने रचयिता का ज्ञान प्राप्त हो सके।
दूसरी ओर, यह सृजन को अपने लिए ही मानता है और विशेष रूप से वैज्ञानिकों को संबोधित करता है।

चूँकि कुरान सभी लोगों को संबोधित करता है, जिनमें से अधिकांश साधारण हैं, और
मानवता का मार्गदर्शन करने के लिए साक्ष्य और प्रमाण के रूप में सृष्टि, प्रस्तुत साक्ष्य
आसान समझ सुनिश्चित करने के लिए स्पष्ट और स्पष्ट होना चाहिए। इसके अलावा, मार्गदर्शन के लिए यह आवश्यक है
कि महत्वहीन चीजों पर ही ध्यान दिया जाए और सूक्ष्म बातों पर भी ध्यान दिया जाए।
दृष्टांतों के ज़रिए बातें समझाई जानी चाहिए। लोगों को गुमराह होने से बचाने के लिए,
स्पष्ट समझी जाने वाली चीज़ों को इस तरह से नहीं बदलना चाहिए जिससे भ्रम पैदा हो या यहाँ तक कि
अपने दर्शकों को नुकसान पहुंचाता है.

उदाहरण के लिए, कुरान में सूर्य को चलता-फिरता दीपक कहा गया है , क्योंकि यह एक ऐसा दीपक है जो प्रकाश देता है।
ब्रह्माण्ड की व्यवस्था का "मुख्य आधार" और इसकी प्रणाली का केंद्र, और व्यवस्था और प्रणाली सृष्टिकर्ता के ज्ञान
को प्राप्त करने के दो साधन हैं। जब यह कहता है:
और सूर्य अपना मार्ग प्रशस्त करता है (36:38), यह ईश्वरीय शक्ति की सुव्यवस्थित व्यवस्था का संकेत देता है
सर्दी और गर्मी, दिन और रात के दौर में स्वभाव,
और इसलिए निर्माता की महिमा का तात्पर्य है। इस प्रकार इस "दौड़ने" की वास्तविकता
इच्छित अर्थ को हानि न पहुंचाएं - ब्रह्मांड की संरचना में बुने गए देखे गए क्रम को।

कुरान में भी कहा गया है: और उसने सूर्य को दीपक बनाया (71:16)।
सूर्य को दीपक के रूप में चित्रित करते हुए, यह हमें याद दिलाता है कि दुनिया एक महल जैसी है
जिसमें सजावट, प्रावधान और अन्य आवश्यक चीजें शामिल हैं
मानवता और अन्य जीवित प्राणियों के लिए सूर्य एक दीपक के रूप में कार्य करता है, और इसलिए यह सृष्टिकर्ता की
दया और उदारता को दर्शाता है।

अब विचार करें कि विज्ञान और भौतिकवादी दर्शन सूर्य का वर्णन किस प्रकार करते हैं:
"सूर्य जलती हुई गैसों का एक विशाल पिंड है। यह ग्रहों का निर्माण करता है, जो
इसे इससे दूर फेंक दिया गया है, इसके चारों ओर चक्कर लगाने के लिए। यह इतना-इतना आकार का है,
और उसमें ऐसे-ऐसे गुण हैं।'' यह ज्ञान की पूर्णता नहीं देता
आत्मा के पास नहीं, बल्कि केवल एक भयानक भय और घबराहट है। यह आत्मा के पास नहीं आता
कुरान की तरह ही इस मामले को भी महत्व दें। इस तुलना से वैज्ञानिक और दार्शनिक सोच के मूल्य का अंदाजा लगाइए,
जिनमें से पहला बाहरी तौर पर शानदार है लेकिन अंदर से खोखला है। इसलिए बाहरी मूल्य से मूर्ख मत बनिए

वैज्ञानिक विवरणों का उल्लंघन करना और कुरान के सबसे महत्वपूर्ण सिद्धांतों के प्रति अनादर करना
चमत्कारी शैली.

हे ईश्वर, कुरान को हमारे लिए सभी बीमारियों की दवा बना, एक साथी बना
जीवन में और मृत्यु के बाद हमारे लिए, दुनिया में एक मित्र, दुनिया में एक विश्वासपात्र
कब्र, न्याय के दिन एक मध्यस्थ, पुल पर एक प्रकाश
सीरत, नर्क से बचाने वाला पर्दा और आवरण, जन्नत में दोस्त, और
सभी अच्छे कामों के लिए एक मार्गदर्शक और नेता। आपकी कृपा, उदारता से,
हे परम दयालु और दानशील परमेश्वर! हे परम दयालु और दानशील परमेश्वर!
हे दयालुओं में सबसे दयालु। आमीन।

हे ईश्वर, जिस पर तूने भेजा है, उस पर कृपा और शांति प्रदान कर।
कुरान, सत्य और असत्य का मानदंड, और सभी सदस्यों पर
उसके परिवार और उसके साथियों के लिए। आमीन।

परिशिष्ट 2

चाँद को विभाजित करने का चमत्कार

ईश्वर के नाम पर, जो दयालु है, कृपालु है।

क़यामत करीब आ गई है और चाँद फट गया है। लेकिन जब भी वे
जब वे कोई निशानी देखते हैं तो मुँह फेर लेते हैं और कहते हैं, "यह तो ज़ाहिर है कि (उसका)
जादू।" (54:1-2)

प्रश्न: भौतिकवादी दार्शनिक और उनके अनुकरणकर्ता, जो पैगंबर मुहम्मद के इस उज्ज्वल चमत्कार को नकारना चाहते हैं, कहो: "यदि घटना सच में घटित होती तो सबको पता चल जाता दुनिया भर में और सभी ऐतिहासिक दस्तावेजों में इसका उल्लेख है।"

उत्तर: यह चमत्कार लोगों के एक समूह के सामने हुआ ताकि वे उसे समझा सकें। उन्हें अपनी पैगम्बरी का एहसास दिलाया। यह घटना रात के उस समय घटी जब लोग सो रहे थे; धुंध, बादल और समय के अंतर जैसी बाधाएं दूसरों को इसे देखने से रोका; और, इसके अलावा, उस समय विज्ञान और सभ्यता अभी तक उन्नत या व्यापक नहीं थी। इस प्रकार आकाश को देखने का अभ्यास काफी सीमित था। अंतिम लेकिन कम से कम, ऐसा कोई कारण नहीं है कि इसे क्यों देखा जाए दुनिया भर में देखा जाना चाहिए था। भ्रम के ऐसे बादलों को दूर करने के लिए, निम्नलिखित पाँच बिंदुओं पर विचार करें: पहला बिंदु: मुहम्मद के अविश्वासी

समकालीनों की जिद सर्वविदित और दर्ज है। जब कुरान ने चाँद के टुकड़े में इस घटना की घोषणा की, तो किसी भी अविश्वासी ने इसका खंडन करने की हिम्मत नहीं की। अगर उन्होंने ऐसा नहीं किया होता तो वे इसे स्वीकार नहीं करते।
इस घटना को देखकर, उन्होंने इस आयत का इस्तेमाल हमले के बहाने के रूप में किया होगा

पैगंबर को और भी अधिक भयानक रूप से पेश किया। हालाँकि, न तो पैगंबर की जीवनी और न ही इतिहास की पुस्तकों में ऐसी कोई बात नहीं है जो इस घटना को नकारने का संकेत देती हो। उनकी प्रतिक्रिया इस प्रकार दर्ज की गई: यह स्पष्ट रूप से उनके जादू का हिस्सा है। उन्होंने घोषणा की इस घटना को जादुई बताया और आगे कहा कि अगर अन्य स्थानों पर कारवां ऐसा करता तो उन्होंने देखा कि यह सचमुच हुआ था; अन्यथा, पैगम्बर ने उन्हें मंत्रमुग्ध कर दिया था। जब अगली सुबह यमन से मक्का के कारवां पहुंचे और अन्य स्थानों पर घोषणा की गई कि उन्होंने यह चमत्कार देखा है, अविश्वासियों ने उत्तर दिया: "अबू तालिब के अनाथ के जादू ने स्वर्ग को भी प्रभावित किया है!"

दूसरा बिन्दु: सावधानीपूर्वक अध्ययन करने वाले अधिकांश अग्रणी विद्वान साद अल-दीन अल-तफ्ताज़ानी जैसे शोधकर्ताओं ने निष्कर्ष निकाला है कि, पैगंबर की उंगलियों से बहने वाले पानी और उस लकड़ी के खंभे की सुनाई देने वाली विलाप की आवाज़ जिस पर पैगम्बर साहब झुक कर बैठते थे उपदेश देते समय, जब एक मिम्बर के निर्माण के बाद उसे उससे अलग कर दिया जाता था, तो चाँद का फटना मुतवातिर है। इसका मतलब यह है कि यह एक सत्यनिष्ठ समूह द्वारा पीढ़ियों से आगे बढ़ाया जाता रहा है दूसरा, और यह कि प्रेषक इतने विशाल समुदाय का निर्माण करते हैं कि वे झूठ पर सहमत होने में असमर्थ। यह हेली के धूमकेतु की तरह ही निश्चित है, जो 1,000 साल पहले दिखाई दिया था वर्षों पहले, या सीलोन (श्रीलंका) द्वीप के अस्तित्व के बारे में हमें जानकारी नहीं है इसलिए ऐसे किसी भी मामले में बेबुनियाद संदेह पैदा करना अनुचित है।

टेन, गवाह मामले। वास्तव में, उनकी स्वीकार्यता के लिए यह पर्याप्त है कि वे असंभव नहीं हैं। चंद्रमा को विभाजित करना ज्वालामुखी विस्फोट द्वारा पहाड़ को विभाजित करने जैसा ही संभव है।

तीसरा बिंदु: पैगम्बर अपने पैगम्बर होने के दावे को साबित करने और इनकार करने वालों को यकीन दिलाने के लिए चमत्कार करते हैं, न कि उन्हें विश्वास दिलाने के लिए। इस प्रकार हर चमत्कार एक चमत्कार है। पैगंबरी के दावे को सुनने वालों को यकीन दिलाने के लिए दिखाया गया। अगर उन्होंने किसी तरह से सभी को उन्हें देखने या उन पर विश्वास करने के लिए मजबूर किया, तो सर्वज्ञ की बुद्धि, हमें स्वतंत्र इच्छा के साथ बनाने और धर्म भेजने का ईश्वरीय उद्देश्य, इसका तात्पर्य है कि मन की दृढ़ता और स्वतंत्र सोच के लिए आधार तैयार किया जाना चाहिए। मानव आत्मा की स्वीकृति का उल्लंघन होगा।

इस प्रकार यदि सर्वज्ञ सृष्टिकर्ता ने चंद्रमा को कई घंटों तक विभाजित छोड़ दिया होता ताकि हर कोई इसे देख सके और इसे अपने ऐतिहासिक अभिलेखों में दर्ज कर सके, यह एक अनोखी घटना के बजाय केवल एक और खगोलीय घटना रही है मुहम्मद का संदेशवाहक होना या उनकी पैगम्बरी होने का प्रमाण। यदि हर किसी को विश्वास करने के लिए मजबूर किया जाता, तो स्वतंत्र इच्छा को रद्द कर दिया जाता और अबू जहल की कोयले जैसी आत्मा अबू बकर की हीरे जैसी आत्मा के बराबर होगी। इस प्रकार एक विशेष कार्य और जिम्मेदारी के साथ मानवता का निर्माण करने का उद्देश्य-

सत्य, साथ ही रहस्योद्घाटन भेजने का उद्देश्य भी नकार दिया जाएगा। यानी
इस चमत्कार को विश्व भर में क्यों नहीं दिखाया गया ताकि इसे रिकॉर्ड किया जा सके।

चौथा मुद्दा: कुछ लोग तर्क देते हैं कि यदि यह घटना वास्तव में घटित हुई होती, तो
चीनी, जापानी और मूल अमेरिकी ऐतिहासिक विवरणों में इसका उल्लेख किया गया है।327 लेकिन अन्य स्रोतों के अलावा वे इसे कैसे देख सकते थे?
बाधाओं के कारण, स्पेन, फ्रांस जैसे यूरोपीय देशों में सूर्यास्त मुश्किल से ही हुआ था।
और इंग्लैंड (सभी अज्ञानता के धुंध में लिपटे हुए), अमेरिका में दिन का समय, और
चीन और जापान में सुबह का समय।

पांचवां बिंदु: यह चमत्कार कोई साधारण घटना नहीं है
किसी विशेष कारण से या बेतरतीब ढंग से ताकि इसकी आलोचना की जा सके
कारण और प्रभाव का नियम। बल्कि, सूर्य और पृथ्वी के सर्वज्ञ निर्माता
चाँद ने अपने रसूल की नबूवत की पुष्टि करने के लिए इसे एक असाधारण घटना बना दिया
और उनके दावे का समर्थन करते हैं। इसलिए इसे कुछ लोगों के लिए एक ठोस सबूत के रूप में दिखाया गया और दिव्य बुद्धि द्वारा दिव्य मार्गदर्शन और मानवीय जिम्मेदारी की प्रकृति के साथ-साथ एक संदेशवाहक को बढ़ाने के कारण के लिए निर्दिष्ट किया गया।
इसकी आवश्यकता थी। यदि इसे उन लोगों ने देखा होता जिन्हें इसे देखने का इरादा नहीं था
और जिन्होंने अभी तक मुहम्मद की पैगम्बरी के बारे में नहीं सुना था, और अगर ऐसा होता भी
यदि यह घटना कारण और प्रभाव के नियम के अनुसार घटित होती, तो यह किसी विशिष्ट खगोलीय घटना के बजाय एक सामान्य खगोलीय घटना होती।
उसका दूतत्व।

निष्कर्ष रूप में, ये तर्क किसी भी मन को आश्वस्त करने के लिए पर्याप्त हैं
इस चमत्कार के घटित होने की संभावना के बारे में कई प्रमाण हैं।
हम केवल छह का उल्लेख करेंगे, क्योंकि इन छह में छह-गुना सर्वसम्मति की ताकत है:

• साथी, सभी न्यायप्रिय और सत्यनिष्ठ लोग, इस बात पर सहमत हैं कि
जगह।

• सभी सटीक कुरान व्याख्याकार इस बात पर सहमत हैं कि चाँद का विभाजन इंगित करता है
मुहम्मद की उंगलियों के इशारे से यह घटना घटी। • सभी सच्चे परंपरावादियों ने संचरण के विभिन्न
प्रामाणिक चैनलों के माध्यम से इस घटना का वर्णन किया।

• सत्य और संतत्व के साथ-साथ प्रेरणा और आध्यात्मिकता के सभी लोग
सभी खोजें, इस बात की गवाही देती हैं कि यह घटना घटी थी।

---

327 कुछ पुस्तकों में यह भी कहा गया है कि चंद्रमा दो भागों में विभाजित होने के बाद पृथ्वी पर गिरा था। सत्य विद्वानों ने इसे अस्वीकार कर दिया है, क्योंकि इसे एक पाखंडी व्यक्ति ने जोड़ा था जिसका उद्देश्य इसे कम करना था स्पष्ट चमत्कार का मूल्य कुछ भी नहीं है।

• सभी प्रमुख धर्मशास्त्री और विद्वान इस घटना की पुष्टि करते हैं, इसके बावजूद उनके अन्य मतभेद।

• मुहम्मद का समुदाय, जिसके बारे में एक प्रामाणिक पैगंबरी परंपरा बताती है कभी भी किसी त्रुटि पर सहमत नहीं हो सकता, उसका घटित होना स्वीकार कर लेता है।

ये छह साक्ष्य स्पष्ट रूप से चंद्रमा के विभाजन को सिद्ध करते हैं।

इस प्रकार हमने आपत्तियों का खंडन करके इस चमत्कार की वास्तविकता स्थापित कर दी है। इसकी संभावना। कुछ समापन वाक्यों में, हम इसके नाम पर बात करेंगे सत्य और विश्वास के लिए।

पैगम्बरों की मुहर, मसीहाई स्वर्ग के प्रकाशमान चन्द्रमा ने अपने पवित्र वचनों के माध्यम से स्वर्ग के निवासियों के समक्ष अपनी संतता सिद्ध की।
स्वर्गारोहण। उनकी संतत्व का सबसे बड़ा चमत्कार, जो उनकी गुणवत्ता के माध्यम से प्राप्त हुआ उसकी पूजा के कारण, उसे ईश्वर के प्रियतम का दर्जा प्राप्त हुआ। दूसरे शब्दों में, मुहम्मद को स्वर्ग की यात्रा कराकर, ईश्वर ने उसके निवासियों को दिखाया और उच्चतम लोकों के लोगों को कि वह उनसे श्रेष्ठ है और उनका प्रिय है।

एक आदमी के इशारे से आकाश में स्थित चंद्रमा को विभाजित करने की अनुमति देकर और धरती पर आकर लोगों ने उनके संदेशवाहक होने का एक और बड़ा सबूत देखा। इस प्रकार पैगम्बर मुहम्मद दोनों धरती पर पूर्णता के शिखर पर पहुँच गए।
संदेशवाहक और संतत्व के चमकदार पंख (चंद्रमा के दो चमकीले पंखों की तरह) आधे हिस्से), दो धनुष की लंबाई तक चढ़े (उच्चतम रैंक और निकटतम स्टेशन परमेश्वर), और स्वर्ग और पृथ्वी के सभी निवासियों के लिए गर्व का कारण बन गया। धरती।

उन पर और उनके परिवार पर आशीर्वाद और शांति हो जिससे पृथ्वी भर जाए
और आकाश। आपकी महिमा हो। हमें इसके अलावा कोई ज्ञान नहीं है
जो कुछ तूने हमें सिखाया है, तू सर्वज्ञ, तत्वदर्शी है।

हे ईश्वर, उसके लिए जिसके एक इशारे से चाँद फट गया,
मेरा और रिसाले-ए-नूर के विद्यार्थियों के दिलों को कुरान के "सूर्य" के प्रति वैसा ही समर्पित और
वफादार बनाओ जैसा चाँद सूरज के प्रति होता है।
आमीन.

परिशिष्ट 3

केवल पैगम्बर मुहम्मद को ही स्वर्गारोहण का सम्मान क्यों दिया गया?

T इसका कारण उनकी मौलिक पूर्णता और उनकी नबूवत की प्रकृति। सबसे पहले, पैगंबर मुहम्मद का लंबे समय से इंतजार किया जा रहा था, और उनके आने का वादा कई संकेतों के माध्यम से किया गया था। इसे देखते हुए, उनके नबूवत होने के कई प्रमाण हैं। हालाँकि पिछले अध्यायों में विस्तार से बताया गया है, हम संक्षेप में उनकी पूर्णता को दर्शाने वाले संकेतों और उनके नबूवत होने के प्रमाणों को सूचीबद्ध करते हैं ताकि यह दिखाया जा सके कि वह स्वर्गारोहण के लिए सबसे योग्य थे।

प्रथम: तौरात, सुसमाचार और स्तोत्र में भारी भ्रष्टाचार के बावजूद, हुसैन अल-जिसरी के रिसाला अल-हमीदिया में 110 संकेत प्रस्तुत किए गए हैं जो मुहम्मद के पैगम्बर होने का संकेत देते हैं।

दूसरा: इतिहास में कई पूर्व-इस्लामी भविष्यवक्ताओं, जैसे शिक़ और सतीह, के शब्द भी दर्ज हैं, जिन्होंने उनके पैगंबर होने की भविष्यवाणी की थी और कहा था कि वह अंतिम पैगंबर थे।

तीसरा: उनके पैगम्बर बनने से पहले कई असाधारण घटनाओं (इरहासत) ने पैगम्बर के आने की भविष्यवाणी की थी। उदाहरण के लिए, जिस रात उनका जन्म हुआ, काबा की मूर्तियाँ गिर गईं और फ़ारसी शासक चोसरो के प्रसिद्ध महल के शिखर टूट गए।

चौथा: मुहम्मद को लगभग 1,000 चमत्कारों के लिए जाना जाता था, जिनमें से सभी इतिहासकारों और जीवनीकारों द्वारा बताए गए हैं। केवल कुछ उदाहरणों का हवाला देते हुए, उन्होंने अपने पंख से बहने वाले पानी से एक सेना की प्यास बुझाई थी-

गेर्स और चंद्रमा को विभाजित किया (54: 1), और सूखी लकड़ी का खंभा जिसके खिलाफ वह था मस्जिद में उपदेश देते समय झुके हुए कई लोगों के सामने ऊँट की तरह कराहते थे जब वह उससे अलग हुआ तो लोगों ने उसे देखा।

पांचवां: मित्र और शत्रु दोनों इस बात पर सहमत हैं कि उसमें सभी अच्छे गुण पाए गए थे। उच्चतम स्तर तक, और जैसा कि उसके आचरण से पता चलता है, सभी गुण और सर्वोच्च उत्कृष्टता का चरित्र उनके प्रदर्शन के तरीके से स्पष्ट था उसका मिशन। इस्लाम के नैतिक सिद्धांतों के अनुसार, प्रशंसनीय गुण सर्वोच्च कोटि के सिद्धांत उस कानून में पाए जाते हैं जो उसने लाया था।

छठा: बुद्धि की मांग है कि ईश्वरत्व को उसकी पूर्णता के कारण प्रदर्शित किया जाए। पैगम्बर मुहम्मद ने ईश्वर की दिव्यता को सर्वोच्च स्तर पर प्रकट किया।
और सबसे शानदार तरीके से उस धर्म में निहित पूजा के सबसे परिपूर्ण और व्यापक तरीके के माध्यम से जो उन्होंने लाया था।

ब्रह्माण्ड की रचना में बुद्धि, विश्व का निर्माता प्रदर्शित करना चाहता है सबसे उपयुक्त माध्यम से उनकी सबसे उत्तम सुन्दरता और अनुग्रह। स्पष्ट रूप से, पैगम्बर मुहम्मद ने अपनी सुंदरता और कृपा को दिखाया और वर्णित किया सबसे उत्तम फैशन में.

दुनिया का निर्माता ध्यानपूर्वक देखने और देखने की इच्छा रखता है अनंत सौंदर्य की उनकी उत्तम कला; मुहम्मद ने घोषणा की कि वह कला अनंत सौंदर्य की है। सबसे स्पष्ट आवाज़। दुनिया के भगवान की इच्छा के जवाब में उनकी घोषणा करने के लिए बहुलता के क्षेत्र में एकता, मुहम्मद ने अपनी एकता की घोषणा की इसके सभी पहलुओं को सबसे पूर्णता से समझें।

अपनी बुद्धि के कारण, संसार का स्वामी अपने स्वरूप को देखना और दिखाना चाहता है। अनंत आवश्यक सौंदर्य और अनुग्रह, उनकी सभी अभिव्यक्तियों के साथ, सभी प्राणियों के दर्पण; मुहम्मद ने उन्हें सबसे शानदार तरीके से प्रतिबिंबित किया और दूसरों को उनसे प्रेम करना सिखाया। निर्माता की इच्छा के जवाब में
दुनिया के सबसे पवित्र महल में अपनी संपूर्णता का वर्णन करने के लिए, मुहम्मद ने अपने अनमोल रत्नों के अदृश्य खजाने को दिखाया और उन्हें सबसे उत्तम तरीके से प्रदर्शित और वर्णित किया।

ब्रह्माण्ड के निर्माता ने ब्रह्माण्ड को सबसे अधिक सजाया है
सुन्दर एवं उत्कृष्ट अलंकरणों से सुसज्जित है, तथा अपने चेतन प्राणियों को उसमें सम्मिलित किया है, ताकि वे आनन्द प्राप्त करने और चिन्तन करने के लिए यात्रा कर सकें।
अपनी बुद्धि के कारण, वह व्यक्त अर्थ और मूल्य को संप्रेषित करना चाहता है
अपनी कला के द्वारा उन लोगों को मार्गदर्शन प्रदान करते हैं जो अवलोकन करते हैं और चिंतन करते हैं। मुहम्मद ने मानवता, जिन्न और फ़रिश्तों को इस संबंध में सबसे व्यापक तरीके से मार्गदर्शन प्रदान किया,
कुरान के माध्यम से.

ब्रह्मांड का सर्वज्ञ शासक अस्तित्व में परिवर्तन और रूपांतरण के उद्देश्य को प्रकट करने के लिए एक दूत का उपयोग करना चाहता है, साथ ही सभी सचेत प्राणियों द्वारा पूछे गए तीन उलझन भरे सवालों का जवाब देना चाहता है: हम कहाँ से आए हैं? हम कहाँ जा रहे हैं? हम क्या हैं? कुरान की सच्चाइयों के माध्यम से, मुहम्मद ने इस उद्देश्य और उत्तरों को सबसे स्पष्ट और सबसे सही तरीके से प्रकट किया।

इस संसार का निर्माता स्वयं को चेतन लोगों को ज्ञात कराना चाहता है

अपने उत्कृष्ट कार्यों के माध्यम से प्राणियों को प्रसन्न करना और उन्हें उनके द्वारा प्रदान की गई बहुमूल्य कृपाओं के माध्यम से उनसे प्रेम प्राप्त करना। इस प्रकार वह एक दूत के माध्यम से उन्हें यह बताना चाहता है कि वह उनसे क्या करवाना चाहता है और उन कृपाओं के बदले में वे उसकी स्वीकृति कैसे प्राप्त कर सकते हैं। कुरान के माध्यम से, मुहम्मद ने उन चीजों को संप्रेषित किया जो ईश्वर को सबसे उत्तम और उत्तम तरीके से प्रसन्न करती हैं।

सृष्टि के वृक्ष के फल मानवता को संसार के प्रभु ने एक व्यापक स्वभाव प्रदान किया है जो ब्रह्मांड को समाहित कर सकता है, तथा एक संगत क्षमता - और यहां तक कि आवश्यकता - के साथ ब्रह्मांडीय पूजा करने की क्षमता प्रदान की है। लेकिन मानवता, अपनी भावनाओं के कारण, संसार और उसके आकर्षण की ओर झुकती है। इसलिए ईश्वर एक मार्गदर्शक के माध्यम से मानवता का ध्यान सांसारिक बहुलता से दिव्य एकता की ओर, क्षणभंगुरता से अनंत काल की ओर मोड़ना चाहता है।

इस इच्छा के जवाब में और कुरान के माध्यम से, मुहम्मद ने मानवता को इस लक्ष्य तक सबसे वांछनीय तरीके से निर्देशित किया और सबसे सही तरीके से संदेशवाहक के कर्तव्य को निभाया।

इस प्रकार सृष्टि के सबसे श्रेष्ठ सदस्य जीवित प्राणी हैं, सबसे श्रेष्ठ जीवित प्राणी चेतन प्राणी हैं, सबसे श्रेष्ठ चेतन प्राणी सच्चे मनुष्य हैं, और सच्चा मनुष्य जो वर्णित सभी कर्तव्यों को सबसे उत्तम और व्यापक तरीके से पूरा करता है, वह स्वाभाविक रूप से सर्वव्यापी आरोहण के माध्यम से दो धनुष की दूरी तक, ईश्वर के सबसे निकट के स्थान तक उठेगा, शाश्वत सुख के द्वार पर दस्तक देगा, दया के खजाने को खोलेगा, और विश्वास की अदृश्य सच्चाइयों को प्रत्यक्ष रूप से देखेगा।

सातवाँ: इसके अलावा, हर चीज़ सुंदरता और अलंकरण के सबसे मनभावन उदाहरण प्रदर्शित करती है, जिससे यह प्रदर्शित होता है कि उनका निर्माता चीज़ों को सुंदर बनाना और उन्हें सजाना चाहता है। बदले में, यह दर्शाता है कि निर्माता का अपनी कला के प्रति एक मजबूत झुकाव और पवित्र प्रेम है।

इसलिए वह व्यक्ति जो इस कला के चमत्कारों को स्वयं में प्रदर्शित करने की सर्वाधिक व्यापक प्रवृत्ति रखता है; जो उन्हें जानता है, उन्हें प्रकट करता है, और इस प्रकार स्वयं को प्रिय बनाता है; और जो प्रकट की गई सुन्दरता की गहराई से सराहना करता है, वह व्यक्ति ही इस कला के चमत्कारों को प्रदर्शित करने की सर्वाधिक व्यापक प्रवृत्ति रखता है; जो उन्हें जानता है, उन्हें प्रकट करता है, और इस प्रकार स्वयं को प्रिय बनाता है; और जो प्रकट की गई सुन्दरता की गहराई से सराहना करता है, वह ...

अन्य प्राणियों में उनके निर्माता से आने की पूर्ण सराहना होगी
निर्माता की दृष्टि में यह सबसे प्रिय है, क्योंकि वह अपनी कला से बहुत प्रेम करता है।

यह वही प्राणी है, जो अपने उत्तम गुणों के प्रति पूर्ण सजग है,
समस्त प्राणियों और उन्हें प्रकाशित करने वाली सम्पूर्णताओं के विषय में आकाशवाणी होती है:
"परमेश्वर की महिमा हो! परमेश्वर ने क्या-क्या चमत्कार किए हैं" और "ये सब परमेश्वर की इच्छा से हैं"
ईश्वर! ईश्वर महान है!" यही वह प्राणी है जो ब्रह्माण्ड को कुरान की ध्वनियों से गुंजायमान कर देता है, तथा धरती और समुद्र को आनंदित कर देता है।
अपने प्रशंसात्मक चिंतन और महिमा-गान के साथ-साथ ईश्वरीय एकता की घोषणा और प्रदर्शन के साथ।

ऐसा प्राणी, "कारण ही कर्ता है" के सिद्धांत के अनुसार,
उसे अपने समुदाय के अच्छे कर्मों के बराबर पुरस्कार मिलता है। उसका आध्यात्मिक
सिद्धियाँ उसे उसके समुदाय द्वारा दिए गए आशीर्वाद से शक्ति प्राप्त होती हैं, और उसके संदेशवाहक के दौरान किए गए कर्तव्य उसे पूर्णता प्रदान करते हैं।
ईश्वरीय दया का अमूर्त प्रतिफल और अनंत प्रवाह प्राप्त करें
और प्रेम। इसे देखते हुए, शुद्ध सत्य और पूर्ण ज्ञान का परिणाम यह है कि
इस प्राणी को स्वर्गारोहण के माध्यम से स्वर्ग, सिद्रत तक आगे बढ़ना चाहिए
अल-मुन्तहा - लोटे का पेड़, आकस्मिकता की सबसे दूर की सीमा - दिव्य सिंहासन,
और दो धनुष की लंबाई के निकट।

परिशिष्ट 4

पैगम्बर को जानने के बारे में

A यात्री एक बौद्धिक यात्रा पर निकलता है और खोजता है
ब्रह्मांड के निर्माता को जानें। ब्रह्मांड के दायरे में यात्रा करने के बाद
प्राणियों, वह खुद से कहता है: "जैसा कि मैं इस ब्रह्मांड की खोज कर रहा हूं
इन प्राणियों के बीच सृष्टिकर्ता और स्वामी, सबसे पहले मुझे दर्शन करने चाहिए
मुहम्मद से प्रार्थना करता हूँ और उनसे अपनी खोज का उत्तर मांगता हूँ।" अपनी कल्पना का उपयोग करते हुए, वह पैगंबर के धन्य युग में प्रवेश करता है और देखता है कि यह वास्तव में एक युग था
वह बहुत खुश था, क्योंकि उसके शत्रुओं ने भी उसे सृष्टि का सबसे धन्य, सबसे महान और सबसे निपुण सेनापति, सबसे यशस्वी शासक, वाणी में सबसे श्रेष्ठ और बुद्धि में सबसे प्रखर माना था।

उन्होंने अपने गुणों और कुरान से 14 शताब्दियों को प्रकाशित किया है।

जांच करने के बाद, यात्री को पता चलता है कि कैसे पैगंबर ने अपने आदिम और अशिक्षित लोगों को अपने द्वारा लाए गए प्रकाश के माध्यम से दुनिया के गुरुओं और शिक्षकों में बदल दिया। उसे अपने ग्रंथों में कई निर्णायक सबूत मिलते हैं।
चरित्र और मिशन, सृष्टिकर्ता के अस्तित्व और एकता का। यहाँ हम
मैं संक्षेप में निम्नलिखित नौ सबसे सामान्य बातों की ओर संकेत करता हूँ:

पहला: पैगम्बर के पास सभी प्रशंसनीय गुण और उत्कृष्ट विशेषताएं थीं, जैसा कि उनके दुश्मनों ने भी पुष्टि की है। इसके अलावा, सैकड़ों चमत्कार भी थे
उसके हाथों से किए गए कार्य, जैसे पानी से सेना की प्यास बुझाना
उसकी उंगलियों से बहता हुआ, एक इशारे से चाँद को विभाजित करता हुआ (और चाँद
फूट [५४:१]), और मुट्ठी भर मिट्टी फेंककर कई सैनिकों को भागने पर मजबूर कर दिया
(जब तुमने फेंका तो तुम नहीं थे जिन्होंने फेंका, बल्कि अल्लाह ने फेंका [8:17])

या उन्हें देखकर भी, यात्री अपने आप से कहता है: "जो ऐसे स्पष्ट चमत्कार करता है और ऐसे नैतिक गुणों और सिद्धियों का स्वामी है
वह अपनी बात में सबसे सच्चा होगा। वह खुद को कैसे इतना नीचे गिरा सकता है?
झूठ और छल-कपट, जो कि नीच लोगों के दोष हैं?”

दूसरा: वह ब्रह्माण्ड के मालिक (कुरान) का आदेश रखता है,
जिसे हर सदी में करोड़ों लोगों ने स्वीकार किया है और पुष्टि की है और यह सात तरीकों और 40 पहलुओं में चमत्कारी है। यात्री सोचता है: "ऐसे फरमान का अनुवादक, व्याख्याता और उद्घोषक

शुद्ध सत्य झूठ नहीं बोल सकता, क्योंकि यह डिक्री का उल्लंघन होगा और विश्वासघात होगा
मालिक।"

तीसरा: पवित्र कानून, धर्म, पूजा संहिता, मार्ग आदि।
प्रार्थना, संदेश और विश्वास जो वह लेकर आए, वह पहले कभी अस्तित्व में नहीं था।
क्या यह (उसके बिना) अस्तित्व में रह सकता है। अशिक्षितों द्वारा लाया गया अप्रतिम कानून
पैगम्बर मुहम्मद ने 14 शताब्दियों तक मानवता के पांचवें हिस्से पर न्यायपूर्ण शासन चलाया है।
और सटीक तरीके से। इस्लाम, जिसकी उत्पत्ति और प्रतिनिधित्व इस्लाम द्वारा किया जाता है
पैगंबर की बातें, उपदेश और उदाहरण भी बेमिसाल हैं। इसने समय और स्थान की परवाह किए बिना लाखों लोगों की मदद की है, हर मुद्दे को पूरी तरह से तय करने के लिए एक मार्गदर्शक और सक्षम प्राधिकारी या स्रोत के रूप में। इसने उनके प्रशिक्षण को प्रशिक्षित किया है
उनके मन को प्रकाशित और शुद्ध किया, उनकी आत्माओं को प्रशिक्षित और परिष्कृत किया,
और उनकी आत्माओं को परिपूर्ण किया।

पैगम्बर मुहम्मद इस्लाम द्वारा निर्धारित पूजा के सबसे अग्रणी साधक और सबसे अधिक ईश्वर-चेतन व्यक्ति हैं। उन्होंने
यहां तक कि छोटी से छोटी बात पर भी अत्यंत सावधानी और ध्यान दिया जाता है, यहां तक कि
महान संकट के समय और निरंतर संघर्ष और गतिविधि के जीवन के दौरान।
उन्होंने अपनी उपासना में किसी की नकल नहीं की, और आरंभिक शिक्षाओं को पूरी तरह से संयोजित किया
और आध्यात्मिक विकास का अंत।

उनकी प्रार्थनाएँ और ईश्वर का ज्ञान अद्वितीय है, क्योंकि केवल
उन्होंने अपनी हजारों प्रार्थनाओं में से एक, जौशन अल-कबीर का वर्णन किया है।
अपने प्रभु को इस हद तक ज्ञान के साथ जानता था कि सभी संत और अन्य प्रमुख लोग
परमेश्वर के ज्ञान में उसके समय से लेकर अब तक किसी ने भी वैसी डिग्री हासिल नहीं की है,
अपने पूर्ववर्तियों की उपलब्धियों पर निर्माण करने के बावजूद।
इस प्रार्थना के 99 खंडों में से केवल एक पर नज़र डालने से यह निष्कर्ष निकलता है कि
इसके जैसा दूसरा कभी नहीं होगा।

अपने लोगों को उपदेश देते और सत्य की ओर बुलाते समय, पैगम्बर ने ऐसी दृढ़ता, दृढ़ता और साहस का परिचय दिया कि वे कभी भी डगमगाये नहीं और न ही कभी हिचकिचाये। और यह सब आस-पास की शक्तियों और धर्मों की शत्रुता के बावजूद था।

उन्होंने न केवल अपने लोगों, कबीले और यहां तक कि अपने चाचा की भी धार्मिक आस्था को नष्ट कर दिया। उन्होंने सफलतापूर्वक दुनिया को चुनौती दी, जिससे इस्लाम अन्य सभी धर्मों और प्रणालियों से श्रेष्ठ बन गया। इससे यह साबित होता है कि कोई भी व्यक्ति उनकी बराबरी नहीं कर सकता।
सत्य के संदेश का प्रचार करना और मानवता को उस ओर बुलाना।

उनका विश्वास इतना असाधारण रूप से मजबूत और निश्चित था, इतना चमत्कारिक रूप से
वह इतना विकसित (विकसित, विस्तृत और हृदय में समाया हुआ) था,328 और इतना उन्नत और विश्व-ज्ञानवर्धक था कि किसी भी प्रचलित विचार और विश्वास, दर्शन या आध्यात्मिक शिक्षा ने उसके भीतर कोई संदेह उत्पन्न नहीं किया। उनके बावजूद
विरोध और शत्रुता के बावजूद, वे उसे अपने उद्देश्य के प्रति झिझक या चिंतित नहीं कर सके। इसके अलावा सभी संतों (मुख्य रूप से उनके साथियों) ने
उनके विश्वास से लाभ उठाया है - और ऐसा करना जारी रखते हैं - जिसे वे स्वीकार करते हैं
सर्वोच्च डिग्री। यह साबित करता है कि उसका विश्वास अतुलनीय है। इस प्रकार ईश्वर की खोज करने वाला यात्री यह निष्कर्ष निकालता है कि झूठ और धोखे का उस व्यक्ति में कोई स्थान नहीं है जिसने ऐसा अनूठा कानून और अतुलनीय धर्म लाया; जिसने प्रदर्शित किया
ऐसी अद्भुत उपासना, प्रार्थना में असाधारण उत्कृष्टता, और विश्व-प्रशंसित
उपदेश देते थे; और जिनके पास ऐसी चमत्कारिक पूर्णता का विश्वास था।

चौथा: पैगम्बरों की आम सहमति ईश्वर की इस बात का एक बहुत मजबूत सबूत है कि
अस्तित्व और एकता तथा उस महान व्यक्ति की सत्यनिष्ठा और संदेशवाहक होने का दृढ़ प्रमाण। इतिहास भी इस बात की पुष्टि करता है कि वह सत्यनिष्ठा और संदेशवाहक होने के कारण महान था।
सभी पवित्र गुण, चमत्कार और कार्य जो एक पैगंबर की सच्चाई और संदेशवाहक होने का संकेत देते हैं, सर्वोच्च डिग्री में हैं। पैगंबरों ने तौरात, सुसमाचार, भजन, में उनके आने की अच्छी खबर देकर मौखिक रूप से भविष्यवाणी की थी।

और पेज या स्क्रॉल। उनके मिशन और चमत्कारों ने इस अग्रणी और सबसे परिपूर्ण व्यक्ति के मिशन पर पुष्टि की और "अपना हस्ताक्षर-स्वभाव रखा"
पैगम्बरत्व। यात्री को लगता है कि पिछले सभी पैगम्बरों में पैगम्बरत्व है।
उनके कार्यों की एकमतता के माध्यम से इस व्यक्ति की सत्यता का साक्ष्य दें,
ठीक वैसे ही जैसे वे मौखिक सहमति के माध्यम से परमेश्वर की एकता की गवाही देते हैं।

पांचवां: सत्य, पूर्णता, अद्भुत कार्य करने की पदवी प्राप्त करके,
चीज़ों की वास्तविकता में अंतर्दृष्टि, और उसका अनुसरण करके आध्यात्मिक खोज
व्यक्ति के कर्मों और सिद्धांतों के आधार पर, हजारों संत ईश्वर के कार्यों की गवाही देते हैं
एकता और उस व्यक्ति की सच्चाई और संदेशवाहक होना। यात्री

---

328 हम सबसे पहले किसी चीज़ की सच्चाई पर सरल स्वीकृति या अध्ययन और पुष्टि के माध्यम से विश्वास करते हैं।
जैसे-जैसे हम उस चीज़ की विषय-वस्तु को सीखते हैं जिसमें हम विश्वास करते हैं और विश्वास के स्वाद का अनुभव करते हैं,
हमारा विश्वास और भी मजबूत हो जाता है और हमारे दिलों में और भी गहराई से बैठ जाता है। हम इसे एक अच्छा विचार मान सकते हैं
विस्तार, विकास, या पुष्टि में गहराई। पैगंबर इस दौर से गुजरे
वही प्रक्रिया, क्योंकि हर दूसरे आस्तिक की तरह, वह अपने क्षेत्र में आध्यात्मिक रूप से विकसित हुआ:
पैगम्बरत्व. (ट्र.)

उन्हें एहसास होता है कि वे उस व्यक्ति की सच्चाई की गवाही देते हैं, जो उतनी ही उज्ज्वल है
सूर्य; कि वे संतत्व के प्रकाश के माध्यम से कुछ सत्यों के साक्षी बनें
उन्होंने अदृश्य दुनिया के बारे में घोषणा की; और वे उस पर विश्वास करते हैं और उसकी पुष्टि करते हैं
उन सभी सत्यों को विश्वास के प्रकाश से निश्चितता की सीमा तक
ज्ञान, दृष्टि से निश्चितता, या अनुभव से निश्चितता।

छठा: हजारों कठोर शुद्ध विद्वान, सावधानीपूर्वक सत्यनिष्ठ विद्वान और आस्थावान ऋषि, जो सभी उस द्वारा लाए गए पवित्र सत्यों में निहित शिक्षा के माध्यम से सीखने के उच्चतम स्तर तक पहुँचे।

अशिक्षित व्यक्ति; जिन उत्कृष्ट विज्ञानों को उसने जन्म दिया; और
ईश्वर का ज्ञान जो उन्होंने खोजा - ये सभी ईश्वर की एकता, उनकी
मिशन की नींव रखें, और उस महानतम शिक्षक और सर्वोच्च की गवाही दें
अपने स्वामी की सच्चाई और उसके वचनों की सच्चाई पर विश्वास करो।

सातवीं बात: पैगम्बरों के बाद, उनके परिवार और साथी सबसे अधिक महत्वपूर्ण हैं।
मानवता के प्रसिद्ध, सम्मानित, प्रतिष्ठित, धर्मपरायण और तीक्ष्ण दृष्टि वाले सदस्य। ऐसा भेद उनकी अंतर्दृष्टि, ज्ञान और आध्यात्मिक उपलब्धियों के कारण है। पैगंबर के सभी कार्यों की गहन जांच और छानबीन करने के बाद

विचार-विमर्श के बाद, उन्होंने सर्वसम्मति से निष्कर्ष निकाला कि वह दुनिया का सबसे सच्चा, श्रेष्ठ और ईमानदार व्यक्ति था।
यात्री समझता है कि ऐसा व्यक्ति
इस असाधारण घटना से उनके प्रति अटूट विश्वास और दृढ़ प्रतिज्ञान
लोग उसके उद्देश्य की सच्चाई को सिद्ध करते हैं, ठीक वैसे ही जैसे दिन का प्रकाश सूर्य के अस्तित्व को सिद्ध करता है।

आठवां: यह ब्रह्मांड निर्माता, लेखक और डिजाइनर को इंगित करता है
जिसने इसे एक महल, एक प्रदर्शनी और एक तमाशा बना दिया है। इसलिए वहाँ होना चाहिए
एक सच्चा अनावरणकर्ता बनें जो ब्रह्मांड के लिए दिव्य उद्देश्य की खोज करता है
सृष्टि, एक महान संदेशवाहक जो इस महान पुस्तक के अर्थ की घोषणा करता है, और
एक समझदार गुरु और सच्चा शिक्षक जो दिव्य ज्ञान सिखाता है। वह
ब्रह्मांड के परिवर्तनों का अर्थ और परिणाम भी सिखाना चाहिए
और उद्देश्यपूर्ण गतिविधियाँ। यात्री को धीरे-धीरे एहसास होता है कि ऐसे कर्तव्यों को सबसे अच्छी तरह से निभाने वाला व्यक्ति
अपने उद्देश्य में सबसे सच्चा है: सेवा करना
ब्रह्माण्ड के निर्माता के रूप में, वह सबसे श्रेष्ठ और विश्वसनीय अधिकारी हैं।

नौवीं बात: सृष्टि के पर्दे के पीछे वह है जो इनके माध्यम से इच्छा करता है
उद्देश्यपूर्ण और कुशल कार्य, अपनी उत्तम कुशलता और कला को प्रदर्शित करना;
उन असंख्य सुशोभित प्राणियों के माध्यम से स्वयं को जाना और प्यार किया;
उसकी असीम अमूल्य कृपाओं के बदले में प्रशंसा और धन्यवाद प्रकट करना; तथा उसके प्रभुत्व के लिए कृतज्ञता और प्रशंसा के साथ आराधना को प्रोत्साहित करना
अपने स्नेही और सुरक्षात्मक जीवन पोषण के माध्यम से, साथ ही साथ उनके
सभी चीज़ों के अलग-अलग स्वाद और भूख को संतुष्ट करना। वह अपनी इच्छा को प्रदर्शित करना चाहता है

इस दौरान प्रदर्शित रचनात्मकता और उद्देश्यपूर्ण गतिविधि के माध्यम से दिव्यता
उदाहरण के लिए, ऋतुओं का परिवर्तन और दिन-रात का परिवर्तन,
ताकि मानवता उसकी दिव्यता पर विश्वास कर सके, उसके प्रति समर्पित हो सके और उसकी आज्ञा का पालन कर सके।
वह सद्गुणों और शक्तियों की रक्षा करके अपने न्याय और सत्य को प्रकट करना चाहता है।
पुण्य और बुराई और दुष्टों का नाश करके, और अत्याचारियों का नाश करके
और झूठ बोलने वालों को स्वर्गीय मार से मार डालूंगा।

निश्चय ही वह सबसे प्रिय है, जो ईश्वरीय उद्देश्य की सेवा करता है
सर्वोच्च डिग्री, सृष्टि के रहस्य का खुलासा, हमेशा उसी के नाम पर कार्य करता है
(अपने निर्माता) होने के नाते, और केवल उसी से मदद और सफलता के लिए पूछता है (और प्राप्त करता है
दोनों ही उसके साथ होंगे। यह पैगम्बर मुहम्मद हैं।

यात्री अपना कारण बताता है: "चूंकि ये नौ सत्य उस व्यक्ति की सच्चाई की गवाही देते हैं, इसलिए वह
मानवता के सम्मान और दुनिया के सम्मान का स्रोत होना चाहिए।"
गर्व। इसलिए वह 'दुनिया का गौरव' और 'दुनिया का सबसे बड़ा अभिमान' कहलाने के योग्य है।
मानवता की महिमा।'' इसके अलावा कुरान, दयालु भगवान की चमत्कारी व्याख्या और आदेश जो उन्होंने अपने
हाथ में पकड़ रखा है, ने आधे से अधिक लोगों को आकर्षित किया है।
पुरानी दुनिया को उसके शानदार आध्यात्मिक क्षेत्र में ले जाना।
पैगंबर की व्यक्तिगत परिपूर्णताओं और उच्च गुणों से पता चलता है कि वह
दुनिया में सबसे महत्वपूर्ण प्राणी, और तदनुसार, उसके शब्द
हमारे सृष्टिकर्ता सबसे महत्वपूर्ण हैं।

अब आओ और देखो! उसका एकमात्र उद्देश्य यह साबित करना और गवाही देना था कि
आवश्यक रूप से विद्यमान प्राणी के अस्तित्व और एकता की घोषणा करना,
उनके सभी गुण और नाम। अपने सैकड़ों चमत्कारों और अपने धर्म में निहित हजारों उदात्त, स्थापित सत्यों की शक्ति
के आधार पर, वे दुनिया को प्रकाशित करने वाले "आध्यात्मिक सूर्य" हैं, हमारे निर्माता के सबसे पवित्र देवता

शानदार सबूत, "भगवान का प्रिय।" निम्नलिखित तीन रूपों में से प्रत्येक
महान, सत्य और अडिग आम सहमति उनकी गवाही की पुष्टि और पुष्टि करती है:

प्रथम: उस प्रतिष्ठित समुदाय की सर्वसम्मत पुष्टि जिसे
और मुहम्मद के परिवार और वंशजों के रूप में मनाया जाता है, जिनमें शामिल हैं
हजारों आध्यात्मिक स्तंभ और सर्वोच्च संत जिनकी दृष्टि इतनी तीव्र है कि वे अदृश्य में प्रवेश कर सकते हैं, जैसे
इमाम अली, जिन्होंने कहा: "यदि पर्दा उठ जाए
अदृश्य, मेरी निश्चितता में वृद्धि नहीं होगी, "और 'अब्द अल-कादिर अल-जिलानी,
जिसने परमेश्वर के शक्तिशाली सिंहासन और महादूत इसराफिल के भयानक रूप को “देखा”
अभी भी जिंदा।

दूसरा: साथियों की सर्वसम्मति से पुष्टि,
उनका विश्वास इतना प्रबल था कि उन्होंने अपने प्राण, सम्पत्ति, अपने हिस्से का बलिदान कर दिया।

इसके लिए लोगों और जनजातियों को शामिल किया गया है। हालाँकि वह आदिम लोगों के बीच पला-बढ़ा है और सामाजिक जीवन की किसी भी सकारात्मक धारणा से रहित अज्ञानता के माहौल में और प्रशासन, बिना किसी शास्त्र के और अंधकार में डूबा हुआ पैगम्बरों के बाद के असभ्य युग में, इन लोगों ने पैगम्बरों का अनुसरण करना शुरू कर दिया। पैगम्बर के पदचिन्हों पर चले और शीघ्र ही स्वामी, मार्गदर्शक और न्यायप्रिय शासक बन गए। सबसे सभ्य और सामाजिक और राजनीतिक रूप से उन्नत लोग और राज्य।

तीसरा: असंख्य सटीक और गहन विद्वानों द्वारा ज्ञान की निश्चितता के साथ की गई सर्वसम्मति से पुष्टि। प्रत्येक शताब्दी ने देखा है ऐसे हजारों लोग जो प्रत्येक क्षेत्र में असाधारण रूप से उन्नत हो गए विज्ञान और कला की शाखा.

इस प्रकार उस व्यक्ति की ईश्वर के अस्तित्व और एकता के प्रति गवाही इतनी सार्वभौमिक और अडिग है कि यदि उसके विरोधी सभी प्राणी एक हो जाएं, तो भी वे एक ही हैं। इसे चुनौती नहीं दी जा सकती थी। यात्री इस निष्कर्ष पर पहुंचा है। मानसिक रूप से खुशी के युग का दौरा करते समय प्रकाश के स्कूल में सीखे गए सबक का संदर्भ लेते हुए, हम निष्कर्ष निकालते हैं:

> ईश्वर के अलावा कोई देवता नहीं है, वह अनिवार्यतः विद्यमान है, वह एक है और अद्वितीय, जिसकी एकता में अस्तित्व की आवश्यकता स्पष्ट रूप से है विश्व के गौरव और मानवता की महिमा से प्रदर्शित, कुरान की संप्रभुता की महिमा के माध्यम से, इस्लाम की समग्रता, उसकी परिपूर्णताओं की बहुलता, और उसकी नैतिकता उनके गुणों की उत्कृष्टता की पुष्टि उनके शत्रुओं ने भी की है।
>
> फिर, वह अपनी शक्ति के बल पर गवाही देता है और सबूत पेश करता है सैकड़ों चमत्कार जो उसकी सच्चाई को साबित करते हैं और स्थापित हैं दृढ़ता से; और इस्लाम में निहित हजारों स्पष्ट और निर्णायक सत्यों की ताकत के माध्यम से, जैसा कि उनके अनुयायियों की सर्वसम्मति से पुष्टि की गई है। प्रख्यात, प्रबुद्ध परिवार और वंशज प्रकाश फैलाते हुए, और उसके साथियों की पैनी दृष्टि और विवेक के साथ सहमति, और उसके समुदाय के सभी विद्वानों का ज्ञानवर्धक प्रमाण और अंतर्दृष्टि के साथ एकमत होना।

वह शाश्वत है।

सईद नूरसी

बीसवाँ पत्र

बीसवाँ पत्र

ईश्वरीय एकता के पहलू

उसके नाम में, उसकी महिमा हो।

ऐसी कोई भी चीज़ नहीं है जो उसकी स्तुति से उसकी महिमा न करती हो।

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं, उसका कोई साझी नहीं, वही प्रभुतावान है, उसी के लिए सारी प्रशंसा है, वही जीवन देता है और वही मरनेवाला है, वही सदा जीवित है, वह कभी नहीं मरता, उसके हाथ में सब भलाई है, वही हर चीज़ पर अधिकार रखता है, और उसी की ओर लौटना है।

I इन दिव्य वाणी का जाप करना बहुत पुण्यदायी है सुबह और शाम की प्रार्थना के बाद एकता। प्रत्येक वाक्यांश ईश्वर के महानतम नाम के बराबर है, और प्रभुता की एकता के एक अलग पहलू को प्रदर्शित और प्रकट करके मानवता को शुभ समाचार देता है। यह महानतम नामों में से एक को प्रकट करने, दिव्य विलक्षणता की महिमा की एक किरण और दिव्य एकता की पूर्णता के बराबर है।

ऐसे उदात्त सत्य की पूरी व्याख्या के लिए पाठकों को ' द वर्ड्स' की ओर संकेत करते हुए, मैं नीचे एक परिचय और दो स्टेशनों में इसका सारांश प्रस्तुत कर रहा हूँ।[329]

परिचय

ईश्वर में विश्वास सृष्टि का सर्वोच्च लक्ष्य और सबसे उत्कृष्ट परिणाम है, और मानवता का सबसे उच्च पद ईश्वर का ज्ञान है। सबसे उज्ज्वल खुशी

---

329 नूरसी ने कहा, शब्द.

और जिन्न और मानवता के लिए सबसे मधुर उपहार ईश्वर के ज्ञान में निहित ईश्वर का प्रेम है। मानव आत्मा का सबसे शुद्ध आनंद और मानव हृदय का सबसे बड़ा आनंद ईश्वर के प्रेम में निहित आध्यात्मिक परमानंद है। सभी सच्ची खुशियाँ, शुद्ध आनंद, मधुर उपहार और अखंड सुख ईश्वर के ज्ञान और प्रेम में निहित हैं। जो लोग वास्तव में ईश्वर को जानते हैं और उससे प्रेम करते हैं, वे अनंत सुख, उपहार, ज्ञान और रहस्य प्राप्त कर सकते हैं। जो लोग ऐसा नहीं करते हैं, वे अनंत आध्यात्मिक और भौतिक दुख, दर्द और भय से ग्रस्त हैं। यदि किसी व्यक्ति को इस दुनिया पर शासन करने की अनुमति दी जाए, भले ही वह इस दुनिया में अन्य उद्देश्यहीन लोगों के बीच शक्तिहीन, दुखी और असुरक्षित हो, तो उसका वास्तविक मूल्य क्या होगा?

जो लोग अपने मालिक को नहीं पहचानते और अपने मालिक को नहीं खोज पाते, वे दुखी और भ्रमित रहते हैं। लेकिन जो लोग ऐसा करते हैं, और फिर उसकी दया में शरण लेते हैं और उसकी शक्ति पर भरोसा करते हैं, वे इस उजाड़ दुनिया को आराम और खुशी की जगह में बदल देते हैं, एक ऐसी जगह जहाँ वे परलोक के लिए विनिमय कर सकते हैं।

पहला स्टेशन

ईश्वरीय एकता की पुष्टि करने वाला प्रत्येक वाक्यांश विश्वासियों के लिए शुभ समाचार लेकर आता है। प्रत्येक संदेश एक इलाज प्रदान करता है, और प्रत्येक इलाज में आध्यात्मिक आनंद निहित होता है।

पहला वाक्य: ईश्वर के अलावा कोई और ईश्वर नहीं है, लेकिन ईश्वर मानवीय आत्मा के लिए मदद का एक अटूट स्रोत प्रदान करता है, जो असंख्य ज़रूरतों और अनगिनत हमलों का शिकार है, दया के एक ऐसे ख़ज़ाने का दरवाज़ा खोलकर जो उसकी ज़रूरतों को पूरा कर सकता है। आत्मा को वहाँ एक सहारा मिलता है जो उसके मालिक और स्वामी, उसके निर्माता और पूजा के सच्चे उद्देश्य को दिखाता और पहचानता है, जो उसे उसके दुश्मनों की बुराई से बचाता है।

यह वाक्यांश हृदय को निराशा से और आत्मा को दुःख से बचाता है।
निरंतर उत्थान और निरंतर खुशी के माध्यम से।

दूसरा वाक्यांश: (वह है) इसका तात्पर्य यह है कि मानव आत्मा, जो ब्रह्मांड में अधिकांश प्रजातियों से जुड़ी हुई है और इस प्रकार दुख और भ्रम से अभिभूत है, उसे ऐसे दुख और भ्रम से मुक्ति दिलाने के लिए एक शरण और उद्धारकर्ता मिलता है।

मानवता के लिए, इस वाक्यांश का अर्थ है: ईश्वर एक है, इसलिए अन्य चीजों से खुद को मत थकाओ। खुद को नीचा मत समझो और उनके प्रति कृतज्ञ मत बनो, या सुरक्षा के लिए उनके सामने खुद को अपमानित मत करो। उनका अनुसरण करके खुद को परेशान मत करो, और उनके सामने कांपना मत, क्योंकि ब्रह्मांड का संप्रभु एक है और सभी चीजों की कुंजी और लगाम रखता है। उसका आदेश सभी चीजों का समाधान करता है

सब कुछ। उसे पाने का मतलब है कि आप जो चाहें प्राप्त कर लें और अंतहीन ऋणग्रस्तता और असंख्य भय से मुक्त हो जाएं।

तीसरा वाक्य: उसका कोई साथी नहीं है इसका मतलब है कि वह एक है और उसकी दिव्यता और संप्रभुता में, साथ ही उसके आधिपत्य, कार्य और सृजन में उसका कोई साथी नहीं है। सिद्धांत रूप में, एक सांसारिक राजा का अपनी संप्रभुता में कोई साथी नहीं हो सकता है, लेकिन फिर भी उसके अधिकारियों को उसकी संप्रभुता के निष्पादन में उसका भागीदार माना जा सकता है, क्योंकि वे उसके और उसकी प्रजा के बीच मध्यस्थ के रूप में कार्य करते हैं। ईश्वर, शाश्वत संप्रभु, को ऐसी कोई आवश्यकता नहीं है और इसलिए उसकी संप्रभुता में कोई भागीदार नहीं है। एक चीज दूसरी चीज में तभी हस्तक्षेप कर सकती है जब वह इसकी अनुमति दे। इसके अलावा, उसकी एकता उसके और उसके प्राणियों के बीच किसी भी मध्यस्थ को अस्वीकार करती है, और इसलिए हर किसी के पास समय और स्थान की परवाह किए बिना सीधे उस तक पहुंच है।

यह वाक्यांश मानवीय भावना को सूचित करता है कि किसी भी विश्वासी को उस महान, सर्व-दयालु, सर्व-शक्तिशाली पूर्णता वाले की उपस्थिति में प्रवेश करने से कोई नहीं रोक सकता, जो दया और आनंद के खजाने का शाश्वत स्वामी है, और अपनी याचिका प्रस्तुत करता है। उसकी दया को पाना और उसकी शक्ति पर भरोसा करना विश्वासियों को पूर्ण सहजता और खुशी प्राप्त करने में सक्षम बनाता है।

चौथा वाक्य: प्रभुता उसकी है इसका मतलब है कि वह स्वर्ग और पृथ्वी का मालिक है - जिसमें आप भी शामिल हैं - और आप उसके राज्य में काम करते हैं। इसका यह भी अर्थ है: यह मत सोचिए कि आप खुद के मालिक हैं, क्योंकि आप अपने मामलों का प्रबंधन खुद नहीं कर सकते। आप अपनी आत्मा और शरीर की ज़रूरतों को पूरा करके और उन्हें आपदाओं से बचाकर उनका रखरखाव नहीं कर सकते। आप थकावट और बुढ़ापे से बच नहीं सकते, क्योंकि आप समय और अन्य क्षरणकारी कारकों के अधीन हैं।

इसलिए, बिना वजह दर्द और पीड़ा न सहें। कोई सर्वशक्तिमान और दयालु व्यक्ति ही सब कुछ का मालिक है। उसकी शक्ति पर भरोसा रखें और उसकी करुणा पर आरोप न लगाएँ। दु:ख और चिंता को त्यागें और राहत स्वीकार करें। अपनी परेशानियों से छुटकारा पाएँ और शांति पाएँ।

इस वाक्यांश का यह भी अर्थ है: यह दुनिया जिससे तुम प्यार करते हो, जिससे तुम जुड़े हुए हो और जिसे तुम अव्यवस्थित देखते हो और जिसे तुम ठीक नहीं कर सकते, वह एक सर्वशक्तिमान और दयालु व्यक्ति की है। इसलिए इसे इसके मालिक को लौटा दो और इसे उसी पर छोड़ दो। अपना कर्तव्य समझो और उसके कामों में दखल न दो। जिस पर तुम विजय नहीं पा सकते, उससे परेशान मत हो। निश्चिंत रहो, क्योंकि इसका मालिक इसे पूरी तरह से नियंत्रित करता है और इसे अपनी इच्छानुसार संचालित करता है। वह सर्वज्ञ और दयालु है, और बुद्धिमानी के उद्देश्य से कार्य करता है। इसलिए जब भी तुम डरो, तो इब्राहीम हक्की की तरह कहो: "चलो देखते हैं कि मालिक क्या करता है - वह जो भी करता है वह हमेशा सबसे अच्छा होता है - और उसके कामों को पूरे भरोसे के साथ देखो।"

पाँचवाँ वाक्य: सारी प्रशंसा उसी की है, इसका अर्थ है कि केवल परमेश्वर ही इसका हकदार है। प्रशंसा और प्रशंसा, कि सब कुछ केवल उसी का ऋणी है। सभी वरदान केवल उसी के हैं क्योंकि वे उसके असीम और अक्षय खजाने से आते हैं।

इस वाक्यांश का तात्पर्य है: (जिसका आप अब आनंद ले रहे हैं) उपहार कभी समाप्त नहीं होंगे, क्योंकि उसकी दया का भण्डार अक्षय है। तुम्हारा (वर्तमान) आनन्द कभी समाप्त नहीं होगा, क्योंकि तुम्हें जो भी आनन्द प्राप्त होता है, वह अनन्त दया का फल है।
और उस दया का वृक्ष कभी नहीं मर सकता, क्योंकि प्रत्येक समाप्त फल को प्रतिस्थापित कर दिया जाता है एक नए के साथ। इसके अलावा, आप जो वर्तमान में आनंद ले रहे हैं उसके लिए धन्यवाद और प्रशंसा की पेशकश करना इसे सौ गुना बढ़ा देता है, क्योंकि हर आनंद, संक्षेप में, ईश्वरीय कृपा से प्राप्त एक उपकार और इसलिए यह 100 गुना अधिक आनंददायक है आनंद अपने आप में है। अगर कोई गौरवशाली राजा आपको सेब देता है, तो आपका आनंद इस तरह का राजकीय अनुग्रह 100 या उससे भी अधिक भौतिक सुख से बेहतर होगा 1,000 सेब.

इसी तरह, यह वाक्यांश आध्यात्मिक आनंद का द्वार खोलता है १००० कई बार मीठा, क्योंकि यह आपको उदारता के उपहार पर विचार करने के लिए प्रेरित करता है, जो आगे ले जाता है आपको दाता को पहचानना है और उसकी दयालु कृपाओं पर विचार करना है जो बरसती हैं लगातार बाहर.

छठा वाक्य: केवल वही जीवन देता है, केवल वही देता है और बनाए रखता है जीवन की सभी आवश्यकताएं वही पूरी करता है, तथा जीवन के उत्कृष्ट लक्ष्य और महत्वपूर्ण परिणाम उससे संबंधित हैं।

यह वाक्यांश कहता है: जीवन की भारी ज़िम्मेदारियों को अपने कंधों पर उठाने की चिंता मत करो, या इस बात से बेचैन मत हो कि दुनिया क्षणभंगुर है, या जीवन के तुच्छ सांसारिक फलों को देखकर इस बात का अफसोस मत करो कि तुम इस दुनिया में आए हो। बल्कि, जीवन की तुच्छता के कारण ही तुम इस दुनिया में आए हो।
आपके अस्तित्व का "जीवन तंत्र" एक बर्तन की तरह है जो सदा जीवित और सदा आत्मनिर्भर परमेश्वर का है, जो जीवन की सभी जरूरतों को पूरा करता है और व्यय। इसके अलावा, जीवन के असंख्य लक्ष्य इसे कई महत्वपूर्ण कार्यों की ओर निर्देशित करते हैं परिणाम, जिनमें से लगभग सभी उससे संबंधित हैं। आप बस एक कर्णधार हैं उस जहाज़ पर, इसलिए अपना कर्तव्य ठीक से निभाओ। अपना वेतन पाओ और उससे मिलने वाले आनंद से संतुष्ट रहो। उस जहाज़ की क़ीमत और उसके महत्व पर विचार करो बहुमूल्य लाभ, और इसके मालिक की उदारता की भयावहता पर विचार करें करुणा। अपने कर्तव्य को सही तरीके से निभाने के लिए आनन्दित हों और धन्यवाद दें आपके जीवन के परिणाम एक तरह से अच्छे कर्मों के रूप में दर्ज किए जाएंगे अनंत काल में आपके अमर जीवन को सुरक्षित करना।

सातवाँ वाक्य: ...और मरने का मतलब है कि वह आपको मुक्ति देता है जीवन का कर्तव्य, आपके निवास को इस क्षणभंगुर दुनिया से शाश्वत में बदल देता है, और आपको सेवा के बोझ से मुक्त करता है.

यह वाक्यांश घोषणा करता है: अच्छी खबर! मृत्यु विनाश या अस्तित्वहीनता नहीं है, न ही कोई शाश्वत अलगाव या बिना किसी लेखक के कोई आकस्मिक घटना। बल्कि सर्वज्ञ और सर्व-दयालु लेखक आपको सेवा से मुक्त कर रहा है, आपका निवास बदल रहा है, और आपको उस शाश्वत खुशी में भेज रहा है जो आपका सच्चा घर है। मृत्यु मध्यवर्ती दुनिया के साथ मिलन का द्वार है, जहाँ आप अपने 99 प्रतिशत दोस्तों से मिलेंगे।

आठवाँ वाक्य: वह हमेशा जीवित रहता है और कभी नहीं मरता इसका मतलब है कि वह अमर पूजा का पात्र और शाश्वत प्रिय, जिसकी सुंदरता, पूर्णता और परोपकारिता इस दुनिया में अपने समकक्षों से पूरी तरह श्रेष्ठ है और जो सभी प्राणियों के प्रेम को जगाती है, उसका जीवन शाश्वत है। उसकी सुंदरता की एक अभिव्यक्ति सभी अन्य प्रियजनों की जगह ले लेती है। उसका शाश्वत जीवन समाप्ति या क्षणभंगुरता के किसी भी निशान से मुक्त है, और इसमें कोई दोष या कमी नहीं है।

यह वाक्य सभी चेतन प्राणियों, चाहे वे मनुष्य हों या जिन्न, और सभी प्रेमियों के लिए घोषणा करता है: शाश्वत प्रियतम आपके प्रियजनों से अलग होने के कारण हुए घावों को भर देगा। चूँकि वह मौजूद है और अमर है, इसलिए उन दूसरों के बारे में चिंता मत करो। तुमने उन्हें उनकी सुंदरता और अच्छाई, कृपा और पूर्णता के कारण प्यार किया। लेकिन ये शाश्वत प्रियतम की शाश्वत सुंदरता की केवल धुंधली, छाया जैसी अभिव्यक्तियाँ हैं, जो कई पर्दों से गुज़री हैं।

इसलिए जब वे गायब हो जाएं तो दुखी मत होइए, क्योंकि वे केवल दर्पण हैं। जब दर्पण बदल जाते हैं, तो उस सौंदर्य का प्रतिबिंब नया हो जाता है और अधिक उज्ज्वल हो जाता है। जब आप उसे पा लेते हैं, तो आपको सब कुछ मिल जाता है।

नौवाँ वाक्य: उसके हाथ में सब अच्छाई है, इसका मतलब है कि सिर्फ़ वही सब अच्छाई रखता है और आपको अच्छाई करने के लिए मार्गदर्शन करता है। साथ ही, वह आपकी ओर से आपके द्वारा किए गए हर अच्छे और नेक काम को रिकॉर्ड करता है।

यह वाक्य घोषणा करता है: ऐ असहाय लोगों और जिन्न, जब तुम मरो तो चिल्लाना मत: "हाय, हमारा जो कुछ भी था वह नष्ट हो गया और हमारे प्रयास व्यर्थ हो गए। हम उस विस्तृत, सुंदर दुनिया को छोड़कर इस संकरी कब्र में प्रवेश कर गए हैं!" सब कुछ सुरक्षित है, क्योंकि तुम्हारे सभी कर्म और सेवाएँ दर्ज हैं। महामहिम, जिसके हाथ में सब भलाई है और जो कुछ भी अच्छा करने में सक्षम है, तुम्हें तुम्हारी सेवा का पुरस्कार देने के लिए बुलाता है। वह तुम्हें अस्थायी रूप से भूमिगत रखेगा और फिर तुम्हें अपनी उपस्थिति में ले आएगा। तुम कितने भाग्यशाली हो कि तुमने अपना कर्तव्य और सेवा पूरी कर ली, क्योंकि तुम्हारा श्रम समाप्त हो गया है और तुम आराम और दया के रास्ते पर हो। परिश्रम करने के बाद, अब तुम अपना

वेतन।

सर्वशक्तिमान महामहिम, जो पिछले वसंत की गतिविधियों और सेवाओं के अभिलेख के रूप में बीज और अनाज को संरक्षित करते हैं और फिर उन्हें खोलते और प्रकाशित करते हैं-

उन्हें अगले वसंत में सबसे चमकदार, प्रचुर मात्रा में और परोपकारी तरीके से देता है, और आपके कर्मों के परिणामों को भी सुरक्षित रखता है। इस प्रकार वह आपको पुरस्कृत करेगा
आपकी सेवा का भरपूर आनन्द उठाऊँगा।

दसवाँ वाक्य: वह हर चीज़ पर शक्तिशाली है इसका मतलब है कि वह एक है और अद्वितीय है और हर चीज़ पर शक्ति रखता है। चूँकि सब कुछ आसान है इसलिए उसके लिए, वसंत का निर्माण करना फूल बनाने और स्वर्ग बनाने जितना आसान है वसंत ऋतु का सृजन करना उतना ही आसान है। अनगिनत जीव जो वह निरंतर लाता है हर पल अस्तित्व में असंख्य भाषाओं के साथ उसकी गवाही देते हैं
असीम शक्ति.

इस वाक्यांश का तात्पर्य है: हे लोगों, आपकी सेवा और पूजा व्यर्थ नहीं है। आपके लिए एक पुरस्कार की दुनिया, आनंद का निवास तैयार किया गया है। एक शाश्वत स्वर्ग क्षणभंगुर दुनिया से आपके आगमन की प्रतीक्षा कर रहा है। विश्वास रखें और
उस महान सृष्टिकर्ता के वादे पर भरोसा रखें, जिसे आप जानते हैं और जिसकी पूजा करते हैं, क्योंकि वह कभी भी अपना वादा नहीं तोड़ता। उसकी शक्ति में कोई दोष नहीं है, और नपुंसकता उसके कामों में हस्तक्षेप नहीं करती। जब वह आपका छोटा बगीचा बनाता है, तो वह
तुम्हारे लिए जन्नत भी बना सकता है। दरअसल, उसने इसे बनाया और वादा किया कि तुम भी जन्नत बनाओगे। वह तुम्हें इसमें प्रवेश देगा।

हर साल हम देखते हैं कि वह पृथ्वी को एकदम सही व्यवस्था और व्यवस्था के साथ तेजी से पुनर्जीवित कर रहा है। अनगिनत पशु और वनस्पति प्रजातियों और समूहों के बावजूद सहजता। ऐसा सर्वशक्तिमान महामहिम अपना वादा पूरा करता है। इसके अलावा, चूँकि वह हर साल स्वर्ग के नमूने बनाता है, जिसका वादा उसने अपने सभी लोगों के ज़रिए किया है
अवतरित पुस्तकें; चूँकि उसके सभी कार्य और निष्पादन सत्य के साथ किए जाते हैं
और गंभीरता; क्योंकि उसके सभी कार्यों की पूर्णता इस बात की ओर संकेत करती है और इसकी गवाही देती है
उनकी अनंत पूर्णता, जिसमें कोई दोष या कमी नहीं है; और चूंकि वादा तोड़ना, झूठ बोलना, छल करना और धोखा देना सबसे बुरे गुण हैं, इसलिए हम
हम निश्चिंत हो सकते हैं कि सर्वशक्तिमान, सर्वशक्तिमान,
पूर्णता, दयालु और कृपालु परमेश्वर अपना वादा पूरा करेंगे।
वह अनन्त खुशी का द्वार खोल देगा और तुम्हें प्रवेश देगा, हे विश्वास रखने वालों!
स्वर्ग में, जो आपके पूर्वज आदम (और पूर्वज हव्वा) का मूल घर था।

ग्यारहवाँ वाक्य: और उसी की ओर घर वापसी है इसका अर्थ है कि सभी लोगों को परीक्षण और परीक्षा की इस दुनिया में विशिष्ट उद्देश्यों के लिए भेजा जाता है। इन्हें पूरा करने के बाद, वे सर्वशक्तिमान की उपस्थिति में लौट आते हैं।
हे प्रभु, महान सृष्टिकर्ता, जिन्होंने उन्हें सबसे पहले भेजा था।
क्षणिक क्षेत्र में, वे कारण-और-प्रभाव की अशांति से मुक्त हो जाते हैं
चक्रों और साधनों और उपकरणों के अस्पष्ट आवरणों से। उसके बाद, वे
अपने दयालु भगवान की उपस्थिति में शाश्वत निवास में सम्मानित और मिलते हैं

उसके साथ, बिना किसी आवरण के, उसके अनन्त राज्य में। हर कोई यह जान लेगा कि उनका निर्माता ही पूज्य, प्रभु, स्वामी और मालिक है।

इस प्रकार यह वाक्यांश निम्नलिखित समाचार को इंगित करता है, जो बाकी सभी से कहीं अधिक खुशी की बात है:

हे लोगों, क्या तुम जानते हो कि तुम कहाँ जा रहे हो, तुम्हें कहाँ ले जाया जा रहा है? तुम दया के क्षेत्र में जा रहे हो, परमेश्वर की शांतिपूर्ण उपस्थिति में

हे सर्वसुन्दर महामहिम! इस संसार में 1,000 वर्षों का सुखमय जीवन, स्वर्ग में एक घंटे के जीवन से, तथा स्वर्ग में 1,000 वर्षों के जीवन से तुलना नहीं किया जा सकता।

उनकी अत्यंत सुन्दर मुख-मुद्रा के एक घंटे के दर्शन की तुलना नहीं की जा सकती। इस संसार के सभी प्राणियों में जो सुन्दरता और आकर्षण दिखाई देता है, उसमें भी सब कुछ है।

जो प्रियजन आपको इतना मोहित करते हैं और आपको मोहित करते हैं, वे उसकी सुंदरता और उसके नामों की मनोहरता के एक प्रकटीकरण की छाया मात्र हैं। स्वर्ग और उसके आकर्षण

ये सब उसकी दया की अभिव्यक्ति मात्र हैं; सारी लालसा, प्रेम और आकर्षण उसकी दया की अभिव्यक्ति मात्र हैं।

केवल उसके प्रेम के प्रकाश से चमकता है। आप उसकी उपस्थिति में जा रहे हैं

एक शाश्वत पूज्य और शाश्वत प्रिय, और आमंत्रित हैं

स्वर्ग, उसका शाश्वत भोज स्थल। इसलिए कब्र में मुस्कुराते हुए प्रवेश करो।

यह वाक्यांश यह भी घोषणा करता है: हे लोगों, चिंता मत करो या यह मत सोचो कि तुम

विलुप्ति की ओर जाना, अस्तित्वहीनता, शून्यता, अंधकार, विस्मृति, क्षय,

और विघटन। वास्तव में, आप स्थायित्व, शाश्वत अस्तित्व और

उसकी रोशनी की दुनिया में। आप अपने सच्चे मालिक के पास, शाश्वत के पास लौट रहे हैं

संप्रभु की सीट। आप एकता के दायरे में आराम करेंगे और बहुलता में नहीं डूबेंगे। आप एकता के लिए बंधे हैं, अलगाव के लिए नहीं।

दूसरा स्टेशन

(यह स्थान ईश्वर के स्तर पर दिव्य एकता का संक्षिप्त प्रमाण है)
सबसे बड़ा नाम.)

पहला वाक्य: ईश्वर के अलावा कोई ईश्वर नहीं है। यह ईश्वर की एकता की पुष्टि करता है

दिव्यता और उसकी पूजा का एकमात्र उद्देश्य होना। निम्नलिखित एक बहुत ही महत्वपूर्ण बात है

इस स्तर पर ईश्वरीय एकता का सशक्त प्रमाण।

ब्रह्मांड और खास तौर पर पृथ्वी की सतह पर सबसे व्यवस्थित गतिविधि देखने को मिलती है। हम एक सबसे बुद्धिमान रचनात्मकता और सबसे व्यवस्थित प्रकटीकरण देखते हैं, क्योंकि

हर चीज़ को सबसे उचित आकार और रूप दिया जाता है। हम सबसे ज़्यादा भी देखते हैं

स्नेही, उदार और दयालु प्रावधान और उदारता। ऐसे कारक सक्रिय, रचनात्मक, आवश्यक अस्तित्व और एकता को प्रदर्शित करते हैं

खोलना, आकार देना, और महिमा प्रदान करना।

सभी विद्यमान चीजों का निरंतर क्षय और नवीनीकरण यह दर्शाता है कि

वे एक सर्वशक्तिमान निर्माता के पवित्र नामों को प्रकट करते हैं और उसकी रोशनी को प्रतिबिंबित करते हैं;

उस निर्माता की रचनात्मक गतिविधि के कार्य हैं, और कलम के शिलालेख हैं
उसकी नियति और शक्ति; तथा उसकी पूर्णता की कृपा को प्रतिबिम्बित करने वाले दर्पण हैं।

जिस प्रकार ब्रह्माण्ड का स्वामी इस महानतम सत्य तथा अपनी एकता की सर्वोच्च अभिव्यक्ति को सभी शास्त्रों तथा पवित्र ग्रंथों के माध्यम से सिद्ध करता है,
उन्होंने जो पृष्ठ प्रकट किए हैं, सत्य और पूर्णता के सभी लोग इसी डिग्री को सिद्ध करते हैं
अपनी जांच और आध्यात्मिक खोजों के माध्यम से। सृजन भी इंगित करता है
इसमें कलाकारी के चमत्कार, शक्ति के चमत्कार और धन के खजाने का प्रदर्शन किया जाता है
धन-संपत्ति, लाचारी और गरीबी के बावजूद। जो लोग इस बात से इनकार करते हैं कि एकल
एकता में से एक को असंख्य देवताओं को स्वीकार करना चाहिए या सोफिस्टों की तरह इनकार करना चाहिए
अपने और ब्रह्माण्ड के अस्तित्व को सुरक्षित रखें।330

दूसरा वाक्यांश: (वह है) एक ईश्वर की एकता को उसके स्तर पर बताता है
एकता की स्पष्ट अभिव्यक्ति। निम्नलिखित इस स्तर को निर्णायक रूप से साबित करता है।
जब हम ब्रह्माण्ड पर नज़र डालते हैं, तो पहली चीज़ जो हम देखते हैं वह है इसकी उत्तम व्यवस्था
और उसमें व्याप्त संवेदनशील संतुलन। हर चीज़ एक के भीतर मौजूद है
सटीक क्रम और नाजुक संतुलन और माप। करीब से देखने पर, हम पाते हैं
एक निरंतर क्रम और संतुलन। कोई लगातार इसे पुनर्जीवित करता है
पूर्ण नियमितता और सटीक माप के साथ क्रम में। सब कुछ वैसा ही है, जैसा वह है
वे अनगिनत सुव्यवस्थित और संतुलित रूपों में तैयार होने वाले एक मॉडल थे।

इसे और भी करीब से अध्ययन करने पर, हम उस व्यवस्था और संतुलन के पीछे एक बुद्धिमत्ता और न्याय को देखते हैं। हर घटना का एक उद्देश्य होता है, और हर एक घटना एक लाभ प्रदान करती है। और भी करीब से देखने पर यह पता चलता है कि पूरी दुनिया के पीछे एक शक्ति का अस्तित्व है।

हम जो कुछ भी देखते हैं उसमें एक बुद्धिमान गतिविधि, साथ ही एक व्यापक ज्ञान
सभी पहलुओं और कार्यों सहित सब कुछ शामिल करना। एक साथ लिया गया-

---

330 विशेषकर प्लेटो की दृष्टि में, जो कोई भी केवल घटनाओं में सत्य की तलाश करता है,
चाहे वह इसकी व्याख्या व्यक्तिपरक रूप से करे या सापेक्ष रूप से, उसे वहां खोजने की आशा नहीं की जा सकती; तथा
सही दिशा से दूर जाने में उसकी दृढ़ता वस्तुतः अस्वीकृति के बराबर है
दर्शनशास्त्र और सत्य की खोज के बारे में। बाद के कई विचारकों, जिनके लिए तत्वमीमांसा, या वास्तविकता की गहनतम प्रकृति की जांच, दर्शनशास्त्र की सर्वोच्च उपलब्धि थी, ने प्लेटो के साथ महसूस किया है कि सोफिस्ट इतने तत्वमीमांसा विरोधी थे कि

वे दार्शनिक होने का दावा नहीं कर सकते। लेकिन ऐसे दौर में जब कई दार्शनिकों के लिए,
तत्वमीमांसा अब दर्शनशास्त्र का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा नहीं रह गया है और कुछ लोगों के लिए तो यह अब भी दर्शनशास्त्र का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा नहीं है।
कुल मिलाकर, अनेक समस्याओं और सिद्धांतों के प्रति लोगों की समझ बढ़ रही है
5वीं और 4थी शताब्दी ईसा पूर्व में सोफिस्टों की चर्चाओं में। 18वीं और 19वीं शताब्दी के आरंभ में
19वीं सदी में सोफिस्टों को ढोंगी माना जाता था। उनकी बौद्धिक ईमानदारी
उन पर आरोप लगाया गया और उनके सिद्धांतों को ग्रीस के नैतिक ढांचे को कमजोर करने के लिए दोषी ठहराया गया।
आरोप दो तर्कों पर आधारित था, दोनों सही: पहला, कि कई सोफिस्ट
पारंपरिक रूप से स्वीकृत नैतिक संहिता पर हमला किया; और दूसरा, उन्होंने खोजबीन की और यहां तक कि
नैतिकता के प्रति वैकल्पिक दृष्टिकोण की सराहना की जो व्यवहार को क्षमा या अनुमति देगा
एक प्रकार का कठोर पारंपरिक कोड के तहत अस्वीकार्य। (सं.)

उह, इनसे पता चलता है कि एक सर्वशक्तिमान और सर्वज्ञ परमेश्वर हमारे पीछे काम करता है
व्यवस्था और संतुलन का आवरण, वह जो हर चीज को सबसे अधिक नियमानुसार आदेश देता है
संवेदनशील संतुलन और सार्वभौमिक उद्देश्य एवं न्याय के लिए।

जब हम सभी चीज़ों, खास तौर पर जीवित प्राणियों की शुरुआत और अंत का विश्लेषण करते हैं, तो हम पाते हैं कि उनके बीजों में उन सभी प्राणियों के अंग और संरचनाएँ समाहित होती हैं। उनके फलों में भी प्राणियों के अर्थ समाहित होते हैं।
उनके दर्ज जीवन-इतिहास के रूप में, फ़िल्टर और केंद्रित रूप में। बीज
यहां तक कि यह भी कहा जा सकता है कि ये सिद्धांतों का कोडित संग्रह है
जिससे वे सृजित हुए हैं; उनके फल उनकी सृष्टि और वृद्धि के आदेशों का सूचक हैं।

जब हम जीवित प्राणियों के बाहरी और आंतरिक चेहरों को देखते हैं, तो हम आसानी से एक अत्यंत बुद्धिमान शक्ति के स्वतंत्र नियंत्रण और एक प्रभावी इच्छा के फैशन और व्यवस्था को देख सकते हैं। शक्ति सृजन करती है, और इच्छा डिजाइन और फैशन करती है।
वे सभी अपने आरंभ के कारण ज्ञान के निर्देशों को प्रदर्शित करते हैं; अपने अंत के कारण निर्माता की योजना और घोषणा को;
उनके बाहरी रूपों का, एक कलात्मक, अच्छी तरह से बनाया गया परिधान जो वह करता है
वह जो चाहे उन्हें पहनने को कहता है; और, उनके आंतरिक रूप के कारण,
एक सर्वशक्तिमान की सुव्यवस्थित मशीनरी।

इस प्रकार, कोई भी समय, स्थान या वस्तु उस एक की समझ से परे नहीं है।
राजसी निर्माता की शक्ति। एक सर्वशक्तिमान इच्छाशक्ति वाले व्यक्ति की शक्ति
सभी चीजों और उनके कार्यों को व्यवस्थित और निर्देशित करता है। व्यवस्था और अनुग्रह
एक दयालु और दयावान की कृपा उन्हें सुंदर बनाती है, और
वह परम स्नेही और परम उदार परमेश्वर उन्हें आभूषणों से सुशोभित करता है।

जो लोग सतर्क हैं वे व्यवस्था और संतुलन को देख सकते हैं, तथा स्पष्ट रूप से दिखाई देने वाले कार्य भी देख सकते हैं।
आदेश देने और संतुलन बनाने की, जो सभी उसके पूर्ण रूप से प्रदर्शित करते हैं
एकता, वह जो एकल, अद्वितीय, एकमात्र, सर्वशक्तिमान, इच्छाशक्ति से युक्त है,
सर्वज्ञ और सर्वविवेकशील।

हर चीज़ में एकता का एक पहलू होता है, और एकता एक की ओर इशारा करती है।
उदाहरण के लिए, संसार एक दीपक (सूर्य) से प्रकाशित होता है, और इस प्रकार संसार का प्रकाश भी एक दीपक (सूर्य) से प्रकाशित होता है।
मालिक एक है। पृथ्वी के सभी जीवित प्राणियों को हवा, आग और पानी से सेवा दी जाती है,
जिनमें से प्रत्येक एक और सरल है (मिश्रित नहीं)। ऐसा होने पर, एक
जो उन्हें हमारे अधीन रखता है और काम में लाता है, वह भी एक ही है।

तीसरा वाक्य: उसका कोई साथी नहीं है। चूँकि यह बात बीसवें वचन के पहले अध्याय में सिद्ध हो चुकी है, इसलिए हम पाठकों को इसका संदर्भ देते हैं।331

---

331 नूरसी ने कहा, शब्द.

चौथा वाक्यांश: संप्रभुता उसकी है इसका मतलब है कि वह सब कुछ का मालिक है— धरती से लेकर भगवान के सिंहासन तक, जमीन से लेकर आसमान तक, कण-कण से लेकर सभी खगोलीय पिंड, साथ ही भूत और भविष्य की अनंतता में मौजूद सभी चीज़ें और इस दुनिया और परलोक में भी।332 उसके पास स्वामित्व की सर्वोच्च और सबसे व्यापक डिग्री है, और ईश्वरीय सत्ता की सबसे बड़ी अभिव्यक्ति है एकता। इन सच्चाइयों का एक बहुत ही मजबूत सबूत एक बार मुझे अरबी में मिला। उस सुखद स्मृति के लिए, मैं नीचे उन वाक्यांशों की व्याख्या करता हूँ:

> संप्रभुता उसी की है क्योंकि स्थूल जगत सूक्ष्म जगत के समान है दोनों ही उसकी शक्ति के कार्य और उसकी नियति के संदेश हैं।• उसने स्थूल जगत का आविष्कार किया, उसे दंडवत प्रणाम और उपासना का स्थान बनाया, और सूक्ष्म जगत का निर्माण किया, जिससे वह दण्डवत हो गया।• उसने पूर्व का निर्माण किया और उसे अपनी संपत्ति बना लिया, और बाद वाले का आविष्कार किया, उसे एक सेवक बना दिया।• पूर्व में उनकी कला एक पुस्तक के रूप में प्रकट हुई, और बाद वाले में उनका फैशन और "रंग" भाषण के माध्यम से खुद को प्रदर्शित करता है।•
> पूर्व में उनकी शक्ति उनकी महानता को प्रकट करती है, और उत्तरार्द्ध में उनकी दया उनके उदार दानों को संगठित करती है।• पूर्व में उनकी महानता गवाही देती है उनकी एकता, और उनकी उदारता यह घोषणा करती है कि वह एक हैं और अद्वितीय.• पूर्व पर उसकी मुहर सभी चीजों पर समग्रता से है, और उत्तरार्द्ध पर उसकी मुहर प्रत्येक विशेष शरीर और अंग पर है।

प्रथम खंड: स्थूल जगत (ब्रह्मांड) और सूक्ष्म जगत दोनों के रूप में (मानवता) उसकी शक्ति के कार्य और उसकी नियति के संदेश हैं, वे दोनों प्रदर्शित करते हैं ईश्वरीय शक्ति और भाग्य की कलम से लिखे गए उनके एकत्व के प्रमाण।

मानवता, यद्यपि छोटे पैमाने पर, उसी सुव्यवस्थित कला को प्रदर्शित करती है ब्रह्मांड में देखा गया। जिस तरह ब्रह्मांड की कला एकल निर्माता की ओर इशारा करती है, मानवता की सूक्ष्म कला उस निर्माता की गवाही देती है और उसका प्रदर्शन करती है एकता। जिस तरह मानवता भगवान का एक सार्थक संदेश है, उनकी नियति का एक सु-रचित स्तोत्र है, उसी तरह ब्रह्मांड भी नियति की उसी कलम द्वारा रचित एक और सु-रचित स्तोत्र है, लेकिन एक विशाल पैमाने पर। इसे देखते हुए, कैसे हो सकता है एकता के एकमात्र के अलावा कुछ भी या कोई भी व्यक्ति अपनी मुहर नहीं लगाता

---

332 अतीत अनंत काल (अज़ल) केवल समय का प्रारंभिक बिंदु नहीं है और इसलिए यह समय के लिए आवश्यक है। चीजों का अस्तित्व। वास्तव में, यह एक दर्पण की तरह है जो अतीत, वर्तमान और भविष्य को दर्शाता है समय। लोग अतीत के समय की एक सीमा की कल्पना करते हैं, जो समय की एक श्रृंखला के माध्यम से विस्तारित होती है। चीजें, और इसे अतीत अनंत काल कहते हैं। लेकिन यह गलत है, जैसा कि निम्नलिखित उदाहरण से पता चलता है: कल्पना कीजिए कि आप एक दर्पण पकड़े हुए हैं जो दाहिनी ओर अतीत और दाहिनी ओर भविष्य को दर्शाता है। बाईं ओर। दर्पण एक समय में केवल एक दिशा को प्रतिबिंबित कर सकता है, क्योंकि दोनों को एक साथ दिखाने के लिए आपको अपनी मूल स्थिति से बहुत ऊपर उठना होगा और एक ऐसे बिंदु पर पहुंचना होगा जहां दोनों दायाँ और बायाँ एक हो जाते हैं, जिससे किसी भी चीज़ को पहला या अंतिम, आरंभिक कहना असंभव हो जाता है या अंत.

क्या आप लोगों के चेहरों को एक समान संरचना और रूप देकर उनमें से प्रत्येक को अद्बितीय बनाना चाहते हैं, या फिर आप ब्रह्मांड पर अपनी एकता की मुहर लगाना चाहते हैं, जिसके सभी प्राणी एक दूसरे के साथ मिलकर काम करते हैं?

दूसरा खंड: उन्होंने ब्रह्माण्ड का आविष्कार किया और इसे सजदा और पूजा का स्थान बनाया। सर्वज्ञ निर्माता ने ब्रह्माण्ड को एक नए और अद्भुत रूप में बनाया और इसे एक विशाल मस्जिद बनाने के लिए उस पर अपनी महानता के चिन्ह अंकित किए। इसके भीतर, उन्होंने उन चिन्हों को पढ़ने के लिए बौद्धिक प्राणियों के रूप में पुरुषों और महिलाओं का निर्माण किया, और उनकी पूजा में उनके सामने झुकने और उनकी चमत्कारी कला और अद्भुत, मूल शक्ति पर आश्चर्यचकित होकर सजदा करने की प्रवृत्ति के साथ। यह देखते हुए, मानवता एकता के उस एकल निर्माता के अलावा किसी और की पूजा कैसे कर सकती है?

तीसरा खंड: उसने सूक्ष्म जगत की रचना की, जिससे वह दण्डवत हो गया। वह पहले वाले का स्वामी है और दूसरे वाले को अपना सेवक बनाता है। प्रभुता के महान स्वामी ने स्थूल जगत, विशेष रूप से पृथ्वी को अनगिनत संकेन्द्रित क्षेत्रों के रूप में बनाया, जिनमें से प्रत्येक एक कृषि योग्य क्षेत्र है जिसमें वह अनंत काल तक फसल बोता, काटता और काटता है। वह निरंतर अपनी संपत्ति का प्रबंधन करता है और उसे काम करने के लिए प्रेरित करता है। उसने कणों या परमाणुओं की दुनिया (सबसे बड़ा क्षेत्र) को एक ऐसा क्षेत्र बनाया जिसमें वह अपनी शक्ति और बुद्धि के साथ ब्रह्मांड की फसलों को बोता और काटता है, और फिर उन्हें अदृश्य दुनिया में, शक्ति के क्षेत्र से ज्ञान के क्षेत्र में भेजता है। पृथ्वी (एक मध्यम क्षेत्र) खेती का एक और स्थान है जिसमें वह हर मौसम में प्रजातियाँ लगाता है और फिर उन्हें काटता और काटता है। वह इसकी अमूर्त फसलों (हर चीज़ के जीवन के परिणाम) को अदृश्य की अमूर्त दुनिया में भेजता है।

वह लगातार हर बगीचे (एक छोटा क्षेत्र) को शक्ति से भरता है और बुद्धि से खाली करता है। वह सभी सजीव प्राणियों (एक और भी छोटा क्षेत्र) को उनसे कहीं ज़्यादा बड़ी फसल पैदा करने के लिए प्रेरित करता है। संक्षेप में, संप्रभुता का वह राजसी स्वामी सभी चीज़ों को मॉडल के रूप में बनाता है और उन्हें हमेशा अलग-अलग तरीकों से तैयार करता है।

अपनी कला की बुनाई का उपयोग करते हुए, वह अपने नामों और अपनी शक्ति के चमत्कारों को प्रकट करने के लिए उन्हें हमेशा नए शिलालेखों से अलंकृत करता है। सब कुछ एक पृष्ठ है जिस पर वह अनगिनत तरीकों से अपने सार्थक संदेश अंकित करता है, अपनी बुद्धि के संकेतों को प्रदर्शित करता है, और उन्हें पढ़ने के लिए सचेत प्राणियों को रखता है। स्थूल जगत को एक संवर्धित संपत्ति बनाने के बाद, उसने मानवता को संरचनाओं और अंगों, इंद्रियों और भावनाओं और विशेष रूप से एक आत्मा के साथ बनाया और संपन्न किया। फिर उसने ऐसी इच्छाएँ, भूख, प्रेरणाएँ और माँगें प्रत्यारोपित कीं कि प्रत्येक व्यक्ति को उस विशाल संपत्ति की अनंत आवश्यकता है।

यह देखते हुए, कौन या कौन सी वस्तु या प्राणी उस संपत्ति पर स्वतंत्र नियंत्रण रख सकता है और उसके सेवकों का स्वामी हो सकता है, सिवाय उस महान संप्रभु स्वामी के, जिसने सब कुछ एक कृषि योग्य संपत्ति बना दिया; जिसने मानवता को (उसकी भौतिक तुच्छता के बावजूद) उस विशाल संपत्ति में अधीक्षक, निरीक्षक, किसान, व्यापारी, उद्घोषक और उपासक के रूप में नियुक्त किया; और जिसने पुरुषों और महिलाओं को अपने सम्मानित अतिथि और प्रिय अभिभाषक के रूप में लिया?

चौथा खंड: पूर्व में उनकी कला एक पुस्तक के रूप में प्रकट हुई थी, और बाद में उनकी रचना और “रंग” भाषण के माध्यम से प्रदर्शित हुई।
महान निर्माता अपनी सार्थक कला को एक पुस्तक के रूप में स्थूल जगत में प्रकट करता है, जिससे ब्रह्मांड बोधगम्य हो जाता है। परिणामस्वरूप, लोग इससे सभी सच्चे वैज्ञानिक ज्ञान प्राप्त करते हैं और इसके अनुसार सभी वैज्ञानिक ग्रंथ लिखते हैं। परम सत्य पर आधारित ज्ञान की यह सार्वभौमिक पुस्तक, कुरान के रूप में घोषित की गई है, जो उस विशाल प्रकट पुस्तक की एक प्रति है।

जिस तरह उनकी उत्तम कला ऊपर बताए अनुसार प्रकट होती है, उसी तरह मानवता में उनके रंग और उनकी बुद्धि के शिलालेख वाणी के फूल को खोलते हैं। दूसरे शब्दों में, उनकी कला इतनी अर्थपूर्ण, नाजुक और सुंदर है कि यह उस सजीव प्राणी के घटकों को बोलने के लिए प्रेरित करती है।

उस दिव्य कला ने मानवता को इतना रंग दिया ('सबसे सुंदर रूप'), कि एक अमूर्त, अमूर्त, और फिर भी जैविक चीज़ - वाणी का फूल - प्रत्येक व्यक्ति के भौतिक, भौतिक और ठोस सिर के भीतर खिलता है। इसके अलावा, उस दिव्य कला ने वाणी और अभिव्यक्ति की शक्ति को विकसित उपकरणों और विस्तृत क्षमताओं और संकायों से सुसज्जित किया, जो इसे शाश्वत में विकसित करने के लिए आवश्यक थे।

प्रभु के अभिभाषक। इस प्रकार मानवता के मूल स्वभाव में दिव्य रंग ने दिव्य वाणी के फूल को खिल दिया। एकता के एकमात्र के अलावा और कौन या क्या ऐसा चमत्कारी काम कर सकता है?

पाँचवाँ खंड: पहले खंड में उनकी शक्ति उनकी महानता को प्रकट करती है; दूसरे खंड में उनकी दया उनकी कृपाओं को संगठित करती है। निर्माता की शक्ति, भव्यता और महिमा के माध्यम से खुद को प्रकट करते हुए, ब्रह्मांड को एक शानदार महल के रूप में बनाती है जो सूर्य (उसकी विद्युत रोशनी), चंद्रमा (उसका दीपक), और सितारों (मोमबत्तियाँ) से सुशोभित और प्रकाशित होता है। वह पृथ्वी को एक लदी हुई मेज, एक कृषि योग्य क्षेत्र और उद्यान बनाता है, और प्रत्येक पहाड़ को एक गोदाम, एक खूंटी, एक किला बनाता है। वह सभी चीजों को एक विशाल पैमाने पर और उस महल की आवश्यकताओं के रूप में प्रदान करता है, जिससे वह अपने प्रभुत्व की महिमा को सबसे चमकदार तरीके से प्रदर्शित करता है।

इसी प्रकार, वह प्रत्येक जीवित प्राणी पर अपनी कृपा बरसाकर अपनी दया को कृपालुता के रूप में प्रकट करता है। जैसे वह अपनी उदारता से उनका पालन-पोषण करता है, वैसे ही वह उन्हें अपनी दयालुता और कृपा के प्रकटीकरण से सुशोभित करता है।

उदारता। और इसलिए वह सूर्य जैसे विशाल पिंडों को अपनी महिमा घोषित करने का कारण बनता है
महामहिम, दयालु, महान, अपने नामों के माध्यम से कहते हैं: “हे
राजसी, हे महान, हे पराक्रमी," जबकि छोटे चेतन जीव
जैसे मक्खियाँ और मछलियाँ उसकी दया का बखान करते हुए कहते हैं: "हे दयालु, हे
हे दयालु, हे उदार।" भगवान के अलावा और कौन या क्या है?
दयालु महामहिम, कृपालु महामहिम, इसमें हस्तक्षेप कर सकते हैं
स्थूल जगत की रचना?

छठा खंड: पूर्व में महामहिम अपनी एकता की गवाही देते हैं;
उत्तरार्द्ध में उनकी उदारता यह घोषित करती है कि वह एक और अद्वितीय हैं।
पूरे ब्रह्माण्ड में प्रकट प्रभु की महिमा ईश्वर की एकता को उनके सभी नामों, उनके प्रभु की उदारता के साथ सिद्ध और प्रदर्शित करती है,
जो प्रत्येक जीवित प्राणी के लिए नियमित प्रावधान भेजता है, अपने कुछ नामों के साथ प्रकट अपनी एकता या विशिष्टता को साबित और प्रदर्शित करता है
भाग या विवरण।

ईश्वर वहीद है: सभी प्राणी उसी के हैं, उसी को देखते हैं और उसी से बनाए गए हैं
ईश्वर। ईश्वर अहद है: सृष्टिकर्ता के अधिकांश नाम प्रत्येक व्यक्तिगत वस्तु में प्रकट होते हैं।333 उदाहरण के लिए, पृथ्वी पर सूर्य के प्रकाश का प्रतिबिंब देखा जा सकता है
एकता (वहीदिया) के अनुरूप , जबकि सूर्य प्रत्येक में स्वयं को प्रकट करता है
पारदर्शी वस्तु और पानी एक साथ गिरते हैं (इसके प्रकाश, गर्मी और
इसके प्रकाश में सात रंग) एकता (अहादिया) के लिए एक सादृश्य प्रदान कर सकते हैं।
उसी तरह, प्रत्येक वस्तु में, विशेषकर प्रत्येक जीवित प्राणी में और सबसे बढ़कर प्रत्येक व्यक्ति में अधिकांश दिव्य नामों का प्रकटीकरण एकत्व की ओर संकेत करता है।

इस प्रकार यह धारा इंगित करती है कि लार्डशिप की महिमा, जो नियंत्रित करती है
ब्रह्माण्ड उस विशाल सूर्य को पृथ्वी के लिए सेवक, दीपक और भट्टी बनाता है।
जीवित प्राणी; शक्तिशाली पृथ्वी एक पालना, भवन और व्यापार का स्थान; आग
एक रसोइया और मित्र के रूप में; बादल जल फिल्टर और पोषण के साधन के रूप में;
पहाड़ भंडारगृह और खजाना हैं; हवा जीवित प्राणियों के लिए पंखा है,
जिसमें सांस लेना और पानी जीवन में नए लोगों के लिए एक नर्स के रूप में, वितरक के रूप में शामिल है
मीठा पेय जो जीवित प्राणियों को अस्तित्व के लिए आवश्यक नमी प्रदान करता है। यह दिव्य प्रभुत्व स्पष्ट रूप से दिव्य एकता को दर्शाता है।

---

333 ईश्वर के दो रूपों अर्थात् वहीदिया और रब्बियत का वर्णन करना बहुत कठिन है।
अहदिया, दूसरी भाषा में। वहीदिया, जिसका इस पुस्तक में सामान्यतः एकता के रूप में अनुवाद किया गया है, का अर्थ है
ईश्वर का सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में या सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में, लगभग सभी रूपों में, सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड ...
नाम। अहदिया, जिसका अनुवाद आम तौर पर एकता और/या अद्वितीयता के रूप में किया जाता है, का अर्थ है ईश्वर द्वारा अपने एक या कुछ नामों को विशेष चीज़ों या भागों पर प्रकट करना। इस तरह का नाम अहदिया है, जिसका अर्थ है एकता और/या अद्वितीयता।
अभिव्यक्ति की यह शक्ति प्रत्येक वस्तु या प्राणी को उसकी अपनी प्रकृति और पहचान प्रदान करती है, तथा प्राणियों में भेद उत्पन्न करती है। (अनुवाद)

एकमात्र सृष्टिकर्ता के अलावा और कौन सूर्य को पृथ्वी के निवासियों की सेवा के लिए उपयोग कर सकता है? एकता के एकमात्र परमेश्वर के अलावा और कौन है जो हवा को व्यवस्थित कर सकता है और इसे तेज गति से उपयोग कर सकता है पृथ्वी से संबंधित कई कर्तव्यों वाला सेवक? एकता का एकमात्र सेवक कौन है? आग को पका सकते हैं, और एक छोटी सी लौ से हजारों टन भोजन भस्म हो सकता है हर चीज़, तत्व और आकाशीय पिंड सर्वशक्तिमान की ओर इशारा करते हैं एक तो अपने प्रभुत्व की महिमा को प्रकट करके।

जिस प्रकार अनुग्रह और महिमा के क्षितिज पर एकता स्पष्ट है, उसी प्रकार उदारता भी और परोपकार अनुग्रह और ईश्वरीय एकता के क्षितिज पर ईश्वरीय एकता की घोषणा करते हैं दया। प्रत्येक जीवित प्राणी, विशेष रूप से पुरुष और महिलाएँ, सर्वव्यापी दिव्य कला के सर्वोच्च कृतियों में से हैं, और उनमें विकसित संरचनाएँ और अंग होते हैं जो असंख्य विभिन्न उपहारों को पहचानते हैं और उनकी सराहना करते हैं, इच्छा करते हैं और स्वीकार करते हैं। विशेष रूप से, मानवता सभी के प्रतिबिंबों को अवशोषित करती है
ब्रह्मांड में प्रकट दिव्य नाम। एक केंद्र बिंदु की तरह, सभी लोग भगवान के अधिकांश सुंदर नामों को प्रदर्शित करते हैं और एक साथ उनकी एकता की घोषणा करते हैं
उनके मूल स्वभाव के दर्पण के माध्यम से।

सातवां खंड: पूर्व पर उसकी मुहर उन सभी चीजों पर है जिनमें संपूर्णता; उत्तरार्द्ध पर उसकी मुहर प्रत्येक विशेष शरीर और अंग पर है। जिस तरह राजसी निर्माता की सबसे बड़ी छाप समूचे ब्रह्माण्ड पर है, उसकी छाप एकता का भाव उसके प्रत्येक भाग और प्रजाति पर है। प्रत्येक व्यक्ति का (सूक्ष्म जगत) चेहरा और शरीर दर्शाता है कि ईश्वर एक है, और हर अंग भी यही दर्शाता है। संक्षेप में, सर्वशक्तिमान परमेश्वर सभी चीज़ों पर एकता की मुहर लगाता है उसकी गवाही देते हुए, और प्रत्येक पर उसकी ओर इशारा करते हुए एकता की मुहर।

पाँचवाँ वाक्य: सारी प्रशंसा उसी की है। क्योंकि सिद्धियाँ देखी गई हैं सभी प्राणियों में (स्तुति देने और श्रद्धांजलि देने के अवसर) सभी उसके हैं, प्रशंसा उसी की है। सभी स्तुतियाँ और प्रशंसाएँ, चाहे वे किसी भी मूल और समय की हों, ये सभी बातें उसी को संबोधित हैं, क्योंकि प्रशंसा उदारता और उपकार, पूर्णता और कृपा से होती है, और क्योंकि प्रशंसा की ओर ले जाने वाली हर चीज उसी की है।
दरअसल, कुरान में कहा गया है कि जो कुछ भी प्राणी करता है या करता हुआ देखा जाता है, वह सब उसके लिए हानिकारक है। वास्तव में, इसकी पूजा, महिमा, साष्टांग प्रणाम, प्रार्थना और स्तुति है -
ये सभी लगातार ईश्वरीय न्यायालय की ओर बढ़ते हैं। निम्नलिखित तुलना ईश्वर की एकता की पुष्टि करने वाले इस सत्य को दर्शाती है।

हम ब्रह्माण्ड को एक विशाल बंद पार्क के रूप में देखते हैं, जिसकी छत ऊंची-ऊंची चट्टानों से चमक रही है। सितारों और इसकी जमीन पर अलंकृत प्राणियों का निवास है। इस रूप में, हम देखते हैं इसकी सुव्यवस्थित, चमकदार खगोलीय पिंड और उद्देश्यपूर्ण और अलंकृत सांसारिक प्राणी एक साथ और अपनी विशेष भाषाओं में उच्चारण करते हैं:

"हम महामहिम की शक्ति के एक सर्वशक्तिमान व्यक्ति के चमत्कार हैं। हम एक सर्वज्ञ निर्माता, एक सर्वशक्तिमान निर्माता की एकता के साक्षी हैं।"

पृथ्वी को एक बगीचे के रूप में देखते हुए जिसमें बहुरंगी और सुंदर ढंग से व्यवस्थित फूलों वाले पौधों की अनगिनत किस्में हैं और जिसके माध्यम से असंख्य पशु प्रजातियां बिखरी हुई हैं, हम उन्हें उनकी सुव्यवस्थित संरचनाओं और सुव्यवस्थित रूपों के माध्यम से घोषणा करते हुए देखते हैं: "हम में से प्रत्येक एक चमत्कार है, एक चमत्कार है, एक चमत्कार है।"
एक सर्वज्ञ निर्माता द्वारा निर्मित कला का आश्चर्य, एक अग्रदूत और गवाह
उनकी एकता।”

उस बगीचे के पेड़ों के ऊपरी हिस्सों को देखते हुए, हम जानबूझकर, बुद्धिमानी से, उदारता से, और खूबसूरती से बनाए गए फलों और फूलों को देखते हैं। वे घोषणा करते हैं
एक जीभ: "हम एक दयालु कृपालु और पूर्ण करुणामय परमेश्वर के चमत्कारी उपहार और अद्भुत उपहार हैं।"

इस प्रकार पार्क के खगोलीय पिंड और प्राणी, बगीचे के पौधे और
झाड़ियों, और उसके पेड़ों और वनस्पतियों के फूल और फल गवाही देते हैं और दावा करते हैं: "हमारा निर्माता और निर्माता, जिसने हमें ऐसे उपहार दिए हैं, नियंत्रित करता है
सभी चीज़ें। उसके लिए कुछ भी मुश्किल नहीं है या उसकी शक्ति से परे नहीं है,
जिसमें सब कुछ बराबर है और उसका मूल्य भी एक ही है। सबसे बड़ा उतना ही आसान है जितना कि सबसे बड़ा
उसकी शक्ति के सापेक्ष वह सबसे छोटा है; और छोटा भी उतना ही कलात्मक है जितना बड़ा।
वास्तव में, छोटे में कलात्मकता बड़े की तुलना में अधिक है।”

सभी भूतकालीन घटनाएँ, जो उसकी शक्ति के चमत्कार हैं, इस बात की गवाही देती हैं कि
पूर्णतया शक्तिशाली परमेश्वर ही सभी चमत्कारों को प्रभाव में लाता है और अस्तित्व में लाता है।
भविष्य की आकस्मिकताएँ। जिसने कल को लाया, वह भविष्य को भी लाएगा
कल, वह सर्वशक्तिमान सत्ता जिसने अतीत का निर्माण किया, भविष्य का निर्माण करेगी,
और वह तत्वदर्शी रचयिता जिसने इस संसार को बनाया है, वही आख़िरत को भी बनाएगा। अतः
जिस प्रकार सर्वशक्तिमान महामहिम ही पूजा के सच्चे पात्र हैं, उसी प्रकार वे भी
केवल वही ऐसी प्रशंसा के योग्य हैं। क्योंकि वे अनन्य रूप से पूजे जाने वाले हैं।
एक, सारी प्रशंसा और महिमा उसी की है।

क्या वह अत्यन्त बुद्धिमान् रचयिता, जिसने आकाशों और पृथ्वी को बनाया, अपने लोगों को छोड़ देगा?
लोग अपने आप में और बिना किसी उद्देश्य के, भले ही वे वृक्ष हैं
सृष्टि के सबसे महत्वपूर्ण और उत्तम फल में से कौन सा फल है? क्या वह उन्हें त्याग देगा?
बेतरतीब कारण और प्रभाव के लिए, जिससे उसकी गहन बुद्धि निरर्थकता में बदल जाती है? क्या कोई बुद्धिमान और जानकार व्यक्ति पेड़ लगाएगा और उसकी देखभाल करेगा ताकि वह अपने जीवन में सफल हो सके?
इसे महत्वपूर्ण उद्देश्यों के लिए तैयार करने के लिए, केवल इसके फलों को सड़ने या खाने के लिए छोड़ दिया जाता है
चोरों को बर्खास्त करना? बिलकुल नहीं, क्योंकि पूरा उद्देश्य फल पैदा करना है।

मानवता ब्रह्माण्ड की चेतन सत्ता है, सबसे उत्तम फल, परिणाम,
और लक्ष्य। यह देखते हुए, ब्रह्मांड के सर्व-बुद्धिमान निर्माता ने मानव को क्यों दिया-

क्या यह दूसरों को इसके फल - प्रशंसा और आराधना, धन्यवाद और प्रेम - प्रदान कर सकता है? ऐसा करने से क्या होगा?
ईश्वरीय बुद्धि और मानवता के निर्माण के उद्देश्य को निष्प्रभावी कर देना, उसकी
नपुंसकता के साथ शक्ति, और अपने सर्वव्यापी ज्ञान को में परिवर्तित करें
अज्ञानता.

चूँकि चेतन प्राणी ब्रह्माण्ड के सृजन के पीछे दिव्य उद्देश्यों की धुरी हैं, इसलिए उन्हें प्राप्त होने वाले उपहारों के लिए उनका धन्यवाद और पूजा की जाती है।
केवल निर्माता की ओर ही निर्देशित किया जा सकता है। वह जो वसंत या सभी का निर्माण नहीं कर सकता
फल (जिन पर एक ही मुहर लगी होती है) सेब नहीं बना सकते, इसे किसी को उपहार और अनुग्रह के रूप में दे सकते हैं, और फिर उस व्यक्ति का धन्यवाद प्राप्त कर सकते हैं (साझा करना)
(उसी की स्तुति हो जो उसका हकदार है)।

यह देखते हुए, ब्रह्मांड के निर्माता और राजसी प्रदाता, जो बनाए रखते हैं
सभी प्राणियों को अपने वश में कर लेता है और अपनी कलाओं के माध्यम से स्वयं को चेतन प्राणियों से प्रिय बना लेता है।
असंख्य चमत्कार, अपना धन्यवाद और पूजा, प्रशंसा और
प्रकृति और कारणों के प्रति प्रेम, मान्यता और कृतज्ञता। ऐसा करना उनके प्रेम को नकारना होगा
पूर्ण बुद्धि और उनके आधिपत्य की संप्रभुता को निरस्त करें। सभी धन्यवाद और
स्तुति केवल उसी की है, क्योंकि ब्रह्मांड की वास्तविकता निरंतर घोषणा करती है
सत्य की वाणी से: "प्रत्येक प्राणी, अतीत अनंत काल से लेकर भविष्य के अनंत काल तक, उसकी स्तुति करता है।"

छठा वाक्य: केवल वही जीवन देता है अर्थात चूँकि केवल वही जीवन दे सकता है,
केवल वही कुछ भी बना सकता है, क्योंकि ब्रह्मांड की आत्मा, प्रकाश, सार, परिणाम,
और क्रीम जीवन है। इस प्रकार जीवन का दाता ब्रह्मांड का निर्माता होना चाहिए और
वह जो स्वयं सनातन और आत्म-निर्भर है। तुलना
नीचे दिया गया चित्र परमेश्वर की अभिव्यक्ति के इस स्तर पर उसकी एकता को सिद्ध करता है।

हम जीवित प्राणियों की भव्य और असंख्य सेनाओं को देखते हैं
पृथ्वी की सतह पर उनके तंबू गाड़े गए। इन सेनाओं में से, सदा-जीवित,
आत्मनिर्भर एक हर वसंत से एक नई और ताजा संगठित सेना भेजता है
अदृश्य दुनिया। इस सेना में अनगिनत अद्वितीय वनस्पति और पशु राष्ट्र शामिल हैं। हालांकि हर एक की वर्दी, प्रावधान, निर्देश, छुट्टी,
सेना और सेवा अवधि अलग-अलग होने के बावजूद, एक ही कमांडर-इन-चीफ उनकी सभी आवश्यकताओं को पूरा करता है
अपनी असीम शक्ति और बुद्धि, असीम ज्ञान और इच्छाशक्ति के माध्यम से,
अनंत दया और अक्षय खजाने। कोई विस्मरण, भ्रम नहीं है,
या देरी - केवल पूर्ण व्यवस्था और संतुलन। वह प्रशिक्षण देता है और सेना को हटाता है
प्रत्येक को उसकी विशिष्ट सेवा और चरित्र के अनुसार।

केवल सर्वज्ञ ही उस सेना के बारे में सब कुछ जान सकता है। केवल पूर्ण शक्ति वाला ही उस सेना का प्रशासन कर सकता है।
और इसकी ज़रूरतें। इस वार्षिकी में और कौन या क्या हस्तक्षेप कर सकता है और हिस्सा ले सकता है-

इस आंदोलन में पुनरुत्थान और सटीक प्रशासन का प्रदर्शन किया गया है
प्रशिक्षण और निरंतरता?

हमारी [अंतर्निहित] अक्षमता हमें केवल एक बटालियन को ही सुसज्जित करने की अनुमति देती है, भले ही उसमें दस अलग-अलग जनजातियाँ शामिल हों। लेकिन सदा जीवित,
स्वावलंबी अपनी भव्य सेना के असंख्य कबीलों में से प्रत्येक को उनके जीवन के लिए आवश्यक साजो-सामान सहजता से उपलब्ध कराता है और ऐसा अत्यंत सरलता से करता है।
बुद्धिमान और सटीक आदेश। वह उस शक्तिशाली सेना को एक साथ उच्चारण करने का कारण बनता है
जीभ: "वही है जो जीवन लाता है," और ब्रह्मांड की मस्जिद में उस विशाल मण्डली को पढ़ने के लिए प्रेरित करता है:

> हे ईश्वर! उसके अलावा कोई ईश्वर नहीं है - वह जीवित, स्वयं-निर्भर, शाश्वत है।
> उसे नींद या ऊंघ नहीं आती। आसमान और आसमान में जो कुछ है, वह उसका मालिक है।
> पृथ्वी पर। जब तक वह इसकी अनुमति न दे, कौन उससे मध्यस्थता कर सकता है?
> जानता है कि उनके आगे और पीछे क्या है, जबकि वे उसके चारों ओर घेरा डाले हुए हैं
> वह केवल वही जानता है जो वह चाहता है। उसका सिंहासन आकाश और पृथ्वी को अपने में समेटे
> हुए है, और उसे उन दोनों को थामे रखने में कभी थकान नहीं होती। वह
> वह सर्वोच्च, सर्वोच्च है। (2:255)

सातवाँ वाक्य: वह मृत्यु का कारण बनता है। वह जीवन देता है और वापस लेता है। मृत्यु
यह प्रकृति और उसके कारणों के कारण विनाश या विलुप्ति नहीं है। बल्कि,
जैसे एक बीज बाहर से सड़ता और मरता है, जबकि भीतर से नया और समृद्ध होता है।
अधिक विस्तृत जीवित पौधे के लिए, मृत्यु अनंत जीवन की शुरुआत है। इस प्रकार
वह परम शक्तिशाली है जो मृत्यु का सृजन करता है, जीवन प्रदान करता है और उसका संचालन करता है।
हम नीचे दिव्य एकता की इस अभिव्यक्ति का एक शक्तिशाली प्रमाण प्रस्तुत कर रहे हैं।

ईश्वरीय इच्छा समस्त अस्तित्व को एक सतत प्रवाह में गतिशील रखती है।
उदाहरण के लिए, ब्रह्माण्ड अपने प्रभु के आदेश से निरंतर गतिमान रहता है। सभी प्राणी, ईश्वर की आज्ञा से, समय की धारा में निरंतर बहते रहते हैं।
अदृश्य जगत, यहाँ बाह्य (भौतिक) अस्तित्व के वस्त्र पहने हुए हैं और
फिर वे व्यवस्थित रूप से दूसरी दुनिया में चले गए। प्रभु की आज्ञा से, वे
निरंतर भविष्य से आते हैं, वर्तमान पर रुकते हैं, और फिर डाले जाते हैं
अतीत में।

यह व्यवस्थित प्रवाह अत्यंत बुद्धिमानीपूर्ण दया और परोपकार के साथ किया जाता है।
यह सुसंगत आंदोलन एक अत्यंत ज्ञानी बुद्धि द्वारा किया जाता है और
प्रवाह की धारा को चिंता और संतुलन के साथ प्रबंधित किया जाता है।
हर काम निश्चित उद्देश्यों, लाभों और लक्ष्यों के लिए किया जाता है। दूसरे शब्दों में,
एक सर्वशक्तिमान, महामहिम, सर्वज्ञ, पूर्णतया, निरंतर प्राणियों के परिवारों को जीवन देता है, उनके व्यक्तिगत सदस्यों से लेकर उनके द्वारा निर्मित संसारों तक को काम पर लगाता है, और फिर उन्हें किसी उद्देश्य के लिए मुक्त कर देता है। वह प्राणियों को जीवन प्रदान करता है, उन्हें उनके व्यक्तिगत सदस्यों से लेकर उनके द्वारा निर्मित संसारों तक को काम पर लगाता है, और फिर उन्हें किसी उद्देश्य के लिए मुक्त कर देता है।

उन्हें मरता है, उन्हें दूसरी दुनिया में भेजता है, और उन्हें क्षेत्र से स्थानांतरित करता है शक्ति का ज्ञान के क्षेत्र में स्थानांतरण।

जो इस ब्रह्माण्ड और समय का प्रबंधन नहीं कर सकता, वह विविध प्राणियों को जीवन दे सकता है। प्राणियों को एकल व्यक्तियों के रूप में मृत्यु के लिए बुलाना, फूल की तरह आसानी से वसंत का निर्माण करना और उसे रोपना और फिर मृत्यु के माध्यम से उसे तोड़ना, यह दावा नहीं कर सकता कि वह जीवित है और जीवित है। मौत पैदा करो और जीवित चीजों को मरवा दो। एक सबसे तुच्छ जीवित चीज की जीवन और मृत्यु एक सर्वशक्तिमान सत्ता के नियम के अनुसार होनी चाहिए जिसके हाथ में जीवन के सभी सत्य और मृत्यु के विभिन्न प्रकार हैं, और उसकी अनुमति, आदेश, शक्ति और ज्ञान है।

आठवाँ वाक्य: वह सदा जीवित है और कभी नहीं मरता। उसका जीवन शाश्वत है और शाश्वत, जिसका न आरंभ है न अंत। मृत्यु और अस्तित्वहीनता अर्थहीन हैं उसके लिए, क्योंकि जीवन उसके सार में उत्पन्न होता है और उसके लिए अपरिहार्य है। जिसका कोई आदि नहीं है, उसका कोई अंत नहीं है। जो अनिवार्यतः विद्यमान है, वह शाश्वत है। जो जीवन सब कुछ समेट लेता है, उसमें अस्तित्वहीनता कैसे आ सकती है? इसकी छाया? अस्तित्वहीनता और नाश उस जीवन को नहीं छू सकते जिसके लिए आवश्यकता है और आवश्यक अस्तित्व के लिए आवश्यक है। समाप्ति और विलुप्ति जीवन को प्रभावित नहीं कर सकती जिनकी अभिव्यक्ति के माध्यम से सभी जीवन अस्तित्व में आते हैं, जिन पर ब्रह्मांड के स्थायी सत्य निर्भर करते हैं, और जिनके माध्यम से वे जीवित रहते हैं।

जीवन की अभिव्यक्तियों में से एक उस चीज़ को एकरूपता प्रदान करती है जो विषय है इस बहुलता वाली दुनिया में विलुप्त होने और घटने से उन्हें बचाना विघटन के बावजूद, यह उन्हें एक प्रकार का स्थायित्व प्रदान करता है। दूसरे शब्दों में, जीवन [में ब्रह्मांड, जो शाश्वत जीवन की अभिव्यक्ति है,] बहुलता को एक प्रकार की एकता और विद्यमान रूपों को स्थायित्व का एक रूप देता है [या तो [किसी प्रजाति के जीवन, बीज, संतान या अन्य प्राणियों की यादों में] परिणामस्वरूप, क्षणभंगुरता और क्षणभंगुरता का इस आवश्यक जीवन से कोई लेना-देना नहीं है, जिसका एक मानवीकरण जीवन के असंख्य उदाहरणों का कारण बनता है।

ब्रह्माण्ड की क्षणभंगुरता और ह्रास इस सत्य की गवाही देते हैं। अस्तित्व के साक्षी और सदा-जीवित और अनिवार्य रूप से विद्यमान की ओर संकेत करते हैं अपने स्वयं के अस्तित्व और जीवन के माध्यम से वे गवाही देते हैं और संकेत करते हैं कि जीवन का स्थायित्व और शाश्वतता उनके क्षय और मृत्यु के माध्यम से है ।334

---

334 ईश्वर के अस्तित्व, एकता और ब्रह्मांड पर पूर्ण संप्रभुता को सिद्ध करते हुए निम्रोद, पैगंबर अब्राहम तर्क देते हैं कि ईश्वर जीवन देता है और मृत्यु का कारण बनता है, और फिर उल्लेख करता है कि वह सूर्य को पूर्व में उगता है और पश्चिम में अस्त करता है (2:258)। जीवन और मृत्यु देने के एक विशेष से सार्वभौमिक अर्थ में यह परिवर्तन दर्शाता है कि
यह प्रमाण का सबसे रोशन करने वाला और सबसे व्यापक क्षेत्र है। यह ऐसा नहीं है, जैसा कि कुरान के कुछ व्याख्याकार कहते हैं दावा, एक अंतर्निहित से एक स्पष्ट प्रमाण के लिए एक संक्रमण।

अपने पूर्ववर्ती की मृत्यु के बाद नए प्राणियों का प्रकट होना यह दर्शाता है कि एक सदा-जीवित प्राणी निरंतर जीवन की अभिव्यक्ति को नवीनीकृत करता रहता है। बहती नदी पर बुलबुले बड़ी संख्या में आते हैं, एक ही सूर्य की चमक दिखाते हैं, और गायब हो जाते हैं, जबकि नए, बाद के बुलबुले सूर्य की छवियाँ प्रदर्शित करते हैं। यह एक उच्च और स्थायी सूर्य की स्थायित्व की ओर इशारा करता है। उसी तरह, उन निरंतर गतिशील अस्तित्वों में जीवन और मृत्यु का परिवर्तन एक सदा-जीवित, शाश्वत की स्थायित्व की गवाही देता है।

ये प्राणी दर्पण हैं। जैसे अंधकार प्रकाश का दर्पण है और अंधकार जितना अधिक तीव्र होता है, उतना ही अधिक चमकीला प्रकाश प्रदर्शित करता है, वैसे ही ये प्राणी विपरीतताओं के विपरीत ईश्वर के नामों और गुणों के दर्पण के रूप में कार्य करते हैं। उदाहरण के लिए, जिस तरह प्राणी अपनी नपुंसकता के माध्यम से निर्माता की शक्ति और अपनी गरीबी के माध्यम से उसकी संपत्ति के दर्पण के रूप में कार्य करते हैं, उसी तरह वे अपनी क्षणभंगुरता के माध्यम से उसकी स्थायित्व के दर्पण के रूप में कार्य करते हैं। विशेष रूप से, मिट्टी और पेड़ सर्दियों के दौरान अपनी गरीबी और वसंत के दौरान अपनी चकाचौंध भरी शान और धन के माध्यम से एक परम शक्तिशाली और परम धनी की शक्ति और दया को स्पष्ट रूप से दर्शाते हैं। यह ऐसा है जैसे सभी प्राणी अपने अस्तित्व की भाषा में प्रार्थना करते हैं, जैसे उवैस अल-क़रानी:335

हे हमारे परमेश्वर! आप हमारे प्रभु हैं, क्योंकि हम देखते हैं कि हम मात्र सेवक हैं।
हम खुद को प्रशिक्षित नहीं कर सकते, इसलिए हमें प्रशिक्षित करें। आप निर्माता हैं, क्योंकि हम बनाए गए हैं और बनाए जा रहे हैं। आप प्रदाता हैं, क्योंकि हमें प्रावधान की आवश्यकता है और हम खुद के लिए प्रावधान नहीं कर सकते। इस प्रकार आप हमें बनाते हैं और हमारे लिए प्रावधान करते हैं। आप सच्चे मालिक हैं, क्योंकि हम स्वामित्व में हैं।

हमारा स्वयं पर पूर्ण नियंत्रण नहीं है, अतः आप ही मालिक हैं।

आप महान हैं, जिनमें गरिमा और वैभव है। अपने आप को देखते हुए, हम अपनी गरीबी और लाचारी के बावजूद हमारे द्वारा प्रकट की गई शक्ति को देखते हैं। इसलिए हम आपकी महानता और शक्ति के दर्पण हैं। आप परम धनवान हैं, और हम गरीब हैं, लेकिन हमें वह धन दिया गया है जिसे हम स्वयं प्राप्त नहीं कर सकते। इस प्रकार आप धनवान हैं, दाता हैं।

आप सदा-जीवित, चिरस्थायी हैं, क्योंकि हम जन्म लेते हैं और मरते हैं और इस तरह जीवन के एक सतत दाता की अभिव्यक्ति देखते हैं। आप चिरस्थायी हैं, क्योंकि हम अपनी मृत्यु और क्षणभंगुरता में आपकी निरंतरता और स्थायित्व देखते हैं। आप हमें उत्तर देते हैं और हमें उपहार देते हैं क्योंकि

---

335 उवेस अल-क़रानी को आम तौर पर सबसे महान तबीउन [पहली पोस्ट-कंपेनियन पीढ़ी का सदस्य] माना जाता है। हालाँकि वह इतने बूढ़े थे कि उन्होंने पैगंबर को देखा था, लेकिन उन्हें ऐसा करने का कोई अवसर नहीं मिला। एक दिन अपने साथियों के साथ बैठे हुए, पैगंबर ने उन्हें सलाह दी: "यदि आप उवेस अल-क़रानी को देखते हैं, तो उनसे अपने लिए प्रार्थना करने के लिए कहें।" मुस्लिम, फ़दाइल अल-सहाबा, 223-24। (अनुवाद)

हम सभी प्राणी हमेशा पुकारते हैं और अनुरोध करते हैं, या तो शब्दों के माध्यम से
या हमारे जीने के तरीके की भाषा में कहें तो हमारी सारी इच्छाएँ पूरी हो जाती हैं,
हमारे उद्देश्य पूरे हो गए हैं। इस प्रकार आप हमारी प्रार्थनाओं का उत्तर देते हैं।

प्रत्येक प्राणी एक दर्पण है, जो प्रार्थना का अर्थ रखता है तथा अपनी असहायता, दरिद्रता और अभाव के माध्यम से ईश्वरीय शक्ति और पूर्णता को प्रतिबिम्बित करता है।

नौवां वाक्य: उसके हाथ में सब अच्छाई है इसका मतलब है कि सभी अच्छे काम उसके हाथ में हैं। उसकी किताब में है और सारी नेकियाँ उसके ख़ज़ाने में हैं। यह देखते हुए, जो लोग
जो भलाई की इच्छा रखते हैं, उन्हें उससे भलाई की मांग करनी चाहिए, और जो श्रेष्ठ की इच्छा रखते हैं, उन्हें उससे भलाई की मांग करनी चाहिए।
उससे विनती करें। इस सत्य को प्रदर्शित करने के लिए, हम निम्नलिखित उदाहरण प्रस्तुत करते हैं
दिव्य ज्ञान का स्रोत:

जैसा कि देखा गया है, वह निर्माता जो इस ब्रह्मांड का निर्माण करता है और इस पर अधिकार रखता है
अपने कार्यों के माध्यम से, उसके पास एक सर्वव्यापी ज्ञान निहित है
सार। जिस प्रकार यह सर्वव्यापी ज्ञान उस सर्वज्ञता के लिए अपरिहार्य है,
जैसे सूर्य की कल्पना उसके प्रकाश के बिना नहीं की जा सकती, वैसे ही अस्तित्व का होना भी आवश्यक है।
सभी चीजें क्योंकि यह उनके अस्तित्व को घेरे हुए है। जैसे पृथ्वी की सतह पर मौजूद वस्तुएं
सूर्य को देखो, उस ज्ञान के प्रकाश से कुछ भी छिपा नहीं रह सकता,
सभी चीजों को शामिल करता है और उनमें प्रवेश करता है।

यदि वह ठोस सूर्य, वे अचेतन एक्स-रे, और जो कुछ भी है
प्रकाश का एक स्रोत, साथ ही असहाय मानवता, जो कुछ भी उनके सामने आता है उसे देख और भेद सकती है, भले ही वह आकस्मिक, दोषपूर्ण और आकस्मिक हो, कैसे
क्या उस सर्वव्यापी प्रकाश से कुछ भी छिपाया जा सकता है
और आवश्यक शाश्वत ज्ञान? अनगिनत संकेत इस सत्य की ओर इशारा करते हैं, जैसा कि देखा गया है
नीचे:

सभी प्राणियों में देखी गई सारी बुद्धि उस ज्ञान की ओर संकेत करती है, क्योंकि वह
जो दयालुता और कृपा से कार्य करता है, वह ऐसा इसलिए करता है क्योंकि वह जानता है।
सुव्यवस्थित प्राणी, जिनमें से प्रत्येक में एक सटीक संतुलन, एक संतुलित और
मापा हुआ रूप और एक परिपूर्ण व्यवस्था, उस सर्वव्यापी ज्ञान की ओर संकेत करते हैं, क्योंकि व्यवस्था के लिए ज्ञान की आवश्यकता होती है। सभी शोभा और अलंकरण ज्ञान को दर्शाते हैं। कलाकार जो सख्त माप और संतुलन के अनुसार काम करता है, वह
एक शक्तिशाली ज्ञान पर। प्रत्येक प्राणी के सटीक अनुपात, उसके आकार को उसके उद्देश्य और लाभों के अनुसार निर्धारित किया जाता है, और उसकी फलदायी स्थितियाँ और
रचनाएँ दर्शाती हैं कि वे ईश्वरीय सिद्धांतों के अनुसार बनाई गई हैं
ईश्वरीय नियति या निश्चय के आदेश और दिशा-निर्देश। वे सभी
अपने सर्वव्यापी ज्ञान का प्रदर्शन करें।

केवल एक ही सर्वव्यापी ज्ञान वाला प्रत्येक वस्तु को एक नया स्वरूप दे सकता है। अद्वितीय लेकिन सुव्यवस्थित रूप जो उसके जीवन और अस्तित्व के लिए उपयुक्त और प्रासंगिक है। केवल एक ही जिसके पास सर्वव्यापी ज्ञान है, वह सभी जीवित प्राणियों से मिल सकता है प्राणियों की आवश्यकताओं को उचित तरीके से, उचित समय पर, तथा अप्रत्याशित स्थानों से पूरा करना। केवल वही जो प्रत्येक वस्तु की आवश्यकताओं को जानता है, उन्हें पूरा कर सकता है।

चूँकि प्रत्येक प्राणी मरेगा, इसलिए यह कब होगा, इसका उसे पता नहीं है। कि मृत्यु भाग्य या निर्धारण के नियम पर निर्भर करती है और प्रदर्शित करती है सर्वव्यापी ज्ञान। हालाँकि पहली नज़र में ऐसा नहीं लगता, सब कुछ—खासकर पौधे—एक तय समय पर मर जाएंगे। चीज़ों के बीज और संतानों को उनके कर्तव्यों या कार्यों को जारी रखने के लिए संरक्षित किया जाता है, ताकि वे नए जीवन में परिवर्तन का साधन बन सकें। यह एक सर्वव्यापी ज्ञान को भी प्रदर्शित करता है।

प्रत्येक प्राणी दया से संतुष्ट होता है, जो सभी प्राणियों को अपने में समाहित करती है, जो सजीव प्राणियों की सन्तानों को दूध पिलाते हैं और पृथ्वी का पालन करते हैं पानी और बारिश से भरपूर वनस्पति को सभी शिशुओं और वनस्पतियों की ज़रूरतों का पता होना चाहिए। यह एक व्यापक ज्ञान की ओर इशारा करता है। सभी प्राणियों को बनाने में दिखाई गई देखभाल, साथ ही उनकी कलात्मक डिज़ाइन और कुशल सजावट, एक सर्वव्यापी ज्ञान को प्रदर्शित करती है, क्योंकि केवल ऐसा ज्ञान ही चुन सकता है अनगिनत संभावित अवस्थाओं में से एक व्यवस्थित, सुशोभित, कलात्मक और उद्देश्यपूर्ण अवस्था।

चीजों को बनाने और उत्पन्न करने में पूर्ण सहजता पूर्णता की ओर इशारा करती है ज्ञान, उपलब्धि की आसानी और सुविधा के लिए सीधे आनुपातिक हैं ज्ञान और कौशल की डिग्री। किसी चीज़ के बारे में जितना ज़्यादा कोई जानता है, हम देख सकते हैं कि कैसे सभी चीजें, जिनमें से प्रत्येक कला का एक चमत्कार है, आश्चर्यजनक आसानी और चमत्कारिक ढंग से जल्दी और चमत्कारिक ढंग से बनाई जाती हैं। सुविधा।

इसके अलावा, हज़ारों अन्य सच्ची निशानियाँ दिखाती हैं कि जो इस ब्रह्मांड को नियंत्रित करता है, उसके पास सर्वव्यापी ज्ञान है। वह सभी चीज़ों को जानता है। गुण और कार्य, और फिर कार्य। चूँकि ब्रह्माण्ड के स्वामी के पास ऐसे गुण और कार्य हैं ज्ञान, वह हमें और हमारे कार्यों को देखता है और उसके अनुसार हमें पुरस्कृत और दंडित करता है। वह अपने ईश्वर की आवश्यकताओं के अनुसार हमारे साथ व्यवहार करता है - और करेगा बुद्धि और दया। इसलिए समझदार बनो! इस सत्ता के बारे में ध्यान से सोचो जो जानता है और आप पर नज़र रखता है। इन सच्चाइयों को पहचानें और खुद को संभालें।

संभावित आपत्ति: यदि आप कहते हैं कि केवल ज्ञान पर्याप्त नहीं है, क्योंकि इच्छा भी आवश्यक है, मैं उत्तर देता हूं: सभी प्राणी ईश्वरीय सर्वव्यापी ज्ञान के साक्षी हैं, और उस एक की सार्वभौमिक इच्छा की ओर संकेत करते हैं वह ज्ञान.

सार्वभौमिक इच्छा कई तरीकों से प्रदर्शित होती है: प्रत्येक प्राणी, विशेष रूप से संवेदनशील प्राणी, कई संभावनाओं के बीच झिझकता है और फिर भी एक अवसर प्राप्त करता है।
एक संभावना के माध्यम से सबसे सुव्यवस्थित और विशिष्ट पहचान निर्धारित की जाती है
अनेकों में से, तथा एक निश्चित तरीके से अनेकों में से एक परिणाम की ओर ले जाना
निरर्थक तरीके। यह सुव्यवस्थित पहचान, माप और रूप सबसे संवेदनशील पैमाने और सूक्ष्म संगठन के अनुसार दिया जाता है, और ठोस से काटा जाता है
तत्व अनंत संभावनाओं और निरर्थक तरीकों से बेतरतीब ढंग से बह रहे हैं। यह
इससे पता चलता है कि वे सार्वभौमिक इच्छा के कार्य हैं, क्योंकि चुनाव केवल
पदनाम, वरीयता, उद्देश्य और इच्छा, विनिर्देश, जानबूझकर
इरादा और इच्छा। निर्दिष्ट करने के लिए निर्दिष्ट करने वाले की आवश्यकता होती है, और वरीयता
इसके लिए किसी ऐसे व्यक्ति की आवश्यकता होती है जो इसे पसंद करता हो। केवल वसीयत ही निर्दिष्ट करती है और पसंद करती है।

उदाहरण के लिए, एक व्यक्ति सैकड़ों तत्वों से बनी एक मशीन जैसा दिखता है।
यद्यपि वह पानी की एक बूंद से बना है, फिर भी वह एक प्रणाली और घटक है, तथापि वह पानी की एक बूंद से बना है।
एक पक्षी और एक पेड़, जिनके सैकड़ों भाग हैं, एक ही धातु से बने हैं।
साधारण अंडा और साधारण बीज, क्रमशः। ऐसी चीजें शक्ति और शक्ति की गवाही देती हैं
ज्ञान और उनके निर्माता की सार्वभौमिक इच्छा को इंगित करते हैं, जिसके साथ वह प्रत्येक प्राणी के सदस्यों, भागों और अद्वितीय आकार को निर्दिष्ट करता है।

संक्षेप में, जिस प्रकार किसी पशु के प्रमुख शारीरिक अंगों के बीच उनके मूल पहलुओं और परिणामों के संबंध में समानता और पत्राचार उनके निर्माता की एकता को इंगित करता है, उसी प्रकार उनकी विशिष्ट पहचान और चेहरे यह साबित करते हैं कि उनका अस्तित्व एक ही है।
एकता के निर्माता के पास अपने कार्यों में इच्छाशक्ति और पूर्ण स्वतंत्रता है। वह केवल वही करता है जो
वह करने की इच्छा रखता है, ब्रह्मांड से स्वतंत्र होकर कार्य करता है, और उसकी एक निरपेक्ष, सार्वभौमिक इच्छा है।
इस प्रकार प्रत्येक प्राणी, या प्रत्येक प्राणी का प्रत्येक कार्य, इस बात की गवाही देता है
दिव्य ज्ञान और इच्छा। इसे देखते हुए, जो लोग दिव्य नियति को नकारते हैं, जो
दावा है कि ईश्वरीय ज्ञान सभी विवरणों को नहीं समझता है या
कुछ जीवों का अस्तित्व प्राकृतिक कारण और प्रभाव के कारण है, यह बात गंभीर रूप से गलत और भ्रमित है। उनका इनकार अनंत आयामों का झूठ है। इसलिए,
विचार करें कि "स्वाभाविक रूप से" कहना कितना गलत और सत्य के विपरीत है
कोई भी घटना, क्योंकि सभी ईश्वरीय इच्छा से ही घटित होती हैं। बल्कि कहें: “यदि ईश्वर चाहे।”

दसवाँ वाक्य: वह हर चीज़ पर शक्तिशाली है। क्योंकि उसके लिए सब कुछ आसान है
वह, वह आसानी से हर चीज को अस्तित्व के वस्त्र पहनाता है और हर चीज को बनाता है
कह रहे हैं: “हो जाओ।”

यदि किसी अत्यंत कुशल कलाकार को कुछ बनाने के लिए केवल हाथ बढ़ाना हो
और सब कुछ उसकी इच्छानुसार संचालित होता है, हम ऐसी गति और कौशल को व्यक्त कर सकते हैं
उन्होंने कहा कि कलाकार उस काम को इस हद तक नियंत्रित करता है कि ऐसा लगता है कि
एक स्पर्श या आदेश से अस्तित्व में आ गए। जब उनका आदेश होता है

जो चीज़ चाहता है, उसे बस इतना कहना है कि "हो जा" और वह हो जाती है (36:82) घोषित करता है कि सर्वशक्तिमान परमेश्वर सब कुछ नियंत्रित करता है और संचालित करता है अत्यंत आसानी से। निम्नलिखित पाँच बिंदु इस व्यापक के पाँचों को स्पष्ट करते हैं सत्य के अनगिनत रहस्य.

पहला बिंदु: ईश्वर के लिए सबसे बड़ी और सबसे छोटी चीज समान है। शक्ति। एक प्रजाति बनाना उतना ही सरल है जितना एक व्यक्ति बनाना, स्वर्ग बनाना वसंत ऋतु बनाने जितना आसान है, और वसंत ऋतु बनाना फूल बनाने जितना आसान है। इस रहस्य को दसवें वचन और द टेन्थ वर्ड में समझाया गया है। उनतीसवाँ वचन, जो सिद्ध करता है कि ईश्वरीय शक्ति तारों, कणों, और सभी व्यक्तियों को एक व्यक्ति के रूप में आसानी से।336

दूसरा बिन्दु: पशु और वनस्पति, जिनमें असीम बहुलता और उदारता है, सर्वोच्च स्तर की निपुणता और कलात्मकता प्रदर्शित करते हैं, अत्यंत प्रचुरता के भीतर भेद और भिन्नता की सबसे बड़ी डिग्री और अंतर्मिश्रण, और सृजन की कलात्मकता और सुंदरता की उच्चतम डिग्री सबसे अधिक प्रचुरता और प्रचुरता के साथ। इसके अलावा, हालांकि उनके निर्माण में भारी मात्रा में मशीनरी और समय की आवश्यकता होती है, वे बनाए जाते हैं अत्यंत सहजता और गति से, मानो अचानक और शून्य से। यह मौसमी गतिविधि यह साबित करती है कि आकार और संख्या पावर की सृजन क्षमता को प्रभावित नहीं करती है।

तीसरा बिन्दु: सर्वशक्तिमान निर्माता की शक्ति उच्चतम ब्रह्मांड को उतनी ही आसानी से बनाती है जितनी कि सबसे छोटी वस्तु को, और वह भी उतने ही कलात्मक मूल्य के साथ, दिव्य एकता से आने वाली सहायता के कारण, यह सुविधा शुरू हुई ब्रह्माण्ड को नियंत्रित करने वाले केंद्र की एकता, और ईश्वरीय अभिव्यक्ति विशिष्टता या एकता.

ईश्वरीय एकता से आने वाली सहायता - ईश्वर के सार्वभौमिक निपटान के माध्यम से उसके नामों की समग्र अभिव्यक्ति: यदि एक प्राणी सबका स्वामी है और उन पर शासन करता है ऐसी एकता उसे सभी चीजों की शक्ति को अपने पीछे केंद्रित करने में सक्षम बनाती है एक काम और इसलिए सभी चीजों को एक काम की तरह आसानी से प्रबंधित करें। निम्नलिखित तुलना पर विचार करें:

एक सम्राट, देश का एकमात्र अधिकारी होने के नाते, सेना को संगठित कर सकता है हर सैनिक के पीछे नैतिक शक्ति होती है। यह एक सैनिक को दूसरे राजा को पकड़ने और राजा के नाम पर उसे आदेश देने में सक्षम बनाता है। एकमात्र संप्रभु होने के नाते, वह राजा भी सेना और अधिकारियों का प्रबंधन उतनी ही आसानी से कर सकता है जितनी आसानी से वह एक सैनिक का उपयोग करता है। सैनिक और एक अधिकारी का प्रशासन। चूंकि प्रशासनिक शक्ति उसके पास है

---

336 नूरसी ने कहा, शब्द। दसवाँ शब्द पुनरुत्थान से संबंधित है, जबकि उनतीसवाँ शब्द चमक, पारदर्शिता, और सरलता के माध्यम से सृष्टि की सहजता के रहस्य को समझाता है।
पारस्परिकता, संतुलन, सुव्यवस्था, आज्ञाकारिता और अमूर्तता। (सं.)

अकेले, वह सभी को एक सैनिक की सहायता के लिए भेज सकता है, जिससे प्रत्येक सैनिक को सभी सैनिकों पर भरोसा करें। लेकिन अगर उसकी अद्वितीय संप्रभुता और अधिकार को निष्प्रभावी कर दिया जाए, प्रत्येक सैनिक अपनी असीम शक्ति खो देगा और एक कमज़ोर, साधारण व्यक्ति बन जाएगा। और, उन्हें प्रशासित करने में उतनी ही कठिनाइयाँ आएंगी जितनी कि सैनिकों की संख्या.

इसी प्रकार, ब्रह्माण्ड के निर्माता की एकता उसे सभी चीज़ों पर एक साथ काम करने वाले अपने सभी नामों की अभिव्यक्ति पर ध्यान केंद्रित करने की अनुमति देती है। एक चीज़ पर ध्यान केन्द्रित करके, उसे अनंत और मूल्यवान कला से निर्मित करता है। वह सभी चीज़ों को सहायता करने के लिए प्रेरित करता है, जिससे ज़रूरत पड़ने पर अन्य चीज़ों को मज़बूती मिलती है। अपनी एकता के माध्यम से, वह सभी चीजों का सृजन, नियंत्रण और प्रशासन भी करता है, मानो वह स्वयं ही सब कुछ करता हो। वे एक ही चीज़ थे। यह दिव्य एकता सुनिश्चित करती है कि ब्रह्मांड में एक ही चीज़ है अत्यंत प्रचुरता और विविधता के बीच कला और मूल्य की सर्वोच्च डिग्री।

केंद्र की एकता से उत्पन्न सुविधा: सब कुछ आसान हो जाता है अगर चीजों को एक केंद्र से, एक हाथ से और एक कानून से प्रबंधित किया जाए। उदाहरण के लिए, इसे सेना को सुसज्जित करने के लिए लागू करने पर, सभी सैनिकों को सुसज्जित करना उतना ही आसान हो जाता है जितना कि एक सैनिक को सुसज्जित करना। अन्यथा, एक सैनिक को सुसज्जित करना सेना को सुसज्जित करने जितना ही कठिन है। साथ ही, एक पेड़ पर हज़ारों फल आसानी से उगते हैं। एक नियम और एक जड़ पर निर्भर करता है। लेकिन अगर केवल एक ही फल उगाया जा सके प्रत्येक पेड़ पर फल उगाना उतना ही कठिन होगा जितना कि एक पेड़ उगाना। पेड़ के जीवित रहने के लिए आवश्यक सभी तत्वों की उपस्थिति की आवश्यकता होगी।

इस प्रकार, क्योंकि ब्रह्माण्ड का निर्माता एकल और एक है, वह इसके माध्यम से कार्य करता है एकता। इसे देखते हुए, सभी चीजें उसके लिए एक चीज जितनी आसान हैं, और वह इसे आसान बनाता है एक चीज़ जो कलात्मक रूप से सभी चीज़ों जितनी मूल्यवान है। इसके अलावा, एक ऐसी चीज़ बनाकर जो कलात्मक रूप से सभी चीज़ों जितनी मूल्यवान है। मूल्यवान व्यक्तियों की असीम प्रचुरता, असीम भाषा के माध्यम से प्रचुरता, वह अपनी पूर्ण उदारता प्रदर्शित करता है और अपनी अनंतता को प्रकट करता है उदारता और रचनात्मकता.

दिव्य विशिष्टता या एकता की अभिव्यक्ति: राजसी के रूप में निर्माता भौतिक या साकार नहीं है, समय और स्थान उसे प्रतिबंधित नहीं कर सकते हैं; न ही क्या अंतरिक्ष एक ही समय में सभी चीजों को शामिल करने में हस्तक्षेप कर सकता है और वह सभी घटनाओं का साक्षी है; तथा साधन और द्रव्य उसके कार्यों पर पर्दा नहीं डाल सकते। और उसके कार्य विखंडन या विभाजन से मुक्त हैं। उसके कार्य किसी के कार्य में बाधा नहीं डालते और इस प्रकार वह असंख्य कार्य करता है, मानो वे एक ही कार्य हों। इस प्रकार वह एक व्यक्ति को एक संसार से युक्त कर देता है, जैसे वह एक विशाल वृक्ष को अपने में समाहित कर लेता है। वह अपने बीज में स्थित है, तथा सृष्टि को इस प्रकार निर्देशित और नियंत्रित करता है, मानो वह एक ही व्यक्ति हो।

सूर्य की छवि हर चमकती हुई वस्तु में प्रतिबिंबित होती है, क्योंकि इसकी चमक इसे कुछ हद तक गैर-प्रतिबंधित बनाती है। चाहे कितने भी दर्पण इसकी ओर रखे जाते हैं, प्रत्येक में इसका पूर्ण, अपवर्तित नहीं होता है

छवि, एक दूसरे को रोके बिना। अगर यह हर चीज के लिए संभव होता सूर्य की अभिव्यक्तियों को सीधे प्राप्त करने के लिए - इसकी छवि, सात रंग प्रकाश और गर्मी - सूर्य प्रत्येक चीज़ में अपना प्रभाव दिखा सकता है अपने पूरे परिमाण में, और एक साथ कई स्थानों में उतनी ही आसानी से प्रवेश करें इसी तरह - क्योंकि भगवान का सर्वोच्च उदाहरण है - इस संसार का राजसी निर्माता ब्रह्मांड में, उनकी विशिष्टता के कारण, सभी के माध्यम से ऐसी अभिव्यक्ति है उनके गुण (जो शुद्ध प्रकाश हैं) और नाम (जो प्रकाशमान हैं) वह सर्वत्र विद्यमान है और हर जगह साक्षी है, यद्यपि वह कहीं नहीं है। प्रत्येक कार्य एक ही समय पर, सभी स्थानों पर, बिना किसी कठिनाई या सहजता के करता है। बाधा.

यह इन तीन माध्यमों के कारण है, अर्थात्, से आने वाली सहायता दिव्य एकता, केंद्र की एकता से उत्पन्न होने वाली सुविधा, और दिव्य विशिष्टता या एकता का प्रकटीकरण, कि यदि सभी प्राणियों का निर्माण और प्रशासन एक निर्माता को दिया जाता है, तो वे उतने ही आसान हो जाते हैं

एक ही चीज़ के रूप में बनाना और प्रशासित करना। साथ ही, एक ही चीज़ एक ही चीज़ बन जाती है कला में सभी चीजें एक साथ मूल्यवान हैं। यह सत्य प्राणियों की अनंत प्रचुरता के बीच प्रत्येक व्यक्ति की कला की असंख्य सूक्ष्मताओं द्वारा प्रदर्शित होता है-

नृत्य। यदि सृजन का श्रेय सीधे एक ही रचयिता को नहीं दिया जाता, तो प्रत्येक प्राणी का सृजन करना सभी प्राणियों के सृजन जितना ही कठिन है, और सभी प्राणियों का मूल्य एक प्राणी के मूल्य पर आ जाता है।

यही कारण है कि सोफिस्ट, जो तर्क का प्रयोग करने में सबसे उन्नत थे, दार्शनिकों ने "अपनी बुद्धि का त्याग" करने और हर चीज़ के अस्तित्व को नकारने के लिए मजबूर महसूस किया। यह महसूस करते हुए कि ईश्वर के साथ साझेदारों को जोड़ने का मार्ग सत्य का पालन करना और ईश्वर की एकता की पुष्टि करना, उससे कहीं अधिक कठिन है और, क्योंकि उन्होंने पहले ही दूसरे मार्ग को अस्वीकार कर दिया था, वे इनकार में पड़ गए।

चौथा बिंदु: स्वर्ग बनाना उतना ही आसान है जितना वसंत का निर्माण करना। सर्वशक्तिमान की शक्ति जो ब्रह्मांड को तत्परता से संचालित करती है इसी तरह, एक फूल भी उतना ही नाजुक, सुंदर और मूल्यवान हो सकता है एक पूरे झरने के रूप में। यह सत्य तीन स्रोतों से आता है: सृष्टिकर्ता का आवश्यक अस्तित्व और सृष्टि से पूर्ण अलगाव, उसके सार की पूर्ण अन्यता और उसका अप्रतिबंधित अस्तित्व, और उसका किसी भी चीज़ से बंधा न होना
अंतरिक्ष और उसकी अविभाज्यता।

प्रथम स्रोत: सृष्टिकर्ता का अनिवार्य अस्तित्व और पूर्ण अनासक्ति सृष्टि से अनंत सहजता और सुविधा मिलती है। निम्नलिखित रूपक पर विचार करें: अस्तित्व में विभिन्न डिग्री और स्तर हैं, और इसलिए अस्तित्व की दुनियाएँ भी अलग-अलग हैं
एक ही नहीं हैं। इस प्रकार एक स्तर से एक कण अस्तित्व में गहराई से निहित है

कम महत्वपूर्ण स्तर से एक पहाड़ को समाहित कर सकता है। उदाहरण के लिए, प्रकट भौतिक दुनिया से संबंधित एक सिर में स्मृति की सरसों के बीज के आकार की क्षमता अर्थों की दुनिया में एक पुस्तकालय के बराबर हो सकती है।
प्रतिबिंब, एक विशाल शहर एक नाखून के आकार के दर्पण से घिरा हुआ है
बाहरी दुनिया के लिए.

यदि उस स्मृति और दर्पण में चेतना और सृजनात्मक शक्ति होती, तो वे
बाहरी दुनिया में अपने सूक्ष्म अस्तित्व की शक्ति का उपयोग कर सकते हैं
अंतहीन रूप से सक्रिय और दुनिया में अंतहीन परिवर्तन लाने वाले
अर्थ और प्रतिबिंब का। दूसरे शब्दों में, किसी अस्तित्व की शक्ति सीधे अस्तित्व में उसकी स्थापना की दृढ़ता के समानुपातिक होती है। यदि अस्तित्व प्राप्त करता है
पूर्ण दृढ़ता और स्थिरता, और इस प्रकार भौतिकता से पूर्ण अलगाव और इसलिए अप्रतिबंधित है, यहां तक कि इसका आंशिक प्रकटीकरण भी निर्देशित कर सकता है
अस्तित्व के कम महत्वपूर्ण स्तरों से संबंधित कई दुनियाएँ।

ब्रह्माण्ड का महान निर्माता अनिवार्य रूप से विद्यमान है। उसका अस्तित्व है
वह अपने सार के लिए अपरिहार्य है और शाश्वत है, क्योंकि उसका अस्तित्व न होना अकल्पनीय है और उसके अस्तित्व की समाप्ति असंभव है।
सबसे दृढ़ता से स्थापित, मौलिक, सबसे मजबूत और सही स्तर है
अस्तित्व, अन्य सभी स्तर फीके छाया की तरह हैं। उसका आवश्यक अस्तित्व है
इतनी गहराई से निहित और वास्तविक, और अन्य सभी प्राणियों का अस्तित्व (जो हैं)
आकस्मिक) इतना फीका और अवास्तविक है, कि ऐसे समझदार शोधकर्ता जैसे
मुही अल-दीन इब्न अल-अरबी ने निष्कर्ष निकाला है कि केवल वही वास्तव में मौजूद है। इस प्रकार वे
अस्तित्व के अन्य स्तरों को भ्रम या काल्पनिक बना देना।

यह देखते हुए, आवश्यक रूप से विद्यमान सत्ता की शक्ति, जो दोनों है
अपरिहार्य और उसके सार से काफी हद तक संबंधित, अनंत शक्तियों वाले आकस्मिक प्राणियों का आकस्मिक, कमजोर और अपेक्षाकृत स्थिर अस्तित्व बनाता है
आसानी से। सुप्रीम मस्टरिंग के लिए मृतकों को पुनर्जीवित करना और फिर उनका न्याय करना
उसके लिए यह उतना ही आसान है जितना कि हर वसंत में एक पेड़ को जीवन में वापस लाना और उसे फिर से जीवित करना।
पत्ते, फूल और फल पैदा करो.

दूसरा स्रोत: उनके सार की पूर्ण विशिष्टता और उनकी अप्रतिबंधित सत्ता उनके लिए सब कुछ आसान बना देती है, क्योंकि ब्रह्मांड का निर्माता ब्रह्मांड से भिन्न है। चूँकि उनका सार अद्वितीय है, इसलिए कोई बाधा या प्रतिबंध नहीं है
उसे बाधा पहुंचाता है या उसके कार्यों को बाधित करता है। उसका पूर्ण और स्वतंत्र नियंत्रण है
सब कुछ। यदि ब्रह्मांड और इसकी घटनाओं का प्रबंधन करने का श्रेय
ब्रह्माण्ड में ही, परिणामस्वरूप उत्पन्न कठिनाई और भ्रम किसी भी रूप को रोक देगा
अस्तित्व को नष्ट कर देंगे और सारी व्यवस्था और सद्भाव को नष्ट कर देंगे।

उदाहरण के लिए, क्या एक सुंदर गुंबददार गुंबद के पत्थरों को एक साथ जोड़कर व्यवस्थित किया जा सकता है? क्या बटालियन की कमान खुद सैनिकों के हाथों में होगी या नहीं? अगर ऐसी चीजें संभव भी होतीं, तो भी सब कुछ अस्त-व्यस्त हो जाता। अगर ऐसा होता, तो भी सब कुछ अस्त-व्यस्त हो जाता।
पत्थरों की व्यवस्था का काम एक कारीगर को सौंपा गया है, और बटालियन की कमान एक अधिकारी को सौंपी गई है, कलात्मक व्यवस्था और कमान दोनों ही आसान हैं,
क्योंकि जब पत्थर और सैनिक एक दूसरे को रोकते हैं, कारीगर और अधिकारी कर सकते हैं
उनसे हर तरफ से निपटें और बिना किसी बाधा के आदेश दें।

इस प्रकार अनिवार्यतः विद्यमान सत्ता का पवित्र सार, मूल सत्ता से भिन्न है।
आकस्मिक प्राणियों का सार। बल्कि, सभी सत्य सत्य से किरणें हैं, एक
उस सार के सुंदर नामों में से। चूँकि उसका पवित्र सार अनिवार्य रूप से
अस्तित्वमान, भौतिकता से पूर्णतः पृथक, तथा पूर्णतः अद्वितीय, उस सर्वशक्तिमान की शाश्वत शक्ति आसानी से ब्रह्माण्ड को बनाए रखती है तथा उसका प्रशासन करती है।
मानो यह वसंत ऋतु हो या कोई एक पेड़ हो। साथ ही, दूसरी दुनिया, स्वर्ग का निर्माण,
नरक और पुनरुत्थान उतना ही आसान है जितना कि पिछले मर चुके पेड़ को पुनर्जीवित करना
शरद ऋतु।

तीसरा स्रोत: सर्वशक्तिमान निर्माता की अंतरिक्ष की उत्कृष्टता हमें यह अवसर देती है कि हम
वह अपनी शक्ति के माध्यम से सर्वव्यापी है। अविभाज्य होने के कारण, वह सम्पूर्ण है
अपने नाम के माध्यम से हर चीज़ पर नियंत्रण रखता है। परिणामस्वरूप, उसके कार्यों को अनदेखा नहीं किया जा सकता
विद्यमान प्राणियों, साधनों और जनसमूहों द्वारा बाधित, क्योंकि उन्हें इसकी कोई आवश्यकता नहीं है
ऐसा करो। अगर ऐसी कोई ज़रूरत होती तो बिजली के तारों, पेड़ों की शाखाओं,
और नसों, चीजें उसके नियंत्रण को आसान बनाती हैं, जीवन का संचालन करती हैं, और उसे
ऐसी घटनाओं को प्रतिबंधित करने, बाधा डालने और बाधा डालने के बजाय, अधिक तत्परता और तेजी से कार्य करता है। संक्षेप में, सब कुछ राजसी की आज्ञा का पालन करता है और उसके अधीन होता है
सर्वशक्तिमान की शक्ति.

निष्कर्ष में, सर्वशक्तिमान निर्माता बिना किसी परेशानी के, तेजी से और आसानी से, और बिना किसी प्रक्रिया के, हर चीज को उचित रूप में बनाता है।
सार्वभौमिकों को उतनी ही आसानी से बनाता है जितनी कि विशिष्टों को, और विशिष्टों को उतनी ही कलात्मकता से बनाता है जितनी कि विशिष्टों को।
सार्वभौमिक। सार्वभौमिकों और स्वर्ग और पृथ्वी का निर्माता है
विवरणों और उनमें निहित सजीव व्यक्तियों के निर्माता, के लिए
वे छोटे-छोटे विवरण सार्वभौमिक फल, बीज और लघु नमूने हैं।

चूँकि विशेष वस्तुएँ बीज और ब्रह्मांड की छोटी प्रतियों की तरह होती हैं, इसलिए जो विशेष वस्तुएँ बनाता है, उसे ब्रह्मांडीय तत्वों और आकाश तथा पृथ्वी का निर्माता और नियंत्रक होना चाहिए। यदि ऐसा न होता, तो वह अपनी बुद्धि के सिद्धांतों और अपने ज्ञान के संतुलन के अनुसार कैसे कार्य कर सकता था?

विवरण सार्वभौमिक की सामग्री, अर्थ और नमूने को समाहित करते हैं,
सर्वव्यापी संस्थाएँ?

जहाँ तक उनकी अद्भुत कला या उनके द्वारा प्रदर्शित की जाने वाली अद्भुत रचनात्मकता का सवाल है, विशिष्टताएँ सार्वभौमिकों से कमतर नहीं हैं। फूल सितारों से कमतर नहीं हैं, और बीज पेड़ों से कमतर नहीं हैं। बल्कि, ईश्वरीय नियति द्वारा बीज में अंकित वृक्ष का अर्थ ईश्वरीय शक्ति द्वारा बुने गए वास्तविक, पूर्ण विकसित वृक्ष से अधिक अद्भुत है। इसी तरह, मानवता का निर्माण ब्रह्मांड के निर्माण से अधिक अद्भुत है। यदि ज्ञान का कुरान किसी ईथर पदार्थ के कणों में एक परमाणु पर अंकित किया गया हो, तो इसका मूल्य आकाश के तारों में लिखे गए भव्य कुरान से भी अधिक होगा। इसके अलावा, कई विशिष्टताएँ अपनी चमत्कारी कला के संबंध में सार्वभौमिकों से बेहतर हैं।

पाँचवाँ बिंदु: प्राणियों को बनाने में असीम सहजता और अत्यधिक गति मार्गदर्शन के लोगों को यह दृढ़ विश्वास देती है: प्राणियों को बनाने वाले की शक्ति के संबंध में, स्वर्ग, झरने और उद्यान बनाना उतना ही आसान है जितना कि क्रमशः वसंत, उद्यान और फूल बनाना। साथ ही, जैसा कि: आपकी रचना और आपका उत्थान एक ही आत्मा के समान है (31:28) कहता है, मानवता को पुनर्जीवित करना उतना ही आसान है जितना कि एक व्यक्ति को मरना और फिर से जीवित करना।

जैसा कि स्पष्ट रूप से कहा गया है: यह केवल एक रोना होगा, फिर देखो, वे सभी हमारे सामने व्यवस्थित हैं (36:53), सर्वोच्च सभा के लिए मानवता को पुनर्जीवित करना एक तुरही ध्वनि के साथ एक बिखरी हुई सेना को इकट्ठा करने जैसा आसान है।

यद्यपि यह अत्यंत गति और सहजता निर्माता की पूर्ण शक्ति को प्रमाणित करती है, फिर भी उन्होंने चीजों के निर्माण का श्रेय स्वयं चीजों को देने के लिए गुमराह लोगों को प्रेरित किया है। यह देखते हुए कि कुछ साधारण चीजें बहुत आसानी से अस्तित्व में आ जाती हैं, वे गलती से मान लेते हैं कि वे स्वयं निर्मित हैं। वे अनंत शक्ति के अस्तित्व को साबित करने वाली चीज़ों को उसके अस्तित्वहीन होने का प्रमाण मान लेते हैं! प्रत्येक कण को पूर्णता (जैसे, अनंत शक्ति और सर्वव्यापी ज्ञान) का गलत श्रेय देकर, क्योंकि सभी पूर्णताएँ केवल ब्रह्मांड के निर्माता के आवश्यक गुण हैं, वे असीम असंभवता का द्वार खोलते हैं।

ग्यारहवाँ वाक्य: और उसी के पास घर वापसी है। सब कुछ क्षणभंगुरता के क्षेत्र से वापस स्थायित्व के निवास में लौट आएगा और शाश्वत की शाश्वत संप्रभुता के आसन पर जाएगा। सब कुछ अनेक कारणों की दुनिया से एकता की शक्ति वाले महामहिम के क्षेत्र में स्थानांतरित हो जाएगा, [जहाँ उसकी शक्ति कारण और प्रभाव के आवरण के बिना काम करती है]। इस प्रकार तुम्हारा सहारा उसका दरबार है, और तुम्हारी शरणस्थली उसकी दया है।

इस ग्यारहवें श्लोक में और भी बहुत से सत्य हैं। उनमें से शाश्वत सुख और स्वर्ग से संबंधित सत्य को दसवें और उनतीसवें श्लोक में इतनी स्पष्टता से समझाया गया है कि आगे और कुछ कहने की आवश्यकता ही नहीं रह जाती।

स्पष्टीकरण। उन दो शब्दों से पाठक को यह विश्वास हो जाता है कि, जिस प्रकार सूर्य
वह अस्त हो जाएगा और अगली सुबह फिर से उदय होगा, जीवन, इस दुनिया का "अभौतिक सूर्य", पुनरुत्थान की सुबह स्थायी रूप से चमकने के लिए उदय होगा
दुनिया के विनाश के साथ जब यह अस्त हो जाएगा। उस समय कुछ जिन्न और मनुष्य
प्राणियों को शाश्वत आनंद से पुरस्कृत किया जाएगा, जबकि बाकी की निंदा की जाएगी
अनन्त यातना के लिए.

वास्तव में, ब्रह्माण्ड के सर्वज्ञ निर्माता, जिनके पास असीम सर्वव्यापी ज्ञान, असीम सार्वभौमिक इच्छा और अनंत सर्वव्यापी शक्ति है,
मानव जाति के दयालु निर्माता ने अपने धर्मग्रंथों में वादा किया है
और आदेश दिया कि ईमान वाले जन्नत और अनंत खुशी का आनंद लेंगे। और
ऐसा ही होगा, क्योंकि वह अपने वादों को नहीं तोड़ता, क्योंकि ऐसा करना सबसे बड़ा पाप है।
अज्ञानता या अक्षमता से उत्पन्न होने वाला कुरूप दोष। चूँकि
परम पूर्णता को किसी भी दोष से दूषित नहीं किया जा सकता, अथवा परम शक्तिशाली को किसी भी दोष से दूषित नहीं किया जा सकता।
अज्ञानता और नपुंसकता के कारण सर्वज्ञ परमेश्वर का वचन तोड़ना पाप है।
अकल्पनीय.

इसके अलावा, सभी पैगम्बर, संत, विद्वान और विश्वासी - सबसे बढ़कर
पैगम्बर-अल्लाह तआला से लगातार प्रार्थना और प्रार्थना करते रहो।
हे दयालु परमेश्वर, अपने सुंदर नामों के माध्यम से अपने वादा किए गए अनन्त आनंद के लिए।
साथ ही, उनकी दया, करुणा, न्याय और बुद्धि (उनके नाम: अत्यंत दयालु, अत्यंत दयालु, अत्यंत न्यायी और अत्यंत बुद्धिमान), साथ ही साथ
उनके अधिकांश अन्य सुंदर नाम (जैसे, भगवान और ईश्वर) और गुण (जैसे,
आधिपत्य और संप्रभुता), परलोक और शाश्वत सुख की आवश्यकता होती है और
उनकी वास्तविकता की गवाही देते हैं। कुरान, उनका सबसे बड़ा रहस्योद्घाटन, इस सत्य को दर्शाता है और सिखाता है, और पैगंबर मुहम्मद, उनके सबसे प्रिय, ने इसे अपने जीवन भर सिखाया और अनगिनत चमत्कारों के माध्यम से इसे साबित किया।

हे ईश्वर, उस पर आशीर्वाद, शांति और आशीर्वाद प्रदान करें,
परिवार और साथियों, सांसों की संख्या के अनुसार
स्वर्ग के लोग स्वर्ग में हैं। हमें और प्रकाशकों को पुनर्जीवित करें
(और इस ग्रंथ के अनुवादकों) के साथ-साथ हमारे मित्र, हमारे साथी सईद, और हमारे माता-पिता और
भाई-बहन, उनके बैनर तले। अपनी दया से हमें उनकी सिफ़ारिश प्रदान करें, और हमें उनके लिए
प्रार्थना करने का मौक़ा दें।
हे प्रभु, अपने परिवार और साथियों के साथ स्वर्ग में प्रवेश करो!
दयालुओं में सबसे दयालु। आमीन। आमीन।

हे हमारे प्रभु, अगर हम भूल जाएं या गलती कर दें तो हमें दोष मत देना। हे हमारे प्रभु, अगर हम भूल जाएं या गलती कर दें तो हमें दोष मत देना।
हमारे दिलों को मोड़ दे, इसके बाद कि तूने हमें मार्ग दिखा दिया है। हमें वह प्रदान कर
अपनी दया का उपहार, क्योंकि आप उपहार देने वाले हैं। मेरे भगवान, खोलो
मेरा दिल जीत लो और मेरा काम आसान कर दो। मेरी ज़बान की गांठ खोल दो ताकि

लोग मेरी बातें समझ सकें। हे हमारे पालनहार! हम पर क्षमा प्रदान कर, क्योंकि तू तौबा स्वीकार करनेवाला, अत्यन्त दयावान है।
तेरी महिमा हो! हमें कोई ज्ञान नहीं सिवाय उस चीज़ के जो तूने सिखाई है
तू सर्वज्ञ, तत्वदर्शी है।

दसवें वाक्यांश का परिशिष्ट

उसके नाम में, उसकी महिमा हो।

ऐसी कोई भी चीज़ नहीं है जो उसकी स्तुति से उसकी महिमा न करती हो।

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

देखो, केवल ईश्वर के स्मरण से ही हृदय शांत होता है।
विश्राम में. (13:28)

भगवान एक दृष्टांत देते हैं: एक आदमी जिसके कई स्वामी हैं, प्रत्येक
उसे अपनी ओर खींच लिया। (39:29)

प्रश्न: आप एकता में अनंत सहजता और एकता में अंतहीन कठिनाई की घोषणा करते हैं। भगवान के साथ अनेकता और साझेदारों को जोड़ना। इस प्रकार यह कहा जा सकता है कि एकता में सहजता किसी चीज के अस्तित्व को आवश्यक बना देती है, जबकि बहुलता में कठिनाई उसे लगभग असंभव बना देती है। हालाँकि, कठिनाइयाँ और आपके द्वारा उद्धृत असंभवताएं एकता के साथ मौजूद प्रतीत होती हैं।

उदाहरण के लिए, [ब्रह्मांड के अस्तित्व के संबंध में] आप कहते हैं कि यदि कण एक ईश्वर के आदेश के अधीन न होते, तो प्रत्येक कण सर्वव्यापी ज्ञान और पूर्ण शक्ति की आवश्यकता होती है, या असंख्य वैचारिक कार्यों को नियंत्रित करने में सक्षम होना। लेकिन भले ही भगवान उन सभी को नियंत्रित करता है, क्या उनमें अभी भी समान गुण नहीं होने चाहिए अपने असीम व्यवस्थित कर्तव्यों को पूरा करें?

उत्तर: हमने आत्मा को आश्वस्त करने के लिए तीन संक्षिप्त रूपक प्रस्तुत किए हैं और इस सत्य के बारे में मन को इस प्रकार व्यक्त करें:

पहला रूपक: अपने आप में, एक छोटा पारदर्शी और चमकदार धब्बा अपने स्वयं के आयाम और द्रव्यमान से बड़ा प्रकाश धारण नहीं कर सकता। हालाँकि, यदि वह कण सूर्य की अभिव्यक्ति के लिए खुला है, तो वह समझ सकता है कि विशाल सूर्य, उसका (सात रंगों वाला) प्रकाश और ऊष्मा, और इस प्रकार उसका सबसे व्यापक प्रकटीकरण प्रदर्शित करते हैं। अपने आप में, एक कण का कार्य सीमित है इसके आयामों से। लेकिन अगर यह सूर्य की ओर मुंह करके उससे जुड़ता है और एक के रूप में कार्य करता है दर्पण के माध्यम से, यह कुछ हद तक सूर्य की कार्यप्रणाली के उदाहरण प्रदर्शित कर सकता है।

इस प्रकार यदि प्रत्येक प्राणी या कण का अस्तित्व प्रकृति, कारण या स्वयं के कारण माना जाए, तो प्रत्येक के पास सर्वव्यापी ज्ञान और पूर्ण सत्य होना चाहिए।
अपने अद्भुत कर्तव्यों को पूरा करने के लिए आवश्यक शक्ति या अनगिनत संचालन उपकरणों की आवश्यकता होती है।
लेकिन यदि अस्तित्व को एकता के एक मात्र तत्व के रूप में माना जाए तो प्रत्येक कण एक हो जाता है।
परिणामी कनेक्शन के माध्यम से उसका अधिकारी। यह उसे प्रकट करने में सक्षम बनाता है
किसी न किसी तरह से, और उसकी अभिव्यक्ति की वस्तु होने के साथ-साथ, इस पर निर्भर करता है
उसका अनंत ज्ञान और शक्ति। सृष्टिकर्ता की शक्ति के साथ यह संबंध
यह उसे अपनी शक्ति से कहीं अधिक कार्य और कर्तव्य करने की अनुमति देता है।

दूसरा रूपक: दो लोगों की कल्पना करें, एक बहादुर लेकिन आत्मनिर्भर और दूसरा
दूसरा देशभक्त और देश के प्रति समर्पित। जब युद्ध छिड़ जाता है, तो
पहला, व्यक्ति राज्य से स्वतंत्र होकर कार्य करना चाहता है, और इसलिए आवश्यक कदम उठाता है
अपनी पीठ पर हथियार और गोलाबारूद लादे हुए। अपनी ताकत के कारण, वह मुठभेड़ कर सकता है
युद्ध में केवल एक दुश्मन कॉर्पोरल।

दूसरा, अपनी शक्तिहीनता का एहसास करते हुए, सेना में भर्ती हो जाता है और
राजा के साथ जुड़ जाता है। यह संबंध सेना को सक्षम बनाता है
सभी लोग उसका समर्थन करते हैं, और इसलिए वह अपने पीछे सेना की ताकत के साथ लड़ता है।
पराजित सेना के राजा के दुश्मन फील्ड मार्शल से मुठभेड़ के बाद, वह उसे अपने राजा के नाम पर बंदी बना लेता है। पहले सैनिक को उसका हथियार ले जाना होगा।
उपकरण और शक्ति के स्रोत स्वयं ही हैं, और इसलिए केवल एक ही पेशकश कर सकते हैं
अत्यंत महत्वहीन सेवा। दूसरा सैनिक सेना और
राजा को इन्हें ले जाने के लिए कहा। जैसे कि वह अपने रिसीवर को कनेक्ट कर रहा हो
मौजूदा दूरसंचार नेटवर्क से एक छोटे से तार के माध्यम से, यह कनेक्शन दूसरे सैनिक को अनंत शक्ति से जोड़ता है।

यदि सभी प्राणियों और कणों को सीधे जिम्मेदार ठहराया जाता है और प्रस्तुत किया जाता है
एकता के एकमात्र होने के कारण, वे परिणामी शक्ति और ताकत का उपयोग कर सकते हैं
महान उपलब्धियाँ हासिल करें। उदाहरण के लिए, एक चींटी ने फिरौन के महल को नष्ट कर दिया, और एक
मक्खी ने निम्रोद को नर्क भेजा।[337] इसके अलावा, एक सूक्ष्म जीव एक अन्यायी तानाशाह को नर्क भेज सकता है
उसकी कब्र तक, एक गेहूँ के दाने के आकार का बीज एक विशाल देवदार का पेड़ पैदा कर सकता है,
और एक वायु कण सभी फूलों और फलों में व्यवस्थित ढंग से प्रवेश कर सकता है।
सहजता उस समर्पण और अधिकारी होने से आती है। अगर सब कुछ छोड़ दिया जाए
स्वयं को और ईश्वर के साथ साझेदारों को जोड़ते हुए, प्रत्येक प्राणी के अस्तित्व को दर्शाता है
और स्वतंत्र कारणों या स्वयं के लिए संचालन, तब प्रत्येक प्राणी का कार्य उसके अपने शरीर और चेतना तक ही सीमित होता है।

---

[337] यह उस मच्छर की ओर संकेत करता है जो निम्रोद के नथुने से प्रवेश कर गया था, जिसके कारण
इस अत्याचारी की मृत्यु जिसने पैगम्बर अब्राहम को आग में फेंक दिया था। (ट्र.)

तीसरा रूपक: कल्पना कीजिए कि दो दोस्त सांख्यिकीय आंकड़ों का इस्तेमाल करके किसी ऐसे देश पर भौगोलिक कार्य लिखना चाहते हैं, जहां वे कभी नहीं गए हैं। एक दोस्त उस देश की सरकार के साथ घनिष्ठ संबंध बनाता है। राष्ट्रीय दूरसंचार केंद्र में प्रवेश करके और अपने रिसीवर को सस्ते तार के ज़रिए राज्य की लाइनों से जोड़कर, वह अपना टेलीफोन जोड़ता है, हर जगह से संवाद करता है और जानकारी प्राप्त करता है, और एक सटीक और अच्छी तरह से शोध की गई किताब लिखता है। दूसरे दोस्त को [खुद पर निर्भर करते हुए] हर जगह को देखने और सभी आवश्यक जानकारी प्राप्त करने के लिए लगातार 50 साल तक यात्रा करनी होगी। या, बहुत सारा पैसा खर्च करके, उसे अपनी खुद की व्यापक टेलीग्राफ और टेलीफोन प्रणाली स्थापित करनी होगी।

यदि अनगिनत चीजों और प्राणियों को एकता के एकल के लिए जिम्मेदार ठहराया जाता है, तो प्रत्येक कनेक्शन एक वस्तु बन जाता है जिसके माध्यम से "अनन्त सूर्य" स्वयं को मानव बनाता है। यह उसे उसकी बुद्धि के नियमों, उसके ज्ञान के सिद्धांतों और उसकी शक्ति के नियमों से जुड़ने में सक्षम बनाता है। दिव्य शक्ति और शक्ति के माध्यम से, यह भगवान की एक निश्चित अभिव्यक्ति को प्रदर्शित करने के स्तर तक बढ़ जाता है और एक सर्व-देखने वाली आंख, एक सर्व-देखने वाला चेहरा और (सर्व-महत्वपूर्ण) शब्द प्राप्त करता है जिनका सभी मामलों में वजन होता है। इस कनेक्शन को तोड़ने से यह अपने स्वयं के द्रव्यमान तक कम हो जाता है, क्योंकि ब्रह्मांड एक जीव है जो परस्पर संबंधित भागों से बना है, और इसका मतलब है कि ऊपर वर्णित कार्यों को करने के लिए इसमें पूर्ण दिव्यता होनी चाहिए।

एकता और विश्वास का मार्ग इतनी असीम सहजता का प्रतिनिधित्व करता है कि वस्तुओं का अस्तित्व आवश्यक और अपरिहार्य हो जाता है, जबकि ईश्वर के साथ भागीदार बनाने में दुर्गम कठिनाइयाँ होती हैं। एक प्राणी एक निश्चित परिणाम प्राप्त करने के लिए कई चीजों को बड़ी आसानी से और एक विशेष तरीके से व्यवस्थित कर सकता है।

हालाँकि, यह चीज़ों की खुद की क्षमता से परे है। तीसरे पत्र के अनुसार, सूर्य के "आदेश" के तहत ग्रहों द्वारा किए गए शानदार नज़ारों और पृथ्वी की वार्षिक और दैनिक गतिविधियों को, जो मौसमी, दैनिक और रात्रि चक्रों का कारण बनती हैं, एक शाश्वत संप्रभु को श्रेय देना उसके लिए इस शानदार परिणाम को प्राप्त करने के लिए एक "सैनिक" (पृथ्वी) का उपयोग करना आसान बनाता है। "चलने" के लिए कहा जाने पर पृथ्वी खुशी से उठती है, अपने भगवान के नामों की महिमा में एक मौलवी दरवेश की तरह घूमती है, और वांछित परिणाम आसानी से और पूर्ण व्यवस्थित रूप से प्राप्त होता है। यदि आकाशीय पिंड पृथ्वी को चलने के लिए कहते हैं, तो एकमात्र संभावित परिणाम अराजकता है, भले ही लाखों बड़े तारे खुद को गति में डाल दें।

निष्कर्ष यह है कि कुरान और ईमान वाले सभी प्राणियों को एक ही बनाने वाले के अधीन मानते हैं और हर काम को सीधे उसी के अधीन मानते हैं। उनका रास्ता इतना आसान है कि हर प्राणी का अस्तित्व और हर घटना ज़रूरी हो जाती है। लेकिन जो लोग एक ही चीज़ को असंख्य कारणों के अधीन मानते हैं, वे इतना कठिन रास्ता अपनाते हैं कि

यह असंभव हो जाता है। गुमराह व्यक्ति के स्पष्टीकरण में एक प्राणी के अस्तित्व में आने के लिए जो आवश्यक है, वह कुरान के आस्तिक के स्पष्टीकरण में पूरे ब्रह्मांड के निर्माण के लिए पर्याप्त है। सभी चीजों के लिए एक आदेश द्वारा जारी करना एक चीज के लिए असंख्य आदेशों द्वारा जारी करने की तुलना में कहीं अधिक आसान है। उदाहरण के लिए, एक अधिकारी 1,000 सैनिकों को एक सैनिक की तरह आसानी से आदेश दे सकता है, जबकि 1,000 सैनिकों द्वारा एक सैनिक को आदेश देना अराजकता पैदा करेगा, क्योंकि यह 1,000 सैनिकों को अलग-अलग आदेश देने जैसा होगा।

यह शानदार श्लोक उन लोगों पर यह सत्य फेंकता है जो ईश्वर के साथ साझीदार जोड़ते हैं:

ईश्वर एक दृष्टान्त देते हैं: एक मनुष्य जिसका अनेक स्वामी हैं, तथा प्रत्येक उसे अपनी ओर खींचता है;
और एक मनुष्य जिसका संबंध केवल एक ही स्वामी से है।
क्या दोनों बराबर हो सकते हैं? प्रशंसा अल्लाह के लिए है! बल्कि उनमें से अधिकतर लोग नहीं जानते।
(39:29)

आपकी महिमा हो। हमें सिर्फ़ वही ज्ञान है जो आपने हमें सिखाया है। आप सर्वज्ञ, सर्वज्ञ हैं। हे ईश्वर, हमारे गुरु मुहम्मद पर ब्रह्मांड के कण-कण तक, तथा उनके परिवार और साथियों पर कृपा और शांति प्रदान करें। आमीन। सभी प्रशंसाएँ ईश्वर की हैं, जो सारे संसार के स्वामी हैं।

हे ईश्वर, हे अद्वितीय, हे एकमात्र, हे सबके आराध्य। हे वह जिसके अलावा कोई दूसरा ईश्वर नहीं है, केवल वह ही है, जिसका कोई साझी नहीं। हे वह जिसकी प्रभुता है, और जिसकी प्रशंसा है।

हे वह जो जीवन देता है और मृत्यु का कारण बनता है। हे वह जिसके हाथ में सब कुछ अच्छा है। हे वह जो हर चीज़ पर शक्तिशाली है। हे वह जिसके पास घर वापसी है। इन वाक्यांशों में निहित रहस्यों के लिए, इस ग्रंथ के प्रकाशकों (और अनुवादक), उनके मित्रों और इसके लेखक सईद को ईश्वर की एकता के सिद्ध समर्थकों; सत्यनिष्ठ, सावधानीपूर्वक शोधकर्ताओं; और ईश्वर-चेतन विश्वासियों के साथ शामिल करें।

आमीन.

हे ईश्वर। अपनी एकता के रहस्य के लिए, इस पुस्तक के प्रकाशकों (एएचडी अनुवादक) से अपनी एकता के रहस्यों को फैलाने के लिए कहिए। उनके दिलों को ईमान की रोशनी से भर दीजिए और उनकी ज़बानों से कुरान की सच्चाईयाँ बोलवाइए। आमीन। आमीन। आमीन।

इक्कीसवाँ पत्र

इक्कीसवाँ पत्र

माता-पिता के प्रति स्नेह

उसके नाम में, उसकी महिमा हो।

ऐसी कोई भी चीज़ नहीं है जो उसकी स्तुति से उसकी महिमा न करती हो।

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

तुम्हारे रब ने आदेश दिया है कि तुम सिर्फ़ उसी की इबादत करो और अपने माँ-बाप के साथ अच्छा व्यवहार करो। अगर उनमें से कोई एक या दोनों तुम्हारे साथ बुढ़ापे में पहुँच जाएँ तो उनके सामने अपमान का एक शब्द भी न बोलो और न ही उन्हें डाँटो, बल्कि उनके साथ सम्मान से बात करो। दया के कारण उन पर नम्रता का पंख डाल दो और कहो, "ऐ मेरे रब! उन पर दया करो, जैसे उन्होंने बचपन में मेरा ख़्याल रखा।" तुम्हारा रब तुम्हारे दिलों में जो कुछ है, उसे भली-भाँति जानता है। अगर तुम डरपोक हो तो वह धैर्य रखने वालों को बड़ा क्षमाशील है। (17:23-25)

O आप जो माता-पिता के प्रति संतानोचित जिम्मेदारी से अनजान हैं, जिनके घर में कोई बुजुर्ग माता-पिता, कोई असहाय और अक्षम रिश्तेदार, या कोई सहधर्मी व्यक्ति है जो जीविका कमाने में असमर्थ है। इन आयतों पर ध्यान दें और देखें कि वे पाँच तरीकों से आपको संतानोचित स्नेह दिखाने पर जोर देते हैं।

चूँकि बच्चों के प्रति पिता का स्नेह सांसारिक जीवन की एक उत्कृष्ट वास्तविकता है, इसलिए संतान के प्रति कृतज्ञता एक अत्यंत आवश्यक और भारी कर्तव्य है। माता-पिता अपने बच्चों के लिए प्यार से अपने जीवन का बलिदान करते हैं। इसे देखते हुए, जो बच्चे उन्हें खुश करने और उनका अनुमोदन प्राप्त करने की कोशिश करते हैं, उन्हें ईमानदारी से सम्मान दिए बिना या उनकी सेवा किए बिना

उनमें कोई मानवीयता नहीं है और वे कृतघ्नता के राक्षस हैं। चाचा-चाची
माता-पिता माने जाते हैं।

हे प्रभु, तुम जो ऐसे कर्तव्यों की उपेक्षा करते हो, यह जान लो कि उनके निरन्तर अस्तित्व से ऊब जाना
और इसलिए उनके भविष्य की आशा करना कितना अपमानजनक और बेईमानी भरा है।
मौतें। यह जान लो और होश में आओ! समझो कि यह कितना अन्याय है
यह उन लोगों की मृत्यु की इच्छा करना है जिन्होंने आपके लिए अपना जीवन बलिदान कर दिया।

हे जीविका कमाने में मग्न तुम! जान लो कि तुम्हारे विकलांग
जिस रिश्तेदार को आप बोझ समझते हैं, उसे आशीर्वाद और प्रचुरता का साधन बनाना।
जीविका चलाने में आने वाली कठिनाई के बारे में कभी शिकायत न करें, क्योंकि यदि ऐसा न होता तो
आपको जो आशीर्वाद और प्रचुरता प्रदान की गई है, उससे भी अधिक का सामना करना पड़ेगा
कठिनाई। अगर मैं इस पत्र को संक्षिप्त नहीं रखना चाहता था, तो मैं आपको यह साबित कर देता।

मैं ईश्वर की कसम खाता हूँ कि यह एक वास्तविकता है जिसे मेरा शैतान और दुष्ट-आदेश देने वाला स्व भी
स्वीकार करता है। सारा अस्तित्व देख सकता है कि असीम दयालु और
महिमा और उदारता के दयालु निर्माता बच्चों को यहाँ भेजते हैं
उनके भोजन के साथ-साथ उनकी माँ का स्तन दूध भी है। वह बुज़ुर्गों के लिए भोजन भेजता है, जो बच्चों की
तरह हैं और उनसे भी ज़्यादा योग्य और योग्य हैं
दया की आवश्यकता है, आशीर्वाद और अदृश्य, अमूर्त बहुतायत के रूप में। वह अपने भरण-पोषण को मतलबी,
लालची लोगों पर नहीं डालता।

सत्य इस प्रकार व्यक्त किया गया है: परमेश्वर सर्वप्रदाता, सामर्थ्यवान है
और अडिग (51:58) और: कितने ही प्राणी हैं जो अपना बच्चा नहीं पालते
प्रावधान, लेकिन भगवान इसके लिए प्रदान करता है और आप (29:60) सभी जीवित लोगों द्वारा घोषित किया जाता है
अपने स्वभाव की भाषा के माध्यम से प्राणियों को आशीर्वाद दिया जाता है। इसलिए न केवल बुजुर्ग रिश्तेदारों का
भरण-पोषण आशीर्वाद के रूप में भेजा जाता है, बल्कि पालतू जानवरों का भी,
वे उन लोगों के दोस्त बन गए हैं जो उन्हें खाना खिलाते हैं और उनकी देखभाल करते हैं। मैंने व्यक्तिगत रूप से
यह देखा है: सालों पहले, मेरा दैनिक राशन आधी रोटी थी। मैं मुश्किल से इससे गुजारा कर पाता था जब तक कि
चार बिल्लियाँ मेरी रोज़ाना की मेहमान नहीं बन गईं। जैसे ही वे
मैंने अपनी रोटी बाँटना शुरू किया, वही राशन हमेशा हम सबके लिए पर्याप्त होता था। मैंने देखा
ऐसा इतनी बार हुआ कि मुझे यकीन हो गया कि मुझे आशीर्वाद से लाभ हुआ है
बिल्लियों के माध्यम से आ रहा है। मैं घोषणा करता हूं कि वे मुझ पर बोझ नहीं थे;
बल्कि, मैं उनका ऋणी था।

हे लोगों, आप सबसे अधिक सम्मानित, महान और सम्मान के योग्य हैं
प्राणियों में, विश्वासी सबसे उत्तम हैं। विश्वासियों में,
असहाय और बुजुर्ग लोग सम्मान और करुणा के सबसे अधिक हकदार और जरूरतमंद हैं। असहाय और बुजुर्गों
में रिश्तेदार अधिक स्नेह, प्यार के हकदार होते हैं,
और दूसरों की तुलना में सेवा। रिश्तेदारों में, माता-पिता सबसे सच्चे विश्वासपात्र और सबसे अंतरंग साथी होते हैं।
अगर कोई जानवर आशीर्वाद और

जब वह आपके घर में अतिथि के रूप में रहता है, तो उस समय उसकी कृपा दृष्टि आपके जीवन में कितनी अधिक होती है, इस बात पर विचार करें कि यदि आपके वृद्ध माता-पिता आपके साथ रहें, तो वे आपके लिए कितने अमूल्य आशीर्वाद और दया का साधन बन सकते हैं।

निम्नलिखित परंपरा से पता चलता है कि विपत्तियों को दूर करने के लिए वे कितने महत्वपूर्ण साधन हैं: "लेकिन बूढ़े के लिए दुगुनी विपत्तियाँ तुम्हारे ऊपर बरसेंगी।"338 इसलिए अपने होश में आओ। अगर तुम्हें लंबी उम्र सौंपी गई

है, तो तुम भी बूढ़े हो जाओगे। अगर तुम माता-पिता का सम्मान नहीं करते, तो, इस नियम के अनुसार कि किसी को उसके कर्म के अनुसार पुरस्कृत या दंडित किया जाता है, तुम्हारे बच्चे तुम्हारा सम्मान नहीं करेंगे। इसके अलावा, अपने परलोक पर गंभीर चिंतन से पता चलता है कि अपने माता-पिता की स्वीकृति प्राप्त करना और सेवा के माध्यम से उन्हें प्रसन्न करना आपके परलोक के लिए एक अनमोल प्रावधान है। यदि तुम इस सांसारिक जीवन से प्यार करते हो, तो उन्हें प्रसन्न करो ताकि तुम एक सुखद जीवन जी सको। यदि तुम उन्हें बोझ समझते हो, उनके आसानी से नाराज़ होने वाले दिलों को तोड़ते हो, और उनकी मृत्यु की कामना करते हो, तो तुम कुरान की धमकी के पात्र बनोगे: वह [वह] दुनिया और परलोक दोनों को खो देता है (22:11)।

अतः जो लोग दयालु ईश्वर की दया चाहते हैं, उन्हें चाहिए कि ईश्वर द्वारा सौंपे गए लोगों पर दया करें।

मैंने देखा कि मेरे मज़हब के भाई मुस्तफ़ा कैवस अक्सर अपने सांसारिक और पारलौकिक मामलों में सफल होते थे। मुझे तब तक समझ नहीं आया कि ऐसा क्यों होता है जब तक मुझे पता नहीं चला कि वे अपने माता-पिता के अधिकारों का सख्ती से पालन करते हैं। जो कोई भी दोनों दुनिया में समृद्धि चाहता है, उसे उनके उदाहरण का अनुसरण करना चाहिए।

> हे ईश्वर, उस पर आशीर्वाद और शांति प्रदान करें जिसने घोषणा की: "स्वर्ग माताओं के पैरों के नीचे है," और उसके परिवार और साथियों पर।
> हमें कोई ज्ञान नहीं, परन्तु जो कुछ तूने हमें सिखाया है। तू सर्वज्ञ, अत्यन्त तत्वदर्शी है।

338 अल-अजलूनी, कश्फ अल-खफ़ा', 2:163.

बाईसवाँ पत्र

बाईसवाँ पत्र

• इस्लामी भाईचारा [और बहनचारा]
• संतोष और लालच

उसके नाम पर.

ऐसी कोई भी चीज़ नहीं है जो उसकी स्तुति से उसकी महिमा न करती हो।

(इस पत्र में दो अध्याय हैं। पहला अध्याय विश्वासियों को भाईचारे और आपसी प्रेम का आह्वान करता है।)

पहला अध्याय

ईश्वर के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

निस्संदेह ईमानवाले आपस में भाई-भाई हैं। अतः तुम अपने भाइयों के बीच सुलह करा दो। (49:10)

(बुराई को) जो अच्छा है उससे दूर करो, फिर वह कौन है जो तुम्हारे और तुम्हारे बीच में है?
यदि कोई शत्रुता करता है तो ऐसा होगा मानो वह कोई सच्चा मित्र हो। (23:96)

जो लोग अपने क्रोध पर काबू रखते हैं और लोगों को क्षमा करते हैं। परमेश्वर उनसे प्रेम करता है
जो भलाई करते हैं। (3:134)

D विवाद, मतभेद, पक्षपात, हठ और ईर्ष्या द्वेष का कारण बनते हैं
और विश्वासियों के बीच दुश्मनी, और इसलिए वे पाप हैं जो व्यक्तिगत, सामाजिक और आध्यात्मिक जीवन को नुकसान पहुंचाते हैं। सत्य और ज्ञान, साथ ही इस्लाम

(सर्वोच्च मानवता का दृष्टिकोण) सभी इसे साबित करते हैं। इसके अलावा, वे जहर देते हैं मानव जीवन। इस सत्य के अनेक पहलुओं में से हम केवल छह का उल्लेख करते हैं।

प्रथम पहलू: सत्य की दृष्टि से यह गलत है। हे अन्यायी जो एक आस्तिक के लिए विद्वेष और शत्रुता को पोषित करता है, अपने आप को एक जहाज पर या कल्पना करें एक अपराधी और नौ निर्दोष व्यक्तियों वाला घर। अगर कोई कोशिश करता जहाज़ या घर को नष्ट कर दो (उस एक अपराधी की वजह से), तो तुम इस अन्याय की भयावहता को समझ पाओगे और विरोध करोगे। भले ही कोई एक हो उस जहाज़ पर एक निर्दोष व्यक्ति और नौ अपराधी होने के बावजूद भी यह अन्याय होगा उसे डुबोएँ।

एक आस्तिक की तुलना परमेश्वर के घर या जहाज से की जा सकती है। एक व्यक्ति में नौ नहीं, बल्कि 20 निर्दोष गुण होते हैं जैसे विश्वास, इस्लाम और पड़ोसीपन। अगर आप किसी मोमिन के लिए द्वेष और दुश्मनी रखते हैं क्योंकि एक आपराधिक विशेषता आपको पसंद नहीं है, और आप उसे नष्ट करना चाहते हैं भगवान द्वारा बनाया गया वह जहाज या घर, आपका अपराध सबसे क्रूर होगा।

दूसरा पहलू: यह ज्ञान की दृष्टि से गलत है। प्रेम और शत्रुता विपरीत हैं, जैसे प्रकाश और अंधकार, और इसलिए उनका वास्तविक स्वरूप एक ही हृदय में संयोजित नहीं हो सकता। यदि प्रेम वास्तव में महसूस किया जाता है, तो शत्रुता अपना स्थान ग्रहण कर लेती है। दया का रूप। विश्वासियों को अपने सहधर्मियों से प्यार करना चाहिए - और वास्तव में प्यार करते हैं - और उनमें किसी भी बुराई को देखकर दुखी होना चाहिए। उन्हें अपने धर्म को सुधारने की कोशिश करनी चाहिए सहधर्मियों के साथ केवल नम्रता से पेश आएं, क्योंकि एक भविष्यसूचक परंपरा कहती है: "विश्वासियों एक दूसरे पर गुस्सा नहीं होना चाहिए, न ही एक दूसरे से बात करने से इनकार करना चाहिए यदि शत्रुता उत्पन्न करने वाले कारण प्रबल हो जाएं और शत्रुता हृदय पर आक्रमण कर दे, तो प्रेम केवल औपचारिक हो जाता है, दिखावा और चापलूसी से अधिक कुछ नहीं रह जाता ।

हे अन्यायी लोगों, देखो कि इस तरह का व्यवहार कितना बड़ा अन्याय है! बेकार के कंकड़ों को काबा से भी अधिक मूल्यवान और माउंट से भी बड़ा बताया। उहुद, तुम एक घृणित मूर्खता के दोषी हो। चूँकि सभी इस्लामी विशेषताएँ जैसे कि ईमान (काबा जितना मूल्यवान) और इस्लाम (उहुद पर्वत जितना शानदार) प्रेम की मांग करते हैं और विश्वासियों के बीच सद्भावना के लिए, किसी भी विश्वासी के प्रति शत्रुता को बढ़ावा देना एक बहुत बड़ी शर्म, मूर्खता और अन्याय है। ऐसा करने का मतलब है कि आप विश्वास और इस्लाम के बजाय कुछ शत्रुतापूर्ण कमियों को प्राथमिकता देते हैं!

विश्वास में एकता के लिए दिलों की एकता की आवश्यकता होती है, और पंथ की एकता की मांग होती है समाज की एकता। यदि आप किसी अन्य व्यक्ति के समान ही हैं, तो आप उसके प्रति मित्रतापूर्ण भावना रखें और इस प्रकार पारस्परिक मैत्रीपूर्ण संबंध बनाएं क्योंकि आप एक कमांडर द्वारा कमान संभाली जाती है। आप एक भाईचारे के रिश्ते का भी अनुभव करेंगे-

---

[339] बुखारी, "अदब," 57; मुस्लिम, "बीरर," 23; अबू दाऊद, "अदब," 47.

आप एक ही बैरक में रहते हैं इसलिए आप दोनों के बीच रिश्ता मजबूत है। इसे देखते हुए, अपने रिश्ते को समझें अनेकों के रूप में एकता के आपसी संबंधों के माध्यम से विश्वासियों के प्रति घनिष्ठ लगाव दिव्य नाम, तथा विश्वास के प्रकाश और चेतना से आने वाले सद्भाव और भ्रातृत्व के बंधन।

तुम दोनों एक ही सृष्टिकर्ता, प्रभु, आराधना की वस्तु की सेवा करते हो, प्रदाता... इसलिए आपके बीच उतने ही संबंध हैं जितने दिव्य नाम हैं। तुम्हारा नबी, तुम्हारा धर्म और तुम्हारा क़िबला एक ही है। ऐसे संबंधों की संख्या लगभग सौ है। आपका शहर, देश और राज्य एक है, और दसियों चीजें आपके लिए एक समान हैं।

इन संबंधों के लिए एकता और एकरूपता, मिलन और सामंजस्य, प्रेम और भाईचारे की आवश्यकता होती है। ऐसी अमूर्त जंजीरें सभी ग्रहों को एक साथ जोड़ने के लिए पर्याप्त मजबूत हैं। मकड़ी के जाले जैसी कमजोर और तुच्छ चीज़ को प्राथमिकता देना, जो विवाद, कलह, द्वेष, शत्रुता, और साथी विश्वासियों के प्रति दुर्भावना, दर्शाता है ऐसे संबंधों के प्रति आपकी बड़ी उपेक्षा। आप प्रेम के उन कारणों का गंभीरता से अपमान करते हैं और उन भाईचारे के रिश्तों का उल्लंघन करते हैं!

तीसरा पहलू: इसके अनुसार: कोई भी आत्मा किसी दूसरे का बोझ नहीं उठाती (6:164), जो पूर्ण न्याय व्यक्त करता है, तथा विश्वासियों के प्रति विद्वेष और शत्रुता को बढ़ावा देता है यह एक आपराधिक विशेषता के कारण उनके सभी निर्दोष गुणों की निंदा करने जैसा है - वास्तव में बहुत बड़ा अन्याय है! यदि आप अपनी शत्रुता को बढ़ाते हैं उनके सम्बन्धियों, तुम ही अत्याचारी हो। लोग अत्याचारी बहुत हैं (14:34)। जब सत्य और इस्लाम का कानून और ज्ञान तुम्हें इतने बड़े अन्याय से आगाह करते हैं तो तुम अपने आप को सही कैसे मान सकते हो?

सत्य के अनुसार, शत्रुता उत्पन्न करने वाली बुराई के रूप स्वयं बुरे हैं, और वे पृथ्वी की तरह घने हैं। उन्हें संक्रमित नहीं करना चाहिए या आगे नहीं बढ़ाना चाहिए दूसरों के लिए। लेकिन अगर दूसरे लोग दूसरों को ऐसा करते हुए देखते हैं और उनकी नकल करते हैं, तो यह यह एक अलग मामला है, क्योंकि ऐसे लोग अपने स्वार्थ के लिए ऐसा करते हैं। ऐसी बुराइयों की ओर हमारा झुकाव उन बुराइयों की प्रभावी शक्तियों की तुलना में अधिक होता है। इसके विपरीत, अच्छे कार्य और गुण प्रेम से उत्पन्न होते हैं, प्रेम को जगाते हैं, और प्रकाशमान होते हैं (क्योंकि प्रेम प्रकाशमान होता है)। वे स्वभाव से ही संचारणीय होते हैं। यही कारण है कि हम ऐसी कहावतें हैं जैसे: “दोस्त का दोस्त दोस्त होता है” और “बहुत सारी आँखें होती हैं एक आँख के खातिर प्यार किया गया।”

अतः हे अन्यायियों, विचार करो कि शत्रुता रखना कितना बड़ा अपराध है। उन निर्दोष साथी विश्वासियों के प्रति जो प्रेम के योग्य हैं, या उनके प्रति रिश्तेदारों क्योंकि आप व्यक्तिगत विश्वासियों को पसंद नहीं करते हैं।

---

[340] क़िबला: मक्का में काबा की दिशा, जिस ओर सभी मुसलमानों को नमाज़ के दौरान मुँह करके बैठना चाहिए। (सं.)

चौथा पहलू: यह व्यक्तिगत जीवन के दृष्टिकोण से ग़लत है।
निम्नलिखित चार सिद्धांतों पर विचार करें जो इस पहलू का आधार हैं:

पहला सिद्धांत: जब आप जानते हैं कि आपका रास्ता सही है और आपकी राय सच्ची है, तो आप यह कहने में न्यायसंगत हो सकते हैं: "मेरा रास्ता सही और बेहतर है।"
लेकिन आप यह नहीं कह सकते: "केवल मेरा रास्ता ही सही है।" जैसा कि हम जानते हैं, "संतुष्टि की आंख दोषों को देखने के लिए बहुत मंद होती है, जबकि क्रोध की आंख सभी दोषों को प्रदर्शित करती है।"
बुराई।" इसलिए आपका अन्यायपूर्ण दृष्टिकोण और विकृत राय न्याय नहीं कर सकती
हमें दूसरों के तरीकों को गलत नहीं मानना चाहिए और न ही किसी दूसरे के तरीके को गलत कहना चाहिए।

दूसरा सिद्धांत: आप जो भी कहें वह सच होना चाहिए, लेकिन जो भी सच है उसे (लापरवाही से और हर मौके पर) कहना उचित नहीं है। अगर आप ऐसा करेंगे तो यह बात सच साबित होगी।
हो सकता है कि दूसरा व्यक्ति आपकी सलाह से चिढ़ जाए और प्रतिकूल प्रतिक्रिया दे, खासकर तब जब आपका इरादा पूरी तरह ईमानदार न हो।

तीसरा सिद्धांत: यदि आप अपनी शत्रुता को पोषित करना चाहते हैं, तो उसे दूसरों के विरुद्ध निर्देशित करें।
अपने दिल में दुश्मनी को दूर करने की कोशिश करें। अपने शारीरिक स्वार्थ और उसके खिलाफ़ लड़ें
अपनी पसंद की चीज़ों को सुधारने की कोशिश करें, क्योंकि यह आपका सबसे ख़तरनाक दुश्मन है।
उस हानिकारक आत्म को प्रसन्न करने के लिए विश्वासियों के प्रति क्रोध और शत्रुता पालें। यदि
आप इस दुश्मनी को दूर नहीं कर सकते, यहाँ बहुत से अविश्वासी और विधर्मी हैं
शत्रुता के योग्य। चूँकि प्रेम का गुण प्रेम पाने का पात्र है, इसलिए शत्रुता भी
शत्रुता प्राप्त करने योग्य है।

यदि आप अपने शत्रु को हराना चाहते हैं तो बुराई का जवाब अच्छाई से दीजिए।
बुराई से दुश्मनी बढ़ती है। भले ही बाहरी तौर पर वे पराजित हों, लेकिन ऐसे लोग
उनके दिलों में द्वेष और दुश्मनी पनपती है। अगर आप अच्छा जवाब देते हैं, तो वे
पश्चाताप करेंगे और आपके मित्र बनेंगे, जैसा कि दोहे में व्यक्त किया गया है:

यदि आप महान लोगों के साथ अच्छा व्यवहार करेंगे, तो वे आपके होंगे,
लेकिन यदि आप नीच लोगों के साथ अच्छा व्यवहार करेंगे, तो वे विद्रोह कर देंगे...

आस्तिक स्वभाव से महान होते हैं और यदि आप उनके साथ अच्छा व्यवहार करेंगे तो वे आपके अधीन हो जाएंगे।
यदि कोई आस्तिक नीच लगता है, तो भी वह सम्मान के मामले में महान है
विश्वास के प्रति। यदि आप किसी को बार-बार यह कहते हैं कि वह अच्छा है या बुरा, तो यह
अक्सर देखा गया है कि वह व्यक्ति क्रमशः अच्छा या बुरा बन जाता है। इसलिए ध्यान दें
खुशी और समृद्धि के लिए कुरान द्वारा स्थापित निम्नलिखित पवित्र सिद्धांत
मोक्ष उसी में मिलता है:

यदि वे व्यर्थता से मिलते हैं तो गौरव से निकल जाते हैं। (25:72)

फिर यदि तुम क्षमा करो, उपेक्षा करो और क्षमा कर दो, तो अल्लाह अत्यन्त क्षमाशील, दयावान है। (64:14)

चौथा सिद्धांत: जो लोग द्वेष और शत्रुता में लिप्त हैं वे गलत और
वे अपनी आत्मा, साथी विश्वासियों और ईश्वरीय करुणा का उल्लंघन करते हैं।
अपनी आत्माओं को दर्दनाक यातना देना, खुद पर दुख पहुंचाना
जब भी वे अपने शत्रुओं को आशीर्वाद या लाभ प्राप्त करते और कष्ट पाते देखते हैं
वे अपने शत्रुओं से डरते हैं, इसलिए उन्हें पीड़ा होती है। ईर्ष्या से उत्पन्न शत्रुता सबसे भयंकर पीड़ा है, क्योंकि ईर्ष्या
ईर्ष्यालु व्यक्ति को नष्ट कर देती है और उसे छोड़ देती है।
एक अछूता (या काफी हद तक अछूता) ईर्ष्या का विषय है।

यदि ऐसे ईर्ष्या में फंसे लोग ठीक होना चाहते हैं, तो उन्हें इस पर विचार करना चाहिए
किस चीज या किस व्यक्ति के भाग्य से ऐसी ईर्ष्या पैदा होती है। ऐसा करने से उन्हें यह देखने का मौका मिलेगा
कि शारीरिक सुंदरता और शक्ति, सांसारिक पद और धन क्षणभंगुर हैं।
उनका लाभ तो थोड़ा है, परन्तु जो कष्ट वे पहुँचाते हैं वह बहुत है। यदि तुम दूसरों से उनकी आख़िरत के सम्बन्ध
में की गई अच्छाइयों के कारण ईर्ष्या करते हो, तो तुम या तो एक पापी हो या एक पापी।
वह पाखंडी व्यक्ति जो परलोक में मिलने वाले पुरस्कार को यहीं खर्च करना चाहता है,
या जिस व्यक्ति से तुम ईर्ष्या करते हो उसे कपटी समझो।

यदि आप उन लोगों पर प्रसन्न होते हैं जिनसे आप ईर्ष्या करते हैं और उन पर दुःखी होते हैं जिनसे आप ईर्ष्या करते हैं
उन्हें इनाम मिलता है, आप भाग्य और दिव्य करुणा से नाराज हैं
और इस प्रकार अप्रत्यक्ष रूप से उनकी आलोचना करते हैं और उन पर आपत्ति जताते हैं। जो लोग नियति की आलोचना करते हैं
इसका मतलब है कि वे निहाई पर वार करते हैं और अपना सिर फोड़ लेते हैं; जो लोग आपत्ति करते हैं
करुणा से वंचित हैं।

न्याय और विवेक कैसे स्वीकार कर सकते हैं कि आप एक दिन की शत्रुता के योग्य भी नहीं किसी चीज़ को एक साल तक विद्वेष और शत्रुता का कारण बना दें? इसके अलावा, आप अपने द्वारा सहे गए किसी भी बुरे काम को उसके ऊपर आरोपित नहीं कर सकते।
अपने साथी विश्वासी को केवल तीन कारणों से ही सौंपें: इसे स्वीकार करने में भाग्य का हाथ होता है, इसलिए इसे चुपचाप स्वीकार करें; शैतान और बुराई को आदेश देने वाले स्वयं के हिस्से पर विचार करें, जो आपको अपने साथी विश्वासी पर दया करने के लिए प्रेरित करेगा - न कि नाराज़ होने के लिए।
और यदि तुममें से कोई भी ईमानवाला न हो जो उनसे पराजित हो गया हो, तो अल्लाह ऐसे लोगों का उपयोग करके तुम्हें किसी ऐसे दोष के कारण दण्ड दे सकता है, जिसके बारे में तुम अनभिज्ञ हो या जिसे छिपाए हुए हो।

शेष छोटे हिस्से का जवाब सहिष्णुता से देकर,
क्षमा और उदारता से आप अपने शत्रु पर शीघ्र विजय प्राप्त कर लेंगे
सुरक्षित रूप से, और किसी भी गलत काम और नुकसान से बचेंगे। अन्यथा, आप जैसे होंगे
एक शराबी या पागल व्यापारी जो बर्फ और कांच के टुकड़े को कम कीमत पर खरीदता है
हीरे का। दूसरे शब्दों में, आप बेकार, क्षणभंगुर और
हिंसक, लगातार शत्रुता और स्थायी विद्वेष के साथ महत्वहीन मामले,
मानो आप और आपका दुश्मन हमेशा के लिए इस दुनिया में रहेंगे। ऐसा रवैया अत्यधिक गलत कामों, नशे [होने के अर्थ में] की ओर ले जाता है
वास्तविकता से अनभिज्ञ], और एक प्रकार का पागलपन।

यदि आप अपने बारे में चिंतित हैं, तो शत्रुता और बदला लेने की इच्छा को अनुमति न दें, ये दोनों ही आपके जीवन के लिए बहुत हानिकारक हैं, आपके दिल में प्रवेश करने के लिए। अगर वे पहले से ही हैं अपने दिल में जो कुछ भी है, उसे नज़रअंदाज़ करें और हाफ़िज़ अल-शिराज़ी के शब्दों पर ध्यान दें: " दुनिया कोई ऐसी वस्तु नहीं है जिसके लिए संघर्ष किया जाए। दुनिया बेकार है क्योंकि यह क्षणभंगुर है। इसे देखते हुए, समझिए कि इसके क्षुद्र मामले कितने महत्वहीन हैं!

हाफ़िज़ यह भी कहते हैं: "दोनों दुनियाओं की शांति दो चीज़ों में निहित है: मित्रों के प्रति उदारता और शत्रुओं के प्रति बुद्धिमानीपूर्ण प्रबंधन।" यदि आप कहो: "लेकिन मेरे पास कोई विकल्प नहीं है, क्योंकि दुश्मनी मेरे स्वभाव का हिस्सा है। इसके अलावा, ये मैं जवाब देता हूँ, "कुछ बातें मुझे गुस्सा दिलाती हैं और इसलिए मैं उन्हें अनदेखा नहीं कर सकता।"

> यदि आप बुरा व्यवहार नहीं करते हैं, जैसे चुगली करना या किसी के प्रभाव में आना जिनके प्रति आप शत्रुता रखते हैं उनके प्रति ऐसे आवेग, और यदि आप यदि आप जानते हैं कि आप गलती कर रहे हैं, तो यह हानिरहित है। अपनी गलती के बारे में जागरूकता के लिए और यह स्वीकार करना कि आपकी बुरी प्रवृत्ति गलत है, इसका अर्थ है पश्चाताप करना और भगवान से क्षमा मांगना, जो आपको इसके बुरे परिणामों से बचाएगा। यही कारण है कि मैंने यह खंड लिखा है - ताकि आप क्षमा मांग सकें क्षमा करना, सही गलत में भेद करना, और अपने उचित कार्य को करने से रोकना दुश्मन को इसे गलत रूप में प्रस्तुत करने से रोकें।

एक मामला ध्यान देने योग्य है: मैंने एक बार इस्लाम के एक पक्षपाती लेकिन धार्मिक विद्वान को देखा किसी अन्य राजनीतिक विचार के धार्मिक विद्वान की निंदा करना कि बाद वाला एक धर्मत्यागी था, और फिर अपने ही विचार रखने वाले एक साथी पार्टी-सैन पाखंडी की आदरपूर्वक प्रशंसा करता हूँ। इस तरह के बुरे परिणाम से स्तब्ध होकर, मैंने तलाश की शैतान और राजनीति से परमेश्वर की शरण ली और राजनीति से दूर हो गये।

पांचवां पहलू: हठ और पक्षपात केवल सामाजिक जीवन को नुकसान पहुंचाते हैं।

प्रश्न: एक परंपरा कहती है: "मेरे समुदाय के बीच मतभेद एक दया है।"341 मतभेद के लिए पक्षपात की आवश्यकता होती है, जो एक सामाजिक बीमारी होने के बावजूद, उत्पीड़ित जनता को दमनकारी अभिजात वर्ग से मुक्ति दिलाएं, जो यदि एकजुट हो जाए तो अत्याचार की ओर। अगर कोई [राजनीतिक] दल है, तो उत्पीड़ित लोग उनमें से किसी एक में शामिल होकर अपनी रक्षा कर सकते हैं। साथ ही, क्या आप इस बात से सहमत हैं कि अलग-अलग राय और विचार क्या हम सत्य को सामने आने देंगे?

उत्तर: ऐसे संदर्भ में, अंतर सकारात्मक है, जिसका अर्थ है कि यह अनुमति देता है प्रत्येक पक्ष को अपने तर्क को बढ़ावा देने और प्रचारित करने, सुधार करने और सुधारने का अधिकार है एक प्रतिस्पर्धी दृष्टिकोण को नष्ट करने के बजाय उसे नष्ट कर देना चाहिए। पैगंबर एक नकारात्मक दृष्टिकोण को अस्वीकार करते हैं मतभेद, क्योंकि यह पक्षपातपूर्ण पूर्वाग्रह और शत्रुता के कारण दूसरे पक्ष को नष्ट करना चाहता है।

---

[341] अल-मुनावी, फ़यद अल-कादिर, 1:210।

जो लोग एक दूसरे के गले पर हैं वे सकारात्मक रूप से (एक दूसरे के प्रति) कार्य नहीं कर सकते।

सत्य के नाम पर पक्षपात उन लोगों के लिए शरणस्थली हो सकता है जो अपने अधिकारों की मांग कर रहे हैं। लेकिन वर्तमान पक्षपातपूर्ण और आत्मकेंद्रित पक्षपातपूर्णता केवल अन्यायियों के लिए शरणस्थली और समर्थन का केंद्र है। यदि शैतानी लोग पक्षपातपूर्ण पक्षपात में लगे लोगों का समर्थन करते हैं, तो ऐसे पक्षपाती लोग ईश्वर का आशीर्वाद मांगेंगे।

इसके अलावा, यदि देवदूत जैसे लोग किसी अन्य पक्ष में शामिल हो जाते हैं, तो वही पक्षकार उन पर ईश्वर का श्राप लगा देंगे।

यदि सत्य के नाम पर लोगों में मतभेद है तो यह केवल साधनों का अंतर है।
वास्तव में, यह उद्देश्य और मूल उद्देश्य के संबंध में एक सहमति और एकता है। ऐसा अंतर सत्य के सभी पहलुओं को प्रकट कर सकता है, और इसलिए न्याय और सत्य की सेवा करता है। लेकिन अहंकार और प्रसिद्धि की चाह से प्रेरित पक्षपातपूर्ण, पक्षपातपूर्ण विचारों के बीच टकराव, एक अत्याचारी, शारीरिक आत्म द्वारा उत्पन्न, केवल असहमति की लपटों को सामने ला सकता है। ऐसे स्रोत पर आधारित विरोधी विचार कभी भी अभिसरित नहीं हो सकते, क्योंकि केवल एक संयुक्त उद्देश्य के नाम पर सत्य की खोज पर आधारित मतभेद ही ऐसा कर सकते हैं। चूँकि वे सत्य के नाम पर मतभेद नहीं रखते, इसलिए वे चरम सीमाओं में विभाजित हो जाते हैं और असंगत विभाजनों को जन्म देते हैं।

संक्षेप में, यदि उनका आचरण उच्च सिद्धांतों, प्रेम, नापसंदगी और केवल ईश्वर के लिए न्याय करने पर आधारित नहीं है, तो विवाद और कलह का परिणाम होगा। यदि कोई इन सिद्धांतों की अनदेखी करता है, तो न्याय करने का प्रयास अन्याय में परिणत होगा।

इसे निम्नलिखित घटना में देखा जा सकता है: इमाम अली ने एक बार एक नास्तिक को मार डाला। जैसे ही वह उसे मारने वाले थे, नास्तिक ने उन पर थूक दिया। अली ने उसे छोड़ दिया। जब नास्तिक ने पूछा कि ऐसा क्यों, तो अली ने जवाब दिया: “मैं तुम्हें भगवान के लिए मारने जा रहा था। लेकिन जब तुमने मुझ पर थूका तो मैं क्रोधित हो गया, और इसलिए मेरी आत्मा की प्रवृत्तियों ने मेरे इरादे की पवित्रता को धुंधला कर दिया। इसलिए, मैंने तुम्हें नहीं मारा।” नास्तिक ने जवाब दिया: “मैंने तुम पर इसलिए थूका ताकि तुम पागल हो जाओ और मुझे तुरंत मार डालो। अगर तुम्हारा धर्म इतना शुद्ध और निस्वार्थ है, तो यह सत्य ही होगा।”

एक घटना ध्यान देने योग्य है: एक न्यायाधीश को सजा सुनाते समय क्रोध के लक्षण दिखाते देख न्यायप्रिय शासक ने उसे नौकरी से निकाल दिया। यदि न्यायाधीश ने पवित्र ईश्वरीय कानून के नाम पर अपना कार्य किया होता, तो उसे दया नहीं आती और न ही क्रोध होता। चूँकि उसके कार्य में उसकी आत्मा की प्रवृत्ति का कुछ हिस्सा था, इसलिए वह न्यायपूर्वक यह कार्य नहीं कर सकता था।

मुस्लिम दुनिया एक खेदजनक सामाजिक स्थिति और एक खतरनाक बीमारी से ग्रस्त है जो इसके सामाजिक जीवन को पंगु बना देती है। संक्षेप में, एक सामंजस्यपूर्ण सामाजिक जीवन के लिए यह आवश्यक है कि राष्ट्र के निर्माण के समय आंतरिक शत्रुता को भुला दिया जाए और त्याग दिया जाए।

विदेशी दुश्मनों से सामना करना पड़ता है। यहां तक कि सबसे अपरिष्कृत लोग भी इसे पहचानते हैं और इसका अभ्यास करते हैं। तो जो लोग मुस्लिम समुदाय की सेवा करने का दावा करते हैं, वे ऐसे समय में अपनी तुच्छ शत्रुता क्यों पालते हैं जब कई दुश्मन हम पर हमला करने के लिए तैयार हैं, और इस तरह हमारे दुश्मनों के लिए जमीन तैयार करते हैं? यह इस्लाम के समुदाय के खिलाफ भ्रष्टाचार, बर्बरता और विश्वासघात से कम नहीं है!

हमारी वर्तमान स्थिति मुझे हसनन बेडौइन की याद दिलाती है, एक जनजाति में दो परस्पर शत्रुतापूर्ण कबीले थे। हालाँकि दोनों पक्षों के 50 से ज़्यादा लोग मारे गए थे, लेकिन जब भी कोई दूसरी जनजाति (जैसे, सिबकन या हैदरन) उन पर हमला करती थी, तो वे अपनी जनजातीय दुश्मनी भूल जाते थे और तब तक एकजुट रहते थे जब तक कि दुश्मन को खदेड़ नहीं दिया जाता था।

ऐ ईमान वालों! 100 से ज़्यादा “कबीले” और दुश्मन हैं, जो संकेंद्रित वृत्तों की एक श्रृंखला की तरह हैं, जो ईमान वालों के “कबीले” पर हमला करने के लिए तैयार हैं। रक्षात्मक स्थिति अपनाने और एक-दूसरे का समर्थन करने के समय, ईमान वाले कैसे अपने पक्षपाती पक्षपात और शत्रुतापूर्ण विद्वेष को आगे बढ़ाने पर जोर दे सकते हैं और इस तरह दुश्मन के हमले को सुविधाजनक बना सकते हैं और इस्लाम के दायरे में प्रवेश कर सकते हैं?

गुमराह, नास्तिक और झूठे विश्वास वाले लोगों से लेकर सांसारिक जीवन के उतार-चढ़ाव तक, शत्रुतापूर्ण ताकतों के 70 से अधिक घेरे आपको देख रहे हैं। हर कोई आपको चोट पहुँचाने के तरीके खोजता है और क्रोध और घृणा के साथ आपका अध्ययन करता है। आपका दृढ़ हथियार, ढाल और गढ़ इस्लामी एकता है। अपनी छोटी-मोटी दुश्मनी और अन्य बहानों को आगे बढ़ाना मुस्लिम समुदाय की अंतरात्मा और एकता का घोर विरोधाभास है, जो दोनों ही सभी विश्वासियों की एकता की भावनाओं पर आधारित हैं। होश में आओ!

पैगम्बरी परंपराओं में बताया गया है कि दज्जाल और सुफियान जैसे हानिकारक और भयानक लोग अंत समय में अविश्वासियों और पाखंडियों का नेतृत्व करेंगे।342 यद्यपि उनके पास केवल एक छोटी सी ताकत होगी, लेकिन वे लोगों की सांसारिक महत्वाकांक्षाओं और मतभेदों का फायदा उठाकर मानवता को अराजकता और मुस्लिम दुनिया को गुलामी में डाल देंगे।

ऐ ईमान वालो! अगर तुम ऐसी नियति से बचना चाहते हो तो होश में आओ।
अपने साथी विश्वासियों के गढ़ में शरण लें और उन उत्पीड़कों से लड़ें जो आपके मतभेदों का फायदा उठाते हैं। यदि आप ऐसा नहीं करते हैं, तो आप अपने जीवन को नहीं बचा सकते हैं या अपने अधिकारों की रक्षा नहीं कर सकते हैं। जब दो चैंपियन एक दूसरे से लड़ते हैं, तो एक बच्चा भी उन्हें हरा सकता है। यदि दो पहाड़ों को तराजू में संतुलित किया जाए, तो एक छोटा सा पत्थर भी एक को ऊपर उठा सकता है और दूसरे को गिरा सकता है।

---

342 दज्जाल ईसाई धर्म में "एंटी-क्राइस्ट" का इस्लामी समकक्ष है। सुफ़यान दज्जाल का एक प्रकार है। दोनों ही विश्वासियों के बीच बहुत तबाही और भ्रम पैदा करेंगे।

इसलिए, मेरे साथी विश्वासियों, अपनी भावनाओं और शत्रुतापूर्ण पक्षपात को नियंत्रित करो, अन्यथा आपकी ताकत इतनी कमजोर हो जाएगी कि एक छोटा सा बल भी आपको हरा देंगे। यदि आपके पास सामाजिक सद्भाव और एकजुटता के सामूहिक जीवन के लिए कोई प्रतिबद्धता है, तो "विश्वासी एक दृढ़ संकल्प की तरह एक साथ हैं" के सिद्धांत को अपनाएं। इमारत, जिसका एक हिस्सा दूसरे का समर्थन करता है" आपका मार्गदर्शक सिद्धांत यह तुम्हें इस संसार में अपमान से और परलोक में दु:ख से बचाएगा।

छठा पहलू: शत्रुता और द्वेष आध्यात्मिक जीवन और उपासना को बिगाड़ देते हैं, क्योंकि वे आपके इरादे की पवित्रता को नष्ट कर देते हैं - जो मोक्ष का साधन है। पक्षपाती पक्षपाती अच्छे कर्म करते हुए शत्रु पर श्रेष्ठता की चाहत रखें और इसलिए ऐसा न करें केवल ईश्वर के लिए कार्य करें। अपने निर्णय और व्यवहार को ईश्वर की ओर झुकाएँ उनके समर्थक न्यायपूर्ण नहीं हो सकते। उनका इरादा अशुद्ध हो जाता है, और उनका न्याय अन्याय बन जाता है, जो उनके अच्छे कर्मों को व्यर्थ कर देता है। इस पहलू पर और अधिक विस्तार से चर्चा की जा सकती है, लेकिन हम इसे संक्षिप्त रखते हैं ताकि अन्य मामलों के लिए स्थान.

दूसरा अध्याय

ईश्वर के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

अल्लाह सर्वप्रथम देने वाला, शक्तिमान, स्थिर है।
(51:58)

कितने ही प्राणी अपना भरण-पोषण स्वयं नहीं कर पाते, परन्तु परमेश्वर उनका भरण-पोषण करता है।
और वह सब कुछ जानता है और वह भी उसके लिए और तुम्हारे लिए। वह सब कुछ सुनता, जानता है। (29:60)

ऐ ईमान वालो, अब तुम समझ गए हो कि दुश्मनी कितनी नुकसानदेह है। लालच यह एक और बड़ी बीमारी है और इस्लाम के [सामाजिक] जीवन के लिए भी उतनी ही हानिकारक है, क्योंकि यह निराशा, बीमारी, अपमान, वंचना और दुख को जन्म देती है। यहूदियों का अपमान और दुख, जो इस दुनिया में अधिक उत्सुकता से कूदते हैं किसी भी अन्य लोगों की तुलना में, यह साबित होता है.344

---

343 Bukhari, "Salat," 88; Muslim, "Birr," 65; Tirmidhi, "Birr," 18.

344 कुरान कहता है: वे जहां कहीं भी हों, अपमान ही उनका भाग होगा, जब तक कि वे रस्सी न पकड़ लें ईश्वर की ओर से या लोगों की ओर से रस्सी (3:112)। इसका मतलब यह है कि यहूदी तब प्रगति कर सकते हैं जब वे परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करने लगते हैं या कुछ शक्तियों द्वारा समर्थित हो जाते हैं, जैसा कि आज मामला है। अन्यथा, अपमान उनका पीछा करेगा। उनकी वर्तमान स्थिति के बावजूद, जब उनके अपमान के लंबे इतिहास की तुलना की जाती है, तो वे अभी भी निरंतर भय, असुरक्षा और अनिश्चितता में रहते हैं। अपने भविष्य के बारे में अनिश्चितता। (ट्र.)

जहाँ कहीं भी सजीव प्राणी हैं, वहाँ लालच अपने बुरे परिणाम दिखाता है।
इसके विपरीत, ईश्वर पर भरोसा करते हुए अपने लिए प्रावधान की तलाश करना शांति का साधन है और इसके अच्छे प्रभाव हर जगह दिखते हैं। उदाहरण के लिए, फलों के पेड़ और
पौधों को भोजन की ज़रूरत होती है और फिर भी वे स्थिर रहते हैं, “परमेश्वर पर संतुष्ट होकर भरोसा करते हैं” और कोई अधीरता नहीं दिखाते। और इसलिए उनका प्रावधान उनके पास जल्दी से आता है और
वे जानवरों की तुलना में अधिक तीव्रता से प्रजनन करते हैं। जानवरों को बहुत प्रयास के बाद केवल अपर्याप्त प्रावधान प्राप्त होता है, क्योंकि वे इसके लिए अधीरता से प्रयास करते हैं।
युवा जानवर, जो “अपनी कमज़ोरी और नपुंसकता के ज़रिए ईश्वर पर अपना भरोसा दिखाते हैं,” ईश्वरीय करुणा के ख़ज़ाने से पूरी मात्रा में अपना हक़दार और स्वादिष्ट आशीर्वाद प्राप्त करते हैं। दूसरी ओर, जंगली जानवर

जो लालच से उनके प्रावधान पर कूदते हैं, वे कीमत पर "अवैध" और घटिया भोजन प्राप्त करते हैं
बहुत प्रयास की आवश्यकता है। ये उदाहरण दिखाते हैं कि लालच अभाव का कारण बनता है, जबकि
ईश्वर पर भरोसा और संतोष ईश्वरीय दया के साधन हैं।

यहूदी, जो किसी भी अन्य लोगों की तुलना में इस संसार से अधिक लालच से चिपके हुए हैं और सांसारिक जीवन से बहुत लगाव रखते हैं, इसलिए वे कम लाभ वाली और इसलिए अवैध धन-संपत्ति पर नियंत्रण पाने के लिए बहुत प्रयास करते हैं। बदले में वे
अंतर्राष्ट्रीय अपमान, दुख, मौत और अपमान सहना पड़ता है। इससे पता चलता है कि
लालच अपमान और हानि का स्रोत है। लालच के बहुत सारे उदाहरण हैं
लोगों को निराशा और नुकसान का सामना करना पड़ रहा है कि यह सिद्धांत अब
कहावत और सार्वभौमिक रूप से स्वीकृत सत्य। इसलिए यदि आप धन से प्रेम करते हैं, तो उसकी खोज करें
इसे संतोष के साथ करो ताकि तुम इसे बहुतायत से कमा सको।

संतुष्ट और लालची लोगों की तुलना एक रिश्ते में प्रवेश करने वाले दो लोगों से की जा सकती है।
महान व्यक्ति के दर्शक। व्यक्ति सोचता है: "यह पर्याप्त है कि वह मुझे स्वीकार करता है ताकि मैं
बाहर की ठंड से बच सकता हूँ। भले ही वह मुझे सबसे नीचे की सीट पर बैठा दे,
यह एक एहसान होगा। ” दूसरा व्यक्ति अहंकारपूर्वक उच्चतम पद की आशा करता है, जैसे कि उसका उस पर कोई अधिकार है और जैसे कि हर कोई सम्मान करने के लिए बाध्य है
वह लालच के साथ प्रवेश करता है और सर्वोच्च पद पर अपनी दृष्टि टिकाता है,
वह उसकी ओर बढ़ने की कोशिश करता है। लेकिन मालिक उसे वापस मोड़ देता है और उसे बैठा देता है
निचले स्थान पर। मालिक को धन्यवाद देने के बजाय, आदमी क्रोधित हो जाता है और
उसकी आलोचना करता है, जिससे मालिक नाराज़ हो जाता है। पहला व्यक्ति बहुत विनम्रता से प्रवेश करता है
वह सबसे नीचे की स्थिति में भी बैठने के लिए तैयार रहता है। उसकी विनम्रता मालिक को प्रसन्न करती है, जो उसे उच्च स्थान पर बैठने के लिए आमंत्रित करता है और इस प्रकार उसकी कृतज्ञता को बढ़ाता है। यह संसार दयालु भगवान के समान है।
दर्शक दीर्घा। पृथ्वी की सतह ईश्वरीय करुणा द्वारा आयोजित भोज की तरह है,
प्रावधान की विभिन्न डिग्री और इनाम के ग्रेड के साथ
बैठने की स्थिति के लिए.

लालच के बुरे प्रभावों का अनुभव हर कोई कर सकता है। उदाहरण के लिए, आप एक भिखारी द्वारा लालच से आग्रह करने पर नाराज होकर, आप भीख मांगने से मना कर देते हैं। माँगते हो, जबकि शांतिप्रिय को तुम दया करके देते हो। अन्यथा तुम गिर सकते हो यदि आप सोने के बारे में नहीं सोचते, बल्कि सोने की कोशिश करते हैं तो आप जल्दी सो जाते हैं तुरंत सो जाओ। यदि आप अधीर हैं, तो आप अपनी पूरी रात खो सकते हैं नींद। या, अगर आप किसी का बेसब्री से इंतज़ार करते हैं और लगातार शिकायत करते हैं, अंततः आप धैर्य खो देंगे और चले जाएंगे। लेकिन एक मिनट बाद वह व्यक्ति आओ, और इसलिए तुम्हारा उद्देश्य विफल हो जाएगा।

इसका कारण यह है: एक रोटी खेत की जुताई, फसल की कटाई, अनाज को चक्की में ले जाने और आटे को पकाने के बाद ही बनती है।
इसी तरह, दिव्य बुद्धि हर चीज़ को एक निश्चित नियम के अनुसार व्यवस्थित करती है विचार-विमर्श। यदि आप इस विचार-विमर्श का अनुपालन नहीं करते हैं और सभी व्यवस्थित चरणों का पालन करने की उपेक्षा करते हैं, तो आप वांछित परिणाम प्राप्त नहीं कर सकते।

हे भाईयों और बहनों, अपनी जीविका कमाने से चक्कर खाते हो और इस दुनिया के लिए लालच! जब लालच इतना हानिकारक और नुकसानदेह है, तो आप क्यों इसके लिए खुद को अपमानित करो? तुम अनुमत और निषिद्ध के बीच अंतर किए बिना धन क्यों स्वीकार करते हो, जिससे तुम अपने जीवन का बहुत कुछ त्याग कर देते हो आख़िरत? अपनी लालच को पूरा करने के लिए तुम ज़कात भी छोड़ देते हो,[345] इस्लाम के एक सबसे महत्वपूर्ण स्तंभ, वृद्धि और उर्वरता का आशीर्वाद पाने का एक साधन और दुर्भाग्य को दूर भगाने में भी मदद करता है। जो लोग इसकी उपेक्षा करते हैं, वे भी उतनी ही मात्रा में हानि उठाते हैं धन या तो बेकार की चीजें खरीदकर या दुर्भाग्य का सामना करके कमाया जा सकता है।

प्रथम विश्व युद्ध के पांचवें वर्ष के दौरान मुझे एक सच्चा, अत्यंत रोचक सपना आया। इस अवसर पर मुझसे मुसलमानों की भूख, आर्थिक हानि और शारीरिक कष्ट का कारण पूछा गया। मैंने उत्तर दिया:

> सर्वशक्तिमान ईश्वर हमें जो धन प्रदान करता है, उसमें से ज़कात की अपेक्षा करता है, या तो दसवां हिस्सा या चालीसवां हिस्सा ताकि हम गरीब लोगों की कृतज्ञता भरी प्रार्थनाओं से लाभ उठा सकें और उनके द्वेष और ईर्ष्या से बच सकें ।346
> लालच ने हमें भुगतान करने की अनुमति नहीं दी, सर्वशक्तिमान ईश्वर ने इसकी संचित राशि को हटा दिया: तीन-चौथाई जहां चालीसवां बकाया था, और चार-पांचवां जहां दसवां हिस्सा बकाया था।

---

[345] ज़कात: इस शब्द का शाब्दिक अर्थ है शुद्धि और वृद्धि, क्योंकि मुसलमानों का मानना है कि इससे उनकी संपत्ति शुद्ध होती है। अधिकांश उद्देश्यों के लिए, इसमें अपनी आय का 2.5 प्रतिशत अलग रखना शामिल है। पूंजी, बशर्ते कि यह पूंजी अपने मालिक के निधन के बाद एक निश्चित न्यूनतम राशि तक पहुंच जाए ज़रूरतें पूरी की गई हैं, ताकि इसके लिए योग्य लोगों की मदद की जा सके और आम तौर पर स्थानीय समुदाय को लाभ पहुंचाया जा सके। ज़कात को इतना महत्वपूर्ण माना जाता है कि जो लोग इसे नज़रअंदाज़ करते हैं उन्हें मुस्लिम समुदाय का हिस्सा नहीं माना जाता। (संपादक)

[346] वह धन जो प्रतिवर्ष नई फसल पैदा करता है, उसका दसवां हिस्सा; वर्ष के दौरान वित्तीय अधिशेष पैदा करने वाली किसी भी वस्तु का चालीसवां हिस्सा, या कम से कम 40 चरागाह पशुओं (जैसे भेड़ या बकरी) का हिस्सा। (ट्र.)

वह हमसे हर साल एक महीने उपवास करने को कहता है ताकि हमें लाभ हो 70 से अधिक लाभकारी उद्देश्यों से। लेकिन हमें खुद पर दया आ गई और उपवास नहीं किया। और इसलिए सर्वशक्तिमान ईश्वर ने हमें 5 साल तक उपवास करने के लिए मजबूर किया ऐसी भूख जिसमें लगभग 70 प्रकार के कष्ट समाहित हैं।

परमेश्वर चाहता है कि विश्वासी 24 घंटों में से एक घंटे से ज़्यादा समय न बिताएँ। प्रार्थना में, एक मनभावन और उदात्त, रोशन और लाभकारी रूप दिव्य प्रशिक्षण। लेकिन हम पाँच दैनिक नियमों का पालन करने में बहुत आलसी थे प्रार्थनाओं में खोकर 24 घंटे बर्बाद हो गए। बदले में, सर्वशक्तिमान ईश्वर ने हमें 5 साल तक प्रशिक्षण और शारीरिक परिश्रम से गुज़रने के लिए दंडित किया।

इसके बाद जब मैं जागा तो इस पर विचार करते हुए मुझे एक बहुत महत्वपूर्ण सत्य का एहसास हुआ। जैसा कि पच्चीसवाँ वचन आधुनिक सभ्यता के सिद्धांतों की कुरान के आदेशों से तुलना करके बताता है, मानव में सभी अनैतिकता और गड़बड़ियाँ समाप्त हो जाती हैं। सामाजिक जीवन दो स्रोतों और दो दृष्टिकोणों से आगे बढ़ता है: "एक बार मेरा पेट अगर मेरा पेट भर गया है, तो मुझे क्या परवाह कि दूसरे भूख से मर जाएं?" और "तुम काम करो और मैं खाऊंगा।"

ये दृष्टिकोण सूदखोरी और ब्याज के प्रचलन और ज़कात के त्याग से कायम हैं। इसका एकमात्र उपाय ज़कात को लागू करना है ज़कात को सार्वभौमिक सिद्धांत और कर्तव्य के रूप में मान्यता दी जानी चाहिए और फिर सूदखोरी पर प्रतिबंध लगाया जाना चाहिए। ज़कात व्यक्तियों, विशेष समुदायों और मानवता के लिए एक ऐसा स्तंभ है, जिसके ज़रिए वे एक आदर्श जीवन जी सकते हैं। खुशहाल जीवन। मानवता में आम तौर पर दो वर्ग होते हैं: कुलीन और जन-समुदाय ।347 केवल ज़कात ही कुलीन वर्ग की जनता के प्रति करुणा और उदारता को जगा सकती है। जनता, और अभिजात वर्ग के प्रति जनता का सम्मान और आज्ञाकारिता। ज़कात, अभिजात वर्ग क्रूरतापूर्वक जनता पर अत्याचार करता है और इस प्रकार अक्सर विद्रोह। इस तरह के विकास से निरंतर संघर्ष और विरोध पैदा होता है, अंततः श्रम और पूंजी एक दूसरे के आमने-सामने आ गए, जैसा कि रूस में हुआ बीसवीं सदी की शुरुआत.

हे कुलीन और न्यायप्रिय, उदारता और उदारता के लोगो! यदि तुम ज़कात के नाम पर उदारता से काम न करें , आपके काम बेकार हैं और संभावित रूप से हानिकारक हैं। यदि आप ईश्वर के नाम पर नहीं देते हैं, तो आप गरीबों को दुखी महसूस कराते हैं आप पर एहसान है और इसलिए उनकी प्रार्थनाओं से वंचित रहें, जो स्वीकार्य हैं भगवान की नज़र में। साथ ही, आपका बाद का यह विश्वास कि आप अपनी संपत्ति के मालिक हैं, यह दर्शाता है

---

347 सईद नूरसी ने कहा कि जो लोग ज़कात दे सकते हैं उनके लिए एलीट शब्द का इस्तेमाल किया जाता है , और जो लोग ज़कात देने के योग्य हैं उनके लिए मास्स शब्द का इस्तेमाल किया जाता है। ये पदनाम सापेक्ष हैं, क्योंकि वे स्थानीय धन के मानक पर निर्भर करते हैं। चूँकि इस्लाम मुसलमानों के बीच गहरे सामाजिक-आर्थिक अंतर की अनुमति नहीं देता, इसलिए यह अंतर और भी गहरा होता जाता है। इन समूहों के बीच बहुत ज़्यादा अंतर नहीं है। आज कई मुस्लिम समाजों में दोनों ही समुदायों के सदस्य हैं। मध्यम वर्ग के भीतर कई समूह पाए जा सकते हैं। चूंकि ज़कात का मुख्य उद्देश्य गरीबों के लिए है अपने परिवार के भरण-पोषण के लिए पर्याप्त धन प्राप्त करने के लिए, हमें ज़कात पर विचार करते समय इस्लाम द्वारा परिकल्पित जीवन स्तर पर विचार करना चाहिए । (ट्र.)

महान कृतघ्नता। लेकिन अगर आप ज़कात देते हैं, तो आपको उसके लिए देने का इनाम मिलता है और प्राप्त किए गए उपहारों के लिए उसका शुक्रिया अदा करते हैं। इसके अलावा, इसके प्राप्तकर्ता चापलूसी या चापलूसी करने के लिए बाध्य नहीं होंगे, और इस तरह अपने आत्म-सम्मान को नुकसान नहीं पहुँचाएँगे।
इसके अलावा, आपके लिए उनकी प्रार्थनाएँ स्वीकार की जाएंगी।

प्रसिद्धि पाने और दायित्व थोपने के लिए दान देने और अपने धार्मिक कर्तव्य को पूरा करने, पुरस्कार पाने, पाप-निष्ठ होने और अपने लिए गरीबों की प्रार्थना स्वीकार करवाने के लिए ज़कात के रूप में देने के बीच व्यापक अंतर देखें।

आपकी महिमा हो, हमें आपके बताए गए ज्ञान के अलावा कुछ नहीं पता। आप सर्वज्ञ, सर्वज्ञ हैं। हे ईश्वर, हमारे गुरु मुहम्मद पर कृपा और शांति प्रदान करें, जिन्होंने कहा: "ईमान वाले एक मजबूत इमारत की तरह एक साथ हैं, जिसका एक हिस्सा दूसरे को सहारा देता है" और: "संतुष्टि एक खजाना है जो कभी खत्म नहीं होगा," और उनके परिवार और साथियों पर। और सारी प्रशंसा ईश्वर की है, जो सारे संसार का स्वामी है।

परिशिष्ट: चुगली के संबंध में

उसके नाम पर.

ऐसी कोई भी चीज़ नहीं है जो उसकी स्तुति से उसकी महिमा न करती हो।

आयत: क्या तुममें से कोई अपने मृत भाई का मांस खाना पसंद करेगा? (49:12) छह चमत्कारी तरीकों से चुगली करने से घृणा पैदा करती है और दिखाती है कि यह प्रथा कितनी घृणित है। इस प्रकार आगे स्पष्टीकरण की कोई आवश्यकता या संभावना नहीं है। यह चुगली करने वालों को छह डिग्री फटकार के साथ फटकारती है और छह डिग्री गंभीरता के साथ उन्हें रोकती है। चुगली करने वालों को संबोधित के रूप में पढ़ें, इसका अर्थ है: मूल अरबी वाक्य की शुरुआत में हम्ज़ा (') प्रश्नवाचक है। यह भाव आयत में पानी की तरह व्याप्त है, जिससे प्रत्येक शब्द में एक प्रश्नवाचक लहजा होता है। इस प्रकार हम्ज़ा के बाद पहला शब्द पूछता है: "क्या तुम्हारे

पास पूछने और उत्तर देने, अच्छे और बुरे के बीच अंतर करने की बुद्धि नहीं है, ताकि तुम यह न समझ सको कि ऐसी बात कितनी घृणित है?"

दूसरा शब्द ' लाइक' पूछता है: "क्या तुम्हारा हृदय, जिससे तुम प्रेम करते हो या घृणा करते हो, इतना बिगड़ गया है कि तुम ऐसी घृणित वस्तु से प्रेम करते हो?" तीसरा, वाक्यांश ' आप में से कोई भी पूछता है: "तुम्हारी सामाजिक जिम्मेदारी और सभ्य जीवन की भावना को क्या हो गया है, जो एक समुदाय के रूप में एक साथ रहने से अपना अर्थ और ऊर्जा प्राप्त करता है?" चौथा, वाक्यांश ' मांस खाना' पूछता है: "तुम्हारी मानवता की भावना को क्या हो गया है कि तुम अपने दोस्त को जंगली जानवर की तरह अपने दांतों से टुकड़े-टुकड़े कर देते हो?"

पाँचवाँ, तुम्हारे भाई [बहन] का वचन पूछता है: “क्या तुम्हारा कोई मनुष्य नहीं है? कोमलता, रिश्तेदारी का कोई भाव नहीं, और भाईचारे की कई कड़ियों से बंधे एक मासूम व्यक्ति पर इस तरह अपने दांत गड़ाना? क्या आपके पास कोई नहीं है क्या तुम इतनी बुद्धिमानी से अपने ही अंगों को काटते हो?” छठा, शब्द मृतक पूछता है: "तुम्हारा विवेक कहाँ है? क्या तुम्हारा स्वभाव इतना भ्रष्ट है कि तुम अपने मृत भाई [बहन] का मांस खाने जैसा घृणित कार्य करते हो, जो महान सम्मान का हकदार है?”

समग्रता में, यह श्लोक दर्शाता है कि निंदा और चुगली करना व्यक्ति की बुद्धि, हृदय, मानवता, विवेक, मानव स्वभाव और आत्मा के लिए प्रतिकूल है। धार्मिक और सामाजिक एकता। इसकी निंदा की छह डिग्री बहुत संक्षिप्त हैं और सटीक, और छह चमत्कारी तरीकों से लोगों को नियंत्रित करें।

चुगली करना एक शर्मनाक हथियार है जिसका इस्तेमाल आमतौर पर दुश्मनी रखने वाले लोग करते हैं। ईर्ष्या और हठ। किसी भी स्वाभिमानी, सम्माननीय व्यक्ति को इससे कोई लेना-देना नहीं है इसके साथ। एक प्रसिद्ध व्यक्ति ने एक बार कहा था: "मैं अपने आप को इतना सम्मान देता हूँ कि (अपने शत्रु को) चुगली से दण्डित करना, क्योंकि चुगली करना परमेश्वर का हथियार है। कमज़ोर और नीच।”

चुगली का अर्थ है अनुपस्थित लोगों के बारे में ऐसी बातें कहना जो उन्हें नापसंद हों। और यदि वे उपस्थित हों तो उन्हें परेशान करो। यदि शब्द सत्य हैं, तो यह चुगली है; यदि ऐसा नहीं है, तो यह चुगली और बदनामी दोनों है और इस प्रकार दोगुना घृणित है।

बहुत कम मामलों में चुगली करना जायज़ है। इनमें से चार मामले इस प्रकार हैं:

- अन्याय का शिकार व्यक्ति अपने साथ हुई गलती को सही करने के लिए औपचारिक शिकायत प्रस्तुत करता है न्याय बहाल करें.
- यदि कोई व्यक्ति किसी अन्य के साथ सहयोग करने के बारे में सोच रहा है और उससे पूछता है कि आप उस व्यक्ति के बारे में सोचते हैं। यदि आपका उत्तर उदासीन है और केवल दिया गया है प्रश्नकर्ता के लाभ के लिए ऐसा करना चुगली नहीं है।
- यदि आप किसी तथ्य का वर्णन करते हैं (और किसी को अपमानित या बदनामी के लिए उजागर नहीं करते हैं), जैसे: “वह अपंग, बेघर व्यक्ति फलां जगह गया।”
- यदि जिस व्यक्ति की आलोचना की जा रही है वह खुला और निर्लज्ज पापी है, पाप में आनन्द पाता है और गलत काम करने में आनन्द पाता है।

ऐसे मामलों में चुगली करना जायज़ हो सकता है, बशर्ते कि वह निस्वार्थ भाव से किया जाए और केवल सत्य की खातिर और सामूहिक हित में। अन्यथा, यह जैसे आग अच्छे कर्मों को भस्म कर देती है, वैसे ही ज्वाला लकड़ी को भस्म कर देती है।

यदि आप किसी की चुगली करते हैं या उसकी बात स्वेच्छा से सुनते हैं, तो परमेश्वर की कृपा की खोज करें। क्षमा: "हे परमेश्वर, मुझे और जिसके विषय में मैंने बात की थी उसे क्षमा कर।" आप उस व्यक्ति से मिलें, उससे क्षमा मांगें।

तेईसवाँ अक्षर

तेईसवाँ पत्र

सात अलग-अलग मामले • धैर्य और यूसुफ की कहानी के अंत के बारे में एक बढ़िया बात

उसके नाम में, उसकी महिमा हो।

ऐसी कोई भी चीज़ नहीं है जो उसकी स्तुति से उसकी महिमा न करती हो।

आपके जीवन के प्रत्येक सेकण्ड और मिनट तथा आपके शरीर के प्रत्येक कण पर ईश्वर की कृपा, शांति और आशीर्वाद सदैव बना रहे।

प्रिय, दृढ़ निश्चयी, सत्यनिष्ठ, ईमानदार और योग्य भाई,

समय और स्थान का अंतर हमारे जैसे सच्चे भाइयों के बीच मैत्रीपूर्ण बातचीत में बाधा नहीं डाल सकता। भले ही वे एक दूसरे से कितने भी दूर क्यों न हों
पूर्व और पश्चिम, भूत और भविष्य, इस लोक और परलोक, वे
एक साथ होने और बातचीत में लगे रहने के रूप में माना जा सकता है। विशेष रूप से, जो लोग एक ही कर्तव्य निभाते हैं, उन्हें एक दूसरे के समान ही माना जाता है।
मैं हर सुबह आपको अपने साथ कल्पना करता हूँ, और अपने आध्यात्मिक पुरस्कार का आधा या एक तिहाई हिस्सा आपको सौंपता हूँ (भगवान इसे स्वीकार करें!)। मैं आपको शामिल करता हूँ,
अब्दुल मजीद और अब्दुल रहमान के लिए मेरी प्रार्थनाएँ हैं और आशा है कि आप स्वस्थ रहेंगे।
अपना हिस्सा प्राप्त करना।

मैंने भी, आपके साथ, आपके सामने आई परेशानी के कारण कुछ दुःख महसूस किया है।
अपने सांसारिक मामलों में। फिर भी चूँकि यह संसार अनित्य है, और चूँकि कुछ
अच्छाई तो उसकी परेशानियों के पीछे छिपी है, तुम्हारे लिए मेरे मन में यह ख्याल आया कि वे
एक दिन सब कुछ खत्म हो जाएगा। असल ज़िंदगी तो आख़िरत की है। यह सोचकर,
मैंने पढ़ा : निस्संदेह अल्लाह धैर्य रखने वालों के साथ है (2:153), फिर : निस्संदेह हम उन्हीं में से हैं।

अल्लाह ही है और हम उसी की ओर लौट रहे हैं (2:156) तुम्हारे साथ विचार करते हुए मैंने पाया कि कुछ लोग
सांत्वना.

यदि परमेश्वर किसी से प्रेम करता है, तो वह उसे संसार को कुरूप ही देखने देता है और इसे त्याग दो। मुझे उम्मीद है कि तुम भी उन्हीं लोगों में से हो। इस बात से दुखी मत हो द वर्ड्स के प्रकाशन में बढ़ती बाधाओं के कारण मुझे उम्मीद है कि जब आपके द्वारा प्रकाशित अंशों पर पहले से ही ईश्वर की दया है, तो वे बीज की तरह फलेंगे-फूलेंगे और अनेक फूल बनेंगे।

आपने मुझसे कई सवाल पूछे हैं। इस्तेमाल किए गए ज़्यादातर शब्द और अक्षर सुंदर होना, क्योंकि वे मेरे पास अचानक और अनायास ही आ गए। इसलिए अगर मैं मैं अपने ज्ञान के बल पर आपके प्रश्नों का उत्तर दूंगा, ओल्ड सैड ने कहा, वे मंद और अपूर्ण होंगे। प्रेरणा बंद हो गई है कुछ समय और मेरी याददाश्त कमजोर हो गई है, लेकिन मैं संक्षिप्त उत्तर देने का प्रयास करूंगा आपके प्रश्नों के उत्तर.

आपका पहला प्रश्न: सबसे अच्छी प्रार्थना (दुआ) कौन सी है?
किसी अन्य आस्तिक के लिए क्या कहना है?

उत्तर: वह जो स्वीकार्यता की शर्तों के अनुरूप हो। एक प्रार्थना कुछ शर्तें पूरी होने पर यह कमोबेश स्वीकार्य है। सबसे पहले, खुद को शुद्ध करें ईश्वर से क्षमा मांगें। फिर पैगम्बर मुहम्मद पर ईश्वर का आशीर्वाद मांगें प्रार्थना से पहले और बाद में मध्यस्थ के रूप में, हमारे लिए ईश्वर का आशीर्वाद मांगने के लिए पैगम्बर की नमाज़ क़बूल है और दो क़बूल नमाज़ों के बीच पढ़ी गई नमाज़ आम तौर पर क़बूल होती है। साथ ही, ऐसी नमाज़ आस्तिक की अनुपस्थिति में पढ़ी जानी चाहिए और कुरान और परंपराओं में वर्णित प्रकार की होनी चाहिए।
उदाहरण के लिए, ऐसी व्यापक प्रार्थनाओं को प्राथमिकता दें:

> ऐ खुदा! मैं तुझसे अपने और उसके लिए क्षमा की प्रार्थना करता हूँ, तथा इस दुनिया और आख़िरत में दीन की भलाई की प्रार्थना करता हूँ। हमारे पालनहार! हमें यह प्रदान कर कि हम अपने पापों की क्षमा करें, और हमें अपने पापों की क्षमा प्रदान कर।
> हमें इस दुनिया और आख़िरत में अच्छाई प्रदान करें और हमें बुरे कर्मों से बचाएँ।
> आग की सज़ा.

अपने हृदय से ईमानदारी, धार्मिक गंभीरता और गंभीरता के साथ प्रार्थना करें श्रद्धा। ऐसा पाँचों दैनिक प्रार्थनाओं के बाद करें और, विशेष रूप से, सुबह की प्रार्थना के बाद और शुक्रवार जैसे धन्य समय में - विशेष रूप से रविवार के दौरान।
वह समय जब प्रार्थना पूरी तरह स्वीकार की जाती है, तीन मुबारक महीनों में, विशेष रूप से विशेष रातों में, रमजान के दौरान, सबसे विशेष रूप से,
कद्र की रात (शक्ति और भाग्य की रात)।

इसके अलावा, मस्जिद में जाकर दुआ मांगने की कोशिश करें। ईश्वर से अपेक्षा की जाती है कि वह अपने दया, ऐसी शर्तों को पूरा करने वाली याचिकाओं को स्वीकार करने के लिए। वह या तो यहाँ इसका जवाब देता है या जिसके नाम पर वह बनाया गया है, उसे आख़िरत में उससे लाभ पहुँचाता है।

इसलिए यदि आपको इच्छित परिणाम प्राप्त न हो तो अपनी प्रार्थना को व्यर्थ समझें। बेहतर स्वीकृति मिली.

आपका दूसरा प्रश्न: यह कहना एक पसंदीदा परंपरा बन गई है एक साथी: “ईश्वर उससे प्रसन्न हो।” क्या यह कहना उचित है क्या यह दूसरों के नाम के बाद है?

उत्तर: हां, क्योंकि यह केवल साथियों तक ही सीमित नहीं है। बल्कि यह बात उन लोगों के बारे में कही जानी चाहिए जो चार कानूनी संस्थाओं के संस्थापकों की तरह हैं। स्कूल, साथ ही 'अब्द अल-कादिर अल-जिलानी, इमाम रब्बानी, और इमाम ग़ज़ाली,348 को पैगंबरी मिशन (संतत्व का सबसे बड़ा पद) के उत्तराधिकार के माध्यम से ईश्वर द्वारा अनुमोदित किया गया था। फिर भी, धार्मिक विद्वानों के सामान्य उपयोग के अनुसार, हम कहते हैं: "ईश्वर हमसे प्रसन्न हो

किसी साथी का ज़िक्र करते समय"; "भगवान उस पर दया करें उसे [या उसे]” उन लोगों की संख्या जो बाद की दो पीढ़ियों से संबंधित हैं साथियों; “अल्लाह उसे माफ़ करे” उन लोगों में से जो उनके पीछे चले; और संतों के लिए “परमेश्वर उसे पवित्र करे”।

आपका तीसरा प्रश्न: किसका गुण अधिक है: सबसे महान न्यायविद या वे महान संत कौन हैं जिन्होंने सही तरीकों को प्रेरित या स्थापित किया? [349]

उत्तर: सभी न्यायविद जो निर्णय लेने के लिए योग्य हैं, वे नहीं हैं कुरान और सुन्नाह के अलावा इस्लाम के विधिशास्त्र के चार संस्थापक हैं महानतम संतों से भी अधिक सद्गुणी। यद्यपि असाधारण संत जैसे अब्दुल कादिर अल जिलानी, जिन्हें "युग का ध्रुव" कहा जाता है, कुछ गुणों में श्रेष्ठ हैं, ये चार इमाम सभी तरीक़ों के प्रमुख संतों से श्रेष्ठ हैं और बाकी सभी पर सिवाय [पैगंबरों और रसूलों] साथियों के और महदी.

आपका चौथा प्रश्न: इसका क्या अर्थ है: परमेश्वर धैर्यवानों के साथ है (2:153) अर्थ?

उत्तर: सर्वज्ञ परमेश्वर के नाम के लिए एक स्थापना की आवश्यकता है चीजों के अस्तित्व में आने के लिए एक निश्चित प्रक्रिया, एक क्रम। अधीर लोग जानबूझकर नहीं होते हैं - या तो वे छलांग लगाते हैं और गिर जाते हैं, या कुछ कदम छोड़ देते हैं और अपने लक्ष्य तक पहुँचने में असफल हो जाते हैं। यही कारण है कि लोभ अभाव और धैर्य का कारण बनता है

---

[348] अल-ग़ज़ाली (1058-1111): मुस्लिम धर्मशास्त्री और सूफ़ी, जिनकी महान कृति, इह्या''उलूम अल-दीन (धार्मिक विज्ञान का पुनरुद्धार) ने सूफ़ीवाद को मुख्यधारा के इस्लाम का एक स्वीकार्य हिस्सा बना दिया। (सं.)

[349] तारीका को शाब्दिक रूप से "रास्ता" या "मार्ग" के रूप में परिभाषित किया गया है। इसका आमतौर पर अर्थ होता है कठोर आध्यात्मिक अनुशासन और अभ्यास जो अपने अनुयायियों को ईश्वर की ओर ले जाता है। यह एक बहुत ही सूफीवाद में यह एक सामान्य शब्द है, तथा इसकी चर्चा उनतीसवें पत्र में विस्तार से की गई है। (सं.)

समस्याओं को सुलझाने की कुंजी है। जैसा कि एक कहावत है: "लालच निराशा और हानि का विषय है, लेकिन धैर्य राहत का साधन है।"

सर्वशक्तिमान ईश्वर रोगी की सहायता करता है और उसे सफल बनाता है।
धैर्य के तीन प्रकार हैं, जो इस प्रकार हैं:

• धर्मपरायणता और ईश्वर-चेतना, या शारीरिक स्वार्थ के प्रलोभनों का विरोध करना और पापों से बचना। ऐसे धैर्यवान लोग इसमें शामिल हैं: परमेश्वर हमारे साथ है ईश्वर के प्रति सचेत और धर्मपरायण (2:194)। •
दुर्भाग्य के समय धैर्यपूर्वक ईश्वर पर भरोसा और पूर्ण समर्पण के द्वारा धैर्य रखना, जो धैर्यवानों में से एक है: ईश्वर उन लोगों से प्रेम करता है जो भरोसा करते हैं उस पर (3:159) और अल्लाह धैर्यवानों से प्रेम करता है (3:146)। अधीरता का अर्थ है ईश्वर के कार्यों की आलोचना करके उसकी शिकायत करना, उसकी दया पर आरोप लगाना, और उसकी बुद्धि को अस्वीकार करना। एक कमज़ोर, असहाय व्यक्ति को रोना नहीं चाहिए दुर्भाग्य पर, लेकिन उससे शिकायत करनी चाहिए - उसके बारे में नहीं, ठीक वैसे ही जैसे पैगंबर याकूब ने कहा: मैं अपनी वेदना और दुःख की शिकायत परमेश्वर से करता हूँ (12:86)। आत्म-दया और शिकायत को प्रोत्साहित करना व्यर्थ और हानिकारक भी है।
• ईश्वर की आराधना पर जोर देना। इससे धैर्यवान व्यक्ति को उन्नति की ओर ले जाता है। सर्वोच्च आध्यात्मिक पद, जो कि परमेश्वर के पूर्ण और प्रिय लोगों में से एक है नौकर.

आपका पाँचवाँ प्रश्न: आमतौर पर यह माना जाता है कि एक आदमी यौवन तक पहुँच जाता है, और इसलिए जब वह आसपास हो तो अपने धार्मिक कर्तव्यों का पालन करने के लिए जिम्मेदार हो 15 साल की उम्र। पैगम्बर मुहम्मद साहब अपनी नबूवत से पहले किस तरह इबादत करते थे?

उत्तर: उन्होंने पैगम्बर मुहम्मद के सिद्धांतों के अनुसार उपासना की।
अब्राहम का धर्म जो अभी भी अरब में बचा हुआ है, यद्यपि एक अस्पष्ट तरीके से। वह इसलिए पूजा नहीं करता था क्योंकि वह बाध्य था, बल्कि वह एक अति-धार्मिक तरीके से ऐसा करता था। यह विषय बहुत विस्तृत व्याख्या की मांग करता है, लेकिन इस संक्षिप्त विवरण को छोड़ दें
फिलहाल यह अवलोकन पर्याप्त है।

आपका छठा प्रश्न: जब वह 40 वर्ष के थे तो उन्हें पैगम्बर क्यों बनाया गया?
जिसे परिपक्वता की आयु माना जाता है, और जब वह 63 वर्ष का था, तब उसकी मृत्यु हो गई?

उत्तर: इसके कई उद्देश्य हैं, जिनमें से एक इस प्रकार है: पैगम्बरत्व एक महान् तथा भारी कर्तव्य है, जो बौद्धिक क्षमताओं की पूर्णता तथा आध्यात्मिक क्षमताओं के पूर्ण विकास के माध्यम से ही पूरा किया जा सकता है।

इस विकास और पूर्णता की आयु चालीस वर्ष है।

युवावस्था शारीरिक इच्छा और सांसारिक महत्वाकांक्षा का समय है और इसलिए
नबूवत के पवित्र और ईश्वरीय कर्तव्य के लिए उपयुक्त है, जो पूरी तरह से परलोक से संबंधित है। 40 वर्ष से पहले लोग कितने भी नेक और सच्चे क्यों न हों,
प्रसिद्धि चाहने वाले लोग उन्हें प्रसिद्धि और गौरव की तलाश में लगे हुए मान सकते हैं।

ऐसे आरोपों से (चाहे वे कितने भी झूठे क्यों न हों) लोग आसानी से मुक्त हो जाते हैं। लेकिन 40 की उम्र पार करने के बाद, वे दुनिया से ज़्यादा कब्र के करीब होते हैं और इसलिए ऐसे आरोपों से मुक्त होने की संभावना ज़्यादा होती है। साथ ही, लोग बेबुनियाद संदेह से भी खुद को मुक्त कर सकते हैं।

उनके 63 साल तक जीवित रहने के कई कारणों में से एक यह है कि ईमान वालों को अल्लाह के रसूल से पूरी तरह प्यार और सम्मान करना चाहिए और बिना किसी नापसंदगी के उनके तौर-तरीकों की तारीफ करनी चाहिए। चूंकि बुढ़ापा आम तौर पर तकलीफदेह और अपमानजनक होता है, इसलिए अल्लाह ने उन्हें 63 साल की उम्र में सर्वोच्च स्थान पर भेज दिया, जो उनके समुदाय के सदस्यों की औसत आयु थी। इस प्रकार, अल्लाह ने उन्हें इस मामले में भी एक उदाहरण बनाया।

आपका सातवाँ सवाल: क्या "तुम्हारे जवान लोगों में सबसे अच्छे लोग तुम्हारे बूढ़ों के समान हैं, और तुम्हारे बूढ़े लोगों में सबसे बुरे लोग तुम्हारे जवान लोगों के समान हैं" एक भविष्यसूचक कथन है? अगर ऐसा है, तो इसका क्या मतलब है?

उत्तर: मैंने इसे एक भविष्यवक्ता की कहावत के रूप में संदर्भित सुना है। इसका मतलब है कि सबसे अच्छे युवा लोग, एक बूढ़े व्यक्ति की तरह, मृत्यु के बारे में सोचते हैं और, युवा कल्पनाओं से मोहित हुए बिना, अगले जीवन के लिए प्रयास करते हैं। सबसे बुरे बूढ़े लोग वे हैं जो ईश्वरीय आदेशों की अनदेखी करके सांसारिक आकांक्षाओं में युवाओं की नकल करने की कोशिश करते हैं, अपने सांसारिक स्वार्थ के प्रलोभनों का पालन करते हैं।

आपके फ्रेमयुक्त शिलालेख के दूसरे भाग का सही रूप इस प्रकार है।
मैंने इसे चेतावनी के तौर पर दीवार पर टांग दिया, और हर सुबह-शाम इसे देखकर सबक लेता हूं:

यदि तुम मित्र चाहते हो तो ईश्वर ही पर्याप्त है, यदि वह तुम्हारा मित्र है तो सब कुछ उसके लिए पर्याप्त है।

अगर आप साथी चाहते हैं, तो कुरान ही काफी है। कल्पना करें कि आप कुरान में वर्णित पैगम्बरों और फ़रिश्तों के साथ हैं। उनके अनुभवों का अध्ययन करें और उनके साथ घनिष्ठता से जुड़ें।

यदि आप धन चाहते हैं तो संतोष ही पर्याप्त है।
मितव्ययी बनो, और मितव्ययी को बहुत धन का आशीर्वाद मिलता है।
यदि आप शत्रुता महसूस करना चाहते हैं, तो आपका दुष्ट-आज्ञाकारी स्वभाव पर्याप्त है। अहंकारी को दुःख मिलता है; विनम्र को चिंता और क्रोध मिलता है।
शांति।
अगर तुम्हें सलाह चाहिए तो मौत ही काफी है। जो मौत के बारे में सोचता है
वह संसार के प्रति अपने प्रेम से छुटकारा पा लेता है और अगले जीवन के लिए प्रयास करता है।

मैं आठवीं बात जोड़ रहा हूँ, जो इस प्रकार है: कुछ दिन पहले, कुरान के एक

कंठस्थ व्यक्ति ने सूरा यूसुफ़ का एक निश्चित भाग पढ़ा, जो इस प्रकार है: मुझे आज्ञाकारी बना कर मरवा और मुझे धर्मियों के साथ मिला दे (12:101)। एक सूक्ष्म बात अचानक मेरे दिमाग में आई: हर चीज़ जो ईश्वर से जुड़ी है-

कुरान पर विश्वास और आस्था, चाहे वह कितनी भी तुच्छ क्यों न हो,
महान महत्व। चूँकि शाश्वत खुशी में योगदान देने वाली कोई भी चीज़ महत्वपूर्ण है, इसलिए हमें इसे स्पष्टीकरण के योग्य मानना चाहिए।

मेरे छात्रों में से ऐसे विषयों का अध्ययन करने वाले तथा कुरान की सूक्ष्म बातों के प्रशंसक होने के नाते, इब्राहीम हुलुसी इस बेहतरीन बात को सुनने की इच्छा रखेंगे।
कुरान की सबसे बेहतरीन कहानी का सबसे सूक्ष्म बिंदु: मुझे आज्ञाकारी बना कर मरना
(आप के लिए), और मुझे धर्मी लोगों के साथ शामिल करें, जो कहानी का अंत दर्शाता है
पैगम्बर यूसुफ (यूसुफ) की यह खुशखबरी एक जीवंत तरीके से दी गई है।
और चमत्कारी फैशन:

एक सुखद कहानी से प्राप्त आनंद गहरे दुख में समाप्त होता है क्योंकि
अंतिम अलगाव या मृत्यु की बात। या, जब हमें पता चलता है कि यह और भी दुखदायी है
व्यक्ति(व्यक्तियों) को सुख और खुशी मिलने के तुरंत बाद ही अलगाव या मृत्यु का सामना करना पड़ता है। लेकिन ऊपर उद्धृत श्लोक, भले ही इसमें यूसुफ की मृत्यु का चिंतन किया गया हो
जब वह मिस्र का अज़ीज़ (ग्रैंड वज़ीर या चांसलर) बना और अपने माता-पिता और भाइयों से फिर मिला (यह उसके जीवन का सबसे सुखद क्षण था),
भिन्न प्रकार से।

यह घोषणा करता है: "अधिक बड़ी खुशी पाने के लिए यूसुफ ने परमेश्वर से प्रार्थना की
मृत्यु के माध्यम से, और मृत्यु के माध्यम से, उस खुशी को प्राप्त किया। " इसका मतलब है कि अधिक
दुनिया की सबसे बड़ी खुशी से भी ज्यादा आकर्षक और आनंददायक आनंद
कब्र के दूसरी तरफ़। यह जानते हुए भी, उसने मृत्यु माँगी, जो जाहिर तौर पर बहुत दर्दनाक है, जबकि वह दुनिया की सबसे बड़ी खुशी का आनंद ले रहा था।

इस कथा को कुरान ने जिस शानदार तरीके से बयान किया है, उस पर गौर करें।
अंत। देखें कि यह दर्शकों को आनंद और खुशी देने के बजाय उन्हें कैसे आनंदित करता है
दर्द और पछतावा.

इस तरह के अंत का एक और लाभ यह है कि यह हमें आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित करता है
कब्र के उस पार, जहाँ हमें असली खुशी और आनंद मिलेगा।
यूसुफ की महान सत्यनिष्ठा को दर्शाता है और घोषणा करता है कि सांसारिक जीवन की सबसे आनंदमय और उज्ज्वल स्थिति भी उसे मोहित नहीं कर सकती; बल्कि, यह
वह मृत्यु और दूसरा जीवन मांगने को प्रेरित होता है।

वह शाश्वत है। वह शाश्वत है।

नर्सी ने कहा

चौबीसवाँ पत्र

चौबीसवाँ पत्र

• ईश्वरीय दया मृत्यु और दुर्भाग्य की अनुमति क्यों देती है • प्रार्थना • पैगम्बर का स्वर्गारोहण

ईश्वर के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

परमेश्वर जो चाहता है वही करता है और वही आदेश देता है।

प्रश्न: क्या निविदा देखभाल, लाभकारी प्रबंधन और
परमेश्वर के महानतम नामों में से एक के लिए प्रेमपूर्ण दयालुता की आवश्यकता है
दयालु, बुद्धिमान और सर्वप्रेममय परमेश्वर को सांसारिक क्षय, मृत्यु, वियोग, दुर्भाग्य और
क्लेशों से सामंजस्य स्थापित करना चाहिए।
मुसीबत? भले ही हम लोगों की मौत को सहन कर सकें, क्योंकि यह अनंत का द्वार है
विश्वासियों के लिए खुशी, नाजुक पौधे और फूल और जानवर क्यों,
जो जीवन और निरंतरता से चिपके रहते हैं, परिवर्तन, परीक्षण और अलगाव से पीड़ित होते हैं, और अंततः
नष्ट हो जाते हैं? ईश्वरीय करुणा और
क्या बुद्धि इसकी अनुमति देती है?

उत्तर: हम उद्देश्य और आवश्यक जानकारी दिखाने के लिए पाँच संकेतों का उपयोग करेंगे।
कारण, तथा इसके पीछे के उद्देश्यों और लाभों को दर्शाने वाले पाँच संकेत,
जीवित प्राणियों के क्षय और मृत्यु द्वारा प्रदर्शित उदात्त सत्य।

प्रथम स्टेशन: प्रथम स्टेशन में पाँच चिह्न हैं।

पहला संकेत: जैसा कि छब्बीसवाँ वचन दिखाता है, एक कुशल वस्त्र डिजाइनर
एक साधारण मॉडल को आभूषणों से सजे और कलात्मक ढंग से तैयार किए गए परिधानों को प्रदर्शित करने के लिए भुगतान करता है। अपने कौशल और कलात्मक क्षमता को प्रदर्शित करने के लिए, डिज़ाइनर मॉडल को बताता है कि
बैठो और खड़े हो जाओ। क्या मॉडल को आपत्ति जताने का कोई अधिकार है, यह पूछते हुए: “क्यों

आप लगातार इस परिधान का आकार बदलते रहते हैं, जिससे मुझे ऐसा लगता है
अच्छा है, और मुझे बैठाकर और खड़ा करके मुझे परेशान करता है?”

उसी तरह, सर्वशक्तिमान सृष्टिकर्ता प्रत्येक प्रजाति को एक मॉडल के रूप में लेता है और अपने नामों को प्रकट करने और अपनी संपूर्ण कला को प्रदर्शित करने के लिए, हर चीज़ का कारण बनता है
(विशेष रूप से जीवित प्राणियों) को रत्नजटित अस्तित्व का वस्त्र पहनना
इंद्रियों को, और उसे नियति और आदेश की कलम से अलंकृत करता है। बदले में, वह
प्रत्येक प्राणी को एक निश्चित पूर्णता और आनंद के साथ-साथ उदारता से "भुगतान" करता है
उपहार। इस प्रकार, सर्वशक्तिमान निर्माता के किसी भी कार्य पर कोई भी आपत्ति कैसे कर सकता है,
राज्य का स्वामी, जो अपनी इच्छानुसार सब कुछ नियंत्रित करता है?

यदि प्राणियों के पास अनिवार्यतः विद्यमान सत्ता के विरुद्ध कोई "अधिकार" है, तो वह है
ईश्वर ने उन्हें जो अस्तित्व का स्तर दिया है, उसके लिए धन्यवाद देना है। ऐसे सभी
स्तर वास्तविक, ठोस वास्तविकताएं हैं जो किसी आवश्यक कारण पर निर्भर हैं, जबकि प्रदान नहीं किए गए स्तर केवल संभावनाएं हैं। संभावना का कोई अर्थ नहीं होता
वास्तविक, बाह्य अस्तित्व, और किसी चीज़ के अस्तित्व की अनंत संभावनाएँ हैं
अस्तित्व है.

इसके अलावा, ऐसा कोई आवश्यक कारण नहीं है जिसके द्वारा कोई असीम रूप से संभव चीज़ अस्तित्व में आ सके। उदाहरण के लिए, खनिज यह शिकायत नहीं कर सकते कि
वे पौधे बनना चाहते हैं, क्योंकि उनके लिए अनंत संभावनाएं हैं
अस्तित्व के किसी भी स्तर पर। इसलिए उन्हें अपने खनिज के लिए अपने निर्माता को धन्यवाद देना चाहिए
पौधे और जानवर भगवान से शिकायत नहीं कर सकते कि वे क्यों थे
पौधों को उच्च स्तर नहीं दिया गया है। उन्हें अनुग्रह प्राप्त करने के लिए ईश्वर का धन्यवाद करना चाहिए।
अस्तित्व और जीवन, और जानवरों को आत्मा का एक अनमोल रत्न प्रदान किया गया
साथ ही जीवन और अस्तित्व भी।

जहाँ तक तुम लोगों का सवाल है, ऐ शिकायत करने वालों! तुमको अस्तित्व और भलाई का वरदान प्राप्त है। जीवन के सुखों का अनुभव किया है। इसके अलावा, आप एक स्वस्थ मानव अस्तित्व का आनंद लेते हैं। ऐ ईमान वालो, तुम पर इस्लाम और इस्लाम की कृपा बरसी है।
ईश्वर के बारे में शिकायत करना कृतघ्नता दर्शाता है।
जो भी स्तर उसने आपको शुद्ध आशीर्वाद के रूप में प्रदान किया है, उसके लिए आभारी रहें, और
यह शिकायत करके कृतघ्नता मत दिखाओ कि उसने अभी भी तुम पर अनुग्रह नहीं किया
अधिक से अधिक आशीर्वाद जिसके लिए आप जुनून से, यद्यपि गलत तरीके से, आकांक्षा करते हैं, क्योंकि
वे केवल संभावनाएं हैं और इसलिए अस्तित्वहीन हैं।

मान लीजिए कि किसी ऊंचे पद पर आसीन लोग, जैसे कि किसी मीनार के शिखर पर चढ़ते समय प्रत्येक कदम पर उन्हें विशेष आशीर्वाद दिया जाता है, शिकायत करते हैं कि
उन्हें पर्याप्त रूप से ऊंचा नहीं उठाया गया है। यहां तक कि सबसे मूर्ख लोग भी ऐसा ही करेंगे
मैं इसे ऐसे लोगों की ओर से बड़ी कृतघ्नता और अन्याय मानता हूँ।

हे शिकायत करने वालों, यदि तुम लालच से काम करते हो और संतोष और भलाई को नकारते हो, मितव्ययिता, जान लें कि संतोष लाभदायक धन्यवाद है जबकि लालच एक
कृतघ्नता हानि का कारण बनती है। मितव्ययिता उपहारों के प्रति लाभकारी सम्मान दर्शाती है
प्राप्त किया जाता है, जबकि अपव्यय हानिकारक रूप से उपहारों को हल्का बनाता है
और बेशर्मी से। अगर आप समझदार हैं, तो संतुष्ट रहने की कोशिश करें और जो भी आपको मिले उसे स्वीकार करें
यदि आप घोर गरीबी से पीड़ित हैं [हालाँकि आप वह करते हैं जो आप कर सकते हैं और करना चाहिए
वैध तरीकों से], धैर्यवान की ओर मुड़ें और बनने की कोशिश करें
धैर्य रखें। बिना शिकायत किए ऐसा करें। अगर आप किसी में गलती ढूँढना चाहते हैं, तो अपने शारीरिक स्वभाव पर ध्यान दें और उसके बारे में सर्वशक्तिमान ईश्वर से शिकायत करें।

दूसरा संकेत: सर्वशक्तिमान सृष्टिकर्ता द्वारा अपने प्रभुत्व की अद्भुत शक्ति के माध्यम से प्राणियों के निरंतर नवीनीकरण और पुनःसृजन का एक दिव्य उद्देश्य।
अठारहवें पत्र में पूर्ण रूप से बताई गई गतिविधियाँ इस प्रकार हैं:

हर प्राणी सक्रिय है क्योंकि वह सक्रियता की चाह रखता है और उसमें आनंद लेता है। यह भी कहा जा सकता है कि हर गतिविधि में एक तरह का आनंद होता है; इसके अलावा, गतिविधि अपने आप में एक तरह का आनंद है। आनंद पूर्णता की ओर मुड़ता है और एक तरह की पूर्णता है। चूँकि गतिविधि पूर्णता की ओर मुड़ती है, और आनंद और सुंदरता को इंगित करती है, और चूँकि अनिवार्य रूप से विद्यमान है

महामहिम के पूर्ण स्वरूप में उनकी सत्ता, गुण और कार्य में संपूर्णता है, तथा वे निश्चित रूप से अपने आवश्यक अस्तित्व और स्वभाव के अनुरूप ही कार्य करते हैं।
पवित्रता (उसकी आवश्यक स्वतंत्रता और पूर्ण के अनुसार)
पूर्णता और अद्वितीयता), उनमें असीम पवित्र स्नेह और प्रेम है।

ऐसा स्नेह और प्रेम अनंत पवित्र उत्साह, अनंत पवित्र आनंद की उत्पत्ति का कारण बनेगा जो अनंत पवित्र आनंद का स्रोत है।
इस प्रसन्नता के साथ-साथ उनकी करुणा के कारण, सर्व-दयालु और सर्व-करुणामय को असीम पवित्र प्रसन्नता और गर्व होता है जब उनके प्राणी यह महसूस करते हैं
अपनी पूरी क्षमता का उपयोग करें और अपने कर्मों के माध्यम से सापेक्ष पूर्णता प्राप्त करें
उसकी शक्ति। इस पवित्र प्रसन्नता और गर्व के लिए सृष्टि के निरंतर, अनंत चक्कर की आवश्यकता होती है, जो बदले में, निरंतर परिवर्तन, नवीनीकरण और रूपांतरण की मांग करता है। यह निरंतर गतिविधि क्षय, मृत्यु और अलगाव की भी मांग करती है।

एक बार मानव दर्शन द्वारा सभी प्राणियों के लिए बताए गए उद्देश्य और कारण
सृष्टि और जीवन मुझे बहुत महत्वहीन लगे। मैंने इससे यह अनुमान लगाया कि ऐसा क्यों
दर्शनशास्त्र अनिवार्य रूप से बेतुकी बातों का परिणाम देता है जो प्रमुख दार्शनिकों को गुमराह प्रकृतिवाद या कुतर्क की ओर ले जाता है, जो निर्माता की इच्छा को नकारता है और
ज्ञान, या सृष्टिकर्ता को स्वयं बाध्य मानना (जो वह करता है उसे करने के लिए)।
उस समय, दिव्य करुणा दिव्य नाम के साथ मेरी सहायता के लिए आई।

सर्वशक्तिमान ईश्वर ने मुझे प्राणियों की रचना करने के व्यापक उद्देश्य बताये। अर्थात्, प्रत्येक प्राणी चेतन प्राणियों के अध्ययन हेतु एक दिव्य संदेश है।

मैं एक साल तक इस उद्देश्य से संतुष्ट रहा, लेकिन बाद में मैंने इस उद्देश्य की तलाश शुरू कर दी। अन्य प्रयोजनों के लिए। सबसे पहले, प्राणियों में अद्भुत दिव्य कला प्रकट हुई मुझे और, बाद में, एक और उद्देश्य खुद को प्रकट किया: सबसे बड़ा उद्देश्य उनका जीवन और सृजन निर्माता से संबंधित हैं। मैंने देखा कि वे उसकी दृष्टि में उसकी कला की पूर्णता, उसके नामों की अलंकरण, उसकी बुद्धि के रत्न और उसकी करुणा के उपहार; वे उसकी करुणा को प्रतिबिंबित करने वाले दर्पण हैं। अनुग्रह, सौंदर्य और पूर्णता। संतुष्टि के लंबे समय के बाद, मैंने देखा उनकी शक्ति के चमत्कार और उनके प्रभुत्व के कार्यों में बहुत तेजी से परिवर्तन हुआ और उसकी रचनात्मकता के अद्भुत कार्यों के माध्यम से नवीनीकरण लाया गया।

फिर भी संतुष्ट न होने पर मैंने सोचा कि इससे भी बड़ा कोई और उद्देश्य होना चाहिए। उस समय, इस दूसरे संकेत में आंशिक रूप से समझाए गए उद्देश्य और प्रयोजन (जिस पर आगे चर्चा की जाएगी) स्पष्ट हो गया। मुझे पता था कि दैवी शक्ति के कार्य और वस्तुओं का निरंतर प्रवाह इतना सार्थक है कि सर्वज्ञ निर्माता सभी प्राणियों को उस प्रवाह के माध्यम से बोलने का कारण बनता है। यह है मानो स्वर्ग और पृथ्वी पर सभी सक्रिय प्राणी, उनके सभी प्राणियों के साथ क्रियाएँ उनके भाषण के शब्द हैं, और मानो प्रत्येक गति भाषण का एक कार्य है। दूसरे शब्दों में, सभी प्राणी अपने जन्म और मृत्यु सहित अपनी गतिविधियों के माध्यम से परमेश्वर की महिमा करते हैं।

तीसरा संकेत: चीजें पूर्णतः लुप्त नहीं हो जातीं; बल्कि, वे शक्ति के क्षेत्र से ज्ञान के क्षेत्र में स्थानांतरित कर दिए जाते हैं, दृश्यमान, भौतिक संसार (परिवर्तन और नश्वरता का) से अदृश्य संसार तक (प्रकाश और स्थायित्व का)

वास्तव में, किसी वस्तु की सुन्दरता और पूर्णता ईश्वरीय नामों से संबंधित है, क्योंकि वे उन नामों की अभिव्यक्तियाँ हैं। चूँकि वे नाम और उनकी कभी न ख़त्म होने वाली अभिव्यक्तियाँ स्थायी हैं, इसलिए उनके शिलालेखों का नवीनीकरण किया जाएगा, ताज़ा और और भी सुंदर बना दिया गया है। चूंकि कुछ भी पूर्ण अस्तित्वहीनता में प्रवेश नहीं करता है, इसलिए केवल उनके अस्तित्व के सापेक्ष रूप बदल जाते हैं। दूसरे शब्दों में, उनके वास्तविक प्रकृति और पहचान, सौंदर्य के स्रोत तथा ज्ञान और पूर्णता का उद्देश्य, स्थायी हैं।

निर्जीव प्राणी अपनी सुन्दरता के लिए ईश्वरीय नामों का आभारी हैं, और इसलिए उनके लिए महसूस की गई प्रशंसा और प्यार उन नामों से संबंधित है। इसके अलावा, उनके बदलने से (क्योंकि वे ईश्वरीय नामों को प्रतिबिंबित करने वाले दर्पण हैं) कोई कमी नहीं आती नामों से। जब बुद्धिहीन सजीव प्राणी मरते हैं, तो वे वे पूर्ण विनाश में प्रवेश नहीं करते; बल्कि, वे भौतिक से मुक्त हो जाते हैं

शरीर और जीवन की अशांति और अपने कर्तव्य का फल अपने पास स्थानांतरित करवाना
स्थायी आत्मा, जो दिव्य नाम पर निर्भर होकर अपनी तरह का स्वरूप प्राप्त करती है
खुशी की। बुद्धिमान प्राणियों की मृत्यु कब्र और दुनिया के मध्यवर्ती दुनिया के सर्व-बुद्धिमान निर्माता के स्टेशनों के माध्यम से एक यात्रा है
आदर्श रूपों और आत्माओं का, जो इससे अधिक सुंदर और प्रकाशित हैं
दुनिया, और स्थायित्व की दुनिया, जहाँ शाश्वत खुशी भी है
जैसे भौतिक और आध्यात्मिक पूर्णता प्राप्त होती है।

संक्षेप में, चूँकि सर्वशक्तिमान निर्माता विद्यमान है और स्थायी है,
उनके गुण और नाम, उनके शिलालेख और अभिव्यक्तियाँ नवीनीकृत की जाती हैं
वे निरंतर आध्यात्मिक स्थायित्व में रहते हैं। वे पूर्ण गैर-अहंकार के अधीन नहीं हैं।
अस्तित्व।

लोगों की मानवता उन्हें अधिकांश प्राणियों से जोड़ती है। लोग अपनी खुशी से आनंद प्राप्त करते हैं और अपने दुर्भाग्य पर दुःखी होते हैं। वे विशेष रूप से
सजीव प्राणियों की खुशी पर, विशेष रूप से अन्य लोगों की खुशी पर, तथा विशेष रूप से पूर्णता के स्वीकृत और प्रिय लोगों की खुशी पर,
और उनके दुख को साझा करें। स्नेही माताओं की तरह, वे अपने स्वयं के बलिदान कर सकते हैं
ऐसे लोगों के कल्याण के लिए आराम और खुशी।

इस प्रकार सभी विश्वासी, अपने विश्वास की मात्रा के अनुसार और
कुरान की रोशनी और ईमान से जीव खुश हो सकते हैं और उनकी स्थिरता, उनके शून्यता से बचने और उनके लिए प्रभु की मूल्यवान पनाहगाह बन सकते हैं। वे इसके द्वारा इतनी व्यापक रोशनी प्राप्त कर सकते हैं कि वह
यह संसार को भर देता है और प्रत्येक व्यक्ति को उसकी क्षमता के अनुसार लाभ पहुंचाता है।

लेकिन गुमराह लोग, जो मौत को पूर्ण विनाश समझते हैं,
निराशा और अवसाद में पड़ना और सभी प्राणियों के कारण निराशावादी बन जाना'
दुर्भाग्य और मृत्यु। उनके अविश्वास के कारण वे जुनूनी हो जाते हैं
पूर्णतः अस्तित्वहीन हो जाने का भय, और परिणामस्वरूप नरक पहुंचने से पहले ही वे नारकीय यातनाएं सहते हैं।

चौथा संकेत: एक संप्रभु की सरकार में कई विभाग होते हैं जो सर्वोच्च शासक, न्यायाधीश, कमांडर और राज्य के प्रमुख के रूप में उसके कार्यों का प्रतिनिधित्व करते हैं।
धार्मिक कार्यालय। उसी तरह, सर्वशक्तिमान ईश्वर के नामों में अनंत मानव-रूप हैं और इस प्रकार जीवों की महान विविधता और अंतर का कारण बनते हैं। चूँकि
पूर्णता और अनुग्रह का हर स्वामी यह देखना और दिखाना चाहता है कि पूर्णता और अनुग्रह, भगवान के स्थायी नाम स्वयं को प्रकट करेंगे
परम पावन की ओर से, उनके शिलालेखों को देखने के लिए, और देखने के लिए और
उनके शिलालेखों के दर्पणों में उनकी पूर्णता और सुंदरता प्रतिबिंबित होती है।

परिणामस्वरूप, वे निरंतर महान पुस्तक का नवीनीकरण या पुनर्लेखन करते रहते हैं। ब्रह्माण्ड और प्राणियों के विभिन्न संदेशों को अत्यंत सार्थक ढंग से व्यक्त करना या, वे एक पृष्ठ पर हजारों पत्र लिखते हैं और इसे सर्वोच्च न्यायालय के समक्ष प्रस्तुत करते हैं। पवित्र सत्ता को देखने के लिए, तथा सभी चेतन प्राणियों को ताकि वे पढ़ सकें और विचार करें। सत्य का निम्नलिखित छंद इसे व्यक्त करता है:

ब्रह्माण्ड की पुस्तक के पन्ने अनंत प्रकार के हैं, इसके व्यक्तिगत अक्षर और शब्द भी अनगिनत हैं।

सत्य की संरक्षित पट्टिका के मुद्रण गृह में लिखा है, ब्रह्मांड का प्रत्येक प्राणी एक सार्थक शब्द है।

ब्रह्मांड की पुस्तक की पंक्तियों पर विचार करें, क्योंकि वे संदेश हैं तुम्हें सर्वोच्च निवास से।

पांचवां चिन्ह: इसमें दो बिंदु होते हैं।

पहला बिंदु: चूँकि ईश्वर मौजूद है, इसलिए सब कुछ मौजूद है। चूँकि सब कुछ ईश्वर से जुड़ा हुआ है, इसलिए उसकी एकता हर चीज़ को हर चीज़ से जोड़ती है। इस प्रकार प्रत्येक वस्तु अस्तित्व के अनंत प्रकाश की वस्तु है। चूँकि क्षय और अलगाव इस वास्तविकता को बाधित नहीं कर सकता, इस संबंध की चेतना के साथ एक क्षण भी जीने से अस्तित्व का अनंत प्रकाश प्राप्त हो सकता है।

यदि यह संबंध स्थापित नहीं किया जा सकता या इसे नजरअंदाज किया जाता है, तो परिणामस्वरूप अंतहीन निराशा और निराशा के कारण व्यक्ति अनंत अलगाव और अस्तित्वहीनता से ग्रस्त होता है। अवसाद तब महसूस होता है जब कोई प्राणी जिसके साथ हम संबंध महसूस करते हैं, नष्ट हो जाता है और मर जाता है। अगर लोग इस अवस्था में दस लाख साल तक भी जीवित रहें, तो वे ईश्वर से जुड़कर बिताए गए पल का सच्चा आनंद कभी नहीं चख पाते। यही कारण है कि सत्य के लोग यह निष्कर्ष निकालते हैं कि जीवन का एक क्षण प्रबुद्ध होता है यह संबंध ऐसे प्रकाश से रहित लाखों वर्षों के जीवन से बेहतर है। वे यह भी निष्कर्ष निकालते हैं कि अस्तित्व का प्रकाश केवल अनिवार्यतः विद्यमान सत्ता को पहचान कर ही प्राप्त किया जा सकता है।

जो लोग ईश्वर को पहचानते हैं, उनके लिए अस्तित्व का प्रकाश ब्रह्मांड को भर देता है स्वर्गदूतों और अन्य आध्यात्मिक और सचेत प्राणियों के साथ। जो लोग नहीं करते उनके लिए ईश्वर को पहचानो, ब्रह्माण्ड एक विशाल, अंधकारमय और उजाड़ स्थान है जिसमें प्राणी रहते हैं मृत्यु और अलगाव की प्रतीक्षा करें। मान लीजिए कि पेड़ पर लगा प्रत्येक फल उस पेड़ पर लगे सभी फलों से जुड़ा हुआ है, और इसलिए उसके कई प्रकार के द्वितीयक अस्तित्व हैं फलों की संख्या के अनुसार। इसे तोड़ने से यह अन्य फलों से अलग हो जाता है और वह उसे अस्तित्वहीनता के अंधकार में ढँक देता है। शाश्वत प्रार्थना की शक्ति प्रत्येक प्राणी या वस्तु को वास्तविक अस्तित्व प्रदान करती है। इस संबंध के बिना, अस्तित्व के उतने ही प्रकार हैं जितने कि अस्तित्व के। कई चीजें। व्यापक विचार करते समय इस संकेत पर विचार करें

विश्वास का प्रकाश और गुमराही का भयावह अंधकार। वास्तव में, विश्वास ही इस चिन्ह में बताए गए उत्कृष्ट सत्य का सार है। अविश्वासियों के लिए हर चीज़ का मतलब है अस्तित्वहीनता, क्योंकि उनके पास कोई विश्वास नहीं है, ठीक वैसे ही जैसे बिना इंद्रियों वाले लोगों के लिए कुछ भी मौजूद नहीं है।

दूसरा बिन्दु: संसार और वस्तुओं के तीन पहलू हैं, जो इस प्रकार हैं:

• पहला पहलू दिव्य नामों की ओर मुड़ता है। उन नामों का दर्पण होने के कारण, इसमें कोई क्षय या अलगाव नहीं होता; बल्कि, यह निरंतर ताज़ा और नवीनीकृत होता रहता है।

• दूसरा पहलू परलोक (स्थायित्व की दुनिया) की ओर मुड़ता है।

परलोक के बीजों से बोए गए खेत की तरह, जो स्थायी फलों वाले स्थायी वृक्षों में विकसित होते हैं, यह क्षणभंगुर चीजों को स्थायित्व प्रदान करके स्थायित्व की दुनिया की सेवा करता है। यह पहलू जीवन और स्थायित्व को भी प्रकट करता है।

• तीसरा पहलू क्षणभंगुर प्राणियों की ओर मुड़ता है। इच्छा और कल्पना के लोग इस पहलू को पसंद करते हैं; हालाँकि, यह समझदार, सचेत व्यक्तियों का बाज़ार है और कर्तव्यनिष्ठ लोगों के लिए परीक्षण का मंच है। यह पहलू स्पष्ट रूप से क्षय और मृत्यु का विषय है। हालाँकि, इसके आंतरिक आयाम में मृत्यु, क्षय और अलगाव से संबंधित दुखों को ठीक करने के लिए जीवन और स्थायित्व के मानव-प्रकटीकरण शामिल हैं।

निष्कर्ष रूप में, प्राणियों की ये धाराएं और जीवों का प्रवाह गतिशील वस्तुएं हैं, जो अनिवार्यतः विद्यमान सत्ता के अस्तित्व और सृजन के प्रकाश को नवीनीकृत और उज्ज्वल करने के लिए सदैव परिवर्तनशील और नवीनीकृत दर्पण हैं।

दूसरा स्टेशन: इस स्टेशन में एक परिचयात्मक और पांच स्वतंत्र स्टेशन शामिल हैं।

परिचय में दो विषय शामिल हैं।

पहला विषय: परमेश्वर के प्रभुत्व के आवश्यक गुणों और कार्यों को समझने के लिए निम्नलिखित तुलनाओं का विश्लेषण करें। हालाँकि वे उसके प्रभुत्व के कार्यों और आवश्यक गुणों की सच्चाई को पूरी तरह से व्यक्त या माप नहीं सकते हैं, लेकिन अगर वे आगे की समझ रखते हैं तो वे अनुमेय हैं। उनमें और साथ ही साथ पूर्वगामी संकेतों में जो अभिव्यक्तियाँ सर्व-पवित्र दिव्य सार के आवश्यक गुणों और कार्यों के अनुरूप नहीं हैं, वे मेरी गलती हैं।

उदाहरण के लिए, आनंद, हर्ष और प्रसन्नता के बोलचाल के अर्थ पवित्र कृत्यों और आवश्यक गुणों को पर्याप्त रूप से व्यक्त नहीं कर सकते हैं; बल्कि, वे केवल चिंतन के सहायक, मनन के साधन हैं। साथ ही, ईश्वरीय प्रभुत्व के एक व्यापक, शक्तिशाली कानून की नोक की ओर इशारा करके, ऐसी तुलनाएँ उनके प्रभुत्व के आवश्यक गुणों में उस कानून की सच्चाई और प्रकृति को देखने का काम कर सकती हैं।

उदाहरण के लिए, जब हम उदाहरण के तौर पर कहते हैं कि एक फूल मर जाता है, लेकिन पत्तियां इसके अस्तित्व के हजारों उदाहरणों के पीछे, हम एक शक्तिशाली कानून की ओर इशारा करते हैं सभी पौधों, वसंत के फूलों और प्राणियों में दिव्य प्रभुत्व व्याप्त है।

वास्तव में, सर्व-दयालु सृष्टिकर्ता प्रतिवर्ष पृथ्वी का वस्त्र बदलता है उसी नियम से जिससे वह पक्षी के पंख वाले वस्त्र को बदलता है। हर शताब्दी में दुनिया का स्वरूप उसी नियम से बदलता है जिससे वह अंतिम दिन ब्रह्मांड के रूप और आकार को बदलने के लिए उपयोग किया जाएगा। वह कणों को नियंत्रित करने के लिए कानून का उपयोग करता है, वह पृथ्वी को घुमाता है और परिक्रमा करता है एक मौलवी दरवेश परमानंद में करवटें बदल रहा है। वह फिर से उसी नियम से नियंत्रित करता है, सभी क्षेत्रों पर इसका प्रभाव पड़ता है और सौरमंडल में गति होती है।

वह हर साल आपके बगीचे और दाख की बारी को नया बनाता है, और उन्हें ताज़ा करता है हर मौसम में उसी नियम का उपयोग वह आपके टूटने, मरम्मत करने या नवीनीकरण के लिए करता है शरीर की कोशिकाएँ। वह हर मौसम में पृथ्वी के चेहरे को नया बनाता है, उसी नियम के ज़रिए उसे नए वस्त्र पहनाता है। हर वसंत में, सर्वशक्तिमान निर्माता उसे पुनर्जीवित करता है हमारे सामने के पेड़ और पृथ्वी को उसी बुद्धि के नियम से जो वह उपयोग करता है एक कीट को पुनर्जीवित करें। और वह उसी नियम का उपयोग पृथ्वी पर सभी प्राणियों को पुनर्जीवित करने के लिए करेगा क़यामत का दिन: तुम्हारी रचना और पालन-पोषण एक ही आत्मा के समान है (31:28)।

ईश्वरीय प्रभुत्व के कई अन्य नियम कणों से लेकर हर चीज़ में प्रबल होते हैं ब्रह्मांड के लिए। उन कानूनों की शक्ति और व्यापकता पर विचार करें दिव्य प्रभुत्व के कार्यों में दिव्य एकता को देखें और देखें कि वे किस प्रकार दिव्य एकता प्रदर्शित करते हैं। देखें कि किस प्रकार उनका व्यापक और एकात्मक होना, तथा ज्ञान और इच्छा की अभिव्यक्तियाँ, ईश्वर के ज्ञान, इच्छा और एकता को स्थापित करती हैं।

कई शब्दों (रिसाले-ए-नूर की पुस्तकों) में तुलना और रूपक कानूनों की युक्तियाँ दिखाते हैं, और ऐसा करके, चर्चा के तहत किसी भी दिव्य कार्य में दिव्य कानूनों के अस्तित्व को स्थापित करते हैं। इस प्रकार, अधिकांश शब्द '

तुलना, रूपक और दृष्टांतों को निर्णायक प्रमाण माना जा सकता है।

दूसरा विषय: जैसा कि दसवें वचन में तर्क दिया गया है, प्रत्येक फूल और फल इसमें ज्ञान और उद्देश्यों के उतने ही उदाहरण हैं जितने कि उन लोगों की संख्या फूल और फल। ज्ञान के ये उदाहरण तीन प्रकार के हैं: वे जो संबंधित हैं- सृष्टिकर्ता को समर्पित और उसके नामों के शिलालेखों को प्रदर्शित करना; जो सचेत प्राणियों से संबंधित हैं और मूल्यवान, सार्थक संदेशों के रूप में कार्य करते हैं उनके लिए; और जो लोग स्वयं फलों या फूलों से संबंधित हैं, उनका जीवन, रखरखाव, और मानवता के लिए लाभ।

प्रत्येक प्राणी के अस्तित्व के इतने सारे उद्देश्यों पर विचार करते समय, अरबी में निम्नलिखित विचार मेरे मन में आए। ये मुख्य विचार हैं सार्वभौमिक उद्देश्यों से संबंधित निम्नलिखित पाँच संकेत के विषय:

हम जो भी चीजें देखते हैं, वे सभी परिवर्तनशील हैं, वे दर्पण हैं जो ईश्वर की रचना के प्रकाश की अभिव्यक्तियों को नवीनीकृत करने के लिए गतिशील और क्रियाशील हैं। यह नवीनीकरण सापेक्ष अस्तित्व वाले अलग-अलग प्राणियों के निरंतर परिवर्तन के माध्यम से होता है। दूसरे शब्दों में, दिव्य अभिव्यक्तियाँ प्राप्त करने वाली सभी वस्तुओं को नई वस्तुओं द्वारा प्रतिस्थापित किया जाता है, लेकिन केवल तभी जब, • सबसे पहले, उनके सूक्ष्म अर्थ और आध्यात्मिक पहचान ने स्थायित्व प्राप्त कर लिया हो; • दूसरे, उन्होंने अदृश्य दुनिया से संबंधित सत्य और आदर्श पट्टियों पर दर्ज रूपों को पीछे छोड़ दिया हो; • तीसरे, उन्होंने दूसरी दुनिया के फल और शाश्वत दृश्य उत्पन्न किए हों; • और चौथे, उन्होंने भगवान की महिमा की हो और उनके नामों की आवश्यकता को प्रकट किया हो; • और, पाँचवें, ताकि महिमावान के कार्य और आवश्यक गुण, साथ ही साथ उनके ज्ञान की वस्तुएँ प्रदर्शित हो सकें।

इसलिए प्रत्येक प्राणी, विशेष रूप से जीवित प्राणियों में पाँच प्रकार की बुद्धि और उद्देश्य होते हैं। हे नश्वर लोगों, यदि आप चाहते हैं कि आपका छोटा सा बीज-आकार का सत्य एक स्थायी वृक्ष (नीचे बताए गए उद्देश्यों के फलों के साथ) में विकसित हो, तो सच्चा विश्वास प्राप्त करने का प्रयास करें। अन्यथा आप उन फलों से वंचित हो जाएँगे, उस बीज में दब जाएँगे, और उसके साथ सड़ जाएँगे।

पहला संकेत: दिव्य अभिव्यक्तियाँ प्राप्त करने वाली सभी वस्तुओं को उनके सूक्ष्म अर्थ और आध्यात्मिक पहचानों के स्थायित्व प्राप्त करने के बाद ही नए द्वारा प्रतिस्थापित किया जाता है। कुछ मर जाता है और अस्तित्वहीनता में प्रवेश करता हुआ प्रतीत होता है। लेकिन वास्तव में, इसका व्यक्त अर्थ स्थायी है, क्योंकि इसका रूप, प्रकृति और आध्यात्मिक पहचान विचारों की दुनिया में, इस दुनिया की प्रतियों (संरक्षित पटल) पर और यादों (संरक्षित पटल के नमूने) में सुरक्षित है। इस प्रकार यह अपने स्पष्ट, भौतिक अस्तित्व को सैकड़ों अन्य प्रकार के अमूर्त अस्तित्वों के लिए बदल देता है जो ज्ञान से संबंधित हैं।

किसी पृष्ठ को छापने में आवश्यक लीड प्रकारों को व्यवस्थित करना और फिर छपाई समाप्त होने के बाद उन्हें हटाना शामिल है। इस पृष्ठ को जितनी बार चाहें उतनी बार दोहराया जा सकता है, जिससे अनगिनत रूपों में स्थायित्व प्राप्त होता है और इसके अर्थ के साथ, अनगिनत यादों में लीड प्रकार अब मौजूद नहीं हैं। उसी तरह, दिव्य भाग्य की कलम दिव्य ज्ञान में अर्थों के लिए एक आकार, रूप और अवधि निर्धारित करती है। उदाहरण के लिए, दिव्य शक्ति वसंत के दौरान वनस्पति को बाहरी, भौतिक अस्तित्व देती है। उनके रूपों और पहचानों को अदृश्य दुनिया के रजिस्टर में स्थानांतरित करने के बाद, दिव्य ज्ञान की आवश्यकता होती है कि उन्हें अगले वसंत में नए लोगों के साथ बदल दिया जाए ताकि बाद वाले अपने अर्थ प्रदर्शित कर सकें।

दूसरा संकेत: ... वे अदृश्य दुनिया से संबंधित सत्य और आदर्श पट्टिकाओं पर दर्ज रूप पीछे छोड़ गए हैं। जब प्रत्येक वस्तु मर जाती है, विशेष रूप से प्रत्येक

जीवित वस्तु, यह आदर्श गोलियों पर जीवित रहते हुए धारण किए गए सभी रूपों को छोड़ देती है विचारों की दुनिया में' रजिस्टर करता है और संबंधित कई सच्चाइयों को सामने लाता है अदृश्य दुनिया। ये रूप उसके जीवन-इतिहास (उसके) के शब्दों या वाक्यों के रूप में काम करते हैं जीवन की दैवीय नियत घटनाएँ), जिन पर आत्मिक प्राणी चिंतन करते हैं।

एक फूल मर जाता है, लेकिन अदृश्य दुनिया में अपने हजारों रूप छोड़ जाता है। छोटी संरक्षित गोलियाँ और हज़ारों स्मृतियाँ (लघु संरक्षित गोलियाँ), और अपने अस्तित्व के लिए ज़रूरी चीज़ों को अपने सैकड़ों बीजों में जमा कर देता है। यह मर जाता है केवल चेतन प्राणियों को यह दिखाने के बाद कि किस प्रकार यह जीवित रहते हुए अपने रूपों के माध्यम से भगवान की महिमा करता है और उनके नामों के शिलालेखों को प्रकट करता है।

इसी तरह वसंत, वैश्विक बर्तन में एक फूल की तरह, क्षय हो जाता है और ऐसा प्रतीत होता है अस्तित्वहीनता में प्रवेश करता है। लेकिन वास्तव में, यह अपनी वर्तमान वास्तविकता का आदान-प्रदान करता है और छोड़ देता है अदृश्य जगत से संबंधित जितने सत्य हैं, उसके पीछे भी उतनी ही सच्चाई है जितने बीज, उतने ही आदर्श पहचान उसके फूल, और उतनी ही संख्या इसमें मौजूद प्राणियों के रूप में ज्ञान के उदाहरण। साथ ही, यह जगह बनाता है अगले वसंत को आकर अपना कार्य पूरा करना है। संक्षेप में, वसंत से एक तरह का आकर्षण छीन लिया जाता है। अमूर्त अस्तित्व के हजार वस्त्रों के बदले में आभासी अस्तित्व का एक वस्त्र।

तीसरा संकेत: ... अन्य सांसारिक फल और अनन्त दृश्य उत्पन्न किये। यह संसार एक कारखाना या कृषि योग्य क्षेत्र है जिसमें जीवन के लिए आवश्यक उत्पाद बनते हैं। आख़िरत के बाज़ार में जिन्न और इंसान के कर्मों को स्थानान्तरित किया जाता है, उसी प्रकार अन्य प्राणी भी आख़िरत के बाज़ार में बहुत से कार्य करते हैं।
परलोक के लिए और इस प्रकार विभिन्न “फसलें” उत्पन्न करें।

यह भी कहा जा सकता है कि पृथ्वी, यह दिव्य जहाज तेजी से घूम रहा है सूर्य और इस प्रकार सर्वोच्च मस्टरिंग की परिधि का स्थान खींचता है, चलता है क्योंकि वह ऐसा इसलिए करता है ताकि उसके निवासी अपने काम की फसल काट सकें हम यह इसलिए कह रहे हैं कि जन्नत वाले चाहेंगे कि वे इस बात को बयान करें। एक दूसरे को सांसारिक अनुभव बताते हैं और उन्हें देखने में बहुत आनंद लेते हैं जैसे कि स्क्रीन पर हो। इसे देखते हुए, जैसा कि संकेत दिया गया है: (वे लेट जाते हैं) आमने-सामने वे उठे हुए सोफे पर बैठे हुए (15:47) अपनी सांसारिक घटनाओं के बारे में बात करेंगे जीवन, और उन घटनाओं की छवियाँ अनन्त दृश्यों के रूप में मौजूद रहेंगी।

इस प्रकार संसार उन सुन्दर प्राणियों के माध्यम से उन चिरस्थायी दृश्यों का निर्माण करता है जो एक के बाद एक प्रकट होते हैं और फिर लुप्त हो जाते हैं। आज के समय में सभ्य दुनिया में, उदाहरण के लिए, अजीब और शानदार चीजें और घटनाएं होती हैं फिल्माया गया और इस तरह भविष्य की पीढ़ियों के लिए एक तरह का स्थायित्व प्राप्त हुआ। इसी तरह, प्राणियों का सर्वज्ञ निर्माता, अपने सर्वज्ञ, सर्वदयालु और सर्वप्रेममय नामों के अनुसार, प्राणियों के कार्यों के परिणामों को लिखता है।

परलोक के लिए निर्मित और उन्हें शाश्वत संसार में चिरस्थायी दृश्यों के रूप में स्थायित्व प्रदान करता है।

चौथा संकेत: ... प्रभु की महिमा की और उनके नामों की आवश्यकता को प्रकट किया। सभी प्राणी अपने जीवन के विभिन्न चरणों में अपने-अपने तरीके से ईश्वर की महिमा करते हैं।
जैसे वे अपने शरीर के अंगों की संख्या तक सर्वज्ञानी सृष्टिकर्ता की महिमा करते हैं,
वे अपने जीवन और अस्तित्व का उपयोग दिव्य नामों की आवश्यकताओं को प्रदर्शित करने के लिए भी करते हैं
या क्रियाएँ (अर्थात, सर्व-दयालु नाम द्वारा अपेक्षित करुणा, सर्व-प्रदाता नाम द्वारा अनुकूलता, सर्व-कृपा करने वाले नाम द्वारा अनुग्रह)।

लोग स्वादिष्ट फल खाते हैं, जो बाद में सड़ जाते हैं और संभवतः मर जाते हैं।
उनके पेट में स्वाद के अलावा, वे मुंह में जो स्वाद पैदा करते हैं, उसके अलावा, वे
वे जिन भी शारीरिक कोशिकाओं में प्रवेश करते हैं, उन्हें खुशी देते हैं और इस प्रकार वे जीवन के साधन बन जाते हैं।
शरीर को पोषण देने और जीवन को बनाए रखने जैसे उद्देश्यपूर्ण कार्य। जीविका के रूप में, उन्हें पौधे के जीवन के स्तर से मानव जीवन के स्तर तक पदोन्नत किया जाता है।

जब जीव मरते हैं, तो वे कई लोगों के कार्यों और शिलालेखों को सौंप देते हैं
दिव्य नामों को स्वयं नामों में परिवर्तित करो और इस प्रकार स्थायित्व प्राप्त करो।
यह देखते हुए, क्या हमें उस प्राणी के लिए शोक करना चाहिए जिसने हजारों प्रकार प्राप्त किए हैं?
मृत्यु के माध्यम से क्षणिक अस्तित्व के बदले में स्थायी अस्तित्व का क्या अर्थ है?
सोचना चाहिए कि (दिव्य) करुणा, बुद्धि और प्रेम के लिए यह आवश्यक है, क्योंकि
इसके विपरीत को प्राथमिकता देने का अर्थ है केवल एक लाभ से बचने के लिए हजारों लाभों को अस्वीकार करना
असुविधा, एक ऐसी प्राथमिकता जिसके परिणामस्वरूप हजारों प्रकार की हानि होगी।
निष्कर्ष के तौर पर, सर्व-दयालु, सर्व-बुद्धिमान और सर्व-प्रेममय के नाम
मृत्यु और क्षय को अनिवार्य बना देता है।

पाँचवाँ संकेत: ... और प्रतिस्थापित किए जाते हैं ताकि गौरवशाली के कार्य और
आवश्यक गुण, साथ ही साथ उनके ज्ञान की वस्तुएं भी प्रदर्शित की जा सकती हैं ।
प्राणी, विशेष रूप से जीवित प्राणी, कई स्थायी चीजों को पीछे छोड़ने के बाद अपना स्पष्ट अस्तित्व खो देते हैं। उनके आधिपत्य के अनिवार्य होने के कारण
गुण और परम पावनता एवं पूर्ण स्वतंत्रता के अनुरूप,
अनिवार्यतः विद्यमान सत्ता में असीम प्रेम, स्नेह और गर्व है, और
यदि ये शब्द स्वीकार्य हैं, तो अनंत पवित्र आनंद और सुख तथा असीम पारलौकिक खुशी, जिसके निशान देखे जा सकते हैं। इस प्रकार,
उन आवश्यक गुणों की अद्भुत गतिविधि की आवश्यकता है, सभी प्राणियों को
निरंतर परिवर्तन और रूपांतरण की प्रक्रिया से गुजरना जो उन्हें आगे बढ़ाता है
दृश्यमान भौतिक दुनिया से अदृश्य दुनिया तक।

यह निरंतर प्रवाह और बेचैन आंदोलन आवश्यक है
ईश्वर के प्रभुत्व के गुण। जीव गुमराह लोगों को प्रभावित करते हैं
मृत्यु और अलगाव के विलाप के साथ, और मार्गदर्शन के लोग आवाजों के साथ
ईश्वरीय स्मरण और महिमा का अनुभव। परिणामस्वरूप, प्रत्येक मरता हुआ प्राणी

अपने पीछे अनेक अर्थ, गुण और अवस्थाएँ छोड़ जाता है, जिनके माध्यम से अनिवार्यतः विद्यमान प्राणी के स्थायी आवश्यक गुण और कार्य हो सकते हैं प्रकट हो। यह उन रूपों और अवस्थाओं के माध्यम से भी निकलता है, जिन्हें इसने ग्रहण किया था जीवित, एक विस्तारित अस्तित्व जो इसके बाह्य, भौतिक अस्तित्व का प्रतिनिधित्व करता है दिव्य ज्ञान के क्षेत्र (यानी, प्रकट रिकॉर्ड, प्रकट पुस्तक, और संरक्षित टैबलेट)।350 इसे देखते हुए, हम कह सकते हैं कि प्रत्येक प्राणी एक अस्तित्व के बदले में हजार प्रकार के स्थायी अस्तित्व।

एक अन्य उदाहरण पर विचार करें: एक कारखाना उत्पादन के लिए कच्चे माल को जलाता है मूल्यवान रासायनिक पदार्थ, और परिणामी ऊष्मीय ऊर्जा का उपयोग वांछित उत्पाद बनाने के लिए करता है। इस दहन के परिणामस्वरूप कई नई चीजें बनती हैं अधिक मूल्य। यदि ऐसा है, तो हमें उपभोग के बारे में शिकायत क्यों करनी चाहिए कच्चे माल की कमी या इस बात का रोना कि निर्माता उनके प्रति कोई दया नहीं दिखाता?

सर्वज्ञ, सर्वदयालु और सर्वप्रेममय सृष्टिकर्ता अपनी करुणा, बुद्धि और विवेक की आवश्यकता के अनुसार ब्रह्माण्ड की संरचना को गतिमान करता है।
और प्रेम, प्रत्येक नश्वर अस्तित्व को एक बीज के रूप में उपयोग करना जो कई प्रकारों में विकसित होगा स्थायी अस्तित्व का। यह अंतिम परिणाम उनके आवश्यक गुणों का शानदार है वस्तु, उनके आधिपत्य के उद्देश्यों का साधन, उनकी नियति की कलम की स्याही, और अपनी शक्ति के वस्त्रों के लिए एक शटल। संक्षेप में, वह इन और कई अन्य उदात्त उद्देश्यों के लिए ब्रह्मांड को निरंतर संचालन में रखता है जो हमारे लिए अज्ञात हैं।

वह कणों या परमाणुओं को बेचैन गति में, तत्वों और पौधों को निरंतर प्रवाह, अंतहीन जुलूस में पशु, और निरंतर परिक्रमण में ग्रह, इस प्रकार ब्रह्मांड को अपने संकेतों के बारे में बोलने और लिखने के लिए प्रेरित करते हैं।
उनका प्रभुत्व उन्हें अपने आदेशों और आदेशों, ज्ञान के संचालन के लिए क्रमशः वायु, प्रकाश, जल और मिट्टी को शाही माध्यम बनाने का कारण बनता है।
और बुद्धि, उदारता और दया, और संरक्षण और पुनरुद्धार। प्रत्येक एक जीवित प्राणी के निरंतर अस्तित्व का समर्थन करता है।

इस उज्ज्वल, उदात्त सत्य को केवल कुरान के माध्यम से ही समझा जा सकता है। प्रकाश और विश्वास की शक्ति के माध्यम से प्राप्त किया जाता है। अगर इसे पहचाना नहीं जा सकता है, तो यह उसकी जगह घना, भयानक अंधकार छा जाएगा। यही कारण है कि गुमराह लोग दुनिया को मौत और अलगाव की जगह के रूप में देखते हैं, जहाँ सब कुछ वह पूर्णतया अस्तित्वहीन हो जाता है। वे ब्रह्मांड को एक प्रकार का नरक मानते हैं,

---

350 मैनिफेस्ट बुक वास्तविक नियति का प्रतीक है, जो ईश्वरीय इच्छा, ईश्वर की सृजनात्मक इच्छा का एक शीर्षक है। और ब्रह्मांड के परिचालन नियम, और जीवित प्राणियों द्वारा प्रदर्शित भौतिक व्यवस्था। प्रकट अभिलेख का अर्थ है संरक्षित पट्टिका, दिव्य ज्ञान की पुस्तक, और यह ब्रह्मांड के अमूर्त क्रम और जीवन को निर्धारित करने वाली औपचारिक नियति का प्रतीक है। संरक्षित पट्टिका उस चीज को संदर्भित करती है जिस पर ईश्वर ने सभी घटनाओं को पूर्वनिर्धारित और रिकॉर्ड किया है, जो सृष्टि के लिए एक प्रकार का दिव्य खाका है। (संपादक)

और इसकी विषय-वस्तु एक बहुत ही संक्षिप्त अस्तित्व के बाद समग्र रूप से अस्तित्वहीनता से आच्छादित हो जाती है। वे अतीत और भविष्य को अस्तित्वहीनता के अंधकार की परतों से घिरा हुआ देखते हैं, यह मानते हुए कि केवल वर्तमान की झिलमिलाहट में ही अस्तित्व का दुखद जीवन पाया जा सकता है। लेकिन मार्गदर्शन के लोगों के लिए, कुरान और विश्वास की रोशनी अस्तित्व के प्रकाश से हर समय को प्रकाशित करती है और इस प्रकार उन्हें शाश्वत खुशी प्राप्त करने में सक्षम बनाती है।

अंत में: मैं कवि नियाज़ी मिस्री के अंदाज़ में कहता हूँ:

जब मेरी आत्मा ईश्वर में विनष्ट हो जाती है और मेरे शरीर का
पिंजरा टुकड़े-टुकड़े हो जाता है; जब मेरी जीभ मौन हो जाती है, तब मैं
पुकारता हूँ: "हे सत्य, हे विद्यमान, हे नित्य, हे पूज्य, हे सर्वज्ञ, हे
इच्छित, हे सर्वदयालु, हे सर्वप्रेममय!"

और मैं चिल्लाता हूं:

अल्लाह के अलावा कोई पूज्य नहीं, वह सर्वोच्च है, स्पष्ट सत्य है; मुहम्मद अल्लाह के रसूल हैं, जो अपने वादे के प्रति सच्चे हैं और विश्वसनीय हैं।

मैं यह भी मानता हूं और साबित भी करता हूं:

पुनरुत्थान, स्वर्ग, नरक और शाश्वत आनंद सत्य हैं। ईश्वर दयालु, बुद्धिमान और प्रेममय है, और करुणा, बुद्धि और प्रेम सभी चीज़ों और उनके अस्तित्व के लिए आवश्यक उनके कार्यों को शामिल करता है।

प्रशंसा है ईश्वर की, जिसने हमें इस ओर मार्गदर्शित किया। यदि ईश्वर ने हमें मार्गदर्शित न किया होता, तो हम कभी भी सीधे मार्ग पर नहीं आ सकते थे। हमारे रब के रसूल सत्य लेकर आए।

तेरी महिमा हो। हमें कोई ज्ञान नहीं है सिवाय उस ज्ञान के जो तूने हमें सिखाया है। तू ही सर्वज्ञ, सर्वज्ञ है। हमारे रब, अगर हम भूल जाएँ या गलती कर दें तो हमें दोष न दे। हे ईश्वर, हमारे स्वामी मुहम्मद पर ऐसी कृपा कर जिस से तू प्रसन्न हो और उनका कर्तव्य पूरा हो, तथा उनके परिवार और साथियों पर भी कृपा कर और शांति प्रदान कर! आमीन! सारी प्रशंसा सारे संसार के रब के लिए है।

महिमा हो उसकी जिसने अपनी धरती के बगीचे को एक ऐसा स्थान बनाया जहाँ
उनकी कला कृतियाँ प्रदर्शित की जाती हैं, उनके जीव इकट्ठे किए जाते हैं, उनकी शक्ति और बुद्धि प्रकट होती है, उनकी दया खिलती है, उनके बीज
स्वर्ग बोया जाता है, सृजित प्राणी प्रकट होते हैं और फिर गायब हो जाते हैं, अस्तित्व में आते हैं-

तम्बू में चीज़ें अंदर-बाहर आती-जाती रहती हैं, और जीव-जंतु अपने-अपने हिसाब से आते-जाते रहते हैं।
एक निश्चित सीमा तक। सजे हुए जानवर, सुशोभित पक्षी, फलदार वृक्ष,
फूलदार पौधे सब उसके ज्ञान के चमत्कार हैं, उसकी अद्भुत रचनाएँ हैं
कला, उनकी उदारता के उपहार, उनकी कृपा के प्रमाण, उनके प्रमाण
एकता, उसकी बुद्धि की सूक्ष्मताएँ, और उसकी करुणा के साक्षी।
फूल मुस्कुराते हैं फलों के कारण, पक्षी गाते हैं सुबह के कारण
हवा का झोंका, और फूलों के गालों पर बारिश की बूँदें। इन बगीचों में फलों द्वारा प्रदर्शित की गई शोभा,
और सभी जानवरों और मानव माताओं की अपने बच्चों के प्रति करुणा, सर्व-प्रेमी की कृपा से आती है।

मान्यता, दयालु का प्रेम, स्नेहमय की करुणा, तथा समस्त प्राणियों के प्रति परम कृपालु का स्नेह, चाहे वे हों
जिन्न, लोग, आत्माएं, जानवर या देवदूत।

पहला परिशिष्ट: प्रार्थना

उसके नाम पर.

ऐसी कोई भी चीज़ नहीं है जो उसकी स्तुति से उसकी महिमा न करती हो।

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

(ऐ नबी) कह दो, "मेरा रब तुमसे कोई सरोकार नहीं रखता।
बल्कि तुम्हारी नमाज़ के लिए है।" (25:77)

इस श्लोक से संबंधित निम्नलिखित पाँच बिंदुओं पर विचार करें:

पहला बिन्दु: प्रार्थना, एक महान रहस्य और सेवकाई का सार-तत्व
हुड तीन प्रकार का होता है, इस प्रकार:

• जो जन्मजात स्वभाव की जीभ द्वारा बनाया गया है। सभी बीज और बीज-गड्ढे अपने स्वभाव और स्वभाव के माध्यम से सर्वज्ञ निर्माता से प्रार्थना करते हैं
प्रकृति को एक विस्तृत पौधे या विशाल वृक्ष के रूप में विकसित होने के लिए प्रेरित करना ताकि वे
उनके नाम के शिलालेखों को पूरी तरह से प्रकट करें। आवश्यक की उपस्थिति
किसी विशेष प्रभाव को उत्पन्न करने के लिए परिस्थितियों का उपयोग करना भी एक ऐसी ही प्रार्थना है,
इस बात की दलील कि प्रभाव महसूस किया जाए। इन परिस्थितियों की व्यवस्था करना संभव हो सकता है
सर्वशक्तिमान से प्रश्न करने वाली स्वभावगत जीभ के समान
मैजेस्टिक वन वांछित प्रभाव पैदा करने के लिए। उदाहरण के लिए, पानी, गर्मी,
मिट्टी और प्रकाश एक साथ मिलकर बीज को पेड़ बनाते हैं।
वे प्रार्थना करते हैं: "हे सृष्टिकर्ता, इस बीज को एक वृक्ष बना दो।"
पेड़ दैवीय शक्ति का चमत्कार है, और चूंकि उनमें केवल अचेतन है,
निर्जीव और व्यक्तिगत भौतिक अस्तित्व, वे इसे नहीं बना सकते
खुद।

• जो प्राकृतिक आवश्यकता की जीभ से बना है। सभी जीवित प्राणी प्रार्थना करते हैं
सर्व-दयालु सृष्टिकर्ता, उनकी ज़रूरत के माध्यम से, उनकी संतुष्टि के लिए
परमेश्वर उनकी ज़रूरतों को पूरा करने के लिए ज़रूरी चीज़ें भेजता है,
ऐसा कुछ जो प्राणी स्वयं नहीं कर सकते। इस अर्थ में, उनका
आवश्यकता एक प्रकार की प्रार्थना है जो ईश्वर के दरबार तक पहुँचती है, और कारण ईश्वर से वांछित परिणाम प्राप्त करने के लिए की गई प्रार्थनाएँ हैं।

• सचेतन जीवों द्वारा अपनी विशेष आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए की गई प्रार्थनाएँ। ऐसी प्रार्थनाएँ दो श्रेणियों में विभाजित हैं। पहली श्रेणी है
हताशा में या प्राकृतिक आपदा के संबंध में की गई प्रार्थनाओं का
ज़रूरतों को, स्वभाव की भाषा से और ईमानदारी और शुद्ध इरादे से पूरा करें। ऐसी ज़्यादातर प्रार्थनाएँ स्वीकार की जाती हैं। चूँकि ज़्यादातर वैज्ञानिक खोजें और तकनीकी नवाचार (जिन्हें लोग गर्व का साधन मानते हैं)
आधुनिक सभ्यता के समर्थक) ऐसी याचिकाओं का परिणाम हैं,
वे सामान्य रूप से स्वीकार्य हैं।351 दूसरे में हमारे दैनिक शामिल हैं
प्रार्थनाएँ, जो सक्रिय और स्वभाव से, और मौखिक में विभाजित हैं
और दिल से। उदाहरण के लिए, ज़मीन जोतना एक सक्रिय प्रार्थना है
जिसे खजाने के दरवाजे पर दस्तक के रूप में समझा जा सकता है
ईश्वर से भोजन की भीख मांगने के बजाय ईश्वर की दया और उदारता पर भरोसा करें।
मैदान।

दूसरा बिंदु: प्रार्थना का बहुत बड़ा प्रभाव होता है और हमेशा परिणाम मिलता है, खासकर जब यह प्रकृति में सार्वभौमिक हो। यह भी तर्क दिया जा सकता है कि प्रार्थना एक है
ब्रह्मांड के निर्माण का कारण। जैसा कि सृष्टिकर्ता सृष्टि की रचना करने से पहले जानता था
यदि हम पैगंबर से कहें कि वह मानवता और समस्त सृष्टि के लिए शाश्वत सुख की कामना करेंगे, तथा ईश्वरीय नामों के प्रकटीकरण की कृपा प्राप्त करना चाहेंगे, तो हम कह सकते हैं
कि भगवान ने ब्रह्मांड का निर्माण करके उनकी भविष्य की प्रार्थनाओं का उत्तर दिया। अगर प्रार्थना
इतना महत्वपूर्ण और व्यापक, वह अनगिनत मुसलमानों और धन्य लोगों, साथ ही जिन्न, स्वर्गदूतों और अन्य आध्यात्मिक लोगों की प्रार्थनाओं को कैसे अस्वीकार कर सकता है?
पिछले 14 शताब्दियों से पैगम्बर को महानतम उपलब्धि प्राप्त करने के लिए बनाया गया है
ईश्वरीय दया, शाश्वत खुशी और उसके लक्ष्य?

---

[351] उदाहरण के लिए, न्यूटन ने गुरुत्वाकर्षण की “खोज” करने से पहले कई सेब या अन्य चीजें गिरते हुए देखी होंगी। लेकिन उनके प्रयासों और अध्ययनों के प्रतिफल के रूप में, भगवान ने उनकी खोज को जगमगा दिया
उस पर अप्रत्याशित रूप से। यह आर्किमिडीज की पानी के उठाने के बल की "खोज" के लिए भी सच है। कुछ खोज, जैसे कि एलियास होवे द्वारा सुई की खोज, एक के माध्यम से महसूस की गई थी
स्वप्न। कोई भी व्यक्ति अपनी इच्छा से स्वप्न नहीं देख सकता, परन्तु ईश्वर उसे स्वप्न देखने के लिए प्रेरित करता है।
भले ही सपनों में व्यक्ति की मानसिक स्थिति का छोटा सा योगदान हो।
भविष्य में होने वाली किसी घटना की चेतावनी या समाचार पूरी तरह से ईश्वर की कृपा में होते हैं। (ट्र.)

परिणामस्वरूप प्रार्थनाओं ने ऐसी स्थायित्व, व्यापकता और सार्वभौमिकता प्राप्त कर ली है कि वे पवित्र आत्मा के अधीन किए जाने के स्तर तक पहुंच गई हैं।
संभावित और प्राकृतिक आवश्यकता की भाषा। और इसलिए पैगंबर मुहम्मद ने
पैगम्बरी और व्यक्तिगत गुणों के साथ-साथ, एक उच्च पद भी प्राप्त किया
मानवता की समझ और बोध की शक्ति से परे। इसलिए, मुसलमान,
सोचो कि क़यामत के दिन तुम्हारे लिए कितना बड़ा सिफ़ारिश करनेवाला होगा।
आप उसकी सिफ़ारिश चाहते हैं, उसकी सुन्नत का पालन करें।

प्रश्न: यदि वह ईश्वर का प्रिय है तो उसे इतनी प्रार्थनाओं की आवश्यकता क्यों है?
उसकी तरफ से?

उत्तर: वह धन्य व्यक्ति अपने अनुयायियों की व्यक्तिगत और सामूहिक खुशी के बारे में सोचता है, तथा उन पर क्या बीतेगी, इसकी चिंता करता है।
यद्यपि उसके पास अनन्त सुख की अनंत मात्राएँ और पूर्णता के स्तर हैं, फिर भी वह हर समय और हर स्तर पर प्रत्येक व्यक्ति के सुख की कामना करता है, और उसके लिए दु:खी होता है।
प्रत्येक दुर्भाग्य। इसलिए उसे अनगिनत आशीर्वाद और प्रार्थनाओं की आवश्यकता है और वह इसका हकदार भी है।

प्रश्न: हम उन चीज़ों के लिए प्रार्थना क्यों करते हैं जो घटित होंगी और उन चीज़ों के लिए जो घटित होंगी?
ऐसा कभी नहीं होगा?

उत्तर: प्रार्थना एक प्रकार की उपासना है जिसके माध्यम से सेवक घोषणा करते हैं
भगवान के सामने उनकी लाचारी और गरीबी। इसके स्पष्ट उद्देश्य कारण हैं
प्रार्थना करने के लिए, और इसके पुरस्कार मुख्य रूप से परलोक में दिए जाते हैं। यदि आपकी प्रार्थना
यदि प्रार्थना का उत्तर न मिले तो यह न कहें कि: “मेरी प्रार्थना स्वीकार नहीं हुई” बल्कि कहें कि:
"प्रार्थना का समय अभी समाप्त नहीं हुआ है।" विश्वासियों को वह शाश्वत खुशी क्यों नहीं मिलेगी जिसके लिए वे निरंतर बड़े उत्साह और ईमानदारी से प्रार्थना करते हैं?
वह परम दयालु और कृपालु, जिसकी असीम दया की गवाही स्वयं ब्रह्माण्ड देता है, वह उनकी इस प्रार्थना को कैसे अस्वीकार कर सकता है कि वे ईश्वर को स्थापित करें?
अनन्त सुख की दुनिया?

तीसरा बिंदु: स्वैच्छिक मौखिक प्रार्थना दो तरीकों से स्वीकार की जाती है: या तो
जो माँगा जाता है, वही दिया जाता है, या उससे बेहतर कुछ दिया जाता है। उदाहरण के लिए, कोई व्यक्ति बेटे के लिए प्रार्थना करता है, लेकिन सर्वशक्तिमान ईश्वर वर्जिन मैरी जैसी बेटी भेजता है।
उस स्थिति में, हमें कहना चाहिए: “प्रार्थना बेहतर तरीक़े से स्वीकार की गयी है।”
इसी तरह, कोई सांसारिक सुख के लिए प्रार्थना करता है लेकिन उसे शाश्वत सुख मिलता है। इस मामले में, हमें कहना चाहिए: "प्रार्थना अधिक सकारात्मक रूप से स्वीकार की गई है
लाभकारी तरीका।” चूँकि सर्वशक्तिमान ईश्वर सर्वज्ञ हैं, हम उनसे प्रार्थना करते हैं और वह
अपनी बुद्धि के अनुसार उत्तर देता है। उदाहरण के लिए, बुखार से पीड़ित रोगी
शहद मांग सकते हैं लेकिन कुनैन सल्फेट मिलता है। मरीज़ आलोचना कैसे कर सकता है

इसके लिए डॉक्टर के पास जाओ, क्योंकि डॉक्टर ने बीमारी का निदान किया और रोगी को कुछ बेहतर दिया।

चौथा बिन्दु: प्रार्थना का सबसे सुन्दर, आनन्ददायक और सबसे शीघ्र परिणाम उन लोगों को मिलता है जो जानते हैं कि एक ऐसा व्यक्ति है जो सब पर पूर्ण शक्ति रखता है, जो उनकी पीड़ा सुनता है, उन पर दया करता है और उनका निवारण करता है। वे इस संसार के अतिथिगृह में अकेले नहीं हैं; बल्कि एक सर्व-दयालु व्यक्ति उनकी देखभाल करता है और उन्हें अपना साथी प्रदान करता है। वे स्वयं को उस सत्ता के सान्निध्य में मानते हैं जो सभी आवश्यकताओं को पूरा करता है और सभी शत्रुओं पर विजय प्राप्त करता है। राहत महसूस करते हुए, मानो कोई भारी बोझ उतर गया हो, वे कहते हैं: "सर्व स्तुति सर्वलोक के स्वामी की हो।"

पाँचवाँ बिंदु: प्रार्थना ईश्वर की सेवा का सार है और सच्चे विश्वास का सूचक है। जो लोग प्रार्थना करते हैं, वे यह प्रदर्शित करते हैं कि ब्रह्मांड पर शासन करने वाला सभी मामलों से पूरी तरह अवगत है, उनकी प्रार्थनाएँ सुनता है, और उन्हें उनके लक्ष्य प्राप्त करने में सक्षम बनाता है। यह देखते हुए कि यह सत्ता सब कुछ करती है, वे आशा करते हैं कि वह उनकी अपेक्षाओं को पूरा करेगा।

इसलिए विचार करें कि प्रार्थना किस तरह एक व्यापक ईश्वरीय एकता और विश्वास के प्रकाश की खुशी और शुद्धता को दर्शाती है। इसके अर्थ पर विचार करें: कहो: "मेरा रब तुम्हारी प्रार्थना के अलावा तुम्हारे बारे में चिंता नहीं करता," और ईश्वरीय आदेश पर ध्यान दें: तुम्हारे रब ने कहा: "मुझसे प्रार्थना करो और मैं तुम्हें उत्तर दूंगा।" (40:60) यदि वह देने की इच्छा नहीं रखता, तो वह इच्छा को भी नहीं देता।

> तेरी महिमा हो! हमें कोई ज्ञान नहीं, सिवाय उसी के जो तूने हमें सिखाया है। तू सर्वज्ञ, अत्यन्त तत्वदर्शी है।
>
> हे ईश्वर, हमारे गुरु मुहम्मद को अतीत से लेकर भविष्य तक, ईश्वर के ज्ञान में निहित सभी लोगों को, उनके परिवार और साथियों को आशीर्वाद प्रदान करें और उन्हें शांति प्रदान करें। साथ ही, हमें शांति प्रदान करें और हमारी और इस्लाम की रक्षा करें। सारी प्रशंसा ईश्वर की है, जो सारे संसार का स्वामी है।

दूसरा परिशिष्ट: पैगम्बर का स्वर्गारोहण

उसके नाम पर.

ऐसी कोई भी चीज़ नहीं है जो उसकी स्तुति से उसकी महिमा न करती हो।

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

और उसने उसे दूसरी बार परमपिता परमात्मा के कमल-वृक्ष के पास देखा।
सीमा, जिसके निकट निवास का उद्यान है, जब लोटे का वृक्ष

वह उसी से ढका हुआ था जो ढकता है। उसकी आँखें इधर-उधर नहीं मुड़ीं या चली नहीं गईं निस्संदेह उसने अपने रब की एक बड़ी निशानी देखी। (53:13-18)

(हम सुलेमान सेलेबी के मावलिद नबवी के मिराजिया खंड में वर्णित सत्यों को पाँच बिंदुओं में समझाते हैं ।352)

पहला बिंदु: मावलिद नबावी के लेखक सुलेमान सेलेबी ने दर्शाया है बुराक353 से संबंधित एक काव्यात्मक प्रेम कहानी, जिसे स्वर्ग से बाहर लाया गया था। चूँकि यह संत लेखक निश्चित रूप से एक निश्चित परंपरा पर निर्भर करता है, वह निम्नलिखित सत्य का वर्णन कर सकता है: स्थायी दुनिया के निवासी पैगंबर के प्रकाश में गहरी रुचि रखते हैं, क्योंकि केवल यह स्वर्ग को प्रकाश से भर देगा।
मानवता और जिन्न, जो स्वर्ग में प्रत्येक प्रजाति का उपयोग सच्ची खुशी प्राप्त करने के लिए कर सकते हैं।

जैसा कि चौबीसवाँ वचन समझाता है, जैसे कोयल की घोषणा गुलाब के प्रति इसके पौराणिक प्रेम के कारण, प्रत्येक पशु प्रजाति में एक कोकिला जैसा फूल होता है गायक उन पौधों के प्रति अपने प्यार का इज़हार करता है जिनकी उसे बहुत ज़रूरत है। वे उन पौधों की प्रशंसा करें जो ईश्वर के खजाने से अपना भोजन लाते हैं दया। गेब्रियल द्वारा सभी फ़रिश्तों की ओर से पूर्ण प्रेम के साथ पैगंबर की सेवा करना यह दर्शाता है कि क्यों ये प्राणी आदम के प्रति समर्पित और अधीन थे, क्योंकि मुहम्मद सृष्टि का अंतिम कारण हैं, शाश्वत सुख का साधन हैं, और सारे संसार के पालनहार का प्रियतम है। उसी प्रकार सारे संसार के निवासी भी उसी प्रकार हैं। स्वर्ग में, चाहे मनुष्य हो या पशु, सभी रुचि रखते हैं और उससे जुड़े रहते हैं पैगम्बर। यह सब बुराक के प्रति उसके प्रेम के माध्यम से व्यक्त हुआ।

दूसरा बिन्दु: हम मिराजिया में भी पढ़ते हैं कि सर्वशक्तिमान ईश्वर अपने रसूल के प्रति अपने पवित्र प्रेम को इन शब्दों में व्यक्त किया: "मुझे उनसे प्यार हो गया है आप।" क्योंकि यह आवश्यक रूप से विद्यमान प्राणी की पवित्रता का उल्लंघन करता प्रतीत होता है और आवश्यक स्वतंत्रता के अलावा, इसका एक और अर्थ भी होना चाहिए, जो इस प्रकार है: अनिवार्यतः विद्यमान सत्ता में अनंत अनुग्रह, सौंदर्य और पूर्णता है। ब्रह्मांड में समकक्ष, जिनके सभी भाग उनमें हिस्सा लेते हैं, संकेत हैं और उनकी कृपा, सौंदर्य और पूर्णता के सूचक।

चूँकि किसी भी हद तक सुन्दरता और पूर्णता वाले लोग अपनी सुन्दरता से प्रेम करते हैं और पूर्णता, महामहिम में से एक अपनी सुंदरता और पूर्णता से प्यार करता है उसके लिए उचित तरीका है। वह अपनी कृपा (नाम) की चमक से प्यार करता है और सौंदर्य। अपने नामों से प्रेम करते हुए, वह अपनी कला से प्रेम करता है जो उसके नामों की सुंदरता को दर्शाती है-

352 मिराजिया में पैगम्बर के चमत्कारिक रूप से सभी पापों के माध्यम से ईश्वर की उपस्थिति तक पहुंचने का वर्णन है। भौतिक और आध्यात्मिक दुनिया। सुलेमान सेलेबी की मावलिद नबावी एक लंबी कविता है जिसमें पैगंबर के जीवन की कुछ महत्वपूर्ण घटनाओं को दर्शाया गया है। (अनुवाद)

353 बुराक: वह स्वर्गीय प्राणी जिसने पैगम्बर को उनके स्वर्गारोहण के समय उठाया था। (अनुवाद)

परमेश्वर और उसकी सृष्टि जो उसकी सुन्दरता और पूर्णता को प्रतिबिम्बित करने वाले दर्पण हैं।
चूँकि वह उन लोगों से प्रेम करता है जो उसकी सुन्दरता और पूर्णता को प्रतिबिम्बित करते हैं, इसलिए वह उन लोगों से प्रेम करता है जो उसकी सुन्दरता और पूर्णता को प्रतिबिम्बित करते हैं।
उनकी रचनाओं की सुन्दरता उनके नाम की सुन्दरता और पूर्णता को दर्शाती है।
कुरान प्रेम के इन पांच रूपों का संकेत देता है।

चूँकि संदेशवाहक सबसे उत्तम और प्रतिष्ठित सदस्य है
सृजन; उत्साहपूर्ण गायन के माध्यम से दिव्य कला की सराहना और प्रदर्शन
और भगवान के नामों की महिमा; दिव्य नामों के खजाने का खुलासा करता है
कुरान के माध्यम से सुंदरता और पूर्णता; कुरान के माध्यम से पता चलता है कि कैसे
ब्रह्माण्ड के सृजनात्मक और परिचालन नियम इसके निर्माता की पूर्णता की गवाही देते हैं; ईश्वरीय प्रशासन और उसके पोषण के लिए दर्पण के रूप में कार्य करते हैं
वह अपनी सार्वभौमिक सेवा और पूजा के माध्यम से ब्रह्मांड का स्वामी है; और अपने व्यापक स्वरूप के माध्यम से दिव्य नामों की अभिव्यक्ति का एक आदर्श विषय है।
प्रकृति, सर्वशक्तिमान दयालु और सुंदर, महामहिम पैगंबर मुहम्मद से प्यार करते हैं, जो उस कृपा और सौंदर्य का सबसे उत्तम दर्पण है,
उसकी अपनी कृपा और सुन्दरता के प्रति उसका प्रेम।

और वह अपने नामों के प्रति प्रेम के कारण, पैगम्बर से प्रेम करता है।
मुहम्मद, उन नामों का सबसे उज्ज्वल दर्पण, और वे जो उनसे मिलते जुलते हैं
विश्वास और आचरण में समानता की डिग्री के अनुसार उसे पहचानें।

और वह अपनी कला के प्रति प्रेम के कारण पैगम्बर मुहम्मद से प्रेम करता है,
जो उस कला को ब्रह्माण्ड में सर्वाधिक अभिव्यंजक ढंग से प्रदर्शित करता है, और जिसका
ईश्वर के नामों का जोरदार उच्चारण और महिमागान स्वर्ग, पृथ्वी और उसके समुद्रों के निवासियों को आनंदित करता है। वह उन लोगों से भी प्रेम करता है जो उसका अनुसरण करते हैं।

और वह अपने प्राणियों, जीवित प्राणियों (परमेश्वर) से प्रेम करता है, क्योंकि वह उनसे प्रेम करता है।
सबसे उत्तम प्राणी), चेतन प्राणी (सबसे उत्तम जीव), और
मनुष्य (सर्वोत्तम चेतन प्राणी) और सबसे बढ़कर पैगम्बर मुहम्मद, सबसे उत्तम मनुष्य।

और वह अपने प्राणियों के प्रशंसनीय गुणों के प्रति अपने प्रेम के कारण उनसे प्रेम करता है,
पैगम्बर मुहम्मद, प्रशंसनीय गुणों में सर्वोच्च हैं, तथा जो लोग उनकी समानता के अनुसार उनसे मिलते-जुलते हैं।
संक्षेप में, ईश्वर
सर्वशक्तिमान का प्रेम, उसकी करुणा की तरह, पूरे ब्रह्मांड को सम्मिलित करता है।

अंत में, पैगम्बर “ईश्वर के प्रिय” की उपाधि के हकदार हैं
क्योंकि दिव्य प्रेम को आकर्षित करने वाले पाँच पहलुओं में से प्रत्येक में, उसका स्थान बहुत ऊपर है
अन्य सभी प्रिय लोग। कैलाबी ने प्रिय होने के इस सर्वोच्च पद का वर्णन किया
दिव्य अभिव्यक्ति द्वारा: "मुझे तुमसे प्यार हो गया है," क्योंकि यह हमें अनुमति देता है
ऐसे महान सत्य पर विचार करना। यदि यह अभिव्यक्ति अभी भी दिव्य प्रभुत्व के सार के साथ अनुपयुक्त लगती है, तो हम कह सकते हैं: "मैं आपसे प्रसन्न हूँ।"

तीसरा बिन्दु: मिराजिया में वर्णित घटनाएँ और संवाद , यदि
शाब्दिक रूप से लिया जाए तो शुद्ध पवित्र सत्यों के साथ असंगत प्रतीत होता है। लेकिन जब
चिंतन के साधन और उत्कृष्ट, गहन के संकेतक के रूप में देखा जाता है
सत्य, वे हमें विश्वास की विभिन्न सच्चाइयों की याद दिलाते हैं और कुछ ऐसे अर्थों की ओर संकेत करते हैं जिन्हें स्पष्ट रूप
से व्यक्त करना कठिन है। इसलिए यद्यपि हम सत्यों को निकाल नहीं सकते
इससे हमारा हृदय या आत्मा विश्वास का आनन्द और आध्यात्मिक आनन्द प्राप्त कर सकता है।
जिस प्रकार सर्वशक्तिमान ईश्वर के सार और गुणों के समान कोई नहीं है, उसी प्रकार उसका कोई दूसरा स्वरूप नहीं है।
उनके प्रभुत्व के सार और कार्यों में समान। ठीक वैसे ही जैसे उनके गुण हैं
उसका प्रेम अन्य प्राणियों के प्रेम जैसा नहीं है।

संक्षेप में, ऐसे वर्णन आलंकारिक हैं और हमें यह याद दिलाने का काम करते हैं कि
अनिवार्य रूप से विद्यमान सत्ता में प्रेम जैसे कुछ गुण होते हैं। लेकिन ये गुण प्रेम के अनुरूप होते हैं।
उनके आवश्यक अस्तित्व और पवित्रता, और उनकी पूर्ण पूर्णता और
आवश्यक स्वतंत्रता.

चौथा बिंदु: मिराजिया में कहा गया है कि पैगम्बर मुहम्मद ने देखा था
सर्वशक्तिमान ईश्वर 70,000 पर्दों के पीछे से। यह स्थानिक दूरी को व्यक्त करता है,
जबकि अनिवार्यतः विद्यमान सत्ता स्थान और समय से परे है तथा स्वयं से भी अधिक प्रत्येक वस्तु के निकट है।

उत्तर: मैंने ट्वेंटी-फर्स्ट वर्ड में इसका विस्तृत उत्तर दिया है। यहाँ मैं कहता हूँ
केवल इतना ही कि सर्वशक्तिमान ईश्वर हमारे सबसे निकट है, जबकि हम उससे असीम रूप से दूर हैं
हम सूरज से बहुत दूर हैं, फिर भी वह हमारे हाथ में मौजूद आईने के ज़रिए हमारे बहुत करीब है। हमारी आँखों में उसका
प्रतिबिंब उसे हमसे भी ज़्यादा करीब बना देता है।
हम स्वयं भी उसी के प्रकाश और ऊष्मा से युक्त हैं, तथा उसका प्रकाश और ऊष्मा प्रत्येक पारदर्शी वस्तु में प्रकट होती है।
यदि यह एक सजीव चेतन प्राणी होता, तो यह अपना संदेश दूसरों तक पहुंचाता।
हमें अपने दर्पण के माध्यम से देखिये। इसी तरह, याद रखिए कि ईश्वर अद्वितीय है, और वह
क्योंकि "अनन्त सूर्य" के रूप में उनका अस्तित्व आवश्यक है, वे हर चीज़ के स्वयं से भी अधिक निकट हैं। यद्यपि वे
अंतरिक्ष से परे हैं और उन्हें कोई भी आवरण नहीं देता, फिर भी हर चीज़ उनसे असीम रूप से दूर है।

यह तथ्य इस प्रकार कहा गया है: हम उसके गले की नस से भी अधिक निकट हैं (50:16),
बताते हैं कि कैसे ईश्वर के दूत ने अपने सफर में लगभग अनंत दूरी तय की
स्वर्गारोहण (मिराज) और एक पल में वापस आ गया। एक मामले में, उसका
स्वर्गारोहण ईश्वर के मार्ग में आध्यात्मिक उत्थान की उनकी यात्रा है और यह उनकी संतत्व की उपाधि या अंतिम पद है।

जिस प्रकार संत लोग सत्य का अनुभव करने की निश्चितता की स्थिति प्राप्त कर लेते हैं,
40 दिन से 40 वर्ष की अवधि के भीतर, रसूल (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का शासन समाप्त हो जाता है।
संतों) स्वर्गारोहण ने उन्हें परम पवित्रता का अनुभव करने का सर्वोच्च स्तर प्राप्त करने में सक्षम बनाया।

40 मिनट की छोटी सी अवधि में ही विश्वास की सच्चाइयों को समझ लिया।354 वे महिमा के दिव्य सिंहासन पर चढ़े, ईश्वर और परलोक में विश्वास की सच्चाइयों को दृष्टि की निश्चितता के साथ देखा, ईश्वर के "दो धनुष" की दूरी तक निकट पहुँचे, और स्वर्ग की शाश्वत खुशी का अनुभव किया। इस घटना ने उन्हें संतत्व की पदवी चाहने वालों के लिए अपनी आध्यात्मिक यात्रा में आगे बढ़ने का एक व्यापक मार्ग खोलने में सक्षम बनाया।

पाँचवाँ बिंदु: मौलिद नबवी और मिराजिया का पाठ करना एक सुंदर और लाभकारी इस्लामी परंपरा है, सामाजिक मेल-मिलाप का एक सुखद और प्यारा साधन है, और विश्वास की सच्चाइयों को याद रखने का एक सुखद तरीका है। यह हमारे विचारों और भावनाओं को ईश्वर और पैगंबर के प्रति विश्वास और प्रेम की रोशनी की ओर आकर्षित करता है। सर्वशक्तिमान ईश्वर ऐसी परंपराओं को हमेशा कायम रहने दें। वह उन लोगों पर दया करे जो सुलेमान इफेंडी की तरह मौलिद लिखते हैं, और उन्हें जन्नत अल-फ़िरदौस, स्वर्ग के सर्वोच्च निवास में प्रवेश देते हैं । आमीन!

निष्कर्ष में, चूँकि ब्रह्माण्ड के रचयिता ने प्रत्येक प्रजाति में से एक पूर्ण और विशिष्ट व्यक्ति को बनाया है जो उसके गौरव और पूर्णता के साधन के रूप में काम करे, इसलिए उसने अपने महानतम नामों को प्रकट करने के लिए एक सबसे प्रतिष्ठित और पूर्ण व्यक्ति भी बनाया है। चूँकि उसका एक महानतम नाम है, इसलिए एक सबसे पूर्ण व्यक्ति अवश्य होना चाहिए जिस पर वह सभी पूर्णताएँ केंद्रित कर सके और जिसके माध्यम से वह स्वयं को देख सके।

यह पूर्ण व्यक्ति एक जीवित प्राणी (सबसे पूर्ण प्रजाति), एक सचेतन जीवित प्राणी (सबसे पूर्ण) और एक मानव होना चाहिए, क्योंकि केवल मनुष्य ही अनंत प्रगति को महसूस कर सकता है। अंत में, वह पैगंबर मुहम्मद होना चाहिए, क्योंकि समान पद का कोई व्यक्ति कभी नहीं हुआ। 14 शताब्दियों से, वह आधी दुनिया और मानवता के पांचवें हिस्से के आध्यात्मिक शासक रहे हैं, साथ ही पूर्णता के लोगों के लिए सभी प्रकार के सत्य के शिक्षक भी रहे हैं।

मित्र और शत्रु दोनों इस बात पर सहमत हैं कि उनमें सभी प्रशंसनीय गुण उच्चतम स्तर पर हैं। अपने मिशन की शुरुआत में, उन्होंने अकेले ही पूरी दुनिया को चुनौती दी थी।
वह विशिष्ट व्यक्ति निश्चित रूप से पैगम्बर मुहम्मद ही होंगे, जिनमें ये सभी गुण थे और जिन्होंने चमत्कारी अभिव्यक्ति की कुरान लाई, जिसे अनगिनत लोगों द्वारा 14 शताब्दियों से प्रतिदिन पढ़ा जाता है। वे सृष्टि के वृक्ष के बीज और फल हैं। उन पर, उनके परिवार और साथियों पर आशीर्वाद और अस्तित्व में मौजूद प्रजातियों और प्राणियों की संख्या पर शांति हो।

---

[354] यह घटना उनके संतत्व के सबसे बड़े आश्चर्यों में से एक है। वे शारीरिक रूप से ही नहीं, बल्कि अपने हृदय और आत्मा, अपनी बाहरी और आंतरिक इंद्रियों और क्षमताओं के माध्यम से भी स्वर्गारोहित हुए। (ट्र.)

देखें कि इस तरह का धार्मिक समारोह उन विश्वासियों के लिए कितना सुखद, आनंदमय, अच्छा, गौरव-वर्धक और प्रकाश फैलाने वाला है जो पैगंबर को अपना गुरु, नेता और मध्यस्थ मानते हैं। विचार करें कि उनकी आध्यात्मिक प्रगति की शुरुआत और अंत सुनकर और उनके जीवन की महत्वपूर्ण घटनाओं का आध्यात्मिक अर्थ जानकर उन्हें कितना लाभ होता है।[355]

हे ईश्वर, अपने पवित्र प्रियतम और अपने महानतम नाम की खातिर, इस ग्रंथ को प्रकाशित करने वालों और उनके मित्रों के दिलों को ईमान की रोशनी प्राप्त करने की अनुमति दे। उन्हें अपनी कलमों का उपयोग करके कुरान के रहस्यों से संबंधित ग्रंथों को बढ़ाने और बिना किसी विचलन के सही मार्ग पर चलने में सक्षम बना। आमीन।

पवित्र है तू! हमें कोई ज्ञान नहीं, सिवाय उसी के जो तूने हमें सिखाया है। तू सर्वज्ञ, अत्यन्त तत्वदर्शी है।

वह शाश्वत है।

नर्सी ने कहा

* * *

पच्चीसवाँ पत्र

[यद्यपि लेखक का इरादा यह पत्र लिखने का था, परन्तु उसने ऐसा नहीं किया।
हमें इसका कारण नहीं पता.]

---

355 पैगम्बर ने आध्यात्मिक रूप से प्रगति की और ऐसा करना जारी रखा, क्योंकि इस नियम के अनुसार कि "कारण कर्ता के समान है," वह अपने समुदाय के प्रत्येक सदस्य द्वारा किए गए प्रत्येक अच्छे, ईश्वर-स्वीकृत कार्य से लाभान्वित होता है। इस प्रकार वह न्याय के दिन तक प्रगति करना जारी रखता है।

छब्बीसवाँ पत्र

छब्बीसवाँ पत्र

• शैतान और उसके दल के खिलाफ़ कुरान का तर्क • नकारात्मक राष्ट्रवाद और विश्वास और पूजा के विभिन्न मामले

(इस पत्र में चार विषय हैं जिनका एक दूसरे से कोई संबंध नहीं है।)

उसके नाम में, उसकी महिमा हो।

ऐसी कोई भी चीज़ नहीं है जो उसकी स्तुति से उसकी महिमा न करती हो।

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

यदि शैतान की ओर से कोई उकसावा तुम्हें उत्तेजित करे, तो परमेश्वर की शरण में जाओ।
वह सब कुछ सुननेवाला, जाननेवाला है। (7:200)

पहला विषय

पहला विषय शैतान के साथ एक तर्कसंगत चर्चा से संबंधित है उसके एक भ्रामक तर्क का खंडन करने के लिए। चर्चा में, वह और अपराधी अंततः चुप हो जाते हैं और पराजित हो जाते हैं।

11 साल पहले रमज़ान के दिनों में एक दिन मैं इस्तांबुल की बायज़ीद मस्जिद में कुरान की तिलावत सुन रहा था। अचानक मुझे लगा जैसे कोई अदृश्य व्यक्ति मुझसे कह रहा है: "तुम कुरान को बहुत महान और उज्ज्वल मानते हो। इसका निष्पक्ष अध्ययन करो, यानी इसे एक मानवीय रचना मानो-

मैं कुछ पल के लिए बहक गया, लेकिन यह समझते हुए कि वक्ता शैतान था, जो मुझे गुमराह करना चाहता था, मैंने कुरान से मदद मांगी और तुरंत मेरे दिल में एक रोशनी महसूस हुई। इसने मुझे बहस करने के लिए प्रोत्साहित किया:

> वस्तुनिष्ठ तर्क का अर्थ है निष्पक्ष निर्णय, लेकिन आप और आपके शिष्यों द्वारा इस्तेमाल किया गया "निष्पक्ष" निर्णय कुरान के विरोधियों का पक्ष लेना और अस्थायी अविश्वास का पालन करना है। कुरान को एक मानवीय रचना मानना और इस तरह से तर्क करना अविश्वास या झूठ का पक्ष लेना है।

जब उन्होंने जवाब दिया: "तो फिर इसे न तो परमेश्वर का वचन मानो और न ही परमेश्वर का वचन मानो।" "यह एक इंसान का काम है," मैंने जवाब दिया:

> मैं ऐसी स्थिति को उचित नहीं ठहरा सकता। अगर दो लोग किसी वस्तु के बारे में बहस करते हैं, तो उसे किसी तीसरे व्यक्ति के पास जमा कर दिया जाता है, बशर्ते कि दोनों पक्ष एक-दूसरे के उचित निकटता में हों। अगर वे एक-दूसरे के करीब नहीं हैं, तो विवाद सुलझने तक संपत्ति उस व्यक्ति के पास छोड़ दी जाती है जिसके पास पहले से ही संपत्ति है। मामले को बिना निर्णय के नहीं छोड़ा जाता।
>
> उदाहरण के लिए: चूंकि कुरान एक अमूल्य वस्तु है, इसलिए इसके स्वामी (ईश्वर) और इसके दावेदार (मानवता) के बीच अनंत दूरी है। इस मामले को अनिर्धारित नहीं छोड़ा जा सकता, क्योंकि कोई तीसरा पक्ष नहीं है जिसे इसे सौंपा जा सके। इसलिए इसे ईश्वर के "हाथों" में छोड़ दिया जाना चाहिए। दूसरा, इसके प्रकट होने के बाद से, अरबों लोगों ने इसे ईश्वर के वचन के रूप में स्वीकार किया है। इसलिए इसका विरोध करने वालों को यह साबित करना होगा कि यह किसी इंसान का काम है। अगर वे ऐसा नहीं कर सकते, तो इस बात पर बहस करने का कोई औचित्य नहीं है कि यह ईश्वर का वचन है या नहीं।
>
> इसलिए, शैतान, कौन उस शानदार कुरान को ईश्वर के महानतम सिंहासन से हटाने की हिम्मत करेगा, जिस पर वह निर्णायक सबूतों के हजारों "कीलों" के साथ तय किया गया है? हे शैतान, तुम्हारे बावजूद, सत्य और न्याय के लोग इस मुद्दे को न्यायपूर्ण तर्क से निपटते हैं और कुरान में अपने विश्वास को सबसे छोटे निर्णायक प्रमाण के माध्यम से मजबूत करते हैं। जो लोग तुम्हारे और तुम्हारे शिष्यों के द्वारा धोखा खा जाते हैं, उनके लिए अविश्वास के अंधकार से विश्वास के प्रकाश की ओर बढ़ना बहुत कठिन होता है, क्योंकि इसके लिए इन सभी "कीलों" के समान मजबूत प्रमाण की आवश्यकता होती है, एक बार जब इसे मानव का काम मानकर जमीन में गाड़ दिया जाता है। इस प्रकार बहुत से लोग "उद्देश्यपूर्ण" तर्क के उस झूठे ढोंग में धोखा खा जाते हैं और अंततः अपना विश्वास खो देते हैं।

लेकिन शैतान ने जोर देकर कहा: "कुरान मानवीय भाषा से मिलता-जुलता है, क्योंकि यह मानवीय शैली या बातचीत का अनुसरण करता है। अगर यह ईश्वर का वचन होता, तो यह असाधारण होता-

सभी पहलुओं में एकरूपता। जैसे परमेश्वर की कलात्मकता की तुलना मनुष्य से नहीं की जा सकती, वैसे ही उसके वचन को भी मनुष्य की बोली से मेल नहीं खाना चाहिए,” और मैंने जवाब दिया:

> हमारे पैगम्बर एक इंसान थे। उनके चमत्कारों और पैगम्बरी अवस्थाओं को छोड़कर उनके सभी कार्य और व्यवहार, उनकी मानवता से उत्पन्न हुए थे। अन्य सभी मनुष्यों की तरह, वे ईश्वर के सृजनात्मक और संचालन संबंधी नियमों के अधीन और उन पर निर्भर थे। उन्हें सर्दी, दर्द आदि से पीड़ा होती थी। वे अपने सभी कार्यों और व्यवहारों में असाधारण नहीं थे, और इसलिए उन्होंने अपने आचरण के माध्यम से मानवता के लिए एक उदाहरण प्रस्तुत किया। यदि वे असाधारण होते, तो वे जीवन के हर पहलू में पूर्ण मार्गदर्शक या अपने सभी अवस्थाओं में सभी के लिए दया नहीं बन पाते।
>
> इसी तरह, कुरान सचेत प्राणियों का मार्गदर्शन करता है, मानवता और जिन्न को निर्देशित करता है, पूर्णता के लोगों का मार्गदर्शन करता है, और सत्य की खोज करने वाले लोगों को निर्देश देता है। इस प्रकार इसे मानवीय भाषण और बातचीत की शैली का पालन करना चाहिए। मानवता और जिन्न अपनी प्रार्थनाएँ और प्रार्थनाएँ इससे लेते हैं, इसके शब्दों में अपने मामलों के बारे में बात करते हैं, और इससे अपने अच्छे आचरण के सिद्धांत प्राप्त करते हैं। संक्षेप में, प्रत्येक आस्तिक इसे अपने सभी मामलों के लिए अधिकृत संदर्भ के रूप में अपनाता है। इसके विपरीत, यदि यह मूसा द्वारा माउंट सिनाई पर सुने गए ईश्वर के वचन की तरह होता, तो कोई भी इसे सहन नहीं कर सकता था या इसे संदर्भ के रूप में उपयोग नहीं कर सकता था। मूसा, ईश्वर के पाँच महानतम दूतों में से एक, ने उस वचन के केवल कुछ अंश सुने और पूछा: "क्या यह आपकी वाणी है?" ईश्वर ने उत्तर दिया: "मेरे पास सभी भाषाओं और भाषाओं की शक्ति है।"

शैतान ने आगे कहा: "धर्म के नाम पर, बहुत से लोग लगभग उन्हीं विषयों पर चर्चा करते हैं जो कुरान में हैं। और इसलिए एक इंसान ने इसे लिखा हो सकता है।" मैंने कुरान की रोशनी में जवाब दिया:

> पहला: धार्मिक लोग धर्म के प्रति अपने प्रेम और ईश्वर के आदेशों के नाम पर सच बोलते हैं। वे ईश्वर के विरुद्ध झूठ नहीं बोलते या उसकी नकल नहीं करते और कुरान की धमकी के डर से अपनी बात नहीं कहते: ईश्वर के विरुद्ध झूठ बोलने वाले से बड़ा पापी कौन है? (39:32)
>
> दूसरा: लोग केवल लगभग समान स्तर के लोगों की ही नकल कर सकते हैं।
> केवल एक ही प्रजाति के लोग ही एक दूसरे का रूप धारण कर सकते हैं। केवल लगभग एक ही स्तर के लोग ही एक दूसरे के स्तर का दिखावा कर सकते हैं।
> हालाँकि, उस स्थिति में भी, उनके लिए लोगों को लंबे समय तक धोखा देना बहुत मुश्किल है, क्योंकि उनके दिखावे और झूठे प्रदर्शन अंततः समझदार लोगों के सामने उन्हें बेनकाब कर देते हैं। दूसरी ओर, अगर नकली लोग उन लोगों से बहुत कमतर हैं जिनकी वे नकल करने की कोशिश करते हैं (जैसे, इब्न सीना के ज्ञान का दावा करने वाला एक साधारण व्यक्ति, या राजा होने का दिखावा करने वाला एक चरवाहा), तो वे खुद को उपहास का पात्र बना लेंगे।

क्या कोई जुगनू 1000 साल तक खुद को तारा जैसा दिखा सकता है, या कोई मक्खी
क्या कोई निजी व्यक्ति एक साल तक खुद को मोर के रूप में पेश कर सकता है?
एक प्रसिद्ध मार्शल बनना और बिना किसी कारण के लंबे समय तक अपनी कुर्सी पर बने रहना
खुद को बेनकाब कर रहा है? क्या कोई अविश्वासी अपने झूठे प्रदर्शन को बर्दाश्त कर सकता है
सबसे पवित्र व्यक्ति की निष्ठा, सत्यनिष्ठा और जीवन भर के लिए विवेकशील लोगों की उपस्थिति में दृढ़
विश्वास?

यदि ये "अगर" किसी भी बुद्धिमान व्यक्ति के लिए अकल्पनीय या अस्वीकार्य हैं
किसी व्यक्ति के लिए, कुरान को एक मानवीय कृति मानना इसका अर्थ होगा
वह प्रकट पुस्तक, जो सत्य के तारे या सत्य के सूर्य के समान रही है
मुसलमानों के आसमान में सच्चाई की रोशनी बिखेरती परिपूर्णताएँ
सदियों से दुनिया में, एक जालसाज द्वारा गढ़े गए झूठों के संग्रह के रूप में। इसका मतलब यह होगा कि
उसके 23 साल के साथी, साथ ही
अगली 14 शताब्दियों के दौरान उनके अनुयायी सभी इस बात से अनभिज्ञ थे कि
उसकी असली पहचान। यह विश्वास से परे है।

हे शैतान, तू समझदार लोगों को इस तरह धोखा नहीं दे सकता, चाहे वह
यदि आप अपने शैतानी शिल्प में कहीं अधिक उन्नत होते। आप केवल
लोगों को कुरान और पैगम्बर को गलत नजरिए से देखने के लिए गुमराह करना
बहुत अधिक दूरी पर जाकर उन तारों जैसे पिंडों को जुगनू के रूप में देखना।

तीसरा: इसे मानवीय कार्य कहने का अर्थ है कि एक अत्यंत उज्ज्वल, सच्चा,
मानव जगत का सर्वांगीण और व्यापक मापदंड, चमत्कारी व्याख्या और जगत का कल्याण करने वाला,
एक अशिक्षित मनुष्य की उपज है। इसके अलावा, उसका दिखावा और जालसाजी भी सामने आ चुकी है

14 शताब्दियों से ईमानदारी, निष्ठा और इरादे की पवित्रता के रूप में
यहाँ तक कि महान बुद्धिजीवियों और महान प्रतिभाशाली लोगों के लिए भी यह अकल्पनीय है।

इसके अलावा, इसे स्वीकार करने का अर्थ होगा: एक सबसे शानदार
और एक सद्गुणी व्यक्ति जिसने अपना पूरा जीवन दृढ़ विश्वास, सच्चाई, विश्वसनीयता, ईमानदारी, गंभीरता
का प्रदर्शन और प्रचार करने में बिताया,
और अपने सभी राज्यों, शब्दों और कार्यों में ईमानदारी, साथ ही साथ उठाना
कई सत्यवादी व्यक्ति, एक मतलबी और बदनाम बदमाश था, पूरी तरह से
निष्ठाहीन, और अविश्वास में सबसे आगे। शैतान भी शर्मिंदा होगा
इतने बड़े झूठ की कल्पना करना।

तीसरा कोई विकल्प नहीं है। अगर कुरान एक मानवीय रचना होती,
यह इतना निकृष्ट होगा कि यह केवल अंधविश्वास का स्रोत बन जाएगा।
इसके लेखक का दर्जा भी पूर्णता के स्रोत से गिरकर सबसे बड़े धोखेबाज़ का हो जाएगा। इस प्रकार वह
ईश्वर का दूत नहीं हो सकता,
क्योंकि जो परमेश्वर के नाम पर झूठ बोलता है, वह सबसे बुरा व्यक्ति है। ऐसी धारणा
यह कल्पना करना उतना ही अकल्पनीय है जितना कि यह कल्पना करना कि एक मक्खी में मोर के गुण
हो सकते हैं। कोई भी सामान्य व्यक्ति ऐसी कल्पना को संभव नहीं मान सकता।

चौथा: कुरान मुस्लिम समुदाय को निर्देश देता है, जिसमें इतिहास के कुछ महानतम और सबसे
शानदार लोग शामिल हैं।
कुरान ने उन्हें इस दुनिया और अगली दुनिया पर विजय पाने में सक्षम बनाया है;
उन्हें भौतिक और आध्यात्मिक रूप से सुसज्जित किया है; और उन्हें निर्देश दिया है और
उन्हें सभी तर्कसंगत, नैतिक और आध्यात्मिक मामलों में शिक्षित किया

इसने उन्हें शुद्ध किया है और प्रत्येक शारीरिक अंग, इन्द्रिय और क्षमता को उसके सबसे उचित स्थान पर उपयोग किया है।

पैगंबर मुहम्मद, जो ईश्वर से कुरान लेकर आए, ने अपने पूरे जीवन में अपने व्यवहार और कार्यों में ईश्वर के नियमों का पालन किया।
उन्होंने अपने जीवन भर अपने कार्यों और ईमानदारी से सत्य के सिद्धांतों का पालन करके हमें शिक्षा दी।
उन्होंने हमें सत्य के मार्ग दिखाए और स्थापित किए
अपने ईमानदार और उचित व्यवहार के माध्यम से सच्चे मार्गदर्शन और कल्याण का
इसके अलावा, जैसा कि उनके जीवन और अच्छे आचरण से पता चलता है, वे सबसे महान व्यक्ति हैं।
ईश्वर के विषय में सबसे अधिक ज्ञान रखने वाला तथा उसकी सजा से सबसे अधिक भयभीत रहने वाला।
उन्होंने आधी पृथ्वी पर अपनी पूर्णता का शानदार शासन स्थापित किया और
मानवता का पांचवां हिस्सा। वह वास्तव में अपने प्रसिद्ध के माध्यम से बन गया
एक पैगंबर, राजनेता, कमांडर, आध्यात्मिक के रूप में शिष्टाचार और कार्य
और बौद्धिक मार्गदर्शक, पिता, पति, मित्र, इत्यादि, गौरव
मानवता और सृष्टि का।

यदि आप कुरान को मानव कृति मानते हैं तो यह कोई मानवीय कृति नहीं रह जाएगी।
एक झूठे व्यक्ति की बेकार की मनगढ़ंत कहानी से बेहतर है जो न तो पहचान पाया और न ही डर पाया
हे शैतान, कोई भी बुद्धिमान व्यक्ति ऐसे धोखे से नहीं बच सकता।
अकल्पनीय अनुमान, भले ही आप कहीं अधिक शक्तिशाली हों
तुम्हारी शैतानी चालें.

शैतान ने जवाब दिया: "मैं धोखा देने से कैसे चूक सकता हूँ? मैंने पहले ही अधिकांश को धोखा दिया है लोगों को, जिनमें तर्कसंगत विचार के अग्रणी लोग भी शामिल हैं, प्रभावित किया और उन्हें दोनों बातों को अस्वीकार करने के लिए प्रेरित किया कुरान और मुहम्मद।" मैंने कहा:

प्रथम: जब बहुत दूरी से देखा जाए तो सबसे बड़ी चीज़ भी
एक छोटे कण की तरह दिखते हैं; एक तारे को मोमबत्ती माना जा सकता है।

दूसरा: जब सतही तौर पर और एक तरह से कमजोर माना जाता है
व्याकुलता और भ्रम के कारण, एक अकल्पनीय चीज़ भी कल्पनीय लग सकती है। एक बार एक बूढ़ा
आदमी क्षितिज को स्कैन कर रहा था ताकि कोई नज़ारा देख सके
नए अर्धचंद्र का। उसकी भौंह से एक सफेद बाल मुड़ा हुआ था
उसकी आँख के ऊपर से होकर वह उसकी दृष्टि में आ गया। इस प्रकार वह उससे धोखा खा गया
भ्रम में पड़कर उसने कहा: "मैंने अर्धचन्द्र देखा है।"

तीसरा: इनकार, गैर-पुष्टि से भिन्न है, जो एक प्रकार का इनकार है।
उदासीनता और निर्णय की कमी। इस प्रकार कई अकल्पनीय बातें
गैर-पुष्टि में अनजाने में मौजूद हो सकता है। इनकार एक निर्णय है
और गैर-अस्तित्व की पुष्टि करने का एक साधन जो आमतौर पर इसके माध्यम से पहुंचा जाता है
तर्क। आप जैसा शैतान लोगों को सही निर्णय लेने से वंचित करता है और उन्हें गलत राह पर ले जाता है
उन्हें इनकार करने के लिए। आप असावधानी, विचलन, कुतर्क, हठ का उपयोग करते हैं,
जनोन्माद, अहंकारी श्रेष्ठता, दंभ, प्रलोभन, और कारण बनाने की प्रथा
लोगों को असत्य को सत्य और अकल्पनीय को कल्पनीय समझना सिखाएं।
इस प्रकार आपने कई लोगों का नेतृत्व किया है (दिखने में मानव लेकिन शायद
(सार में नहीं) अविश्वास की ओर ले जाता है, जिसके लिए कई अकल्पनीय चीजों को स्वीकार करना आवश्यक है।

चौथा: कुरान शुद्ध सत्य और अतुलनीय मूल्य की पुस्तक है, यह सत्य और पवित्रता के संतों और विद्वानों के लिए एक मार्गदर्शक है। यह सभी को आमंत्रित करता है
समय या स्थान की परवाह किए बिना लोग, साथ ही पूर्णता की चाह रखने वाले लोग,
सत्य और सत्य से प्रेम, सत्यनिष्ठा और निष्ठा, विश्वसनीयता और भरोसे की भावना। यह इस्लाम के माध्यम से दोनों दुनिया में खुशी सुनिश्चित करता है
विश्वासों और मौलिक सिद्धांतों के स्तंभ। पैगंबर सबसे महान हैं
विश्वसनीय प्राणी, विश्वास और दृढ़ विश्वास में सबसे आगे और दृढ़।
इसकी पुष्टि इस्लाम और उसके कानून से होती है, जिसका उन्होंने प्रचार किया और दिखाया
उनकी स्वीकृत धर्मपरायणता और ईमानदारी से की गई पूजा उनके जीवन भर में प्रकट हुई, जैसा कि उनके प्रशंसनीय गुणों की आवश्यकता है और सभी द्वारा इसकी पुष्टि की गई है
सत्य और पूर्णता के लोग.

इसे देखते हुए, कुरान को एक मानवीय कृति मानने का अर्थ यह होगा कि
यह भ्रांतियों और झूठों का संग्रह है, और यह कि पैगम्बर एक अविश्वसनीय, अविश्वासी झूठा है जिसे ईश्वर का कोई डर नहीं है। यह अनुमान सबसे अधिक गलत है
खतरनाक किस्म का अविश्वास, भटकाव और गलत काम। यहाँ तक कि शैतान भी
और सोफिस्टों को ऐसी चीजों की कल्पना करने में शर्म आएगी।

संक्षेप में: उन्नीसवें पत्र में कहा गया है कि जिनकी शक्ति
सुनने से उन्हें कुरान की चमत्कारिकता की सराहना करने का मौका मिलता है और वे स्वीकार करते हैं कि यह अन्य सभी पुस्तकों की तरह ही नहीं है।
सुना है। इस प्रकार यह अन्य सभी पुस्तकों से या तो निम्न है या श्रेष्ठ है।
शैतान भी पहले वाले को नहीं मानेगा, हमें यह स्वीकार करना चाहिए कि यह श्रेष्ठ है और इसलिए चमत्कार है। ऐसा होने पर, दो बातों के आधार पर
द्वंद्ववाद और निरर्थकता के निर्णायक प्रमाण, हम खुले तौर पर
घोषित करें:

ऐ शैतान और तेरे चेलों! कुरान या तो ईश्वर का वचन है जो उसके सर्वोच्च सिंहासन और सर्वोच्च नाम के माध्यम से व्यक्त किया गया है, या फिर एक अविश्वासी की रचना है जो न तो ईश्वर को पहचानता है और न ही उससे डरता है।
हे शैतान, तुम कभी नहीं कह सकते कि यह दूसरा विकल्प सत्य है।
इस प्रकार कुरान, अनिवार्यतः और निस्संदेह, परमेश्वर का वचन है।
ब्रह्माण्ड के रचयिता, क्योंकि कोई तीसरा विकल्प नहीं है,
जैसा कि ऊपर बताया गया है।

इसी तरह मुहम्मद या तो ईश्वर के दूत हैं या फिर ईश्वर के सच्चे सन्देशवाहक।
सबसे उत्तम संदेशवाहक और सभी प्राणियों से श्रेष्ठ, या एक मनुष्य
अविश्वास और निम्नतम प्रकृति का, क्योंकि उसने ईश्वर के विरुद्ध झूठ बोला और न तो उसे और न ही उसकी सज़ा को पहचाना।[356] यहाँ तक कि यूरोपीय भी नहीं
अन्य देशों के दार्शनिक या पाखंडी, जिनमें आप महान स्थान रखते हैं
ऐ शैतान, मैंने ऐसी बात कही है। क्योंकि कोई भी इस पर ध्यान नहीं देगा और
इस तरह के आरोप को सबसे भ्रष्ट दार्शनिक और दार्शनिक भी स्वीकार नहीं कर सकते।

---

[356] चूँकि कुरान में अविश्वासियों के अविश्वास और बुरे कर्मों का खंडन करने के लिए ऐसी धारणा का उल्लेख है भाषा, मुझे इसका उल्लेख करना उचित लगा, यद्यपि भय और घृणा के साथ, केवल एक के रूप में यह दर्शाना सबसे असंभव अनुमान है कि ऐसे दावे कितने निराधार और झूठे हैं।

बेईमान पाखंडी लोग यह स्वीकार करने के लिए बाध्य हैं कि मुहम्मद बहुत बुद्धिमान व्यक्ति थे और उनका आचरण बहुत अच्छा था।

अंत में, केवल दो विकल्प हैं। कुरान की तरह, दूसरा विकल्प अकल्पनीय और अस्वीकार्य है। इसलिए वह स्वयंसिद्ध और अनिवार्य रूप से ईश्वर का रसूल है, सबसे उत्तम रसूल है, और सभी प्राणियों से श्रेष्ठ है। यह सत्य है, चाहे आप या आपके अनुयायी इसे पसंद करें या नहीं। उस पर फ़रिश्तों, मनुष्यों और जिन्नों की संख्या के लिए आशीर्वाद और शांति हो।

शैतान की दूसरी, महत्वहीन आपत्ति

जब मैं यह पाठ कर रहा था:

> वह एक शब्द भी नहीं बोलता, लेकिन उसके पास एक पर्यवेक्षक तैयार रहता है। और मृत्यु की पीड़ा वास्तव में आती है; यही वह है जिससे तुम बचते थे। और तुरही बजाई जाती है; वह खतरे का दिन है। और प्रत्येक प्राणी आता है, उसके साथ एक चालक और एक गवाह आता है। "तुम इस बात से बेखबर थे। अब हमने तुम्हारे ऊपर से तुम्हारा पर्दा हटा दिया है, इसलिए आज तुम्हारी दृष्टि चुभ रही है।" और उसका साथी कहता है: "तुम दोनों, प्रत्येक विद्रोही कृतघ्न को नरक में डाल दो।" (50:18-24)

शैतान ने कहा: "कुरान की वाक्पटुता मुख्य रूप से इसकी धाराप्रवाह शैली और बोधगम्य अभिव्यक्ति में पाई जाती है। फिर भी, जहाँ इन आयतों में प्रवाह और सुसंगतता है, वहीं बहुत बड़े अंतराल भी हैं, क्योंकि वे मृत्यु की पीड़ा से लेकर दुनिया के विनाश तक, तुरही बजाने से लेकर हिसाब के अंत तक और वहाँ से पापियों को नरक में फेंकने तक पहुँचती हैं।"

मैंने जवाब में निम्नलिखित बातें कहीं:

कुरान की चमत्कारिकता का सबसे बुनियादी तत्व इसकी वाक्पटुता और सटीकता है। इसमें इसके इतने उदाहरण हैं कि आलोचक भी आश्चर्य और प्रशंसा से भर गए हैं। उदाहरण के लिए, वाक्पटु लोगों ने पहले सजदा किया है: और कहा गया: हे धरती। अपना पानी निगल जा और हे आकाश, (अपनी बारिश बंद कर दे)। और पानी कम हो गया। और आज्ञा पूरी हुई, और जहाज़ अल-जूदी में स्थापित हुआ, और कहा गया: दुष्टों के लोगों को दूर करो (11:44), जो कुछ ही वाक्यों में जलप्रलय की शक्ति को इतनी सटीकता और चमत्कारिक ढंग से बताता है।

समूद ने अपने विद्रोही गर्व में इनकार किया, जब उनमें से सबसे दुखी लोग उठे; तब ईश्वर के रसूल (सलीह) ने उनसे कहा: "ईश्वर की ऊँटनी को पानी पिलाओ।" लेकिन उन्होंने उसे झुठलाया, और उसे ज़बह कर दिया, इसलिए उनके रब ने उनके पाप के लिए उन्हें दंडित किया और उन्हें बराबर कर दिया। वह इसके परिणाम से नहीं डरता (91:11-15), कुरान समूद की कहानी और भाग्य के लोगों को सबसे अधिक समझने योग्य तरीके से सटीक और स्पष्ट रूप से बताता है।

और ज़ु अल-नून, जब वह क्रोध में निकला और उसे विश्वास हो गया
कि हम उसे तंग न करेंगे। फिर उसने अँधेरे में पुकारा: "तेरे सिवा कोई पूज्य नहीं। तू पवित्र है। मैं अत्याचारी हूँ।" (21:87) बहुत कुछ कहना बाकी रह गया है। हम उसे तंग न करेंगे।

और उसने अंधेरे की परतों में आवाज़ लगाई। वे कुछ शब्द फिर से बताते हैं
पैगम्बर यूनुस (योना) की कहानी के मुख्य बिंदुओं को इस तरह से प्रस्तुत किया गया है कि न तो इससे न तो समझ कम होती है और न ही वाक्पटुता पर असर पड़ता है। जो सीधे तौर पर नहीं बताया जाता, उसे व्यक्ति की समझ पर छोड़ दिया जाता है।

सूरा यूसुफ़ में भी सात या आठ वाक्य छोड़ दिए गए हैं।
अतः मुझे भेज दे (आयत 45 का अंत) और हे सच्चे यूसुफ़ को (आयत 46 की शुरुआत)। इससे न तो समझ पर असर पड़ता है और न ही समझ पर कोई असर पड़ता है
कुरान की वाक्पटुता.

कुरान में चमत्कारी सटीकता के कई और उदाहरण हैं। प्रश्नगत आयतों में दिया गया सटीक विवरण

सूरा कफ़ उन्हें और भी खूबसूरत और चमत्कारी बनाता है।
अविश्वासियों के भविष्य के लिए, जो इतना लंबा है कि उसका एक दिन बराबर है
५०,००० सांसारिक वर्षों में, वे उन भयावह घटनाओं की ओर ध्यान आकर्षित करते हैं जो
वे हमारे दिमाग में उन सभी घटनाओं की पूरी अवधि को ले आते हैं
बिजली की चमक की तरह उथल-पुथल, जिससे यह एक में संकुचित हो जाता है
इस पृष्ठ को इस प्रकार से पढ़ें कि हम इस पर विचार कर सकें।
और जब क़ुरआन पढ़ा जाए तो कान लगाओ और ध्यान दो, ताकि तुम पर दया की जाए (7:204)

फिर मैंने शैतान से पूछा कि क्या उसे कोई और आपत्ति है, और उसने जवाब दिया: "मुझे कोई आपत्ति नहीं है उन सच्चाइयों का विरोध करो। लेकिन बहुत से मूर्ख लोग मेरा अनुसरण करते हैं, और बहुत से शैतान मानव रूप मेरी सहायता करें। कई दार्शनिक फिरौन की तरह ही अभिमानी हैं। मैं उन्हें ऐसी बातें सिखाओ जो उनके घमंड और स्वार्थ को बढ़ाती हैं। वे द वर्ड्स के प्रकाशन को रोकेंगे , और इसलिए मैं कभी भी आपके आगे नहीं झुकूंगा।”

तेरी महिमा हो। हमें कोई ज्ञान नहीं सिवाय उसके जो तूने सिखाया है
तू सर्वज्ञ, तत्वदर्शी है।

दूसरा विषय

[चूँकि यह विषय इस बात से संबंधित है कि सैद नूरसी को असहजता क्यों महसूस होती है जब उसका दो शिष्यों ने उनकी बहुत विस्तार से प्रशंसा की है, और इसलिए यह व्यक्तिगत प्रकृति का है, यह अनुवाद में शामिल नहीं है।]

तीसरा विषय

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

ऐ लोगो! हमने तुम्हें मर्द और औरत पैदा किया और तुम्हें कौमें बनायीं
और क़बीलों को भी, ताकि तुम एक दूसरे को पहचान सको... (49:13)

दूसरे शब्दों में, लोगों को सामाजिक रिश्ते बनाने चाहिए और एक-दूसरे की मदद करनी चाहिए। इस विषय में सात बातें शामिल हैं।

पहला मुद्दा: मैं राष्ट्रवाद के बारे में लिखने के लिए बाध्य महसूस करता हूँ (
कुरान की सेवा करने और अनुचित बातों का खंडन करने के लिए नस्लवाद या अंधराष्ट्रवाद का एक रूप अपनाया जाता है।
हमले। मैं न्यू सैड की शैली के अनुसार ऐसा नहीं करना चाहता, जो
सामाजिक जीवन से अलग रहना पसंद करते हैं, लेकिन ओल्ड सईद की शैली में, जो इस्लामी सामाजिक जीवन से जुड़े थे, इस आयत में व्यक्त किए गए उच्च सत्य के लिए
सामाजिक जीवन से संबंधित है.

दूसरा विषय: मैं पारस्परिक ज्ञान और सहायता के इस सिद्धांत की व्याख्या करता हूँ
इस प्रकार: एक सेना को सेना कोर, रेजिमेंट, बटालियन, स्क्वाड्रन में विभाजित किया जाता है
या कम्पनियाँ, और दस्ते। इससे प्रत्येक सैनिक को अपने कर्तव्य निर्धारित करने का अवसर मिलता है
और समग्र रूप से सेना के साथ संबंध, सेना द्वारा सामान्य कार्य करना
पारस्परिक सहायता के सिद्धांत के अनुसार कार्य करना, और राष्ट्र को
संरक्षित। इस विभाजन का मतलब यह नहीं है कि भागों को प्रतिस्पर्धा करनी चाहिए,
एक दूसरे के प्रति शत्रुता या विरोध महसूस करना।

इस सादृश्य को आगे बढ़ाते हुए, मुस्लिम राष्ट्र लोगों और जनजातियों में विभाजित एक बड़ी सेना जैसा दिखता है।
हालाँकि, उनके कई सामान्य कारक और
मूल्य (जैसे, उनका निर्माता एक है, उनका प्रदाता एक है, उनका पैगंबर एक है,
उनकी किताब एक है, उनका देश एक है, उनकी दिशा या केंद्र एक है
जिसे वे पूजा में बदल देते हैं वह एक है) एकता की आवश्यकता है। चूंकि ऐसे सामान्य कारकों या मूल्यों के लिए एकता और आपसी प्रेम की आवश्यकता होती है, इसलिए इस विभाजन का उद्देश्य है
आपसी परिचय और सहायता।

तीसरा मामला: राष्ट्रवाद या जातीय मतभेद उजागर हो गए हैं

इस सदी में, विशेष रूप से कुटिल यूरोपीय अधिकारियों द्वारा
फूट डालो और राज करो का प्रसिद्ध सिद्धांत। इस कपटी हमले का लक्ष्य
मुस्लिम दुनिया है।

राष्ट्रवाद कुछ संतुष्टि देता है और आत्म-गौरव को प्रोत्साहित करता है, और साथ ही
एक शक्ति पैदा करता है। इसे देखते हुए, आप उन लोगों को प्रेरित नहीं कर सकते जो सक्रिय रूप से काम करते हैं
सामाजिक और राजनीतिक मामलों में भाग लेने से इनकार करना चाहिए। हालाँकि, लोगों को यह समझना चाहिए कि राष्ट्रवाद दो तरह का होता है: नकारात्मक और सकारात्मक। पहला
जो अशुभ और हानिकारक है, वह दूसरों को निगलने से पोषित होता है और
दूसरों के खिलाफ दुश्मनी के माध्यम से कायम रखा गया। चूंकि इस तरह का राष्ट्रवाद आपसी दुश्मनी और कलह का कारण बनता है, इसलिए कुरान और पैगंबर इसे अस्वीकार करते हैं: "इस्लाम ने हमेशा से ही राष्ट्रवाद को बढ़ावा दिया है।
अज्ञान युग की राष्ट्रीय (आदिवासी) कट्टरता को निषिद्ध किया गया।"357

कुरान इस बिंदु पर स्पष्ट रूप से कहता है:

357 विभिन्न संस्करणों के लिए, बुखारी, "अहकम," 4 देखें; तिर्मिधि, "जिहाद,"

जब गैर-विश्वासी अपने दिलों में कट्टरता स्थापित करते हैं, तो जनजातीयता
अज्ञानता के युग में, ईश्वर ने अपनी शांति और आश्वासन भेजा
अपने रसूल और ईमान वालों को अल्लाह की बात बता दी और उन्हें अल्लाह की बात बता दी।
आत्म-संयम और ईश्वर-चेतना जिस पर उनका बेहतर अधिकार है
और वे उसी के हक़दार हैं। अल्लाह हर चीज़ को जानता है। (48:26)

पवित्र और सकारात्मक इस्लामी राष्ट्रवाद में कोई नकारात्मक पक्षपातपूर्ण राष्ट्रवाद नहीं है। 1 अरब से अधिक सदस्यों वाला कौन सा राज्य है,
क्या मुस्लिम राज्य के इतने सारे शाश्वत भाई-बहन हैं?

नकारात्मक राष्ट्रवाद के पहले के प्रकोपों ने इस्लामी एकता को नुकसान पहुंचाया है
और मुस्लिम दुनिया। उदाहरण के लिए, उमय्यदों ने अपने शासन में अरबों को प्राथमिकता दी
सरकार और इसलिए दोनों ने अन्य [गैर-अरब] मुसलमानों को नाराज किया और पीड़ित हुए
कई दुर्भाग्य। इस सदी के दौरान यूरोपीय राष्ट्र अत्यधिक राष्ट्रवादी हो गए, जिसने लंबे समय से चली आ रही
अशुभ फ्रांसीसी-जर्मनी की भावना को प्रज्वलित कर दिया
दुश्मनी और बेहद विनाशकारी प्रथम विश्व युद्ध का कारण बना। और हमारे अपने देश में भी
इतिहास में, जिस तरह बेबीलोन को आंतरिक जनजातीय विभाजन द्वारा नष्ट कर दिया गया था, ओटोमन राज्य के दूसरे संवैधानिक काल की शुरुआत [1908 में घोषित]
कई अल्पसंख्यक-आधारित समूहों या समाजों का गठन देखा गया, विशेष रूप से
यूनानियों और अर्मेनियाई लोगों के बीच। परिणामस्वरूप ओटोमन राज्य का क्या हुआ
नकारात्मक राष्ट्रवाद के नुकसान को दर्शाता है।

मुस्लिम लोगों या समुदायों के बीच राष्ट्रीय या जनजातीय संघर्ष इतना बड़ा दुर्भाग्य है कि इससे बचने के लिए सांप के डसने जैसा है।
एक मच्छर। ऐसे समय में जब यूरोपीय शक्तियां विशाल ड्रेगन जैसी दिखती हैं
अपनी अतृप्त लालच को संतुष्ट करने के लिए हम पर हमला करने की प्रतीक्षा कर रहे हैं, हमारी राष्ट्रीय अखंडता
पूर्वी शहरों में रहने वाले हमारे नागरिकों और सहधर्मियों के खिलाफ राष्ट्रीय मतभेदों के कारण शत्रुता को बढ़ावा देने और पक्ष लेने से नुकसान होता है
हमारे दक्षिणी पड़ोसियों के बीच.

हमारे दक्षिणी सहधर्मियों के प्रति शत्रुता का कोई कारण नहीं है,
जहाँ कुरान की रोशनी और इस्लाम की चमक हम तक आई, क्योंकि ऐसे राष्ट्रीय संघर्षों से केवल यूरोप को ही लाभ होता है। साथ ही, ऐसी भावनाएँ यूरोप के प्रति शत्रुता का कारण बन सकती हैं।
कुरान और इस्लाम, जिसका मतलब है सभी मुसलमानों के सांसारिक और पारलौकिक जीवन के साथ
विश्वासघात। इस बहाने से इन दो दुनियाओं की आधारशिलाओं को नष्ट करना
राष्ट्रवाद या देशभक्ति के माध्यम से सामाजिक जीवन की सेवा करना मूर्खता है।

चौथा मुद्दा: दूसरे प्रकार का राष्ट्रवाद सकारात्मक है और सामाजिक जीवन की अंतर्निहित आवश्यकताओं से उत्पन्न होकर, पारस्परिक सहायता और एकजुटता को जन्म देता है, एक लाभकारी शक्ति का निर्माण करता है और इस्लामी एकता को मजबूत करता है। इसका लक्ष्य
इस्लाम की सेवा और सुरक्षा करनी चाहिए, इस्लाम की जगह नहीं लेनी चाहिए, ताकि वांछित एकता बनी रहे
और इस्लाम द्वारा स्थापित कई गुना है और मध्यवर्ती दोनों में गिना जाता है

और शाश्वत संसार। चूँकि राष्ट्रवादी एकता इस्लामी एकता के एक पहलू जितनी ही मजबूत है, इसलिए बाद वाले को पहले वाले से बदलने की कोशिश करना उतना ही मूर्खतापूर्ण है जितना कि किसी किले में हीरे को उसके पत्थरों से बदलना।

कुरान के अनुयायियों! आपकी भूमि ने 1,000 वर्षों तक, अब्बासियों के समय से, तीन महाद्वीपों पर कुरान का झंडा लहराया है और दुनिया को चुनौती दी है। आपने अपनी राष्ट्रीय भावना और एकजुटता को इस्लाम की रक्षा के लिए एक गढ़ बनाया है और दुनिया के भयानक हमलों को पीछे धकेलते हुए, इस अर्थ में शामिल हैं: ईश्वर ऐसे लोगों को लाएगा जिन्हें वह प्यार करता है, और जो उससे प्यार करते हैं, विश्वासियों के प्रति विनम्र और अविश्वासियों के प्रति गौरवशाली, उसके मार्ग पर प्रयास करते हैं और किसी भी निंदा करने वाले की निंदा से नहीं डरते (5:24)।

तुम्हें यूरोप और पश्चिमी पाखण्डियों के बहकावे में आने से बचना चाहिए, जो इस आयत के पहले भाग के अर्थ में सम्मिलित हैं: ऐ ईमान वालो! तुममें से जो कोई अपने धर्म से फिरेगा...

हमें यह भी याद रखना चाहिए कि दुनिया में सबसे ज़्यादा मुस्लिम आबादी तुर्कों की है। सभी तुर्की लोग, किसी भी अन्य लोगों से अलग और चाहे वे कहीं भी हों, मुस्लिम हैं। कुछ तुर्की समुदाय, जैसे कि हंगरी के लोग जिन्होंने इस्लाम स्वीकार नहीं किया, अपनी तुर्की पहचान खो चुके हैं।

ऐ तुर्की लोगों! किसी और से ज़्यादा, तुम्हें सावधान रहना चाहिए! तुम्हारी राष्ट्रीयता इस्लाम से मिली हुई है और उससे अविभाज्य है। अगर तुम उन्हें अलग करोगे, तो तुम खो जाओगे! तुम्हारी सारी पिछली उपलब्धियाँ गर्व का स्रोत हैं, इस्लाम की सेवा का एक सम्मानजनक रिकॉर्ड है। कोई भी ताकत इस रिकॉर्ड को मिटा नहीं सकती, इसलिए इसे अपने दिल से मत मिटाओ!

पांचवां मुद्दा: एशिया के जागरूक लोग358 यूरोपीय राष्ट्रवाद की शैली का अंधानुकरण करते हैं और इसके लिए कई पवित्र चीजों का त्याग करते हैं।
लेकिन एक ही कपड़े से बना सूट हर किसी को फिट नहीं हो सकता, और एक बुजुर्ग प्रार्थना नेता टैंगो नर्तक के डिजाइन किए गए कपड़े नहीं पहनता। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को प्रामाणिकता के लिए प्रयास करना चाहिए। यदि यूरोप एक बाजार या बैरक की तरह है, तो एशिया एक कृषि योग्य क्षेत्र या मस्जिद है। एक व्यापारी नृत्य करने जा सकता है, लेकिन एक किसान नहीं जा सकता। एक बैरक की स्थिति एक मस्जिद की स्थिति से भिन्न होती है।

अधिकांश पैगंबर एशिया में प्रकट हुए, जबकि दार्शनिक आमतौर पर यूरोप में उभरे। यह शाश्वत नियति का संकेत है कि एशियाई जीवन शक्ति और प्रगति धर्म और आध्यात्मिकता के माध्यम से संभव है। दर्शन और विज्ञान को धर्म का समर्थन करना चाहिए - न कि उसका स्थान लेना चाहिए। धर्म के प्रति उदासीनता एक गंभीर गलती है।

---

[358] सईद नूरसी ने एशिया शब्द का प्रयोग उन मुस्लिम देशों के लिए किया है जिन्हें हम आज मध्य पूर्व, मध्य एशिया, अफ्रीका और सुदूर पूर्व के नाम से जानते हैं। (संपादक)

यह मत भूलिए कि यूरोप अपने धर्म के प्रति समर्पित है, और विल्सन, लॉयड जॉर्ज और वेनिज़ेलोस जैसे पश्चिमी नेता भी अपने धर्म के प्रति उतने ही कट्टर हैं।

एक पुजारी के रूप में अपने धर्म का पालन करें.359

इस्लाम की ईसाई धर्म से तुलना करना गलत है।
जब चर्च द्वारा किए गए तीन शताब्दियों के युद्धों के बाद इसने अपने धर्म में सुधार किया
और निरंकुश शासकों और पुजारियों द्वारा धर्म का दुरुपयोग, जिन्होंने देश को कुचलने की कोशिश की
जनता और बुद्धिजीवियों [यथास्थिति को बनाए रखने के लिए, जो उनके पक्ष में थी
लेकिन इस्लाम में धार्मिक भक्ति ने केवल एक आंतरिक युद्ध का कारण बना।360
इसके अलावा, मुसलमानों ने अपने समकालीनों की तुलना में कहीं अधिक प्रगति महसूस की
जब भी उन्होंने इस्लाम का ईमानदारी से पालन किया, जैसा कि इस्लामिक स्टेट में देखा गया है
अन्दलुसिया, पुनर्जागरण यूरोप का सबसे बड़ा शिक्षक.361 जब भी मुसलमान
धर्म के प्रति उदासीन रहे हैं, उनका पतन हुआ है और वे दयनीय स्थिति में पहुंच गए हैं
राज्य।

करुणा के अपने अनेक सिद्धांतों के माध्यम से, जैसे कि
ज़कात का आदेश देकर और ब्याज पर रोक लगाकर, इस्लाम जनता की रक्षा करता है।
इसकी अनेक चेतावनियों के माध्यम से, जैसे: क्या तुम अपनी बुद्धि का प्रयोग नहीं करोगे?
क्या वे चिंतन और मनन नहीं करते? क्या वे चिंतन नहीं करते? यह बुद्धि और विज्ञान को अपने सत्य के प्रमाण के रूप में मानता है, और वैज्ञानिकों को अनुसंधान करने के लिए प्रोत्साहित करता है और उनकी रक्षा करता है। चूंकि यह जनता और वैज्ञानिकों का गढ़ है, इसलिए किसी को भी इस पर ध्यान नहीं देना चाहिए।
मुझे मुसलमान होने का अफसोस है.

इस्लाम अन्य धर्मों से भिन्न है क्योंकि यह शुद्ध नैतिकता पर आधारित है।
एकेश्वरवाद और इसलिए किसी भी मध्यस्थ या मध्यवर्ती कारण रचनात्मक से इनकार करता है
या रचनात्मक प्रभाव। ईसाई धर्म ऐसे प्रभावों को स्वीकार करता है, क्योंकि यह संतों को अनुमति देता है
और प्राचीनों को परमेश्वर की प्रभुता के प्रकटीकरण में एक निश्चित भागीदारी
यह कहकर कि परमेश्वर ने एक पुत्र उत्पन्न किया है:

> उन्होंने अपने रब्बियों, भिक्षुओं और अन्य लोगों को ईश्वर के अलावा प्रभु मान लिया है।
> मरियम के पुत्र मसीहा, जब उन्हें केवल एक की सेवा करने का आदेश दिया गया था

---

359 वुडरो विल्सन: अमेरिकी राजनीतिज्ञ और राष्ट्रपति (1856-1924); लॉयड जॉर्ज (1863-1924); 1945), ब्रिटिश राजनेता और प्रधानमंत्री। एल्युथेरियोस वेनिज़ेलोस (1864-1936): यूनानी (राजनेता और प्रधानमंत्री)

360 आयशा, तल्हा इब्न उबैदुल्लाह और अल-जुबैर इब्न अल-अवाम ने अली के कुछ फ़ैसलों का विरोध किया। इसके कारण बाद में उनके बीच युद्ध छिड़ गया। (ट्र.)

361 अंदालुसिया इस्लामी स्पेन का नाम है, जो 712 से 1492 तक चला।
जब यूरोप का अधिकांश भाग अंधकार युग में खो गया था, तब यह ज्ञान और बौद्धिक प्रयास का एक प्रकाश स्तंभ था जिसने कई यूरोपीय छात्रों को आकर्षित किया। कैथोलिक स्पेन में इसके पतन के बाद,
इसकी बौद्धिक विरासत बिखरी हुई थी और यूरोप के बौद्धिक पुनर्जागरण और पुनर्जागरण में सहायक थी। (संपादक)

> ईश्वर। उसके अलावा कोई ईश्वर नहीं है, उनकी संगति से उसकी महिमा हो
> उसके साझीदार हैं। (9:31)

जो ईसाई दुनिया के सर्वोच्च पदों पर पहुंच जाते हैं, वे ईसाई ही बने रह सकते हैं।
वे भी दिवंगत अमेरिकी राष्ट्रपति विल्सन की तरह कट्टर और पूर्णतया कट्टर हो गए हैं
अहंकार का त्याग करें। हालाँकि, उनके मुस्लिम समकक्षों से यह अपेक्षा की जाती है कि वे अहंकार का त्याग करें।
अच्छे मुसलमान बनने के लिए अहंकार और गर्व को त्यागना पड़ता है। शुद्ध एकेश्वरवाद के अनुयायी, जो मुसलमान ऐसा नहीं कर पाते, वे या तो इस्लाम के प्रति उदासीन हो जाते हैं या यहाँ तक कि इस्लाम से भी वंचित हो जाते हैं।
उनका विश्वास.

छठा मामला: उन अति नकारात्मक राष्ट्रवादियों और अलगाववादियों के लिए,
मैं निम्नलिखित बात कहता हूं: पृथ्वी की सतह अनेक परिवर्तनों का मंच रही है और
उत्प्रवास। एक बार जब इस्लामी प्रशासन का केंद्र हमारे देश में बना
देश में बहुत से लोग, पतंगों की तरह रोशनी की ओर आकर्षित होकर, बसने के लिए उमड़ पड़े।
परिणामी अंतर्मिश्रण से उनके राष्ट्रीय मूल को निर्धारित करना असंभव हो जाता है, सिवाय सुप्रीम गार्डेड टैब्लेट को पढ़े, यह अर्थहीन है और
यह समाज निर्माण और राष्ट्रवाद के प्रति हमारे दृष्टिकोण के लिए हानिकारक है।

यहां तक कि नस्लीय अलगाववादी नेताओं में से एक, जिसने धर्म के प्रति घोर उदासीनता की घोषणा की थी, को भी यह स्वीकार करना पड़ा: “यदि लोगों का धर्म और आस्था एक ही है
एक ही भाषा बोलते हैं, तो वे एक राष्ट्र बनते हैं।" राष्ट्रीय पहचान निर्धारित करते समय, भाषा, धर्म और (भौगोलिक) भूमि प्रमुख कारक होते हैं।
संयुक्त अस्तित्व का मतलब है एक मजबूत राष्ट्रीय संरचना। लेकिन किसी एक की कमी
यह कारक राष्ट्रीय पहचान और भावना की संभावना को बाहर नहीं करता है।

इस्लाम की पवित्र राष्ट्रीयता ने सैकड़ों लाभ दिए हैं
हमारे देश के सामाजिक जीवन में, मैं केवल दो उदाहरण देता हूं: पहला, मुस्लिम राज्य
इसकी जनसंख्या केवल 20 या 30 की होने के बावजूद इसने अपनी जीवंतता और अस्तित्व को बनाए रखा
लाखों लोगों और यूरोपीय शत्रुता के कारण, इस विश्वास के कारण कि: "अगर मैं मर जाता हूं, तो मैं
मैं शहीद होकर मरूंगा; अगर बचूंगा तो इस्लाम का पवित्र रक्षक बनकर मरूंगा।
हमारा विश्वास कुरान की रोशनी से आता है और हमारे देश की सेना द्वारा कायम रखा जाता है।
इस प्रकार सुसज्जित होकर उस सेना ने पूर्ण उत्साह और उत्साह के साथ मृत्यु का स्वागत किया है।
सदियों तक यूरोप को भयभीत रखा। और क्या हो सकता है कि हमारे सैनिकों के मन में आत्म-बलिदान का ऐसा उत्कृष्ट गुण पैदा हो, जो उन्हें एकनिष्ठ और शुद्ध हृदय वाला बना सके? किस तरह का राष्ट्रवादी उत्साह इसके स्थान पर प्रतिस्थापित किया जा सकता है और किस तरह से हमारे सैनिकों के मन में आत्म-बलिदान का ऐसा उत्कृष्ट गुण पैदा किया जा सकता है, जो उन्हें एकनिष्ठ और शुद्ध हृदय वाला बना सके?

क्या सैनिकों को इसके लिए अपना सबकुछ, यहां तक कि अपनी जान भी कुर्बान करने के लिए तैयार रहना चाहिए?

दूसरा, जब भी ड्रेगन - यूरोपीय महाशक्तियाँ - इस पर आक्रमण करती हैं
मुस्लिम राज्य, यह मुस्लिम दुनिया को गहराई से प्रभावित करता है और हिला देता है। मुस्लिम भूमि पर शासन करने वाली साम्राज्यवादी शक्तियाँ आमतौर पर इस पर हमला करने की अपनी इच्छा को रोकती हैं
राज्य में मुसलमानों के खिलाफ विद्रोह क्यों? क्योंकि उन्हें डर है कि उनके नियंत्रण में मुसलमान विद्रोह कर देंगे।

क्या कोई अन्य शक्ति इस निरंतर, और निश्चित रूप से गैर-तुच्छ, आध्यात्मिक-समर्थन (मुस्लिम एकता) का विकल्प बन सकती है? जो लोग इसे पेश करते हैं, उन्हें नकारात्मक राष्ट्रवाद और देशभक्ति से आहत नहीं होना चाहिए, जो हमें अन्य मुसलमानों के प्रति उदासीन बनाती है।

सातवाँ मामला: जो लोग देशभक्ति को नकारात्मक राष्ट्रवाद के लिए तर्क के रूप में पेश करते हैं, उनसे मैं कहता हूँ: यदि आप इस राष्ट्र के प्रति सच्चा प्यार और स्नेह महसूस करते हैं, तो आपके राष्ट्रीय और देशभक्ति के उत्साह को हमारे अधिकांश लोगों को अपनाना चाहिए। यदि यह केवल एक छोटे से कुलीन वर्ग के सामाजिक जीवन को बढ़ाता है जो ईश्वरीय आदेशों की अनदेखी करता है, जिससे बहुसंख्यकों को अमानवीय नुकसान होता है, तो यह न तो राष्ट्रवाद है और न ही देशभक्ति। ऐसे लोगों को करुणा की आवश्यकता नहीं है।

नकारात्मक राष्ट्रवाद से उत्पन्न कोई भी देशभक्ति का जोश अधिकतम आठ नागरिकों में से दो को ही लाभ पहुंचा सकता है। जबकि ये दो लोग ऐसे अनावश्यक जोश से लाभान्वित हो सकते हैं, बाकी छह उपेक्षित रह जाते हैं: बूढ़े, बीमार, पीड़ित, कमज़ोर, बच्चे और धर्मपरायण व्यक्ति जो इस दुनिया में नहीं बल्कि मध्यवर्ती और दूसरी दुनिया में प्रकाश, सांत्वना और कल्याण की तलाश करते हैं जिसके लिए वे मेहनत करते हैं।

इस अंतिम समूह को लोक-हितैषी और दयालु लोगों की मदद की आवश्यकता है।
ऐसी कौन सी देशभक्ति है जो ऐसे व्यक्तियों की ज्योति बुझा दे, उनकी सांत्वना छीन ले? पूरे राष्ट्र के लिए सहानुभूति कहाँ है? राष्ट्र के लिए आत्म-बलिदान कहाँ है?

ईश्वर की दया से निराश होना न तो उचित है और न ही उचित। मुझे उम्मीद है कि ईश्वर कुछ अस्थायी असफलताओं के कारण हमारे शक्तिशाली समुदाय और इसकी शानदार सेना को बर्बाद नहीं करेगा, जिसे उसने कुरान का झंडा उठाने और 1,000 साल तक इसकी सेवा करने के लिए नियुक्त किया था। वह कुरान की रोशनी को एक बार फिर दुनिया को रोशन करने में सक्षम बनाएगा, और यह समुदाय अपना आवश्यक कर्तव्य निभाना जारी रखेगा।

चौथा विषय

(नोट: छब्बीसवें पत्र के विषयों की तरह, निम्नलिखित विषय भी एक दूसरे से संबंधित नहीं हैं। वे एक शिष्य के प्रश्नों के उत्तर के रूप में लिखे गए थे। इसलिए उनमें कोई संबंध न ढूंढें।)

पहला मामला

दूसरा: आप वाक्यांश: सारे संसार का पालनहार (1:2) में संसारों की संख्या के बारे में पूछते हैं, और कहते हैं कि कुरान के व्याख्याकार उनकी संख्या 18,000 मानते हैं।

मुझे नहीं पता कि "18,000" का क्या मतलब है। लेकिन मैं निम्नलिखित कह सकता हूँ: प्रत्येक कुरानिक अभिव्यक्ति में हर समय समझ के प्रत्येक स्तर को संबोधित करने वाली एक सार्वभौमिक सामग्री होती है। इस प्रकार कोई भी व्याख्या उस सार्वभौमिक सामग्री के केवल एक पहलू की ओर इशारा करती है। प्रत्येक व्याख्याकार या संत विद्वान, अपनी आध्यात्मिक खोज या अंतर्ज्ञान, प्राप्त साक्ष्य या अपने प्राकृतिक स्वभाव के आधार पर, एक पहलू को प्राथमिकता देते हैं। कुछ व्याख्याकार मानते हैं कि 18,000 दुनियाएँ हैं।

उदाहरण के लिए: उसने दो समुद्रों को छोड़ दिया जो आपस में मिलते हैं, उनके बीच एक बाधा है जिसे वे पार नहीं करते (55:19-20), जो कि संत लोगों द्वारा उनके दैनिक पाठों में दोहराया जाता है, सभी समुद्रों या क्षेत्रों के जोड़े को इंगित करता है, आध्यात्मिक या भौतिक, आलंकारिक या वास्तविक, प्रभुत्व और सेवकाई के क्षेत्रों से लेकर आवश्यकता और आकस्मिकता के क्षेत्रों तक, इस दुनिया से लेकर परलोक तक, जिसमें दृश्यमान, भौतिक दुनिया और अदृश्य दुनिया, प्रशांत और अटलांटिक महासागर, भूमध्य सागर और लाल समुद्र, और स्वेज नहर, समुद्र और भूमिगत में खारा पानी और मीठा पानी, और मीठा पानी ले जाने वाली फरात और टिगरिस जैसी विशाल नदियाँ और खारे समुद्र हैं जिनमें वे बहती हैं। ये सभी, कई अन्य के साथ

इसी तरह, अभिव्यक्ति: ईश्वर की स्तुति हो, संसार के स्वामी के कई पहलू हैं। और इसलिए सत्य और विवेक के लोग, अपनी अंतर्दृष्टि और आध्यात्मिक खोज के आधार पर, इसे अलग-अलग तरीके से समझाते हैं। मेरी अपनी समझ यह है कि आकाश में हज़ारों संसार हैं। उदाहरण के लिए, कुछ सितारों में से प्रत्येक एक विशेष प्रकार का संसार हो सकता है। यहाँ प्रत्येक प्रजाति एक संसार का निर्माण करती है, और प्रत्येक व्यक्ति एक छोटा संसार है। संसार के स्वामी का अर्थ है कि प्रत्येक संसार को सीधे ईश्वर के प्रभुत्व द्वारा प्रशिक्षित और प्रशासित किया जाता है।

तीसरा: ईश्वर के दूत ने घोषणा की: "जब ईश्वर किसी जाति का भला चाहता है, तो वह उन्हें उनकी बुराइयों से सचेत करता है।"362 इसके अलावा, कुरान में वर्णन है कि पैगंबर यूसुफ ने कहा: मैं यह दावा नहीं करता कि मेरी आत्मा हमेशा निर्दोष है; निस्संदेह, मानवता की आत्मा बुराई को उकसाती है (12:53)।

जो लोग अपनी शारीरिक आत्मा पर भरोसा करते हैं और उस पर भरोसा करते हैं वे दुर्भाग्यशाली हैं, जबकि जो लोग अपने स्वयं के दोषों को देखते हैं वे भाग्यशाली हैं। ऐसा होने पर, आप भाग्यशाली लोगों में से हैं। लेकिन कभी-कभी, शारीरिक आत्मा के परिष्कृत होने और बनने के बावजूद-

[362] अल-अजलूनी, कश्फ अल-खफ़ा', 1:81.

“आत्म-आरोप लगाने वाली आत्मा” या यहाँ तक कि “आराम करने वाली आत्मा” पर हमला करते हुए, यह अपने हमले को आगे बढ़ाता है तंत्रिकाएँ.363

परिणामस्वरूप, वे लोग तब तक क्रोध और चिड़चिड़ाहट से मुक्त नहीं हो सकते जब तक वे मर जाते हैं। कई पवित्र और संत लोग अपने आत्म-प्रलोभन की शिकायत करते हैं और आध्यात्मिक बीमारियों पर विलाप करते हैं, भले ही उनकी आत्माएँ शांति में हों और उनके दिल रोशन और शुद्ध थे। वे वास्तव में किस बात की शिकायत करते हैं बुराई का आदेश देने वाला कोई स्व नहीं है, बल्कि उन बुरे आदेशों का नसों में स्थानांतरण है। उनकी आध्यात्मिक बीमारियाँ काल्पनिक हैं। मुझे आशा है, मेरे प्रिय हे भाई, यह आपकी शारीरिक आत्मा या आत्मिक बीमारियाँ नहीं हैं जो आपको पीड़ित करती हैं, लेकिन आप तंत्रिकाओं से पीड़ित हैं, ताकि आप आध्यात्मिक प्रगति करने के लिए अपना संघर्ष जारी रख सकें।

दूसरा विषय: उस वृद्ध प्रार्थना नेता के तीन प्रश्नों के विस्तृत उत्तर कुछ प्रश्न रिसाले-ए-नूर संग्रह में पाए जाते हैं। मैं एक संक्षिप्त सारांश देता हूँ, जो इस प्रकार है:

---

363 तुर्की के एक प्रसिद्ध इस्लामी विद्वान, फ़तेउल्लाह गुलेन आगे बताते हैं: "निरंतर आत्म-आलोचना और आत्म-निंदा व्यक्ति के विश्वास की पूर्णता को दर्शाती है। हर कोई जिसने योजना बनाई है उसका जीवन एक परिपूर्ण, सार्वभौमिक मानव के क्षितिज तक पहुँचने के लिए है, इस बात के प्रति सचेत है जीवन का हर पल खुद से संघर्ष करते हुए बिताता है। ऐसा व्यक्ति जो कुछ भी उसके दिल और दिमाग में आता है, उससे पासवर्ड या वीज़ा की मांग करता है। शैतान के प्रलोभनों या गुस्से की उत्तेजना के खिलाफ आत्म-नियंत्रण का अभ्यास किया जाता है, और शब्दों और कार्यों पर ध्यानपूर्वक नज़र रखी जाती है। आत्म-आलोचना निरंतर होती है, यहाँ तक कि उन कार्यों के लिए भी जो सबसे अधिक समझदारीपूर्ण और स्वीकार्य लगते हैं। शाम को शब्दों और कार्यों की समीक्षा दिन का नियम है, जैसे पापों से बचने के लिए सुबह के संकल्प। एक आस्तिक अपने 'बाँह का फीता' बुनता है या उसके जीवन' को आत्म-आलोचना और आत्म-आरोप के "धागों" के साथ।

जब तक एक आस्तिक प्रभु के प्रति ऐसी निष्ठा और विश्वासयोग्यता दिखाता है और ऐसे वातावरण में रहता है नम्रता से, स्वर्ग के द्वार खोल दिए जाएंगे और निमंत्रण दिया जाएगा:

> ऐ ईमानवाले आओ! तुम हमसे नज़दीकी रखते हो। यही है हमारा मक़ाम आत्मीयता। हमने आपको एक वफ़ादार व्यक्ति पाया है। हर दिन उसका सम्मान किया जाता है आत्मा में एक नई, स्वर्गीय यात्रा के साथ। यह स्वयं ईश्वर है जो शपथ लेता है ऐसे पवित्र आत्मा की शपथ: बल्कि, मैं उस आत्मा की शपथ लेता हूँ जो अपने आपको दोषी मानती है! (75:2)

साधारण लोगों के लिए त्यागपत्र का अर्थ है ईश्वर ने उनके लिए जो इच्छा की है, उस पर आपत्ति न करना। ईश्वर के बारे में गहन आध्यात्मिक ज्ञान रखने वालों के लिए त्यागपत्र का अर्थ है अपने पापों का स्वागत करना। व्यक्तिगत नियति। जो लोग गहन आध्यात्मिकता का जीवन जीते हैं, उनके लिए त्यागपत्र का अर्थ है कि, अपने स्वयं के विचारों पर ध्यान दिए बिना, वे हमेशा चौकस रहते हैं वह उनसे क्या करवाना चाहता है और वह उनसे क्या करवाना चाहता है। आयतें: हे आत्मा, जो विश्राम में है, लौट आओ अपने रब की ओर जो प्रसन्न और राज़ी है। मेरे बन्दों में आ जाओ और मेरी जन्नत में प्रवेश करो (89:27-30) त्याग के सभी स्तरों को शामिल करें, तथा उन लोगों की इच्छाओं के प्रति प्रतिक्रियाएँ शामिल करें ईश्वरीय इच्छा और नियति के प्रति समर्पित हो जाओ।" फ़तेहुल्लाह गुलेन, अभ्यास में प्रमुख अवधारणाएँ सूफीवाद (तुर्की: द फाउंटेन, 1999), 9, 108. (सं.)

उनका पहला सवाल: फख्र अल-दीन अल-रज़ी को लिखे अपने पत्र में,364 मुही अल-दीन इब्न अल-अरबी कहते हैं: "ईश्वर का ज्ञान उसके ज्ञान से अलग है" अस्तित्व।" इसका क्या मतलब है?

पहला: ट्वेंटी-सेकेंड वर्ड की प्रस्तावना में दिया गया दृष्टांत, जो सतही विश्वास और ठोस विश्वास के बीच अंतर दिखाता है ईश्वर की एकता, इसका उत्तर देती है। बत्तीसवाँ वचन भी देखें।

दूसरा: इब्न अल-अरबी, का मानना है कि अनिवार्य रूप से विद्यमान सत्ता के सिद्धांतों पर पद्धतिविदों और धर्मशास्त्रियों की व्याख्या उन्होंने लिखा कि अस्तित्व और एकता आवश्यक वास्तविकता को स्थापित नहीं कर सके। अल-रज़ी के साथ किया गया।

धर्मशास्त्र के माध्यम से प्राप्त ईश्वर संबंधी ज्ञान अपूर्ण और असंतोषजनक है, जबकि कुरान के मार्ग पर चलने से पूर्ण ज्ञान प्राप्त होता है। ज्ञान और पूर्ण संतुष्टि। मुझे आशा है कि रिसाले-आई का प्रत्येक ग्रंथ नूर संग्रह कुरान के प्रकाशमान राजमार्ग पर एक दीपक के रूप में कार्य करता है।

ठीक वैसे ही जैसे (इब्न अल-अरबी के विचार में) अल-रज़ी का धर्मशास्त्र-व्युत्पन्न ज्ञान ईश्वर का ज्ञान अपूर्ण है, सूफीवाद से प्राप्त ज्ञान अधूरा है जब नबी की सीधी विरासत के माध्यम से कुरान से सीधे प्राप्त ज्ञान की तुलना में। इब्न अल-अरबी के कुछ अनुयायी ब्रह्मांड की वास्तविकता से इनकार करते हैं। स्थायी संतुष्टि पाने के लिए, वे कहते हैं कि केवल वही अस्तित्व में है। अन्य लोग भी स्थायी संतुष्टि की तलाश में, अपने जीवन में सृष्टि की उपेक्षा करते हैं। प्रस्तावना कि "उसके अलावा कोई साक्षी नहीं है।"

कुरान से प्राप्त ज्ञान पूर्ण एवं स्थायी संतुष्टि देता है, तथा न तो ब्रह्माण्ड को अस्तित्वहीन घोषित करता है, न ही ईश्वर की उपेक्षा करता है। बल्कि, यह ब्रह्मांड को अराजकता से ऊपर उठाकर ब्रह्मांड की श्रेणी में ले जाता है, और इसे सर्वशक्तिमान ईश्वर के नाम पर इस्तेमाल करता है। इस प्रकार प्रत्येक चीज़ ईश्वर के ज्ञान का दर्पण बन जाती है, जैसा कि सादी अल-शिराज़ी कहते हैं: "विवेकशील व्यक्ति की दृष्टि में लोगों, ब्रह्माण्ड की पुस्तक का प्रत्येक पन्ना सर्वशक्तिमान ईश्वर के ज्ञान की एक खिड़की खोलता है।"365

द वर्ड्स के कुछ भागों में मैंने इनके बीच का अंतर समझाया है। इन दो तरीकों से शहर को पानी की आपूर्ति की जा सकती है: या तो नहरों का एक नेटवर्क बनाकर या पहाड़ियों के माध्यम से जल निकासी खाइयों का निर्माण करके

---

364 फख्र अल-दीन अल-रज़ी (865-923/932): प्रसिद्ध कीमियागर और दार्शनिक, इस्लामी दुनिया के महानतम चिकित्सक। (सं.)

365 सादी अल-शिराज़ी (लगभग 1571-1640): दार्शनिक जिन्होंने 17वीं शताब्दी के दौरान ईरानी सांस्कृतिक पुनर्जागरण का नेतृत्व किया; इलुमिनेशनिस्ट (इशराकी) स्कूल के अग्रणी प्रतिनिधि दार्शनिकों-रहस्यवादियों का (सं.)

बहुत दूर से या हर जगह कुआं खोदकर। पहला तरीका बहुत आसान है।
कठिन और श्रमसाध्य; दूसरा उन लोगों के लिए आसान है जो इसे कर सकते हैं। अस्तित्व के आरंभ या आरंभ-बिंदु पर कारण और प्रभाव की श्रृंखला को बाधित करके, क्योंकि कारण और प्रभाव की कभी न समाप्त होने वाली श्रृंखला असंभव है, धर्मशास्त्री
अनिवार्य रूप से विद्यमान सत्ता के अस्तित्व को दर्शाने के लिए बहुत प्रयास किए जाते हैं। लेकिन
राजमार्ग पर हर जगह "पानी का एक अटूट स्रोत" है
कुरान। मूसा की छड़ी की तरह, कुरान की हर आयत "पानी को पानी बना सकती है
जीवन का सार" जहाँ भी मिलता है, वहाँ फूट पड़ता है और सत्य को दर्शाता है। हर चीज़ में सत्य समाहित है
यह एक संकेत है कि वह एक है।

इसके अलावा, ज्ञान के अलावा, विश्वास को कई अन्य मानवीय क्षमताओं द्वारा आत्मसात और विनियोजित किया जाना चाहिए। जैसे पचा हुआ भोजन शरीर के प्रत्येक भाग की ज़रूरत को पूरा करने के लिए पूरे शरीर में वितरित होता है, वैसे ही विश्वास के सभी मामले, ग्रहण किए जाने के बाद
बुद्धि द्वारा शिक्षा के माध्यम से, ऐसे आध्यात्मिक द्वारा आत्मसात किया जाना चाहिए
प्रत्येक के अनुसार आत्मा, हृदय, प्राण और अन्य अंतरतम इंद्रियाँ
अपनी ज़रूरत और क्षमता के हिसाब से। अगर एक भी चीज़ को उसका हिस्सा नहीं मिलता, तो विश्वास
अपूर्ण बनी हुई है। यही बात इब्न अल-अरबी ने अल-रज़ी को बताई थी।

तीसरा मामला: हम कैसे सामंजस्य स्थापित कर सकते हैं हमने बच्चों का सम्मान किया है
आदम (17:70) से: क्या वह (मानव) बहुत अन्यायी और अज्ञानी है? (33:72)

उत्तर: इस विषय को ग्यारहवें, तेईसवें और
चौबीसवाँ वचन। मैं यहाँ एक संक्षिप्त सारांश प्रस्तुत करता हूँ: सर्वशक्तिमान ईश्वर
एक पदार्थ से अनेक चीजें बनाना ताकि वह अनेक प्रयोजनों की पूर्ति कर सके, तथा
1,000 “पुस्तकों” की विषय-वस्तु को एक “पृष्ठ” पर अंकित करता है। इसी तरह, उसने सृष्टि की
मानवता को एक एकल, व्यापक प्रजाति के रूप में, क्योंकि उसने प्रत्येक व्यक्ति की इच्छा की थी
सभी पशु प्रजातियों के कर्तव्यों और कार्यों का पालन करें। नतीजतन, उन लोगों के विपरीत
पशुओं की तरह मानवीय भावनाओं और क्षमताओं पर भी कोई प्राकृतिक प्रतिबन्ध नहीं है, इसलिए
अनंत अंतरिक्ष में कार्य करना।

चूँकि प्रत्येक व्यक्ति एक दर्पण है जो अनन्त अभिव्यक्तियों को प्रतिबिंबित करता है
सृष्टिकर्ता के नाम, उसकी क्षमताएँ अनंत संभावनाओं से संपन्न हैं।
उदाहरण के लिए, यदि किसी को पूरी दुनिया दे दी जाए, तो उसका लालच कम हो जाएगा।
यह सवाल उठेगा: “क्या और भी कुछ है?” इसके अलावा, उनका स्वार्थ भी बढ़ जाएगा
उन्हें अपने स्वार्थ के लिए हज़ारों लोगों की भलाई का बलिदान करने की अनुमति दें। ऐसा होने पर, लोग तब तक बुराई में बढ़ सकते हैं जब तक कि वे उतने ही अन्यायी न हो जाएँ
निम्रोद या फिरौन की तरह, या अच्छे आचरण में वृद्धि कर सकते हैं जब तक कि वे
सत्यवादी लोगों या पैगम्बरों का पद।

इसके अलावा, लोग जीवन की आवश्यकताओं से अनभिज्ञ हैं और इसलिए उन्हें सीखना चाहिए
सब कुछ, जबकि जानवरों को ऐसी कोई ज़रूरत नहीं है। चूँकि मानवता की ज़रूरत अनंत है

रात में, सभी लोग गहन अज्ञानता की स्थिति में पैदा होते हैं। लेकिन जानवरों को इसकी ज़रूरत होती है
जन्म के समय उन्हें केवल कुछ ही चीजें पता होती हैं, और वे कुछ महीनों या दिनों में या कभी-कभी कुछ घंटों में आवश्यक ज्ञान प्राप्त कर लेते हैं।
यह परिवर्तन उनके जीवन में इतनी तेजी से होता है कि ऐसा लगता है कि वे किसी दूसरी दुनिया में ही परिपूर्ण हुए हैं।
लेकिन मनुष्य चलना तो एक-दो साल बाद ही सीखता है और लाभ-हानि में फर्क 15 साल बाद ही कर पाता है। उपरोक्त श्लोक में इसी बात का संकेत दिया गया है।
मानवता की अज्ञानता का उल्लेख करके इस पर प्रहार किया।

चौथा मामला: आप पूछते हैं: अपने विश्वास को ताज़ा करें "कोई नहीं है
देवता नहीं बल्कि ईश्वर।”366 इसका अर्थ द वर्ड्स के कई खंडों में समझाया गया है।
इसके अर्थ के कई पहलुओं में से एक यह है: प्रत्येक व्यक्ति को नवीनीकृत और
अपने विश्वास को ताज़ा करें, क्योंकि वे और उनकी व्यक्तिगत दुनिया दोनों ही
लगातार नवीनीकृत। प्रत्येक व्यक्ति सालाना, मासिक, दैनिक और यहां तक कि प्रति घंटे एक अलग व्यक्तित्व प्राप्त करता है या उसमें परिवर्तित होता है।
समय बीतने के साथ, वे प्रतिदिन व्यक्तित्व का रूप धारण करते हैं।
हमारी क्षणभंगुर दुनिया समाप्त हो जाती है और उसकी जगह एक नई दुनिया आ जाती है जो अपने मार्ग खोलती है
हर दिन हमारे लिए दरवाजे खुलते हैं। विश्वास जीवन का प्रकाश है जिसे हम जीवित रहते हुए प्राप्त करते हैं, जैसे कि
साथ ही हम जिस भी दुनिया में रहते हैं, उसका प्रकाश भी। कोई देवता नहीं है, लेकिन ईश्वर ही कुंजी है
जिससे वह प्रकाश प्राप्त हो सके।

हम अपने शारीरिक स्व के निरंतर प्रभाव के अधीन हैं। हमारी कल्पनाएँ और
इच्छाएँ, जब शैतान के साथ मिल जाती हैं और हमारी असावधानी से सक्षम हो जाती हैं, तो हमें चोट पहुँचाती हैं
विश्वास को नष्ट कर दो और बुरे संदेहों और सुझावों के माध्यम से उसके प्रकाश को नष्ट कर दो। इसके अलावा, विश्वासियों को अपने विश्वास को लगातार ताज़ा करना चाहिए, क्योंकि लोग बार-बार गिर सकते हैं और कुछ ऐसी बातें कर सकते हैं या कह सकते हैं जो शरिया के विपरीत हैं
और, कुछ प्रमुख विद्वानों के अनुसार, अविश्वास को इंगित करते हैं (जैसे कि ईश्वरीय निर्णयों पर आपत्ति करना या भाग्य से अप्रसन्नता प्रदर्शित करना आदि)।

प्रश्न: ईश्वर की एकता को सिद्ध करने के लिए धर्मशास्त्री इस ओर ध्यान आकर्षित करते हैं
ब्रह्माण्ड का आकस्मिक होना और उसका आरंभ होना: चूंकि यह है
चाहे ब्रह्माण्ड हो या न हो, उसका अस्तित्व वर्णित है
क्योंकि यह वास्तव में मौजूद है और इसकी शुरुआत है, इसलिए इसका होना ज़रूरी नहीं है।
एक अनिवार्यतः विद्यमान, निरपेक्ष और शाश्वत, जिसने उत्पत्ति की इच्छा की
कुछ सूफी ईश्वरीय एकता के माध्यम से पूर्ण संतुष्टि की तलाश करते हैं
ब्रह्माण्ड के अस्तित्व के बारे में: "उसके अलावा कोई साक्षी नहीं है।" अन्य सूफ़ी
ब्रह्माण्ड को केवल नाममात्र या काल्पनिक अस्तित्व प्रदान करें और पूर्ण अस्तित्व की खोज करें
संतुष्टि इस प्रकार है: “उसके अलावा कोई अस्तित्व में नहीं है।”

366 हकीम, अल-मुस्तद्रक, 4:256; इब्न हनबल, मुसनद, 2:359.

आप एक अलग तरीके से दावा करते हैं, कुरान में एक मुख्य राजमार्ग का अस्तित्व है, और इसे इस प्रकार दिखाएँ: “उसके सिवा कोई पूज्य नहीं है” और “कोई भी नहीं है क्या आप इस राजमार्ग या इस तक जाने वाले किसी छोटे रास्ते में निहित दिव्य एकता का प्रमाण प्रस्तुत कर सकते हैं?

उत्तर: यद्यपि सभी शब्द और अक्षर उस राजमार्ग की ओर संकेत करते हैं, फिर भी मैं इसका एक शक्तिशाली, व्यापक प्रमाण संक्षेप में प्रस्तुत करें। प्रत्येक चीज़ दिखाती है कि उसका सृष्टिकर्ता ने सभी चीज़ें बनाई हैं। प्रत्येक कार्य या प्रभाव दर्शाता है कि उसका रचयिता ही सब कुछ बनाता है। सभी कार्य या प्रभाव। आविष्कार का प्रत्येक कार्य यह साबित करता है कि आविष्कार के सभी कार्य सृष्टि में प्रकट होने वाला प्रत्येक नाम यह बताता है कि ब्रह्माण्ड में प्रकट होने वाले सभी नाम उसी सत्ता के हैं, यह भी संबंधित है.

इसका मतलब यह है कि प्रत्येक चीज़ ईश्वरीय एकता को साबित करती है और ईश्वर के ज्ञान के लिए एक खिड़की खोलती है। प्रत्येक कार्य या प्रभाव, विशेष रूप से जीवित अस्तित्व, ईश्वरीय एकता को दर्शाता है। ब्रह्माण्ड का एक लघु रूप, सृष्टि का एक बीज, तथा इस ग्रह का एक फल। यह देखते हुए, जिस सत्ता ने उस लघु, बीज या फल को बनाया, उसने अनिवार्य रूप से ब्रह्मांड का निर्माण किया, क्योंकि जिसने फल बनाया वह वही होना चाहिए जिसने वृक्ष को बनाया। इस प्रकार, जिस प्रकार प्रत्येक कार्य यह प्रदर्शित करता है कि उसका रचयिता कौन है वही सत्ता है जो अन्य सभी कार्यों का निर्माण करती है, प्रत्येक कार्य यह दर्शाता है कि उसका कर्ता ही अन्य सभी कार्यों का कर्ता है। हम ऐसा इसलिए कहते हैं क्योंकि सृजन का प्रत्येक कार्य यह खुद को रचनात्मकता के नियम का संकेत देने वाला एक संकेत दिखाता है, जो इतना व्यापक है कि यह ब्रह्मांड में सब कुछ समाहित करता है। तो, वही अस्तित्व सृजन के उस एकल कार्य और उसी के साथ अन्य सभी कार्यों का एजेंट है उस सार्वभौमिक नियम पर निर्भर होकर कार्य करें।

जो प्राणी किसी कीट को उसके शीतनिद्रा से पुनर्जीवित करता है, वही समस्त प्राणियों का भी सृजन करता है। कीटों और अन्य जानवरों को नियंत्रित करता है और वसंत के लिए पृथ्वी को सक्रिय करता है। जो कोई भी कणों को घुमाता है, वह सृष्टि को भी निरंतर क्रम में चलाता है और सूर्य और कानून एक डोरी की तरह है जो पूरे ब्रह्माण्ड में फैली हुई है, और कर्म तथा प्रभाव इसके अनुरूप व्यवस्थित होते हैं।

प्रत्येक प्रकट नाम सिद्ध करता है, जैसे कि प्रत्येक कार्य या कृत्य सिद्ध करता है, कि सभी नाम उसके मालिक के होते हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि ये नाम संकेन्द्रित होते हैं क्षेत्र, एक दूसरे के भीतर, परस्पर संबंधित और परस्पर सहायक, परस्पर-पूर्ण रूप से एक दूसरे के काम को परिपूर्ण और सुशोभित करते हैं। उदाहरण के लिए, जब नाम सर्व-जीवन-दाता किसी चीज़ को जीवन देकर खुद को प्रकट करता है, नाम वह अत्यन्त बुद्धिमान, अत्यन्त उदार, दयावान और सब कुछ प्रदान करने वाला है। जीवित चीज़ के शरीर को व्यवस्थित करने के लिए, क्रमशः एक ही पल में प्रकट होते हैं इसे बुद्धिमत्ता से सजाओ, उदारता से इसकी आवश्यकताओं को पूरा करो,

और अपने रखरखाव के लिए आवश्यक पोषण प्रदान करता है, जो कि अपने आप में अप्रत्याशित है। इस प्रकार, जो सर्व-जीवन देने वाले नाम का स्वामी है, वह भी सर्व-जीवन देने वाले नाम का स्वामी है।
वह नाम जो सर्वज्ञ है, सर्वव्यापी है और ब्रह्माण्ड में प्रकाशमान है; तथा
वह नाम सर्व-करुणामय है, जो सृष्टि को करुणा से प्रशिक्षण देता है;
और वह सर्व-प्रदाता है, जो सभी जीवित प्राणियों का उदारतापूर्वक पोषण करता है।

प्रत्येक नाम, कार्य और कर्म ईश्वरीय एकता का प्रमाण और मुहर है
दिव्य एकता जो प्रत्येक को दर्शाती है कि प्रत्येक शब्द (प्राणी) पर लिखे गए हैं
ब्रह्माण्ड के पृष्ठ और युगों की रेखाएँ उसके लेखक की कलम के शिलालेख हैं।

> हे ईश्वर, उस पर कृपा बरसाओ जिसने कहा: "जो कुछ मैं और मेरा मित्र हैं, उनमें से सर्वोत्तम है।"
> पूर्ववर्ती पैगम्बरों ने कहा है: 'अल्लाह के अलावा कोई पूज्य नहीं है'"[367] और
> उनके परिवार और साथियों पर कृपा करें, तथा उन्हें शांति प्रदान करें।

पांचवां मामला

दूसरा: आप पूछते हैं कि क्या "मुहम्मद ईश्वर के दूत हैं" को स्वीकार किए बिना "अल्लाह के अलावा कोई पूज्य नहीं है" की पुष्टि करना समृद्धि के लिए पर्याप्त है?
परलोक में। इस पर विस्तार से चर्चा की आवश्यकता है। हालाँकि, मैं खुद को यहीं तक सीमित रखता हूँ
निम्नलिखित विचार:

इस्लामी आस्था के दोनों प्रस्ताव एक दूसरे से अलग नहीं हैं।

एक दूसरे पर विश्वास करने के लिए विश्वास की आवश्यकता होती है; बल्कि, वे एक दूसरे को सिद्ध करते हैं और एक पर विश्वास करने के लिए विश्वास की आवश्यकता होती है
दूसरे में। चूँकि मुहम्मद अंतिम पैगम्बर हैं और इस प्रकार सभी के उत्तराधिकारी हैं
पिछले पैगम्बरों के अनुसार, वह ईश्वर तक पहुँचने के सभी रास्ते बताता है।
सत्य और मोक्ष के अलावा अन्य कोई नहीं। ज्ञान के क्षेत्र में वे सबसे प्रमुख हैं
ईश्वर और सावधानीपूर्वक किए गए शोध यह घोषणा करते हैं, जैसा कि सादी अल-शिराज़ी कहते हैं: "सादी, यह है
यह कल्पना से परे है कि मोक्ष का कोई और मार्ग हो सकता है
मुस्तफा।"[368] वे यह भी घोषणा करते हैं कि "मुहम्मद के अलावा सभी रास्ते बंद हैं।"

> कुछ लोग जो उसके मार्ग पर चलते हैं, वे इस बात से अनजान होते हैं कि यह उसका मार्ग है, जबकि कुछ लोग जो उसके मार्ग पर चलते हैं, वे इस बात से अनजान होते हैं कि यह उसका मार्ग है।

कुछ लोग पैगम्बर को जाने बिना ही उनके मार्ग का अनुसरण करते हैं। कुछ लोग अनजाने में ही उनके मार्ग से संतुष्ट हो सकते हैं, इस आनंदमयी घबराहट में कि "वहाँ कुछ है"
पूर्ण एकांत और समाधि की स्थिति में, हम ईश्वर के अलावा किसी देवता को नहीं मानते। हालाँकि, हमें अवश्य ही
अस्वीकृति और सचेत इनकार के बीच अंतर करें। परमानंद और एकांत में रहने वाले इन लोगों द्वारा पैगंबर को न स्वीकारना एक तरह से दुखद है
उनके अज्ञान से। वे परमेश्वर के बारे में जो जानते हैं, उसमें यह शामिल है कि "वहाँ है
ईश्वर के अलावा कोई देवता नहीं।" इस श्रेणी के लोग मोक्ष प्राप्त कर सकते हैं।

---

[367] इमाम मलिक, अल-मुवत्ता', "कुरान," 32.

[368] मुस्तफा, जिसका अर्थ है "शुद्ध और चुना हुआ", पैगम्बर मुहम्मद का एक गुण है। (संपादक)

किन्तु यदि वे लोग जो पैगम्बर के विषय में सुनते हैं और उनके संदेश को सीखते हैं, उनका इन्कार कर दें, वे सर्वशक्तिमान ईश्वर को नहीं पहचान सकते। इसके अलावा, उनका यह कहना कि "कोई ईश्वर नहीं है लेकिन ईश्वर" ईश्वरीय एकता में विश्वास व्यक्त करने के लिए पर्याप्त नहीं है, जो लाता है हम ऐसा इसलिए कहते हैं क्योंकि उनका रवैया अस्वीकृति और इनकार का है। जो लोग पैगम्बर मुहम्मद को सृष्टि के गौरव और सम्मान से वंचित करते हैं उनके चमत्कारों और उपलब्धियों के कारण मानवता का कोई भी हिस्सा प्राप्त नहीं हो सकता प्रकाश या परमेश्ंवर का सच्चा ज्ञान प्राप्त करें।

[चूँकि छठा और सातवाँ मामला ऐसे मामलों से संबंधित है जो अत्यधिक तकनीकी प्रकृति और चिंता के कारण, उन्हें इसमें शामिल नहीं किया गया है अनुवाद.]

आठवाँ विषय: कुछ लोग पूछते हैं: प्रत्येक कुरानिक अभिव्यक्ति और सूत्र ईश्वर की स्तुति और महिमा किसी न किसी तरह मानवता की आध्यात्मिक क्षमताओं को प्रकाशित करती है और आध्यात्मिक पोषण प्रदान करती है। लेकिन अगर उनका अर्थ नहीं पता है, उन्हें सिर्फ़ कहने से ही ज्ञान नहीं मिलेगा। क्या उन्हें बार-बार दोहराने से भी ज्ञान नहीं मिलेगा? क्या अपनी मातृभाषा का प्रयोग अधिक लाभदायक है?

उत्तर: कुरान के अरबी शब्द (अक्षर) और उसके सूत्र पैगम्बर से संबंधित ईश्वर की प्रशंसा और महिमा जीवित त्वचा के समान है। वस्त्र बदला जा सकता है, लेकिन त्वचा बदलने से शरीर को नुकसान पहुँचता है। निर्धारित प्रार्थनाओं के शब्द (अक्षर) और प्रार्थना के लिए आह्वान उनके अर्थ के लिए एक शीर्षक या पदनाम हैं। न तो कोई शीर्षक और न ही कोई पदनाम बदला जा सकता है।
मैं अपने अनुभव से एक उदाहरण देता हूँ, जो इस प्रकार है:

मैं प्रतिदिन सूरत अल-इखलास (ईमानदारी का अध्याय) 1,000 बार पढ़ता था। ईद (धार्मिक त्यौहार) की पूर्व संध्या पर । 100 के समूहों में ऐसा करते समय, कुछ मेरी आध्यात्मिक क्षमताओं में से कुछ को तुरंत पोषण और संतुष्टि मिली। प्रतिबिंब) ने अर्थ पर कुछ एकाग्रता के बाद अपना हिस्सा लिया और कुछ और पाठ के बाद, अभी भी अन्य (यानी, दिल) तृप्त थे। आध्यात्मिक आनंद देने वाली अवधारणाओं की कुछ समझ से संतुष्ट। केवल वे क्षमताएँ बची रहीं जो अभी तक पाठ से ऊबी नहीं थीं।

चूँकि उन्हें अब अर्थ या उसकी सूक्ष्मताओं की आवश्यकता नहीं थी, असावधानी ने उन्हें निराश कर दिया। उन्हें नुकसान नहीं पहुँचाया, हालाँकि इसने चिंतन की क्षमता को नुकसान पहुँचाया। इसका सरल, शाब्दिक अर्थ ही उनके ज्ञानोदय के लिए पर्याप्त था। अर्थ पर और अधिक ध्यान केंद्रित करने से ऊब चुके लोगों को केवल स्मरण और प्रोत्साहन की आवश्यकता है, सीखने और समझने की नहीं। इसलिए अरबी शब्दांकन, जिसका अर्थ के लिए वही कार्य है जो त्वचा का है शरीर को निरंतर आत्मज्ञान प्रदान करता है, विशेष रूप से इसलिए क्योंकि यह पाठक को निरंतर याद दिलाता रहता है कि वह परमेश्वर के वचन और वाणी का पाठ कर रहा है।

इसलिए सत्य को व्यक्त करने के लिए किसी दूसरी भाषा का प्रयोग करना हानिकारक है
अज़ान (प्रार्थना के लिए आह्वान) में , निर्धारित प्रार्थनाओं के बाद दोहराई गई ईश्वर की स्तुति और महिमा में, और
अल-फ़ातिहा और जैसे कुरानिक सूराओं में निहित है।
अल-इखलास। एक बार दिव्य और पैगंबर शब्द, वह अटूट स्रोत
आत्मज्ञान का युग समाप्त हो गया है, सबसे महत्वपूर्ण मानवीय क्षमताएं अब नहीं रहेंगी
उन्हें संतुष्टि या ज्ञान का अपना हिस्सा मिलता है। इसके अलावा पुरस्कार,
प्रत्येक अक्षर में कम से कम 10 अक्षर होते हैं, जो खो जाएंगे। और चूंकि हर कोई नहीं ढूंढ सकता
प्रार्थना के दौरान निर्बाध शांति के लिए, मानव अनुवाद, असावधानी में, आत्मा को अंधकारमय बना सकता है।

अबू हनीफा ने कहा: "ईश्वरीय एकता का सूत्र: 'कोई ईश्वर नहीं बल्कि ईश्वर है।
ईश्वर' ईश्वरीय एकता के लिए एक उपाधि या पदनाम है।" यह इन शब्दों के साथ सत्य है
ईश्वर की स्तुति और महिमा का बखान, विशेष रूप से अज़ान के दौरान पढ़ा जाने वाला
और निर्धारित प्रार्थनाएँ, और उनके पारिभाषिक (न कि शाब्दिक) अर्थ के संबंध में विचार किया जाना चाहिए।
इसलिए उन्हें बदलना निषिद्ध है।
स्पष्ट, सारगर्भित अर्थ, जिसे हर आस्तिक को जानना चाहिए, आसानी से सीखा जा सकता है।

जो मुसलमान, मुस्लिम समुदाय में जीवन बिताने के बावजूद और अपने मन को सांसारिक चीजों से भरने के बावजूद स्पष्ट रूप से सीखने में विफल हो सकते हैं,
उन धन्य शब्दों का सारगर्भित अर्थ क्या है जो अनन्त जीवन की कुंजी हैं?
क्या उन्हें सच्चा मुसलमान कहा जा सकता है और समझदार माना जा सकता है?
ऐसे आलसी लोगों को सुविधा देने के लिए प्रकाश के स्रोतों को तोड़ा नहीं जा सकता!

इसके अलावा, सभी विश्वासी समझते हैं कि जब वे सुब्हान अल्लाह (भगवान की महिमा हो) कहते हैं तो वे ईश्वर की महिमा करते हैं।
क्या यह आत्मज्ञान के लिए पर्याप्त नहीं है? अगर वे ऐसा करते हैं तो वे ईश्वर की महिमा करते हैं।
अपनी भाषा के संदर्भ में इसके अर्थ पर विचार करें, एक भी अवसर
अध्ययन ही पर्याप्त होगा। हालांकि, वे इसे दिन में कम से कम 100 बार दोहराते हैं, जिससे बुद्धि को उसका हिस्सा मिलता है और इसके शब्दों और संक्षिप्त सामग्री के माध्यम से,
दूसरों को बहुत अधिक ज्ञान प्राप्त हुआ।

संक्षेप में, कोई भी चीज़ धन्य ईश्वरीय वचन का स्थान नहीं ले सकती या उसके जैसा कार्य नहीं कर सकती,
इस्लाम के दायित्वों या बुनियादी बातों का यह “मामला”। हालाँकि एक अनुवाद
पहली नज़र में यह पर्याप्त लग सकता है, लेकिन स्थायित्व, उदात्तता और उचित पवित्रता के संदर्भ में विचार करने पर यह वास्तव में पर्याप्त नहीं है। इसके अलावा, इसकी कोई ज़रूरत नहीं है
द्वितीयक धार्मिक के “मामले” से निपटते समय भाषा बदलें
सिद्धांतों के अनुसार, लोगों को उनकी मूल भाषा में सलाह, उपदेश और अन्य शिक्षण विधियों के माध्यम से ऐसी बातों की शिक्षा दी जाती है।

निष्कर्ष रूप में, अरबी व्याकरण और वाक्य रचना की दृष्टि से इतनी सख्त भाषा है
और व्यापक भाषा, और कुरान की अभिव्यक्तियाँ इतनी चमत्कारी हैं
और अद्वितीय, कि कोई अन्य भाषा पूर्ण अर्थ व्यक्त नहीं कर सकती।

ये व्याख्याएं बहुत ही सरल और अपूर्ण हैं, जो किसी श्लोक का सही अर्थ बताने से कोसों दूर हैं, क्योंकि इनमें से प्रत्येक में अनेक अर्थ, प्रतिध्वनियाँ और अर्थ की परतें हैं!

नौवां विषय (संतत्व की एक महत्वपूर्ण चर्चा): अहल अल-सुन्ना व अल-जमाआ, सच्चे मार्गदर्शन और सत्य के लोग जो संत का गठन करते हैं।
दुनिया के मुसलमानों के भारी बहुमत ने, अपनी धार्मिक आस्था को संरक्षित और बनाए रखा है।
कुरान की सच्चाई और पैगम्बर की सुन्नत के प्रति सख्त आज्ञाकारिता में विश्वास।
यद्यपि अधिकांश संत उनमें से ही थे, फिर भी कुछ ने उनका अनुसरण करने की आवश्यकता महसूस की।
एक ऐसा तरीका जो अहल अल-सुन्ना के कुछ सिद्धांतों से सहमत नहीं है।

ऐसे लोगों की संतता विवादास्पद बनी हुई है। कुछ लोग इसे नकारते हैं और
यहाँ तक कि उन पर विधर्म का आरोप भी लगाया जाता है, जबकि अन्य लोग उनका आँख मूँदकर अनुसरण करते हैं और कहते हैं कि
एक से अधिक सच्चे तरीके हैं। इस बाद वाले समूह ने एक विधर्मी गुट का गठन किया है,
इस तथ्य से अनजान कि मार्गदर्शन करने वाला हर व्यक्ति सच्चा मार्गदर्शक नहीं होता।
हालांकि उनके नेताओं को अत्यधिक उन्माद के आधार पर माफ किया जा सकता है,
इन लोगों को उनकी अपरंपरागतता के लिए माफ नहीं किया जा सकता। फिर भी एक तीसरा समूह
न तो उनके संतत्व को अस्वीकार करता है और न ही उनके मार्ग को स्वीकार करता है, यह देखते हुए कि ऐसा
संतों के झूठे कथनों को एक उन्मादी या पागल व्यक्ति के कथनों की तरह समझा जाना चाहिए।
आध्यात्मिक नशे के कारण होने वाली गलतियाँ।

पहला समूह, विशेष रूप से विद्वान जो बाहरी शब्दों और शब्दों से निर्णय लेते हैं
कई महत्वपूर्ण कृत्यों को नकार कर अहल अल-सुन्ना के मार्ग की रक्षा करने का प्रयास करें
संतों पर पथभ्रष्ट करने का आरोप लगाया। दूसरे समूह ने अपने सदस्यों की ऐसे आध्यात्मिक गुरुओं के बारे में अत्यधिक उच्च राय के कारण, इस प्रथा को त्याग दिया है।
सत्य के मार्ग से भटककर अपरंपरागत और यहां तक कि पथभ्रष्ट हो जाते हैं।

एक व्यक्तिगत अनुभव के रूप में जो इस मामले को स्पष्ट कर सकता है, मैंने एक बार फोन किया था
कुछ लोगों पर ईश्वर का श्राप है कि वे गुमराह हैं। लेकिन एक शक्तिशाली आध्यात्मिक प्रेरणा ने मुझे इसे त्यागने पर मजबूर कर दिया। बाद में मुझे एहसास हुआ कि वे लोग आध्यात्मिक शक्ति की मदद से अपने अनुयायियों को गुमराह करते हैं और कुछ आस्थावान लोग इस शक्ति के आकर्षण के कारण उनका अनुसरण करना उचित समझते हैं।

मुझे आश्चर्य हुआ, और मैंने खुद से पूछा: "भगवान की जय हो! क्या संतत्व हो सकता है
क्या सत्य के मार्ग के अलावा अन्य तरीकों से प्राप्त किया जा सकता है? क्या सत्य के खोजी लोग गुमराही की गंभीर प्रवृत्ति का समर्थन कर सकते हैं?”

ईद (धार्मिक त्यौहार) की पूर्व संध्या पर , सूरत अल-इखलास पढ़ते समय,
ईश्वरीय दया के उपहार के रूप में मुझे निम्नलिखित सत्य प्राप्त हुआ: जिबाली जैसे संत
बाबा, जो कथित तौर पर सुल्तान मेहमत द कॉन्करर के शासनकाल के दौरान रहते थे
(मृत्यु 1481), आध्यात्मिक नशे की हालत में हैं, हालांकि वे सचेत और विवेकशील प्रतीत होते हैं। अन्य लोग जाग्रत अवस्था में होने और
उन्माद की स्थिति में अपना आत्म-नियंत्रण खोना। इस बाद के कुछ सदस्य

समूह दो अवस्थाओं को अलग नहीं कर सकता, और इसलिए वे अपने परमानंद अनुभवों को जागृत अवस्था में लागू करते हैं और अनजाने में गलती में पड़ जाते हैं। ईश्वर उनमें से कुछ को पाप और गुमराही से बचाता है, जबकि अन्य लोग भटकाव और पाखंड के लोगों में पाए जा सकते हैं।

चूँकि ये संत आध्यात्मिक नशे या परमानंद की स्थिति में होते हैं, चाहे स्थायी रूप से या थोड़े समय के लिए, उन्हें धन्य, पागल परमानंद माना जाता है और वे धार्मिक दायित्वों का पालन करने के लिए जिम्मेदार नहीं होते हैं। चूँकि वे धार्मिक रूप से जिम्मेदार नहीं हैं, इसलिए उन्हें अपने कार्यों और कथनों के लिए जवाबदेह नहीं ठहराया जाता है। हालाँकि, हालाँकि वे अपने परमानंद संतत्व को बनाए रखते हैं, वे गुमराह करने और अपरंपरागतता का समर्थन कर सकते हैं और अपने तरीके को बढ़ावा देकर, कुछ विश्वासियों और सत्य-साधकों को अपना रास्ता अपनाने के लिए प्रेरित कर सकते हैं।

दसवीं बात (आगंतुकों के बारे में एक सिद्धांत समझाता है, जिसे कुछ मित्रों ने मुझे याद दिलाया है): आगंतुक या तो सांसारिक उद्देश्य से आते हैं (ऐसे लोगों के लिए दरवाज़ा बंद है) या अगले जीवन से संबंधित किसी मामले के लिए। इस दूसरे समूह के कुछ लोग मुझे किसी आध्यात्मिक पद का धन्य व्यक्ति मानते हैं, और इसलिए उनके लिए भी दरवाज़ा बंद है। ऐसा इसलिए है क्योंकि न तो मैं खुद को पसंद करता हूँ और न ही वे लोग जो मुझे पसंद करते हैं। मैं भगवान का शुक्रिया अदा करता हूँ कि उसने मुझे खुद को पसंद करने के लिए मजबूर नहीं किया।
दूसरे समूह के सदस्य जो कुरान की सच्चाइयों के संदेशवाहक होने के कारण मुझसे मिलना चाहते हैं, उनका स्वागत है। वे तीन समूहों में आते हैं: मित्र, भाई [बहन] और शिष्य।

दोस्त बनने के लिए, हमें ईमानदारी से कुरान की आयतों का समर्थन करना चाहिए और कुरान की रोशनी के मार्ग में हमारी सेवा से लाभ उठाने की कोशिश करनी चाहिए, और सभी गलत कामों, गुमराही और पाखंड का विरोध करना चाहिए। भाई [बहन] होने के लिए, हमें कुरान की आयतों को बढ़ाने और प्रचारित करने का प्रयास करना चाहिए , पाँच दैनिक प्रार्थनाएँ करनी चाहिए और सात प्रमुख पापों (जैसे, अविश्वास और ईश्वर के साथ साझीदार बनाना, हत्या, चोरी, सेना के आगे बढ़ने पर मोर्चे से भागना, शराब पीना और जुआ खेलना, अपने माता-पिता के साथ बुरा व्यवहार करना और पवित्र महिलाओं की निंदा करना) से बचना चाहिए।
शिष्य बनने के लिए, व्यक्ति को वचनों को इस प्रकार प्रायोजित करना चाहिए जैसे कि वे उसका अपना कार्य हों और अपना जीवन उसकी सेवा और प्रचार के लिए समर्पित कर देना चाहिए।

ये तीन समूह मेरे व्यक्तित्व के तीन पहलुओं से जुड़े हैं।
मित्र मेरे सामान्य व्यक्तित्व के कारण मुझसे संबंधित हैं, भाई-बहन मेरे ईश्वर के उपासक होने के कारण हैं, तथा शिष्य मेरे कुरान के प्रचारक और धार्मिक शिक्षक होने के कारण हैं।

वे सभी हमारी बैठकों से लाभ उठा सकते हैं, भले ही एक बार ही क्यों न हो, कुरान की हीरे जैसी सच्चाईयों को सीखने का मौका पा सकते हैं; उपासना के माध्यम से मेरी आध्यात्मिक कमाई में हिस्सा प्राप्त कर सकते हैं; और साथ मिलकर ईश्वर की ओर मुड़ सकते हैं।

मुझे, उसी भावना के साथ दिव्य न्यायालय में सहयोग करने के लिए
कुरान की सेवा, उसकी सहायता और मार्गदर्शन प्राप्त करना।

मैं हर सुबह शिष्यों का नाम याद करके या उन्हें अपने निकट पाकर महसूस करता हूँ। उनके चेहरों की कल्पना करो, और वे मेरी आध्यात्मिक कमाई में हिस्सा प्राप्त करते हैं। कई बार, मैं भाइयों [बहनों] को उनके नाम या चेहरे से याद करता हूँ और इसमें शामिल करता हूँ उन्हें मेरी प्रार्थनाओं और कमाई में शामिल किया जाता है। वे भी सभी अन्य भाइयों [बहनों] के साथ शामिल होते हैं जब मैं उन्हें अपनी प्रार्थनाओं में "मेरे भाई-बहनों" के रूप में उल्लेख करता हूं और उन्हें दिव्य दया में शामिल करता हूं। भले ही मैं ऐसा न करूं उनमें से प्रत्येक को नाम से या व्यक्तिगत रूप से जानें, दिव्य दया जानती है और देखती है उन्हें भी इस प्रार्थना में शामिल किया जाता है, यदि वे पाँचों रोज़ाना की नमाज़ अदा करते हैं और सात बड़े पापों से बचते हैं। इन तीन समूहों में शामिल होना चाहिए वे मुझे अपनी प्रार्थनाओं और आध्यात्मिक कमाई में शामिल करते हैं।

हे ईश्वर, उस पर कृपा और शांति प्रदान करें जिसने कहा: "ईमान वालों एक मजबूत इमारत की तरह हैं, जिसका एक हिस्सा दूसरे को सहारा देता है," उन्होंने कहा। परिवार और साथी। आपकी जय हो। हमारे पास इसके अलावा कोई ज्ञान नहीं है जो कुछ तूने हमें सिखाया है, वही हम करते हैं। तू ही सर्वज्ञ, अत्यन्त तत्वदर्शी है। वे कहते हैं: "प्रशंसा ईश्वर की है, जिसने हमें इस ओर मार्गदर्शित किया। यदि ईश्वर ने ऐसा किया होता, तो हम ईश्वर के मार्ग पर चलते।" अगर उसने हमें मार्ग न दिखाया होता, तो हम कभी मार्ग पर न आते। हमारे प्रभु के दूत सत्य लेकर आए।”

हे परमेश्वर, हे तूने नूह की प्रार्थना सुनी; तूने अब्राहम की सहायता की अपने शत्रुओं के विरुद्ध, जिसने यूसुफ को याकूब के पास लौटा दिया, जिसने अय्यूब को उसके कष्टों के समय, जिसने जकरयाह की पुकार सुनी, जिसने स्वीकार किया मत्ता के पुत्र योना की प्रार्थना। उन रहस्यों के माध्यम से जिनकी प्रार्थनाएं स्वीकार की गईं, हम आपसे प्रार्थना करते हैं कि आप मुझे, इन ग्रंथों के प्रकाशकों और प्रवर्तकों और उनके मित्रों को इस महामारी से बचाइए। शैतानी लोगों और जिन्न की बुराई। हमारे दुश्मनों के खिलाफ हमारी मदद करो, हमें अपने हाल पर छोड़ दो, हमारे दुख और तकलीफ को दूर करो, और हमारी बीमारियों को ठीक करो आध्यात्मिक बीमारियाँ। आमीन। आमीन।

* * *

सत्ताईसवाँ पत्र

[इस पत्र में सईद नूरसी द्वारा अपने छात्रों को तथा उनके छात्रों द्वारा उन्हें तथा एक-दूसरे को लिखे गए पत्र शामिल हैं। चूँकि वे इस पुस्तक से भी कहीं अधिक बड़ी एक विशाल पुस्तक प्रकाशित हुई है बारला के परिशिष्ट शीर्षक के तहत तीन अलग-अलग खंडों में, कस्तमोनु, और एमिरदाग।]

अट्ठाईसवाँ पत्र

अट्ठाईसवाँ पत्र

सपने • भगवान का शुक्रिया • अलग-अलग मुद्दे

(इस पत्र में आठ मुद्दे हैं, जिनमें से प्रत्येक अपने आप में एक ग्रंथ है।)

पहला अंक

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

यदि आप सपनों की व्याख्या करना जानते हैं… (12:43)

SECOND[369]: क्या मैं आपके अच्छे, आशाजनक सपने के बारे में कह सकता हूँ, जिसका अर्थ 3 साल पहले हमारी मुलाकात के 3 दिन बाद स्पष्ट हो गया था?

मैं न तो रात्रि का हूँ, न रात्रि का उपासक हूँ, बल्कि मैं सूर्य की सन्तान हूँ, अतः
सूर्य की ख़बर देता हूँ।
वे कल्पनाएँ संतों के जाल हैं; और दिव्य उद्यानों के
उज्ज्वल मुखों के प्रतिबिंब हैं।

प्रिय भाई, इस बात को ध्यान में रखते हुए, तथा आपके साथ सत्य पर चर्चा करने की मेरी आदत के कारण, तथा चूंकि सत्य की खोज के लिए स्वप्नों (जो कि सामान्यतः मानवीय कल्पनाओं से संबंधित होते हैं) पर चर्चा करना उचित नहीं है, इसलिए मैं नींद (मृत्यु का एक "भाई") के बारे में कुरान की कुछ सच्चाइयों को छह बिंदुओं में समझाऊंगा तथा सातवें बिंदु में आपके स्वप्न की व्याख्या करूंगा।

[369] पत्र का पहला भाग प्रकाशित पाठ में शामिल नहीं है। (ट्र.)

पहला बिन्दु: पैगम्बर यूसुफ (जोसेफ) के स्वप्न की तरह, सूरा का सार यह है:
यूसुफ़, ऐसी आयतें बताती हैं: हमने तुम्हारे लिए रात को आराम के लिए बनाया है (78:9)
नींद और सपनों में महत्वपूर्ण सत्य छिपे होते हैं।

दूसरा बिंदु: सत्य के लोग कुरान के प्रयोग को स्वीकार नहीं करते
एक भविष्यवाणी के रूप में या सपनों पर भरोसा करने के रूप में। चूँकि कुरान अक्सर गंभीर चेतावनी देता है
अविश्वासियों के लिए झटका, सलाह प्राप्त करने के लिए इसे खोलने वाले विश्वासियों को निराशा हो सकती है
अगर उन्हें ऐसी कोई कविता मिलती है। इसी तरह, चूंकि सपने अक्सर वास्तविकता के विपरीत होते हैं, इसलिए वे निराशा
या मनोबल को कम कर सकते हैं, भले ही वे मूल रूप से अच्छे हों
और आशाजनक। कई बुरे और डरावने सपने अच्छे साबित होते हैं
और वास्तविक जीवन में सुखद। क्योंकि हर कोई सच्चा रिश्ता नहीं पा सकता
सपने और उसके वास्तविक अर्थ के बीच की उलझन में वे बेचैन और चिंतित हो जाते हैं।
यही कारण है कि मैंने सत्य के लोगों की तरह इमाम रब्बानी को उद्धृत किया: "मैं न तो सत्य हूँ और न ही सत्यवादी हूँ"
न तो मैं रात का उपासक हूँ और न ही रात का उपासक हूँ।”

तीसरा बिन्दु: ईश्वर के दूत ने एक प्रामाणिक कथन में कहा है कि सच्चा
सपने पैगंबर के 46 पहलुओं में से एक हैं।370 इसलिए उनमें कुछ निहित हैं
सच्चाई और पैगम्बर के मिशन के साथ कुछ संबंध हैं। लेकिन मैं कोई भी सच्चाई नहीं छोड़ता
इस गहन और महत्वपूर्ण विषय पर बाद में विस्तार से चर्चा की जाएगी।

चौथा बिंदु: सपने तीन तरह के होते हैं।
कुरान की श्रेणी में "अव्यवस्थित सपने" शामिल हैं। या तो कल्पना किसी को आकार देती है
बुरे स्वभाव का विचलन या मन किसी रोमांचक घटना को याद करके
यह एक नया रूप है। दोनों ही बेकार हैं।

तीसरे प्रकार के सपने सच्चे होते हैं। जैसे सपने देखने वाले की इंद्रियाँ वास्तविकता से जुड़ी होती हैं।
नींद के दौरान बाहरी, भौतिक दुनिया काम नहीं करती, जन्मजात आंतरिक आध्यात्मिक क्षमता अदृश्य दुनिया के लिए एक
द्वार खोज सकती है। उस द्वार के माध्यम से आसन्न घटनाओं को देखते हुए, यह संरक्षित की अभिव्यक्ति से मिलता है

टैबलेट या भाग्य के "पत्रों" का एक उदाहरण और वास्तविक घटनाओं को देखता है। लेकिन जब से
कल्पना आध्यात्मिक क्षमता जो देखती है उसे “रंग” देती है, स्वप्नदृष्टा नहीं देखता
एक सटीक प्रतिबिंब देखें। इसलिए ऐसे सपनों की व्याख्या की आवश्यकता होती है, भले ही
स्वप्न के दौरान उनके अर्थ स्पष्ट होते हैं।371

पाँचवाँ बिंदु: एक सच्चा सपना एक उच्च विकसित पूर्वाभास का परिणाम है। मनुष्य और जानवर दोनों में ही एक
हद तक पूर्वाभास होता है।
मैंने पाया है कि दोनों में दो अतिरिक्त अर्थ भी हैं: प्रेरित करना और
मोहक इंद्रियाँ। हालाँकि गुमराह और भ्रष्ट सोच वाले लोग

---

370 जैसे कि आपने अपने 23 साल के पैगम्बरत्व के शुरुआती 6 महीनों में सच्चे सपने देखे थे, सच्चे सपने विश्वासियों का विश्वास एक प्रकार की दैवी प्रेरणा है।

371 एक पैगंबरी परंपरा में बताया गया है कि अपने जीवन के शुरुआती दिनों में पैगंबर के सपने पैगम्बरत्व इतना स्पष्ट था कि किसी व्याख्या की आवश्यकता नहीं थी। (ट्र.)

इन अप्राप्य इंद्रियों "प्रवृत्ति" को "जन्मजात" माना जाना चाहिए
प्रेरणा” जिसके माध्यम से दिव्य भाग्य लोगों और जानवरों को निर्देशित करता है।

इस तरह के निर्देश से एक अंधी बिल्ली को आवश्यक उपचारात्मक जड़ी-बूटी ढूंढने में मदद मिलती है, और, अपनी आँख को उससे रगड़ने से वह ठीक हो जाता है। इसी तरह, गिद्ध जैसे मांसाहारी पक्षी, पृथ्वी की सतह के सफाई अधिकारी जो जंगली जानवरों की लाशों को हटाते हैं
भाग्य की दिशा, प्रेरित पूर्वाभास, या दैवीय अभिविन्यास के माध्यम से दसियों मील दूर स्थित जानवरों के शव का पता लगाना और उसका पता लगाना।

ऐसा युवा मधुमक्खियों के साथ होता है जो दूर तक उड़ जाती हैं और फिर छत्ते में वापस आ जाती हैं
बिना किसी त्रुटि के। ऐसा तब भी होता है जब कोई व्यक्ति जिसका आपने अभी उल्लेख किया है, अप्रत्याशित रूप से प्रकट होता है।
आपकी आध्यात्मिक क्षमता ने, पूर्वाभास के माध्यम से, उस व्यक्ति के आने का एहसास किया।
ऐसी घटनाएँ इतनी आम हैं कि हमारे यहाँ एक कहावत है: "जब आप उल्लेख करते हैं
एक भेड़िया है, उसे मारने के लिए एक छड़ी पकड़ो। आप नहीं जानते कि वह व्यक्ति या भेड़िया है
न तो तुम्हारे विवेक ने तुम्हें इसके बारे में बताया है, बल्कि तुम इसे पूर्व-भावना के माध्यम से महसूस करते हो और इसलिए अनजाने में इसका उल्लेख करते हो। धर्मपरायण लोगों और संतों के बीच,
इस तरह की पूर्वधारणा आश्चर्य का स्रोत बनने तक विकसित होती है।

एक प्रकार के संतत्व से युक्त साधारण लोग कुछ हद तक समझ सकते हैं
सच्चे सपनों में भविष्य या अदृश्य दुनिया। जिस तरह से सच्चे सपनों के संबंध में नींद संतत्व की श्रेणी की तरह है, यह मनोरंजन का समय या स्थान है जिसमें
भव्य दिव्य चलचित्र दिखाए जाते हैं। अच्छे आचरण वाले लोग सोचते हैं
जो बेहतर है उसे देखते हैं और सुंदर पटियाएँ देखते हैं, जबकि बुरे आचरण वाले
सोचो कि क्या बदतर है और बदसूरत गोलियाँ देखो।

सच्चे सपने नींद को अदृश्य दुनिया की एक खिड़की बना देते हैं, एक मैदान
मनुष्यों (जो प्रतिबंधित क्षेत्र में सीमित हैं) के लिए मुक्ति और स्वतंत्रता का,
एक रंगमंच जिसमें एक प्रकार का स्थायित्व है, और एक ऐसा क्षेत्र है जिसमें केवल वर्तमान ही है
अस्तित्व में है (भूत और भविष्य एक हैं)। इसके अलावा, नींद जीवन के बोझ तले दबे जीवों के लिए विश्राम का समय है। इसे देखते हुए, कुरान हमें सिखाता है कि
नींद की सच्चाई को इन आयतों में स्पष्ट किया गया है: हमने तुम्हारे लिए आराम के लिए नींद को निर्धारित किया है (78:9)।

छठा और सबसे महत्वपूर्ण बिंदु: सच्ची घटनाओं के साथ मेरे अनुभव
सपनों ने मेरे इस विश्वास को और मजबूत कर दिया है कि ईश्वरीय नियति हर चीज को अपने में समेटे हुए है। जब मैं सच्चे सपने देखता हूँ, तो मुझे पता होता है कि मेरे साथ जो भी होगा
कल पहले से तय है। मैं रात में उनके बारे में पढ़ता हूँ, जैसे पढ़ रहा हूँ
मैं उन्हें अपनी आँखों से देखता हूँ। ऐसा शायद 1,000 बार हुआ है: जिन लोगों को मैं देखता हूँ
या जिन बातों के बारे में मैं सपने में बात करता हूँ वे अगले दिन सच हो जाती हैं
इस प्रकार कुछ भी आकस्मिक, संयोगवश या यादृच्छिक नहीं है।
बल्कि, सब कुछ नियत और पूर्वनिर्धारित है।

सातवाँ बिन्दु: आपका सुन्दर स्वप्न हमारे लिए और कुरान के लिए महत्वपूर्ण है।
समय ने इसकी व्याख्या की है और ऐसा करना जारी रखता है। यह एक तरह से अभिव्यक्त हो रहा है

शुभ तरीका है, और अगर आप इसका ध्यानपूर्वक विश्लेषण करेंगे तो आप इसे समझ जायेंगे। इसकी सच्चाई दिखाने के लिए इसके कुछ पहलुओं की व्याख्या करें। यानी, मैं एक वास्तविकता की ओर इशारा करूँगा, और जो आपने अपने सपने में देखा है, वह वास्तविकता के रूप हैं इस भौतिक संसार में.

आपने जो विशाल क्षेत्र देखा वह मुस्लिम दुनिया है। इसके दूर छोर पर मस्जिद है इस्पार्टा है। कीचड़ भरा पानी आज के समय में अपव्यय, आलस्य और धार्मिक नवाचार का दलदल है। कि आप सुरक्षित और बिना किसी परेशानी के मस्जिद तक पहुँच गए उस पानी से गंदा होना यह दर्शाता है कि आपने कुरान की रोशनी पहले प्राप्त कर ली है किसी और की तुलना में अधिक पवित्र और इस प्रकार अपने हृदय की पवित्रता को बनाए रखा। छोटी मंडली में वे लोग शामिल होते हैं जो शब्दों को व्यक्त करते हैं, जैसे हक्की, हुलुसी, साबरी, सुलेमान, रुसदु, बेकिर, मुस्तफा, 'अली, ज़ुहदु, लुत्फी, हुसरेव, और राफेट। छोटा सा पुलपिट बारला जैसा छोटा सा गांव है। आपकी ऊंची आवाज 'सुना' का अर्थ है शब्दों की शक्ति, प्रभाव और तीव्र प्रसार।

पहली पंक्ति में आपका स्थान वह सीट है जो अब्द अल-रहमान ने आपके लिए खाली छोड़ी है। मण्डली की इच्छा है कि शब्दों को विश्व स्तर पर प्रसारित किया जाए, जैसे कि रेडियो, भगवान की इच्छा से सच हो जाएगा। भले ही उस समुदाय के सदस्य अब बीज की तरह, परमेश्वर की सहायता से वे एक ऊंचे, विस्तृत वृक्ष में विकसित होंगे। पगड़ी पहने हुए लड़के को शिष्यों में शामिल किए जाने की अपेक्षा की जाती है और ऐसे प्रसारक जो हुलुसी के समान स्तर पर कुरान की सेवा करेंगे, या उससे भी आगे। मुझे लगता है कि वह कुछ ऐसे लोगों के बीच दिखाई देगा जिन्हें मैं जानता हूँ, लेकिन मैं ठीक-ठीक नहीं बता सकता कि वह कौन है। वह संतत्व की शक्ति के साथ प्रकट होगा। आप मेरे लिए अपने सपने के अन्य पहलुओं की व्याख्या कर सकते हैं।

चूँकि आप जैसे मित्रों के साथ बातचीत करना स्वीकार्य और सुखद है, इसलिए मैं मैंने इस मामले पर जितना सोचा था उससे ज़्यादा समय तक विचार किया। लेकिन जब से मैंने शुरुआत की प्रासंगिक आयतों की एक तरह की व्याख्या बताने के इरादे से, मैं आशा है कि ईश्वर मुझे माफ कर देंगे या इसे भाषण की बर्बादी नहीं मानेंगे।

दूसरा मुद्दा

(यह ग्रंथ परंपरा पर सभी संदेहों को दूर करता है और कहता है कि पैगंबर मूसा ने मृत्यु के दूत, अर्खंगेल अज्राईल की आंख पर थप्पड़ मारा।372)

किसी ने मुझे एक विश्वसनीय पुस्तक खरीदी, जिसमें एक भविष्यवक्ता परम्परा है यह चिन्ह दर्शाता है कि इमाम बुखारी और इमाम मुस्लिम इस पर सहमत हैं प्रामाणिकता पर सवाल उठाया और मुझसे पूछा कि क्या यह सच है।

मैंने जवाब दिया: हमें उस व्यक्ति के निर्णय पर भरोसा करना चाहिए जिसने वह चिन्ह डाला है। इस प्रकार परंपरा प्रामाणिक है। हालाँकि, कुछ भविष्यवाणियाँ

372 बुखारी, अंबिया', 31; मुस्लिम, फ़दा'इल, 157.

कुरान की कुछ आयतों की तरह परम्पराएँ भी प्रतीकात्मक हैं और उनके अर्थ ऐसे होते हैं जो
इसे केवल प्रतिष्ठित विद्वान ही समझ सकते हैं। यह परंपरा गिर सकती है
इस श्रेणी में.

बाद में, मैंने सुना कि इस पर एग्रीडिर में चर्चा हुई थी। ऐसी चर्चाएँ
हानिकारक हैं, खासकर अब। अगर मुझे इसके बारे में पता होता, तो मैं जवाब देता
निम्नलिखित नुसार:

प्रथम: ऐसी चर्चाएँ तभी स्वीकार्य हो सकती हैं जब वे सत्य को समझने और स्पष्टता लाने के लिए योग्य व्यक्तियों के बीच हों। इसके प्रतिभागियों को
सत्य को स्वीकार करने में सक्षम, भले ही वह उनके विरोधियों द्वारा पहुँचा गया हो। ऐसे मामले में,
जो लोग गलत थे उन्होंने अपनी अज्ञानता पर काबू पा लिया है या अपनी गलती सुधार ली है।
वे सही हैं, उन्होंने कुछ भी नया नहीं सीखा है और वे घमंडी हो सकते हैं।

दूसरा: प्रतिभागियों को परंपराओं की डिग्री, अंतर्निहित पता होना चाहिए
रहस्योद्घाटन, और भविष्यवाणी की बातों की श्रेणियाँ। वे इस तरह की बहस नहीं कर सकते
सार्वजनिक रूप से मामलों को उठाना, अधिवक्ताओं की तरह कार्य करना, अपनी राय का बचाव करना और
इस प्रकार वे अपने सद्गुणों का प्रदर्शन करते हैं और अपने अहंकार को सत्य से ऊपर रखते हैं। ऐसी चर्चाएँ आम तौर पर लोगों को नकारात्मक रूप से प्रभावित करती हैं, क्योंकि वे लोगों को सच्चाई से इनकार करने के लिए प्रोत्साहित करती हैं।
प्रामाणिक परम्पराएँ वे नहीं समझते, या तो इसलिए कि वे रूपकात्मक हैं या इसलिए कि रूपकात्मक परम्परा की शाब्दिक स्वीकृति के कारण गुमराह लोग उन्हें अंधविश्वास मानकर अस्वीकार कर सकते हैं। इसे देखते हुए, क्या
संबंधित परंपरा प्रामाणिक है या नहीं, इस बारे में संदेह दूर करने वाली सच्चाई
ऐसे मामलों और प्रतीकात्मक परंपराओं को स्पष्ट किया जाना चाहिए।

हालाँकि मैंने चौबीसवें वचन में ऐसे मामलों का विश्लेषण किया है और
उन्नीसवें पत्र में, मैं यहाँ संक्षेप में इस प्रकार चर्चा करता हूँ: स्वर्गदूत एक रूप तक सीमित नहीं हैं, क्योंकि वे एक विशेष रूप धारण करके एक पूरी प्रजाति का प्रतिनिधित्व कर सकते हैं। जैसा कि महादूत अज़राइल मृत्यु का दूत है, जिसके अधीनस्थ या
एड्स, विद्वानों में बहस है कि क्या वह हर आत्मा को खुद या उसके अधीनस्थों द्वारा लेता है
ऐसा भी करें। इस मुद्दे पर तीन राय पर चर्चा करते समय, मैं यह बताने की कोशिश करूँगा कि
इसका मतलब समझाइए: "पैगंबर मूसा ने इज़्राईल की आँख पर थप्पड़ मारा।"

पहला मत: अज़राइल हर शरीर की आत्मा लेता है। प्रकाश से निर्मित, वह
सर्वव्यापी हो सकते हैं और एक साथ कई रूप धारण कर सकते हैं और अनगिनत काम कर सकते हैं। ऐसे प्रकाश-निर्मित प्राणियों के सभी विभिन्न रूपों में उस प्राणी की
गुण और इसलिए इसके सार के समान माना जाता है।
दर्पणों में सूर्य के प्रतिबिंब उसकी ऊष्मा और प्रकाश को प्रदर्शित करते हैं, विचारों की दुनिया के विभिन्न दर्पणों में प्रकाश-व्युत्पन्न आत्मिक प्राणियों के आदर्श रूप एक समान हैं
उनके सार के साथ और उनके गुणों को धारण करते हैं।

फिर भी, वे प्रतिबिंबित क्षमता के अनुसार रूप लेते हैं
दर्पणों के उदाहरण के लिए, महादूत गेब्रियल हजारों में मौजूद थे

विभिन्न स्थानों पर तथा विभिन्न रूपों में ईश्वर के समक्ष सजदा करते हुए
पूर्व से पश्चिम तक फैले अपने भव्य पंखों के साथ सम्मान का सिंहासन,
और जब साथियों ने उन्हें साथी दिह्या के रूप में देखा।
वह स्थान की प्रतिबिंबित गुणवत्ता के अनुसार एक अलग रूप लेता है, और
एक साथ हजारों स्थानों पर उपस्थित रहें।

इस मत के अनुसार मूसा जो एक गौरवशाली पैगंबर थे
भगवान और पाँच महानतम पैगम्बरों में से एक, किसी विशेष व्यक्ति को थप्पड़ मार सकते थे
जब इज़्राईल उसकी आत्मा लेने के लिए प्रकट हुआ तो वह मानव रूप में प्रकट हुआ।

दूसरा मत: गेब्रियल, माइकल और अज़्राईल जैसे प्रधान स्वर्गदूत
उनके अधीनस्थ ऐसे होते हैं जो उनके जैसे होते हैं और उनकी देखरेख में होते हैं और जो प्राणी की प्रजाति के अनुसार अलग-अलग होते हैं। उदाहरण के लिए, अधीनस्थ देवदूत
धर्मी लोगों की आत्मा लेना, पापी लोगों की आत्मा लेने से भिन्न है।
दुष्ट.३७३ यह इस प्रकार संकेतित है: उन लोगों द्वारा जो हिंसक रूप से उखाड़ते हैं; उन लोगों द्वारा जो खींचते हैं
धीरे से बाहर निकलें (79:1-2)। इस मत के अनुसार, मूसा थप्पड़ मार सकता था
इज़्राईल के अधीनस्थों में से एक का आदर्श, ऊर्जावान शरीर उसकी महिमा के कारण,
पराक्रम, जन्मजात साहस, तथा सर्वशक्तिमान ईश्वर का प्रिय होना।374

तीसरी राय: जैसा कि उनतीसवें वचन में समझाया गया है और विभिन्न भविष्यवाणी परंपराओं द्वारा संकेत दिया गया है, कुछ स्वर्गदूतों के 40,000 सिर हैं, जिनमें से प्रत्येक के पास एक सिर है।
४०,००० जीभें और ८०,००० आंखें, और प्रत्येक जीभ द्वारा गाई गई ४०,००० स्तुति।
चूँकि कुछ देवदूत इस दुनिया में जीवों की प्रजातियों की देखरेख करते हैं और उनका प्रतिनिधित्व करते हैं
आत्माओं की दुनिया में उनकी प्रशंसा और महिमा, वे इस प्रकार होनी चाहिए
ऊपर वर्णित परंपरा द्वारा वर्णित है। उदाहरण के लिए, पृथ्वी एक ऐसा प्राणी है जो ईश्वर की महिमा करता है। इसमें 40,000 जीभ नहीं हैं, बल्कि अनगिनत प्रजातियाँ हैं, जिनमें से प्रत्येक एक सिर के अनुरूप है। प्रत्येक प्रजाति में अनगिनत व्यक्तिगत सदस्य हैं, जिनमें से प्रत्येक एक जीभ के अनुरूप है। इसे देखते हुए, पृथ्वी की देखरेख करने वाले देवदूत के पास अनगिनत सिरों में अनगिनत जीभें होनी चाहिए।

इस मत के अनुसार, इज़्राईल का एक चेहरा है और एक आँख है जो हर व्यक्ति को देखती है। इसलिए मूसा ने इज़्राईल के चेहरे पर थप्पड़ नहीं मारा।
प्रकृति ने उसे अस्वीकार और अपमानित किया, लेकिन उसकी केवल एक आंख ने उसे समाप्त करने की इच्छा व्यक्त की
उन्होंने अपना मिशन इसलिए छोड़ दिया क्योंकि वह सन्देशवाहक के रूप में अपना कर्तव्य जारी रखना चाहते थे।

---

[373] जब मृत्यु के दूत को संतों की आत्माएं लेने का जिम्मा सौंपा गया तो वह एक महान संत के पास पहुंचा।
वह एक संत थे जिन्हें हम सब जानते थे और जिनकी उपाधि "सैदा" थी, उनकी मृत्युशय्या के पास उपस्थित लोगों ने उन्हें यह प्रार्थना करते हुए सुना:
"धार्मिक विज्ञान के विद्यार्थियों की आत्मा लेने का काम जिस देवदूत को सौंपा गया है, वह मेरी आत्मा ले ले,
क्योंकि मुझे वे छात्र बहुत पसंद हैं।”

[374] ऐसा कहा जाता है कि हमारे प्रांत के एक बहादुर व्यक्ति ने मरते समय मृत्यु के दूत को देखा था।
उसने कहा: "तुमने मुझे बिस्तर पर ही पकड़ लिया है!" अपने घोड़े पर सवार होकर और अपनी तलवार उठाकर, उसने कहा: "तुमने मुझे बिस्तर पर ही पकड़ लिया है!"
देवदूत को चुनौती दी और इस प्रकार बहादुरी से मर गया।

अल्लाह ही सत्य और परोक्ष को जानता है। कह दो, "ज्ञान केवल अल्लाह के पास है।"
केवल भगवान।”
उसने तुम्हारे पास किताब उतारी, उसमें स्पष्ट तथा प्रतीकात्मक आयतें हैं।
वे लोग जिनके हृदय विचलित हैं, रूपक की खोज में रहते हैं, मतभेद की तलाश में रहते हैं
और (विकृत) व्याख्याएँ। फिर भी केवल ईश्वर ही इसकी (सच्ची) व्याख्या जानता है। जो लोग ज्ञान में दृढ़ हैं, वे
कहते हैं: "हम इस पर विश्वास करते हैं, [क्योंकि]
यह सब हमारे प्रभु की ओर से है।'' फिर भी, केवल विवेकशील लोग ही इस पर ध्यान देते हैं।

तीसरा मुद्दा

(यह मेरे भाइयों द्वारा पूछे गए प्रश्न का निजी उत्तर है, जिसे अधिकांश लोगों ने स्पष्ट रूप से तथा शेष लोगों ने मौन रूप से पूछा है।)

प्रश्न: आप अपने आगंतुकों को सलाह देते हैं: "किसी चमत्कारिक मदद या आध्यात्मिक मदद की अपेक्षा न करें
मुझसे समर्थन प्राप्त न करें। मुझे धन्य न समझें, क्योंकि मेरा कोई आध्यात्मिक पद नहीं है।
मैं मार्शल के आदेशों को निजी तौर पर प्रसारित करता हूँ, मैं आध्यात्मिक मार्शल के आदेशों को प्रसारित करता हूँ। एक दरिद्र व्यक्ति की तरह जो एक अमीर जौहरी के आभूषणों का विज्ञापन करता है, मैं विज्ञापन करता हूँ
लेकिन हम तुम्हारे पास इसलिए आते हैं क्योंकि हमें ज्ञान और हमारे ज्ञान की आवश्यकता है।
दिल और आत्मा को आत्मज्ञान और आध्यात्मिक संतुष्टि की आवश्यकता है।
हमें एक धार्मिक विद्वान की नहीं, बल्कि एक संत और सिद्ध व्यक्ति की आवश्यकता है जो हमारी संतुष्टि कर सके
आध्यात्मिक ज़रूरत। अगर आप ऐसे व्यक्ति नहीं हैं, तो क्या हम अपना समय बर्बाद कर रहे हैं?

उत्तर: निम्नलिखित पाँच बिंदुओं पर ध्यान दें और स्वयं निर्णय लें:

पहला बिन्दु: यदि कोई साधारण सेवक या निजी व्यक्ति राजा का उपहार किसी को दे देता है, तो उसे राजा के विरुद्ध दंड देना चाहिए।
जनरलों और कमांडरों को सम्मानित करता है, या उन्हें राजा के सम्मान में पदक देता है
नाम, वे यह कहकर आपत्ति करने में मूर्खता करेंगे: “हम अपने आप को नीचा नहीं करेंगे
किसी निजी व्यक्ति से वे उपहार और पदक प्राप्त करके।" यदि वह निजी व्यक्ति ऐसा नहीं करता है
जब उचित हो, तो मुख्य कमांडर को उचित सम्मान देने के लिए खड़े हो जाएं,
वह अपनी मूर्खता प्रदर्शित कर रहा होगा। यदि कोई जनरल किसी प्राइवेट के बैरक में जाता है,
राजा शाही रसोईघर से सम्मानित आगंतुक के लिए एक मेज भेजते थे
अपने वफादार सेवक की रक्षा करें ताकि उसे यह सोचकर शर्मिंदगी न उठानी पड़े कि उसके पास देने के लिए कुछ भी उपयुक्त नहीं है।

इसी तरह, कुरान के वफ़ादार सेवक, अपनी साधारणता की परवाह किए बिना, बिना किसी हिचकिचाहट के और इसके नाम पर सर्वोच्च गुण वाले लोगों तक इसके आदेशों को पहुंचाते हैं। वे आध्यात्मिक लोगों को इसके अमूल्य आभूषण प्रदान करते हैं।
धन-संपत्ति को गर्व के साथ और अपने पद के प्रति उदासीनता के साथ अर्जित करना।
वे अभिभाषक या ग्राहक हैं, वे अपने ऊपर श्रेष्ठता का भाव नहीं रख सकते
ऐसे नौकर जब नौकर अपना काम कर रहे होते हैं।

और, निःसंदेह, सेवक ऐसा करके स्वयं पर गर्व नहीं कर सकते। उन्हें शील की सीमा लांघने और अपना स्थान भूल जाने पर मजबूर कर देगा।375 यदि कुरान के पवित्र खजाने के कुछ आकांक्षी ऐसे सेवकों को संत मानते हैं, कुरान की दयालुता की विशेषता यह है कि अपने सेवकों को शर्मिंदा होने से बचाने के लिए, वह उनके दिलों को रोशन करेगा और उनके आत्माओं को संतुष्ट करेगा, और सेवकों के ज्ञान या योगदान के बिना ईश्वरीय खजाने से देगा।

दूसरा बिंदु: इमाम रब्बानी कहते हैं: "मैं एक मामले को पकड़ना पसंद करता हूँ विश्वास को पूरी तरह से समझना और उसे स्पष्ट रूप से समझाना हजारों आध्यात्मिक सुखों और परमानंदों को प्राप्त करने और चमत्कार करने तक है। सभी आध्यात्मिक यात्राओं का अंतिम पड़ाव विश्वास की सच्चाईयों की पूर्ण अनुभूति है।" यदि ऐसी शुद्ध भावनाएँ इस महान संत को प्रेरित किया, फिर शब्द (जो कुरान पढ़ने से निकलते हैं), जो विश्वास की सच्चाई को इतनी स्पष्टता और विश्वास के साथ समझाते हैं, जो कि संतत्व से अपेक्षित है।

तीसरा बिंदु: तीस साल पहले, मुझे लगभग यह अहसास हो गया था कि मृत्यु अपरिहार्य है। खुद को एक "दलदल" में पाकर, मैंने मदद मांगी और एक मार्गदर्शक की तलाश करके रास्ता निकालना। विभिन्न रास्ते देखकर, मैं रुक गया कि कौन सा रास्ता है अंततः अब्द अल-कादिर अल-जिलानी के फ़ुतुह अल-ग़ैब से परामर्श करने से पहले (अदृश्य की खोज)। वहां, मैंने पढ़ा: "आप दार अल-हिक्मा (हाउस बुद्धि का)। अपने दिल को ठीक करने के लिए एक (आध्यात्मिक) डॉक्टर की तलाश करें।

दिलचस्प बात यह है कि मैं दारुल-हिक्मा का सदस्य था। मुझे एक डॉक्टर और आध्यात्मिक मार्गदर्शक माना जाता था और मुझसे मुसलमानों के रोगों को ठीक करने की उम्मीद की जाती थी। आध्यात्मिक बीमारियाँ। और फिर भी मैं दूसरों की तुलना में आध्यात्मिक रूप से अधिक बीमार था, और इसलिए मुझे मैं खुद को दूसरों से आगे रखता हूँ।

शेख की सलाह पर अमल करते हुए मैंने उनसे मेरा इलाज करने को कहा और पढ़ना शुरू कर दिया। उनकी पुस्तक। हालाँकि, यह बहुत सख्त लग रहा था और मेरे स्वाभिमान को गंभीर रूप से चोट पहुँचा रहा था, इसने मेरे शारीरिक स्व पर एक बड़ा ऑपरेशन किया। मैं केवल आधा ही पढ़ सका इसे वापस बुककेस में रखने से पहले इसे हटा दें। थोड़ी देर बाद, ऑपरेशन का दर्द की जगह उपचार के आनंद ने ले ली। फिर मैंने इसे पूरा किया और निष्कर्ष निकाला बहुत लाभ हुआ। उनकी प्रतिदिन की महिमा और प्रार्थनाओं पर ध्यान देने से, मुझे प्राप्त हुआ बहुत ज्ञान और आध्यात्मिक संतुष्टि.

उसके बाद, मैंने इमाम रब्बानी के मकतूबात (पत्र) का अध्ययन किया। शुद्ध इरादे। दिलचस्प बात यह है कि इसमें मिर्जा को संबोधित दो पत्र थे बेदिउज़्ज़मान, जो इमाम के शिष्यों में से एक थे। मैंने कहा, "अल्लाह की महिमा हो," मेरे पिता का नाम मिर्ज़ा था और बेदिउज़्ज़माँ मेरी उपाधियों में से एक थी। और इसलिए मैं निष्कर्ष यह निकला कि वे मुझे भी संबोधित थे।

---

375 दूसरे शब्दों में, वे जो कुछ करते हैं, वह केवल इसलिए कर सकते हैं क्योंकि परमेश्वर इसकी अनुमति देता है। (ट्र.)

376 दार अल-हिक्मा उस समय की प्रमुख ओटोमन धार्मिक अकादमी थी। (सं.)

चूँकि हम दोनों एक ही स्थिति में थे, इसलिए मुझे उन पत्रों में एक उपाय मिला। वहाँ और कई अन्य स्थानों पर, इमाम सलाह देते हैं: "उन दिशाओं को एक करो जिनकी ओर तुम मुड़ते हो।" दूसरे शब्दों में, सत्य के लिए केवल एक गुरु या मार्ग का अनुसरण करो। मेरे स्वभाव और मन ने इसे अस्वीकार कर दिया। चूँकि प्रत्येक मार्ग का अपना आकर्षण होता है, इसलिए काफी समय तक मैं यह तय नहीं कर पाया कि किसका अनुसरण करूँ। इस प्रकार भ्रमित होकर, ईश्वर की करुणा ने प्रकट किया कि सबसे अच्छा मार्ग, सभी चैनलों का स्रोत और "सूर्य" जिसके चारों ओर ये "ग्रह" घूमते हैं, वह कुरान है, जिसमें सभी दिशाओं को एकीकृत किया जा सकता है। और इसलिए मैंने इस महानतम मार्गदर्शक और सबसे पवित्र गुरु को दृढ़ता से पकड़ लिया।

इस उदार उपहार को आत्मसात करने की मेरी क्षमता चाहे कितनी भी अपूर्ण और अपर्याप्त क्यों न हो, यह “जीवन का जल” जो उस सच्चे मार्गदर्शक से बहता है, मुझे उम्मीद है कि इसका मार्गदर्शन और ज्ञान मुझे इस उपहार को पवित्रता और कुछ आध्यात्मिक अवस्था वाले लोगों तक उनकी ग्रहणशीलता के अनुसार पहुँचाने में सक्षम बनाएगा। कुरान से निकलने वाले शब्द और “रोशनी” - रिसाले-ए- नूर के अन्य भाग - केवल वैज्ञानिक मामलों तक ही सीमित नहीं हैं जो दिमाग को संबोधित करते हैं, बल्कि इसमें विश्वास के मामले भी शामिल हैं जो दिल और आत्मा, आध्यात्मिक अवस्थाओं को संबोधित करते हैं, और उच्चतम स्तर पर ईश्वर का ज्ञान प्रदान करते हैं।

चौथा बिन्दु: सहाबा और उसके बाद की दो पीढ़ियों में सबसे महान संतों ने कुरान से जितना संभव हो सका, उतना ग्रहण किया और यह उनके लिए मार्गदर्शन का सच्चा और पर्याप्त स्रोत बन गया। इससे पता चलता है कि यह हर समय सत्य को व्यक्त करता है और महानतम संतों के लिए भी पर्याप्त प्रकाश बिखेरता है।

जो लोग इस्लाम के बाहरी अभ्यास का ईमानदारी से पालन करते हैं, वे दो तरीकों से इसकी सच्चाई तक पहुँच सकते हैं: आध्यात्मिक समूह में शामिल होकर और उसके पदों पर चढ़कर, या आध्यात्मिक समूह में शामिल हुए बिना ईश्वरीय कृपा से। यह दूसरा तरीका, जो सबसे सीधा और श्रेष्ठ तरीका है, साथियों और उनके उत्तराधिकारियों द्वारा अपनाया गया।

इस प्रकार कुरान की सच्चाइयों से निकलने वाली और उन्हें ज्ञात कराने वाली "रोशनी" को शब्दों और रिसाले-ए-नूर के अन्य भागों में शामिल किया गया है , ऐसा कहा जा सकता है - और वास्तव में ऐसा होता भी है - उसी मार्ग का अनुसरण करके सत्य तक पहुंचने में सक्षम बनाती है।

पाँचवाँ बिन्दु: मैं पाँच उदाहरण देकर यह बताता हूँ कि शब्द किस प्रकार मार्गदर्शन करते हैं।
सत्य सिखाएँ, इस प्रकार:

पहला उदाहरण: कुरान से निकलने वाले शब्द और "रोशनी" मेरे दिमाग को पोषित करते हैं, मेरे दिल में विश्वास जगाते हैं और मेरी आत्मा को विश्वास का आनंद देते हैं। इसके अलावा, जब एक चमत्कारी आध्यात्मिक मार्गदर्शक के शिष्य अपनी ज़रूरतों के लिए मदद मांगते हैं, तो मैं अक्सर देखता हूँ कि मेरी तत्काल ज़रूरतें चमत्कारी कुरान के ज़रिए अप्रत्याशित तरीके से पूरी होती हैं। कई उदाहरणों में से सिर्फ़ दो का हवाला देना चाहूँगा:

एक: मैं एक गरीब आदमी हूँ जो किफ़ायती तरीके से जीता हूँ। पिछले रमज़ान के दौरान, मैं तीन रोटियाँ और दो पाउंड चावल खाकर गुज़ारा करता था। पिछली गर्मियों में मैंने

बारला के पहाड़ों में, जहां आगंतुकों के आने के बावजूद, मैंने दो पाउंड मक्खन और कुछ ब्रेड का प्रबंध कर लिया।

एक बार मेरे पास एक धन्य अतिथि था, सुलेमान, जो शुक्रवार की रात को मेरे साथ पहाड़ की चोटी पर जाना चाहता था। जब हम वहाँ बैठे थे, मैंने उससे चाय बनाने को कहा। जब वह चाय बना रहा था, मैं एक जंगली चिनार के पेड़ के नीचे बैठ गया और एक गहरी घाटी को देखते हुए उदास होकर सोचने लगा: "हमारी बासी, पुरानी रोटी का एक टुकड़ा केवल आज रात के लिए ही पर्याप्त होगा। आज रात के बाद हम कैसे काम चलाएँगे? मैं उस नेकदिल आदमी को यह कैसे समझाऊँ?" और फिर, पेड़ की ओर देखते हुए, मैंने एक बड़ी रोटी देखी! मैंने सुलेमान से कहा: "हमारे लिए अच्छी खबर है! सर्वशक्तिमान ईश्वर ने हमें हमारा भोजन भेजा है।"

हमने रोटी ली, जिसे पक्षियों या जंगली जानवरों ने नहीं छुआ था। पिछले 20 या 30 दिनों से कोई भी वहाँ नहीं चढ़ा था। रोटी दो दिन तक चली, जिसके अंत में मुस्तकीम सुलेमान, जो 4 साल से मेरा वफादार साथी था, कुछ रोटी लेकर अप्रत्याशित रूप से आ गया।

दो: यह बहुत ही रोचक घटना हाल ही में घटी। मैंने एक व्यक्ति से कुछ ऐसा कहा था जिससे उसके मन में संदेह उत्पन्न हो सकता था और मैं उसे दूर करना चाहता था। मैं यह भी चाहता था कि काश मेरे पास वह पुस्तक होती जो मैंने निस को भेजी थी। मैं सुबह की प्रार्थना के बाद बैठा था, वह व्यक्ति कुछ लेकर आया। मैंने पूछा कि वह क्या है, तो उसने कहा: "निस से किसी ने मुझे आपके दरवाजे पर यह पुस्तक दी थी।" "अल्लाह की महिमा हो," मैंने सोचते हुए कहा। "यह कोई संयोग नहीं है। वह कुरान की सहायता से इस पुस्तक के साथ आया है। अल्लाह की महिमा हो। वह जो मेरे हृदय की छिपी हुई, सबसे तुच्छ इच्छा को जानता है, मुझ पर दया करता है और मेरी रक्षा करता है। इसलिए, मैं सांसारिक लोगों से मिलने वाली किसी भी सहायता का कोई हिसाब नहीं रखता।"

दूसरा उदाहरण: मेरे भतीजे अब्द अल-रहमान, जिन्हें ईश्वर ने अपनी दया में लिया, मेरे बारे में बहुत अच्छा सोचते थे, हालाँकि उन्होंने सांसारिक मामलों को आगे बढ़ाने के लिए मुझे 8 साल पहले छोड़ दिया था। उन्हें उम्मीद थी कि मैं उनकी आध्यात्मिक ज़रूरतों को ऐसे तरीके से पूरा करूँगा जो मेरी क्षमता से परे था। हालाँकि, कुरान ने उनकी मृत्यु से 3 महीने पहले दसवाँ वचन (पुनरुत्थान के बारे में) उनके पास पहुँचाकर उनकी मदद की। इसने उन्हें उनकी सारी आध्यात्मिक गंदगी, संदेह और असावधानी से शुद्ध किया। इसके अलावा, उन्होंने अपने अंतिम पत्र में तीन चमत्कार प्रदर्शित किए, जैसे कि उन्होंने संत का पद प्राप्त कर लिया हो।

तीसरा उदाहरण: बुरदुर में मेरा एक भाई था, जिसका नाम हसन इफेंडी था। वह ईश्वर का आदमी था। मेरे बारे में उसकी बहुत ऊँची राय के कारण, वह मुझसे असाधारण आध्यात्मिक मदद की उम्मीद करता था। एक दिन मैंने बुरदुर के एक गाँव के किसी व्यक्ति को बत्तीसवाँ वचन दिया। हसन इफेंडी को याद करते हुए, मैंने उस व्यक्ति से कहा कि वह उसे दे दे ताकि वह 5 या 6 दिनों तक इसका अध्ययन कर सके, लेकिन केवल तभी जब वह बुरदुर जा रहा हो।

वह व्यक्ति हसन इफेंडी के पास गया और उसे यह ग्रंथ दिया। हसन इफेंडी ने इसे मीठे पानी के झरने को देखने वाले प्यासे व्यक्ति की तरह उत्साह और उत्सुकता के साथ पढ़ा। उसे इसमें इतना आनंद और ज्ञान मिला, खासकर इसके तीसरे चरण (ईश्वर के प्रति प्रेम) में कि इससे उसकी बीमारियाँ ठीक हो गईं। इसे पढ़ने के 40 दिनों के भीतर, वह मस्जिद गया और, हालाँकि उसे कोई स्पष्ट बीमारी नहीं थी, लेकिन नमाज़ के बाद वहाँ उसकी मृत्यु हो गई (ईश्वर की दया उस पर हो)।

चौथा उदाहरण: हुलुसी बे ने स्वीकार किया कि उन्हें नक्शबंदी के तरीके की तुलना में, जो सबसे प्रभावशाली और व्यापक आध्यात्मिक तरीकों में से एक है, कुरान के रहस्यों को समझाने वाले शब्दों में अधिक ज्ञान, चमक और आध्यात्मिक आनंद मिलता है।

पाँचवाँ उदाहरण: मेरे भाई अब्दुल मजीद को मेरे भतीजे अब्दुल रहमान (भगवान की दया उन पर हो) की मृत्यु और अन्य गंभीर परिस्थितियों के कारण बहुत दुख हुआ। हालाँकि उन्हें उम्मीद थी कि मैं अपनी क्षमता से परे जाकर उनकी मदद करूँगा, लेकिन मेरा उनसे कोई संपर्क नहीं था। एक दिन मैंने उन्हें बिना किसी खास उद्देश्य के, द वर्ड्स से कुछ महत्वपूर्ण ग्रंथ भेजे।

उन्हें ध्यान से पढ़ने के बाद, उन्होंने मुझे लिखा: "भगवान की स्तुति हो, मैं अपनी परेशानियों से मुक्त हो गया हूँ। मैं पागल होने वाला था! प्रत्येक ग्रंथ मेरे लिए एक मार्गदर्शक बन गया है। हालाँकि मैं एक मार्गदर्शक से अलग हो गया, लेकिन मुझे एक साथ कई मार्गदर्शक मिल गए और मैं राहत महसूस करने लगा।" मुझे पता चला कि 'अब्द अल-मजीद में सुधार हुआ था और वह एक बेहतर स्थिति में पहुँच गया था।

कई अन्य उदाहरण दिखाते हैं कि आस्था और आध्यात्मिक उपचार से संबंधित ज्ञान, जब आवश्यकता पड़ने पर सीधे कुरान से लिया जाता है, तो उन लोगों की ज़रूरतों को पूरा करता है जो उन्हें ईमानदारी से लागू करते हैं। इस प्रकार उन्हें घोषित करने वाले या उन्हें पेश करने वाले औषधि विक्रेता की पहचान अप्रासंगिक है। वे साधारण या विख्यात, अमीर या गरीब, या आध्यात्मिक पद वाले या बिल्कुल भी पद वाले लोग हो सकते हैं।

सूरज की रोशनी होने पर मोमबत्तियों की कोई ज़रूरत नहीं है। अगर मैं तुम्हें सूरज दिखाऊँ तो तुम मुझसे मोमबत्ती क्यों माँगोगे, खासकर तब जब मेरे पास मोमबत्ती ही नहीं है?
बल्कि, मेरे लिए प्रार्थना करके और अपनी आध्यात्मिक शक्ति से मेरी मदद करें। मुझे लगता है कि मुझे आपसे मदद मांगने का अधिकार है। और प्रकाश के ग्रंथों (रिसाले-ए-नूर संग्रह में शामिल सभी पुस्तकें) से आपको जो ज्ञान और आध्यात्मिक संतुष्टि मिलती है, उससे संतुष्ट रहें।

> तेरी महिमा है, हमें कोई ज्ञान नहीं, परन्तु जो कुछ तूने हमें सिखाया है। तू सर्वज्ञ, अत्यन्त तत्वदर्शी है।
>
> हे ईश्वर, हमारे स्वामी मुहम्मद पर ऐसी कृपा प्रदान कर कि वह आपकी कृपा प्राप्त करें और उन्हें उनका हक प्रदान करें, तथा उनके परिवार और साथियों पर भी कृपा कर और उन्हें शांति प्रदान कर।

चौथा मुद्दा

उसके नाम पर.

ऐसा कुछ भी नहीं है जो उसकी प्रशंसा से उसे महिमा दे सके।

(यह एक छोटी सी घटना के बारे में पूछे गए प्रश्न का उत्तर है जिसका उद्देश्य चेतावनी देना है।)

प्रश्न: हमने सुना है कि स्थानीय पुलिस ने आपकी मस्जिद की निजता का उल्लंघन किया है। शुक्रवार की रात को क्योंकि कोई आपसे मिलने आया था। उन्होंने ऐसा क्यों किया?

उत्तर: मैं इसे ओल्ड सईद के शब्दों में समझाऊंगा, उम्मीद करता हूं कि मेरा आपके अनुयायी इससे सीखेंगे और आप संतुष्ट होंगे।

पहला बिंदु: यह शैतानी उकसावे के बाद पाखंडियों द्वारा किया गया था अविश्वासियों की ओर से। वे हमें परेशान करना चाहते थे, मण्डली को हतोत्साहित करना चाहते थे, और मुझे मेहमानों को बुलाने से रोकना चाहते थे।

दिलचस्प बात यह है कि एक दिन पहले सैर से लौटते समय मैंने एक देखा। लंबा काला साँप जो ऐसा लग रहा था मानो दो साँप आपस में जुड़े हुए हों। यह आया मेरे बाएं से ऊपर आया और मेरे और मेरे साथी के बीच में आ गया। जब मैंने पूछा उसने पूछा कि क्या उसने देखा है, तो उसने कहा कि उसने नहीं देखा। मैंने जवाब दिया, "भगवान की जय हो।" "आप इसे कैसे भूल सकते हैं?" मैंने इस पर ज़्यादा विचार नहीं किया। लेकिन बाद में मैंने इसे एक चेतावनी माना, ठीक वैसे ही जैसे मैं सपने में सांप देखता हूँ। जब भी कोई अधिकारी बुरे इरादे से आता है, तो मैं उसे सपने में सांप के रूप में देखता हूँ। एक बार मैंने कहा था
मैंने यह बात जिला गवर्नर को बताई और उसे सावधान रहने की चेतावनी दी, क्योंकि मैं अक्सर उसे साँप के रूप में देख रहा हूँ, ठीक वैसे ही जैसे मैंने उसके पूर्ववर्ती को देखा था। तो वह साँप यह स्पष्ट चेतावनी थी कि वे जल्द ही किसी न किसी तरह हम पर हमला करेंगे।

हालांकि वे इसे महत्वहीन बताते हैं, लेकिन यह हमला संविधान के अनुच्छेद 370 का उल्लंघन था। मस्जिद और नमाज़ की पवित्रता, और लोगों से मिलने और मेहमानों को बुलाने के मेरे प्राकृतिक अधिकार का उल्लंघन किया। उस अधिकारी ने एक बेईमान शिक्षक के उकसावे में आकर कहा पुलिस ने मेरे आगंतुकों को गिरफ्तार कर लिया, जबकि हम भगवान की महिमा कर रहे थे रात की प्रार्थना। वह मुझे गुस्सा दिलाना चाहता था और इस तरह मुझे पुलिस को वापस भेजने के लिए उकसाना चाहता था। लेकिन वह नहीं जानता था कि सईद के पास "एक" है हीरे की तलवार” अपनी जीभ पर, कुरान द्वारा निर्मित, और इसलिए "लकड़ी के टूटे हुए टुकड़े" से अपना बचाव न करें।377 पुलिस समझदार थी, उन्हें पता था कि कोई भी सरकार मस्जिद में नमाज़ पढ़ने वाले लोगों को परेशान नहीं करती, इसलिए उन्होंने इंतज़ार किया जब तक हमारा काम खत्म नहीं हो गया। इस देरी से नाराज होकर अधिकारी ने फील्ड चौकीदार को भेज दिया।

मैं भगवान का शुक्रिया अदा करता हूँ कि उसने मुझे ऐसे साँप जैसे लोगों से लड़ने के लिए बाध्य नहीं किया। इसलिए, मेरे भाइयों, मैं तुम्हें सलाह देता हूँ कि जब तक तुम उनसे लड़ने के लिए तैयार न हो जाओ, तब तक उनसे मत लड़ो।

---

[377] उदाहरण के लिए, गलत तरीके से (क्रोध) और गलत साधनों से (शत्रुता)। (ट्र.)

ऐसा करने के लिए मजबूर किया जाता है। उनसे बात करने के लिए खुद को नीचा न करें, क्योंकि सबसे अच्छी प्रतिक्रिया होगी
मूर्ख व्यक्ति के लिए चुप रहना ही सही है। लेकिन समझदारी से काम लें, क्योंकि यह दिखाने के लिए कि
जंगली जानवर के सामने असहायता उसे हमला करने के लिए प्रोत्साहित करती है, कमजोरी उसे हमला करने के लिए प्रेरित करती है
क्रूर लोग उन लोगों पर हमला करते हैं जो उनकी चापलूसी करते हैं [चापलूसी कमज़ोरी का एक रूप है]। हमारे दोस्तों को हमेशा सतर्क रहना चाहिए ताकि उनकी संभावित उदासीनता
या असावधानी का फायदा अविश्वासियों द्वारा नहीं उठाया जाता।

दूसरा बिन्दु: जैसा कि कहा गया है: उन लोगों की ओर मत झुको जो गलत करते हैं, नहीं तो
आग तुम्हें छू लेगी (11:113), अल्लाह उन लोगों को कड़ी धमकी देता है जो आग की ओर झुकते हैं (11:113)।
या गलत कामों का समर्थन करते हैं और जो लोग थोड़ा भी झुकाव दिखाते हैं
अविश्वास की स्वीकृति अविश्वास है, और गलत काम की स्वीकृति गलत काम है। एक सिद्ध व्यक्ति ने उस आयत के कई पहलुओं में से एक की व्याख्या इस प्रकार की
निम्नलिखित दोहे:

जो संसार में गलत काम करने वालों की सहायता करता है
नीच लोगों में से एक है;
केवल एक कुत्ता ही आनंद लेता है
एक अन्यायी शिकारी की सेवा करना।

दोनों मुखबिर, जिन्होंने मेरे प्रार्थना करने वाले अतिथि के कथित "अपराध" की सूचना दी थी, और हमले का आयोजक इसके संदर्भकर्ता होने के हकदार हैं।

तीसरा मुद्दा: आप पूछते हैं: "आप सुधार और सुधार के लिए कुरान की बुद्धिमत्ता पर भरोसा करते हैं
सबसे जिद्दी अविश्वासियों को भी सत्य की ओर मार्गदर्शन करें, और हम देखते हैं कि आप
सफल होने के लिए। तो फिर आप इन आक्रामक लोगों को आमंत्रित करके उनका मार्गदर्शन क्यों नहीं करते?"

उत्तर: यह एक बुनियादी शरिया सिद्धांत है कि जो लोग जानबूझकर
उन्हें जो हानि पहुँच रही है, उसके लिए वे दया के पात्र नहीं हैं।

कुरान की ताकत पर भरोसा करने से मैं कम से कम कुछ घंटों में सबसे जिद्दी अविश्वासी को चुप करा सकता हूँ, अगर मैं उसे मना नहीं सकता।
अपवाद सबसे घटिया किस्म के लोग हैं, जो सांप की तरह जहर उगलने में आनंद लेते हैं (लोगों को नुकसान पहुंचाते हैं)। मैं सच का अनादर कर रहा हूँ
अगर मैंने इसे ऐसे साँप जैसे, बेईमान, अन्यायी और नीच लोगों को बताया जो
सांसारिक लाभ के लिए इस्लाम को बेचकर जानबूझकर ऐसा पाखंड प्रदर्शित करना,
हीरे जैसे सत्य को पुराने कांच के टुकड़ों से बदलना (सामग्री
लाभ)। यह मवेशियों के गले में मोती सजाने जैसा होगा।
लोगों ने रिसाले-ए-नूर से कई बार सच्चाई सुनी है , लेकिन फिर भी वे पाखंड को पसंद करते हैं। सांपों की तरह, उन्हें जहर उगलने में मज़ा आता है।

चौथा बिंदु: 7 वर्षों से मेरे साथ उनका व्यवहार पूरी तरह से मनमाना और अवैध रहा है। कानून कुछ मामलों में निर्वासित और यहां तक कि निर्वासितों को भी अनुमति देता है।
जेल में बंद सभी लोग अपने रिश्तेदारों से मिलने और समाज से कुछ संपर्क बनाने के लिए जेल में बंद हैं।

साम्यवादी देशों को छोड़कर सभी देश प्रार्थना की पूर्ण स्वतंत्रता सुनिश्चित करते हैं और पूजा-अर्चना। अन्य निर्वासित लोग अपने रिश्तेदारों या प्रियजनों के साथ शहरों में रहते हैं, और समाज के साथ बातचीत करते हैं, संवाद करते हैं और यात्रा करते हैं। लेकिन मुझे इनमें से कोई भी अधिकार प्राप्त नहीं है।

इसके अलावा, वे मेरे घर पर हमला करते हैं और मेरी प्रार्थना में बाधा डालते हैं। हालाँकि शाफ़ी स्कूल के अनुसार, यह एक पैगंबर परंपरा है, दोहराना ईश्वर की महिमा के अन्य गायन के बीच ईश्वर की एकता की घोषणा, हर निर्धारित प्रार्थना के बाद प्रशंसा और उत्साह से वे मुझे रोकने की कोशिश करते हैं इसके अलावा, वे मेरे साथी नागरिकों को मुझसे मिलने की अनुमति नहीं देते हैं, यहां तक कि मस्जिद में। शबाब, बुरदुर का एक अनपढ़ आप्रवासी, एक बार यहाँ आया था वह अपनी सास के पास हवा बदलने के लिए आया था और मस्जिद में मुझसे मिलने आया था। पुलिसवाले उसे अधिकारी के पास ले गए। इस तरह के गैरकानूनी काम से खुद को बचाने की कोशिश करते हुए, उसने शबाब को छोड़ दिया और कहा: "माफ करना, लेकिन मैं बस अपना काम कर रहा था।"

उन्होंने मेरे साथ जो कुछ भी किया है, जैसे कि शुक्रवार की घटना, उसे देखते हुए रात में लोग देख सकते हैं कि वे मेरे साथ कितना मनमाना और अवैध व्यवहार करते हैं। हालाँकि वे साँप जैसे लोगों को मुझ पर हमला करने देते हैं, मैं उनसे संघर्ष करने के लिए खुद को नीचे नहीं रखता बल्कि मैं तो उन्हें उनकी बुराई से बचने के लिए सर्वशक्तिमान की ओर भेजता हूँ।

जिन लोगों ने मेरे निर्वासन की घटना को अंजाम दिया, वे अब अपने राज्य में हैं। घरों, और शक्तिशाली सरदारों एक बार फिर से अपने कुलों का नेतृत्व करते हैं। घर लौटने की अनुमति दे दी गई है। लेकिन हालांकि मेरा उनसे कोई लेना-देना नहीं है दुनिया में, वे मुझे और दो अन्य लोगों को अपवाद बनाते हैं। हालाँकि, मैंने हाल ही में सुना है कि उन दोनों में से एक को कहीं मुफ़्ती नियुक्त कर दिया गया है[378] और वह अपनी इच्छानुसार यात्रा कर सकता है (अपने गृहनगर को छोड़कर) - यहाँ तक कि अंकारा तक भी। दूसरा इस्तांबुल में रहता है और वह जिससे चाहे मिल सकता है।

इसके अलावा, दोनों के पास रिश्तेदार और समर्थन है - मेरे पास दोनों में से कोई नहीं है। भगवान की कृपा से अनुग्रह, वे बहुत प्रभावशाली हैं और उनके कई समर्थक हैं। इसके विपरीत, मुझे अवश्य ही यह कहना चाहिए एक ऐसे गांव में रहते हैं जो कुछ सबसे बेपरवाह लोगों से घिरा हुआ है। इन 6 वर्षों में, उन्होंने मुझे पड़ोसी के यहाँ केवल दो बार जाने की अनुमति दी है गांव, और वे अपनी बढ़ती हुई निरंकुशता के तहत मुझे कुचलना जारी रखते हैं।

सरकार के पास एक जैसे कानून होने चाहिए और उनमें भेदभाव नहीं होना चाहिए। लोगों या निवास स्थानों के बारे में जानकारी नहीं है। इसे देखते हुए, मेरे साथ उनका व्यवहार पूरी तरह से अवैध और मनमाना है। ये जिला अधिकारी अपनी खुद की शिकायतों को संतुष्ट करने के लिए सरकार की शक्ति का उपयोग करते हैं।

वे मेरे साथ जैसा भी व्यवहार करें, मैं दयालुतम दयालु का धन्यवाद करता हूँ। मैं घोषणा करता हूँ, कि मुझ पर उनका आशीर्वाद है, कि उनका निरंकुश और तेजी से आक्रामक उपचार हमें सेवा प्रदान करता है, रिसाले-ए नूर

---

[378] मुफ़्ती: एक धार्मिक अधिकारी जो किसी कानूनी या धार्मिक मामले पर इस्लाम के फरमान की व्याख्या करता है। (ट्र.)

हम छात्रों को यह सलाह देते हैं कि वे हमारे उत्साह की आग को जलाने के लिए लकड़ी का काम करें तथा कुरान की रोशनी फैलाने के हमारे प्रयासों को और अधिक प्रज्वलित करें।

वे रोशनियाँ, जो प्रतिदिन बढ़ते दबाव और निरंतर प्रयास की “हवा” के माध्यम से उज्जवल होती जा रही हैं, ने बरला, इस प्रांत और यहाँ तक कि तुर्की के अधिकांश भाग को एक ऐसा स्कूल बना दिया है जहाँ रिसाले -ए-नूर की मदद से कुरान का अध्ययन किया जाता है।

वे मुझे एक गांव में कैदी समझते हैं, लेकिन उनकी इच्छा के विपरीत, बारला कुरान की शिक्षा देने वाली एक संस्था बन गई है। और कई प्रांत, जिनमें इस्पार्टा भी शामिल है, स्कूल बन गए हैं।

सारी प्रशंसा अल्लाह के लिए है, क्योंकि यह मेरे रब की कृपा से है।

पांचवां अंक:: धन्यवाद का ग्रंथ

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

ऐसी कोई भी चीज़ नहीं है जो उसकी स्तुति से उसकी महिमा न करती हो।

कुरान में इस तरह के वाक्यों को दोहराया गया है: क्या वे कृतज्ञ नहीं होंगे? हम कृतज्ञ लोगों को पुरस्कृत करेंगे। यदि तुम कृतज्ञ होगे, तो मैं तुम्हें और अधिक दूँगा। नहीं, बल्कि तुम ईश्वर की सेवा करते हो, इसलिए कृतज्ञ बनो, ताकि यह दर्शाया जा सके कि दयालु निर्माता का सबसे महत्वपूर्ण आदेश धन्यवाद देना है। यह घोषणा करते हुए कि ऐसा न करना उपकारों से इन्कार करना है, वह उन्हें सूरत अल-रहमान में कम से कम 31 बार कड़ी फटकार लगाता है: "तो फिर तुम अपने रब की किन-किन उपकारों से इन्कार करते हो?"

अपने सूक्ष्म जगत अर्थात बुद्धिमान कुरान की तरह, यह ब्रह्मांड (वृहद कुरान) भी दर्शाता है कि सृष्टि का सबसे महत्वपूर्ण परिणाम धन्यवाद है। हम देख सकते हैं कि ब्रह्मांड को धन्यवाद जगाने के लिए व्यवस्थित किया गया है, और हर चीज इसके लिए आह्वान करती है। ऐसा लगता है कि धन्यवाद सृष्टि के वृक्ष का सबसे महत्वपूर्ण फल है और ब्रह्मांड के इस कारखाने का सबसे अच्छा उत्पाद है,379 क्योंकि ब्रह्मांड एक चक्र के रूप में है, जिसके केंद्र में जीवन है। सृष्टि का डिज़ाइन जीवन की ओर निर्देशित है, क्योंकि हर चीज जीवन की सेवा करती है और इसकी आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए काम करती है। इसका मतलब यह है कि ब्रह्मांड के निर्माता ने ब्रह्मांड में जीवन को विशेष महत्व दिया है, जीवित प्राणियों की दुनिया को गोलाकार रूपों में बनाया है, और मानवता को केंद्र में रखा है। जीवित प्राणियों को बनाने के उद्देश्य मानवता की ओर निर्देशित हैं, जिसकी सेवा अन्य सभी प्राणी करते हैं।

इसका अर्थ यह है कि महान सृष्टिकर्ता ने मानवता को उन पर शासन करने के लिए चुना है।

---

[379] सैद नूरसी मानवता को सृष्टि का फल मानते हैं। इस संदर्भ में, वे फल का उपयोग कर्तव्य और उद्देश्य के अर्थ में करते हैं, जो मानवता का पहला कर्तव्य है। (अनुवाद)

गोलाकार मानव और पशु दुनिया के केंद्र में प्रावधान या है जीविका। सृष्टिकर्ता ने लोगों और जानवरों में प्रावधान के लिए प्रेम पैदा किया, और उन्हें इसके लिए काम करने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने एक विशाल और समृद्ध खजाने का प्रावधान किया अनंत उपहारों का। ताकि लोग और जानवर प्रत्येक स्वाद को पहचान सकें, उन्होंने जीभ को उतने ही स्वादों में भेद करने में सक्षम बनाया जितने खाद्य पदार्थ हैं और पेय। इसे देखते हुए, प्रावधान ब्रह्मांड का सबसे स्पष्ट, व्यापक, जिज्ञासु, और मनभावन वास्तविकता.

चूँकि सब कुछ प्रावधान के इर्द-गिर्द केंद्रित और निर्देशित है, प्रावधान स्वयं आता है, निर्वाह करता है, और धन्यवाद की ओर संकेत करता है। ऐसा इसलिए है क्योंकि प्रावधान की आवश्यकता और इच्छा एक स्वाभाविक धन्यवाद है, और प्रावधान से आने वाला आनंद और संतुष्टि एक अचेतन धन्यवाद है। ये दोनों ही सभी सजीव प्राणियों में समान हैं।

जो लोग गुमराही और अविश्वास के माध्यम से इस तरह के धन्यवाद की प्रकृति को बदल देते हैं, वे ईश्वर के साथ साझेदारी करने लगते हैं।

उपहारों के सुंदर रूप, उनका स्वाद और गंध, निमंत्रण हैं धन्यवाद देने के लिए। जीवित प्राणियों में इच्छा जगाकर और इस तरह निर्देशित करके उन्हें प्रावधान की सराहना और सम्मान करने के लिए, वे जानवरों से धन्यवाद देने का आग्रह करते हैं अपने स्वभाव के माध्यम से, और लोगों को अपनी वाणी और कार्यों के माध्यम से ऐसा करना चाहिए। वे जीवित प्राणियों को धन्यवाद के माध्यम से महानतम आनंद और संतुष्टि का अनुभव भी कराते हैं।

दूसरे शब्दों में, सर्वशक्तिमान दयालु और सर्व-उदारवादी स्वामी को दर्शाते हुए, करुणा की सबसे सुखद और स्थायी कृपा का खजाना और उपहारों के अस्थायी आनंद के पीछे का अनुग्रह मानवता को सक्षम बनाता है इस दुनिया में रहते हुए स्वर्ग का स्थायी आनंद अनुभव करें। धन्यवाद के माध्यम से एक अमूल्य और समृद्ध खजाना बन जाता है, लेकिन कम हो जाता है कृतज्ञता के अभाव में लगभग कुछ भी नहीं।

जैसा कि छठे वचन में बताया गया है, यदि जीभ की स्वाद की इंद्रिय का उपयोग किया जाता है भगवान के लिए, प्रावधान के प्रकारों को अलग करने के इरादे से धन्यवाद देते हुए, यह ईश्वर की असीम दया के अनगिनत खजानों का एक आभारी परीक्षक और एक उच्च सम्मानित पर्यवेक्षक बन जाता है। लेकिन अगर यह भावना शारीरिक स्वार्थ के लिए इस्तेमाल किया जाता है और प्रदाता को धन्यवाद नहीं देता है, यह केवल पेट की फैक्ट्री का चौकीदार है, पेट की कार्यशाला का एक दरबान है। धन्यवाद देने से प्रावधान का सेवक, प्रावधान की प्रकृति ही कम हो जाती है और इसके अन्य सेवक (जैसे, हवा, प्रकाश और पानी) भी उसी प्रकार कम हो जाते हैं निम्नतम रैंक और ज्ञान के विपरीत और विरोधी गुणवत्ता को ग्रहण करें ब्रह्माण्ड का निर्माता.

धन्यवाद देना संतोष और बचत, सहमति और कृतज्ञता से पहचाना जाता है; धन्यवाद न देना लालच और बर्बादी, कृतघ्नता और वैध और अवैध की परवाह किए बिना उपभोग करने से पहचाना जाता है। लालच से दुराचार और अपमान होता है। यह भी कहा जा सकता है कि चींटी, वह धन्य जानवर है

सामाजिक जीवन जीने वाली मधुमक्खी को पैरों तले रौंदा जाता है क्योंकि लालच के कारण वह हजारों दाने इकट्ठा कर लेती है जबकि कुछ दाने ही काफी हो सकते हैं। लेकिन मधुमक्खी ऊपर से उड़ती है
यह अपनी संतुष्टि के कारण, ऐसा कहा जा सकता है, और लोगों को अपना शहद प्रदान करता है।

वह दिव्य नाम जो परम दयालु है, पवित्रतम का सबसे बड़ा नाम है
ईश्वर के बाद आने वाला दिव्य सार (उसका वास्तविक नाम और सबसे महान
महानतम नाम) प्रावधान से संबंधित है। पहला और सबसे स्पष्ट अर्थ
दयालु परमेश्वर ही सब कुछ प्रदान करने वाला है। उस नाम से मनुष्य जुड़ा हुआ है
धन्यवाद। धन्यवाद के कई प्रकारों में से, सबसे व्यापक
यह दैनिक निर्धारित प्रार्थना है।

धन्यवाद ज्ञापन में एक ईमानदार विश्वास और एक वास्तविक घोषणा शामिल है
ईश्वर की एकता। जो सेब खाता है और कहता है: "सभी प्रशंसा और धन्यवाद ईश्वर को है
ईश्वर" यह घोषणा करता है कि सेब शक्ति के हाथ से आया है, यह ईश्वर का उपहार है।
उसकी दया का खजाना, और इस प्रकार सब कुछ भगवान के शक्तिशाली हाथ को सौंपता है
और हर चीज़ में उसकी दया को प्रकट होता देखता है।

मैं उन लोगों को होने वाली हानि के एक पहलू की ओर ध्यान दिलाना चाहता हूँ जो धन्यवाद नहीं देते।
जब लोग किसी स्वादिष्ट चीज के लिए भगवान को धन्यवाद देते हैं, तो एक प्रकाश उत्पन्न होता है और
स्वर्ग का फल बन जाता है। भौतिक सुख के अलावा, यह और भी बहुत कुछ देता है
और स्थायी आध्यात्मिक आनंद क्योंकि यह लोगों को इस पर चिंतन करने के लिए प्रेरित करता है
ईश्वरीय दया के उपकार के रूप में। इस प्रकार ईश्वर द्वारा दिया गया कोई भी भोजन उपहार स्वरूप दिया जाता है।
कृतज्ञता के कारण उच्चतर, निराकार लोकों में इसकी आध्यात्मिक परिणति होती है।

उसके बाद, यह शरीर को पोषण देने के लिए पच जाता है और मिट्टी में तत्व बनने के लिए उत्सर्जित होता है।
धन्यवाद के बिना, यह भौतिक सुख अंततः
इसका परिणाम दुःख होता है क्योंकि यह गायब हो जाता है और भोजन अपशिष्ट पदार्थ बन जाता है।
उपभोग्य वस्तुएं स्थायी आनंद उत्पन्न करती हैं और स्थायी लाभ देती हैं
धन्यवाद के माध्यम से फल प्राप्त करते हैं; इसके बिना, वे सबसे निम्न रूप बन जाते हैं
सबसे बुरी प्रकृति, क्योंकि लापरवाह, कृतघ्न लोग उन्हें केवल होने वाली चीज़ों के रूप में देखते हैं
खाया जाता है और फिर उत्सर्जित किया जाता है।

प्रावधान प्रेम का हकदार है। जबकि धन्यवाद इस प्रेम को ऊपर उठाता है
उत्कृष्ट, स्थायी प्रेम (ईश्वर का प्रेम), वह प्रेम जो लापरवाह और गुमराह लोग प्रावधान के लिए महसूस करते हैं, वह प्रकृति में पशुवत है। महान क्षति पर विचार करें
ऐसे लोग अनुभव करते हैं!

मानवता को भोजन की सबसे अधिक आवश्यकता है। सर्वशक्तिमान ईश्वर ने इसे बनाया है
मानवता को उनके नाम को प्रतिबिंबित करने वाले दर्पण के रूप में, शक्ति के चमत्कार के रूप में

उसकी दया के खजाने की सामग्री को तौलना और पहचानना, और पृथ्वी पर एक प्रतिनिधि के रूप में उसके नाम की सबसे सूक्ष्म अभिव्यक्तियों को मापने में सक्षम होना। इसे देखते हुए, मानवता को सभी प्रकार की भौतिक और आध्यात्मिक व्यवस्था की आवश्यकता है। इस तरह की व्यापक प्रकृति होने के कारण, लोग केवल धन्यवाद के माध्यम से उच्चतम पद (सृष्टि का "सर्वोत्तम नमूना" होने के नाते) प्राप्त कर सकते हैं। इसके बिना, वे सबसे भयानक पाप करते हैं और सबसे निचले स्तर पर गिर जाते हैं।

उपासना करने के मार्ग के चार स्तम्भ हैं और (इस प्रकार)
परमेश्वर के प्रिय सेवक, जैसा कि निम्नलिखित में कहा गया है:

ईश्वर के समक्ष अपनी शक्तिहीनता के प्रति जागरूकता पर निर्भर रहने के लिए चार बातें आवश्यक हैं;
हे प्रियजन, वे हैं, अपनी पूर्ण
शक्तिहीनता और दरिद्रता (ईश्वर के समक्ष) की स्वीकृति, तथा (ईश्वर
के कार्य में) पूर्ण धन्यवाद और उत्साह।

इस प्रकार सबसे आवश्यक स्तंभ धन्यवाद है।

हे ईश्वर, अपनी दया से हमें धन्यवाद देने वालों में शामिल कर, हे दयालुओं में सबसे दयालु। आपकी महिमा हो। हमें सिर्फ़ वही ज्ञान है जो आपने हमें सिखाया है। आप सर्वज्ञ, सर्वज्ञ हैं। हे ईश्वर, हमारे गुरु मुहम्मद, धन्यवाद करने वालों और प्रशंसा करने वालों के स्वामी, उनके परिवार और साथियों पर कृपा और शांति प्रदान करें। आमीन। उनका अंतिम आह्वान है: "सभी प्रशंसा ईश्वर के लिए है।"

छठा अंक

[यह पुस्तक में शामिल नहीं है, क्योंकि यह अन्यत्र प्रकाशित हो चुकी है।]

सातवां अंक

[चूंकि यह मुद्दा कुछ व्यक्तिगत मामलों से संबंधित है, इसलिए इसे अनुवाद में शामिल नहीं किया गया है।]

आठवां अंक

(इस ग्रंथ में प्रश्नों के उत्तर के रूप में बिंदु दिए गए हैं।)

चौथा मुद्दा: आप पूछते हैं: “सर्वोच्च सभास्थल का निर्माण कैसे किया जाएगा?”
लोग वहाँ कैसे इकट्ठे होंगे? क्या वे नंगे होंगे? वे अपने दोस्तों से कैसे मिलेंगे और ईश्वर के दूत से कैसे प्रार्थना करेंगे? ईश्वर के दूत कैसे वहाँ एकत्रित होंगे?

"क्या आप जानते हैं कि पैगंबर अनगिनत लोगों से व्यक्तिगत रूप से मिलेंगे? जन्नत और जहन्नम के लोग कैसे कपड़े पहनेंगे? हमें रास्ता कौन दिखाएगा?"

उत्तर: चूँकि उत्तर परम्पराओं की पुस्तकों में दिए गए हैं, मैं उल्लेख करता हूँ
हमारे मार्ग से संबंधित केवल कुछ बिंदु:

पहला: दसवाँ पत्र बताता है कि पृथ्वी अपनी वार्षिक कक्षा में एक विशाल वृत्त खींचती है और हर साल उस पर जो कुछ भी हुआ है उसके अमूर्त परिणाम को उस वृत्त की पट्टियों में खाली कर देती है। न्याय के दिन, पृथ्वी के जीवन का कुल परिणाम परलोक के लिए विशिष्ट रूप धारण कर लेगा। अंतिम दिन, पृथ्वी अपने केंद्र में स्थित छोटे नरक को परलोक के नरक में जमा कर देगी, और इसकी सामग्री को सर्वोच्च सभा के स्थान में खाली कर देगी, जिसे पृथ्वी की वार्षिक कक्षा पर बनाया जाएगा।

दूसरा: वचन, मुख्यतः दसवां और उनतीसवां, यह साबित करते हैं कि मृतकों को न्याय के दिन पुनर्जीवित किया जाएगा और उन्हें सर्वोच्च सभा के स्थान पर इकट्ठा किया जाएगा।

तीसरा: सोलहवें, इकतीसवें और बत्तीसवें वचन बताते हैं कि ईश्वर का दूत किस तरह सभी से मिल सकेगा। जिस तरह सूर्य की चमक उसे एक ही समय में हर जगह मौजूद रहने में सक्षम बनाती है, उसी तरह उसकी प्रकृति की चमक उसे हज़ारों जगहों पर मौजूद रहने और एक ही समय में लाखों लोगों से मिलने की अनुमति देगी।

चौथा: सर्वशक्तिमान ईश्वर मानवता को छोड़कर सभी जीवित प्राणियों के लिए एक प्राकृतिक आवरण प्रदान करता है। इसलिए, अपने सर्वज्ञ होने की आवश्यकता के अनुसार, वह मानवता को सर्वोच्च सभा के स्थान पर एक प्राकृतिक आवरण प्रदान करेगा, क्योंकि किसी को भी कृत्रिम कपड़ों की आवश्यकता नहीं होगी। लोग सर्दी और गर्मी से बचने के लिए कृत्रिम कपड़ों का उपयोग करते हैं, साथ ही अपने निजी अंगों को ढकने और अन्य प्रजातियों पर अपनी कमांडिंग स्थिति और नियंत्रण दिखाने के लिए भी। अगर ऐसा नहीं होता, तो वे काफी सरलता से कपड़े पहनते। मानवता को विस्तृत कपड़े पहनने की आवश्यकता के इस ज्ञान के बिना, फटे कपड़े पहनने वाले व्यक्ति का अन्य सचेत प्राणियों द्वारा उपहास किया जाएगा। चूँकि सर्वोच्च सभा के स्थान पर इस ज्ञान की तलाश नहीं की जाएगी, इसलिए कृत्रिम कपड़े अनावश्यक होंगे।

पांचवां: कुरान की रोशनी में शरण लेने वालों के लिए मार्गदर्शक कुरान ही होगा। अलिफ-लम-मीम, अलिफ-लम-रा और हा-मीम से शुरू होने वाले सूरों को देखें और देखें कि कुरान कितना स्वीकार्य मध्यस्थ, सच्चा मार्गदर्शक और पवित्र प्रकाश है।

छठा: जहाँ तक जन्नत और जहन्नम के लोगों के कपड़ों का सवाल है, तो अट्ठाईसवें वचन में हूरियों के 70 गुना प्लीटेड परिधान को समझाने के लिए जो सिद्धांत बताया गया है, वह इस मामले को समझने के लिए काफी है। जन्नत के लोग जन्नत के हर हिस्से से निर्बाध आनंद का अनुभव करना चाहते हैं।

उसी समय। स्वर्ग में असंख्य प्रकार की सुन्दरताएँ हैं जिनके साथ वे
लगातार बातचीत करते हैं। और इसलिए वे खुद को और अपनी हूरियों को उन सुंदरियों के नमूनों में सजाते हैं,
प्रत्येक को एक लघु स्वर्ग में बदल देते हैं।

जिस प्रकार एक माली अपने बगीचे में प्रत्येक फूल का एक नमूना उगाता है,
उनके देश में, दुकानदार अपनी सूची के उदाहरण सूचीबद्ध करते हैं, या लोग
वे जिन चीज़ों का इस्तेमाल करते हैं या फेंकते हैं उनसे अपने कपड़े या घर का सामान बनाते हैं
स्वर्ग के लोग और उनकी हूरें ईश्वर की दया से सुसज्जित होंगी
स्वर्ग की सुन्दरता को प्रदर्शित करने का फैशन ताकि ये सुन्दरता प्रत्येक को प्रसन्न कर सके
भावना और अनुभूति को पहचानें और प्रत्येक क्षमता को संतुष्ट करें। यह विशेष रूप से उन लोगों के लिए सच है
जिन्होंने इस संसार में रहते हुए अपनी समस्त इन्द्रियों और क्षमताओं से भगवान की आराधना की,
क्योंकि ऐसे लोग स्वर्ग के सभी सुखों के हकदार हैं।

परंपरा: "हूरी एक के ऊपर एक 70 दिव्य वस्त्र पहनते हैं,
लेकिन उनके पैरों में मज्जा अभी भी बोधगम्य है," यह दर्शाता है कि वस्त्र
जन्नत के लोग जो वस्त्र पहनते हैं, वे एक जैसे नहीं होते।380
सबसे बाहरी से लेकर सबसे आंतरिक तक, एक अलग स्तर का है ताकि सभी इंद्रियां और भावनाएं विशिष्ट
सुंदरता के माध्यम से अपने विशिष्ट सुख प्राप्त करें।
बुद्धि और न्याय के अनुसार, नरक के लोगों को वस्त्र पहनाए जाएंगे

---

[380] बुखारी, बद अल-खल्क, 8; तिर्मिज़ी, क़ियामा, 60. जन्नत में सबसे बड़ी नेमत है
ईश्वर की स्वीकृति और प्रसन्नता प्राप्त करना, तथा जैसा कि कुछ आयतों में कहा गया है और कुछ परम्पराओं में स्पष्ट रूप से कहा गया है, गुणवत्ता और मात्रा की सभी अवधारणाओं से परे ईश्वर को देखना।
हालाँकि, चूँकि इस तरह के विशुद्ध आध्यात्मिक आशीर्वाद विश्वासियों के अभिजात वर्ग से संबंधित हैं, कुरान आमतौर पर स्वर्ग के आशीर्वाद का उल्लेख करता है जैसे कि वे विशुद्ध रूप से आध्यात्मिक थे।
शारीरिक सुख। मनुष्य केवल आत्मा से नहीं बना है, बल्कि त्रिपक्षीय है
आत्मा, शारीरिक आत्मा और मांस (भौतिक शरीर) से बने प्राणी। चूँकि एक आस्तिक का
शरीर और शारीरिक आत्मा संसार में उसकी सेवा करते हैं, कुछ कष्ट सहते हैं, और
कुछ सांसारिक सुखों से वंचित होने पर प्रत्येक शरीर को अनुशासित और प्रशिक्षित होना होगा
उन्हें भी उनके लिए विशेष सुखों से पुरस्कृत किया जाना चाहिए। हालाँकि, यह नहीं होना चाहिए
सोचा कि वे सुख विशुद्ध रूप से भौतिक हैं। आध्यात्मिक संतुष्टि वे करेंगे
देना भौतिक संतुष्टि से बड़ा है। उदाहरण के लिए, हर व्यक्ति को एक दोस्त की ज़रूरत होती है,
एक साथी। किसी व्यक्ति की मानवीय ज़रूरतों को सबसे ज़्यादा संतुष्ट करने वाला एक अंतरंग जीवन साथी होना है जिसके साथ वह प्यार, खुशी और दुख साझा कर सके। चूँकि सबसे दयालु और सबसे ज़्यादा करुणामय और उदार दिल एक महिला का दिल होता है, इसलिए कुरान में महिलाओं का ज़िक्र इस तरह किया गया है
पुरुषों के लिए स्वर्ग की सबसे बड़ी कृपाओं में से एक है, न कि इसके विपरीत। यानी, कामुक सुख के अलावा, एक महिला उसे आध्यात्मिक सुख भी दे सकती है
जीवनसाथी के प्रति करुणा, प्रेम और जीवन-साथी होने जैसी उच्च भावनाओं के माध्यम से उसका अनुभव करना
एक पुरुष उसे जितना दे सकता है, उससे कहीं ज़्यादा। इसका मतलब यह नहीं है कि स्वर्ग में महिलाओं को छोड़ दिया जाएगा
बिना साथियों के। आपसी मदद से मिलने वाली खुशी, खुशी और गम को साझा करना
एक दूसरे का साथ और साथ, और जो प्यार, स्नेह और आत्मीयता द्वारा प्रदान किया जाता है,
पुरुषों और महिलाओं द्वारा एक दूसरे को दिए जाने वाले शारीरिक सुखों से कहीं अधिक है।
शारीरिक सुखों से पराजित और उनमें शामिल आध्यात्मिक सुखों से अनभिज्ञ
स्वर्ग को कामुक आनंद का क्षेत्र मानते हैं। हालाँकि, वे गलत हैं। (ट्र.)

वस्त्र जो प्रत्येक व्यक्ति को एक विशेष यातना भुगतने के लिए बाध्य करेंगे, क्योंकि उन्होंने जीवित रहते हुए अपने शारीरिक अंगों, बुद्धि, इत्यादि से पाप किया है। प्रत्येक वस्त्र एक लघु नरक की तरह होगा।

पाँचवाँ मुद्दा: आप पूछते हैं: "क्या पैगम्बर के पूर्वज किसी धर्म के प्रति समर्पित थे?
क्या इस अन्तराल के दौरान (जब कोई पैगम्बर नहीं आया) कोई विशेष धर्म था?

उत्तर: कुछ परम्पराएँ बताती हैं कि उन्होंने अब्राहम के धर्म के अवशेषों का पालन किया, जो कुछ लोगों में लापरवाही और आध्यात्मिक अंधकार के व्यापक आवरण के बावजूद जीवित रहा। अब्राहम से शुरू होने वाले और ईश्वर के दूत के रूप में परिणत होने वाले एक शानदार वंश के सदस्य सच्चे धर्म के प्रकाश के प्रति उदासीन नहीं रहे होंगे या अविश्वास के अंधकार से अभिभूत नहीं हुए होंगे।

जो लोग इस अंतराल के दौरान जीवित रहे, उन्हें धर्म के गौण आदेशों में उनकी गलतियों के लिए जवाबदेह नहीं ठहराया जाएगा।

इसके अलावा, जैसा कि कहा गया है: हम तब तक सज़ा नहीं देते जब तक कि हम कोई रसूल न भेज दें (17:15), वे जहन्नम की आग से मुक्त रहेंगे। इमाम शाफ़ीई और इमाम अशरी का कहना है कि वे जहन्नम की यातना से बच जाएँगे, भले ही वे ईमान न रखते हों और ईमान के स्तंभों से अनभिज्ञ हों, क्योंकि ईश्वर अपने बंदों को अपने आदेशों के लिए तभी ज़िम्मेदार ठहराता है जब वह रसूल को भेजता है। इसके अलावा, लोगों को तभी ज़िम्मेदार ठहराया जा सकता है जब वे ईमान और ईश्वरीय आदेशों से अवगत हों। चूँकि समय बीतने के साथ पहले के पैगम्बरों के धर्म भी समाप्त हो गए, इसलिए जो लोग अंतराल के दौरान रहते थे, उन्हें उन धर्मों का पालन न करने के लिए दंडित नहीं किया जा सकता। लेकिन जिन लोगों ने उन धर्मों के कुछ आदेशों का पालन किया, चाहे सचेत रूप से या अनजाने में, उन्हें पुरस्कृत किया जाएगा; जिन्होंने ऐसा नहीं किया, उन्हें दंडित नहीं किया जाएगा।

छठा मुद्दा: आप पूछते हैं: "क्या रसूलों के बीच कोई पैगम्बर आया?"
पूर्वज?"

जवाब: ऐसी कोई रिवायत या आयत नहीं है जो हमें बताए कि इस्माइल के बाद कोई और आया या नहीं। दो पैगम्बर, खालिद इब्न सिनान और हनज़ला, आए, लेकिन वे रसूल की वंशावली से नहीं थे। फिर भी, क़ाब इब्न लुअय का दोहा, जो उस वंशावली से था,

पैगम्बर मुहम्मद असावधानी के समय प्रकट होंगे, वह समाचार देंगे, जिनमें से प्रत्येक
में वह सच्चे हैं।

ऐसा लगता है कि यह चमत्कारी है और इसलिए यह पैगंबर से संबंधित है। इमाम रब्बानी ने साक्ष्य और आध्यात्मिक खोज के आधार पर कहा: "भारत में कई पैगंबर आए, लेकिन, चूंकि उनमें से किसी एक या केवल कुछ ने ही उनका अनुसरण किया, इसलिए वे या तो प्रसिद्ध नहीं हुए या उन्हें पैगंबर के रूप में मान्यता नहीं मिली।" इस आधार पर

प्रख्यात इमाम के दृष्टिकोण से, हम कह सकते हैं कि ऐसे पैगम्बरों ने
दूत के वंश में प्रकट हुआ।

सातवाँ मुद्दा: आप पूछते हैं: "पैगंबर के माता-पिता और दादा (अब्द अल-मुत्तलिब) के विश्वास के बारे में सबसे सच्ची और सबसे स्वीकार्य राय क्या है?"

उत्तर: पिछले दस वर्षों से मेरे पास केवल कुरान ही है, और मैं इसे अपने पास नहीं रखता।
मेरे पास इस तरह के विवरणों के लिए परम्परा की पुस्तकों पर शोध करने के लिए पर्याप्त समय है।
हालाँकि, उसके माता-पिता ईमान और जन्नत के लोगों में से हैं, क्योंकि अल्लाह ने उन्हें स्वर्ग दिया है।
सर्वशक्तिमान अपने सबसे महान प्रिय की भावनाओं और स्नेह को ठेस नहीं पहुँचाएगा
अपने माता-पिता के लिए.

यदि आप पूछें कि वे उसकी पैगम्बरी तक जीवित क्यों नहीं रहे, ताकि वे
उस पर विश्वास करो, मैं जवाब देता हूं: अपने सबसे महान प्रिय की पुत्रवत भावनाओं को खुश करने के लिए, भगवान
शायद भगवान ने चाहा होगा कि उसके माता-पिता उसके प्रति ऋणी न रहें।
उनकी करुणा की यह मांग थी कि अपने महान प्रियतम और अपने माता-पिता को प्रसन्न करने के लिए, उनके माता-पिता को उनके धार्मिक बच्चे बनकर न रह जाने दिया जाए और
उन्हें केवल प्रभु के प्रति ऋणी होना चाहिए, किसी भी सृजित प्राणी के प्रति नहीं,
अल्लाह तआला ने रसूल के दादा और माता-पिता को अपनी बिरादरी का सदस्य नहीं बनाया, बल्कि उन्हें गुण, पुण्य और अच्छाइयाँ प्रदान कीं।
समुदाय द्वारा साझा की गई खुशी। उदाहरण के लिए, यदि किसी महान मार्शल के पिता
यदि राजा केवल एक कप्तान है और अपने बेटे की उपस्थिति में प्रवेश करता है, तो बेटे को विरोधाभासी भावनाएँ होंगी।
इसलिए राजा दया के कारण कप्तान को अपने माननीय सहयोगी (मार्शल) की कंपनी से बाहर कर देता है।

आठवां बिंदु: आप उसके चाचा के बारे में सबसे सटीक राय पूछते हैं
अबू तालिब का विश्वास.

उत्तर: शिया कहते हैं कि वह ईमान रखता था, जबकि अधिकांश सुन्नी कहते हैं कि वह ईमान नहीं रखता था।
मैं यह मानता हूँ कि अबू तालिब ने ईश्वर के रसूल से उनके व्यक्तित्व के कारण सच्चा प्रेम किया था।
न कि उसके पैगम्बर होने की वजह से। यह सच्चा और गंभीर प्यार और स्नेह खो नहीं जाएगा। यहां तक कि अगर अबू तालिब शर्म और क़बीले के जोश की वजह से जहन्नुम में चले भी जाएं, तो जानबूझकर इनकार और हठ के बजाय, जिसने उन्हें ईश्वर पर ईमान लाने से रोका,
सर्वशक्तिमान ईश्वर रसूल से प्रेम करने, उसकी रक्षा करने और उसका समर्थन करने के लिए उसे पुरस्कृत करने के लिए उसमें एक विशेष स्वर्ग बना सकता है। जैसा कि वह कभी-कभी भेजता है
मध्य सर्दियों के दौरान वसंत जैसा मौसम, कुछ स्थानों पर वसंत का आगमन, या
वह नींद के माध्यम से तहखाने को महल में बदल सकता है, वह नींद के माध्यम से अपने निवास को बदल सकता है
उसके लिए नरक एक निवास स्वर्ग में बदल गया।

केवल अल्लाह ही ज्ञान रखता है और वह अदृश्य को जानता है। आपकी महिमा हो।
हमें कोई ज्ञान नहीं, परन्तु जो कुछ तूने हमें सिखाया है। तू सर्वज्ञ, अत्यन्त तत्वदर्शी है।

उनतीसवाँ पत्र

उनतीसवाँ पत्र

कुरान • रमज़ान • ईश्वर आकाश और पृथ्वी का प्रकाश है • मानवीय और शैतानी षड्यंत्र • उपासना की स्वतंत्रता • इस्लाम के सार्वजनिक अनुष्ठानों को बदला नहीं जा सकता • तरीक़ा

(उनतीसवें पत्र में नौ खंड हैं। इस प्रथम खंड में नौ बिंदु हैं।)

ईश्वर के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

सब कुछ उसकी स्तुति से उसकी महिमा करता है।

मैं आपका प्रिय, सच्चा भाई और कुरान का सच्चा मित्र हूँ।

सेवा। अपने पिछले पत्र में आपने एक महत्वपूर्ण मामले का उत्तर मांगा था। हालाँकि, समय और मेरी वर्तमान स्थिति के कारण मेरे लिए उत्तर लिखना मुश्किल हो रहा है।

प्रिय भाई, परमेश्वर की स्तुति हो कि अधिक लोग धर्मग्रंथों की नकल कर रहे हैं
इस साल। मैं पूरा दिन, सुबह से शाम तक, उन्हें संपादित करने में बिताता हूँ
दूसरी बार। इससे मुझे अन्य महत्वपूर्ण कार्यों में देरी होती है, लेकिन मैं इसे अधिक महत्वपूर्ण मानता हूँ। हालाँकि, चूँकि दिल (कारण के बजाय)
शाबान और रमज़ान के दौरान ईश्वरीय तेज प्राप्त होने की अधिक संभावना होती है,[381]
और आत्मा अधिक सक्रिय है, मैं जब भी कुछ लिखूंगा आपको लिखने का प्रयास करूंगा

---

[381] इस्लामी चंद्र कैलेंडर में लगातार दो महीने। बाद वाला महीना उपवास का महीना है, जबकि पहले महीने में उपवास करना उचित है। (संपादक)

भगवान की दया से मुझे यह बात समझ में आई। फिलहाल, मैं तीन बातें स्पष्ट करता हूँ,
निम्नानुसार:382

पहला खंड: कुरान

पहला बिंदु: कुछ लोग दावा करते हैं कि कुरान के रहस्य अज्ञात हैं,
और यह कि इसके व्याख्याकारों ने इसकी सच्चाई को नहीं समझा है। इस दावे के दो कारण हैं
जो लोग इसे पढ़ते हैं, वे दो समूहों में आते हैं। पहला समूह सत्य और जांच के लोगों से बना है। वे कहते हैं कि कुरान एक असीमित खजाना है और सभी लोग, चाहे किसी भी समय के हों, उससे अपना हिस्सा प्राप्त करते हैं
इसके पूरक, अंतर्निहित सत्य (शेयरों में हस्तक्षेप किए बिना)
अन्य) तभी जब वे इसके सिद्धांतों और अपरिवर्तनीय आदेशों को स्वीकार कर लेंगे।

समय के साथ कुरान को और अधिक बेहतर ढंग से और अधिक विस्तार से समझा जा सकता है। और इसके अर्थ के आयाम स्पष्ट हो जाते हैं। हालाँकि, इसका मतलब यह नहीं है
कि हमें अपने धर्मी अनुयायियों द्वारा बताए गए शाब्दिक, स्पष्ट सत्यों पर संदेह करना चाहिए
पूर्ववर्तियों, निश्चित और अकाट्य सत्य में विश्वास के लिए
कुरान और इस्लाम की बुनियादी बातों का पालन करना अनिवार्य है।

कुरान में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि यह स्पष्ट अरबी (सादे शब्दों में) में अवतरित हुआ है। भाषा) ताकि इसका अर्थ समझा जा सके। ईश्वरीय संबोधन इन अर्थों पर ध्यान केंद्रित करता है, उन्हें पुष्ट करता है, और विस्तृत करता है। उन्हें अस्वीकार करने का अर्थ है
सर्वशक्तिमान ईश्वर और रसूल की समझ का खंडन करते हुए। कुरान की बुनियादी सच्चाइयों को बनाने वाले स्पष्ट अर्थों की उत्पत्ति हुई
संदेशवाहक का स्रोत और स्थापित विश्वसनीय चैनलों के माध्यम से प्रेषित। इस पर संदेह नहीं किया जा सकता। इब्न जरीर अल-तबारी383 जैसे एक व्याख्याकार ने प्रत्येक आयत के अर्थ को विश्वसनीय माध्यमों से संदेशवाहक के स्रोत से जोड़ा
संचरण की शृंखलाएँ, और इसकी सबसे व्यापक व्याख्या लिखी
कुरान.

दूसरे समूह में या तो एकनिष्ठ मित्र शामिल हैं जो
मदद करने की कोशिश करते समय मामले बदतर हो जाते हैं, या शैतानी दुश्मन जो इस्लाम का विरोध करते हैं
आज्ञाओं और विश्वास की सच्चाइयों के माध्यम से वे एक रास्ता बनाना चाहते हैं
कुरान की सुदृढ़ सूराएँ, जिनके बारे में आप कहते हैं कि वे इस्पात के किले की तरह हैं
कुरान की सच्चाईयाँ। वे सच्चाई पर संदेह पैदा करने के लिए अपने झूठे दावे फैलाते हैं
विश्वास और कुरान का।

---

382 बाद में इसे बढ़ाकर नौ अंक कर दिया गया। (ट्र.)

383 अल-तबारी (सी.839-923): प्रारंभिक इस्लामी साहित्य के विशाल संग्रह के विद्वान और लेखक। इतिहास और कुरान की व्याख्या। उन्होंने व्याख्यात्मक और ऐतिहासिक व्याख्याओं की विशाल संपदा को संक्षेप में प्रस्तुत किया प्रारंभिक मुस्लिम विद्वानों के ज्ञान से प्रभावित, तथा एक इतिहासकार, फ़क़ीह (विधिवेत्ता) के रूप में प्रसिद्ध हैं, तथा कुरान के व्याख्याता (सं.)

दूसरा बिन्दु: सर्वशक्तिमान ईश्वर कुरान में कई बातों की शपथ लेता है।
इन शपथों में कई रहस्य और सूक्ष्म बिंदु हैं। उदाहरण के लिए: सूर्य और उसकी सुबह की चमक की शपथ (91:1), व्यक्त सत्य की ओर इशारा करता है
ग्यारहवें वचन में और ब्रह्मांड को एक महल या शहर के रूप में प्रस्तुत करता है। या सिन।
बुद्धिमान कुरान (36:1-2) हमें याद दिलाता है कि कुरान की चमत्कारिकता अद्भुत है।
इतना पवित्र कि इसकी शपथ लेना उचित है।

तारे की कसम जब वह डूबता है (53:1) और: नहीं! मैं स्थानों और गिरने की कसम खाता हूँ
सितारों की, एक बड़ी शपथ है यदि आप जानते! (56:75-76), इंगित करें कि गिरते हुए तारे
यह जिन्न और शैतानों को अदृश्य की खबरें सुनने से रोकने का संकेत है।
रहस्योद्घाटन की प्रामाणिकता के बारे में किसी भी संदेह को समाप्त करता है।384 ये शपथें यह भी याद दिलाती हैं
हमें महान शक्ति और परिपूर्ण बुद्धि प्रदान की जो सितारों को स्थापित करने के लिए आवश्यक है,
शक्तिशाली आकाशीय पिंड, अपने स्थानों पर पूर्ण क्रम में, और घूमते हुए
अद्भुत गति वाले ग्रह।

हवाओं के लिए जिम्मेदार स्वर्गदूतों की शपथ में: बिखराव और फटकने से
(51:1) और: भेजे गए दूतों द्वारा (77:1), हमारा ध्यान घूमती हवाओं और हवा की तरंगों में छिपी महत्वपूर्ण बुद्धि की ओर आकर्षित किया जाता है। हमें याद दिलाया जाता है कि ऐसे
कथित रूप से "बेतरतीब ढंग से चलने वाले" तत्व, वास्तव में, महत्वपूर्ण सेवाओं और सूक्ष्म उद्देश्यों के लिए उपयोग किए जाते हैं।

संक्षेप में, कुरान की शपथों में कई सूक्ष्मताएँ हैं। चूँकि मेरे पास उन्हें पढ़ने का समय नहीं है
उन सभी को समझाने के लिए, मैं केवल एक बिंदु की ओर इशारा करता हूं: अंजीर और जैतून द्वारा (९५:१)।
इस शपथ के माध्यम से, सर्वशक्तिमान ईश्वर मानवता को अपनी शक्ति की महानता, अपनी दया की पूर्णता और अपनी महत्वपूर्ण कृपाओं की याद दिलाता है। यह शपथ यह भी इंगित करती है
उन्होंने पाया कि निम्नतम स्तर की ओर बढ़ रहे लोग धन्यवाद, चिंतन, विश्वास और अच्छे कर्मों का प्रयोग करके आध्यात्मिक विकास शुरू कर सकते हैं, जो अंततः उन्हें उच्चतम स्तर तक पहुंचने में मदद करेगा।

अंजीर और जैतून का उल्लेख एक विशेष कारण से किया गया है: ये उपयोगी हैं
फलों में कई उल्लेखनीय सूक्ष्मताएं होती हैं। जैतून सामाजिक और
व्यावसायिक जीवन और पौष्टिकता से भरपूर हैं। अंजीर ईश्वर के अद्भुत चमत्कार हैं
शक्ति (ईश्वर ने रेत के कण के आकार के बीजों के भीतर एक विशाल अंजीर के पेड़ को समाहित कर लिया है)
जो लोगों द्वारा खाए जाने वाले अन्य फलों की तुलना में अधिक समय तक टिके रहने के कारण ईश्वरीय कृपा के कई पहलुओं को प्रदर्शित करते हैं। इसके अलावा, इनमें कई अन्य लाभकारी गुण भी हैं जिनका वैज्ञानिकों द्वारा अध्ययन किया जाना चाहिए।

तीसरा बिन्दु: कई अक्षरों के आरंभ में संक्षिप्त अक्षर
कुरान की सूराएँ (अल-हुरूफ़ अल-मुक़त्तात) ईश्वरीय संकेत-चिह्न हैं जिनके माध्यम से ईश्वर

[384] इस्लाम-पूर्व काल में माध्यमों और द्रष्टाओं ने अदृश्य के बारे में सीमित समाचार प्राप्त करने का प्रयास किया।
जिन्न और शैतान। जब कुरान का अवतरण होना शुरू हुआ तो यह दरवाज़ा बंद हो गया। (संपादक)

अपने खास सेवक पैगम्बर मुहम्मद को अदृश्य की कुछ निशानियाँ बताता है। इसकी कुंजी उसके और उसके सच्चे उत्तराधिकारियों के हाथ में है।

चूँकि कुरान हर युग में समझ के हर स्तर को संबोधित करता है, इसलिए सभी लोग, चाहे उनका स्तर और समय कुछ भी हो, अपने स्तर के अनुसार इसे समझ सकते हैं। धर्मी पूर्वजों के पास प्राथमिक हिस्सा था और उन्होंने इसका खुलासा किया। संतों और सत्य के साधकों को अदृश्य की ओर अपनी आध्यात्मिक यात्रा के लिए प्रासंगिक कई संकेत मिलते हैं। अपने इशारत अल-इजाज़ (कुरान की चमत्कारिकता के संकेत) में, मैं सूरत अल-बक़रा की शुरुआत में उनके चमत्कारी वाक्पटुता के दृष्टिकोण से उन अक्षरों की व्याख्या करता हूँ।

चौथा बिन्दु: पच्चीसवाँ वचन यह सिद्ध करता है कि कुरान का सच्चा और सटीक अनुवाद असंभव है। इसकी उत्कृष्ट शैली, इसके चमत्कारी अर्थ का एक तत्व, की नकल नहीं की जा सकती। इसकी उत्कृष्ट शैली से प्राप्त सत्य और आनंद की व्याख्या करना भी असंभव है। फिर भी, मैं इसे समझने की एक झलक प्रस्तुत करने के लिए कुछ बिन्दु उद्धृत करता हूँ, जो इस प्रकार हैं:

> और उसकी निशानियों में से आकाशों और धरती की रचना और तुम्हारी भाषाओं और रंगों का विविधीकरण भी है। (30:22)
>
> और आकाश उसके दाहिने हाथ में लपेटा जाएगा। (39:67)
>
> वह तुम्हें तुम्हारी माताओं के गर्भ में उत्पन्न करता है, तीन छायाओं में एक के बाद एक सृष्टि करता है। (39:6)
>
> उसने आकाशों और धरती को छः दिन में पैदा किया। (7:54)
>
> परमेश्वर व्यक्ति और उसके हृदय के बीच आता है। (34:3)
>
> आकाश और पृथ्वी में एक कण के बराबर भी वस्तु, या उससे कम या अधिक, उससे बच नहीं सकती। (8:24)
>
> वह रात को दिन में बदल देता है और दिन को रात में बदल देता है। वह दिलों में जो कुछ है वह सब जानता है। (57:6)

इन आयतों में, कुरान ने ईश्वर की रचनात्मकता की सच्चाई को शानदार और चमत्कारी ढंग से चित्रित किया है। यह दर्शाता है कि ब्रह्मांड का निर्माता सभी कणों को, यहाँ तक कि आँख की पुतली को भी, उसी उपकरण से और उसी समय पर रखता है जिस समय पर वह सूर्य और चंद्रमा को उनके स्थानों पर रखता है। वह आँखों को बनाता है और रखता है और उसी माप के अनुसार उनके परदे हटाता है और उसी अमूर्त उपकरण का उपयोग करता है जिसका उपयोग वह आकाश को व्यवस्थित करने और खोलने के लिए करता है। महान निर्माता एक व्यक्ति के अद्वितीय चेहरे की विशेषताओं और बाहरी और आंतरिक इंद्रियों को उनके स्थानों पर उसी अमूर्त हथौड़े से रखता है जिसका उपयोग आकाश में तारों को ठीक करने के लिए किया जाता है।

एक श्लोक में यह भी दर्शाया गया है कि कैसे महान निर्माता, अपने कार्य के दौरान आँखों को देखने और कानों को सुनने के लिए, एक कण पर प्रहार करता है और उसे एक स्थान पर रख देता है, और दूसरे भाग में, कैसे वह उसी समय सूर्य पर प्रहार करता है। ऐसी उत्कृष्ट शैली उसकी पूर्ण एकता को दर्शाती है (इसमें कि जो एक कण का निर्माण और नियंत्रण करता है, वही सूर्य और पूरे ब्रह्मांड का भी निर्माण और नियंत्रण करता है); उसकी असीम कृपा के भीतर उसकी असीम महिमा; उसकी असीम सूक्ष्मता में उसकी असीम शक्ति; एक भी छोटी से छोटी चीज की उपेक्षा किए बिना उसकी सार्वभौमिक, सर्वव्यापी देखभाल; उसकी असीम करुणा के भीतर उसकी असीम भव्यता, और उसकी प्रत्येक रचना से उसकी असीम निकटता में उसकी उनसे अंतहीन दूरी। वह सभी विपरीतताओं की परम एकता को प्रदर्शित करता है।

यद्यपि इसे असंभव माना जाता है, लेकिन इस तरह की एकता का अस्तित्व ब्रह्मांड के अस्तित्व और जीवन के लिए बिल्कुल आवश्यक है, और ईश्वर के लिए पूर्णता आसान है। ऐसी उदात्तता के आगे, महानतम साहित्यकार केवल प्रशंसा में ही झुक सकते हैं।

महान कुरान उनके प्रभु की संप्रभुता की महिमा और भव्यता को इस प्रकार प्रदर्शित करता है: और उसकी निशानियों में से यह भी है कि आकाश और पृथ्वी उसके आदेश पर स्थिर रहते हैं; फिर, जब वह तुम्हें एक बार अचानक धरती से पुकारेगा, तो तुम निकल आओगे (30:25)। दूसरे शब्दों में, आकाश और पृथ्वी शानदार सेनाओं के बैरकों या प्रशिक्षण मैदानों की तरह हैं। अस्तित्वहीनता और नश्वरता के पर्दे के पीछे छिपे हुए, वे सर्वोच्च सभा के स्थान पर एकदम गति से और तुरही की ध्वनि या आदेश के प्रति पूरी तरह से आज्ञाकारिता में प्रकट होते हैं: "अंतिम निर्णय के लिए उठो!"

यह श्लोक, जो ब्रह्मांड के अंतिम विनाश और पुनरुत्थान को चमत्कारिक रूप से उच्चारित शैली में संदर्भित करता है, में निम्नलिखित पुख्ता सबूत हैं: जमीन में ढँके और सड़ चुके बीज, साथ ही वाष्पित और वायुमंडल में छिपा हुआ पानी, हर वसंत में इस दुनिया में एकदम सही क्रम और गति के साथ फिर से प्रकट होता है। यह पुनरुत्थान की नकल करता है, क्योंकि ब्रह्मांड के अंतिम विनाश के बाद मृतकों को उसी तरह से पुनर्जीवित किया जाएगा।

ऊपर उद्धृत आयतों से अन्य आयतों में वाक्पटुता की डिग्री की तुलना करें, और तय करें कि कुरान का संपूर्ण रूप से सटीक अनुवाद किया जा सकता है या नहीं। “अनुवाद” के नाम पर जो कुछ भी किया जा सकता है, वह या तो संक्षिप्त या अपेक्षाकृत लंबी आयत-दर-आयत व्याख्या करना है।

पांचवां बिन्दु: उदाहरण के लिए: अल-हम्दु लि-ल्लाह (सारी प्रशंसा ईश्वर के लिए है) एक कुरानिक वाक्य है, जिसका अर्थ, अरबी वाक्यविन्यास और शब्दार्थ के अनुसार, यह है कि प्रत्येक प्रशंसा जो किसी भी प्राणी द्वारा किसी अन्य के लिए की गई है या कभी की जाएगी, वास्तव में, अनिवार्य रूप से विद्यमान प्राणी: ईश्वर के लिए है और वह उसकी हकदार है।

हर का अर्थ अल (द) से निकला है । किसी भी होने का अर्थ हम्द (प्रशंसा) से निकला है , क्योंकि मूल अरबी शब्द इनफिनिटिव रूप में है। अरबी

यदि क्रियाविशेषण में कोई विषय नहीं है तो यह सामान्य अर्थ व्यक्त करता है। इसके अलावा, चूँकि इस वाक्य में कोई वस्तु भी नहीं है, हालाँकि यह किसी ऐसे व्यक्ति (या चीज़) को संबोधित है जो या तो मौजूद है या अनुपस्थित है, इसका अर्थ भी सामान्य है।

इसलिए, हम इस छोटे से वाक्य से किसी और को क्या लाभ पहुंचाते हैं?

वह रहा है या कभी होगा, इस नियम से आता है कि क्रिया खंड से संज्ञा खंड में संक्रमण दृढ़ता और अवधि को इंगित करता है। के लिए और योग्य द्वारा पूर्वसर्ग ली (ईश्वर के लिए या ईश्वर के लिए) में व्यक्त किए जाते हैं, जो विशिष्ट और योग्य होने को व्यक्त करता है। चूँकि अल्लाह ईश्वरीय सत्ता का सबसे बड़ा नाम है, और चूँकि अस्तित्व ईश्वरीय सत्ता के लिए आवश्यक और अपरिहार्य है और राजसी सत्ता पर विचार करने में मदद करने के लिए एक झांकी है, इसलिए अल्लाह अनिवार्य रूप से अनिवार्य रूप से विद्यमान सत्ता को दर्शाता है। यदि यह इतने छोटे वाक्य का स्पष्ट, संक्षिप्त अर्थ है, जिस पर अरबी भाषाविदों ने सहमति व्यक्त की है, तो इसे उसी ताकत और चमत्कारीता के साथ दूसरी भाषा में कैसे अनुवादित किया जा सकता है?

केवल एक अन्य भाषा ही अपने वाक्यविन्यास में अरबी जैसी है, लेकिन वह व्यापकता में अरबी का मुकाबला नहीं कर सकती। इस स्थिति में, कुरान के पवित्र शब्द, जो अरबी में प्रकट हुए हैं और इसलिए एक वाक्यविन्यास और व्यापकता है जो एक ही समय में सभी को भेदने वाले सर्वव्यापी ज्ञान को प्रदर्शित करता है, को इसके सभी सूक्ष्म अर्थों, संकेतों और चमत्कारी शैली के साथ अन्य भाषाओं में कैसे अनुवादित किया जा सकता है? वास्तव में, कुरान का प्रत्येक अक्षर सत्य का इतना समृद्ध खजाना है कि इसकी व्याख्या कम से कम एक पृष्ठ को कवर कर सकती है।

छठा बिंदु: इस अर्थ को बेहतर ढंग से व्यक्त करने के लिए, मैं एक घटना का वर्णन करता हूँ जिसने मुझे प्रबुद्ध किया। एक बार मैंने इस बात पर विचार किया कि हम केवल आपकी ही पूजा करते हैं और केवल आपसे ही सहायता माँगते हैं (1:5), और यह समझने की कोशिश की कि हम को मुझसे बेहतर क्यों माना जाता है। सामूहिक प्रार्थना की खूबियाँ अचानक मेरे सामने आ गईं, और मैंने देखा कि मस्जिद की हर सभा का हर सदस्य मेरे लिए एक तरह से मध्यस्थ था, मेरे द्वारा घोषित किए गए कारणों और सत्यों का गवाह और समर्थक। मुझे अपनी गलत प्रार्थना को सभा की व्यापक प्रार्थना के साथ ईश्वरीय न्यायालय में पेश करने के लिए प्रोत्साहित महसूस हुआ।

एक और पर्दा गिरा, और मैंने इस्तांबुल की सभी मस्जिदों को एक मस्जिद और उनके उपासकों को एक विशाल समूह के रूप में कल्पना की। मुझे लगा कि मैं उनकी प्रार्थनाओं और पुष्टियों में शामिल हूँ।

इसके बाद, मैंने खुद को काबा के चारों ओर पूजा करने वालों की गोलाकार पंक्तियों में कल्पना की, और कहा: अल-हम्दु लि-ल्लाह, रब्ब अल-आलमीन (सभी प्रशंसा ईश्वर की है, जो संसार के स्वामी हैं)," यह देखते हुए कि मेरे पास मेरी प्रार्थना के हर शब्द को दोहराने और पुष्टि करने वाले बहुत से मध्यस्थ थे। इस विचार ने मुझे काबा को प्रार्थना स्थान (मीहराब) के रूप में देखने के लिए प्रेरित किया। धन्य काले पत्थर को अपना हाथ सौंपना

विश्वास की स्वीकारोक्ति: "मैं गवाही देता हूँ कि ईश्वर के अलावा कोई देवता नहीं है, और मैं गवाही देता हूँ गवाही दो कि मुहम्मद ईश्वर के रसूल हैं," जिसे पूरी जमात ने स्वीकार किया उन्होंने कहा, मैंने देखा कि मण्डली में तीन मंडलियां शामिल थीं, जो इस प्रकार थीं:

पहला घेरा सभी विश्वासियों द्वारा गठित सबसे शक्तिशाली मण्डली थी और एकेश्वरवादी। दूसरा चक्र सभी प्राणियों से बना था ईश्वर की सबसे व्यापक प्रार्थना और महिमा में, प्रत्येक प्रजाति अपने तरीके से प्रार्थना और प्रशंसा करती है। उनकी सेवाओं को "कार्यक्रम" कहा जाता है "यही उनकी पूजा का तरीका है। इस बात से अवगत होकर मैंने कहा: अल्लाहु अकबर (ईश्वर सर्व महान है) का स्मरण किया और आश्चर्य से अपना सिर झुका लिया।

तीसरा चक्र मेरा शरीर था, एक अद्भुत और फिर भी हल्का सा और एक तुच्छ दुनिया, लेकिन वास्तव में एक बहुत महान और महत्वपूर्ण दुनिया यह जो कार्य करता है। इसका हर भाग, कोशिकाओं से लेकर बाह्य इंद्रियों तक, पूजा-अर्चना और धन्यवाद देने में व्यस्त। इस घेरे में, मुझे आध्यात्मिकता का एहसास हुआ मेरे हृदय में उस मण्डली की ओर से यह कहने की क्षमता है: केवल आप ही हम करते हैं पूजा करते हैं, और केवल आप ही से हम मदद मांगते हैं, जैसे मेरी जीभ ने अन्य दो मण्डलियाँ।

संक्षेप में, हम केवल आप में ही आराधना करते हैं, उन तीन मण्डलियों को संदर्भित करता है। फिर भी इस स्थिति में, मैंने कल्पना की कि परमेश्वर के आध्यात्मिक व्यक्तित्व कुरान के संवाहक और प्रसारक, पैगम्बर मुहम्मद ने अपना सबसे भव्य रूप मदीना में ग्रहण किया, जिसे इस दुनिया में उनका उपदेशक माना जा सकता है, और वह कह रहा था: “ऐ लोगों, अपने रब की इबादत करो।” मैंने कल्पना की कि तीनों मंडलियाँ उसकी आज्ञा का पालन करते हुए कह रही थीं: हम सिर्फ़ तेरी ही इबादत करते हैं।

फिर, "जब कुछ स्थापित होता है, तो यह" के नियम के अनुसार इसे स्थापित करने के लिए जो कुछ भी आवश्यक है, वह सब स्थापित है,” निम्नलिखित सत्य मेरे मन में आया: संसार का प्रभु सभी लोगों को संबोधित करता है और, उन सभी प्राणियों के लिए ईश्वर का दूत उस वाणी का संचार करता है मानवता का सम्मान, सभी प्राणियों का जिनमें आत्मा और चेतना है, चाहे समय का। चूँकि अतीत और भविष्य को वर्तमान माना जा सकता है, इसलिए सभी लोग [समय और स्थान की परवाह किए बिना] एक मण्डली के रूप में इस संबोधन को सुनते हैं विभिन्न पंक्तियों से बना है।

इस सत्य ने मुझे दिखाया कि प्रत्येक श्लोक में एक चमत्कारी चमक है सूक्ष्म शैली, वाक्पटुता और प्रवाह। ये सभी शाश्वत से आते हैं अनंत महानता और महिमा का वक्ता, उस महान् प्रेषक के माध्यम से, जिसे ईश्वर का प्रिय होने का सर्वोच्च दर्जा प्राप्त है, तथा उसके श्रोताओं की विविधता और भीड़ से। यह सम्पूर्ण कुरान को, यहाँ तक कि प्रत्येक को भी, ईश्वर के प्रिय होने का सर्वोच्च दर्जा प्राप्त है, तथा उसके श्रोताओं की विविधता और भीड़ से, अनंत महानता और महिमा का वक्ता बनाता है। इसके शब्द चमत्कारी हैं। मैंने कहा: "विश्वास के प्रकाश के लिए ईश्वर की स्तुति हो और कुरान" और, उस काल्पनिक दुनिया से बाहर निकलकर जिसमें मैं प्रवेश कर चुका था

नून (एन) पत्र के माध्यम से ,385 ने समझा कि कुरान के अलावा छंद और शब्द, यहाँ तक कि इसके कुछ अक्षर, जैसे कि ना'बुदु में एन , चमकदार हैं महत्वपूर्ण सत्यों की कुंजी.

जब मेरा हृदय और कल्पना इस अवस्था से बाहर आये, तो मेरे तर्क ने कहा: "मुझे अपना हिस्सा चाहिए। मैं तुम्हारी तरह उड़ नहीं सकता। मैं सबूतों और तर्कों के सहारे चलता हूँ। तुम मुझे उस सृष्टिकर्ता, पूज्यनीय का मार्ग दिखाओ, जिसकी मदद मांगी जाती है, उसके द्वारा हम इबादत करते हैं और मदद मांगते हैं ताकि मैं मैं तुम्हारे साथ चलूँगा।" जवाब में, मैंने हृदय से कहा कि वह भ्रमित कारण से कहे:

> देखिये कैसे सभी प्राणी, चाहे सजीव हों या निर्जीव, ईश्वर की आराधना करते हैं अपने कर्तव्यों को पूर्ण क्रम और आज्ञाकारिता से निभाकर। उनमें से कुछ, बेहोश, गूंगा या असंवेदनशील होने के बावजूद, अपने कर्तव्यों का पालन करें पूर्ण व्यवस्था मानो वे सचेत थे और भगवान की पूजा कर रहे थे। इसका अर्थ यह है कि वह, जो सचमुच पूज्य है और पूर्णतः आदेश देने वाला है, उन्हें अपनी पूजा करने के लिए नियुक्त करता है।
>
> पुनः देखें, और पाएंगे कि सभी प्राणियों में, विशेषकर सजीव प्राणियों में, अनगिनत ज़रूरतें और मांगें जिन्हें पूरा किया जाना चाहिए यदि वे अस्तित्व में हैं और जीवित रह पाते हैं। वे अपनी सबसे छोटी ज़रूरत भी पूरी नहीं कर पाते वे स्वयं ही काम करते हैं, और फिर भी हम देखते हैं कि उनकी ज़रूरतें नियमित रूप से पूरी होती हैं यह घटना किसी अप्रत्याशित समय पर, तथा किसी अप्रत्याशित स्थान से घटित हुई।
>
> ऐसी असीम गरीबी और अभाव, साथ ही अदृश्य और दया की सहायता से उनकी आवश्यकताओं की ऐसी असाधारण संतुष्टि, इससे पता चलता है कि उनके पास बिल्कुल अमीर, उदार और शक्तिशाली है रक्षक और प्रदाता जिसकी ओर सभी चीजें मदद के लिए मुड़ती हैं, विशेष रूप से जीवित प्राणियों। दूसरे शब्दों में, माँगने की भाषा के माध्यम से वे कहते हैं, " हम केवल आप से ही सहायता मांगते हैं।"

तर्क ने जवाब दिया: "मैं भी विश्वास करता हूँ और पुष्टि करता हूँ।"

सातवाँ बिन्दु: फिर मैंने कहा: हमें सीधे मार्ग पर ले चलो, अर्थात् अल्लाह के मार्ग पर। जिनको तूने सच्चा, पूर्ण मार्गदर्शन प्रदान किया है (1:6-7) मानवता के सभी कारवां के बीच, मैंने देखा शानदार कारवां पैगम्बर, वफादार और सच्चे लोग, शहीद, संत और धर्मपरायण लोग एक सीधे राजमार्ग पर अनंत काल तक, भविष्य से सारा अंधकार हटाते हुए। इस प्रार्थना ने मुझे उस कारवां में शामिल होने के लिए प्रेरित किया। मैंने अचानक कहा: "महिमा भगवान के लिए हो! कोई भी यह देख सकता है कि कितना बड़ा नुकसान और विनाश हुआ है यह उस शानदार कारवां में शामिल होने के लिए नहीं है जो अत्यंत सुरक्षा के साथ आगे बढ़ रहा है -

---

[385] नून को विभिन्न काल में क्रिया के आगे और पीछे लगाकर हम का अर्थ निकाला जाता है, जैसे कि ना'बुदु (हम) पूजा करना)।

भविष्य का अनुमान लगाइए। जो लोग इस्लाम में गैर-इस्लामी नवाचारों को शामिल करके पीछे हट जाते हैं, उन्हें प्रकाश कहाँ मिलेगा? वे मुक्ति के लिए क्या कर सकते हैं?

ईश्वर के रसूल, जो हमारे मार्गदर्शक हैं, ने घोषणा की: "प्रत्येक नवीनता एक भटकाव है, और प्रत्येक भटकाव आग की ओर ले जाता है।"386 ऐसे दुष्ट विद्वानों को क्या लाभ है जो इस्लाम के स्व-स्पष्ट चिह्नों की प्रकृति को बदलने की कोशिश करते हैं और पेश करते हैं?
या सार्वजनिक प्रतीकों या अनुष्ठानों से लाभ की आशा करते हैं? वे किस सिद्धांत पर आधारित हो सकते हैं
उन सार्वजनिक अनुष्ठानों के प्रति उनका विरोध (जैसे, अज़ान [प्रार्थना के लिए आह्वान], पाठ
कुरान और अज़ान को उनकी मूल अरबी भाषा में पढ़ना, जानवरों की बलि देना
कुर्बानी के त्यौहार के दिन, जुमा और अन्य सामूहिक समारोहों में
प्रार्थनाएँ)? वे उन्हें कैसे परिवर्तनशील मान सकते हैं? वे अवश्य ही भ्रमित हैं
उनके अर्थ के एक पहलू के कारण उत्पन्न क्षणिक, भ्रामक प्रकाश द्वारा।

उदाहरण के लिए, एक छिला हुआ फल अपनी नाजुकता को अधिक स्पष्ट रूप से दिखा सकता है, लेकिन बहुत अधिक
संक्षेप में, क्योंकि यह जल्द ही कुचला जाता है और सड़ना शुरू हो जाता है। उसी तरह, भविष्यवाणी
और इस्लाम के सार्वजनिक प्रतीकों या अनुष्ठानों में दैवीय अभिव्यक्तियाँ और अवधारणाएँ
एक जीवित और सुरक्षात्मक त्वचा की तरह। जब हटाया जाता है, जैसे कि अज़ान पढ़ते समय
किसी दूसरी भाषा में इसका पवित्र अर्थ अधिक स्पष्ट या अधिक समझ में आने वाला लग सकता है। लेकिन यह जल्द ही अपनी ताज़गी और आत्मा खो देता है, और अपना “शव” वहीं छोड़ देता है
अंधकारमय मन और आत्मा। इसका प्रकाश बुझ गया है, और केवल धुआं रह गया है।

आठवां बिंदु: कानून के दो क्षेत्र हैं: व्यक्तिगत अधिकार और सार्वजनिक कानून।
दोनों ही शरिया में पाए जाते हैं। यह दूसरा समूह, जिसे सबसे बड़ा समूह भी माना जाता है
ईश्वर के अधिकारों के लिए समर्पित इस पुस्तक में इस्लाम के "सार्वजनिक प्रतीक या अनुष्ठान" या "बैनर" शामिल हैं।
सभी मुसलमान इन प्रतीकों से चिंतित हैं, उनके बिना किसी भी हस्तक्षेप
सहमति उनके अधिकारों का उल्लंघन है। यहां तक कि छोटे प्रतीक, जैसे कि प्रशंसनीय
कर्तव्य, इस्लाम के सबसे बुनियादी मामलों की तरह ही महत्वपूर्ण हैं।
जो लोग इन प्रतीकों को बदलने या समाप्त करने का प्रयास करते हैं, उन्हें तथा उनके समर्थकों को यह समझना चाहिए कि ऐसे मामले सभी मुसलमानों से संबंधित हैं, क्योंकि ये वे उज्ज्वल कड़ी हैं जो सभी मुसलमानों को इस्लाम से तथा सुख के युग से एक दूसरे से जोड़ती हैं।
उन्हें यह समझना चाहिए कि वे बहुत बड़ा पाप कर रहे हैं।
थोड़ी सी भी चेतना को इसके अपरिहार्य भयंकर परिणामों से कांप उठना चाहिए।

नौवां बिंदु: कुछ शरिया मामले पूजा-पाठ से जुड़े हैं।
मानवीय तर्क से स्वतंत्र, उनके प्रदर्शन का कारण ईश्वर है
अन्य शरिया मामले किसी उद्देश्य या आदेश को प्राथमिकता देने का परिणाम हैं।
समझ में आने वाला लाभ। फिर भी, उनके कानून का असली कारण यह है
ईश्वरीय आदेश.

पूजा से संबंधित सार्वजनिक प्रतीक किसी भी कल्पना या कल्पित धारणा पर निर्भर नहीं हो सकते
लाभ, चाहे कथित लाभकारी परिणाम कुछ भी हों। कोई भी हस्तक्षेप नहीं कर सकता

---

386 मुस्लिम, शुक्रवार, 43; अबू दाऊद, सुन्नत, 5.

इसके अलावा, उनके विधान या ईश्वरीय उद्देश्यों के लिए ज्ञान या
परिणामी लाभ उनके ज्ञात लाभों तक ही सीमित नहीं हैं। उदाहरण के लिए,
अज़ान मुसलमानों को नमाज़ के लिए क्यों बुलाती है जबकि बंदूक चलाने से
क्या यही नतीजा हासिल किया जा सकता है? हमें यह समझना चाहिए कि अज़ान के फ़ायदे सिर्फ़ इसी से कहीं ज़्यादा हैं। बंदूक
चलाने से भी यही नतीजा हासिल किया जा सकता है, लेकिन कैसे
क्या यह अज़ान का विकल्प हो सकता है , जो ईश्वर की आज्ञा घोषित करने का एक साधन भी है?
उस क्षेत्र के लोगों की ओर से एकता, मानवता और ब्रह्मांड के निर्माण का सबसे बड़ा उद्देश्य और परिणाम?
यह उनकी सेवा और समर्पण को भी व्यक्त करता है
ईश्वरीय प्रभुत्व के लिए पूजा.

संक्षेप में कहें तो नरक का एक कारण है। आज चल रही कई चीजें नरक को एक कारण बनाती हैं।
कोई कहना चाहता है: “नर्क अमर रहे!” स्वर्ग सस्ता नहीं मिलता, बल्कि
बहुत ऊंची कीमत पर। याद रखें: आग के निवासी और आग के निवासी
जन्नत बराबर नहीं है, जन्नत के वासी ही विजयी हैं (59:20)

दूसरा खंड: रमज़ान का पवित्र महीना

(रमज़ान के रोज़े रखने के कुछ ईश्वरीय उद्देश्यों की चर्चा, जैसा कि यह है)
इस्लाम का सबसे चमकीला और सबसे शानदार सार्वजनिक प्रतीक या अनुष्ठान। इस खंड में नौ
बिंदु हैं जो नौ उद्देश्यों की व्याख्या करते हैं।)

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

रमज़ान का महीना जिसमें क़ुरआन अवतरित हुआ, जो मानवता के लिए मार्गदर्शन, मार्गदर्शन की
स्पष्ट निशानियाँ और मापदण्ड है। (2:158)

पहला बिंदु: रमजान का उपवास इस्लाम के सबसे महत्वपूर्ण स्तंभों और महानतम प्रतीकों में से एक है।
इसके कई उद्देश्य ईश्वर की प्रभुता और धन्यवाद देने से संबंधित हैं
उसकी कृपा के लिए, साथ ही मानवता के व्यक्तिगत और सामूहिक जीवन, आत्म-प्रशिक्षण और आत्म-अनुशासन के लिए।

परमेश्वर के प्रभुत्व से जुड़ा एक उद्देश्य यह है कि परमेश्वर अपने
प्रभु की पूर्णता और उनका सर्व-दयालु एवं दयावान होना
पृथ्वी की सतह पर, जिसे उसने अपनी कृपाओं को रखने के लिए एक मेज के रूप में डिज़ाइन किया था
मानव कल्पना से परे एक रास्ता। फिर भी, लोग पूरी तरह से नहीं कर सकते
असावधानी और कार्य-कारण के अंधे आवरण के कारण इस स्थिति की वास्तविकता को समझें।
लेकिन रमज़ान के दौरान, एक सेना की तरह जो अपने मार्चिंग आदेशों की प्रतीक्षा कर रही है, विश्वासी
दिन के अंत में पूजा का ऐसा रवैया प्रदर्शित करते हैं मानो वे उम्मीद करते हों
उन्हें शाश्वत सम्राट द्वारा तैयार किए गए भोज में भाग लेने के लिए कहा गया।
इस प्रकार वे ईश्वर की उस भव्य और सार्वभौमिक अभिव्यक्ति का जवाब देते हैं

सामूहिक पूजा के एक व्यापक और सामंजस्यपूर्ण कार्य के साथ दयालुता। मुझे आश्चर्य है कि जो लोग ऐसी उच्च पूजा में भाग नहीं लेते हैं या
इस अनुग्रह के सम्मान में हिस्सा लेने वाले ही मनुष्य कहलाने के योग्य हैं।

दूसरा बिंदु: कृतज्ञता से संबंधित होने के दृष्टिकोण से
हे ईश्वर, रमज़ान के दौरान उपवास रखने की बुद्धिमत्ता का एक उदाहरण यह है:
प्रथम शब्द में कहा गया है कि नौकर द्वारा लाए गए भोजन की एक कीमत होती है।
राजा की रसोई। जाहिर है, नौकर को टिप देना और राजा को न पहचानना एक अविश्वसनीय मूर्खता होगी, [क्योंकि यह] राजा के प्रति स्पष्ट अनादर दिखाएगा
वह उपहार। उसी तरह, सर्वशक्तिमान ईश्वर अपनी अनगिनत कृपाएँ हम पर फैलाते हैं
पृथ्वी और उन्हें एक मूल्य के लिए प्रदान करता है: धन्यवाद।

उन उपहारों के स्पष्ट कारण या उन्हें हमारे पास लाने वाले लोग
ऊपर दिए गए उदाहरण में नौकर की तरह हैं। हम नौकरों को पैसे देते हैं, ऋणी महसूस करते हैं
और उन्हें धन्यवाद दें, भले ही वे केवल कारण या साधन हों। हम कभी-कभी उन्हें एक हद तक सम्मान देते हैं जिसके वे हकदार नहीं हैं। सच्चा दाता
इन उपहारों के लिए बाउंटीज़ धन्यवाद के अधिक हकदार हैं।
धन्यवाद देने का अर्थ है उपहारों के लिए अपनी आवश्यकता को स्वीकार करना, उनकी पूरी तरह से सराहना करना, तथा उन्हें सीधे परमेश्वर को समर्पित करना।

रमज़ान का उपवास एक सच्चे, ईमानदार, व्यापक और सार्वभौमिक धन्यवाद की कुंजी है। बहुत से लोग ज़्यादातर उपहारों की सराहना नहीं कर पाते हैं
वे इसका आनंद लेते हैं, क्योंकि उन्हें भूख नहीं लगती। उदाहरण के लिए, सूखा आटा
रोटी का उन लोगों के लिए कोई मतलब नहीं है जो भरे हुए हैं, खासकर अगर वे अमीर हैं।
रोज़ा खोलने के समय विश्वासियों की स्वाद की भावना गवाही देती है कि यह वास्तव में है
ईश्वर की ओर से बहुत ही मूल्यवान उपहार। रमज़ान के दौरान, हर किसी को इसका लाभ मिलता है
ईश्वरीय उपहारों के मूल्य को समझकर हृदय से धन्यवाद देना।

उपवास करते समय, विश्वासी सोचते हैं: "ये उपहार मूल रूप से उनके नहीं हैं
मेरे लिए, और इसलिए मैं उन्हें केवल भोजन या पेय के रूप में नहीं मान सकता।
यदि वह उनका स्वामी है और मुझे उन्हें प्रदान करता है, तो मुझे उन्हें खाने के लिए उसकी अनुमति की प्रतीक्षा करनी चाहिए।"
इस प्रकार भोजन और पेय को ईश्वरीय उपहार के रूप में स्वीकार करके, विश्वासी मौन रूप से धन्यवाद देते हैं
भगवान। यही कारण है कि उपवास धन्यवाद की कुंजी है, जो एक मौलिक बात है
मानव कर्तव्य.

तीसरा बिन्दु: उपवास मानवता के सामूहिक जीवन से संबंधित है, मनुष्यों के लिए
जीविका के सम्बन्ध में अलग-अलग तरीके से बनाए गए हैं। इसलिए परमेश्वर धनवानों को आमंत्रित करता है
गरीबों की मदद करना। उपवास के बिना, कई अमीर और स्वार्थी लोग भूख और गरीबी के दर्द को नहीं समझ सकते हैं या यह नहीं समझ सकते हैं कि गरीबों को किस हद तक भोजन की ज़रूरत है।
देखभाल। अपने साथियों की देखभाल करना सच्चे धन्यवाद का आधार है।
हमेशा कोई न कोई गरीब होता है, इसलिए हर किसी को ऐसे लोगों की परवाह करनी चाहिए।

जब लोग भूख का अनुभव नहीं करते, तो उनके लिए अच्छा काम करना या दूसरों की मदद करना लगभग असंभव होता है। दूसरों की मदद करें। अगर वे ऐसा करते भी हैं, तो वे ऐसा अपूर्ण रूप से ही कर पाते हैं क्योंकि वे भूखे व्यक्ति की स्थिति को उसी सीमा तक महसूस नहीं किया जा सकता।

चौथा बिंदु: रमज़ान के रोज़े में आत्म-प्रशिक्षण और आत्म-अनुशासन से जुड़े कई दिव्य उद्देश्य निहित हैं, जैसे: शारीरिक आत्मा चाहती है —और खुद को स्वतंत्र और अप्रतिबंधित मानती है। यह अपनी प्रकृति से ही यह भी चाहती है,

एक काल्पनिक आधिपत्य और स्वतंत्र, मनमानी कार्रवाई के लिए। ऐसा सोचना पसंद नहीं है इसे भगवान की अनगिनत नेमतों के माध्यम से प्रशिक्षित और परीक्षण किया जा रहा है, यह निगल जाता है ऐसे दानों को पशु की तरह तथा चोर या डाकू की तरह ग्रहण करो, विशेषकर यदि उसके धन और शक्ति के साथ असावधानी भी हो।

रमज़ान के दौरान, हर किसी का आत्म-सम्मान यह समझता है कि वह ईश्वर का है। एक दूसरे से, अकेले नहीं; यह एक सेवक है, स्वतंत्र एजेंट नहीं। जब तक आदेश न दिया जाए या अनुमति दी गई है, तो यह सबसे सामान्य चीजें भी नहीं कर सकता है, जैसे खाना और शराब पीना। यह असमर्थता उसके भ्रामक प्रभुत्व को चकनाचूर कर देती है और उसे स्वीकार करने में सक्षम बनाती है उसकी सेवा करनी चाहिए और धन्यवाद देने का अपना वास्तविक कर्तव्य निभाना चाहिए।

पाँचवाँ बिन्दु: रमज़ान का रोज़ा शारीरिक स्वार्थ को विद्रोह करने से रोकता है और इसे अच्छे नैतिक मूल्यों से सुशोभित करता है।

असावधानी के कारण मनुष्य का शारीरिक स्वत्व स्वयं को भूल जाता है। न ही वह अपनी अंतर्निहित अनंत नपुंसकता, गरीबी और दोषों को देखना चाहता है। इस बात पर विचार न करें कि यह किस प्रकार दुर्भाग्य से ग्रस्त है और क्षय के अधीन है, और यह कि यह मांस और हड्डियों से बना है जो तेजी से विघटित और विघटित हो जाता है। यह हिंसक लालच और आसक्ति के साथ दुनिया पर हमला करता है, जैसे कि इसमें स्टील हो शरीर हमेशा के लिए जीना चाहता है और जो भी लाभदायक और आनंददायक है, उससे चिपक जाता है। इस अवस्था में वह अपने निर्माता को भूल जाता है, जो उसे पूरी सावधानी से प्रशिक्षित करता है। अनैतिकता के दलदल में डूबा हुआ वह अपने इस जीवन या परलोक के परिणामों के बारे में नहीं सोचता।

लेकिन रमज़ान के महीने में रोज़ा रखने से सबसे लापरवाह और जिद्दी व्यक्ति भी अपनी कमज़ोरी और जन्मजात गरीबी का एहसास करता है। भूख एक महत्वपूर्ण हिस्सा बन जाती है विचार और उन्हें याद दिलाता है कि उनका शरीर वास्तव में कितना नाजुक है। वे करुणा और देखभाल की अपनी आवश्यकता को समझते हैं और अहंकार को त्याग कर, चाहते हैं पूर्ण असहायता और अभाव में उठकर ईश्वरीय न्यायालय में शरण लें मौन धन्यवाद के हाथ से दया के द्वार पर दस्तक देना - बशर्ते, बेशक, इस लापरवाही ने अभी तक उन्हें पूरी तरह से भ्रष्ट नहीं किया है।

छठा बिन्दु: अल्लाह ने रमजान के दौरान कुरान का अवतरण शुरू किया। इसके कई निहितार्थ हैं, जैसे: उस महीने का स्वागत करना जब क़ुरान, ईश्वरीय संदेश प्रकट हुआ, विश्वासियों को खाने-पीने का त्याग करके स्वर्गदूतों की तरह बनने की कोशिश करनी चाहिए। उन्हें खुद को ईश्वरीय शक्ति से भी दूर रखना चाहिए।

शारीरिक स्वार्थ की व्यर्थ व्यस्तता और सकल जरूरतें। रमज़ान के दौरान, वे कुरान को इस तरह पढ़ना या सुनना चाहिए जैसे कि वह पहली बार अवतरित हो रहा हो यदि संभव हो तो उन्हें इसे ऐसे सुनना चाहिए जैसे कि वे पैगंबर को सुन रहे हों मुहम्मद इसे पढ़ते हैं, या महादूत गेब्रियल इसे मुहम्मद को पढ़ते हैं, या भगवान उन्होंने इसे जिब्रील के माध्यम से मुहम्मद तक पहुंचाया। उन्हें कुरान का सम्मान करना चाहिए अपने दैनिक कार्यों में तथा दूसरों तक इसका संदेश पहुंचाकर, प्रदर्शित करें इसके प्रकटीकरण का ईश्वरीय उद्देश्य।

रमज़ान मुस्लिम दुनिया को एक विशाल मस्जिद में बदल देता है लाखों लोग पृथ्वी के निवासियों को कुरान सुनाते हैं। रमज़ान का महीना, जिसमें क़ुरान अवतरित हुआ (2:185), रमज़ान साबित करता है खुद को कुरान का महीना मानते हैं। जबकि विशाल सभा में से कुछ मुस्लिम दुनिया की महान मस्जिद में इसकी तिलावत को गंभीरता से सुनें श्रद्धा, अन्य लोग इसे व्यक्तिगत रूप से सुनाना पसंद करते हैं। शारीरिक आत्मा की आज्ञा मानकर उस स्वर्गीय आध्यात्मिक अवस्था को त्यागना और इस प्रकार भोजन करना सबसे अप्रिय है और पवित्र "मस्जिद" में शराब पीना, क्योंकि इससे पूरी मंडली की नफरत भड़कती है। यह सबसे अप्रिय भी है, और इससे मुस्लिमों को जरूर गुस्सा आएगा दुनिया की नापसंदगी और अवमानना, उन मुसलमानों का मुकाबला करने और उन्हें चुनौती देने के लिए जो उपवास करते हैं रमजान.

सातवां बिंदु: रमजान के उपवास के कई उद्देश्य हैं जो एक व्यक्ति के आध्यात्मिक पुरस्कारों से संबंधित हैं, क्योंकि हर किसी को इस दुनिया में बीज बोने के लिए भेजा जाता है। अगले जीवन का। निम्नलिखित पैराग्राफ में एक ऐसे उद्देश्य की व्याख्या की गई है, जो इस प्रकार है: रमज़ान के

दौरान किए गए अच्छे कर्मों का पुरस्कार कई गुना बढ़ जाता है हज़ार. एक परंपरा के अनुसार प्रत्येक अक्षर के लिए 10 पुरस्कार दिए जाते हैं कुरान का एक अक्षर पढ़ने से 10 अच्छे कर्म होते हैं और 10 फल मिलते हैं जन्नत का इनाम। लेकिन रमज़ान के दौरान, यह इनाम 1,000 से गुणा हो जाता है और यहां तक कि "सिंहासन की आयत" जैसी आयतों के लिए और भी अधिक।[387] इनाम और भी बड़ा है रमज़ान की शुक्रवार की रात को। इसके अलावा, प्रत्येक अक्षर को 30,000 से गुणा किया जाता है यदि शक्ति और भाग्य की रात के दौरान इसका पाठ किया जाए तो यह 100 बार हो सकता है।

रमजान के दौरान कुरान, जिसका प्रत्येक अक्षर स्वर्ग के 30,000 स्थायी फल पैदा करता है, एक विशाल धन्य वृक्ष की तरह हो जाता है जो लाखों फल पैदा करता है।

---

[387] अल्लाह! उसके सिवा कोई माबूद नहीं, वह ज़िंदा है, खुद्दार है, सबका पालनहार है। नींद और सो जाओ उसे न पकड़ो, आसमानों और ज़मीन की हर चीज़ उसी की है, कौन सिफ़ारिश कर सकता है उसकी उपस्थिति में जब तक कि वह इसकी अनुमति न दे? वह जानता है कि उसके पहले और बाद में और उसके पीछे क्या (प्रकट होता है) प्राणी, और वे केवल उतना ही ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं जितना वह अनुमति देता है। उसका सिंहासन आकाश और पृथ्वी पर फैला हुआ है। उनकी रक्षा और संरक्षण करते हुए उसे कोई थकान महसूस नहीं होती, क्योंकि वह सर्वोच्च, सर्वोच्च है। (2:255)

स्वर्ग के स्थायी फल। सोचिए यह व्यापार कितना पवित्र और लाभदायक है,
और यह उन लोगों के लिए कितना बड़ा नुकसान है जो कुरान के अक्षरों की कद्र नहीं करते।

इसलिए रमजान इस तरह के लाभदायक व्यापार के लिए सबसे उपयुक्त समय है।
परलोक का नाम। यह परलोक की खेती के लिए सबसे उपजाऊ क्षेत्र की तरह है-

अच्छे कर्मों के लिए पुरस्कारों का गुणन इसे वसंत में अप्रैल की तरह बनाता है।
यह भगवान शिव की पूजा करने वालों के लिए एक पवित्र और शानदार त्योहार है।
प्रभुता की संप्रभुता.

यही कारण है कि रमजान का रोज़ा अनिवार्य है, मोमिनों को इसकी अनुमति नहीं है
शारीरिक आत्मा की पाशविक भूख को संतुष्ट करना और उसकी बेकार कल्पनाओं में लिप्त होना।
चूँकि वे उपवास करते समय या ऐसे व्यापार में संलग्न रहते हुए देवदूत के समान बन जाते हैं,
प्रत्येक आस्तिक ईश्वर की आत्मनिर्भरता को प्रतिबिंबित करने वाला दर्पण है। वे आगे बढ़ते हैं
भौतिक वेश में प्रकट शुद्ध आत्मा बनना,
दुनिया भर में एक निश्चित अवधि के लिए। वास्तव में, रमजान में आस्था रखने वालों को शामिल किया जाता है और उन्हें इसका लाभ मिलता है
उपवास के माध्यम से इस संसार में थोड़े समय के बाद स्थायी जीवन प्राप्त किया जा सकता है।

एक रमज़ान से मोमिनों को 80 साल के बराबर सवाब मिल सकता है,
क्योंकि कुरान ने शक्ति और भाग्य की रात को 80 साल तक ऐसी रात न होने से अधिक लाभदायक बताया है (97:3)।
एक राजा एक रात की घोषणा कर सकता है।
किसी विशेष अवसर, जैसे कि उनके राज्याभिषेक, को मनाने के लिए कुछ छुट्टियाँ, और फिर
उन दिनों में अपने वफ़ादार लोगों को खास सम्मान देकर उनका आदर करता है।
18,000 लोकों के शाश्वत और प्रतापी राजा ने कुरान को उतारा,
रमज़ान के दौरान हर दुनिया के लिए एक महान आदेश है। इसलिए बुद्धि की मांग है कि
रमज़ान एक विशेष ईश्वरीय त्यौहार है जिसके दौरान ईश्वर की कृपा बरसती है
हमारे उपहार और आत्माएं एक साथ आती हैं। यह देखते हुए कि रमजान एक है
ईश्वर द्वारा निर्धारित त्यौहार, उपवास का आदेश दिया गया है ताकि लोग अपने पापों से दूर रहें।
कुछ हद तक वे अपनी शारीरिक व्यस्तताओं से मुक्त हो जाते हैं।

उपवास लोगों को अपने शरीर द्वारा किए गए पापों को त्यागने में भी सक्षम बनाता है
इंद्रियों या अंगों का उपयोग करें और प्रत्येक से संबंधित विशेष पूजा कार्यों में उनका उपयोग करें।
उदाहरण के लिए, जो लोग उपवास करते हैं उन्हें अपनी जीभ को झूठ बोलने, चुगली करने और कसम खाने से
रोकना चाहिए और उसे कुरान की तिलावत करने, ईश्वर की स्तुति करने में व्यस्त रखना चाहिए।
उनसे क्षमा मांगते हुए, तथा पैगम्बर मुहम्मद पर उनका आशीर्वाद मांगते हुए।
उन्हें अपनी आँखों को निषिद्ध चीज़ों को देखने से और अपने कानों को निषिद्ध चीज़ों को सुनने से रोकना चाहिए; इसके बजाय उन्हें आध्यात्मिक शिक्षा या नैतिक चेतावनी देने वाली चीज़ों को देखना चाहिए और कुरान और सत्य को सुनना चाहिए।
यदि फैक्ट्री रूपी पेट को काम करने से रोका जाए, तो अन्य सदस्यों (छोटी-छोटी कार्यशालाओं) को भी आसानी से उसका अनुसरण कराया जा सकता है।

आठवां बिंदु: उपवास का एक उद्देश्य लोगों को शारीरिक रूप से स्वस्थ बनाना है।
और आध्यात्मिक आहार। अगर शारीरिक आत्मा अपनी इच्छानुसार काम करती है, खाती है और पीती है, तो लोगों के शारीरिक स्वास्थ्य को नुकसान पहुँचता है। लेकिन, और उससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि उनका आध्यात्मिक स्वास्थ्य भी प्रभावित होता है।
जीवन को नुकसान पहुंचता है क्योंकि वे अनुमत और अनुमत के बीच भेदभाव नहीं करते हैं
निषिद्ध। इस तरह के शारीरिक स्व को दिल की आज्ञा मानना बहुत मुश्किल लगता है और
आत्मा। किसी भी सिद्धांत को मान्यता नहीं देते हुए, यह व्यक्ति की लगाम अपने हाथ में ले लेता है और उसे चलाता है
या उसे जैसा चाहे वैसा।

रमज़ान का रोज़ा उसे परहेज़ करने का आदी बनाता है, और आत्म-अनुशासन उसे प्रशिक्षित करता है
आज्ञा का पालन करना। पिछले भोजन से पहले ज़्यादा खाने से पेट को कोई नुकसान नहीं होता
उचित रूप से पचा लिया गया है और जो अनुमति है उसे त्यागना सीख लिया है, और जो निषिद्ध है उससे परहेज करने के लिए तर्क और धर्म के आदेश का पालन कर सकता है। इस प्रकार
शारीरिक आत्मा अपने स्वामी के आध्यात्मिक जीवन को भ्रष्ट न करने का प्रयास करती है।

इसके अलावा, ज़्यादातर लोग अलग-अलग स्तरों पर भूख से पीड़ित होते हैं। लंबे समय तक भूख को धैर्यपूर्वक सहने के लिए, लोगों को खुद को आत्म-अनुशासन में प्रशिक्षित करना चाहिए
और तपस्या। रमजान का उपवास लोगों को 15 घंटे या यहां तक कि 24 घंटे तक भूखा महसूस कराकर धैर्य-आधारित प्रशिक्षण प्रदान करता है।
भोजन छूट जाता है। इस प्रकार उपवास अधीरता और सहनशक्ति की कमी को दूर करता है, जो
मानवता का दुर्भाग्य दोगुना हो जाएगा।

शरीर के कई अंग किसी न किसी तरह पेट की सेवा करते हैं। अगर वह "फैक्ट्री" ऐसा करती है
यह किसी विशेष माह में अपनी दिनचर्या को नहीं रोकता, अपितु उन सदस्यों को अपने में ही व्यस्त रखता है और उन्हें उनकी पूजा तथा उत्कृष्ट कर्तव्यों के प्रति विस्मृत कर देता है।
यही कारण है कि संत हमेशा आध्यात्मिक और मानवीय लाभ के लिए तपस्या को प्राथमिकता देते हैं।
पूर्णता। रमज़ान का उपवास हमें याद दिलाता है कि हमारे शरीर के अंग सिर्फ़ पेट भरने के लिए नहीं बनाए गए हैं। रमज़ान के दौरान, कई शारीरिक अंग भौतिक सुखों के विपरीत दिव्य और आध्यात्मिक सुखों का अनुभव करते हैं। परिणामस्वरूप, उपवास करने वाले विश्वासियों को आध्यात्मिक पूर्णता के अपने स्तर के अनुसार आध्यात्मिक सुख और ज्ञान की डिग्री प्राप्त होती है।
उपवास

रमज़ान व्यक्ति के दिल, आत्मा, तर्क और अंतरतम इंद्रियों को परिष्कृत करता है।
यदि पेट शिकायत करता है, तो ये इन्द्रियाँ प्रसन्न होती हैं।

नौवां बिंदु: रमज़ान के रोज़े रखने से शारीरिक स्वार्थ नष्ट होता है।
भ्रामक प्रभुत्व और, उसे यह याद दिलाते हुए कि वह स्वाभाविक रूप से असहाय है, उसे विश्वास दिलाता है
यह एक सेवक है। चूँकि शारीरिक आत्मा अपने प्रभु को पहचानना पसंद नहीं करती, इसलिए वह कष्ट सहते हुए भी हठपूर्वक प्रभुता का दावा करती है। केवल भूख ही ऐसे स्वभाव को बदल सकती है-
तथापि

ईश्वर के दूत कहते हैं कि सर्वशक्तिमान ईश्वर ने सांसारिक आत्मा से पूछा: "कौन
मैं कौन हूँ, और तुम कौन हो?" उसने उत्तर दिया: "आप स्वयं हैं, और मैं स्वयं हूँ।" हालाँकि

जब भगवान ने उसे बहुत सज़ा दी और अपना प्रश्न दोहराया, तो उसे वही उत्तर मिला। लेकिन जब उसने उसे भूखा रखा, तो उसने कहा: "आप मेरे दयालु भगवान हैं; मैं आपका असहाय सेवक हूँ।"

हे ईश्वर, हमारे स्वामी मुहम्मद को ऐसी शांति और आशीर्वाद प्रदान कर, जिससे आप प्रसन्न हों और उन्हें रमज़ान के दौरान कुरान के अक्षरों को पढ़ने के लिए मिलने वाले पुरस्कारों की संख्या के अनुसार उनका हक प्रदान कर सकें, और उनके परिवार और साथियों को भी। आपका रब महिमावान है, सम्मान और शक्ति का रब; उससे कहीं बढ़कर जो वे उसे गलत तरीके से मानते हैं। रसूलों पर शांति हो, और सारी प्रशंसा अल्लाह के लिए हो, जो सारे संसार का रब है। आमीन।

* * *

तीसरा खंड

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

अल्लाह आकाश और धरती का प्रकाश है। (24:35)

रमज़ान के दौरान, मैंने प्रकाश फैलाने वाली आयत के रहस्य की असंख्य चमकों में से एक का अनुभव किया: ईश्वर आकाश और पृथ्वी का प्रकाश है। मेरा दिल इस बात से आश्वस्त था कि सभी जीवित प्राणी ईश्वर से एक ही प्रार्थना करते हैं, जैसे कि उवैस अल-क़रानी ने की थी:

हे ईश्वर, आप मेरे स्वामी हैं और मैं आपका सेवक हूँ; आप रचयिता हैं और मैं रचयिता हूँ; आप सर्व-प्रदाता हैं और मैं ही भरण-पोषण करने वाला हूँ...

और मुझे महसूस हुआ कि 18,000 लोकों में से प्रत्येक लोक को एक दिव्य नाम से प्रकाश प्राप्त होता है।

दुनिया की तुलना एक बहु-पंखुड़ी वाली गुलाब की कली से की जा सकती है जिसमें कई तरह की दुनियाएँ एक-दूसरे में लिपटी हुई हैं। मैंने हर एक के पीछे या नीचे एक नई दुनिया देखी। प्रत्येक दुनिया ने खुद को अंधकार और भयावह उदासी में प्रकट किया, जैसा कि निम्नलिखित द्वारा दर्शाया गया है:

या जैसे विशाल गहरे सागर में अन्धकार के पर्दे हों, जो एक बड़ी लहर से ढके हों, एक बड़ी लहर से ढके हों, एक के ऊपर एक काले बादल हों, एक अन्धकार दूसरे के ऊपर ऐसा हो कि यदि मनुष्य अपना हाथ बढ़ाए तो उसे मुश्किल से दिखाई दे। जिस किसी के लिए परमेश्वर ने प्रकाश नहीं ठहराया, उसके लिए कोई प्रकाश नहीं। (24:40)

मेरी दृष्टि में, एक दिव्य नाम अचानक प्रकट हुआ और प्रत्येक को प्रबुद्ध कर दिया
असावधानी के कारण संसार मुझे अंधकारमय प्रतीत हो रहा है।
दिल या कल्पना लंबे समय तक चली। नीचे उसका सारांश दिया गया है:

पशु जगत बहुत उदास दिखाई दिया, क्योंकि जानवर नपुंसक और कमजोर होते हैं।
कमज़ोर, असंख्य ज़रूरतें और भयंकर भूख से पीड़ित। लेकिन ईश्वरीय नाम
दयालु भगवान अचानक मीनार के ऊपर चमकते सूरज की तरह प्रकट हुए
सर्व-प्रदाता और दया के प्रकाश से उस संसार को पूरी तरह से प्रकाशित किया।

उसके बाद, मैंने उस दुनिया में एक और दयनीय दुनिया देखी जिसमें
युवा शक्तिहीन ज़रूरतों में हताश संघर्ष करते हैं। अचानक सर्व-करुणामय नाम सर्व-देखभाल के टॉवर से ऊपर उठ गया और इतनी खूबसूरती से उस दुनिया को रोशन कर दिया कि उसने दुख के आँसुओं को खुशी, खुशी के आँसुओं में बदल दिया,
और धन्यवाद का आनन्द।

फिर मानव जगत प्रकट हुआ, मानो किसी पर्दे पर। यह इतना अंधकारमय था,
उदास और भयावह कि मैं घबराहट से भर गया और चिल्लाया: "कितना दयनीय!" मैंने देखा कि लोगों की अनंत इच्छाएँ और महत्वाकांक्षाएँ हैं, सार्वभौमिक विचार हैं
और कल्पनाएँ, और स्वर्ग में अनंत काल और अनंत सुख की ओर महान झुकाव और प्रवृत्तियाँ। फिर भी, उनकी अनंत कमज़ोरियों के अलावा,
नपुंसकता और ज़रूरत के कारण, वे असंख्य दुर्भाग्य और शत्रुतापूर्ण हमलों के संपर्क में आते हैं। वे अकेले या समूहों में, एक छोटे से उथल-पुथल भरे दौर से गुज़रते हैं
जीवन, दयनीय आजीविका, और निरंतर क्षय और विनाश के दुखद प्रहारों के तहत
अलगाव। जब वे अंततः कब्र तक पहुंचते हैं, जो (लापरवाह लोगों के लिए) प्रकट होती है
अनंत अंधकार की ओर खुलने वाले द्वार के रूप में, उन्हें एक अँधेरे गड्ढे में फेंक दिया जाता है। मैं लगभग
मैं अपनी सारी इंद्रियों, बुद्धि, हृदय और आत्मा के साथ रो पड़ा,
ऐसी दयनीय रूप से अंधेरी और उदास दुनिया को देखना।

परन्तु तब वह दिव्य नाम जो सर्व-न्यायमय है, इस अर्थ में प्रकट हुआ
सर्वशक्तिमान परमेश्वर का नाम, दयालु परमेश्वर के नाम के साथ,
सर्व-उदार, सर्व-दयालु का नाम अर्थ में
सर्व-क्षमाशील, सर्व-उत्तराधिकारी के अर्थ में मृतकों को जीवित करने वाला नाम, सर्व-उपकारकर्ता के अर्थ में पुनर्जीवित करने वाला नाम, और
भगवान का नाम गुरु के अर्थ में। वे नाम प्रकाशित हुए
उस अंधेरी मानवीय दुनिया के भीतर कई क्षेत्र और, खुलती खिड़कियाँ
उन्हें परलोक की चमकदार दुनिया से दूर कर दिया, उस पर प्रकाश फैला दिया।

इसके बाद, एक अन्य विशाल स्क्रीन पर पृथ्वी और उसकी सामग्री प्रदर्शित की गई।
विज्ञान के अस्पष्ट नियमों और भ्रष्ट दर्शन के सिद्धांतों ने यह दिखा दिया
भयावह और उदास। मानवता की दयनीय स्थिति, पुरानी पृथ्वी पर अनंत अंतरिक्ष में तैरती हुई, अंदर से निरंतर ज्वालामुखी विस्फोट की स्थिति में

और विघटन के लिए प्रवण, इतनी अधिक गति से घूमते हुए कि चारों ओर चक्कर लगाते हैं
एक साल में सूरज, भयावह रूप से उदास लग रहा था। मैं चकित था और चक्कर महसूस कर रहा था।

लेकिन अचानक ही, ब्रह्मांड और पृथ्वी के निर्माता का नाम,
सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञ, प्रभु, ईश्वर, आकाश और पृथ्वी के स्वामी, और
सूर्य और चन्द्रमा को वश में करने वाली दया प्रकट हुई,
भव्यता और प्रभुता। उन्होंने उस दुनिया को इतना रोशन कर दिया कि मैंने उसे एक सुरक्षित जगह के रूप में देखा,
एक उत्तम और सुन्दर जहाज मानवता के अधीन किया गया ताकि लोग आनंद या व्यापार के लिए यात्रा कर सकें।

संक्षेप में, मैंने देखा कि 1,001 दिव्य नामों में से प्रत्येक एक सूर्य की तरह है जो उनमें से एक दुनिया को प्रकाशित करता है। प्रत्येक में कई क्षेत्र हैं, और बाकी सभी
नाम स्वयं को उस नाम के साथ कुछ हद तक क्रमबद्ध संबंध में प्रकट करते हैं
ईश्वर की एकता के कारण पूर्ण अभिव्यक्ति।

अंधकार के प्रत्येक पर्दे के पीछे एक अलग प्रकाश को पहचानते हुए, मेरा हृदय कल्पना पर चढ़कर, अंधकार की दुनिया की ओर ऊपर की ओर यात्रा करना चाहता था।
मैंने देखा कि वे चमकते हुए ग्रह, जो मुस्कुराते हुए प्रतीत होते हैं,
पृथ्वी से बड़े हैं और उससे तेज़ घूमते हैं। अगर उनमें से एक भी बन गया
उलझन में, यह एक दूसरे से टकरा जाएगा और ब्रह्मांड को नष्ट कर देगा। इसलिए मैंने देखा
स्वर्ग को एक अंधकारमय, असीम और भयावह स्थान के रूप में देखें, जिसमें गतिशील या
स्थिर तारे आग और प्रकाश विकीर्ण करते हैं। मुझे यहाँ आने का पछतावा हुआ।

लेकिन तब दिव्य सुंदर नाम स्वर्ग और पृथ्वी के भगवान
और फ़रिश्तों और रूह का रब ज़ाहिर हुआ और उसने बयान किया कि हमने नज़दीकी आसमान को चिराग़ों से सजाया है (67:5)

और: उसने सूर्य और चंद्रमा को वश में कर लिया है (13:2)। अंधकार में स्थित प्रत्येक तारे को उन नामों के शक्तिशाली प्रकाश से एक चमक मिली, और आकाश चमक उठा।
ऐसा लगा जैसे सितारों के बराबर ही दीपक जलाए गए हों। वह स्थान, जिसे पहले अंधकारमय और खाली माना जाता था, भीड़ से भरा हुआ, जीवंत और उज्ज्वल था
स्वर्गदूतों और आत्मिक प्राणियों द्वारा। सूर्य और तारे, राजा के एक मेजबान के रूप में सेवा करते हैं
अनंत काल का, ऐसा प्रतीत हो रहा था, मानो कोई महान युद्धाभ्यास कर रहा हो,
राजसी राजा की भव्यता और उनके आधिपत्य की महिमा। अगर मेरे पास होता
पर्याप्त शक्ति होती, यदि मेरे शरीर के कण मेरी बात मानते, और यदि मैं कर पाता
यदि मैंने ऐसा सभी प्राणियों की भाषाओं में किया होता, तो मैं यह कहता:

> परमेश्वर आकाश और पृथ्वी का प्रकाश है। उसके प्रकाश का दृष्टान्त
> ऐसा लगता है जैसे एक जगह है और उसके भीतर एक दीपक है, दीपक अंदर से घिरा हुआ है
> कांच, कांच मानो एक चमकता सितारा हो, एक धन्य पेड़ से प्रकाशित,
> जैतून, न तो पूर्व का और न ही पश्चिम का, जिसका तेल लगभग

> अपने आप चमक उठती है, हालाँकि उसे किसी आग ने नहीं छुआ। प्रकाश पर प्रकाश! भगवान
> जिसे चाहता है अपने प्रकाश की ओर मार्ग दिखाता है। (24:35)

हालाँकि, मैंने सभी प्राणियों की ओर से उस श्लोक का पाठ किया और जागते हुए,
पृथ्वी पर लौटते हुए कहा: "विश्वास के प्रकाश और
"कुरान।"

चौथा खंड: मानवीय और शैतानी षडयंत्र

(कुरान के विद्यार्थियों और सेवकों के लिए भ्रम के विरुद्ध चेतावनी)

ईश्वर के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

> ज़ालिमों की तरफ़ न झुको, कहीं ऐसा न हो कि आग तुम्हें छू ले
> आप. (11:113)

यह चौथा खंड छह मानवीय और शैतानी षड्यंत्रों और अवरोधों को नकारता है
आक्रमण के छह मार्ग.

पहला रहस्य: शैतान से सबक सीखकर, मनुष्य
शैतान कुरान के आत्म-त्यागी सेवकों को प्रेम के माध्यम से धोखा देने का प्रयास करते हैं
प्रसिद्धि, पद और स्थिति को त्यागने की उम्मीद करते हुए, उम्मीद करते हैं कि इससे वे इसे त्याग देंगे
उच्च सेवा और आध्यात्मिक पवित्र संघर्ष।

हर किसी के मन में प्रसिद्धि पाने की महत्वाकांक्षा, पद का लोभ, धन-संपत्ति पाने की इच्छा होती है।
स्थिति। अगर उन्हें इससे कुछ प्रसिद्धि मिल जाए तो वे अपने जीवन का बलिदान भी कर सकते हैं। यह इच्छा परलोक के लोगों के लिए खतरनाक और विनाशकारी है
इस दुनिया के लोगों के लिए। यह कई बुरी नैतिकताओं को जन्म देता है और मानव चरित्र का सबसे कमज़ोर बिंदु है। सार्वजनिक मान्यता की इस इच्छा को उत्तेजित करके, मानव शैतान लोगों को वश में कर सकते हैं और उन्हें अपने साथ जोड़ सकते हैं।
मुझे अपने अनुयायियों के लिए सबसे अधिक डर इस बात का है कि अविश्वासी लोग उन कमज़ोर लोगों पर हमला करेंगे
यह मुझे बहुत परेशान करता है, क्योंकि पहले से ही उन्होंने मेरे कुछ लोगों को धोखा दिया है
ऐ कुरान के साथी सेवकों! ऐसे चालाक सांसारिक एजेंटों से कहो ,

गुमराही के अग्रदूत और शैतान के चेले: "ईश्वर की स्वीकृति, दयालु की प्रशंसा और भगवान की स्वीकृति इतनी महान स्थिति या स्थान है कि इसकी तुलना में लोगों का पक्ष और प्रशंसा लगभग मायने रखती है

---

[388] वे यह गलत धारणा रखते हैं कि वे हृदय से अपने शिक्षक के साथ हो सकते हैं, लेकिन वे ऐसा नहीं सोचते।
जोखिम में। हालाँकि, अविश्वासियों द्वारा बहकाए गए लोग, अनजाने में इस्तेमाल किए जाने के लिए खुले हैं
जासूस, और जो ऐसे लोगों का समर्थन भी करते हैं, वे उन लोगों के समान हैं जो प्रार्थना करते समय मदद नहीं कर सकते
हवा पास करते हुए कहते हैं: “मैं धार्मिक रीति से कैसे अशुद्ध हो सकता हूँ, क्योंकि मेरी आत्मा शुद्ध है!”

कुछ भी नहीं। अगर भगवान हमें पसंद करते हैं और हमें स्वीकार करते हैं, तो लोगों की स्वीकृति या प्रशंसा स्वीकार किया जा सकता है - बशर्ते कि यह परमेश्वर की स्वीकृति को दर्शाता हो। अन्यथा इसे यह वांछनीय नहीं है, क्योंकि यह कब्र के द्वार पर हमें लाभ नहीं पहुंचाएगा।"

यदि आप अभी भी इन इच्छाओं पर काबू नहीं पा सकते हैं, तो उन्हें किसी लक्ष्य की ओर मोड़ने का प्रयास करें। आध्यात्मिक पुरस्कार प्राप्त करें या उनका उपयोग अन्य लोगों की प्रार्थनाएँ प्राप्त करने के लिए करें (उनकी मदद करके) और ताकि कुरान और विश्वास के लिए हमारी सेवा का दूसरों पर अच्छा प्रभाव पड़े अन्य। निम्नलिखित तुलना इसे स्पष्ट करती है, इस प्रकार:

कल्पना कीजिए कि हागिया सोफिया मस्जिद पवित्र उपासकों से भरी है, कुछ निष्क्रिय लोग भी हैं। गेट या प्रवेश कक्ष पर खड़े बच्चे और आवारा लोग, और कुछ विदेशी लोग मनोरंजन की तलाश में खिड़कियों से झांक रहे थे। यदि कोई व्यक्ति प्रवेश करता है और कुरान का एक पन्ना सुन्दरता से पढ़ता है, तो मस्जिद में उपस्थित सभी पवित्र, सत्य-प्रेमी उपासक उसका स्वागत करेंगे, अनुमोदन करेंगे और उसकी सराहना करेंगे। वह व्यक्ति, जो अपने बुलावे से परमेश्वर के आशीर्वाद से आध्यात्मिक प्रतिफल प्राप्त करेगा उस पर। केवल बाहर के लोग ही इस व्यक्ति को नापसंद करेंगे। लेकिन यदि वह मस्जिद में अश्लील गीत गाता है या हिंसक ढंग से नाचता है, तो बेकार बच्चे खुश होंगे, आवारा लोग प्रसन्न होंगे (और अधिक अश्लीलता के लिए उकसाए जाएंगे), और विदेशी लोग इस्लाम और मुसलमानों की दुर्दशा देखकर प्रसन्न होंगे। लेकिन उस विशाल धन्य मण्डली का प्रत्येक सदस्य ऐसे व्यक्ति को नापसंद करेगा और उसकी निंदा करेगा तथा उसे निम्नतम स्तर का समझेगा।

यह मस्जिद एशिया और अफ्रीका के संपूर्ण मुस्लिम जगत से मेल खाती है (और यूरोप में भी)। विश्वासी और सत्य के लोग ही मण्डली हैं। आलसी बच्चे मूर्ख लोगों, अनैतिक आवारा लोगों का प्रतिनिधित्व करते हैं पश्चिम के अधार्मिक और विधर्मी अनुकरणकर्ताओं का प्रतिनिधित्व करते हैं, और विदेशी वे पत्रकार हैं जो विदेशी [गैर-इस्लामी] विचारों का प्रसार करते हैं।

प्रत्येक मुसलमान, विशेषकर धर्मनिष्ठ और पूर्णतया आस्था रखने वाले मुसलमानों का, इस संसार में स्थान है। मस्जिद और मुसलमानों की नज़र में एक स्थिति इस बात पर निर्भर करती है कि वह कितना अच्छा है वह इस्लाम का पालन करती है। अगर ऐसे लोग ईमानदारी से इस्लाम की पवित्र सच्चाइयों का पालन करें और कुरान की ईश्वर की प्रसन्नता के लिए दी गई आज्ञाएँ, इस्लामी दर्शन का आधार हैं। वे जीवन में आगे बढ़ते हैं और अपने आचरण के माध्यम से कुरान की आयतों के अर्थ को प्रदर्शित करते हैं। प्रार्थना में शामिल है: "हे ईश्वर, सभी विश्वासियों को क्षमा कर," हमेशा सभी द्वारा कहा जाता है इससे सभी मुसलमानों के साथ भाईचारे और बहन जैसा रिश्ता कायम होता है। केवल कुछ गुमराह लोग जो मानवता की श्रेणी से बहुत नीचे हैं, या सरल-चित्त लोग जिन्हें दाढ़ी वाले बच्चे (दिखने में वयस्क लेकिन मन और चरित्र से बच्चे) माना जा सकता है, उन्हें अस्वीकार करते हैं।

लेकिन अगर लोग अपने (धर्मी मुस्लिम) पूर्वजों से नाता तोड़ लेते हैं (साधन) सम्मान और गौरव की) और धर्मी मिसाल के शानदार तरीके से (एक

आध्यात्मिक समर्थन का स्रोत) सनक और कल्पनाओं का पालन करने और दिखावे और प्रसिद्धि के लिए अधार्मिक नवीनताओं का पीछा करने के लिए, विश्वास और सत्य के लोग उन्हें सबसे अच्छा मानते हैं।
सबसे नीच। सभी विश्वासी, अपनी अज्ञानता और साधारणता की परवाह किए बिना, अनजाने में ही ऐसे घमंडी लोगों से घृणा करते हैं
"विश्वासी की अंतर्दृष्टि से डरो, क्योंकि वह ईश्वर के प्रकाश से देखता है।"389 जो लोग ऐसे कारणों से सांसारिक

लोगों और अविश्वासियों को खुश करने की कोशिश करते हैं
अधिकांश मुसलमानों की नज़र में वे सबसे निचले स्तर पर पहुँच गए हैं। उनकी क्षणभंगुर और अशुभ स्थिति केवल भ्रमित और उपहासित अल्पसंख्यकों तक सीमित है।
लोग। के अनुसार: उस दिन दोस्त एक दूसरे के दुश्मन होंगे, सिवाय
जो लोग परहेज़गार हैं वे अल्लाह की अवज्ञा से बचते हैं (43:67), वे झूठे दोस्त पाते हैं
जो उन्हें यहाँ नुकसान पहुँचाएगा, उन्हें मध्यवर्ती दुनिया में पीड़ा देगा
क़ब्र में भी तुम ही उनके शत्रु होगे।

जो लोग सार्वजनिक मान्यता चाहते हैं, वे कुरान को पवित्र भाषा में पढ़ना पसंद करते हैं।
मस्जिद में जाकर वे एक महत्वपूर्ण और लाभकारी आध्यात्मिक स्थिति प्राप्त करते हैं जो इस इच्छा को संतुष्ट करती है - लेकिन केवल तभी जब वे ईमानदारी से और ईश्वर की प्रसन्नता के लिए कार्य करते हैं,
और इसके परिणामस्वरूप मिलने वाली प्रसिद्धि और पद को अपना मुख्य उद्देश्य नहीं मानते।
वे जो जीतते हैं, उसके सामने वे जो खोते हैं, वह महत्वहीन है। वे कुछ साँप जैसे लोगों को खो सकते हैं, लेकिन उन्हें इतने सारे धन्य मित्र मिलेंगे जो उनके लिए प्रार्थना करेंगे कि
उनकी आत्माओं में जीवन जल की तरह दिव्य आशीर्वाद हर जगह से बहेगा
मुस्लिम दुनिया में ऐसे आशीर्वाद उनके कर्मों के रिकॉर्ड में जोड़े जाते हैं।

एक बार एक सार्वजनिक व्यक्ति ने एक बहुत ही महत्वपूर्ण सांसारिक पद ग्रहण किया और
मुसलमानों की नज़रों में वह हंसी का पात्र बन गया क्योंकि उसने शोहरत की चाह में कई गंभीर गलतियाँ कीं। मैंने उसे यह सीख बहुत ज़ोरदार तरीक़े से दी।
उसे हिलाया, लेकिन चूंकि मैं पद के मोह से मुक्त नहीं हो सका था, इसलिए मेरी चेतावनी बेअसर रही।

दूसरा रहस्य: डर एक सबसे बुनियादी मानवीय भावना है।
गलत काम करने वाले, दुनियावी एजेंट और गुमराही के संदेशवाहक इसका फायदा उठाते हैं
आम लोगों और खास तौर पर धार्मिक लोगों में डर और चिंता पैदा करना
विद्वानों का मानना है कि मान लीजिए कि कोई व्यक्ति छत पर किसी चिंतित, भयभीत व्यक्ति को उकसाता है,
निराधार संदेह और चिंताओं के माध्यम से, जब तक वह गिर नहीं जाता और अपनी रीढ़ नहीं तोड़ देता
इसी तरह, सांसारिक लोग मुसलमानों से कई महत्वपूर्ण कुर्बानियाँ करवाते हैं
निराधार भय और चिंताएँ पैदा करके।

एक महत्वपूर्ण व्यक्ति (भगवान की दया उस पर हो) नाव से यात्रा करने से डरता था। एक शाम, हम एयूप जाने के लिए नौका लेने के लिए गलाटा पुल पर गए।
वह नाव पर चढ़ना नहीं चाहता था, कह रहा था कि उसे डर है कि वह डूब जाएगा। जब मैं

389 तिर्मिज़ी, तफ़सीर सूरा 15:6।

उनसे पूछा गया कि गोल्डन हॉर्न में कितनी नावें हैं, तो उन्होंने जवाब दिया कि शायद एक हज़ार तक होंगे। जब मैंने उनसे पूछा कि कितनी नावें डूबीं प्रत्येक वर्ष, वह आमतौर पर एक या दो, और कभी-कभी कोई भी नहीं, उत्तर देते थे।

मैंने यह उदाहरण दिया: "चूँकि एक वर्ष में 365 दिन होते हैं, इसलिए आपके डूबने की संभावना 1:365,000 है। इतनी कम संभावना आपको क्यों डराती है?" मैंने पूछा: "कैसे? आप कितने लंबे समय तक जीने की उम्मीद करते हैं?" उसने उत्तर दिया: "शायद 10 साल; मैं मैं पहले से ही बूढ़ा हूँ।" मैंने आगे कहा: "चूँकि 10 साल में 3,650 दिन होते हैं, इसलिए आपके पास मौका है आज मरने की संभावना 1:3,650 है। लेकिन चूँकि हम नहीं जानते कि हम कब मरेंगे, इसलिए आप किसी भी समय मर सकता है। इसलिए पश्चाताप करो और रोओ! अपनी अंतिम वसीयत और वसीयतनामा लिखो!"

मेरी बातों में सच्चाई देखकर वह कांपते हुए भी नाव पर चढ़ गया। नाव पर मैंने उससे कहा: "सर्वशक्तिमान ईश्वर ने हमारे स्वभाव में भय इसलिए रखा है ताकि हम अपने जीवन को बचा सकते हैं, उसे बर्बाद नहीं कर सकते। उसने हमें जीवन को बेहतर बनाने के लिए डर नहीं दिया दर्द और पीड़ा से भरा एक असहनीय बोझ। अगर 1:2 या 1:3 का जोखिम है या १:४, या अधिक से अधिक १:५ या ६, डरना अनुमेय और सहनीय हो सकता है जोखिम से बचें। लेकिन 1:20, 1:30 या 1:40 के मौके से डरना निराधार संदेह है, एक तरह का भ्रम जो जीवन को पीड़ा में बदल देता है।"

इसलिए, हे भाइयो और बहनों! यदि चाटुकार और अविश्वासी लोग यदि तुम्हें उसके कारण के संघर्ष को छोड़ने के लिए प्रलोभन दिया जाए, तो कहो: "हम क़ुरआन के लोगों, और, भगवान की घोषणा के अनुसार: हमने भेजा कुरान और हम इसकी रक्षा करेंगे (15:9), हम इसके गढ़ में हैं। ईश्वर हमारे लिए पर्याप्त है। वह कितना अच्छा प्राणी है जिस पर भरोसा करना और निर्भर रहना अच्छा है, और हमारा भरोसा एक मजबूत विश्वास है हमारे चारों ओर गढ़ है। आप हमें खतरे से डरने के लिए कह रहे हैं, भले ही वहाँ केवल इस छोटे क्षणिक जीवन के दौरान इसका हम पर प्रभाव पड़ने की संभावना 1:1,000 है, लेकिन ऐसा नहीं हो सकता। हमें ऐसे मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करते हैं जो हमारे अनन्त जीवन के लिए १०० प्रतिशत हानिकारक है इसके बाद।"

उन्हें यह भी बताएं: "क्या सैद नूरसी ने कभी किसी को नुकसान पहुंचाया है सत्य के लोग? वह कुरान की सेवा में हमारा साथी है, हमारे शिक्षक हैं इस पवित्र सेवा को पूरा करना। क्या उनके किसी सच्चे शिष्य को कभी ऐसा दुर्भाग्य सहना पड़ा है कि हमें अपने बारे में चिंता करनी पड़े? उनके हजारों भाई [बहन] और धर्म में दोस्त हैं। इससे पहले, जब उन्होंने अधिक समय बिताया था

सक्रिय सार्वजनिक जीवन में 20 साल से ज़्यादा समय तक रहने के बावजूद हमने कभी नहीं सुना कि उनके किसी दोस्त को कोई नुकसान हुआ हो। उनका दावा है कि 31 मार्च [1925] के विद्रोह में उनकी भागीदारी के कारण उसके कुछ दोस्तों को कुचल दिया गया।390

390 यह सुल्तान अब्दुलहामिद के खिलाफ विद्रोह था। हालांकि कुछ इतिहासकार इस बात से असहमत हैं, लेकिन यह एक बहुत बड़ा विद्रोह था। संभवतः यह विद्रोह ब्रिटिश और जर्मनों द्वारा भड़काया गया था, जिन्होंने विरोधी एकता का समर्थन किया था और प्रोग्रेस पार्टी, हालांकि विद्रोह करने वालों ने शरिया के पक्ष में नारे लगाए थे। (ट्र.)

लेकिन यह बात जल्द ही झूठी साबित हो गयी, क्योंकि विद्रोह से उनका कोई लेना-देना नहीं था। उसके दोस्तों को केवल इसलिए नुकसान हुआ क्योंकि उन्होंने स्वयं ऐसा किया था। वास्तव में, उन्होंने उनमें से कई लोगों को दुर्भाग्य से बचाया। राजनीति की "गदा", जिसे उन्होंने बहुत समय पहले फेंक दिया था ताकि सत्य का प्रकाश। इस प्रकार आप जैसे मानव शैतानों को नहीं सोचना चाहिए कि आप हमें उस खतरे के डर से अनन्त खजाने से वंचित कर सकते हैं जो ऐसा होने की संभावना केवल 1:1,000 है।”

जो लोग गुमराह लोगों की खुशामद करते हैं उनसे इसी तरह बात करो और कहो उनसे कहा: "हम ऐसे दुर्भाग्य से नहीं डरते जिसके घटित होने की संभावना लगभग न के बराबर हो। अगर इस रास्ते में कोई खतरा भी हो, तो भी हम उसे कभी नहीं छोड़ेंगे, क्योंकि दुर्भाग्य सबसे पहले उन्हीं के साथ होता है जो खतरे के समय अपने स्वामी को धोखा देते हैं।
ऐसे लोगों को निर्दयतापूर्वक दंडित किया जाता है, नीच लोगों के रूप में उनकी निंदा की जाती है, और कुछ शारीरिक और आध्यात्मिक दोनों तरह की मृत्यु झेलते हैं। उनके दंड देने वालों को कोई दया नहीं आती उनके लिए, क्योंकि वे सोचते हैं: “चूँकि उन्होंने अपने वफ़ादार और स्नेही स्वामी को धोखा दिया है, वे अवश्य ही सबसे नीच चरित्र के होंगे और इसलिए इसके लायक हैं।”

जब कोई क्रूर, अन्यायी व्यक्ति किसी को कुचलने के लिए ज़मीन पर फेंकता है उसे मौत के घाट उतार दिया जाएगा, पीड़ित पहले अत्याचारी के स्तन चूमकर आध्यात्मिक रूप से मर जाएगा। पैर और फिर, सभी सम्मान और गरिमा खोने के बाद, अपमानजनक मौत मर जाएगा। ऐसी स्थिति में असहायता प्रदर्शित करना तानाशाह को देश को कुचलने के लिए प्रोत्साहित करता है। व्यक्ति को मौत की सज़ा दी जा सकती है। लेकिन अगर पीड़ित व्यक्ति तानाशाह के चेहरे पर थूकता है, तो उसे मौत की सज़ा दी जाती है। एक शहीद और सम्मान और गरिमा के साथ आध्यात्मिक रूप से जीवित है।

जब ब्रिटिश सेना ने इस्तांबुल पर आक्रमण किया और तोपों को नष्ट कर दिया बोस्फोरस में, उनके धार्मिक प्रतिनिधियों में से एक ने छह प्रश्न पूछे शेख अल-इस्लाम का कार्यालय, जो उस समय तुर्की का सर्वोच्च धार्मिक कार्यालय था। मैं हाउस ऑफ इस्लामिक विजडम (दार अल-हिक्मा अल-इस्लामिया) का सदस्य था, उन्होंने मुझसे जवाब देने को कहा। यह व्यक्ति प्रश्न पूछना चाहता था 600 शब्दों में उत्तर दिया। मैंने उत्तर दिया: "न तो 600 से, न ही 6 से, न ही सम से एक शब्द। मैं उन्हें बू के साथ जवाब दूंगा। क्योंकि आप देखते हैं कि कैसे, जब एक राष्ट्र सरकार हमारी गर्दन पर पैर रखती है, उसका धार्मिक अधिकारी हमसे पूछने के लिए उठता है कुछ सवाल घमंड से पूछे। इसलिए उसे बू करना चाहिए!”

अब मैं कहता हूँ: "प्रिय भाइयो [बहनो], भले ही इस्तांबुल के अत्याचारी आक्रमणकारियों को उस तरह से जवाब देना १०० प्रतिशत खतरनाक था, कुरान मेरी रक्षा के लिए पर्याप्त था। यह तुम्हें किसी भी खतरे से बचाने के लिए पर्याप्त होगा। खतरा जिसके उन लोगों के हाथों होने की बहुत कम संभावना है तुच्छ गलत काम करने वाले।”

इसके अलावा, प्रिय भाइयो, आपमें से अधिकांश लोगों ने अपनी सैन्य सेवा पूरी कर ली है। जो लोग सेना में शामिल नहीं हुए हैं उन्होंने जरूर सुना होगा - अगर नहीं सुना है, वे मुझसे यह सुनें कि जो लोग युद्ध के मैदान से भागते हैं, उन्हें बहुत कुछ मिलता है जो लोग दृढ़ रहते हैं, उनसे ज़्यादा ज़ख्म मिलते हैं। कविता: वह मौत जिससे तुम बच सकते हो भागते हुए लोग तुमसे मिलेंगे (62:8), संकेत देता है कि जो लोग भागते हैं वे वास्तव में उनसे मिलने के लिए जल्दी करते हैं मौत।

तीसरी साज़िश: लालच कई लोगों को धोखा देता है। निर्णायक आधार पर कुरान की आयतों से प्रमाण और स्पष्ट व्याख्या के साथ मैंने लिखा है कि वैध प्रावधान किसी की गरीबी और नपुंसकता के अनुसार आता है, न कि किसी की क्षमता और इच्छाशक्ति। मैं इस सत्य के अनगिनत संकेतों में से केवल कुछ ही प्रस्तुत करता हूँ और साक्ष्य इस प्रकार हैं:

पेड़ जीवित प्राणी हैं जिन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। चूँकि वे स्थिर होते हैं, उन्हें उनकी ज़रूरत की चीज़ें मिल जाती हैं। जानवरों को भोजन नहीं दिया जाता इतने बढ़िया तरीके से, क्योंकि वे अपना भोजन अधीरता से खोजते हैं। मछलियाँ पूरी तरह से खिलाए गए और आमतौर पर मोटे हो जाते हैं, हालांकि वे सबसे कम बुद्धिमान हैं जानवर, जबकि बंदर और लोमड़ी जैसे चतुर और मजबूत जानवर अपर्याप्त पोषण के कारण ज्यादातर कमजोर होते हैं। इससे यह भी पता चलता है कि प्रावधान आधारित है आवश्यकता या अभाव पर, शक्ति या क्षमता पर नहीं।

पशु और मानव शिशुओं को बहुत अच्छी तरह से और असाधारण रूप से खिलाया जाता है उनकी माँ का स्तन दूध, दया के खजाने का सबसे अच्छा भोजन और सबसे मीठा उपहार। यह उन्हें अप्रत्याशित तरीके से उनकी चिंता के कारण प्रदान किया जाता है उनकी कमज़ोरी और अक्षमता। इसके विपरीत, जंगली जानवरों को आमतौर पर वे अपनी थकान मिटाने के लिए किए गए अथक प्रयासों से मिलने वाले दुर्लभ भोजन से संतुष्ट रहते हैं। यह दर्शाता है कि कैसे वैध प्रावधान बुद्धिमता और क्षमता पर नहीं, बल्कि नपुंसकता और गरीबी पर आधारित है।

सभी लोगों में, यहूदी आम तौर पर सबसे अधिक भावुक अनुयायी होते हैं सांसारिक प्रावधान के प्रति उदासीन और, परिणामस्वरूप, अपने लालच के लिए प्रसिद्ध हैं। कोई अन्य नहीं लोगों को बहुत कष्ट, गरीबी और अपमान सहना पड़ा है। यहाँ तक कि अमीर यहूदी भी दुख और तनाव में रहते हैं। उनकी संपत्ति इस सामान्य बात का खंडन नहीं करती यह तर्क सही नहीं है, क्योंकि वे इसे सूदखोरी जैसे गैरकानूनी तरीकों से प्राप्त करते हैं।

कई साहित्यिक हस्तियों और विद्वानों की गरीबी और अमीरी बहुत से अज्ञानी लोग यह भी दिखाते हैं कि कमज़ोरी और ज़रूरतें, न कि बुद्धिमत्ता और योग्यता, प्रावधान को आकर्षित करती हैं। प्रावधान को आकर्षित करने के अन्य तरीके हैं ईश्वर पर भरोसा करना और मौखिक रूप से तथा अपने स्वभाव और वैध प्रयास के माध्यम से उससे प्रार्थना करना। आयत: ईश्वर सर्व-प्रदाता, सर्वस्व स्वामी है दृढ़ शक्ति (51:58) इतनी मजबूत और दृढ़ सबूत है कि सभी वनस्पति-

जानवर और बच्चे इसे सुनाते हैं। हर जीवित प्रजाति जिसे भोजन की ज़रूरत होती है, अपनी स्वभावगत भाषा के ज़रिए इसे सुनाती है।

चूँकि ईश्वर सर्वशक्तिमान, अत्यंत दयालु और अत्यंत उदार है,
वह सभी प्रावधानों को पूर्वनिर्धारित और प्रदान करता है, अपने आप को इस तरह से नम्र करना अत्यधिक मूर्खता है जो उसकी दया का उपहास करता है और उसकी उदारता को कम करता है या
कुछ धन के बदले में अपना विवेक और पवित्र चीजें अर्पित करना।

सांसारिक लोग, विशेषकर गुमराह लोग, नशा पाने के लिए पैसे उधार लेते हैं
बदले में कुछ धन के बदले में जो एक साल की आजीविका में योगदान दे सकता है, वे लोगों को परलोक के अनन्त जीवन से वंचित कर सकते हैं। दुर्भाग्य से,
हमेशा कुछ ऐसे लोग होते हैं जो अपने घृणित कार्यों से ईश्वरीय क्रोध को आकर्षित करते हैं
लालच और गुमराह लोगों को खुश करने की कोशिश करके।

प्रिय अनुयायियों! यदि वे लोग जो गुमराह सांसारिक लोगों और पाखंडियों की चापलूसी करते हैं, लालच के माध्यम से आपको फंसाना चाहते हैं, तो मेरे शब्दों पर विचार करें और मेरे शब्दों का पालन करें।
उदाहरण के लिए, केवल मितव्ययिता और संतोष - वेतन या मजदूरी नहीं - आपको ऐसा करने की अनुमति देता है
अपने जीवन को बचाने के लिए। अगर वे आपको अवैध रूप से पैसे उधार देते हैं, तो वे आपसे पैसे की मांग करेंगे।
उच्च दर पर वापसी। उनकी दुनिया में आपकी भागीदारी आपकी सेवा में बाधा डाल सकती है
कुरान, जिसका प्रत्येक घंटा अनन्त खजाने के द्वार खोल सकता है।
इस सेवा से विरत होना इतना बड़ा नुकसान है कि कोई भी वेतन या मजदूरी इसकी भरपाई नहीं कर सकती।
कभी भी पर्याप्त मुआवजा नहीं मिलेगा।

नोट: गुमराह और पाखंडी लोग व्यवहार्य वैकल्पिक विचार और तर्क प्रस्तुत नहीं कर सकते हैं या कुरान की सच्चाई के खिलाफ खुद का बचाव नहीं कर सकते हैं
और उनका प्रसार। इस प्रकार वे मेरे दोस्तों को प्यार के माध्यम से धोखा देने की कोशिश करते हैं
पद, लालच और भय का। वे मुझे अविश्वसनीय साबित करने के लिए झूठे आरोप भी लगाते हैं। हालाँकि हम अपनी सेवा में हमेशा सकारात्मक रूप से काम करते हैं, फिर भी हम
कभी-कभी रास्ते में आने वाली बाधाओं को दूर करने के लिए नकारात्मक कार्य करना पड़ता है
हमारी सेवा। और इसलिए मैं अपने अनुयायियों को ऊपर बताए गए इन तीन बातों के प्रति आगाह करता हूँ,
और उन पर किये गये हमलों को पीछे हटाने का प्रयास करें।

उन्होंने मुझ पर व्यक्तिगत रूप से भी हमला किया और कहा: "सईद एक कुर्द है। आप उसे कैसे पकड़ सकते हैं?"
उन्हें इतना सम्मान देते हैं और इतनी गर्मजोशी से उनका अनुसरण करते हैं? उन्हें चुप कराने के लिए, मैं महसूस करता हूँ
ओल्ड सईद की भाषा में चौथी शैतानी साज़िश जोड़ने के लिए मजबूर होना पड़ा।

चौथा षड्यंत्र: शैतान द्वारा उकसाया गया और लोगों द्वारा प्रेरित
गुमराह करने के लिए, कुछ उच्च-स्तरीय अविश्वासियों ने मुझ पर झूठा आरोप लगाया और, कोशिश की
मेरे अनुयायियों को धोखा देने और उनके राष्ट्रीय उत्साह को जगाने के लिए कहो: "तुम तुर्की हो।
तुर्कों, भगवान उनका भला करें, हर क्षेत्र में कई विद्वान और पूर्णता के लोग हैं। सईद एक कुर्द है। आप एक गैर-तुर्क के साथ सहयोग करने को अपने राष्ट्रीय उत्साह के साथ कैसे जोड़ सकते हैं?

जवाब: हे बदकिस्मत विधर्मियों! अल्लाह की स्तुति हो, मैं एक मुसलमान हूँ और मैं पवित्र राष्ट्र इस्लाम का सदस्य हूँ, जिसके करोड़ों सदस्य हैं। मैं अपने उन भाइयों और बहनों की बलि देने से ईश्वर की शरण लेता हूँ, जो मेरे बीच हैं।

जिनमें से अधिकांश कुर्द हैं, नस्लवाद और नकारात्मक राष्ट्रवाद के लिए।

उन सभी और मेरे बीच एक शाश्वत बंधन है, और वे मेरी मदद करते हैं

उनकी प्रार्थनाएँ। मैं कुछ कुर्दों का समर्थन प्राप्त करने से बचने के लिए ईश्वर की शरण चाहता हूँ

उन अनगिनत धन्य मुस्लिम भाइयों और बहनों की कीमत पर नास्तिक या विधर्मी।

हे अभागे अविश्वासियों, तुम्हारा भ्रष्ट तर्क यह कहता है कि शाश्वत सत्य करोड़ों लोगों से बने एक विशाल, प्रतिष्ठित समुदाय के बंधन सच्चे भाई-बहनों को एक अस्थायी, कुछ धर्मत्यागियों के साथ बेकार की दोस्ती जिन्हें धर्म से संबंधित माना जाता है तुर्की जाति.

मैं पाठकों को अपनी चर्चा के लिए छब्बीसवाँ पत्र पढ़ने का सुझाव देता हूँ। नकारात्मक राष्ट्रवाद की प्रकृति और नुकसान। यहाँ, मैं एक सच्चाई पर विस्तार से चर्चा करता हूँ इसमें संक्षेप में इस प्रकार चर्चा की गई है:

उन अविश्वासियों के लिए जो तुर्कों के दुश्मन होते हुए भी उनके पीछे छिपे रहते हैं। तुर्की राष्ट्रवाद। मेरा इस देश के साथ गहरा और सच्चा संबंध है हम दोनों विश्वासियों के बीच एक वास्तविक बंधन है और हम एक ही मुस्लिम राष्ट्र से संबंधित हैं। इस्लाम के नाम पर मैं इस देश के बच्चों का समर्थन करता हूँ, उनसे प्यार करता हूँ और उन पर गर्व करता हूँ। वह देश जिसने लगभग 1,000 वर्षों तक कुरान का ध्वज विजयी रूप से उठाया।

जहाँ तक तुम्हारा सवाल है, हे पाखंडियों, जो तुर्की राष्ट्रवाद का झूठा दावा करते हो! तुर्की के लोगों के साथ अल्पकालिक संबंध प्रदर्शित करने के पीछे छिपे उद्देश्य उन्हें उनके वास्तविक राष्ट्रीय सम्मान को भूलने पर मजबूर करना है! क्या तुर्की राष्ट्र बनाया गया है?

क्या यह केवल 20 से 40 वर्ष की आयु के काल्पनिक और असावधान युवाओं से बना है?

क्या उनकी रुचि इस बात में है कि उन्हें इस नाम पर क्या सेवा दी जाए?

राष्ट्रवाद के लिए ऐसी शिक्षा प्रणाली की आवश्यकता है जो उनकी असावधानी को बढ़ाए, उन्हें अनैतिकता की आदत डाले और उन्हें पाप कर्म करने के लिए प्रोत्साहित करे? क्या उनकी सेवा करने का मतलब उन्हें खुश करना है ताकि बाद में जीवन में वे

विलाप और कष्ट सहेंगे?

यदि आपके राष्ट्रवाद, प्रगति और खुशी के संस्करण में ऐसी चीजों की आवश्यकता है, और यदि आप स्वयं को इस प्रकार के तुर्की राष्ट्रवादी कहते हैं, तो जान लें कि मैंने आपसे कोई समानता नहीं है और आपकी संगति नहीं चाहता। यदि आपके पास कोई है यदि आपमें ज़रा भी विवेक, कुछ सच्चा राष्ट्रीय उत्साह और थोड़ी भी निष्पक्षता बची हो, तो कृपया निम्नलिखित चर्चा पर विचार करें और फिर मुझे उत्तर दें:

तुर्की राष्ट्र में छह समूह के लोग शामिल हैं: धर्मपरायण लोग
और धार्मिकता, पीड़ित और बीमार, बुजुर्ग, बच्चे, गरीब
और कमज़ोर, और युवा। क्या पहले पाँच समूह किसी तरह से अयोग्य हैं
क्या आपका राष्ट्रीय उत्साह उनकी भावनाओं को ठेस पहुंचाएगा?
और छठे समूह को खुश करने के लिए उन्हें उनके सांत्वना के साधनों से वंचित कर दिया?
"निर्णय देते समय बहुमत पर विचार किया जाता है" के सिद्धांत के अनुसार
"जो बहुमत को नुकसान पहुंचाता है, वह उनका दुश्मन है, मित्र नहीं।"

मैं आपसे पूछता हूँ: धर्मपरायण और धार्मिक लोगों का हित कहाँ है? सभ्यता के भ्रष्टाचार का अंधानुकरण करने में, या सच्चा मार्ग खोजने में?
सत्य के मार्ग से सांत्वना पाना, जिससे वे शाश्वत सुख में अपने विश्वास के कारण पूरी लगन से जुड़े हुए हैं? आपकी गुमराह और

राष्ट्रीय उत्साह का झूठा दावा उनकी रोशनी को बुझा देगा, उन्हें उनकी क्षमता से वंचित कर देगा
सांत्वना, और वर्तमान मृत्यु को पूर्ण विनाश के रूप में और कब्र को एक विनाश के रूप में
अनंत पृथक्करण का द्वार.

क्या इससे पीड़ितों, बीमारों और निराश लोगों के हितों की पूर्ति होगी?
आधुनिक सभ्यता के अधार्मिक और अनैतिक पहलुओं का अनुकरण करना?
इसके बजाय, वे सांत्वना की आशा करते हैं और अपने दुख के बदले कुछ पाने की इच्छा रखते हैं।
वे उन लोगों से बदला लेना चाहते हैं जिन्होंने उनके साथ गलत किया और वे न्याय के मार्ग पर चलना चाहते हैं।
खुशी से कब्र खोदो। फिर भी, आपका झूठा राष्ट्रवाद भावनाओं को चोट पहुँचाता है
जिन्हें देखभाल, उम्मीद और सांत्वना की सख्त जरूरत है। आप उन्हें रोकते हैं और उन्हें आगे बढ़ाते हैं
उन्हें बिना किसी दया के पूर्ण निराशा में डाल दिया। क्या राष्ट्रीय उत्साह के लिए यही वास्तव में आवश्यक है?

देश की आबादी में एक तिहाई बुजुर्ग लोग हैं। हर दिन वे
इस दुनिया से दूर चले जाते हैं और मौत की ओर बढ़ते हैं। वे धीरे-धीरे इस जीवन से नाता तोड़कर इसके लिए तैयारी करते हैं।
क्या उनकी रुचि या सांत्वना कुछ कथित तुर्की तानाशाहों और आपके भयानक कारनामों को सुनने में है?

आंदोलन की स्वघोषित प्रगति, जो आपकी उपेक्षा से अधिक कुछ नहीं है
परलोक की चिंता, इस संसार से आसक्ति, तथा अपरिहार्य आध्यात्मिक क्षय?
क्या सिनेमा देखने वाले लोग अपने आस-पास के लोगों को रोशन करने के लिए कोई रोशनी पा सकते हैं?
दुनिया में जाना है या थिएटर में सच्ची सांत्वना ढूंढनी है?

मैं आपके राष्ट्रीय उत्साह से ईश्वर की शरण में जाता हूँ, क्योंकि आप इसका उपयोग
बुजुर्गों (जो राष्ट्रीय उत्साह से उचित सम्मान की अपेक्षा रखते हैं) को यह विश्वास दिलाने में धोखा देते हैं कि मृत्यु पूर्ण विनाश है
और कब्र (जिसे वे एक पवित्र वस्तु मानते हैं) उन्हें ...
दया का द्वार) एक ड्रैगन के मुंह जैसा दिखता है जिसमें उन्हें फेंक दिया जाएगा।
क्या यही सच्चा राष्ट्रीय उत्साह है?

बच्चे राष्ट्रीय उत्साह से दया और देखभाल की उम्मीद करते हैं। कमज़ोर और
नपुंसक होने के बावजूद, वे केवल पुनः प्राप्ति के द्वारा ही उत्साही बन सकते हैं और अपनी क्षमता का विकास कर सकते हैं।

एक दयालु और शक्तिशाली निर्माता को पहचानना। वे जीवन को प्रेम और आशा से तभी देख सकते हैं जब वे ईश्वर में विश्वास, निर्भरता और समर्पण से प्रेरित हों। केवल यही तरीका उन्हें भविष्य की भयानक परिस्थितियों और आपदाओं का विरोध करने में मदद करता है।

यह देखते हुए, क्या उनकी रुचि और खुशी भौतिक प्रगति से जुड़ने में है जिसमें उनकी केवल सतही रुचि है, और भौतिकवादी दर्शन के सिद्धांतों में जो उन्हें हतोत्साहित और हतोत्साहित करेंगे? यदि हम केवल जानवरों की तरह जैविक संस्थाएँ होते, बिना बुद्धि के प्राणी, तो वह शिक्षा जिसे आप "सभ्यता के लिए राष्ट्रीय शिक्षा" कहते हैं, शायद उनकी कुछ सांसारिक रुचियों को पूरा कर सकती है और उन्हें अस्थायी रूप से मनोरंजन कर सकती है जैसे एक नया खिलौना एक बच्चे को मनोरंजन करता है। लेकिन चूँकि ये मासूम इंसान हैं, और चूँकि वे जीवित रहते हुए उथल-पुथल का अनुभव करेंगे, इसलिए वे दीर्घकालिक इच्छाओं को संजोए रखेंगे और उनके पास महान उद्देश्य होंगे।

उनकी कमज़ोरी और नपुंसकता की भरपाई करने के लिए, हमें उनकी आत्माओं में ईश्वर और परलोक में दृढ़ विश्वास स्थापित करके उनकी देखभाल करनी चाहिए, जो कि एक सहारा और मदद का एक अटूट स्रोत है। यही सच्ची दया और देखभाल की मांग है। अन्यथा, एक पागल माँ की तरह जो अपने बच्चे को चाकू से मार देती है, हम उन्हें राष्ट्रीय उत्साह के नशे में धुत करके आध्यात्मिक रूप से मार देंगे। या हम उन्हें उनके अपने दिमाग और दिल खिलाने जैसा भयानक अपराध करेंगे।

राष्ट्रीय उत्साह गरीबों को नजरअंदाज नहीं कर सकता, जिन्हें गरीबी जीवन के भारी बोझ के नीचे कुचल देती है, या कमजोरों को, जो जीवन के भयंकर आघातों से प्रभावित होते हैं।
क्या राष्ट्रीय उत्साह में उनका हिस्सा आपके पतनशील आंदोलनों में निहित है, जिन्हें आप सभ्यता के नाम पर स्थापित करते हैं, लेकिन जो केवल उन गरीबों को पीड़ा और निराशा में बढ़ाते हैं, और कुछ भ्रष्ट धनी लोगों को उनकी वासनाओं और इच्छाओं को संतुष्ट करने और कुछ शक्तिशाली, अत्याचारी लोगों को बदनामी पाने और अधिक अपराध करने में मदद करते हैं? गरीब लोगों की गरीबी नस्लवाद से हल नहीं हो सकती, बल्कि केवल इस्लाम के पवित्र "औषधि भंडार" में मौजूद दवा से हल हो सकती है। इस्लामी उत्साह और पवित्र इस्लामी राष्ट्रवाद, न कि भौतिकवादी दर्शन जो हर चीज को संयोग और संयोग पर आधारित मानता है, गरीबों और कमजोरों को वह प्रतिरोध और ताकत देता है जिसकी उन्हें जीवित रहने के लिए जरूरत है।

छठा समूह युवा वर्ग का है। अगर युवापन स्थायी होता, तो नकारात्मक राष्ट्रवाद की आपकी "शराब" उनके लिए कुछ समय के लिए उपयोगी हो सकती थी। लेकिन जब वे बुढ़ापे में जवानी के नशे से उबरते हैं, जब वे बुढ़ापे की सुबह जीवन के दर्द और वास्तविकताओं के साथ जागते हैं, तो शराब से प्रेरित परेशानियाँ उन्हें फूट-फूट कर रोने पर मजबूर कर देती हैं। उस मीठे सपने के अंत से आने वाला दर्द

उन्हें यह कहते हुए पछताना पड़ेगा: "हाय! जवानी चली गई, जीवन लगभग समाप्त हो गया है, और मैं अच्छे कर्म किए बिना कब्र के करीब पहुंच रहा हूं। काश मैं समझदार होता और इस घटना के लिए तैयार होता!"

क्या यह देखते हुए कि राष्ट्रीय उत्साह की आवश्यकता है कि युवा क्षणिक आनंद के लिए लंबे समय तक पछतावे का अनुभव करें? या क्या खुशी और आनंद अपनी जवानी को सीधे रास्ते पर बिताने, युवावस्था के आशीर्वाद के लिए भगवान को धन्यवाद देने, अपनी क्षणभंगुर जवानी का उपयोग पूजा के माध्यम से स्थायित्व प्राप्त करने और अपनी जवानी को विश्वास और अच्छे कर्मों में बिताने के द्वारा खुशी की दुनिया में शाश्वत युवावस्था को सुरक्षित करने में निहित है?

संक्षेप में, यदि तुर्की राष्ट्र केवल युवाओं से बना होता, और यदि युवा स्थायी होते और कोई दूसरी दुनिया नहीं होती, तो तुर्की राष्ट्रवाद की आड़ में आधुनिक सभ्यता के बिखरे हुए पहलुओं की आपकी नकल को सच्चा राष्ट्रीय उत्साह माना जा सकता था। आप मेरे बारे में यह कहने का अधिकार रखते हैं, एक ऐसे व्यक्ति के बारे में जो सांसारिक जीवन और घोर राष्ट्रवाद को कम महत्व देता है, जो युवाओं को पाप करने से रोकने की कोशिश करता है और जो दूसरे प्रांत में पैदा हुआ है: "वह कुर्द है, इसलिए उसका अनुसरण न करें!"

लेकिन चूंकि इस तुर्की राष्ट्र के लोगों में छह समूह शामिल हैं, इसलिए यह राष्ट्र के लिए सरासर शत्रुता है कि वह छठे समूह को सीमित अवधि के लिए खुश करने के लिए पांच समूहों को नुकसान पहुंचाए, अपने सदस्यों को अभी से नशे में डाल दे ताकि उनका बुढ़ापा पछतावे और निराशा से भरा हो।

वे मुझे तुर्क नहीं मानते, हालाँकि मैंने अपना जीवन नेक तुर्कों, बूढ़ों और पीड़ितों, ग़रीबों और कमज़ोरों तथा बच्चों के लाभ के लिए गहरे स्नेह और भाईचारे की भावना के साथ काम करते हुए बिताया है। मैंने युवाओं को पापपूर्ण कार्यों से दूर रखने का प्रयास किया है जो उनके सांसारिक जीवन को विषाक्त करते हैं और उनके अगले जीवन को बर्बाद करते हैं, जिसके कारण एक घंटे के आनंद के बदले में एक साल तक रोना पड़ता है। पिछले 20 वर्षों में प्रकाशित मेरे प्रकाशन, सभी तुर्की भाषा में, सभी खुले में हैं। ईश्वर की स्तुति हो कि कुरान की रोशनी के स्रोत से प्राप्त इन कार्यों के माध्यम से, बूढ़ों को वह प्रकाश प्रदान किया जाता है जिसकी उन्हें इतनी सख्त ज़रूरत है।

पीड़ित और बीमार लोगों के लिए सबसे उपयोगी उपाय कुरान में पाया जाता है। कब्र को अनंत दया का द्वार बताया गया है, न कि अनंत विनाश का। कुरान बच्चों को जीवन के दुर्भाग्य के खिलाफ़ एक मजबूत सहारा प्रदान करता है और उनकी इच्छाओं और महत्वाकांक्षाओं को संतुष्ट करता है। इसके अलावा, कुरान की आस्था की सच्चाई कमज़ोर और ग़रीब लोगों को जीवन के बोझ से मुक्ति दिलाती है।

मैं धार्मिक युवाओं के साथ हार्दिक एकता महसूस करता हूँ। हालाँकि, मैं उन लोगों को तुर्क नहीं मानता जो विधर्म को अपनाते हैं और मुस्लिम से नाता तोड़ना चाहते हैं
राष्ट्रीयता, तुर्की राष्ट्रीय गौरव का वास्तविक स्रोत है। मैं उन्हें तुर्क के वेश में छिपे शत्रुतापूर्ण विदेशी मानता हूँ। वे सत्य के लोगों को धोखा नहीं दे सकते
भले ही वे बार-बार दावा करते हों कि वे तुर्क और तुर्की राष्ट्रवादी हैं,
क्योंकि उनके कार्य और व्यवहार उनके विरोधाभासी हैं।

अब, हे तुम जो मेरे सच्चे भाइयों [बहनों] को मेरे साथ उनके संबंधों में ठंडा करने की कोशिश करते हो! तुम इस राष्ट्र का क्या लाभ उठाते हो? तुम प्रकाश को बुझा देते हो
धर्मपरायण और धार्मिक लोगों के लिए। आप बीमार लोगों की चोटों को और गहरा करते हैं और
पीड़ित, जो दया और ध्यान के पात्र हैं। आप बुजुर्गों को वंचित करते हैं
उनके सांत्वना के साधन को नष्ट कर देते हैं और उन्हें निराशा की ओर धकेल देते हैं। आप उनका मनोबल गिराते हैं
बच्चों को, जिन्हें ऐसी देखभाल की बहुत ज़रूरत है, और उनकी मानवता को खत्म कर देते हैं। गरीब और कमज़ोर लोगों की उम्मीदों को नष्ट करके, जिन्हें मदद और सांत्वना की बहुत ज़रूरत है, और उनकी मदद के स्रोत को सुखाकर, आप उन्हें जीवन को और अधिक सार्थक रूप में देखने पर मजबूर करते हैं।
मृत्यु से भी अधिक भयानक.

अंत में, आप युवाओं को नशे में डाल रहे हैं, जिन्हें चेतावनी दी जानी चाहिए और जागृत किया जाना चाहिए।
जवानी की नींद से, ऐसी “शराब” के साथ कि परिणामस्वरूप होने वाली मादकता
अत्यंत दर्दनाक और भयानक। इस प्रकार आपका राष्ट्रीय उत्साह कई लोगों का बलिदान देता है
इस देश की पवित्र चीज़ें! क्या आपके तुर्की राष्ट्रवाद से तुर्कों को फ़ायदा होता है
मैं आपके तुर्कवाद या तुर्कीवाद से ईश्वर की शरण चाहता हूँ
राष्ट्रवाद!

सज्जनों! मैं जानता हूँ कि जब आप किसी मुद्दे पर हार जाते हैं तो आप बल का सहारा लेते हैं
सत्य का। इस सिद्धांत के अनुसार कि "सही शक्ति है" न कि "शक्ति है
ठीक है, मैं तुम्हारे सामने अपना सिर कभी नहीं झुकाऊंगा, क्योंकि मैं इसे बलिदान करने के लिए तैयार हूं
कुरान की सच्चाई। साथ ही, मैं आपको सूचित करता हूं कि यदि आपके जैसे हजारों लोग, जिन्हें लोग नापसंद करते हैं, मुझसे दुश्मनी भी करें, तो भी मैं
मैं उनकी परवाह नहीं करता या उन्हें उससे अधिक महत्व नहीं देता जितना मैं हानिकारक प्राणियों को देता हूँ।

तुम मेरा क्या कर सकते हो? तुम मुझे मार सकते हो या मेरी सेवा में बाधा डाल सकते हो।
मेरा सम्बन्ध केवल मेरे जीवन और ईमान तथा कुरान की सेवा से है।
मौत की घड़ी कभी नहीं बदलती, अगर मैं तेरे हाथों शहीद हो जाऊँ,
मैं इसी बात का बेसब्री से इंतजार कर रहा था। चूंकि मैं पहले से ही बूढ़ा हूं और शायद
एक वर्ष से अधिक जीवित नहीं रहेंगे, यह सबसे ऊंचा उद्देश्य और लक्ष्य है
मेरे जैसे लोगों के लिए जो एक वर्ष के जीवन को शहादत के माध्यम से अनन्त जीवन के लिए बदल देना चाहते हैं।

जहाँ तक मेरी सेवा का प्रश्न है, सर्वशक्तिमान ईश्वर की स्तुति हो, उसने मुझे प्रदान किया है।
इस कार्य में ऐसे मित्रों और अनुयायियों के साथ, जो अब केवल एक केंद्र में किया जाता है,
कि मेरी मृत्यु के बाद वे इसे कई अन्य केंद्रों में भी लागू करेंगे।
मुझे चुप करा देगा, तो कई अन्य लोग बोलेंगे - और ज़ोर से बोलेंगे - मेरी ओर से और
इस सेवा को जारी रखें। जमीन के नीचे मरता हुआ बीज एक विस्तृत वृक्ष में बदल जाता है
एक के बदले हज़ारों बीज मिलते हैं। मुझे उम्मीद है कि ऐसा ही होगा
यह बात मेरे जीवन से भी अधिक मेरी मृत्यु के विषय में सत्य है।

पाँचवाँ षड्यंत्र: मेरे भाइयों [बहनों] को मुझसे अलग करने के लिए मानवीय अहंकार का उपयोग करने की गुमराह इच्छा के समर्थक। किसी व्यक्ति का सबसे खतरनाक स्वभाव और सबसे कमज़ोर पक्ष अहंकार है। इस भावना को उत्तेजित करके, वे आग्रह करते हैं
लोगों को बहुत बुरे काम करने के लिए प्रेरित करना।

प्रिय भाइयो, अहंकार के कारण अपने पर हावी न हो जाओ।
जान लो कि गुमराह लोग अपने अहंकार के कारण भटक गये हैं।
सत्य के मार्ग पर चलने वालों को अपना अहंकार त्यागकर सत्य की सेवा करनी चाहिए, भले ही कभी-कभी उन्हें इसका उपयोग करना उचित क्यों न हो, क्योंकि अपने अहंकार का उपयोग करने से वे गुमराह लोगों जैसे बन जाएँगे।
कुरान की सेवा करना, जो हमारा उद्देश्य है,
इसमें अहंकार के लिए कोई स्थान नहीं है; बल्कि, यह सच्ची एकता में सहयोग की मांग करता है।

आपको यह तो पक्का यकीन हो गया होगा कि मैं अपनी मांगों को पूरा करने के लिए आगे नहीं आया।
मैं अहंकार को त्यागना या आपको उसकी सेवा करने के लिए आमंत्रित करना नहीं चाहता; बल्कि, मैंने खुद को कुरान के एक अहंकार-रहित सेवक के रूप में आपके सामने पेश किया है। मैंने आत्म-त्याग और परोपकारिता को चुना है, और
आपके सामने यह सिद्ध हो चुका है कि लोगों के लाभ के लिए किए गए कार्य सफल रहे हैं
कुरान से लिए गए ये शब्द सभी के हैं। कोई भी इनका मालिक होने का दावा नहीं कर सकता
या उन्हें स्वयं पर आरोपित करें।

अकल्पनीय कल्पना कीजिए - कि वे मेरे हैं। फिर, मेरे एक के रूप में
अनुयायियों ने कहा, एक बार जब कुरान की सेवा का यह द्वार खुल गया है, तो पूर्णता और ज्ञान वाले लोगों को इन कार्यों का पालन करने में कोई संकोच नहीं करना चाहिए
मेरे दोषों और कमियों पर विचार करें।

धर्मी पूर्वजों और सत्य के विद्वानों के कार्य एक महान खजाना हैं जो हर किसी को लाभ पहुंचाते हैं और हर बौद्धिक या आध्यात्मिक बीमारी को ठीक करते हैं। लेकिन
ऐसी महानता के बावजूद, कभी-कभी एक कुंजी कई खजाने खोल सकती है।
जो लोग ज्ञान पर आधारित बलशाली अहंकार रखते हैं, वे समझते हैं कि शब्दों का प्रत्येक ग्रंथ कुरान की सच्चाइयों की कुंजी है और एक "हीरे की तलवार" है।
जो लोग इन सच्चाइयों को नकारते हैं, उन पर प्रहार करना चाहिए। ज्ञान और
जो लोग अपने ज्ञान का घमंड करते हैं उन्हें यह जान लेना चाहिए कि मेरे कार्यों का अनुसरण करने से
उन्हें कुरान का शिष्य बनाऊंगा, मेरा नहीं, और मैं उनका सहपाठी हूं।

असंभव मान लीजिए - कि मैं महारत का दावा करता हूँ। चूँकि रिसाले-ए-नूर विश्वास की सच्चाइयों के बारे में सभी विश्वासियों के संदेह को दूर करता है, इसलिए उन विद्वानों को या तो संदेह को दूर करने का एक बेहतर तरीका खोजना चाहिए या रिसाले-ए-नूर द्वारा बताए गए सत्यों में लोगों को निर्देश देना चाहिए। कई अच्छी परंपराएँ उन विद्वानों को चेतावनी देती हैं जो ज्ञान का उपयोग करते हैं या स्वार्थी या सांसारिक हितों के लिए अपने द्वारा ज्ञात सत्य को छिपाते हैं, इसलिए उन्हें सावधान रहना चाहिए।

मान लीजिए कि मेरे दुश्मन, जो दावा करते हैं कि मैं यह सेवा अपने अहंकार को संतुष्ट करने के लिए करता हूँ, सही हैं। फिर भी, ऐसे समय में जब बहुत से लोग अहंकार को त्यागकर फिरौन जैसे व्यक्ति के इर्द-गिर्द पूरी निष्ठा और घनिष्ठ सहयोग के साथ सांसारिक लक्ष्यों को प्राप्त करने की कोशिश कर रहे हैं, क्या मुझे आपसे यह कहने का अधिकार है कि आप अहंकार को त्याग दें और मेरे इर्द-गिर्द न रहकर कुरान की सच्चाइयों के इर्द-गिर्द एक मजबूत एकता बनाएँ? क्या आपके सबसे बड़े विद्वान भी इस अनुरोध को अस्वीकार करने में सही हैं?

प्रिय भाइयो [बहनो], ईर्ष्या अहंकार का सबसे हानिकारक पहलू है। अगर हमारी सेवा पूरी तरह से ईश्वर के लिए नहीं है, तो ईर्ष्या हस्तक्षेप करती है और उसमें मिलावट करती है। जैसे आपके हाथ एक दूसरे से ईर्ष्या नहीं करते, और आपकी आँखें आपके कानों से ईर्ष्या नहीं करतीं और आपका दिल आपकी बुद्धि से प्रतिस्पर्धा नहीं करता, वैसे ही हम में से प्रत्येक हमारे सामूहिक शरीर का एक अंग या एक भावना है। इसलिए हमें एक दूसरे के गुणों पर गर्व और आध्यात्मिक आनंद लेना चाहिए, बजाय एक दूसरे के साथ प्रतिद्वंद्विता में प्रवेश करने के।

यहाँ एक और बात का ज़िक्र करना ज़रूरी है, जो हमारी सेवा के लिए सबसे ज़्यादा हानिकारक है। आपमें से कुछ लोग या आपके दोस्त मुझसे ईर्ष्या कर सकते हैं।
तुममें से कुछ महत्वपूर्ण विद्वान हैं। कुछ विद्वान अपने ज्ञान का बखान कर सकते हैं। भले ही वे विनम्र हों, लेकिन ज्ञानी होने के कारण होने वाले अहंकार से छुटकारा पाना उनके लिए कठिन होता है। वे चाहे हृदय और बुद्धि से कितने भी भक्त और आस्थावान क्यों न हों, उनका शारीरिक स्वभाव दूसरों को यह बताना चाहता है कि वे ज्ञानी हैं और उनकी खूबियों से वाकिफ हैं। इसके अलावा, वे रिसाले (ग्रंथ) से प्रतिस्पर्धा करना चाहते हैं। हालाँकि वे जानबूझकर उन्हें पसंद करते हैं और उनका अनुमोदन करते हैं, लेकिन उनका शारीरिक स्वभाव उन्हें कमतर देखना चाहता है ताकि उनकी खुद की रचनाएँ रिसाले जितनी ही व्यापक रूप से पढ़ी जाएँ, या उससे भी ज़्यादा।

मैं आपको यह बताने के लिए बाध्य महसूस करता हूँ कि रिसाले-ए-नूर सीधे कुरान से आता है, और हम, रिसाले-ए-नूर के छात्र, विश्वास के मामलों में सच्चाई का पता लगाने और उसे बताने के लिए कर्तव्यबद्ध हैं। इस प्रकार, हमें श्रम विभाजन के सिद्धांत के अनुसार यह मान लेना चाहिए कि प्रत्येक व्यक्ति का एक अलग कर्तव्य है। इसलिए, जो लोग रिसाले के माध्यम से कुरान से सीखने के इस तरीके का पालन करते हैं , भले ही वे उच्चतम डिग्री के विद्वान या न्यायविद हों, उन्हें चाहिए

रिसाले-ए-नूर की व्याख्या और व्याख्या करने के साथ-साथ इसकी रूपरेखा और व्यवस्था करके ज़रूरतमंदों को ये “जीवन जल की बूँदें” देने का प्रयास करें।

छठी साज़िश: इसमें आलस्य का उपयोग करना, प्रत्येक व्यक्ति की आराम और सहजता की चाहत का दोहन करना, तथा सबसे अधिक सक्रिय लोगों को नए कर्तव्य सौंपना शामिल है।
शैतानी लोग और जिन्न हर दिशा से हमला करते हैं। जब वे हमारे उन दोस्तों को देखते हैं जो दृढ़, वफ़ादार, ईमानदार, उत्साही और सेवा में लगे रहते हैं, तो वे एक नई रणनीति अपनाते हैं। हमारी सेवा में बाधा डालने और हमारे उत्साह को कम करने के लिए, वे हमारे आलस्य और आरामदेह जीवन की स्वाभाविक इच्छा का फायदा उठाते हैं। वे हममें से कुछ लोगों के लिए ऐसी नौकरियाँ ढूँढ़ते हैं जो हमें सेवा के लिए बिल्कुल भी समय नहीं देतीं, या हमें अतिरिक्त काम देती हैं। वे हममें से कुछ लोगों को दुनिया के आकर्षण दिखाते हैं ताकि हमारी सांसारिक इच्छाओं और आकांक्षाओं को जगा सकें, ताकि सेवा के मामले में हम आलसी हो जाएँ। चूँकि उनके सभी तरीकों को समझाने में बहुत समय लगेगा, इसलिए मैं बाकी को आपकी समझ और समझ पर छोड़ता हूँ।

प्रिय भाइयो [बहनो]! सावधान रहो! तुम्हारा कर्तव्य पवित्र है, और सेवा महान है। सेवा में बिताया गया प्रत्येक घंटा पूरे दिन की पूजा के बराबर मूल्यवान है। इस बात का ध्यान रखो ताकि तुम इस अवसर को न चूको।

> ऐ ईमान वालो! धैर्य रखो और आपस में होड़ करो और धैर्य के साथ एक दूसरे की सहायता करो। धैर्य रखो और डरकर अल्लाह से डरने की इच्छा से परहेज़गार बनने का प्रयास करो, ताकि तुम सफल हो जाओ। (3:200)
>
> मेरी आयतों को तुच्छ मूल्य पर न बेचो। (2:41)
>
> पवित्र है तेरा रब, महिमावान रब, उससे भी अधिक जो वे वर्णन करते हैं।
> सलाम हो रसूलों पर और सारी तारीफ़ अल्लाह के लिए है, जो सारे जहान का रब है। तेरी शान है। हमें कोई इल्म नहीं, सिवाए उसके जो तूने हमें सिखाया है। तू ही सब कुछ जाननेवाला, अत्यन्त तत्वदर्शी है।
>
> हे ईश्वर, हमारे स्वामी मुहम्मद, अनपढ़ पैगंबर, आपके प्रिय, सबसे सम्मानित और महान, और सर्वोच्च पद के, और उनके परिवार और साथियों पर आशीर्वाद और शांति प्रदान करें। आमीन!

परिशिष्ट: छह प्रश्न

(यह परिशिष्ट इसलिए लिखा गया है ताकि भविष्य में हम पर कोई शत्रुता या अपमान न किया जाए, या कोई निन्दा न की जाए: “उस युग के आलसी लोगों पर लानत है,” और ताकि हम ऐसी निन्दाओं के विरुद्ध स्वयं को उचित ठहरा सकें। मानवतावाद के मुखौटे में छिपे कुछ निर्दयी यूरोपीय नेताओं के कानों को इसे सुनने दो! इसे उन अत्याचारियों की अंधी आँखों के सामने रख दो जो ऐसे क्रूर, अन्यायी लोगों के साथ हमें परेशान करते हैं! यह परिशिष्ट उन अनेक परेशानियों में से एक का खुलासा करता है जो वे मुझे उस “बर्बरता की सभ्यता” के उन नेताओं को खुश करने के लिए देते हैं, जो हमें चिल्लाने के लिए अनगिनत कारण देते हैं: “नर्क अमर रहे!”)।

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

हमें परमेश्वर पर भरोसा क्यों नहीं करना चाहिए, जबकि उसने हमें मार्ग दिखाया है? चाहे तुम हमें कितना भी कष्ट क्यों न दो, हम धैर्यपूर्वक सह लेंगे। जो लोग भरोसा करते हैं, उन्हें परमेश्वर पर भरोसा रखना चाहिए। (14:12)

हाल ही में उनके बढ़ते और विविध हमलों, जैसे कि आस्था रखने वाले गरीब लोगों पर उनके क्रूर हमलों के साथ, विधर्मियों ने उस छोटी मस्जिद पर हमला किया, जिसकी मैंने व्यक्तिगत रूप से मरम्मत की थी ताकि मैं उसमें प्रार्थना कर सकूं। जब मैं कुछ भाइयों के साथ प्रार्थना कर रहा था, तब उन्होंने अज़ान और इकामा के दौरान भी हस्तक्षेप किया।[391] उन्होंने पूछा कि हम अज़ान और इकामा को गुप्त रूप से अरबी (उनकी मूल भाषा) में क्यों पढ़ रहे थे ।

मेरा धैर्य समाप्त हो चुका है। इसलिए अब मैं उन अन्यायी, बेईमान और नीच लोगों को संबोधित नहीं कर रहा हूँ जो कुछ भी नहीं समझ सकते, बल्कि मैं उस अत्याचारी समिति के प्रमुखों को संबोधित कर रहा हूँ जो अपना मनमाना और निरंकुश शासन जारी रखे हुए है। हे विधर्मी और अधार्मिक नवाचारों के लोगों! मैं निम्नलिखित छह प्रश्नों के उत्तर माँगता हूँ:

पहला सवाल: हर जाति की अपनी अलग शैली और शासन-व्यवस्था होती है। आप किस कानून पर इतना हमला करते हैं? अगर आपके पास कोई कानून है, तो उसे दिखाइए! या आप कुछ अधिकारियों के मनमाने कामों को कानून के तौर पर स्वीकार करते हैं, क्योंकि प्रार्थना के संबंध में कोई क़ानून या कानून नहीं बनाया गया है।

दूसरा सवाल: धर्म और विचार की स्वतंत्रता के सिद्धांतों को तोड़ने और उनका अनादर करने का आधार आप किस शक्ति पर रखते हैं, जिसे स्वतंत्रता की इस सदी में लगभग सभी राष्ट्रों ने अपनाया है? कौन सी शक्ति आपको मानवता और उसकी आम सहमति का तिरस्कार करने की अनुमति देती है? आपके पास कौन सी शक्ति है कि, हालाँकि आप धर्मनिरपेक्षता का पालन करते हैं और धर्म या नास्तिकता में हस्तक्षेप न करने का दावा करते हैं, फिर भी आप धर्म और विश्वासियों पर इस तरह से हमला करने की हिम्मत करते हैं कि यह दर्शाता है कि आपका अपना धर्म कट्टर अधार्मिकता है? ऐसे हमले गुप्त नहीं रहेंगे। जब आपसे पूछा जाएगा तो आप क्या कहेंगे? आप यूरोपीय राज्यों की संयुक्त आपत्ति की अवहेलना करते हुए धार्मिक स्वतंत्रता का बलपूर्वक उल्लंघन कैसे कर सकते हैं, जबकि आप किसी अन्य मामले पर इन सबसे छोटे राज्यों की एक भी आपत्ति का विरोध करने से डरते हैं?

तीसरा प्रश्न: कुछ तथाकथित हनफ़ी विद्वानों, जिन्होंने स्वयं को बेच दिया है और इस प्रकार अपने विद्यालय की पवित्रता और उदात्तता को नष्ट कर दिया है, के गलत निर्णयों का अनुसरण करते हुए, आप किस सिद्धांत के आधार पर अपने विद्यालय पर धार्मिक विश्वास थोपने का प्रयास करते हैं?

---

[391] औपचारिक अरबी शब्द क्रमशः मुसलमानों को प्रार्थना के लिए बुलाने और प्रार्थना की शुरुआत की घोषणा करने के लिए पढ़े जाते हैं। (सं.)

शफी स्कूल के सदस्यों पर आपके गैरकानूनी फैसले? यदि आप मजबूर करते हैं
मैं आपके निर्णयों का पालन तभी करूंगा जब आप औपचारिक रूप से शाफी मत को गैरकानूनी घोषित कर देंगे
और अपने सदस्यों को हनफ़ी बनने के लिए मजबूर करते हैं, तो आपकी कार्रवाई कुछ लोगों को प्रभावित कर सकती है
भावना - भले ही अधार्मिक की भावना। यदि नहीं, तो आप जो कर रहे हैं वह घृणित है
और घृणित है। हम कभी भी इसके आगे झुकेंगे नहीं।

चौथा प्रश्न: किस सिद्धांत के अनुसार आप एक अलग राष्ट्रीयता [कुर्द] के सदस्यों को प्रार्थना की घोषणा करने के लिए तुर्की भाषा का उपयोग करने के लिए मजबूर करते हैं?
शुरुआत? आप एक झूठे फैसले का पालन क्यों करते हैं, जो अनिवार्य रूप से विरोध करता है
धर्म के नाम पर और अपने तुर्की राष्ट्रवाद के नाम पर, जो कि
तुर्की लोगों की मूल प्रकृति के बिल्कुल विपरीत, जो इस्लाम के प्रति पूरी तरह समर्पित हैं और उससे गहराई से जुड़े हुए हैं? मेरे पास बहुत दोस्ताना और
सच्चे तुर्कों के साथ घनिष्ठ संबंध, लेकिन तुर्कवाद से कोई लेना-देना नहीं
जो पश्चिम की अंधी नकल करते हुए (इस्लाम धर्म के प्रति शत्रुता दिखाते हैं)।

यदि आप अन्य राष्ट्रीयताओं को समाप्त करने के बाद हम पर अपने निर्णय थोपते हैं, जिनके पास इस देश में तुर्कों के समान नागरिकता है, जिनकी संख्या तुर्कों में है
लाखों लोग, जो अपनी भाषा और मूल राष्ट्रीयता को कभी नहीं भूले, तथा जिन्होंने तुर्कों के साथ मिलकर इस्लाम के लिए लड़ाई लड़ी, उनके लिए यह एक बड़ी चुनौती हो सकती है।
सरकारी नीति का अनुसरण करना माना जाता है - यद्यपि यह बहुत बर्बरतापूर्ण है।

पांचवां सवाल: सरकार अपने कानून उन लोगों पर लागू करती है जिन्हें वह अपना विषय मानती है, लेकिन उन लोगों पर ऐसा नहीं कर सकती जिन्हें वह अपना विषय नहीं मानती।
ऐसे लोग उस सरकार का विरोध करते हुए कहते हैं: “चूँकि हम आपके नहीं हैं
आप हमारी सरकार नहीं हैं।" साथ ही, सरकार दो विषयों का उपयोग नहीं करती है
सजा के विभिन्न प्रकार एक साथ दिए जाते हैं। इसमें हत्यारे को फांसी या
कारावास, दोनों नहीं। किसी भी देश की कानूनी व्यवस्था इन दोनों सज़ाओं को एक साथ नहीं रखती।

यद्यपि मैंने इस राष्ट्र को कभी नुकसान नहीं पहुंचाया, फिर भी 8 वर्षों तक आपने
मुझ पर इतनी कड़ी निगरानी रखी गई कि कोई भी मुझे इस तरह से निगरानी रखने का औचित्य नहीं दे सकता था।
यहां तक कि सबसे कठोर और जंगली अपराधी भी इसके लिए उत्तरदायी है। आप सिद्ध अपराधियों को क्षमा कर देते हैं, फिर भी मुझे स्वतंत्रता से वंचित करते हैं और मेरे नागरिक अधिकारों को रोकते हैं। यह देखते हुए कि
आप मुझे इस राष्ट्र के सदस्य के रूप में स्वीकार नहीं करते, किस कानून या व्यवस्था के अनुसार?
सिद्धांत रूप से आप मुझे - एक व्यक्ति जो आपके लिए हर तरह से विदेशी है - के अधीन करते हैं
मेरी सहमति के बिना ऐसा निरंकुश व्यवहार?

आप मेरे व्यक्तिगत बलिदानों और देश के लिए मेरी लड़ाई पर विचार करें,
जैसा कि प्रथम विश्व युद्ध के दौरान सेना के कमांडरों ने देखा, अपराध के रूप में। आप हमारे गरीब देश की नैतिकता को बनाए रखने और लोगों की सुरक्षा के लिए मेरे प्रयासों पर विचार करें
दोनों दुनिया में खुशी को देशद्रोह माना जाता है। आप मुझे इसलिए सजा देते हैं क्योंकि मैं इसे अस्वीकार करता हूँ
गैर-इस्लामी जीवन शैली और पोशाक इस आधार पर कि यह हानिकारक, भोगवादी है,

और ख़तरनाक है क्योंकि यह अविश्वास की ओर ले जाता है। इसके अलावा, आपने मुझे कुल 28 वर्षों तक निगरानी में रखा है और कभी-कभी जेल में भी रखा है, और मेरी आपत्तियों के बावजूद मुझे ये सब सहने के लिए मजबूर किया है। अब, किस नियम या सिद्धांत के अनुसार आप मेरी प्रार्थना में हस्तक्षेप करके इस (अन्यायपूर्ण) सज़ा को दोगुना करते हैं?

छठा सवाल: चूँकि हम एक दूसरे के विपरीत हैं, जैसा कि आपके व्यवहार से पता चलता है, और चूँकि आप इस दुनिया के लिए अपने दीन और परलोक को त्याग देते हैं, इसलिए जान लें कि हम अपने दीन और परलोक के लिए इस दुनिया को त्यागने के लिए तैयार हैं। हमारे लिए, आपके अन्यायपूर्ण और बर्बर शासन के अधीन कुछ वर्षों की अधीनता में बलिदान देकर पवित्र शहादत प्राप्त करना, कौसर का पानी पीने के समान होगा। 392 लेकिन आपको भयभीत करने के लिए, मैं कुरान की शिक्षा पर आधारित होकर आपसे कहता हूँ:

> अगर तुम मुझे मार दोगे तो तुम मुझसे ज़्यादा दिन तक नहीं बच पाओगे। इस दुनिया से, जो तुम्हारी प्यारी और जन्नत है, एक ज़बरदस्त हाथ से निकाल दिए जाओगे और तुम्हें अंधकार के एक अनंत निवास में फेंक दिया जाएगा। मेरी शहादत के बाद, तुम्हारे निम्रोद जैसे सरदारों को जल्द ही मार दिया जाएगा और मेरे पास भेज दिया जाएगा। क्या उन्हें यह नहीं सोचना चाहिए कि हम इस मामले को ईश्वर की मौजूदगी में सुलझा लेंगे और ईश्वरीय न्याय उन्हें नर्क के सबसे निचले गड्ढे में डाल देगा?

> ऐ बदनसीबों, जो आख़िरत को दुनिया के लिए बदल देते हो। अगर तुम जीना चाहते हो तो मुझे परेशान मत करो! लेकिन अगर तुम ऐसा करते हो तो जान लो और डर से काँप उठो कि मेरा बदला कहीं ज़्यादा भयानक तरीक़े से लिया जाएगा। मुझे उम्मीद है कि अल्लाह की रहमत से मेरी मौत मेरी ज़िंदगी से ज़्यादा इस्लाम के काम आएगी और मेरी शहादत बम की तरह फटेगी और तुम सब को मिटा देगी। अगर तुममें हिम्मत है तो मुझे परेशान करो! अपना सबसे बुरा करो, फिर देखो मैं क्या करता हूँ! तुम्हारी धमकियों के मुक़ाबले में मैं पढ़ता हूँ: जिनसे लोगों ने कहा: "तुम्हारे ख़िलाफ़ एक बड़ी सेना इकट्ठी हो गई है, इसलिए उनसे डरो।" लेकिन इससे उनका ईमान और बढ़ गया। उन्होंने कहा: "हमारे लिए अल्लाह काफ़ी है, और वही सबसे अच्छा रक्षक है।" (3:173)

सातवां खंड: सात संकेत

अल्लाह के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

> ईमान लाओ अल्लाह और उसके रसूल पर, उस नबी पर जो न पढ़ता है, न लिखता है, जो अल्लाह और उसकी बातों पर ईमान रखता है, और उसी का अनुसरण करो, ताकि तुम मार्ग पाओ। (7:158)

---

[392] कवथर: स्वर्ग में एक फव्वारा। (सं.)

वे अपने मुँह से ईश्वर के प्रकाश को बुझाना चाहते हैं, किन्तु ईश्वर अपने प्रकाश को पूर्ण करना चाहता है, चाहे अविश्वासी लोग इससे विमुख ही क्यों न हों। (9:32)

(इस भाग में तीन प्रश्नों के उत्तर के रूप में सात चिह्न हैं। पहले प्रश्न में चार चिह्न हैं।)

पहला संकेत: जो लोग इस्लाम के सार्वजनिक प्रतीकों और रीति-रिवाजों को बदलना चाहते हैं, वे अपने सभी बुरे कामों की तरह ही पश्चिम की अंधी नकल पर आधारित प्रयास करते हैं। उनका तर्क यह है: लंदन या यूरोप के अन्य हिस्सों में इस्लाम में धर्मांतरित लोग अपनी भाषा में अज़ान और इकामा पढ़ते हैं , और मुस्लिम दुनिया इस पर कोई आपत्ति नहीं करती। क्या यह चुप्पी मौन स्वीकृति का संकेत नहीं देती, जो इस्लामी कानून पर आधारित होनी चाहिए?

उत्तर: यह बहुत ही भ्रामक उदाहरण है। यह कल्पना से परे है कि कोई भी बुद्धिमान व्यक्ति इस मामले में पश्चिमी देशों की नकल करना चाहेगा। क्योंकि काफिरों की भूमि कुछ धार्मिक नियमों के क्रियान्वयन में मुसलमानों की भूमि से भिन्न है। ऐसी जगह पर कई चीजें जायज़ हैं, लेकिन मुस्लिम समाज में जायज़ नहीं हैं।

इसके अलावा, पश्चिम में ईसाई धर्म का बोलबाला है। चूँकि पश्चिम ऐसा माहौल नहीं है जहाँ आम तौर पर इस्लामी शब्दों और उसके पवित्र शब्दों या वाक्यांशों के अर्थ को प्रेरित और आत्मसात किया जाता है, इसलिए पश्चिमी मुसलमान पवित्र अर्थों के लिए मूल शब्दों का त्याग करने के लिए मजबूर महसूस कर सकते हैं, और इसलिए वे कम हानिकारक चीज़ों को प्राथमिकता देते हैं। लेकिन मुस्लिम दुनिया का पूरा माहौल मुसलमानों को उन पवित्र शब्दों और वाक्यांशों का अर्थ सिखाता है। इस्लाम की परंपराओं, इतिहास और सबसे बढ़कर इसके प्रतीकों, चिह्नों और स्तंभों के बारे में सभी प्रवचन, विश्वासियों को लगातार उन पवित्र वाक्यांशों के अर्थ बताते हैं।

मस्जिदें और धार्मिक शिक्षा के संस्थान, यहां तक कि कब्र के पत्थर और उनके शिलालेख भी शिक्षकों की तरह हैं जो विश्वासियों को इस्लामी प्रतीकों के पवित्र अर्थ की याद दिलाते हैं।

इसलिए मैं सोचता हूँ कि जो लोग खुद को मुसलमान कहते हैं, जो एक दिन में 50 विदेशी शब्द सीख सकते हैं, क्या वे वास्तव में मुसलमान हैं, अगर वे 50 साल के भीतर ऐसे पवित्र वाक्यांश जैसे सुभान अल्लाह (ईश्वर की महिमा हो), अल-हम-दु लि-ल्लाह (ईश्वर की प्रशंसा हो), ला इलाहा इल्लल्लाह (ईश्वर के अलावा कोई देवता नहीं है) और अल्लाहु अकबर (ईश्वर महान है) नहीं सीख सकते, जिन्हें वे प्रतिदिन कम से कम 50 बार दोहराते हैं। ऐसे लापरवाह और उदासीन व्यक्तियों के लिए, इन पवित्र वाक्यांशों को अनुवाद द्वारा विकृत नहीं किया जाता है और उनके मूल पवित्र शब्दों को छीन नहीं लिया जाता है। उन्हें बदलने और विकृत करने का मतलब कब्रों पर खुदी हुई समाधि को मिटाना भी होगा, और मृतकों के अभिशाप को भी आमंत्रित करना होगा जो इस तरह के अपमान पर क्रोध से काँप उठेंगे।

अविश्वासियों से प्रभावित होकर, दुष्ट विद्वान निम्नलिखित तर्क के साथ धोखा देने की कोशिश करते हैं: अबू हनीफा, अन्य इमामों का विरोध करते हुए, नियम बनाते हैं कि जीवित लोग इस्लाम के केंद्रों से दूर रहने वाले लोग, आवश्यकता के आधार पर, नमाज़ के दौरान सूरत अल-फ़ातिहा का अनुवाद पढ़ सकते हैं ।393इसलिए, हम इसे अपनी पसंद के अनुसार पढ़ सकते हैं। तुर्की क्योंकि हमें इसकी जरूरत है।

उत्तर: अबू हनीफा इस्लामी न्यायशास्त्र के सबसे महान इमामों में से एक हैं। हालाँकि, अन्य महान इमाम और 12 अन्य इमामों को इस्लामी न्यायशास्त्र के सबसे महान इमामों में से एक माना जाता है। कुरान और सुन्नाह से कानूनी मामलों पर फैसले निकालना साझा नहीं करता यह राय है। मुस्लिम दुनिया सदियों से जिस राजमार्ग पर चल रही है, वह है इन इमामों के उदाहरणों पर आधारित है। चूंकि शक्तिशाली मुस्लिम समुदाय केवल इसी व्यापक मार्ग का अनुसरण कर सकता है, इसलिए जो लोग उन्हें कहीं और निर्देशित करने का प्रयास करते हैं, वे अपने लिए गलत रास्ता तलाशते हैं। अबू हनीफा इस मत में अकेले हैं। इसके अलावा, निम्नलिखित पाँच बिंदुओं के कारण उनकी राय विशिष्ट चरित्र रखती है:

- इसका संबंध इस्लाम के केन्द्रों से दूर रहने वाले लोगों से है।
- यह केवल अत्यंत आवश्यक स्थिति में ही मान्य है।
- यह केवल फ़ारसी भाषा से संबंधित है, जो कि एक भविष्यवक्ता के अनुसार है परंपरा को स्वर्ग के लोगों की भाषा माना जाता है।
- यह केवल सूरत अल-फातिहा से संबंधित है, और उन लोगों के लिए है जिनके पास उन्होंने इसे याद नहीं किया ताकि वे निर्धारित प्रार्थनाएं कर सकें।
- यह उनके इस्लामी आदर्शवाद, प्रतिबद्धता और दृढ़ विश्वास पर आधारित है ताकि आम लोग उस सूरा के पवित्र अर्थ को समझ सकें ।

इसके विपरीत, जो लोग (तुर्की) अनुवाद की अनुमति देना चाहते हैं, वे चाहते हैं कि कमजोर विश्वास, नकारात्मक राष्ट्रवाद और अरबों के प्रति घृणा के माध्यम से इस्लाम को नष्ट करना। संक्षेप में, वे लोगों को इस्लाम से दूर करना चाहते हैं।

दूसरा संकेत: इस्लाम के सार्वजनिक प्रतीकों और अनुष्ठानों में परिवर्तन करने के बाद, विधर्मियों ने पहले दुष्ट विद्वानों से फतवा मांगा और फिर उसे प्रकाशित किया।394 हमने ऊपर इसकी विचित्रता का विश्लेषण किया है। दूसरा, उन्होंने यह अशुभ तर्क पश्चिमी "क्रांतिकारियों" से उधार लिया है। यूरोप के दार्शनिकों और क्रांतिकारी बुद्धिजीवियों ने कैथोलिक धर्म को अस्वीकार कर दिया और प्रोटेस्टेंटवाद को अपना लिया, जो कि एक बहुत बड़ा खतरा था। कैथोलिक इसे धार्मिक नवाचार और विचलन का एक संप्रदाय मानते हैं, जिसका अनुसरण कई ईसाई करते हैं। नतीजतन, जो लोग ईसाई धर्म की अंधी नकल करने के आदी हैं, वे ईसाई धर्म की अंधी नकल करने के आदी हैं। पश्चिम का दावा है: चूंकि ईसाई धर्म को इस प्रकार सुधारा गया था ताकि

---

[393] कुरान का आरंभिक सूरा, जिसे नमाज़ में किसी भी अन्य सूरा से पहले पढ़ा जाना चाहिए। प्रार्थनाएँ अरबी भाषा में हैं। (संपादक)

[394] फतवा: किसी योग्य धार्मिक विद्वान द्वारा दिया गया निर्णायक कानूनी फैसला। (सं.)

प्रोटेस्टेंटवाद और सुधारकों को पहले धर्मत्यागी करार दिया गया और फिर बाद में बाद में ईसाईयों के रूप में स्वीकार किए जाने के बाद, इस्लाम में भी उसी तरह सुधार किया जा सकता है।

उत्तर: यह सादृश्य पहले वाले सादृश्य से कहीं अधिक भ्रामक है। संकेत। ईसाई धर्म यीशु को केवल अपने सैद्धांतिक स्तंभों का श्रेय देता है, अधिकांश कानूनी, सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक सिद्धांत उनके अनुयायियों द्वारा निर्धारित किए गए थे और अन्य आध्यात्मिक नेताओं या पहले की दिव्य पुस्तकों से उधार लिया गया है। यीशु के बाद से वह कोई सांसारिक शासक नहीं था और ऐसा माना जाता है कि उसने कोई सामाजिक कानून नहीं बनाया था, ईसाई धर्म की कानूनी व्यवस्था उसके धार्मिक विश्वास पर चढ़ाए गए उधार के वस्त्र के समान है। मूल बातें। यदि इस वस्त्र को बदला या परिवर्तित किया जाता है, तो ईसाई धर्म बना रहेगा और यीशु की स्थिति को नकारा नहीं गया है।

लेकिन पैगम्बर मुहम्मद (दुनिया का गौरव) एक धार्मिक नेता थे और शासक जिसका प्रभुत्व स्पेन से लेकर फिलीपींस तक फैला हुआ है। इसलिए इस्लाम के सभी स्तंभ, मुख्य आदेश, तथा सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक सिद्धांत उन्हें सीधे ईश्वर से प्राप्त हुए।
इस्लाम के गौण सिद्धांतों को बदला या परिवर्तित नहीं किया जा सकता, क्योंकि वे इस्लाम के मूल तत्वों में शरीर या कम से कम त्वचा शामिल है - वे एक दूसरे से इस तरह से जुड़े हुए हैं कि उन्हें अलग नहीं किया जा सकता। उन्हें बदलना यह पैगम्बर को नकारने के समान है।

इस्लामी स्कूलों या संप्रदायों के बीच मतभेद माध्यमिक मामलों से संबंधित कुछ सैद्धांतिक सिद्धांतों की समझ से उत्पन्न हुए थे।
पैगम्बर द्वारा। इस्लाम के मूल सिद्धांत और अकाट्य सिद्धांत हैं विवाद या परिवर्तन के अधीन नहीं। जो कोई ऐसा करने की कोशिश करता है वह धर्मत्यागी है और पैगंबर परंपरा के अर्थ में शामिल है: "वे टूट जाते हैं इस्लाम उसी तरह है जैसे तीर कमान से निकलता है।”395

एक बहाना ढूँढने की कोशिश करते हुए, अविश्वासियों ने तर्क दिया: महान फ्रांसीसी युद्ध के दौरान क्रांति के दौरान, जिसके कारण दुनिया में लगातार उथल-पुथल मची, पुजारियों, आध्यात्मिक नेताओं और कैथोलिक धर्म पर हमले किए गए। बाद में इन हमलों को मंजूरी दे दी गई। यह यूरोप की प्रगति का एक कारण है।

उत्तर: यह उदाहरण पहले दिए गए उदाहरणों की तरह ही भ्रामक है। यूरोप, विशेष रूप से फ्रांस को कैथोलिक चर्च से निपटना पड़ा, जिसका इस्तेमाल सदियों से अभिजात वर्ग और शासक वर्गों द्वारा उत्पीड़न के साधन के रूप में किया जाता रहा था। और निरंकुशता; अपने प्रभुत्व और यथास्थिति को सुरक्षित और बनाए रखने के साधन के रूप में; और राष्ट्रवादियों, बुद्धिजीवियों और स्वतंत्रता के प्रेमियों को कुचलने के तरीके के रूप में जो उनकी निरंकुशता का विरोध करते थे। इसके अलावा, कई लोगों ने चर्च को इसके कारण के रूप में देखा 400 वर्षों तक यूरोप के सामाजिक जीवन और आंतरिक शांति को नष्ट करने वाले विद्रोहों की सूची

395 बुखारी, अंबिया', 6; मुस्लिम, ज़काह, 142-44; तिर्मिज़ी, फ़ितन, 24.

इस प्रकार उन्होंने ईसाई धर्म के नाम पर इस पर हमला किया। जनता और
दार्शनिक कैथोलिक चर्च से नाराज थे और उसके प्रति नाराजगी रखते थे, और इस प्रकार फ्रांसीसी क्रांति उस तरह से घटित हुई।

इस तरह के तर्क इस्लाम के साथ काम नहीं करते, क्योंकि इस्लाम लोगों की रक्षा करता है,
जैसा कि इसके लंबे इतिहास से साबित होता है। इस्लाम ने, बहुत कम अपवादों को छोड़कर, कोई भी ऐसा देश नहीं बनाया जो मानवता को नष्ट कर सके।
धर्म के आंतरिक युद्ध, जो ईसाई यूरोप की एक सामान्य विशेषता थी
400 वर्षों से इस्लाम आम जनता के लिए शरणस्थली और गढ़ रहा है। दान (ज़कात) के दायित्व और ब्याज पर रोक के ज़रिए,
इस्लाम अभिजात वर्ग को आम जनता की सेवा में लगाता है। इस्लाम ने स्थापित किया है कि लोगों की सेवा
स्वामी वह है जो उनकी सेवा करता है, और सबसे अच्छे लोग वे हैं जो
दूसरों को लाभ पहुंचाएं.396

कुरान लगातार लोगों से तर्क करने और जांच करने का आग्रह करता है, जैसा कि देखा गया है
जैसे कि: क्या तुम अपने तर्क का उपयोग नहीं करोगे? क्या वे विचार नहीं करेंगे? क्या वे
यह तर्क और ज्ञान के लोगों को बहुत उच्च और
महत्वपूर्ण स्थान। कैथोलिक धर्म के विपरीत, यह तर्क को अस्वीकार नहीं करता है, न ही
यह न तो बुद्धिजीवियों को चुप कराता है और न ही अंधविश्वास की मांग करता है।

इस्लाम और ईसाई धर्म में एक मूलभूत अंतर है
वर्तमान स्वरूप में - यीशु का मूल धर्म नहीं। इस्लाम एक शुद्ध एकेश्वरवादी धर्म है जो साधनों और बिचौलियों को अस्वीकार करता है, अहंकार को तोड़ता है और ईमानदारी से पूजा की स्थापना करता है, और सभी झूठे आधिपत्यों की निंदा करता है और उन्हें अस्वीकार करता है
शारीरिक आत्म को प्रकृति के प्रति समर्पित कर देना चाहिए। इस प्रकार अभिजात वर्ग के एक धर्मपरायण सदस्य को अहंकार त्यागना चाहिए। अहंकार और आत्म-दंभ को त्यागे बिना, मुसलमान अपना अस्तित्व खो देंगे
उनमें प्रबल धार्मिक भक्ति है और वे कुछ हद तक इस्लाम से अलग भी हो सकते हैं।

ईसाई धर्म का वर्तमान संस्करण, जो ईश्वरीय पुत्रत्व को स्वीकार करता है और
जन्म देने से, अनिवार्य रूप से कारणों और साधनों को रचनात्मक शक्ति मिलती है। बल्कि
धर्म के नाम पर अहंकार तोड़ने की बजाय, यह अहंकार को पवित्र बनाता है
मध्यस्थों को यीशु के पवित्र प्रतिनिधि मानकर। और इसलिए
ईसाई अभिजात वर्ग के सदस्य जो उच्च सांसारिक पदों पर आसीन हैं, उन्हें
पूरी तरह से धर्मपरायण। उदाहरण के लिए, पूर्व अमेरिकी राष्ट्रपति वुडरो विल्सन
और पूर्व ब्रिटिश प्रधानमंत्री लॉयड जॉर्ज भी किसी पादरी की तरह ही कट्टर थे।
लेकिन मुस्लिम अभिजात वर्ग के सदस्य जो इतने ऊंचे सांसारिक पद प्राप्त करते हैं
उन्हें अपना अहंकार त्यागकर ईश्वर के प्रति पूर्णतः सचेत और धर्मनिष्ठ मुसलमान बनना होगा।
यही कारण है कि मुस्लिम अभिजात वर्ग कभी भी इस्लाम का उपयोग मुसलमानों पर अत्याचार करने और उनका तिरस्कार करने के लिए नहीं कर सकता।
इस्लाम में, ज्ञान के माध्यम से व्यक्ति या तो कुलीन वर्ग में शामिल होता है या फिर जनसमूह में।
ईश्वर-चेतना और धर्मपरायणता।

---

396 अल-अजलूनी, कश्फ अल-खफ़ा', 2:463, और अल-मुनावी, फ़यद अल-कादिर, 3:481, क्रमशः।

दार्शनिक भी इस अंतर को दर्शाते हैं। ईसाई दार्शनिक आमतौर पर ईसाई धर्म के प्रति उदासीन या यहां तक कि शत्रुतापूर्ण होते हैं, जबकि अधिकांश मुस्लिम दार्शनिक या थियोसोफिस्ट इस्लाम के मूल सिद्धांतों पर ही अपना आधार रखते हैं। इसके अलावा,
पीड़ित या उत्पीड़ित ईसाई जनता धर्म से मदद नहीं मांगती, क्योंकि अधिकांशतः
उनमें से अधिकांश अधार्मिक हैं। प्रसिद्ध क्रांतिकारी जिन्होंने
फ्रांसीसी क्रांति और उन्हें "अधार्मिक आवारा" के रूप में वर्णित किया गया था
असंतुष्ट मध्यम वर्ग। लेकिन मुस्लिम दुनिया में, पीड़ित और उत्पीड़ित
आमतौर पर लोग मदद और सांत्वना के लिए धर्म की ओर रुख करते हैं और इस तरह धार्मिक बन जाते हैं।

तीसरा संकेत: विधर्मी तर्क देते हैं: धार्मिक कट्टरता ने हमें पिछड़ा बना दिया है।
इस सदी में प्रगतिशील जीवन इसका परित्याग करके ही संभव है।
इसी प्रकार यूरोप का विकास और प्रगति हुई।

उत्तर: आप गलत हैं और धोखा खा रहे हैं, या जानबूझकर गुमराह कर रहे हैं।
(सबसे पहले, कट्टरता को हिंसक और अतार्किक भक्ति के रूप में परिभाषित किया गया है। यह
इसलिए एक मुसलमान की भक्ति के लिए यह इस्लाम के साथ असंगत है, चाहे वह कितनी भी
गहरा, ज्ञान और तर्क पर निर्भर करता है। भले ही यह इतना आधारित न हो, इसे कट्टरता नहीं कहा जा सकता।
मुसलमान कभी भी कट्टरपंथी नहीं होते। चाहे उनकी
इस्लाम में आस्था और समर्पण की डिग्री या क्या वे अपना विश्वास इस्लाम पर आधारित करते हैं
ज्ञान या तर्क के बिना, वे शांति और संतुलन के मध्य मार्ग का अनुसरण करते हैं, और
न्याय और संयम, क्योंकि इस्लाम सभी अतिवादों के बीच का मध्य मार्ग है।)

दूसरा, यूरोप अपने धर्म से बहुत जुड़ा हुआ है। अगर आप किसी आम बल्गेरियाई व्यक्ति, अंग्रेज़ व्यक्ति या फ़्रांसीसी व्यक्ति से कहें: “तुरबान पहनो (जो मुस्लिम पुरुष पहनते हैं) वरना तुम्हें जेल में डाल दिया जाएगा,” तो उनका

कट्टरता के कारण वे जवाब देते थे: “भले ही आप मुझे मार दें, मैं नहीं जाऊंगा
ऐसा करके तुम मेरे धर्म और राष्ट्र का तिरस्कार करोगे।”

तीसरा, इतिहास बताता है कि जब भी मुसलमानों ने इस्लाम पर दृढ़ता से अड़े रहे,
उन्होंने बहुत तरक्की की और केवल तभी पतन की ओर बढ़े जब उन्होंने अपनी भक्ति की उपेक्षा की। हालाँकि, ईसाई दुनिया में यह उल्टा है। यह दोनों धर्मों के बीच एक और महत्वपूर्ण, आवश्यक अंतर के कारण है।

चौथा, इस्लाम की तुलना अन्य धर्मों से नहीं की जा सकती।
इस्लाम त्यागें, किसी अन्य पैगम्बर पर विश्वास न करें, ईश्वर के अस्तित्व को स्वीकार करें
यहाँ तक कि, या किसी भी पवित्र चीज़ को मान्यता नहीं देते। चूँकि उन्हें अपनी आत्मा में कोई अर्थ नहीं मिलता
जो मानव पूर्णता का साधन हो सकता है, वे भ्रष्ट, बुरे और
अराजक। ईसाई जो अपना धर्म त्याग देते हैं, वे भी इससे लाभ उठा सकते हैं
सामूहिक जीवन। वे अभी भी कुछ पवित्र चीजों को पहचान सकते हैं, कुछ पर विश्वास कर सकते हैं
पैगम्बरों की शिक्षाओं का पालन करना तथा किसी तरह ईश्वर के अस्तित्व की पुष्टि करना। यही कारण है कि इस्लाम
गैर-मुस्लिम दुश्मनों को जीने का अधिकार देता है। अगर उनके देश में शांति है
मुसलमानों के साथ, यदि वे मुस्लिम दुनिया में रहते हैं और जजिया (प्रार्थना कर) अदा करते हैं

टेक्स टैक्स) मुस्लिम राज्य उनके जीवन की गारंटी देता है। हालांकि, इस्लाम को त्यागने वालों का विवेक भ्रष्ट हो जाता है और इसलिए यह जहर बन सकता है
इस्लाम का सामूहिक जीवन.

धर्म को नकारने से विधर्मी क्या लाभ पाने की आशा करते हैं?
सरकार और सार्वजनिक सुरक्षा पर विचार करें, 10 अधार्मिक आवारा लोगों से निपटें
1,000 धार्मिक लोगों से निपटना कहीं ज़्यादा मुश्किल है। अगर वे प्रगति चाहते हैं,
अधार्मिक लोग व्यापार और प्रगति के लिए आवश्यक सार्वजनिक व्यवस्था और सुरक्षा को नष्ट करके सरकार को नुकसान पहुँचाते हैं और प्रगति को अवरुद्ध करते हैं। चूँकि वे
सामाजिक रूप से विनाशकारी तरीके अपनाते हैं, उनसे जीवन में प्रगति और खुशी की उम्मीद कैसे की जा सकती है? दुर्भाग्य से, एक उच्च-स्तरीय व्यक्ति ने ऐसा ही किया है
अपनी अज्ञानता को यह कहकर प्रकट करते हुए: “ईश्वर पर हमारे विश्वास और निर्भरता ने हमें
यूरोप का विकास तकनीक और हथियारों के माध्यम से हुआ।

"मूर्खतापूर्ण प्रश्न का सर्वोत्तम उत्तर है" के सिद्धांत के अनुसार
"चुप रहो," मुझे ऐसी बेतुकी बातों के सामने चुप रहना चाहिए। लेकिन चूंकि समझदार लोगों को ऐसी बेतुकी बातों से सावधान रहना चाहिए, इसलिए मैं निम्नलिखित बातें कहना चाहता हूँ:

> हे बेचारे! यह संसार अतिथिगृह है। जो मरते हैं, वे सब अपने-अपने मार्ग पर चलते हैं।
> इस बात की गवाही दें कि मृत्यु एक वास्तविकता है। चूँकि आप इसे नष्ट नहीं कर सकते और उन गवाहियों का खंडन नहीं कर सकते, इसलिए मृत्यु आपको परमेश्वर पर विश्वास करने और उस पर निर्भर रहने के लिए बुलाती है।
> भगवान के स्थान पर कौन सी तकनीक या हथियार दुनिया को रोशन कर सकते हैं?
> जो लोग मर रहे हैं उनके सामने अनन्त अंधकार है और उनकी निराशा को बदलना है
> आशा में बदलो? चूँकि मृत्यु अवश्यंभावी है और कब्र हमारा इंतज़ार कर रही है, और
> चूँकि यह क्षणभंगुर जीवन स्थायी जीवन का मार्ग प्रशस्त करता है, इसलिए हमें
> भगवान का 1,000 बार जिक्र करें और तकनीक और हथियारों का जिक्र करें
> सिर्फ़ एक बार। इसके अलावा, तकनीक और हथियार का इस्तेमाल करने पर भगवान तक पहुंचा जा सकता है
> परमेश्वर के कार्य में लगो, और उसके नाम पर कार्य करो और समाप्त हो जाओ।

चौथा संकेत: विनाशकारी विधर्मी दो समूहों में आते हैं। पहला समूह
धर्म और इस्लाम के प्रति आस्था का समर्थन करने का दिखावा करते हैं। राष्ट्रवाद के साथ धर्म को फिर से थोपने के बहाने वे कहते हैं: "हम धरती में बीज बोना चाहते हैं
राष्ट्रवाद का धर्म रूपी शानदार वृक्ष, जो कमजोर हो गया है, और
इस प्रकार इसे मजबूत किया जाता है।” दूसरा समूह धार्मिक नवाचारों को प्रस्तुत करता है
नस्लवाद को बढ़ावा देने के लिए “इस्लाम पर राष्ट्रवाद थोपने” के बहाने
राष्ट्रवाद के नाम पर.

जहाँ तक पहले समूह का प्रश्न है: इस्लाम का शानदार वृक्ष, जो सृष्टि के सत्य में गहराई से स्थापित है और जिसने ब्रह्माण्ड के सत्यों में अपनी जड़ें फैला दी हैं,
नस्लवाद के अंधेरे, बंजर, शुष्क, अस्थिर और आसानी से बिखरने वाले क्षेत्र में प्रत्यारोपित नहीं किया जाना चाहिए
धूल जैसी मिट्टी। ऐसा करने की कोशिश करना विधर्मी, विनाशकारी और अनुचित है।

जहाँ तक दूसरे समूह का प्रश्न है: हे राष्ट्रवाद का ढोंग करने वाले असंवेदनशील लोगों! पिछली [उन्नीसवीं] सदी संभवतः राष्ट्रवाद की सदी थी। लेकिन इस [बीसवीं] सदी में, राष्ट्र और देश एक साथ आ रहे हैं मजबूत ब्लॉक बनाने के लिए, और यूनियनों के गठन की आवश्यकता महसूस करते हैं। बोल्शेविज्म और समाजवाद नस्लीय अलगाववाद को अमान्य करते हैं। इसके अलावा, राष्ट्रवाद और नस्लवाद जैसे रुझान अस्थायी हैं, क्योंकि वे पृथ्वी पर तेज हवा की तरह बहते हैं और गायब हो जाते हैं। इस्लाम की स्थायी और शाश्वत राष्ट्रीयता को नस्लवाद पर नहीं जोड़ा जा सकता। यदि आप ऐसा करने का प्रयास करेंगे तो आप इस्लाम को भ्रष्ट कर देंगे, लेकिन नस्लवाद को कायम नहीं रख पाएंगे। हालाँकि शुरू में यह अस्थायी खुशी दे सकता है, लेकिन यह बहुत कम समय तक टिकेगा और अंत में विनाश होगा।

इस देश में अलगाववादी आंदोलन आंतरिक संघर्षों को जन्म दे सकते हैं इसे ठीक करना लगभग असंभव है, क्योंकि प्रत्येक पक्ष दूसरे की शक्ति को तोड़ देगा और इस प्रकार राष्ट्र की समग्र शक्ति समाप्त हो जाएगी। परिणामस्वरूप, कोई भी विदेशी शक्ति एक छोटे से पत्थर के बल पर इस राष्ट्र को आसानी से नियंत्रित कर सकेगी। तराजू पर एक ही भार के दो पहाड़ों को रखने पर उन्हें नियंत्रित किया जा सकता है।

पांचवां संकेत: यह एक महत्वपूर्ण प्रश्न का संक्षिप्त उत्तर है।

प्रश्न: कुछ प्रामाणिक परम्पराओं में कहा गया है कि महदी आएंगे समय के अंत की ओर और भ्रष्ट दुनिया को सुधारने का समय है। क्योंकि यह समय है समुदायों में, व्यक्ति, चाहे कितने भी सक्षम और बुद्धिमान क्यों न हों, विरोधी समुदाय के सामूहिक निकाय द्वारा पराजित हो सकते हैं यदि उनके पास अपने समुदाय के सामूहिक निकाय का समर्थन या प्रतिनिधित्व नहीं है।

क्या कोई व्यक्ति, चाहे उसका संतत्व कितना भी मजबूत क्यों न हो, ऐसी भ्रष्ट दुनिया को सुधार सकता है? यदि ऐसे व्यक्ति का हर कार्य चमत्कारी होता, तो ईश्वरीय बुद्धि और दुनिया में चल रहे कानूनों का खंडन होगा। तो, क्या है इसका मतलब महदी के बारे में सच्चाई क्या है?

उत्तर: जब भी मुस्लिम समुदाय भ्रष्ट होता है, ईश्वर उसे नष्ट कर देता है। सर्वशक्तिमान अपनी पूर्ण करुणा से और अपनी शाश्वतता के संकेत के रूप में भेजता है शरिया की सुरक्षा, भ्रष्टाचार को दूर करने और संरक्षित करने के लिए एक व्यक्ति इस्लाम। ऐसा व्यक्ति सुधारक, पुनरुत्थानकर्ता, महान खलीफा, महान संत हो सकता है, या एक आदर्श आध्यात्मिक मार्गदर्शक। चूँकि यह ईश्वर का मार्ग है, इसलिए वह दुनिया को सुधार सकता है अपने सबसे बड़े भ्रष्टाचार के समय एक प्रतिष्ठित व्यक्ति के संयोजन के माध्यम से सबसे महान न्यायविद, पुनरुत्थानकर्ता, शासक, तथा आध्यात्मिक और बौद्धिक मार्गदर्शक के कार्य। यह व्यक्ति पैगंबर के परिवार का वंशज होगा।

जैसे सर्वशक्तिमान ईश्वर स्वर्ग और पृथ्वी के बीच के स्थान को भरता है एक मिनट में बादलों को हटा देता है, एक पल में उग्र समुद्र को शांत कर देता है, या वसंत के दौरान एक घंटे गर्मी के मौसम को दिखाता है और एक घंटे सर्दियों के मौसम को दिखाता है

गर्मियों के दौरान आने वाले तूफ़ान से बचने के लिए, वह मुस्लिम दुनिया में छाए अंधेरे को दूर करने के लिए महदी का इस्तेमाल कर सकता है। ईश्वरीय शक्ति के दृष्टिकोण से यह बहुत आसान है। जब इसे कार्य-कारण और दिव्य ज्ञान के दृष्टिकोण से देखा जाए तो यह इतना अपरिहार्य कि भले ही पैगंबर ने इसे नहीं बताया हो, यह अवश्य होगा—और ठीक उसी तरह घटित होगा।

चिंतनशील लोग निश्चित रूप से यही निर्णय लेंगे, क्योंकि सभी मुसलमान दिन में पाँच बार निर्धारित प्रार्थनाओं में प्रार्थना करते हैं: "हे ईश्वर, मुझे मुझ पर कृपा प्रदान करो।" हमारे स्वामी मुहम्मद और उनके परिवार पर आशीर्वाद, जैसा कि आपने प्रदान किया सारी सृष्टि में इब्राहीम और उसके घराने पर कृपा हो! तू ही सबसे अधिक प्रशंसनीय, सबसे अधिक महिमावान है। यह प्रार्थना स्वीकार की गई।

मुहम्मद का परिवार अब्राहम के परिवार जैसा बन गया है, सभी धन्य लोगों का नेतृत्व करता है संतों की श्रृंखला, आध्यात्मिक कमांडरों की सभी सभाओं की अध्यक्षता करता है, और लोगों का मार्गदर्शन करने का कर्तव्य निभाता है।397 वे पर्याप्त संख्या में हैं एक शक्तिशाली सेना। यदि वे एकजुटता के माध्यम से एक इकाई बनाते हैं और इस्लाम बनाते हैं, एक पवित्र राष्ट्रीयता का रूप, जागृति का साधन और एकता का बंधन, नहीं सेना उन्हें हरा सकती है। यह शक्तिशाली और अप्रतिरोध्य सेना, जो कि पैगम्बर के परिवार के वंशज, महदी की सेना का मूल हैं।

केवल पैगम्बर के परिवार के वंशजों की वंशावली ही निर्बाध वंश-परंपरा के माध्यम से एक-दूसरे से निरंतर जुड़ी हुई है, और विशिष्ट है व्यक्तिगत गुणों और पैतृक कुलीनता के साथ। कोई भी अन्य वंश अधिक शक्तिशाली या अधिक महत्वपूर्ण है। इसमें शुरू से ही सभी समूहों के लोग शामिल हैं सत्य और पूर्णता। वर्तमान में, लाखों सदस्यों के साथ, वे एक धन्य हैं जागरूक और सचेत लोग जिनके दिल पैगम्बर के प्रति विश्वास और प्रेम से भरे हों, और उसके प्रति लगाव के अमूल्य सम्मान से उन्नत और महान हो जाते हैं। इस शक्तिशाली आत्मा में पवित्र शक्ति को उत्तेजित करने और जागृत करने के लिए कार्यक्रम हो रहे हैं। समुदाय। यह शक्ति एक उदात्त उत्साह के साथ फूट पड़ेगी, और महदी उसे इस्लाम की सच्ची सेवा करने की राह पर ले चलो। यही हमारी ईश्वर से अपेक्षा है कानून और दया, ठीक वैसे ही जैसे हम उम्मीद करते हैं कि सर्दियों के बाद वसंत आएगा। और हम सही हैं इस उम्मीद में.

छठा संकेत: महदी का प्रतिष्ठित समुदाय सुधार करेगा सुफ़यान398 के विनाशकारी और विधर्मी शासन को समाप्त करना और पैगंबर (इस्लामी) शासन को पुनर्जीवित करना

---

397 इनमें सैय्यद अहमद सनौसी के लाखों अनुयायी हैं। सैय्यद याह्या के लाखों अनुयायी हैं। ऐसे कई नायक हैं पैगम्बर के परिवार के वंशजों में से, और सैयद अब्द अल-असद जैसे महान लोग भी शामिल हैं। अल-कादिर अल-जिलानी, सैय्यद अबू अल-हसन अल-शज़ाली, और सैय्यद अहमद अल-बदावी।

398 सुफ़यान: दज्जाल, इस्लाम के सभी विरोधों का मूर्त रूप, जो प्रकट होगा मुस्लिम दुनिया में मानव जाति के रूप में समय का अंत हो रहा है। (संपादक)

आस्था, जीवन और शासन का तरीका। जो लोग मुस्लिम दुनिया में दिखाई देते हैं
पैगंबर मुहम्मद के संदेशवाहक और नेतृत्व को नकार कर इस्लामी जीवन शैली को नष्ट करने की कोशिश करने वालों को महदी समुदाय की चमत्कारी, आध्यात्मिक तलवार से पराजित और समाप्त कर दिया जाएगा।

यीशु के अनुयायियों का एक और समर्पित, आत्म-त्यागी समुदाय, जो
यीशु के मिशन के मुस्लिम प्रतिनिधियों के रूप में माना जा सकता है, कोशिश करेंगे
ईसा के मूल धर्म को इस्लाम की सच्चाई के साथ एकीकृत करना, और इस प्रकार
एंटी-क्राइस्ट (दज्जाल) और उसके अनुयायियों को हराना और मिटाना। ये मानव सभ्यता के भ्रष्ट, सभी पवित्र चीजों का उल्लंघन करने वाले और सभी धर्मों के इनकार करने वाले हैं।
ईश्वर पराजित हो जाएगा, और मानवता नास्तिकता से मुक्त हो जाएगी।

सातवाँ संकेत: वे मुझसे पूछते हैं: "आपका इस्लाम का बचाव, या आपका संघर्ष
इसके लिए, बदल गया है। इसके अलावा, आप उन विचारकों का अनुसरण नहीं करते हैं जो
यूरोप के खिलाफ इस्लाम की रक्षा करो। तुमने ओल्ड सईद का तरीका क्यों बदला, और
आप इस्लाम के अन्य रक्षकों का अनुसरण क्यों नहीं करते?”

उत्तर: ऐसे विचारक, ओल्ड सईद की तरह, मानव के सिद्धांतों को स्वीकार करते हैं
दर्शन और पश्चिमी सोच का एक निश्चित सीमा तक संबंध है, और यह निर्भर करता है
यूरोप के खिलाफ़ उनके संघर्ष में उन पर। चूँकि वे उनमें से कुछ को स्वीकार करते हैं
सिद्धांतों को पहले से ही, जैसे कि वे स्थापित वैज्ञानिक सिद्धांत थे, वे
इस्लाम का सही मूल्य दिखाने में विफल रहे। उन्हें लगता है कि वे इस्लाम को मजबूत कर सकते हैं
दर्शनशास्त्र की कथित गहरी जड़ें उसके तने पर रोपना।

मैंने यह रास्ता इसलिए छोड़ा क्योंकि इस्लाम विरोधी प्रवृत्तियों पर काबू पाना बहुत मुश्किल और असंभव तरीका है, और क्योंकि यह इस्लाम को नीचा दिखाता है। इस्लाम के मूल तत्वों तक दर्शन के सिद्धांतों से नहीं पहुंचा जा सकता, जैसा कि 29वें अध्याय में साबित हुआ है।
और तीसवाँ वचन और चौबीसवाँ अक्षर।

हालाँकि, ओल्ड सईद के समान ही विचारक मानव को मानव मानते हैं
दर्शनशास्त्र को गहरा और इस्लाम के स्तंभों को उथला मानते हैं, और इस प्रकार सोचते हैं कि
इन स्तंभों को दर्शन के सिद्धांतों पर जोड़कर मजबूत किया जा सकता है। लेकिन वे सिद्धांत इस्लाम के मौलिक या गौण सिद्धांतों के स्तर तक नहीं पहुंच सकते।

तेरी महिमा हो। हमें कोई ज्ञान नहीं सिवाय उसके जो तूने सिखाया है
तू सर्वज्ञ, सर्वविवेक है। सारी प्रशंसा अल्लाह के लिए है, जो
हमें इसके लिए निर्देशित किया। यदि परमेश्वर ने हमें निर्देशित नहीं किया होता, तो हम कभी भी ऐसा नहीं कर पाते
हमारे रब के रसूल हक़ लेकर आये थे। ऐ खुदा!
हमारे स्वामी मुहम्मद और उनके परिवार पर आशीर्वाद प्रदान करें,
जैसे आपने हमारे स्वामी इब्राहीम और उनके पुत्रों पर कृपा बरसाई
हे सृष्टि के परिवारजन, तू परम प्रशंसनीय, परम महिमावान है।

आठवां खंड: आठ प्रतिनिधित्व

[आठवें खंड में कुछ भविष्यवाणियों और रहस्यों पर चर्चा की गई है
कुरान। यह मूल पुस्तक में शामिल नहीं है।]

नौवां खंड: नौ स्पष्टीकरण

ईश्वर के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

देखो, परमेश्वर के मित्रों, उन पर कोई भय नहीं होगा, न ही वे
शोक मनाओ. (10:62)

(इस खंड में रैंक प्राप्त करने के बारे में नौ स्पष्टीकरण शामिल हैं
(ईश्वर का मित्र या संत होने का)

पहला स्पष्टीकरण: सूफीवाद एक सुंदर, प्रकाश देने वाला और आध्यात्मिक सत्य है विभिन्न शब्दों से जाना जाता है: तरीक़ा (आध्यात्मिक आदेश या मार्ग), संतत्व (होना) ईश्वर का मित्र), दीक्षा, तथा आध्यात्मिक आदेश या मार्ग का अनुसरण। आध्यात्मिक आनंद और खोज के लोगों में से सत्य की खोज करने वाले विद्वानों ने इस पवित्र सत्य पर दस हज़ार खंड लिखे हैं, और मुसलमानों को इसकी शिक्षा दी है।
भगवान उन्हें इनाम दे! मैं वर्तमान संदर्भ के अनुसार दिखाता हूं,
सूचना के उस महासागर से कुछ बूँदें।

प्रश्न: सूफीवाद क्या है?

उत्तर: सूफीवाद आध्यात्मिक मार्ग का नाम है जिसके द्वारा दीक्षा लेने वाले लोग ईश्वर की खोज करते हैं। ईश्वर का ज्ञान प्राप्त करें और विश्वास और सत्य की पूर्ण धारणा प्राप्त करें कुरान। यह मार्ग आध्यात्मिक यात्रा के अंत में दीक्षा प्राप्त करने वालों को ऊपर उठाता है और पैगंबर के स्वर्गारोहण के तत्वावधान में, पूर्ण व्यक्ति (अल-इन्सान अल-कामिल) के पद पर।

चूँकि प्रत्येक व्यक्ति ब्रह्माण्ड का एक सर्व-व्यापक सूचकांक है, इसलिए प्रत्येक व्यक्ति का हृदय हज़ारों दुनियाओं के अमूर्त मानचित्र की तरह है। विज्ञान दर्शाता है प्रत्येक व्यक्ति का मन एक दूरसंचार केंद्र की तरह है, ब्रह्मांड का एक अमूर्त केंद्र है, और इस प्रकार प्रत्येक व्यक्ति का हृदय, जैसा कि अनगिनत संतों द्वारा समझाया गया है, असंख्य सार्वभौमिक सत्यों को प्राप्त करता है और उनका बीज भी है।

यह देखते हुए और इस तथ्य को देखते हुए कि, एक बीज की तरह, मानव हृदय और मन एक “विशाल वृक्ष” के सदस्यों, एक शाश्वत और शानदार मशीन के पहियों और अन्य भागों को समाहित करते हुए, इस हृदय के निर्माता ने इच्छा व्यक्त की कि यह अपनी क्षमताओं को व्यवहार में लाकर संचालित और फलता-फूलता रहे। परिणामस्वरूप हृदय,
बुद्धि की तरह ही काम करेगा। सबसे व्यावहारिक और महत्वपूर्ण साधन
यह कार्य संतत्व की ओर यात्रा करते हुए भगवान के नामों को दोहराना है और
विश्वास की सच्चाई को पाने की कोशिश में.

दूसरा स्पष्टीकरण: इस आध्यात्मिक यात्रा के दो साधन हैं भगवान के नाम का जाप और चिंतन, जिसके परिणामस्वरूप दोनों दुनिया में अनगिनत लाभ होते हैं। इन लाभों के अलावा, हर कोई जीवन की उथल-पुथल और बोझिल जिम्मेदारियों के बीच सांत्वना या राहत चाहता है, साथ ही आसपास के एकांत और उदासी को दूर करने के लिए अंतरंगता भी चाहता है। आधुनिक सामाजिक समारोह बहुत कम लोगों की इन ज़रूरतों को पूरा करते हैं, लेकिन केवल एक लापरवाह और मादक तरीके से।

अस्सी प्रतिशत लोगों को सच्ची सांत्वना और राहत की कमी है। उन्हें ऐसे सामाजिक समारोहों से कोई राहत नहीं मिलती, क्योंकि आधुनिक दृष्टिकोण और जीवनशैली, जीविकोपार्जन के लिए संघर्ष, बीमारी, कष्ट, बुढ़ापा और कई अन्य कारक उन्हें अपने विचारों को दूसरी दुनिया की ओर मोड़ने के लिए प्रेरित करते हैं। वे अपने दिलों को चिंतन, ईश्वर को याद करने और उनके नामों को दोहराने के माध्यम से काम करने के द्वारा सच्ची सांत्वना, संतोष और मित्रता पाते हैं। अंतरंगता के लिए अपने भीतर की ओर मुड़ने और यह समझने से कि ईश्वर के प्राणी हर जगह हैं, वे कभी अकेले नहीं होते। ईश्वर में विश्वास और स्मरण उन्हें हर प्राणी से दोस्ती करने और एक सुखद, संतुष्ट जीवन जीने के लिए प्रेरित करता है।

अपने सृष्टिकर्ता और प्रदाता ईश्वर की संगति में हमेशा रहने का एहसास उन्हें सबसे अधिक खुशी देता है, सारी उदासी और एकाकीपन को दूर करता है, और इस प्रकार उन्हें ईश्वर को धन्यवाद देने के लिए प्रेरित करता है।

तीसरा स्पष्टीकरण: संतत्व ईश्वरीय संदेशवाहक होने का प्रमाण है, तथा मार्ग या आध्यात्मिक व्यवस्था (तरीका) शरिया की पुष्टि करती है। संत, संदेशवाहक द्वारा बताए गए विश्वास के सत्यों को देखने की निश्चितता के साथ अनुभव करते हैं, तथा अपने हृदय की साक्षी और प्राप्त आध्यात्मिक-आनंद के माध्यम से उनकी पुष्टि करते हैं। ऐसी पुष्टि ईश्वरीय संदेशवाहक होने की सच्चाई को प्रमाणित करती है।

सूफी लोग, प्राप्त आनंद और ज्ञान तथा अर्जित आध्यात्मिक खोज की क्षमता के माध्यम से, आश्वस्त हैं कि शरिया के आदेश और सिद्धांत ईश्वरीय मूल के हैं और सत्य हैं। जैसे संतत्व और सूफीवाद संदेशवाहक और शरिया की सच्चाई को साबित करते हैं, वैसे ही वे इस्लाम की पूर्णता को भी व्यक्त करते हैं, इसके प्रकाश के स्रोतों में से हैं, मानवता की आध्यात्मिक प्रगति के साधन हैं, और इस्लाम के साथ अपने संबंध के कारण ज्ञान के स्रोत हैं।

इस महान सत्य के बावजूद, कुछ भटके हुए संप्रदाय इसे नकारते हैं। सूफीवाद की रोशनी से वंचित होने के कारण, वे दूसरों को भी इससे वंचित करना चाहते हैं। दुर्भाग्य से, अहल अल-सुन्ना व अल-जमाआ के कुछ सतही या शाब्दिक विद्वान, साथ ही कुछ लापरवाह राजनेता, इस धर्म को बंद करने और नष्ट करने की कोशिश कर रहे हैं।

महान खजाना, और कुछ के कारण जीवन के पानी का यह शुद्ध स्रोत सूख गया
सूफियों की गालियाँ और गलतियाँ.

लेकिन हर आदेश या प्रणाली में कुछ खामियां होती हैं! अगर अक्षम और अयोग्य लोगों को भर्ती किया जाता है, कुछ दुर्व्यवहार होगा। लेकिन सर्वशक्तिमान ईश्वर अपना काम दिखाएगा लोगों ने जो किया है, उसका न्याय करके आख़िरत में प्रभु का न्याय। अगर किसी का अच्छे (बुरे) कर्मों का भार अधिक होगा, सर्वशक्तिमान ईश्वर उसे पुरस्कृत (दंडित) करेगा या इसके अलावा, वह अच्छे और बुरे कर्मों का न्याय गुणवत्ता के आधार पर करता है, मात्रा के आधार पर नहीं। इस प्रकार एक अच्छा कर्म 1,000 बुरे कर्मों से भारी हो सकता है और उन्हें पाप का कारण बना सकता है। क्षमा किया गया.

चूंकि यह ईश्वरीय न्याय का मार्ग है, इसलिए सूफीवाद की निंदा नहीं की जानी चाहिए। क्योंकि इसके कुछ सदस्य इसका दुरुपयोग करते हैं। साथ ही, किसी तरीक़े या आध्यात्मिक तरीके का पालन करना सुन्नाह के अनुसार बुराई हमेशा उसकी बुराइयों से बड़ी होती है। सबसे निर्णायक सबूत इसका कारण यह है कि सूफी लोग अपने विश्वास को सबसे महत्वपूर्ण समय पर सुरक्षित रखते हैं, जब... गुमराह लोग सभी धार्मिक मूल्यों पर हमला करते हैं।

यहाँ तक कि साधारण, सच्चे सूफी भी, उनसे प्राप्त आध्यात्मिक आनंद के कारण तारीका और संतों के प्रति उनके प्रेम, उन लोगों की तुलना में अपने विश्वास को अधिक संरक्षित करते हैं इस्लाम के बारे में सतही वैज्ञानिक ज्ञान। वे कुछ बड़े पाप कर सकते हैं, लेकिन वे कभी अविश्वास में प्रवेश नहीं करते या विधर्मियों में शामिल नहीं होते। कोई भी उन्हें खंडन करने के लिए मजबूर नहीं कर सकता आध्यात्मिक मार्गदर्शकों की एक श्रृंखला जिन्हें वे दृढ़ प्रेम और दृढ़ विश्वास के साथ दुनिया के आध्यात्मिक ध्रुवों के रूप में स्वीकार करते हैं। इस प्रकार वे हमेशा अपने आध्यात्मिक मार्गदर्शकों की एक श्रृंखला को बनाए रखते हैं जिन्हें वे दुनिया के आध्यात्मिक ध्रुवों के रूप में स्वीकार करते हैं। उन पर भरोसा रखें और कभी अविश्वासी न बनें। लेकिन वर्तमान परिस्थितियों में, किसी के लिए भी, चाहे वे महान सत्य-खोजी विद्वान ही क्यों न हों, विश्वास करना कठिन है। वर्तमान समय के अविश्वासियों की साज़िशों से खुद को बचा सकते हैं यदि वे उनका आध्यात्मिक मार्ग से कोई संबंध नहीं है और उनके हृदय काम नहीं कर रहे हैं।

इसके अलावा, कुछ लोगों की बुराइयों के कारण सूफीवाद की निंदा नहीं की जानी चाहिए। स्वयं घोषित आदेश या कुछ स्कूल जो कानून के दायरे से अलग हो गए हैं धर्मपरायणता और यहां तक कि इस्लाम की भी। इसके बहुत महत्वपूर्ण धार्मिक, आध्यात्मिक और परलोक से संबंधित फलस्वरूप, सूफीवाद ने हमेशा मुस्लिम एकता के पवित्र बंधन को विकसित करने और उसे समृद्ध बनाने में एक मजबूत प्रभाव डाला है।

यह इस्लाम के तीन सबसे महत्वपूर्ण और मजबूत गढ़ों में से एक है अविश्वास और ईसाई राजनीति के हमलों के खिलाफ़। वह शक्ति जिसने 500 वर्षों तक खलीफा के केंद्र इस्तांबुल की रक्षा की, एक बड़ी दुनिया के खिलाफ़ ईसाई धर्म का अस्तित्व 500 स्थानों से फैले एकेश्वरवाद के प्रकाश में निहित है इस्तांबुल और, विश्वासियों के लिए समर्थन के बिंदु के रूप में, विश्वास की ताकत में मस्जिदों के पीछे दरवेश लॉज में ईश्वर का आह्वान करने वाले और उनका जाना परमेश्वर के ज्ञान से मिलने वाले आत्मिक आनन्द से आनंदित हो उठें।

तो, हे राष्ट्रीय उत्साह का दावा करने वाले और तुर्की राष्ट्रवाद के ढोंगियों, सूफीवाद में ऐसी कौन सी बुराई है कि तुम राष्ट्र के सामाजिक जीवन में इसके लाभों को नजरअंदाज कर सकते हो!

चौथा स्पष्टीकरण: संतत्व का मार्ग विरोधाभासी है: आसान और कठिन, छोटा और लंबा, बहुमूल्य और वांछनीय किन्तु जोखिम भरा, विस्तृत और संकीर्ण।

इस तरह के विरोधाभासों के कारण कभी-कभी अनुयायी डूब जाते हैं या अपना रास्ता खो देते हैं। कभी-कभी लोग पीछे मुड़ जाते हैं और दूसरों को भटका देते हैं।

सूफी दो में से किसी भी मार्ग पर चल सकते हैं: आंतरिक दुनिया में या बाहरी दुनिया में यात्रा करना। पहले समूह के सदस्य शारीरिक आत्म से शुरू करते हैं और बाहरी दुनिया की ओर बढ़े बिना सीधे हृदय की ओर बढ़ते हैं। वे अहंकार और आत्म-दंभ को भेदते और तोड़ते हैं और हृदय से रास्ता बनाकर सत्य तक पहुँचते हैं। फिर वे बाहरी दुनिया में निकल पड़ते हैं, जहाँ वे अपनी यात्रा जल्दी ही पूरी कर लेते हैं। वे आंतरिक दुनिया में देखे गए सत्य को बाहरी दुनिया में भी देखते हैं। ईश्वर के नाम का आह्वान करने वाले अधिकांश आध्यात्मिक समूह चुपचाप इसी मार्ग पर चलते हैं। ऐसे यात्रियों को अपने अहंकार और आत्म-दंभ को तोड़ना चाहिए, सनक और कल्पनाओं को त्यागना चाहिए और शारीरिक आत्म को नष्ट करना चाहिए।

दूसरे यात्री बाह्य जगत से शुरू करते हैं और सभी वस्तुओं में भगवान के नाम और गुणों की अभिव्यक्ति को देखने के बाद, आंतरिक जगत में प्रवेश करते हैं। अपने हृदय में, वे कुछ हद तक उन्हीं प्रकाशों को देखते हैं जो उन्होंने बाह्य जगत में देखे थे और सबसे तेज़ मार्ग का अनुसरण करते हुए हृदय में प्रवेश करते हैं। वे अपने लक्ष्य को तभी प्राप्त करते हैं जब उन्हें यह अनुभव होता है कि हृदय ईश्वर का दर्पण है, जो सभी के लिए शाश्वत है।

यदि पहले मार्ग के अनुयायी अपनी शारीरिक आत्मा को नष्ट नहीं कर सकते, सनक और कल्पना को त्याग नहीं सकते, और अहंकार और आत्म-दंभ को नहीं तोड़ सकते, तो वे आत्म-गौरव और फिर घमंड के लिए धन्यवाद देना छोड़ देते हैं। यदि वे ईश्वर के प्रति आकर्षित होने के कारण परमानंद प्रेम या आध्यात्मिक रूप से नशे की स्थिति में हैं, तो वे अतिशयोक्तिपूर्ण दावे करते हैं, जैसे कि ईश्वर की धमकियों और दंड की अवहेलना करना, स्वर्ग को तुच्छ समझना, या खुद को बाकी सभी से ऊपर समझना। और इस तरह वे खुद को और दूसरों को नुकसान पहुँचाते हैं।

उदाहरण के लिए, अपने पद की खुशी से अभिभूत घमंडी लेफ्टिनेंट खुद को मार्शल के रूप में देख सकते हैं और इस तरह कमांड के दो क्षेत्रों को भ्रमित कर सकते हैं। इसी तरह, एक छोटे दर्पण में सूर्य का प्रतिबिंब कभी-कभी समुद्र की सतह पर सूर्य के शानदार प्रतिबिंब के समान माना जा सकता है।

ठीक इसी प्रकार, कई संत स्वयं को उन लोगों से श्रेष्ठ मानते हैं, जो वास्तव में उनसे कहीं अधिक श्रेष्ठ हैं, ठीक उसी प्रकार जैसे मक्खियां स्वयं को मोरों से श्रेष्ठ मानती हैं।

मैंने एक बार एक दीक्षित व्यक्ति को देखा जो कुछ सत्यों से परिचित हो चुका था और कुछ अनुभव कर रहा था उसके भीतर संतत्व का रहस्य थोड़ा सा था, वह स्वयं को संत मानता था और दुनिया के सबसे महान आध्यात्मिक ध्रुव का रवैया अपनाया। मैंने उनसे कहा:

> भाई! राज्य के पद का सम्बन्ध और अधिकार है
> राज्य के सभी कार्यालय, प्रधानमंत्री से लेकर नीचे तक
> एक जिला गवर्नर का। इस प्रकार हर अधिकारी उससे जुड़ा हुआ महसूस करता है।
> आध्यात्मिक ध्रुव की रैंक में अलग-अलग अभिव्यक्तियाँ या प्रतिबिंब होते हैं
> संतत्व के अनगिनत पद। प्रत्येक पद में मानव-प्रकटीकरण के कई रूप भी होते हैं। आप अपने में
> आध्यात्मिक ध्रुव की सबसे बड़ी पदवी को प्रतिबिंबित होते हुए देखते हैं
> रैंक और धोखा खा जाते हैं। आप जो देखते हैं वह सच हो सकता है, लेकिन आपका निर्णय
> गलत है। एक मक्खी के लिए पानी का एक कटोरा एक छोटे समुद्र की तरह है।

ईश्वर की इच्छा से उसे होश आ गया और वह एक बड़े खतरे से बच गया।

मैं कई ऐसे लोगों से भी मिला हूं जो खुद को एक तरह का महदी मानते हैं, यहाँ तक कि महानतम महदी ने भी अंतिम दिनों के लिए वादा किया था। वे झूठे या झूठे नहीं हैं धोखेबाज, बस इस हद तक भ्रमित हैं कि वे अपने दर्शन को ही अंतिम सत्य मान लेते हैं। दिव्य नामों के प्रकटीकरण की उतनी ही डिग्री हैं जितनी संख्या ब्रह्मांड में वस्तुओं की, भगवान के सबसे बड़े सिंहासन से लेकर पृथ्वी पर एक छोटे कण तक। इस अभिव्यक्ति को प्राप्त करने वाली वस्तुओं की संख्या जितनी ही अलग-अलग डिग्री होती है। संतत्व के पदों के साथ भी यही स्थिति है।

धोखे या भ्रम का कारण यह है: संतत्व के कुछ पद ऐसे हैं जो महदी के कार्य से जुड़े हैं और सबसे महान आध्यात्मिक से संबंधित हैं पोल और यहां तक कि खद्र को भी। इसी तरह, प्रसिद्ध संतों से संबंधित रैंक हैं और इस प्रकार उनके नाम पर रखा गया, जैसे कि ख़ाद्र का पद, उवेस, और महदी का पद।

इस प्रकार कुछ लोग जो इस प्रकार के पदों की कुछ अभिव्यक्तियाँ प्राप्त करते हैं, वे सोचते हैं कि वे उस पद के स्वामी हैं, कि वे खद्र, महदी या सबसे महान आध्यात्मिक हैं समय का ध्रुव। यदि वे अपना अहंकार तोड़ते हैं और किसी आध्यात्मिक स्थिति का पीछा नहीं करते हैं, तो उन्हें ऐसे दावों के लिए निंदा नहीं की जा सकती है, और उनके अतिशयोक्तिपूर्ण दावों को परमानंद कथन (शाथियत) के रूप में गिना जाना चाहिए। लेकिन अगर वे चाहते हैं अपनी आत्म-अभिमान को संतुष्ट करने के लिए एक आध्यात्मिक स्थिति और इस प्रकार परमेश्वर को धन्यवाद देने से विमुख होना आत्म-गौरव के कारण, अंततः वे घमंड और विचलन में फंस जाएंगे क्योंकि वे वे स्वयं को महान संतों के बराबर समझने लगेंगे। आत्मा चाहे कितनी भी अहंकारी क्यों न हो, अपने दोषों से परिचित होती है, तथापि उन संतों के प्रति उनकी अच्छी राय उन्हें अपने समान ही दोषपूर्ण समझने के लिए प्रेरित करती है। यहां तक कि पैगम्बरों के प्रति उनका सम्मान भी कम हो सकता है।

ऐसी स्थिति से प्रभावित लोगों को शरिया के अनुसार निर्णय लेना चाहिए। उन्हें धार्मिक पद्धति के विद्वानों द्वारा निर्धारित मार्गदर्शक सिद्धांतों का पालन करना चाहिए, साथ ही ऐसे सावधानीपूर्वक संतों के निर्देशों का भी पालन करना चाहिए। इमाम ग़ज़ाली और इमाम रब्बानी जैसे लोगों ने शोध और सत्य की खोज की। साथ ही, वे उन्हें लगातार अपने शारीरिक स्वभाव की निन्दा करनी चाहिए, और उन्हें कुछ भी नहीं मानना चाहिए लेकिन दोष, लाचारी और गरीबी। अत्यधिक और अतिशयोक्तिपूर्ण दावे ऐसी अवस्था में रहने वालों में से अधिकांश आत्म-प्रेम से उत्पन्न होते हैं, क्योंकि प्रेम प्रेमी को रोकता है अपने प्रियतम के दोषों को पहचानने से। इस प्रकार उनका आत्म-प्रेम उन्हें ऐसा करने के लिए प्रेरित करता है उनकी सांसारिक आत्मा या आत्म-तत्व को हीरे के समान बहुमूल्य और चमकदार समझें, जबकि वास्तव में वे काँच की तरह मूल्यहीन और महत्वहीन हैं।

इस अवस्था में सबसे गंभीर लेकिन आम गलती यह कल्पना करना है कि उनमें प्रेरित अर्थ "परमेश्वर के वचन" हैं, और इसलिए प्रकट किए गए हैं छंद। यह उन्हें दिव्य रहस्योद्घाटन के सबसे पवित्र और उच्च पद, मधुमक्खियों के आने से लेकर आने तक सभी प्रेरणाओं के लिए विश्वासियों और स्वर्गदूतों के लिए यह किसी प्रकार का परमेश्वर का वचन है। लेकिन चूँकि परमेश्वर का भाषण प्राप्तकर्ता की क्षमता के अनुसार 70,000 पर्दों के माध्यम से आता है, इसकी असंख्य अभिव्यक्तियाँ और ग्रहण की डिग्री होती है। इस प्रकार ऐसी प्रेरणाएँ इसे "प्रकट छंद" नहीं कहा जा सकता, क्योंकि यह विवरण केवल के लिए है कुरान के प्रकाश फैलाने वाले वाक्य, ईश्वरीय शब्द और रहस्योद्घाटन का सबसे स्पष्ट और सबसे शानदार अवतार और उचित नाम।

जैसा कि बारहवें, पच्चीसवें और इकतीसवें अध्याय में समझाया और सिद्ध किया गया है ऐसे लोगों के दिलों में जो कुछ घटित होता है, उसकी तुलना सूर्य से करने पर ऐसा होता है कुरान (ईश्वर का सीधा वचन), सूरज की तुलना में रंगीन दर्पण में सूरज के छायादार और अस्पष्ट प्रतिबिंबों की तरह है। हालाँकि प्रत्येक दर्पण में प्रतिबिंबों को सही मायने में सूर्य के लिए जिम्मेदार ठहराया जाता है और उनका कुछ संबंध होता है इसके साथ, पृथ्वी कभी भी उन दर्पणों की ओर गुरुत्वाकर्षण नहीं करेगी या उनके चारों ओर परिक्रमा नहीं करेगी।

पांचवां स्पष्टीकरण: एक महत्वपूर्ण सूफी संप्रदाय एकता संप्रदाय का है। यह सिद्धांत ब्रह्मांड के आवश्यक अस्तित्व को लगभग नकारता है अनिवार्य रूप से विद्यमान सत्ता का नाम, और यहाँ तक कि प्रत्यक्ष रूप से विद्यमान प्राणियों को दिव्य नामों की अभिव्यक्तियों को प्रतिबिंबित करने वाले कल्पित दर्पणों के रूप में मानता है। यह स्कूल एक महत्वपूर्ण सत्य पर आधारित है: बहुत संतों की नज़र में उच्च पद और परमानंद, और अनिवार्य रूप से विद्यमान सत्ता के अस्तित्व में उनके दृढ़ विश्वास और दृढ़ विश्वास के कारण, आकस्मिक प्राणियों का अस्तित्व इतना महत्वहीन है कि वे सभी प्राणियों के अस्तित्व को नकार देते हैं,

जो ईश्वर के नाम पर महज भ्रम से अधिक कुछ नहीं लगते।

इस सिद्धांत में कुछ जोखिम हैं, जिनमें सबसे प्रमुख हैं: विश्वास के छह मूलभूत तत्व हैं: ईश्वर में विश्वास, प्रलय का दिन, फ़रिश्तों, पैगम्बरों, ईश्वरीय शक्ति में विश्वास।

शास्त्र, और दिव्य भाग्य। इनमें से प्रत्येक के लिए आकस्मिकताओं के अस्तित्व की आवश्यकता होती है। चूँकि ये मूलभूत तत्व पर्याप्त हैं, इसलिए वे भ्रम पर आधारित नहीं हो सकते
या कल्पना। इसलिए इस स्कूल से संबंधित संतों को इसके अनुसार कार्य नहीं करना चाहिए
आध्यात्मिक नशे की स्थिति से वास्तविकताओं की दुनिया में लौटने पर इसकी आवश्यकताएँ। हृदय के अनुभवों और आध्यात्मिक अनुभवों पर आधारित होना
आनंद और परमानंद के बारे में इस विचारधारा को तर्कसंगत या वैज्ञानिक नहीं माना जाना चाहिए।

इसके अलावा, ऐसे अनुभवों और सुखों का उल्लेख नहीं किया जाना चाहिए
वास्तविकताओं की इस दुनिया में, क्योंकि यह स्कूल बौद्धिक सिद्धांतों, वैज्ञानिक कानूनों और धर्मशास्त्रीय नियमों के अनुरूप नहीं है
कुरान और सुन्ना। जैसा कि चार सही मार्गदर्शित खलीफाओं और इस्लाम की शुरुआती शताब्दियों के महानतम न्यायविदों और धर्मी विद्वानों ने उल्लेख नहीं किया
या सुझाव दें, यह सूफीवाद का सबसे श्रेष्ठ स्कूल नहीं हो सकता। हालांकि यह काफी श्रेष्ठ है, लेकिन इसमें खामियां हैं। यह महत्वपूर्ण है लेकिन जोखिम भरा है, मुश्किल है लेकिन बहुत
जो लोग इसके आनंद के लिए इसमें प्रवेश करते हैं वे इसे छोड़ना पसंद नहीं करते हैं और यदि
वे अभिमानी हैं, मान लीजिए कि इसका दर्जा सबसे ऊंचा है।

एक महत्वपूर्ण जोखिम इस प्रकार है: यूनिटी ऑफ बीइंग द्वारा परिकल्पित मार्ग
यह कुछ महान संतों के प्रत्यक्ष अनुभव पर आधारित एक ठोस तरीका है
जो पूर्ण आध्यात्मिक नशे की स्थिति में, कार्य-कारण से परे हो जाते हैं, त्याग देते हैं
ईश्वर को छोड़कर सब कुछ, और आकस्मिकता से कोई लेना-देना नहीं है। लेकिन पेशकश करने के लिए
यह उन लोगों के लिए एक रास्ता है जो कार्य-कारण में डूबे हुए हैं और इस दुनिया के शौकीन हैं, जो चाहते हैं
भौतिक और प्राकृतिक दर्शन से चिपके रहना उन्हें अंधकार में डुबो देगा
भौतिकवाद और प्रकृतिवाद का दलदल। दूसरे शब्दों में, यह उन्हें बना देगा
सत्य से भटक जाते हैं। जो लोग इस संसार से प्रेम करते हैं और इसके भीतर लिपटे रहते हैं
कार्य-कारण संबंध इस क्षणभंगुर दुनिया को एक तरह का स्थायित्व देना चाहते हैं।
प्रियतम (संसार) को त्यागने के लिए, वे इस सिद्धांत का उपयोग एक ऐसी कल्पना करने के लिए करते हैं
इस संसार के लिए अकल्पनीय अनंत काल, यहां तक कि ईश्वर को नकारने तक
दुनिया का नाम.

भौतिकवाद अब इतना व्यापक हो गया है कि कुछ लोग हर चीज को भौतिकवाद मान लेते हैं।
मायने रखता है। भले ही कुछ प्रतिष्ठित विश्वासी एकता का दावा कर सकते हैं
भौतिक अस्तित्व की तुच्छता के आधार पर, यह अत्यधिक सम्भावना है कि भौतिकवादी इस अवधारणा को पदार्थ के पक्ष में अपना लें।
अद्वैतवाद, प्रकृतिवाद, या सर्वेश्वरवाद का रूप, यद्यपि अस्तित्व की एकता है
यह स्कूल ऐसी चीज़ों से सबसे दूर है। इसके अनुयायी इतने गहरे हैं
वे ईश्वरीय अस्तित्व में लीन हैं क्योंकि उनका दृढ़ विश्वास है कि वे ईश्वरीय अस्तित्व को नकारते हैं।
ब्रह्माण्ड के अस्तित्व को उसकी ओर से मानते हैं, जबकि भौतिकवादी अस्तित्व को
ब्रह्मांड के नाम पर केवल पदार्थ को ही महत्व देना और ईश्वर को नकारना।
पूर्व से उत्तरार्द्ध!

छठा स्पष्टीकरण: यहां तीन बिंदु बताए जाने हैं, जो इस प्रकार हैं:

पहला बिन्दु: संत बनने का सबसे सुन्दर, सीधा और उज्ज्वल मार्ग सुन्नाह का पालन करना और यथासंभव शरिया का पालन करना है।
इस तरह का पालन व्यक्ति के सामान्य कर्मों, क्रियाओं और स्वाभाविक गतिविधियों को पूजा के रूप में बदल देता है।
यह लोगों को सुन्ना और शरिया की याद दिलाता है,
और इस प्रकार उन्हें पैगम्बर के बारे में सोचने के लिए प्रेरित करता है, जो बदले में ईश्वर को बुलाता है
सर्वशक्तिमान ईश्वर का स्मरण करने से एक प्रकार की शांति और संतोष मिलता है।
इस प्रकार व्यक्ति का पूरा जीवन निरंतर उपासना में व्यतीत माना जा सकता है। यह सबसे चौड़ा राजमार्ग होने के साथ-साथ साथियों और उनके अनुयायियों का मार्ग भी है।
धर्मी अनुयायी, जो वास्तव में पैगंबर के उत्तराधिकार का प्रतिनिधित्व करते थे
मिशन (सबसे बड़ा संतत्व)।

दूसरा बिन्दु: संतत्व और सूफीवाद का सबसे महत्वपूर्ण आधार है
ईमानदारी (इरादे की शुद्धता), क्योंकि यह किसी भी निहित रूप से होने वाले बुरे कर्मों से बचाता है
ईश्वर के साथ साझेदार जोड़ना। जिसने ईमानदारी हासिल नहीं की है, वह नहीं कर सकता
उन तरीकों से यात्रा करें। और उन तरीकों में सबसे सीधा साधन, सबसे प्रभावी और मर्मस्पर्शी शक्ति, प्रेम है। प्रेमी अपने साथी में दोष खोजने की कोशिश नहीं करते
अपने प्रियजनों के दोषों के प्रति अंधे हो जाते हैं, क्योंकि वे उनके दोषों को भी अनदेखा कर देते हैं।
अपने प्रियजनों की पूर्णता के कमजोर संकेत को निर्णायक सबूत मानते हैं। वे हमेशा
अपने प्रियजनों का पक्ष लें।

जो लोग प्रेम के द्वारा परमेश्वर के ज्ञान की ओर अपने आपको निर्देशित करते हैं, वे
सभी आपत्तियों और संदेहों को दूर करें। चाहे हज़ारों शैतान एक साथ आ जाएं, वे
अपने सच्चे प्रियतम (ईश्वर) के बारे में थोड़ी सी भी सूचना को अमान्य नहीं कर सकते
पूर्णता। प्रेम के बिना, उन्हें अपने स्वयं के शारीरिक स्व और शैतानी और मानव शैतानों से आने वाली आपत्तियों के खिलाफ संघर्ष करना होगा।
खुद को बचाने के लिए, उनमें वीरतापूर्ण प्रतिरोध और दृढ़ता, मजबूत इच्छाशक्ति होनी चाहिए
विश्वास, और सावधान दृष्टि और विवेक।

इस कारण, ईश्वर के ज्ञान से उत्पन्न ईश्वर प्रेम ही सबसे अधिक है।
संतत्व के सभी चरणों में महत्वपूर्ण "किण्वन", क्योंकि यह परिवर्तन करता है, दीक्षा देता है, ऊंचा करता है
उन्हें उच्च पद पर पहुंचाता है, और सभी आध्यात्मिक बीमारियों को ठीक करता है। इस तरीके में जोखिम भी है,
हालाँकि: प्रेमी पूर्ण विनम्रता और ईश्वर से प्रार्थना करने से विमुख हो सकते हैं
दिखावा और शालीनता दिखाना और इस तरह से व्यवहार करना कि वे स्वयं को मूल्यवान और परमेश्वर के प्रेम के योग्य दिखाएँ।

संक्षेप में, वे समानता को बनाए नहीं रख सकते। जब वे किसी और से प्यार करते हैं
ईश्वर से अधिक, वे उन्हें उनकी व्यक्तिगत पूर्णता और आध्यात्मिकता के लिए प्यार कर सकते हैं
अनुग्रह, ईश्वर या उनके नाम के दर्पण के रूप में उनके कार्य के कारण नहीं।
प्रेमियों के लिए, ऐसा प्रेम ज़हर बन जाता है और उनकी आध्यात्मिक बीमारी को बढ़ाता है। हालाँकि

अन्य लोग कितने भी परिपूर्ण और महान क्यों न हों, कोई भी प्रेम जो नाम में नहीं है
ईश्वर और उसके पैगम्बर के प्रेम में ईश्वर का प्रेम छिपा होता है। लेकिन अगर ऐसा प्रेम ईश्वर के नाम पर या उसके कारण पोषित किया जाए, तो यह प्रेमियों को ईश्वर के प्रेम की ओर ले जाता है।
ईश्वर, जो तब दिव्य प्रेम की अभिव्यक्ति बन जाता है।

तीसरा बिंदु: यह संसार ज्ञान और सेवा का निवास है, मजदूरी का नहीं
और इनाम। सब कुछ ईश्वर की बुद्धि के अनुसार होता है, और लोगों को उनके अच्छे कर्मों और सेवाओं के लिए परलोक में पुरस्कृत किया जाएगा। इस प्रकार
भगवान की प्रसन्नता के लिए किए गए अच्छे कर्मों का फल नहीं चाहना चाहिए
यहाँ। यदि उन्हें दिया जाता है, तो उन्हें दु:ख के साथ स्वीकार किया जाना चाहिए, क्योंकि यहाँ उन फलों का उपयोग करना अनुचित है जो उनके तुरंत बाद स्वर्ग में बदले में दिए जाएंगे
खाए जाते हैं। यह एक ऐसे दीपक के बदले में स्थायी प्रकाश देने वाला दीपक देने जैसा है जो
एक मिनट में बुझ जाता है।

संत कठिनाई, दुर्भाग्य, परेशानी और सेवा का स्वागत यह कहकर करते हैं:
"सभी परिस्थितियों और स्थितियों में परमेश्वर की स्तुति हो।" यदि वे आध्यात्मिक खोज करते हैं, चमत्कार करते हैं, और आध्यात्मिक सुख और ज्योति प्राप्त करते हैं, तो वे
उन्हें ईश्वरीय कृपा मानकर स्वीकार करते हैं और उन्हें छिपाने की कोशिश करते हैं। विनम्र बने रहते हुए, वे
बदले में उनकी कृतज्ञता और आराधना में वृद्धि होती है। कई संत तो भगवान से यह भी पूछते हैं
उन एहसानों को वापस लेने के लिए ताकि उनकी ईमानदारी और शुद्ध इरादे पर कोई आंच न आए
मिलावटी न हो। वास्तव में, ईश्वर द्वारा स्वीकृत व्यक्ति के लिए सबसे महत्वपूर्ण ईश्वरीय कृपा या अनुग्रह यह है कि वह उन्हें अपने अनुग्रह का एहसास नहीं कराता। यह
उन्हें आत्म-गौरव के लिए प्रार्थना और कृतज्ञता को त्यागने से रोकता है,
अकड़ और शालीनता दिखाना, तथा दिखावटी व्यवहार करना।

यदि वे लोग जो सूफीवाद के माध्यम से संतत्व की खोज करते हैं, आध्यात्मिक आनंद और चमत्कारों का स्वागत करते हैं, जो संतत्व के तुच्छ फलों में से हैं,
वे अंततः स्वर्ग में अपने स्थायी फल को कम कर देते हैं और अपने इरादे और संतत्व की शुद्धता खो देते हैं।

सातवां स्पष्टीकरण: यहां चार सूक्ष्मताओं पर विचार किया गया है,
इस प्रकार है:

पहली सूक्ष्मता: शरिया, ईश्वरीय धार्मिक सिद्धांतों, आदेशों और निषेधों का संग्रह, ईश्वर के प्रत्यक्ष संबोधन का परिणाम है।
पैगम्बर के माध्यम से मानवता के लिए और उनकी पूर्ण एकता के दृष्टिकोण से
और आधिपत्य। इसलिए, सभी तरीक़े नियम और रैंक, जिनमें सबसे महान भी शामिल हैं,
शरिया के सभी हिस्से। सभी तरीक़े शरिया की सच्चाई तक पहुँचने के साधन हैं, और सभी
परिणाम शरिया की पुष्टि में शामिल हैं।

कुछ सूफियों की गलत धारणाओं के विपरीत, शरिया महज एक बाहरी आवरण नहीं है, सूफीवाद इसका आंतरिक भाग है और हकीका (सत्य) इसका वास्तविक स्वरूप है।

सार या सार। शरिया व्यक्ति के स्तर के अनुसार फलता-फूलता है, क्योंकि यह
इसमें उन सभी स्तरों को शामिल किया गया है जो इसे समझते हैं और इसका अभ्यास करते हैं।
इस्लाम को और भी बेहतर तरीके से समझकर, उसका अभ्यास करके और उसका स्वाद लेकर अपने स्तर को बढ़ाएँ। इसलिए यह मत सोचिए कि आम लोगों की इस्लाम की समझ और उसका अभ्यास ही शरीयत है, बल्कि संतों द्वारा शरीयत के अभ्यास को शरीयत ही मानिए।
सूफीवाद और हकीका। संक्षेप में, सूफीवाद एक अनुशासन या तकनीक है जो
लोगों को शरिया का बेहतर तरीके से पालन करने के लिए प्रेरित करना। इसमें समझ और अभ्यास के कई स्तर हैं।

सबसे उन्नत सूफी सबसे अधिक समर्पित, आसक्त और आज्ञाकारी होते हैं
वे पैगंबर के छोटे से छोटे आदेश को भी पूरी तरह से पालन करने योग्य मानते हैं और उसे बहुत सावधानी से पूरा करते हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि
चाहे रहस्योद्घाटन प्रेरणा से कितना भी ऊंचा क्यों न हो, शरिया के नियम
क्योंकि अच्छे आचरण (ईश्वरीय रहस्योद्घाटन के फल) का महत्व बहुत अधिक है और
तरीक़े के अच्छे शिष्टाचार (प्रेरणा के उत्पाद) से अधिक महत्वपूर्ण है ।
इस प्रकार, एक तरीक़े का सबसे महत्वपूर्ण आधार सुन्नाह का पालन करना है।

दूसरी सूक्ष्मता: सूफीवाद केवल एक साधन है। यदि इसे लक्ष्य या साध्य मान लिया जाए,
शरिया के आदेश और सुन्नाह के सिद्धांत महज बाहरी प्रदर्शन के लिए रस्में बनकर रह गए हैं और दिल सीधे ईश्वर की ओर मुड़ गया है।
सूफीवाद। ऐसे लोग ईश्वर के नामों के उच्चारण को अधिक महत्व देते हैं
दरवेश मंडलियों में जाने की अपेक्षा, प्रतिदिन की निर्धारित प्रार्थनाओं पर ध्यान केन्द्रित करें
धार्मिक दायित्वों की अपेक्षा दैनिक अनावश्यक पाठों पर अधिक ध्यान दिया जाता है, तथा
सूफीवाद के प्रमुख पापों की अपेक्षा उसके अच्छे आचरण का विरोध करने से अधिक सावधान रहें।

चूंकि सभी धार्मिक दायित्व शरिया के स्थापित आदेशों में से हैं, इसलिए सभी तारिक़ों के दैनिक अतिरिक्त पाठ उनमें से किसी एक की भी भरपाई नहीं कर सकते। तारिक़ों के पाठ और अच्छे शिष्टाचार

वे केवल सांत्वना का एक साधन हैं, क्योंकि वे इससे सच्चा आनंद प्राप्त करने में असमर्थ हैं।
धार्मिक दायित्व, उस आनंद का वास्तविक स्रोत नहीं। इस प्रकार पाठ
सूफी दरगाह में शिष्टाचार और रीति-रिवाज मस्जिद में निर्धारित नमाज़ों के आनंद और सही ढंग से अदा करने के साधन हैं। जो लोग निर्धारित नमाज़ों को अदा करते हैं
मस्जिद में नमाज़ पढ़ना मानो एक औपचारिकता हो और फिर लॉज की ओर भागना
सच्चा सुख पाने और आध्यात्मिक पूर्णता प्राप्त करने की इच्छा रखने वाले लोग हानि और भटकाव में हैं।

तीसरी सूक्ष्मता: क्या सुन्नाह और शरीयत के बाहर सूफीवाद संभव है?

उत्तर: हाँ और नहीं। यह संभव है, क्योंकि कुछ सिद्ध संतों को शरिया की तलवार से मार दिया गया है। यह असंभव है, क्योंकि सत्य की खोज करने वाले संत विद्वान सादी अल-शिराज़ी से सहमत हैं: "सादी, यह किसी के लिए अकल्पनीय है
जो सत्य की रोशनी पाने के लिए रसूल के मार्ग पर नहीं चलता।

चूंकि ईश्वर का संदेशवाहक पैगम्बरों की मुहर है और मानवता की ओर से ईश्वर का अभिभाषक है, इसलिए मानवता को उसके व्यापक मार्ग का अनुसरण करना चाहिए और उसके ध्वज के नीचे रहना चाहिए।

दूसरी ओर, समाधि, परमानंद या आध्यात्मिक तल्लीनता में पड़े लोग
शरिया का उल्लंघन करने के लिए लोगों को जिम्मेदार नहीं माना जाता है।
धार्मिक आदेशों के प्रति अपने विरोध का कारण बताने के लिए, जब वे उन इंद्रियों या क्षमताओं के प्रभाव में होते हैं जिन्हें उनकी इच्छाशक्ति और तर्क नियंत्रित नहीं कर सकते।
इस प्रकार, परमानंद संत ऐसी अवस्था में रहते हुए भी अपना संतत्व नहीं खोते।
उन्हें किसी भी तरह से खुले तौर पर इस्लाम या शरिया का खंडन, निंदा या अपमान नहीं करना चाहिए
बल्कि, उन्हें निर्धारित कृत्यों की सच्चाई को स्वीकार करना चाहिए, भले ही वे अनदेखा करें
यदि वे विश्वास और स्थापित सत्य का खंडन करते हैं या उसका खंडन करते हैं
ऐसी अवस्था में भी वे शरिया से भटक गए हैं।

संक्षेप में, शरिया के दायरे से बाहर के सूफी दो श्रेणियों में आते हैं।
पहले में वे लोग शामिल हैं जो समाधि या परमानंद, आध्यात्मिक तल्लीनता और
नशे में, या उन इंद्रियों या क्षमताओं के प्रभाव में जिन्हें नियंत्रित नहीं किया जा सकता
तर्क और इच्छाशक्ति द्वारा नियंत्रित। ऐसे लोग अनजाने में शरिया छोड़ देते हैं। सत्य की खोज करने वाले संतत्व के विद्वानों ने यह निर्णय लिया है कि
कुछ महान संतों को अस्थायी रूप से शरिया और यहां तक कि इस्लाम से भी बाहर रखा गया है। लेकिन
वे अभी भी संत हैं, क्योंकि वे जानबूझकर पैगंबर द्वारा बताए गए किसी भी आदेश का खंडन या खंडन नहीं करते हैं, और क्योंकि कोई भी उपेक्षा
उनकी अज्ञानता या आध्यात्मिक नशा, समाधि और परमानंद।

दूसरे समूह में वे लोग शामिल हैं, जो सूफीवाद के शानदार आनंद से मोहित होकर शरिया की सच्चाइयों को स्वादहीन और महज रस्में समझते हैं और इस तरह वे उसके अनुयायी बन जाते हैं।
उनके प्रति उदासीन। शरिया को एक सतही आवरण मानना और
सूफीवाद में जो कुछ वे पाते हैं, उससे संतुष्ट होकर वे सूफीवाद को ही वास्तविक मानते हैं।
आपत्ति जताते हैं और इसलिए शरिया को त्याग देते हैं। उनमें से "संयमी" लोगों को
अपने गैर-इस्लामी कार्यों के लिए जिम्मेदार ठहराया जा सकता है, और निम्नतम स्तर तक गिर सकता है
शैतान द्वारा भी उनका उपहास किया जाता है।

चौथी सूक्ष्मता: मुस्लिम समुदाय कुछ सदस्यों को मंजूरी देता है
विचलित संप्रदायों के बारे में बात करते हुए भी, वह उन लोगों को खारिज कर देता है जो उसी तरह के विचार रखते हैं। उदाहरण के लिए, अहल अल-सुन्ना के सावधानीपूर्वक विद्वान कट्टरपंथी मुताज़िली ज़माख़शरी को विधर्मी या अविश्वासी नहीं मानते हैं, और फिर भी उसे अस्वीकार करते हैं
अबू 'अली जुब्बाई जैसे मुताज़िली नेता उनके कम गंभीर विरोध के बावजूद
अहल अल-सुन्नाह के लिए। यह बात मुझे बहुत देर तक उलझन में डालती रही।

अंत में, ईश्वर की कृपा से मुझे यह समझने में मदद मिली कि ज़माख़शारी की आपत्तियाँ सत्य के प्रति उनके प्रेम और समर्पण के कारण थीं। यानी, उन्होंने सत्य का पक्ष लिया।
मुताज़िलिस ने इसलिए कहा क्योंकि उनका मानना था कि ईश्वर को दोष से मुक्त रखा जा सकता है।
सजीव प्राणियों को स्वयं सृजन या देने का कार्य सौंपना

बाह्य अस्तित्व को उनके कृत्यों से जोड़ कर देखा जाता है।
ईश्वर में दोष न होने की पुष्टि करते हुए उन्होंने अहल अल-सुन्ना के सिद्धांत को अस्वीकार कर दिया
सजीव प्राणियों के कार्यों का सृजन करना। लेकिन अहल अल-सुन्ना ने उन लोगों को अस्वीकार कर दिया
मुताज़िली नेता जो इस्लाम से लगाव के कारण मुताज़िली नहीं बने
सत्य के प्रति उनका दृष्टिकोण इतना संकीर्ण था कि वे अहल-उल-सुन्ना के उच्च सिद्धांतों को समझ नहीं पाए
और व्यापक नियमों को समझने में उनकी मानसिकता बहुत संकीर्ण थी।
वे उन सिद्धांतों को स्थापित करने के लिए अनुसरण करते हैं।

इस प्रकार, सूफी सुन्ना के बाहर और विभिन्न माध्यमिक शरिया का विरोध करते हैं
आदेशों को दो समूहों में विभाजित किया जा सकता है। पहला समूह उदासीन है
शरिया के गौण आदेश, जिनका स्वाद वे नहीं समझ सकते, क्योंकि
जिस तरह ज़माख़शरी सच्चाई से जुड़े हैं, उसी तरह वे अपने तरीके से जुड़े हैं
एक शुद्ध इरादा और उसके परिणामस्वरूप होने वाले सुखों से अभिभूत हो जाते हैं। दूसरा समूह
ऐसे आदेशों को सूफीवाद के सिद्धांतों से कमतर माना जाता है, क्योंकि वे
न तो उन्हें समझ पाते हैं और न ही उनके गहन आनंद का अनुभव कर पाते हैं।

आठवां स्पष्टीकरण: अब मैं आठ खतरों के बारे में बताता हूँ जो एक सूफी दीक्षा को झेलने पड़ते हैं।
निम्नलिखित खतरे का सामना

करना पड़ सकता है: पहला खतरा: कुछ दीक्षा लेने वाले जो पैगम्बर की सुन्नत का सख्ती से पालन नहीं
करते हैं, वे पैगम्बर बनने के बजाय संत बनना पसंद कर सकते हैं। चौबीसवाँ और इकतीसवाँ
शब्द सिद्ध करते हैं कि पैगम्बरत्व संतत्व से कहीं अधिक ऊंचा और श्रेष्ठ है।

दूसरा ख़तरा: वे कुछ अतिवादी विचारों वाले संतों को साथियों से श्रेष्ठ और यहाँ तक कि पैगम्बरों के
बराबर भी मान सकते हैं।
सत्ताईसवाँ शब्द, और सत्ताईसवाँ शब्द का परिशिष्ट, साबित करते हैं
साथियों का अत्यंत उच्च पद, जो साहचर्य से आता है
पैगम्बर के साथ। साथ ही, एक संत कभी भी पैगम्बर का दर्जा प्राप्त नहीं कर सकता।

तीसरा खतरा: कुछ कट्टर सूफी लोग तारीका का दैनिक पाठ पसंद करते हैं
सुन्नत के सिद्धांतों की तुलना में गौण और गौण सिद्धांत अपनाते हैं, और यहां तक कि सुन्नत के सिद्धांतों को भी त्याग देते हैं।
सुन्नत में तारीका के पाठ का समर्थन किया गया है। जैसा कि कई ग्रंथों में साबित हुआ है
ऐसे सत्यान्वेषी संत विद्वानों द्वारा कहे गए शब्द और उद्घोषणाएँ
इमाम ग़ज़ाली और इमाम रब्बानी के अनुसार, एक धार्मिक दायित्व का पालन करने से मिलने वाला पुरस्कार या डिग्री 1,000 सुन्ना आदेशों से अधिक है। इस प्रकार, एक धार्मिक दायित्व का पालन करने से मिलने वाला पुरस्कार या डिग्री 1,000 सुन्ना आदेशों से अधिक है।
सुन्नाह का अभ्यास, १००० बार तरीक़े का अभ्यास करने से बेहतर है।

चौथा खतरा: कुछ अति अनुयायी प्रेरणा और ईश्वर को मानते हैं
रहस्योद्घाटन बराबर है। कुछ ग्रंथ, मुख्य रूप से बारहवें और पच्चीसवें
शब्द सिद्ध करते हैं कि ईश्वरीय प्रकाशन प्रेरणा से अतुलनीय रूप से उच्चतर, अधिक व्यापक और पवित्र है।

पांचवा खतरा: कुछ स्वयंभू सूफी, सूफीवाद की सच्चाई से अनभिज्ञ,
आध्यात्मिक आनंद, आत्मज्ञान और चमत्कार-कार्य में तल्लीन हो जाओ-

कमज़ोरों को बल देने, उत्साह की कमी वाले लोगों को प्रोत्साहित करने और उनके सामने आने वाली उबाऊ और परेशानियों को हल्का करने के लिए अनुयायियों को (बिना चाहे) यह अधिकार दिया जाता है।
पूजा-अर्चना के कार्यों से आते हैं। वे धीरे-धीरे पूजा-अर्चना के कार्यों को प्राथमिकता देते हैं,
दैनिक पाठ और सेवा। हालाँकि, जैसा कि ऊपर कहा गया है और द वर्ड्स के कई ग्रंथों में साबित हुआ है , यह दुनिया सेवा का क्षेत्र है, न कि ईश्वर का
मजदूरी प्राप्त करना। जो लोग यहाँ अपनी मजदूरी की मांग करते हैं वे अनन्त काल को कम करते हैं
इस जीवन के मरते हुए, क्षणभंगुर फलों के लिए स्वर्ग के फल। वे इस सीमित और क्षणभंगुर दुनिया में स्थायित्व पसंद करते हैं, और मृत्यु की आशा नहीं कर सकते
और जो उससे परे है। वे इस दुनिया की ज़िंदगी से एक तरह से प्यार करते हैं, क्योंकि
वे उसमें परलोक की अभिव्यक्ति पाते हैं।

छठा खतरा: कुछ ऐसे दीक्षित लोग जो सत्य और प्रमाणिकता के लोग नहीं हैं
संतत्व के वास्तविक और सार्वभौमिक पदों को उनके विशेष उदाहरणों से भ्रमित करना
और छाया। चौबीसवाँ और अन्य वचन सिद्ध करते हैं कि सूर्य है
इसके प्रतिबिंबों के माध्यम से गुणा किया जाता है, जो प्रकाश और गर्मी की तरह होने के बावजूद
सूर्य स्वयं, अपने मूल की तुलना में बहुत फीके हैं।
पैगंबरों और महान संतों की भी छाया और प्रतिबिंब होते हैं।
इनमें से कुछ में प्रवेश करने या प्राप्त करने के बाद, वे खुद को महानतम संतों और यहां तक कि पैगंबरों से भी बड़ा समझते हैं। इससे बचने के लिए, किसी को हमेशा विश्वास के मूल सिद्धांतों और शरिया के मूल सिद्धांतों को मार्गदर्शक सिद्धांतों के रूप में उपयोग करना चाहिए और उन सभी दर्शन या अनुभवों की निंदा करनी चाहिए जो उनका विरोध करते हैं।

सातवां खतरा: कुछ उत्साही और आध्यात्मिक आनंद वाले लोग घमंड, दिखावा और दिखावे को तरजीह देते हैं और लोगों का प्यार पाने और एक दुष्ट बनने की चाहत रखते हैं।
वे भगवान को धन्यवाद देने, उनसे विनती करने और उनसे विनती करने तथा लोगों के प्यार और ध्यान के प्रति उदासीन रहने के बजाय यह सब करना पसंद करते हैं। जबकि,
सबसे बड़ा आध्यात्मिक पद सेवकाई है, और पैगम्बर मुहम्मद सबसे महान आध्यात्मिक पद हैं।
ईश्वर की दृष्टि में वह सबसे प्रिय है क्योंकि वह ईश्वर की सेवा में सबसे आगे था। ऐसी सेवा कृतज्ञता, विनती, प्रार्थना, पवित्र श्रद्धा, मानवीय गरीबी और लाचारी की अनुभूति पर आधारित होती है,

और लोगों की चीज़ों, प्यार और ध्यान के प्रति उदासीनता। हालाँकि
कुछ महान संतों ने कभी-कभी भगवान के सामने बताए गए दोष प्रदर्शित किए,
लेकिन अनजाने में और अस्थायी अवधि के लिए उनका पालन नहीं किया जाना चाहिए
इस मामले में वे जानबूझकर ऐसा नहीं कर रहे हैं। वे इस मामले में मार्गदर्शक भी नहीं हैं, यहाँ तक कि
हालाँकि, सामान्य शब्दों में, वे निर्देशित थे।

आठवाँ खतरा: कुछ स्वार्थी और अधीर दीक्षित लोग यहीं साधुता का फल भोगना चाहते हैं, भले ही ये परलोक के लिए हों। और इसके बावजूद,
जैसा कि श्लोकों में कहा गया है, इस संसार का जीवन क्षणभंगुर भोग है
भ्रम का (3:185), और द वर्ड्स के कई हिस्सों में निर्णायक रूप से साबित हुआ, एक

इस अस्थाई संसार के १००० बागों से स्थायी संसार का फल श्रेष्ठ है। उन धन्य फलों को यहाँ नहीं खाना चाहिए। यदि उन्हें अनुमति दी जाए
हमें उनकी इच्छा किए बिना ही ईश्वर को धन्यवाद देना चाहिए और उन्हें दिव्य मानना चाहिए
हमें प्रोत्साहित करने के लिए अनुग्रह चाहिए, न कि पुरस्कार।

नौवां स्पष्टीकरण: मैं सूफीवाद के अनेक फलों और लाभों में से नौ का संक्षेप में उल्लेख करता हूँ, जो इस प्रकार हैं:

पहला लाभ: सूफी मार्ग का सही ढंग से पालन करने से व्यक्ति को कुछ निश्चित लाभ प्राप्त होते हैं।
विश्वास की सच्चाइयों की धारणा की डिग्री और देखने की निश्चितता की डिग्री के लिए उनकी अभिव्यक्तियों के साथ अनुकूल है। ऐसी धारणा एक कुंजी है
और खुशी की शाश्वत दुनिया में अनन्त खजाने प्राप्त करने का एक साधन है।

दूसरा लाभ: सूफीवाद हृदय, हमारे केंद्र और स्रोत को काम करने की अनुमति देता है
और इस तरह अन्य मानवीय क्षमताओं को उनके रचनात्मक कार्यों के लिए निर्देशित करता है।
यह हमें सच्ची मानवता प्राप्त करने में सक्षम बनाता है।

तीसरा लाभ: सूफीवाद विश्वासियों को एक तारीका में शामिल होने और दोस्त बनने में सक्षम बनाता है
मध्यवर्ती दुनिया और उसके रास्ते पर चलने वाले संतों की
इसके बाद। यह विश्वासियों को एकांत से राहत देता है और उन्हें लाभ पहुँचाता है
इस दुनिया और मध्यवर्ती दुनिया में संतों की कंपनी। आस्तिक भी मानते हैं
प्रत्येक आध्यात्मिक गुरु को संदेह के विरुद्ध एक समर्थन और मजबूत सबूत के रूप में मानें और विश्वास के सिद्धांतों पर संतों की सहमति पर भरोसा करके, गुमराह होने से बचें।

चौथा लाभ: विश्वास के माध्यम से ईश्वर को जानने का आनंद अनुभव करके,
और परमेश्वर के प्रति प्रेम उसके ज्ञान से आता है, विश्वासियों को राहत मिलती है
अकेलेपन और एकाकीपन की भावना। जैसा कि द वर्ड्स में बताया गया है, दोनों ही स्थितियों में खुशी
संसार, दुःख रहित सुख, और अकेलेपन रहित मिलन इसी में निहित है
विश्वासों की सच्चाई और इस्लामी जीवन शैली। जैसा कि द सेकंड वर्ड में कहा गया है,
विश्वास में स्वर्ग के टुबा वृक्ष का बीज होता है, और वह बीज अंकुरित होता है और
तारीका के प्रशिक्षण के माध्यम से बढ़ता है ।

पांचवा लाभ: सूफीवाद विश्वासियों को धार्मिक कर्तव्यों में निहित सत्य को आंतरिक रूप से महसूस करने में सक्षम बनाता है। परिणामस्वरूप आध्यात्मिक सतर्कता और स्मरण
परमेश्वर उन्हें उन कर्तव्यों को स्वेच्छा और उत्साहपूर्वक करने के लिए प्रेरित करता है,
ऐसा करने के लिए मजबूर किए गए गुलामों की तरह नहीं।

छठा लाभ: सूफीवाद विश्वासियों को भरोसे का स्तर प्राप्त करने में सक्षम बनाता है
परमेश्वर के प्रति पूर्ण समर्पण, तथा स्वीकृत और प्रेम किये जाने का दर्जा
उसके द्वारा। ये दुःख रहित सच्ची खुशी और सांत्वना के साधन हैं,
और अकेलेपन और अलगाव के बिना परिचय और मेलजोल।

सातवां लाभ: सूफीवाद लोगों को एक ईमानदार और शुद्ध इरादा प्राप्त करने में सक्षम बनाता है, जो उन्हें भगवान के साथ भागीदारों के छद्म संबंध से बचाता है
और दिखावा और ढोंग जैसे अपमानजनक व्यवहार। तारीका के अनूठे माध्यम से

आध्यात्मिक कार्यों के द्वारा, विश्वासी स्वयं को उन खतरों से शुद्ध करते हैं जो
अहंकार और शारीरिक अहंकार.

आठवां लाभ: मन के चिंतन और हृदय द्वारा ईश्वर के स्मरण के माध्यम से, तारीका विश्वासियों को आध्यात्मिक शांति प्राप्त करने में मदद करता है,
ईश्वर की हमेशा मौजूदगी का अहसास और नेक इरादे। इससे उन्हें मदद मिलती है
रोजमर्रा के कार्यों को पूजा के कार्यों में बदल दें, और साधारण व्यवहार और
लेन-देन को परलोक से संबंधित कार्यों में बदल देते हैं। इस प्रकार विश्वासी अपने वर्तमान जीवन की पूंजी का उपयोग अपने अनन्त जीवन के लिए असंख्य बीज पैदा करने में करते हैं।

नौवां लाभ: हृदय की इस यात्रा और शैतान तथा शारीरिक स्वार्थ के विरुद्ध निरंतर संघर्ष के माध्यम से, तथा उसके परिणामस्वरूप आध्यात्मिक प्रगति के माध्यम से
प्राप्त होने पर, विश्वासी पूर्णता के लिए प्रयास करते हैं। सच्चे विश्वासी और पूर्ण मुसलमान बनकर (विश्वास और इस्लाम के सत्य या सार को प्राप्त करके), वे बन जाते हैं
ईश्वर के सच्चे सेवक, उनके अभिभाषक और मित्र, तथा उनकी भावनाओं को प्रतिबिंबित करने वाले दर्पण
नाम और गुण। यह दर्शाते हुए कि वे सृष्टि के सर्वोत्तम प्रतिरूप हैं,
वे फ़रिश्तों के सामने मानवता की श्रेष्ठता साबित करते हैं। इस्लामी आस्था और व्यवहार के पंखों के साथ मानवता के सर्वोच्च पदों पर उड़ान भरकर, वे
इस संसार में रहते हुए अनन्त सुख प्राप्त करें या उसका अनुभव करें।

तेरी महिमा हो, हमें तेरे सिखाए हुए के सिवा कुछ ज्ञान नहीं
तू सर्वज्ञ, तत्वदर्शी है।

हे ईश्वर, हमारे स्वामी मुहम्मद साहब पर कृपा और शांति प्रदान करें।
सभी उम्र के लोगों की मदद करने वाले सबसे महान संत और सबसे शक्तिशाली ध्रुव
सर्वकाल के लिए संतत्व, जिसकी संतत्व की महिमा और
ईश्वर द्वारा किसके प्रिय होने की डिग्री उसके में प्रकट हुई थी
स्वर्गारोहण, और जिसके स्वर्गारोहण की छाया में सभी समाहित हैं
संतत्व के स्वरूप और डिग्री, तथा उनके परिवार और साथियों पर।
आमीन। सभी संसारों के स्वामी परमेश्वर की स्तुति हो।

* * *

परिशिष्ट

ईश्वर के नाम से, जो अत्यन्त दयालु, दयावान है।

[यह परिशिष्ट सभी के लिए महत्वपूर्ण और लाभदायक है।]

सर्वशक्तिमान ईश्वर तक पहुँचने के कई रास्ते हैं। सभी सच्चे रास्ते ईश्वर से ही प्राप्त होते हैं।
कुरान से कुछ अधिक सुरक्षित, अधिक व्यापक और प्रत्यक्ष हैं
दूसरों की तुलना में। मैंने कुरान से जो रास्ता निकाला है वह लोगों पर निर्भर करता है
उसकी शक्ति और सामर्थ्य के समक्ष असहायता और गरीबी की धारणा और स्वीकारोक्ति
धन, और स्नेह और प्रतिबिंब पर.

अपनी असहायता की अनुभूति और स्वीकारोक्ति उतना ही निश्चित तरीका है जितना कि ईश्वर के प्रति प्रेम का भाव। यह और भी सुरक्षित हो सकता है, क्योंकि ईश्वर की सच्ची भक्ति और पूजा के माध्यम से, यह अपने अनुयायियों को ईश्वर के प्रेम के योग्य बना सकता है। धारणा और
गरीबी या अपर्याप्तता की स्वीकारोक्ति हमें दयालु ईश्वर के नाम की ओर ले जाती है। स्नेह प्रेम से अधिक प्रभावशाली है और हमें दयालु ईश्वर के नाम की ओर ले जाता है।

सर्व-करुणामय। प्रतिबिंब उज्जवल और अधिक व्यापक है
प्रेम और सर्वज्ञ नाम की ओर ले जाता है।

हमारा तरीका कुछ सूफी सम्प्रदायों के तरीकों जैसा नहीं है जिन्होंने दस सूत्र विकसित किये हैं। दस बाह्य और आंतरिक इंद्रियों या क्षमताओं को शुद्ध और तेज करने के लिए कदम, और जिनके सदस्य भगवान का नाम चुपचाप पढ़ना पसंद करते हैं। यह उन लोगों से भी अलग है जो
सार्वजनिक रूप से भजन-कीर्तन को अपनाएं और अपने अनुयायियों को सात शारीरिक अवस्थाओं में निहित सभी दोषों से शुद्ध करने का प्रयास करें।

हमारा रास्ता चार चरणों वाला है और यह कोई तरीक़ा नहीं बल्कि शरिया है या सत्य ही है। इसके मूल सिद्धांतों में सुन्ना का पालन करना, धार्मिक दायित्वों का पालन करना, प्रमुख पापों से बचना, पाँच नियमों का पालन करना शामिल है
निर्धारित प्रार्थनाओं को ठीक से करना, और महिमा, प्रशंसा और के शब्दों को कहना
प्रत्येक प्रार्थना के बाद भगवान का गुणगान करें। ये चरण इस प्रकार हैं:

• पहला कदम इस प्रकार है: अपने आप को उचित न ठहराएँ और न ही अपने आपको उचित ठहराएँ पाप रहित (53:32)

• दूसरा कदम इस प्रकार है: उन लोगों की तरह मत बनो जो परमेश्वर को भूल जाते हैं, और अतः वह उन्हें उनकी आत्मा भूला देता है (59:19)।

• तीसरे चरण की ओर संकेत किया गया है: जो भी अच्छाई तुम्हारे पास आती है वह परमेश्वर की ओर से है, परन्तु जो अच्छाई तुम्हारे पास आती है वह परमेश्वर की ओर से है।

जो भी मुसीबत तुम पर आती है वह तुम्हारी ही ओर से है (4:79) • चौथा
कदम इस प्रकार दिखाया गया है: सभी चीज़ें नाशवान हैं सिवाय उसके चेहरे और अल्लाह के।
उसकी प्रसन्नता (28:88).

इन चरणों का संक्षिप्त विवरण निम्नलिखित है:

पहला कदम: जैसा कि 'अपने आप को न्यायसंगत न ठहराएँ और अपने आप को पापरहित न मानें' से पता चलता है, लोगों को खुद को अचूक और पापरहित नहीं मानना चाहिए। स्वभाव और जन्मजात रूप से स्वभाव से लोग सबसे पहले खुद से प्यार करते हैं और सब कुछ त्यागने को तैयार रहते हैं
वे अपनी प्रशंसा इस तरह से करते हैं मानो ईश्वर, सच्चे ईश्वर
पूजा की वस्तु, और उसी तरह खुद को दोष से मुक्त रखें।
वे खुद को अपराध-बोध से मुक्त देखना चाहते हैं, और खुद का बचाव इस तरह से करते हैं मानो वे खुद की पूजा कर रहे हों। इसके अलावा, वे
अपने स्वयं के ईश्वर प्रदत्त क्षमताओं के साथ जिसकी उन्हें प्रशंसा करनी है और
ईश्वर की महिमा करो, जो पूजा का सच्चा उद्देश्य है। इस प्रकार जो अपना ईश्वर अपना ईश्वर मानता है

इच्छाएँ और कल्पनाएँ (25:43) उन पर लागू होती हैं। इस चरण पर उनका शुद्धिकरण खुद को शुद्ध करने और खुद को दोष से मुक्त मानने के लिए नहीं है।

दूसरा कदम: जैसा कि ईश्वर को भूलने वालों की तरह मत बनो, और इसलिए ईश्वर उन्हें खुद को भूलने पर मजबूर करता है , लोग खुद के बारे में बेखबर और अनभिज्ञ होते हैं। वे मृत्यु को दूसरों की मृत्यु मानते हैं, यह सोचकर कि यह उन्हें छू नहीं सकती। वे कठिनाई के समय और सेवा करते समय पीछे हट जाते हैं, लेकिन मानते हैं कि जब पुरस्कार प्राप्त करने और लाभों का आनंद लेने का समय आता है, तो उन्हें पहले पुरस्कृत किया जाना चाहिए। यहाँ, लोग अपनी ज़िम्मेदारियों का निर्वहन करके, खुद को मृत्यु के लिए तैयार करके और जो भी पुरस्कार उन्हें मिल सकता है उसे भूलकर खुद को प्रशिक्षित और शुद्ध करते हैं।

तीसरा कदम: जैसा कि आप पर जो भी अच्छाई आती है वह ईश्वर की ओर से है, लेकिन जो भी बुराई आप पर आती है वह आपकी ओर से है , शारीरिक आत्मा हमेशा खुद को अच्छा मानती है और खुद को अभिमानी महसूस करती है। लेकिन वास्तव में, लोगों को अपनी कमियों और अपर्याप्तता को समझना चाहिए और जो कुछ भी वे अच्छे काम करते हैं और जो भी पूर्णता उनके पास है उसके लिए ईश्वर को धन्यवाद और प्रशंसा करनी चाहिए। इसके अनुसार: समृद्ध वह है जो इसे शुद्ध करता है (91:19), वे यह जानकर शुद्ध होते हैं कि उनकी पूर्णता उनकी अपूर्णता को स्वीकार करने में निहित है, उनकी शक्ति उनकी असहायता को समझने में है, और उनकी संपत्ति उनकी आवश्यक गरीबी और अपर्याप्तता को स्वीकार करने में है।

चौथा कदम: जैसा कि ईश्वर के मुख और प्रसन्नता के अलावा सभी चीजें नाशवान हैं , अपने शारीरिक स्व से प्रभावित लोग खुद को स्वतंत्र, स्वाधीन और स्वयं-अस्तित्ववान मानते हैं। परिणामस्वरूप, वे किसी प्रकार के प्रभुत्व का दावा करते हैं और अपने निर्माता के विरुद्ध विद्रोह करते हैं, जो अकेले ही पूजा के योग्य हैं। वे खुद को तभी बचा सकते हैं जब वे निम्नलिखित सत्य को समझें: प्रत्येक वस्तु अपने आप में क्या दर्शाती है, और अपनी प्रकृति के कारण, प्रत्येक वस्तु अनिवार्य रूप से अस्तित्वहीन, आकस्मिक, क्षणभंगुर और नश्वर है। हालाँकि, अपने अलावा किसी अन्य चीज़ के संबंध में यह क्या दर्शाती है और यह एक पूरे का हिस्सा है, और यह राजसी निर्माता के नामों को प्रतिबिंबित करने वाला दर्पण है और विभिन्न कर्तव्यों का दायित्व सौंपा गया है, प्रत्येक वस्तु का अस्तित्व है, यह दूसरों के अस्तित्व का साक्षी है और उनके द्वारा इसका साक्षी है।

यहाँ लोग यह समझकर खुद को शुद्ध करते हैं कि उनका अस्तित्व उनके मूल अस्तित्वहीनता को स्वीकार करने में निहित है। उन्हें यह जानना चाहिए कि खुद को स्वयं-अस्तित्ववान मानने से ब्रह्मांड जितना बड़ा अस्तित्वहीनता का अंधकार पैदा होता है। यदि वे अपने व्यक्तिगत अस्तित्व पर भरोसा करते हैं और अस्तित्व के वास्तविक दाता की उपेक्षा करते हैं, तो उनके अस्तित्व का व्यक्तिगत प्रकाश जुगनू के समान होता है और अस्तित्वहीनता और अलगाव के अनंत अंधकार में डूब जाता है।

लेकिन अगर वे गर्व और अहंकार को त्याग दें और देखें कि वे एक दर्पण से अधिक कुछ नहीं हैं जिसमें अस्तित्व का वास्तविक दाता स्वयं प्रकट होता है, तो वे

अन्य सभी प्राणियों के साथ संबंध स्थापित करें और अनंत अस्तित्व प्राप्त करें।

जो लोग उस अनिवार्यतः विद्यमान सत्ता को पा लेते हैं, जिसके नामों की अभिव्यक्ति से सभी चीजें अस्तित्व में आती हैं, वे सब कुछ पा लेते हैं।

निष्कर्ष

अपनी असहायता और गरीबी को पहचानने, तथा स्नेह और चिंतन के मार्ग के इन चार चरणों को ' शब्दों' में समझाया गया है, जो सत्य, शरिया की सच्चाई और कुरान की बुद्धिमत्ता को जानने पर केंद्रित है।

यह मार्ग छोटा है क्योंकि इसमें केवल चार चरण हैं। अपनी असहायता या नपुंसकता को पहचानना लोगों को ईश्वर पर भरोसा करने के लिए प्रेरित करता है, क्योंकि वे अब अपने शारीरिक स्व से प्रभावित नहीं होते। प्रेम, सबसे तीक्ष्ण मार्ग, सच्चे प्रियतम तक तभी पहुँचा सकता है जब लोग अपने वर्तमान प्रियतम के मिथ्यात्व को समझकर खुद को शारीरिक स्व से मुक्त कर लें और उस प्रियतम को क्षणभंगुर के रूप में देखें। यह मार्ग सुरक्षित है, क्योंकि यह अपने अनुयायियों को घमंडी शब्द बोलने और सर्वोच्च आध्यात्मिक पद होने के ऐसे झूठे दावे करने के लिए प्रेरित नहीं करता। क्योंकि यह उन्हें अपनी जन्मजात नपुंसकता, गरीबी और अनिवार्य अपूर्णता को पहचानने के लिए बाध्य करता है।

साथ ही, यह मार्ग एक मुख्य राजमार्ग है, जो बहुत व्यापक और सार्वभौमिक है, क्योंकि इसके अनुयायियों को ब्रह्मांड के वास्तविक अस्तित्व को नकारना या अनदेखा करना नहीं पड़ता है, जैसा कि उन लोगों द्वारा मांग की जाती है जो ईश्वर की उपस्थिति के बारे में निरंतर जागरूकता प्राप्त करने के लिए अस्तित्व की एकता (वहदत अल-वुजूद) या साक्षी की एकता (वहदत अल-शुहुद) का दावा करते हैं। इसके बजाय, यह ब्रह्मांड के अस्तित्व को स्वीकार करता है, जैसा कि कुरान में घोषित किया गया है, इसे सीधे राजसी निर्माता को सौंपकर।

यह मानते हुए कि सृष्टि में हर चीज़ अपने रचयिता की ओर इशारा करती है, जो लोग इस मार्ग पर चलते हैं, वे खुद को स्वयं-अस्तित्व में मानने और अपनी ओर से काम करने की गलती से बचते हैं। उन्हें महान रचयिता की ओर से इस्तेमाल करके, और उनके सुंदर नामों को प्रकट करके और उन्हें प्रतिबिंबित करने के लिए दर्पण के रूप में काम करके, यह मार्ग लोगों को असावधानी से बचाता है, उन्हें हमेशा सर्वशक्तिमान ईश्वर की उपस्थिति के बारे में जागरूक रहने में सक्षम बनाता है, और हर चीज़ के माध्यम से उनके लिए एक रास्ता खोलता है।

संक्षेप में, इस पद्धति के अनुसार, प्राणी सर्वप्रथम अपने सृष्टिकर्ता को दर्शाने वाले संकेतों के रूप में कार्य करते हैं।

तीसवाँ पत्र

[(कुरान के) चमत्कारों की निशानियाँ) शीर्षक के तहत एक अलग पुस्तक के रूप में प्रकाशित ।]

इकतीसवाँ अक्षर

[इस पत्र में 31 ग्लेम्स शामिल हैं, जिन्हें द के रूप में प्रकाशित किया गया था चमकती है.]

बत्तीसवाँ अक्षर

[इस पत्र में द ट्रीटीज ऑफ द ग्लेम्स को जोड़ा गया है शब्द।]

तैंतीसवाँ अक्षर

[यह पत्र शब्दों में तैंतीसवें शब्द के रूप में जोड़ा गया था।]

एपिग्राम

सत्य के बीज

ईश्वर के नाम पर, जो दयालु है, कृपालु है।

सारी स्तुति परमेश्वर को हो, और सारा आशीर्वाद और शांति हमारे स्वामी पर हो मुहम्मद, उनका परिवार और साथी।

• एक बीमार युग, एक बीमार राष्ट्र और एक विकलांग व्यक्ति के लिए नुस्खा प्रत्येक सदस्य को कुरान का पालन करना है।

• एक गौरवशाली लेकिन दुर्भाग्यपूर्ण महाद्वीप के लिए नुस्खा,399 एक बार इस्लाम के मार्गदर्शन में एकता ही इतनी शानदार लेकिन अब दीन और दयनीय स्थिति है, जो कभी इतनी अमूल्य थी लेकिन अब असुरक्षित लोग हैं, वह है इस्लाम के मार्गदर्शन में एकता। • जो पृथ्वी, ग्रहों और तारों को उतनी आसानी से नहीं घुमा सकता जितना कि एक तारे को घुमाना।

माला के दाने सृष्टि में कोई हिस्सा नहीं ले सकते, क्योंकि सब कुछ आपस में जुड़ा हुआ है।

• न्याय के दिन सभी मृतकों का पुनरुत्थान परमेश्वर के लिए उतना ही आसान है वसंत में मक्खी को उसकी सर्दियों की नींद से जगाने की शक्ति। ईश्वर के लिए शक्ति ईश्वरीय सत्ता के लिए आवश्यक है, इसे बदला नहीं जा सकता, नष्ट नहीं किया जा सकता, कम नहीं किया जा सकता, या बाधित नहीं किया जा सकता। निरपेक्ष होने के कारण, इसमें कोई डिग्री नहीं है, और इसके संबंध में हर चीज़ समान है। • जिसने मच्छर की आँख बनाई है, उसने ही सूर्य को भी बनाया है।

• जिसने पिस्सू के पेट की व्यवस्था की, वही है जिसने पिस्सू के पेट की व्यवस्था की सौर परिवार।

[399] सईद नूरसी का अर्थ है एशिया, ओटोमन राज्य और तुर्की, और विशेष रूप से तुर्की लोग। (ट्र.)

- ब्रह्मांड की चमत्कारी व्यवस्था और सामंजस्य को देखना, जो सब कुछ "प्राकृतिक" है
  कारण (मान लीजिए कि उनके पास स्वतंत्र एजेंसी है) झुकते हैं और कहते हैं: "महिमा
  हम तेरे अधीन हैं। हमारे पास कोई शक्ति नहीं है। तू ही प्रभुत्वशाली, अत्यन्त तत्वदर्शी है।
- जैसा कि ईश्वर की एकता और महिमा के अनुरूप है, कारणों का कोई वास्तविक और रचनात्मक उद्देश्य नहीं होता
  सृष्टि और ब्रह्मांड के कामकाज में कारण प्रभाव डालते हैं। लेकिन अस्तित्व के बाहरी (भौतिक) आयाम में,
  कारण दिव्य शक्ति के प्रभाव को छिपाने का काम करते हैं।
  संचालन ताकि कुछ अप्रिय या तुच्छ संस्थाएं और
  घटनाओं को सीधे तौर पर इसके लिए जिम्मेदार नहीं ठहराया जा सकता।
- हर चीज़ का आंतरिक आयाम, जहाँ दैवीय शक्ति कार्य करती है
  प्रत्यक्षतः, पूर्णतः शुद्ध एवं पारदर्शी है।
- यह दृश्यमान, भौतिक जगत अदृश्य जगतों के सामने एक फीतादार पर्दा है।
- सही जगह पर एक बिंदु बनाने के लिए एक असीम शक्ति की आवश्यकता होती है जो
  संपूर्ण ब्रह्मांड का निर्माण करें। इस महान पुस्तक का प्रत्येक अक्षर
  ब्रह्माण्ड, विशेष रूप से प्रत्येक "जीवित" अक्षर, का मुख इस ओर मुड़ा हुआ है
  उसकी हर एक वाक्य पर एक नज़र।
- एक रमज़ान के अंत में, लोग ईद (धार्मिक त्यौहार) का संकेत देने वाले नए अर्धचंद्र को देखने की कोशिश कर
  रहे थे । लेकिन केवल एक बूढ़ा आदमी
  उसने दावा किया कि उसने इसे देखा है। हालाँकि, उसे नहीं पता था कि उसने जो देखा वह सच था
  अपनी ही एक सफ़ेद पलक की वक्रता। एक पलक अर्धचंद्र के बराबर कैसे हो सकती है? सूक्ष्म कणों की
  गति को उस एक के स्थान पर कैसे लिया जा सकता है जो पूरी प्रजाति का निर्माण करता है?

- प्रकृति अदृश्य नियमों से बनी एक प्रिंट या मॉडल है, लेकिन प्रिंटर नहीं
  और रचनाकार। यह एक डिज़ाइन है, डिज़ाइनर नहीं; एक प्राप्तकर्ता, एजेंट नहीं;
  यह एक आदेश है, न कि वह जो व्यवस्था स्थापित करता है। यह एक कानून है, न कि कोई शक्ति। यह एक
  ईश्वरीय इच्छा द्वारा स्थापित कानूनों का संग्रह - वे कानून [जो हमारे मन
  समझ सकते हैं लेकिन] जिनमें स्वयं कोई शक्ति या भौतिक वास्तविकता नहीं है।
- आकर्षण और आकर्षित होने की भावना किसी के अंदर (जन्मजात) महसूस होना
  मानव विवेक सत्य की आकर्षक शक्ति के कारण है।
- किसी चीज़ की जन्मजात प्रेरणा या उसका ईश्वर प्रदत्त स्वभाव झूठ नहीं बोलता: उदाहरण के लिए, एक बीज
  की बढ़ने की इच्छा कहती है: "मैं फलां पौधा बनूँगा और
  फल पैदा करो," और फिर ऐसा करता है। जीवन के प्रति एक अंडे की इच्छा कहती है: "मैं एक बनूँगा
  चूजा," और फिर चूजा बन जाता है। पानी के जमने की इच्छा कहती है: "मैं ले लूँगा
  और अधिक जगह घेरता है," और फिर ऐसा करता है। कठोर और ठोस लोहा एक दूसरे का विरोध नहीं कर सकता
  बल्कि, जब यह जम जाता है, तो पानी इसे चीर देता है। ऐसी प्रेरणाएँ और आवेग, ईश्वर से निकलने वाले
  सृष्टि के दिव्य आदेशों की अभिव्यक्तियाँ हैं
  इच्छा।

• शाश्वत शक्ति, जो चींटियों को नेता के बिना और मधुमक्खियों को रानी के बिना नहीं छोड़ती, निश्चित रूप से मानवता को पैगंबर के नेतृत्व से वंचित नहीं करती। चंद्रमा को विभाजित करना दृश्यमान, भौतिक दुनिया में दिखाए गए उनके चमत्कारों में से एक था। उनका स्वर्गारोहण (ईश्वर की उपस्थिति में) उनका सबसे बड़ा चमत्कार था जो आंतरिक आयामों की दुनिया में स्वर्गदूतों और आत्मिक प्राणियों को दिखाया गया था, जिसने उनके पैगंबर होने की संतता को साबित और दिखाया। उस चमत्कार के माध्यम से, उस सबसे शानदार व्यक्ति ने आंतरिक आयामों की दुनिया में बिजली की चमक या चमकीले चाँद की तरह अपनी चमक को फैलाया और फैलाया।

• विश्वास की पुष्टि के दो भाग - मैं गवाही देता हूं कि ईश्वर के अलावा कोई पूज्य नहीं है, और मैं गवाही देता हूं कि मुहम्मद उनके सेवक और रसूल हैं - एक दूसरे की सच्चाई की पुष्टि करते हैं। पहला दूसरे के लिए पूर्वानुमेय तर्क है, और दूसरा पहले के लिए पश्चानुमेय तर्क है। • चूंकि जीवन अनेकता के क्षेत्र में एकता की अभिव्यक्ति है, यह एकता की ओर ले जाता है, जो एक चीज को सब कुछ का मालिक बनाने में सक्षम बनाता है। • आत्मा चेतना और वास्तविक, समझदार अस्तित्व वाला एक कानून है। सृष्टि के स्थायी नियमों की तरह, यह भी ईश्वरीय आदेशों और इच्छा के गुण की दुनिया से जारी होता है। ईश्वरीय शक्ति इसे संवेदी अंगों के शरीर के भीतर एक ऊर्जावान आवरण में लपेटती है। यह आत्मा, जो प्रत्येक मनुष्य में मौजूद है, प्रकृति के नियमों का प्रतिरूप है, जिसका केवल सैद्धांतिक अस्तित्व है अगर मानवीय आत्मा से चेतना छीन ली जाए, तो यह एक अमूर्त कानून बन जाएगा। • अस्तित्व प्रकाश के माध्यम से दिखाई देते हैं, और उनका अस्तित्व जीवन के माध्यम से जाना जाता है। प्रकाश और जीवन दोनों ही खोजकर्ता और प्रकटकर्ता हैं। • ईसाई धर्म या तो गायब हो जाएगा या [अपने बुतपरस्त तत्वों से] शुद्ध हो जाएगा और इस्लाम के खिलाफ अपने संघर्ष को छोड़ देगा। यह कई बार विभाजित हुआ और प्रोटेस्टेंटवाद का निर्माण हुआ, जो बदले में [विभिन्न संप्रदायों और समूहों में] विभाजित हो गया और [कुछ] एकेश्वरवाद के करीब पहुंच गया। ईसाई धर्म और भी विभाजित हो जाएगा, जिसके बाद यह गायब हो जाएगा या इस्लाम की सच्चाई को खोजकर, जिसमें ईसा के मूल धर्म के मूल तत्व शामिल हैं, इस्लाम के अधीन हो जाएगा। इस सत्य को एक पैगंबरी परंपरा में दर्शाया गया है: "पैगंबर ईसा इस दुनिया में वापस आएंगे, मेरे समुदाय में शामिल होंगे और मेरे शरिया का पालन करेंगे।"[400]

• आम लोगों (जनता) का बहुमत प्रमाणों की ताकत की बजाय अधिकार की पवित्रता से आकर्षित होता है।

[400] बुखारी, मज़ालिम, 31; मुस्लिम, ईमान, 242; इब्न माजा, फितन, 33.

• शरिया का नब्बे प्रतिशत हिस्सा अनिवार्य और निर्विवाद है
इस्लाम के नियमों के अनुसार, इसे हीरे के खंभों से तुलना की जा सकती है।
10 प्रतिशत, जो व्याख्या के लिए खुला है और इसके द्वारा निर्धारित किया जाना है
इस्लाम के कानूनी अधिकारियों की तुलना सोने के टुकड़ों से की जा सकती है। नब्बे हीरे
खंभों की रक्षा 10 सोने के सिक्कों से नहीं की जा सकती। बल्कि, न्यायशास्त्रियों के
किताबें, तर्क और निर्णय हमें कुरान को बेहतर ढंग से देखने में मदद करनी चाहिए। उन्हें देखने के लिए दूरबीन
और इसके प्रतिबिंब के लिए दर्पण के रूप में काम करना चाहिए
अर्थ को छिपाएं नहीं, उसे ढकें या प्रतिस्थापित करें।

• इज्तिहाद करने के लिए योग्य व्यक्ति अपने लिए नया कानून घोषित कर सकते हैं, लेकिन दूसरों या मुस्लिम समुदाय के लिए नहीं।[401]

• धर्म से संबंधित किसी विचार को दूसरों तक विस्तारित करने से पहले, उसे
अधिकांश विद्वानों द्वारा स्वीकार किया गया है। यदि ऐसा नहीं है, तो इसे माना जाएगा और फिर
इसे इस्लाम के न्यायशास्त्रीय सिद्धांतों के विपरीत एक नवाचार के रूप में खारिज कर दिया गया।

• मनुष्य, जो स्वाभाविक रूप से महान स्वभाव के साथ बनाया गया है,
सत्य की खोज करते समय, वे कभी-कभी असत्य को खोजकर अपना लेते हैं। सत्य की खोज करते समय, वे
कभी-कभी अनजाने में गलत दिशा में फंस जाते हैं और उसे ही सत्य समझकर भूल कर सत्य मान लेते हैं।

• अनेक दर्पण, जिनमें से प्रत्येक एक दूसरे से अधिक सूक्ष्म है, दिव्यता को प्रतिबिंबित करते हैं
शक्ति। वे जल से वायु तक, वायु से आकाश तक, और फिर आकाश तक फैली हुई हैं।
आदर्श रूपों की दुनिया, और आत्माओं की दुनिया से भी ऊंची और यहां तक कि
समय और विचार। हवा के दर्पण में एक शब्द लाखों गुना बढ़ जाता है।
दिव्य शक्ति की कलम इसे अद्भुत तरीके से पूरा करती है।
उन दर्पणों में या तो उनकी स्पष्ट पहचान या दोनों के साथ प्रतिबिंबित होते हैं
पहचान और चरित्र (प्रकृति)। एक ठोस इकाई का प्रत्येक प्रतिबिंब एक है
गतिशील निर्जीव रूप; एक चमकदार आध्यात्मिक इकाई का प्रत्येक प्रतिबिंब मूल से जुड़ा एक जीवित रूप है।
भले ही प्रतिबिंब (एक चमकदार आध्यात्मिक इकाई का)
इकाई) मूल के समान नहीं है, यह कुछ अलग नहीं है।

• चूँकि सूर्य अपनी धुरी पर घूमने के कारण हिलता है, इसलिए उसके फल
(ग्रह) गिरते नहीं, अगर यह हिलना बंद हो जाए तो इसके फल बिखर जाएंगे।

• एक विचार अंधकारमय है और अंधकार फैलाता है जब तक कि उसे हृदय से प्रकाशित न किया जाए।
प्रकाश। आँख का कॉर्निया [सफ़ेद भाग], जिसकी तुलना दिन से की जा सकती है, आँख की परितारिका और
पुतली [अंधेरा] के साथ संयुक्त होने तक दृष्टि उत्पन्न नहीं कर सकता है
भाग], जिसकी तुलना रात से की जा सकती है। उसी तरह, एक विचार का
"कॉर्निया" तब तक सच्चाई को नहीं दिखा सकता जब तक कि इसे इसके साथ न जोड़ दिया जाए
हृदय की “आइरिस और पुतली।”

---

[401] इज्तिहाद: स्थापित सिद्धांतों से कानूनी निर्णय प्राप्त करने की प्रक्रिया
कुरान और सुन्नाह को नई परिस्थितियों के अनुरूप ढालना। (सं.)

• बिना विश्वास के ज्ञान अज्ञानता से थोड़ा बेहतर है।
या किसी चीज़ को अपनाना दृढ़ विश्वास से बिल्कुल अलग है।

• किसी बुरी बात का काल्पनिक, विस्तृत विवरण अपरिपक्वता पैदा कर सकता है
मन भटकना।

• मार्गदर्शन देने वाले विद्वान को मादा पक्षी की तरह नहीं, बल्कि भेड़ की तरह होना चाहिए।
एक भेड़ अपने मेमनों को अपना दूध पिलाती है, जो पूरी तरह से पचा हुआ और संसाधित होता है
जबकि मादा पक्षी अपने चूज़ों को आधा चबाया हुआ और उगला हुआ भोजन खिलाती है।

• किसी वस्तु का अस्तित्व उसके सभी भागों के अस्तित्व पर निर्भर करता है।
किसी चीज़ का अस्तित्व न होना, उसमें से किसी एक चीज़ के अस्तित्व न होने से संभव है
इसके भागों में, कमजोर चरित्र के लोग विनाशकारी होते हैं और अपनी शक्ति "साबित" करते समय
नकारात्मक तरीके से कार्य करते हैं।

• ज्ञान के सिद्धांत और सत्य के नियमों का आम लोगों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता
लोगों को तब तक कोई लाभ नहीं होगा जब तक कि पूर्व को राज्य के कानूनों और
बाद में शक्ति के साथ.

• (आज की दुनिया में) अन्याय न्याय की टोपी पहनता है, देशद्रोह न्याय की टोपी पहनता है
देशभक्ति के जोश की आड़ में जिहाद को आक्रामकता और मानवीय मूल्यों का उल्लंघन कहा जाता है
अधिकारों को स्वतंत्रता के रूप में प्रस्तुत किया जाता है, तथा दासता को स्वतंत्रता के रूप में प्रस्तुत किया जाता है।[402] संक्षेप में, विपरीत
फॉर्म का आदान-प्रदान किया है।

• व्यक्तिगत स्वार्थ पर आधारित राजनीति पाशविक है।

• भूखे जंगली जानवर के प्रति प्यार दिखाने से उसकी भूख और बढ़ जाती है।
आपको खाने के बाद, यह खाने के लिए अतिरिक्त भुगतान की मांग करता है
आप।

• समय दर्शाता है कि स्वर्ग सस्ता नहीं है और नरक व्यर्थ नहीं है।

• “कुलीन” माने जाने वाले लोगों की योग्यताएँ उन्हें अहंकार की ओर ले जाती हैं
और उत्पीड़न, जबकि उन गुणों को उन्हें विनम्रता के लिए प्रेरित करना चाहिए
करुणा और परोपकार की भावना जगाने के बजाय, गरीब लोगों की दरिद्रता उनकी और गहरी कैद और
अधीनता का कारण बनती है।

• सम्मान और अलंकरण अभिजात वर्ग को उपहार के रूप में दिए जाते हैं, जबकि सामान्य लोगों को
लोगों को अभाव, दोष और बुरे परिणाम भुगतने पड़ते हैं।

• (जीवन में) किसी आदर्श का अभाव या विस्मरण लोगों को स्वयं पर और अपने स्वयं के हित पर ध्यान केंद्रित
करने के लिए प्रेरित करता है।

---

[402] जिहाद: ईश्वर के मार्ग में और मानवता की भलाई के लिए संघर्ष। (संपादक)

• सभी क्रांतियाँ, सामाजिक भ्रष्टाचार और नैतिक असफलताएँ इस कारण से होती हैं: "मैं नहीं करता मुझे परवाह नहीं कि दूसरे भूख से मर जाएं, जब तक मेरा अपना पेट भरा है," और: "आपको काम करके मेरी सुविधा की लागत वहन करनी होगी ताकि मैं खा सकूं।" पहला रवैया ज़कात के ज़रिए ठीक होता है; दूसरा ब्याज पर रोक लगाकर और ब्याज। कुरान का न्याय मानवता के द्वार पर खड़ा है और मुड़ता है सूद और ब्याज को दूर भगाते हुए घोषणा करते हैं: “आपको प्रवेश करने का कोई अधिकार नहीं है!” फिर भी मानवता ने इस निषेध की अनदेखी की और उसे बड़ा झटका लगा।403 इससे भी बड़ी चुनौती से बचने के लिए हमें अब इस पर ध्यान देना चाहिए। • राष्ट्रों और राज्यों के बीच युद्धों की जगह वर्ग युद्ध ने ले ली है, क्योंकि लोग न तो वेतनभोगी बनना चाहते हैं और न ही गुलाम।

• जो लोग [इस्लाम में] वैध उद्देश्य के लिए अवैध मार्ग अपनाते हैं, वे प्रायः उन्हें जो चाहिए था उसके ठीक विपरीत प्राप्त करके दंडित किया जाता है। यूरोप की तरह गैर-इस्लामी प्रेम का पुरस्कार प्रेमी की निर्दयता है दुश्मनी.

• अतीत और दुर्भाग्य को भाग्य के प्रकाश में देखा जाना चाहिए। भविष्य और किए गए पापों को मानव की स्वतंत्र इच्छा के अधीन किया जाना चाहिए और जिम्मेदारी। यह भाग्यवाद की चरम सीमाओं और हमारे कार्यों में भाग्य की भूमिका को नकारने के बीच सामंजस्य स्थापित करता है। • आपको जो कुछ भी कर सकते हैं उसमें नपुंसकता दिखाने में सांत्वना नहीं तलाशनी चाहिए या उसका समाधान ढूंढ़ना चाहिए, न ही उस बात पर विलाप करना चाहिए जो आप नहीं कर सकते और इसका समाधान ढूंढ़ें।

• किसी के जीवन से जुड़े घाव ठीक हो सकते हैं, लेकिन किसी के खिलाफ लगाए गए घाव इस्लाम की गरिमा और राष्ट्र का सम्मान इतना गहरा है कि उसे ठीक करना कठिन है।

• कभी-कभी एक ही कथन सेना को पराजय की ओर ले जाता है, जैसे एक गोली 30 मिलियन लोगों की मृत्यु हो सकती है।404 सही परिस्थितियों में और परिस्थितियों के कारण, एक [प्रतीत होता है] महत्वहीन कार्य उसके कर्ता को परेशान कर सकता है सर्वोच्च पद पर पदोन्नत किया जा सकता है या निम्नतम पद पर घटाया जा सकता है। • एक सत्य झूठ के ढेर को गिरा सकता है। एक वास्तविकता कल्पनाओं के ढेर से बेहतर है।

• तुम्हें हमेशा सच बोलना चाहिए, लेकिन हर सच बोलना सही नहीं है। • जो लोग हर चीज के अच्छे पक्ष पर ध्यान देते हैं, वे अच्छे का चिंतन करते हैं। जो लोग अच्छाई का चिंतन करते हैं वे जीवन का आनंद लेते हैं।

---

403 सईद नूरसी प्रथम विश्व युद्ध की बात कर रहे हैं।

404 यह गैवरिलो प्रिंसिप नामक सर्बियाई निजी व्यक्ति का मामला है, जिसने ऑस्ट्रो-हंगेरियन जनरल की हत्या की थी। 28 जून 1914 को आर्चड्यूक फ्रांसिस फर्डिनेंड और उनकी पत्नी की हत्या कर दी गई। प्रथम विश्व युद्ध, जिसके परिणामस्वरूप 30 मिलियन लोगों की मृत्यु हुई। (संपादक)

• लोग महत्वाकांक्षा और आशा से उत्साहित होते हैं, और आशा की कमी से हतोत्साहित होते हैं।
अनुपस्थिति।

• सदियों के आत्म-बलिदान और खिलाफत के झंडे और बोझ को उठाने, इस्लाम और मुसलमानों की स्वतंत्रता की रक्षा और सुरक्षा करने तथा ईश्वर के नाम की महिमा करने से संबंधित पवित्र संघर्ष के सामूहिक कर्तव्य के बाद महान ओटोमन राज्य का पतन हो गया। इसके पतन की भरपाई भविष्य में किसी समय मुस्लिम दुनिया की खुशी और स्वतंत्रता से होगी, क्योंकि इसका पतन एक ऐसी आपदा है जो हमें भाईचारे और बहनचारे को विकसित करने के लिए प्रेरित करती है, जो मुसलमानों के रूप में हमारे जीवन का सार है। • यह दर्शाता है कि समय का पहिया कैसे विपरीत दिशा में घूमता है: सभ्यता की सुंदरता का श्रेय ईसाई धर्म को दिया जाता है (जिसका उनमें कोई हिस्सा नहीं है), और इस्लाम पर पिछड़ेपन को बढ़ावा देने का आरोप लगाया जाता है (जिससे वह लड़ता है)।

• एक बढ़िया लेकिन धूमिल हीरा हमेशा कांच के टुकड़े से बेहतर होता है, नहीं तो और क्या होगा?
चाहे वह कितना भी पॉलिश किया गया हो।

• जो लोग हर चीज़ का अस्तित्व पदार्थ पर थोपते हैं, वे अपनी बौद्धिक क्षमता को सिर्फ़ वही देखते हैं जो वे देख सकते हैं। हालाँकि, आँखें आध्यात्मिक चीज़ों को नहीं देख सकतीं।

• जब अज्ञानी लोग किसी रूपक को अपनाते हैं, तो वे उसे शाब्दिक रूप से लेते हैं और इस प्रकार खुल कर बोलते हैं।
अंधविश्वास का द्वार.

• किसी भी व्यक्ति को ईश्वर द्वारा दिए गए गुणों से अधिक गुणों वाला बताना उसके लिए कोई उपकार नहीं है। बल्कि, हर चीज़ को उसके वास्तविक रूप में वर्णित करना ज़्यादा बेहतर है।

• प्रसिद्धि प्रसिद्ध लोगों को वह सब कुछ दिलाती है जो वास्तव में उनका नहीं होता। • पैगंबर के कथन
इस्लामी जीवन और संस्कृति के लिए अधिकार और स्रोत हैं।
सत्य की प्रेरणा। • इस्लाम के पुनरुत्थान
का अर्थ है राष्ट्र का पुनरुत्थान। इस्लाम जीवन का प्रकाश है। • कुरान मानवता के लिए दया है, और इसलिए एक ऐसी सभ्यता का आग्रह करता है जो अधिकतम लोगों के लिए सबसे बड़ी खुशी सुनिश्चित करती है।

पश्चिमी सभ्यता, अपने वर्तमान चरण में, पाँच नकारात्मक सिद्धांतों पर आधारित है: यह शक्ति पर आधारित है, और शक्ति उत्पीड़न का कारण बनती है या उसे जन्म देती है; यह व्यक्तिगत स्वार्थ को साकार करना चाहती है, और स्वार्थ की खोज लोगों को चीज़ों को पाने के लिए पागलों की तरह दौड़ने के लिए प्रेरित करती है; यह जीवन को संघर्ष के रूप में देखती है, जो आंतरिक और बाह्य संघर्ष का कारण बनती है; यह राष्ट्रीय और/या नस्लीय अलगाववाद के माध्यम से एकीकृत होती है, जो दूसरों के संसाधनों और क्षेत्रों को निगल कर "पोषण" करती है, और यह अलगाववाद

भयानक संघर्ष; और यह पशुवत इच्छाओं को जगाने और बढ़ाने का प्रयास करता है और वासनाओं को संतुष्ट करते हैं और शारीरिक भूख को संतुष्ट करते हैं, जो लोगों को क्रूर बनाता है। इस्लामी सभ्यता अधिकार (शक्ति पर नहीं) पर टिकी है, जिसके लिए न्याय की आवश्यकता होती है और संतुलन; सद्गुण को प्रोत्साहित करता है, जो पारस्परिक स्नेह और प्रेम को बढ़ाता है; जीवन को पारस्परिक सहायता मानता है, जो एकता और एकजुटता की ओर ले जाता है; एक समान राज्य में एक समान धर्म के माध्यम से लोगों को एकजुट करता है, जो आंतरिक शांति, भाईचारा और स्वेच्छा से आत्मरक्षा के लिए बाहरी शत्रुओं के विरुद्ध लड़ता है; और लोगों को सत्य की ओर मार्गदर्शित करता है। इसलिए यह वैज्ञानिक प्रगति को प्रोत्साहित करता है और नैतिक पूर्णता के माध्यम से लोगों को मानवता के उच्च पदों पर पहुंचाता है। इस्लाम से कभी नाता न तोड़ें, क्योंकि यह हमारे अस्तित्व की गारंटी है। दिल और आत्मा से उससे जुड़े रहें, नहीं तो हम पूरी तरह से नष्ट हो जाएंगे।

- एक सामान्य दुर्भाग्य ज्यादातर लोगों की सामान्य असफलता का परिणाम है। हर दुर्भाग्य असफलता का परिणाम है, लेकिन यह एक द्वार भी है पुरस्कार पाने का एक रास्ता खुल गया है।
- शहीदों को पता होता है कि वे जीवित हैं। चूँकि वे मरने को मृत्यु के रूप में अनुभव नहीं करते, वे देखते हैं कि परमेश्वर के लिए बलिदान किया गया उनका जीवन स्थायी, निरन्तर और अधिक परिष्कृत है।
- कुरान का पूर्ण न्याय किसी निर्दोष व्यक्ति की हत्या करने से मना करता है, भले ही बाकी मानवता को इससे लाभ होगा। ईश्वरीय शक्ति की दृष्टि में और न्याय, एक व्यक्ति का जीवन मानवता के जीवन के बराबर है। फिर भी कुछ लोग इतने स्वार्थी हैं कि वे सब कुछ और मानवता को ही नष्ट कर देंगे अपनी महत्वाकांक्षाओं को साकार करने के लिए।
- डरपोकपन और कमज़ोरी बाहरी दबाव और हस्तक्षेप को बढ़ावा देते हैं।
- संभावित हानि के भय से किसी निश्चित लाभ को त्यागना नहीं चाहिए।
- राजनीति अब स्पैनिश फ्लू जैसी बीमारी बन गई है।
- पागलों को कभी-कभी बार-बार यह बताकर ठीक किया जा सकता है कि वे पागल हैं। समझदार। कुछ अच्छे लोग बार-बार यह सुनकर बुरे बन जाते हैं कि वे बुरे हैं.
- लगातार दुश्मन का दुश्मन दोस्त होता है; लगातार दुश्मन का दोस्त होता है वह तब तक शत्रु नहीं हो सकता जब तक वह मित्र बना रहता है।
- हठधर्मिता के कारण व्यक्ति सहायता और समर्थन करने वाले लोगों को शैतानी मानने लगता है स्वर्गदूतों के समान ही कारण और इसलिए उन पर भगवान की दया कहते हैं। समान रूप से, यह इससे कोई व्यक्ति उस कारण का विरोध करने वाले देवदूत जैसे लोगों को शैतानी मानने लग सकता है और इसलिए उन पर ईश्वर का श्राप लगाओ।
- जो एक बीमारी को ठीक करता है, वह दूसरी बीमारी को नुकसान पहुंचा सकता है। किसी भी दवा की अत्यधिक खुराक दवाइयां नई बीमारियाँ पैदा कर सकती हैं।

• एकजुट समुदाय उन लोगों को गति प्रदान करता है जिनके पास इसकी कमी है, जबकि एक ... ईर्ष्यालु समुदाय आगे बढ़ने वालों को रोकता है।

• सार, गहराई और ईमानदारी के बिना एक सतही एकता एकता को तोड़ देती है समुदाय को कमजोर बनाता है, जैसे कि एक अंश को एक अंश से गुणा करने पर परिणामी राशि छोटी हो जाती है। 405 (इस प्रकार एक ठोस और ईमानदार एकता से रहित समुदाय अपनी संख्या के रूप में कमजोर हो जाएगा

(केवल जनसंख्या वृद्धि के माध्यम से वृद्धि)

• किसी चीज़ के अस्तित्व की पुष्टि न करना अक्सर उसकी पुष्टि करने के साथ भ्रमित होता है यह मौजूद नहीं है। किसी चीज़ के अस्तित्व का सबूत न होना उसे उचित ठहरा सकता है यदि लोग इसे स्वीकार करने के लिए इच्छुक नहीं हैं तो इसका अस्तित्व स्वीकार न करना अस्तित्व। लेकिन किसी चीज़ के अस्तित्वहीन होने की पुष्टि करने के लिए उसके अस्तित्वहीन होने को साबित करने वाले स्पष्ट सबूत की आवश्यकता होती है, क्योंकि उसके अस्तित्व की पुष्टि न करना संदेह है, जबकि इसके अस्तित्व न होने की पुष्टि करना इनकार है।

• यदि किसी एक विश्वास के बारे में संदेह उसके 100 प्रमाणों को अमान्य कर देता है, तो भी सत्य अक्षुण्ण रहता है क्योंकि हजारों अन्य प्रमाण इसे सिद्ध करते हैं।

• बहुसंख्यक विश्वासियों की सहमति का पालन करें। उमय्यद ऐसा किया और अंततः अहल अल-सुन्ना वा अल-जमाआ में शामिल हो गए, हालाँकि पहले उन्होंने इस्लाम के सिद्धांतों की उपेक्षा की। लेकिन शिया, इस्लाम के सख्त अनुयायी इस्लाम के आरंभिक सिद्धांत अंततः आंशिक रूप से राफ़िज़वादी बन गए क्योंकि वे एक छोटे से अल्पसंख्यक बने रहना पसंद करते थे।

• जब बेहतर या सच्चा क्या है, इस पर विचार करने से मतभेद पैदा हो, तो अच्छे और सच्चे क्या हैं, इस पर आम सहमति की तलाश करें। असहमति की तुलना में ऐसी आम सहमति हमेशा बेहतर होती है। जो अच्छा और सच्चा है, वह कभी-कभी बेहतर और सच्चा साबित होता है अमूर्त रूप में जो बेहतर और सच्चा प्रतीत होता है, उससे अधिक बेहतर और सच्चा प्रतीत होता है। तो कहो: "मेरा तरीका अच्छा और सच्चा है," लेकिन कभी नहीं: "मेरा रास्ता ही एकमात्र रास्ता है, सबसे सच्चा और सबसे अच्छा।"

• स्वर्ग के बिना नरक की यातना को न तो समझा जा सकता है और न ही जाना जा सकता है। ऐसा।

• जैसे-जैसे समय पुराना होता जाता है, कुरान जवान होता जाता है, और इसके रहस्य और संकेत स्पष्ट और बेहतर समझ में आ जाएगा। जैसे प्रकाश को आग समझ लिया जाता है, जोरदार वाक्पटुता को कभी-कभी अतिशयोक्ति समझ लिया जाता है।

• गर्मी की डिग्री को केवल इसलिए मापा जा सकता है क्योंकि ठंड की भी डिग्री होती है। सुंदरता की डिग्री कुरूपता की डिग्री से जानी जाती है। ईश्वर की शाश्वत शक्ति ईश्वरीय सत्ता का एक आवश्यक गुण है और उसके लिए अपरिहार्य है

---

[405] दो पूर्ण संख्याओं को गुणा करने पर बड़ी संख्या प्राप्त होती है, जबकि दो भिन्नों को गुणा करने पर छोटी भिन्न प्राप्त होती है।

सार: इस शक्ति की कोई डिग्री नहीं है, क्योंकि नपुंसकता इसे कम नहीं कर सकती।
और इसलिए उसके समक्ष सब कुछ समान है।

- विचार करें: समुद्र में सूर्य का प्रतिबिंब और उसकी सबसे छोटी लहर या
बुलबुले की पहचान एक ही है।
- जीवन, ईश्वर की एकता की अभिव्यक्ति है, जो बहुलता में एकता लाता है।
- जब प्रार्थना की जाती है तो लोग नहीं जानते कि लोगों के बीच संत कौन हैं
शुक्रवार के दौरान सबसे स्वीकार्य, शक्ति की रात की तारीख
रमज़ान, ईश्वर के सभी सुंदर नामों में सबसे बड़ा नाम, या जब
वे मर जाएंगे। ऐसी अनिश्चितता बाकी लोगों को सम्मानित और महत्वपूर्ण बनाती है
[क्योंकि सबसे महत्वपूर्ण को स्पष्ट रूप से महत्वहीन के भीतर शामिल किया जा सकता है] अज्ञात अंत के साथ
20 साल का जीवन 1,000 के जीवन से बेहतर है
वर्षों का अंत ज्ञात है।
- इस संसार में किए गए बुरे कामों का परिणाम यह दर्शाता है कि सज़ा
आख़िरत में आएगा।
- ईश्वरीय शक्ति की दृष्टि में, प्रावधान जीवन के समान ही महत्वपूर्ण है।
प्रावधान शक्ति द्वारा उत्पादित, भाग्य द्वारा विभाजित, और पोषित होता है
अनुग्रह (कृपा) द्वारा। चूँकि जीवन निश्चित है, विशेष परिस्थितियों और घटनाओं का परिणाम है, इसलिए इसे देखा जाता है। लेकिन प्रावधान निश्चित और सुनिश्चित नहीं है, क्योंकि यह किसी निश्चित समय के भीतर प्राप्त होने वाली चीज़ नहीं है। बल्कि, यह
अनिश्चित डिग्री में आता है और लोगों को चिंतन की ओर ले जाता है।
जो लोग अपने शरीर में संग्रहीत भोजन (जैसे वसा) के पूरी तरह से उपभोग से पहले भूख से मर जाते हैं, वे निम्न कारणों से होने वाली बीमारियों से मर जाते हैं।
नियमित पोषण में परिवर्तन करना या उसे त्यागना।
- जानवरों के शव कई जंगली मांसाहारियों के लिए वैध हैं। उन्हें खाने से,
ये मांसाहारी जीव अपना भोजन स्वयं प्राप्त करते हैं और पृथ्वी की सतह को स्वच्छ रखते हैं।
- कल्पना कीजिए कि आपके पास बराबर पोषण मूल्य वाले दो खाद्य पदार्थ हैं।
एक की कीमत 10 सेंट है और दूसरे की कीमत 10 डॉलर है। अगर आप दूसरे वाले को सिर्फ़ कुछ सेकंड के आनंद के लिए पसंद करते हैं, तो यह आपकी स्वाद की भावना को बढ़ा सकता है, क्या यह है?
क्या यह बर्बादी का सबसे निकृष्ट रूप नहीं है?
- जब कोई खुशी आपको आकर्षित करती है, तो कहें कि आप पहले ही इसका आनंद ले चुके हैं।
जिस व्यक्ति ने इस सिद्धांत का पालन किया, उसने एक मकान बनाने के लिए पर्याप्त धन बचाया।
मस्जिद, जिसे अब सनकी येदिम (जैसे कि मैंने खा लिया है) मस्जिद के नाम से जाना जाता है।
- जब ज़्यादातर मुसलमान भूखे न हों तो आराम की ज़िंदगी आकर्षक लग सकती है। लेकिन
जब अधिकांश मुसलमान भूखे हैं, तो कोई भी मुसलमान ऐसा जीवन नहीं चुन सकता।
- क्षणिक सुखों का मुस्कुराकर स्वागत करने के बजाय, क्षणिक बीमारियों का स्वागत करें। अतीत के सुख हमें पछतावे की ओर ले जाते हैं, क्योंकि “हाय!” का अर्थ है कि हम एक दूसरे के प्रति उदासीन हैं।

छिपी हुई बीमारी। पिछली बीमारियाँ व्यक्ति को राहत की साँस लेने, एक छिपी हुई खुशी और एक उपकार की खबर देने के लिए प्रेरित करती हैं।

• भूलना एक आशीर्वाद है, क्योंकि यह व्यक्ति को वर्तमान कठिनाइयों को सहने और

पिछली कठिनाइयों को भूल जाओ.

• हर दुर्भाग्य में ईश्वरीय कृपा की मात्रा होती है। बड़े दुर्भाग्य के प्रति सचेत रहें, जिससे छोटे दुर्भाग्य के अनुग्रह के लिए आभारी रहें। बाद वाले पर ध्यान केंद्रित करने और उसे बढ़ा-चढ़ाकर बताने से वह बढ़ता है, और हृदय या कल्पना में यह अतिशयोक्तिपूर्ण प्रतिबिंब उसे वास्तविक और कष्टकारी बनाता है।

• सामाजिक जीवन में, हर किसी के पास एक खिड़की होती है - हैसियत - जिसके माध्यम से वे दूसरों को देखते हैं और देखे जाते हैं। यदि यह उनकी वास्तविक हैसियत से अधिक है, तो वे घमंड का उपयोग करते हैं और खुद को ऊंचा दिखाने के लिए दिखावा करते हैं। यदि यह उनकी वास्तविक हैसियत से कम है, तो उन्हें बाहर देखने, देखने और देखे जाने के लिए विनम्रता से झुकना चाहिए।

विनम्रता व्यक्ति की महानता को दर्शाती है, ठीक वैसे ही जैसे घमंड या दंभ व्यक्ति के निम्न चरित्र को दर्शाता है।

• शक्तिशाली लोगों की मौजूदगी में कमज़ोर लोगों का आत्म-सम्मान, शक्तिशाली लोगों द्वारा ग्रहण किए जाने पर अहंकार बन जाता है। कमज़ोर लोगों के सामने शक्तिशाली लोगों की विनम्रता, शक्तिशाली लोगों द्वारा ग्रहण किए जाने पर आत्म-हीनता बन जाती है। अपने कार्यालय में, प्रशासकों की गंभीरता गरिमा है जबकि उसी स्थान पर उनकी विनम्रता आत्म-हीनता है। अपने घर में, प्रशासकों की गंभीरता आत्म-दंभ है जबकि उसी स्थान पर उनकी विनम्रता विनम्रता है।

अपने लिए सहनशीलता और त्याग करना अच्छा और पुण्य है, लेकिन दूसरों के लिए किया गया त्याग बुरा और विश्वासघात है। लोग अपने साथ होने वाली व्यक्तिगत तकलीफ़ों को तो धैर्यपूर्वक सहन कर सकते हैं, लेकिन राष्ट्र के लिए, राष्ट्र के साथ होने वाली तकलीफ़ों को धैर्यपूर्वक सहन नहीं कर सकते। राष्ट्र के लिए गर्व और क्रोध सराहनीय है, लेकिन लोगों के लिए यह निंदनीय है। • सभी आवश्यक सावधानियों और सभी आवश्यक व्यवस्थाओं को करने से पहले किसी मामले को ईश्वर को सौंपना आलस्य है।

जो कुछ भी किया जा सकता है, उसे करने के बाद इच्छित परिणाम की प्राप्ति को ईश्वर पर छोड़ देना, ईश्वर पर भरोसा करना है। अपने प्रयासों के बाद परिणाम से संतुष्ट होना एक प्रशंसनीय गुण है जो आगे के प्रयासों को प्रोत्साहित करता है और व्यक्ति की ऊर्जा और परिश्रम को फिर से सक्रिय करता है। जो पहले से ही है, उससे संतुष्ट होना प्रयास को नष्ट कर देता है।

• लोग शरिया का पालन करने या न करने के लिए स्वतंत्र हैं, ठीक वैसे ही जैसे वे सृष्टि और जीवन के ईश्वरीय नियमों का पालन करने या न करने के लिए स्वतंत्र हैं।

आमतौर पर परलोक में टल जाते हैं, जबकि परलोक में वापसी आमतौर पर इसी जीवन में होती है। उदाहरण के लिए, धैर्य का पुरस्कार सफलता है, जबकि आलस्य का दंड अभाव है। उद्योग धन लाता है, और दृढ़ता जीत लाती है। न्याय का कोई भी दावा जो हर किसी को उसका हक देने पर आधारित नहीं है, एक झूठा दावा है।

• समान आयु और स्थिति प्रतिद्वंद्विता और संघर्ष का कारण बनती है। पूरकता और अनुरूपता एकजुटता का आधार हैं। हीन भावना अहंकार को भड़काती है। कमजोर चरित्र अहंकार को भड़काता है। नपुंसकता विरोध को जन्म देती है। किसी चीज के बारे में जिज्ञासा व्यक्ति को उसके बारे में जानने के लिए प्रेरित करती है। • जिस शक्ति ने प्रत्येक वस्तु को अपने स्वभाव से बनाया है, उसने मानवता और जानवरों को उनकी ज़रूरतों (विशेष रूप से भूख) के माध्यम से नियंत्रित किया है और उन्हें एक निश्चित क्रम में रखा है। इसने दुनिया में अव्यवस्था और भ्रम को भी रोका है और ज़रूरत को सभ्यता का मकसद बनाकर हर क्षेत्र में प्रगति सुनिश्चित की है। • ऊब लोगों को भोग-विलास की (कल्पनाओं) की ओर ले जाती है, निराशा उन्हें बौद्धिक विचलन की ओर ले जाती है, और आध्यात्मिक अज्ञानता और शुष्कता (हृदय का अंधकार) उन्हें संकट और अवसाद की ओर ले जाती है। • जब पुरुष सांसारिक सनक और कल्पनाओं पर ध्यान केंद्रित करके महिलाओं की तरह बन जाते हैं, तो महिलाएं असभ्यता और निरंकुशता के माध्यम से पुरुषों की तरह बन जाती हैं।

• अगर कोई आकर्षक महिला पुरुषों के समूह में शामिल होती है, तो उनमें प्रदर्शन, प्रतिद्वंद्विता और ईर्ष्या की भावनाएँ जागृत होती हैं। महिलाओं को पर्दा खोलना और उन्हें उन पुरुषों के साथ स्वतंत्र रूप से घुलने-मिलने देना जिनसे उनका कोई संबंध नहीं है, बुरी नैतिकता को बढ़ावा देता है। • चित्र और मूर्तियाँ, विशेष रूप से अश्लील, इसमें महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं लोगों की वर्तमान पापमयता और दुर्भाव।

• इस्लाम द्वारा निषिद्ध मूर्तियाँ, पत्थर पर जड़े गए अन्याय, मानवीकृत कल्पनाएँ, या अतिशयोक्तिपूर्ण दिखावटी गर्व हैं।

• अगर लोग इस्लाम के आदेशों का सख्ती से और दृढ़ विश्वास और पूरी ईमानदारी से पालन करें, तो नई समस्याओं के लिए इस्लामी समाधान खोजने की उनकी इच्छा और प्रयास उन्हें पूर्णता की ओर ले जाएंगे। इस्लामी आदेशों के प्रति उदासीन और इसलिए इस्लाम से बाहर के लोगों की ऐसी इच्छा या प्रयास उन्हें बर्बादी की ओर ले जाते हैं। इन मुश्किल समयों के दौरान सही कदम कुरान और सुन्ना से "नए" कानून निकालने के लिए दूरगामी प्रयास करना नहीं है। बल्कि, यह नवाचार के खिलाफ दरवाजे बंद करना और खिड़कियां भी बंद करना है। धार्मिक कर्तव्यों के प्रति उदासीन, चाहे वे उन्हें करें या न करें, उन्हें उन कर्तव्यों से मुक्त करने के लिए विशेष छूट नहीं दी जानी चाहिए। इसके बजाय, दूसरों को चाहिए

उन्हें सबसे कठिन और गौण कर्तव्यों को पूरा करके खुद को सुधारने की चेतावनी दें। • असुरक्षित और गलत तरीके से प्रस्तुत सत्य मूल्यहीन होकर अपना मूल्य खो

देते हैं

हाथ.

• हमारी पृथ्वी कुछ हद तक जीवित जीव से मिलती-जुलती है, जो जीवन के लक्षण प्रदर्शित करती है। यदि इसे अंडे के आकार में संकुचित कर दिया जाए, तो क्या यह एक प्रकार का जानवर होगा? या यदि किसी सूक्ष्म जीव को हमारी पृथ्वी के आयामों में बड़ा कर दिया जाए, तो क्या वे एक दूसरे के समान होंगे? यदि पृथ्वी जीवित है, तो इसमें एक "आत्मा" अवश्य होगी। यदि ब्रह्मांड को एक मानव के आकार में संकुचित कर दिया जाए, जिसमें उसके तारे उस व्यक्ति के संविधान के तत्व बनाते हैं, तो क्या यह एक सचेत, सजीव प्राणी नहीं होगा? भगवान ने इस तरह के कई प्रकार के जीवित प्राणियों का निर्माण किया है। • दो प्रकार के दिव्य नियम हैं: वे जो वाणी के दिव्य गुण से निकलते हैं और मानवता (एक सामान्य ब्रह्मांड) के कर्मों और अवस्थाओं को नियंत्रित करते हैं, और वे (अधिक संख्या में) जो इच्छा के दिव्य गुण से निकलते हैं और ब्रह्मांड (एक वृहद मानव) के निर्माण और संचालन को नियंत्रित करते हैं।

इस दूसरे समूह को गलत तरीके से प्रकृति कहा जाता है। देवदूत एक शक्तिशाली समुदाय का गठन करते हैं। वे ईश्वरीय इच्छा से जारी सृष्टि और व्यवस्था के दिव्य आदेशों को व्यक्त, प्रतिनिधित्व और मूर्त रूप देते हैं और उन्हें सृष्टि और व्यवस्था के नियम कहा जाता है।

• जब आप किसी सूक्ष्म जीव की इंद्रियों की तुलना किसी इंसान की इंद्रियों से करते हैं, तो आप एक आश्चर्यजनक, रहस्यमय सत्य का सामना करते हैं: प्रत्येक व्यक्ति सूरत या सीन की तरह है, जिसमें सूरत या सीन अंकित है।[406] • भौतिकवाद एक ईश्वरीय दंड है, एक आध्यात्मिक महामारी जो मानवता को एक भयानक बुखार से संक्रमित करती है। यह

तब तक फैलता रहेगा जब तक झूठा प्रचार, निंदकवाद और विनाशकारी आलोचना फैलती रहेगी। • सबसे दुखी लोग, जो सबसे अधिक संकट में हैं, वे वे हैं जिनके पास करने के लिए कुछ नहीं है। कुछ न करना अस्तित्वहीनता का एक करीबी रिश्तेदार है, जबकि कड़ी मेहनत करना शरीर की शक्ति और जीवन की जागृति है। • अविश्वासी,

विशेष रूप से सबसे अन्यायी और भ्रष्ट लोग, बैंकों से सबसे अधिक लाभ उठाते हैं, ब्याज के वे घर जो ब्याज के लिए दरवाजे खोलते हैं।

मुस्लिम जगत को वे जो नुकसान पहुंचाते हैं, उससे इनकार नहीं किया जा सकता। उन्हें सिर्फ़ इसलिए अकेला नहीं छोड़ा जा सकता कि वे कुछ लोगों को फ़ायदा पहुंचाते हैं।

अविश्वासी, विशेषकर जो आक्रामक हैं और मुसलमानों से लड़ते हैं, वे सम्मान या बचाव के लायक नहीं हैं।

---

[406] सूरत या सीन कुरान का एक अध्याय है (सं.)

• शुक्रवार के उपदेश लोगों को इस्लाम की मूल बातें याद दिलाने के लिए होते हैं, न कि उसकी व्याख्या करने के लिए
इसके अमूर्त सैद्धांतिक बिंदुओं पर। यह देखते हुए, उन आवश्यक बातों को व्यक्त करने वाले अरबी वाक्यांश
इस याद दिलाने के लिए सबसे उपयुक्त हैं। जब कुरानिक
यदि पैगम्बर की कही गई बातों से भी उनकी तुलना की जाए तो यह बात ध्यान देने योग्य होगी
जिसका मुकाबला मानव जाति का सबसे वाक्पटु व्यक्ति भी नहीं कर सकता
कुरान की वाक्पटुता.

नर्सी ने कहा

अनुक्रमणिका

बी

सी

डी

और

एफ

जी

एच

मैं

एम

एन

पी

क्यू

आर

एस

टी

में

वी

में

और

साथ

ईश्वर के नामों और गुणों की सूची

एच

मैं

जे

क

एल

एम

एन

पी

एस

टी

में

में